THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971— 35-44

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB — III

MBB-1976-35
1. Film strip number

13
2. Source

MAHAJĀTAKAMĀLĀ
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. 1029 + 880 = A.D. 1909
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

SARVAJÑAVAJRA
6. Name of Scribe

NEPĀLI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRI
8. Script

32 cm. x 10 cm.
9. Size

7
10. Lines to a page

358
11. Number of leaves in complete work

12. Missing leaves

13. Author and Date of composition (if given)

43
14. Number of Chapters

15. Remarks General idea of different Buddhas and stories. The VYĀKARANA section of the text is very important.

Aug. 23, 1976
Date photographed

मिताऽक्रमात् ॥ मन्त्रा निर्णितश्च सर्व धर्मविद्याप्यनिर्दिशि मात्रुयाथ ॥ पुनश्च ब्रह्मवाक धर्म नत्वस्य यत्तु थे ॥ गङ्गु [illegible] यं [illegible] ननन्नं पालय प्रजा ॥ धर्मविद्भि विश्वस्या

मात्र नंसान प्रभी यात्तु काउ ॥ मंकोड सो मणावर्न [illegible] स्वावाधिमात्रु याद ॥ मन्स्या धर्मनिति ऊ सर्वधर्मि त्वाइ [illegible] नं पदं ॥ सर्वसत्वहिताअनीतं प्राप्ता वाधिनुक्रमा

॥ वतावांधितृमायायुं [illegible] सत्वहितं कर्ता ॥ मता सर्व मनो [illegible] तपाया [illegible] ॥ कमान्सत्वहितं [illegible] पद्मवाक्षि [illegible] थिः ॥ [illegible] मावाद्धर्मरक्षे

मत्युमकर्मं ॥ [illegible] वत्न सर्व [illegible] ॥ [illegible] संग्रामं निनु पदवं ॥ [illegible] ॥ [illegible] सत्वहिताय [illegible] विनिग

वंभ्रम नतो ॥ [illegible] सर्व सर्व [illegible] ॥ [illegible] सर्व [illegible] धिनापि प्राप्या ॥ धर्मि [illegible] स्वान्विमे ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] सर्वसत्वहि [illegible] निर्वि [illegible] धिमामा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] पालय प्रजा [illegible] ॥ [illegible] नि मात्रि

[illegible] सर्वाधि मार्गदर्शिके ॥ [illegible] मान्नात् ॥ [illegible]

ञा ष्वस्याद्युमत्युजनाय ॥ बन्दिजा शितित्रिलनश्रविश्रुश्रिरं ॥ वित्रायाप्न ॥ अपूर्वज्ञानवदाथ पि मेगमा ॥ याकृत्या श्रुति ॥ श्रम्मा धपार्वेता स्थेव मन्या कार्पटिका श्रुति ॥ नत्साक्रन्तो द्व मं
पातुं सर्वेश सनु पा गमा ॥ ३पग्रु पं गमर्ह र्म जात्मा नर्ह्य र्य थक्रमं ॥ मफर्व विपिगा त्राम्मा ॥ मक्रत्म थामादि मा ॥ मजात्रदक्ति वीभूक्ष्य पनिरुश्री पनाक्कितर ॥ मथा मक्रा
दूस्या दवा ॥ सर्वलोकाश्चिया श्रुति ॥ मर्ह्यनृप थनाकेउ तमुपगरक्त नागमा ॥ दस्मद्राथ गम्यश्चपियगगनर्वकिन्नना ॥ कृष्ण३ वाकत्ता नागेगनुजाथ मतानमा ॥ ति
७ क्रत्वियाकमा श्चपि गम्य मनागथा श्रुपि ॥ उतालानागणा श्वपितमस्त ॥ मस्वापिव ॥ तर्वंत तमपा गापुत क्रत्म्ल थवर ॥ लवा ॥ ननन्नृपं थना मउ तमुपगरकृ नाक्ला ९
नृ ॥ म यान्यवा र्थिकाविद्यालि ग्रंथमत्कायत्ता श्रुपि ॥ यन्या शागिनश्रपि तिक्क्ष्म थाद्वकवानि ॥ ति गुरुश्चमिन श्चपियमा जान्मा मक्ता श्रुपि ॥ उपामिकाम मतरुकृ मं
सगतक्कि मानसाथ ॥ मथत्या वाथि मत्ताश्च मतुत्तवा ॥ शुतीयना ॥ मवंग ममुपागमु वगुगकृ मसमादि गा ॥ मवामर्हस मालो स्य सर्वोत्ता नमपाक्कि मात्ता ॥ सन्वा
थिमावेनं मर्म नमृपाहसमेकग ॥ मउतन्यपथोनाक्काजिनल्लतपितोलात सं ॥ देवपुष्पानृतोवत मत्वामत्स गुणमत ॥ के नक्षय ममत्यर्हि ॥ मकुमेक्क स्वगनमी

।।उवन्नकुनासमं कमाक्रू लि ४ सूसागक ३ ।। नत्वा पादो गनामकस्य मानुष्यां उविसंखित ३ ।। घसत्वा ख्या मृत्वा भ्रांतं ६ चेदेवं प्रार्थ्यं समुरा ।। समदनाय लसमा स्वा कंपि नवत्रुतनमन

मं ।। मडिनलसंमनुष्यादि २ श्रांतामि कमिलामृतं ।। गडिनलनं कोवा कृत्य कोथं संसारं मंगति ।। स्का स्यागिवि क्रियस्वात्त मगदा ३ सुमहंति ।। एवं तं पार्थिर्भा वाक्यनत्वा मार्दन्त

धीयंमि ७ ।।उपराफालनुष्कं समा मनुष्य व मादिगाह ।। सा धुता श्रमतला ज सर्व लेत्वहि गाशय ४ ।। तु संविलं समा भाय ४ं८ स्वात्र समादवा गा ।। यथा मेरा नु धा स्याम सहि गा पम

९ वा तिना ।। मथा दं ग पव स्थानि गडिनलमनुष्यं ।। मधथा ३ मवालाक पंस्स वधाय गालिगा ।। तर्वेउक्को स्या लाक पाला पान वर्णकिताओ ।। फलासर्व मिलाकाधी छिका

१ स्यवाया यिकाऽ ।। मानस्य मनगा १ कांभयाकृतान्त्रि विगाया ३ ।। वदनैनिरक्का ६ क्काव सवानपना त्तूखा ३ ।। नीर्थिकावे भागमकृदा [illegible] नाधमंडमादिमा १ ।। सवाति म

नना गमं भविमना गातिया भिलप ।। स वकौवाना इनाना ९ ७ कृतंपनिर्वर्विकिन ४ ।। हिंसाकर्मनता ६ कृतानिर्दयाधुगिगाया ।। [illegible] धेविहानता ३ पनवा ६ लाभ

संसाया ।। मृतलिका हिलितं सकाव गाकृशलबानिगु ७ ।। मनुधर्मी थितमृत्वाइ ८ कृपश्च वेनिन ।। मक्कमा स्वयमाला ष सर्ववर्वविवानिर्गं ।। स्वालावाथानुवंगमानि भा

श्री

सर्वाश्रा कामि मां ॥ वि वाशिष्ठ यो मु बौ ऽय
नु यां तु स्मृति सकल वर्गं सु कम का सकाभूना ॥ ध्यानं समुप्पाद्य वाशिष्ठ यो पुर संयत ॥ जिन लग न नाम धी जगत काय प्र ना ॥ सर्वा श्रा कामि मां ॥ वि वाशिष्ठ यो सु बौ ऽय
नु मन सु धर्मा धि का न स्वा तं स्था पय ऽ गाढ्वि ॥ एवं संवदतो नाम वाशिष्ठ यो प्रका शयत् ॥ सर्वा श्रा कांक्षि ति यानि अ सप्त वय जिनानलयं ॥ नवं हृ गन्ध या ऽ मन्त्र सर्व ऽ उ वनस्य
र्ति ॥ जिन स्वा नि स सू सु सर्व ऽ पर्य निः सुख ध्वनं ॥ न ब स वा दि ता का ध जिन ला ग न ऽ ग ता ॥ तं का न या द्रा या म स्फा पर ति ध्या नि सर्व दा ॥ वाग स्य ध्वनं लाय न सर्व सलाय ॥
वा गन्ध्या ध्या ॥ तु ब मू वि सन्न म स्का य वनि थ्या नित्य लत नुना ॥ न ज स सर्व ऽ ता था य म ऽ नल ग्निन्न पर्ड वं ॥ तत्र मं ता ध न नात्या तु व दोर्हि तुं रूवि ध्या णि ॥ भनन सर्व रू पं स लोका वाशिष्ठ यो १३
सु को धु का ॥ जि दि ब्धं वाशि मा ना ऽ सं या ध्या नि जिनान्त या ॥ वर्षा कि ग ब्धि मा ॥ थे मु रव न्क ऽ पा थं या में ऽ ॥ व ण ब्धि पन नं का र्यं क ष्णा ल व ऽ ग ल तु ॥ वर्षा जिन सु धा पि ता कृ न
सु स नम धि ना व ऽ थ ॥ वाशि स ब्धाम स्मृत तुं ऽ ग ब्धा वं य ता कायग ॥ सर्वा भि ब्ध सर्वा ता क सर्व ऽ ग न ध्या यि कां ॥ द्र पा का न्त ध्य सं कृ ष्ण वि त्क ला शो भ ग ं क दा ॥ ग त ऽ स्य
सू ऽ मन सु ध्य थ म प्रार्थित क्ष था ॥ कीर्ति प ह्र द्धि मा लो श्च ग दं लि ता ग ध्या स्त वा ॥ कथा भिः ता क्ष था न न व भू ना ॥ ध्या यि त ऽ पुना ॥ कथा ऽ ि जिन मा लो ध्य सौ वा का न्त मा र्थ

[illegible] ॥ कतुम स्यासनानीत [illegible] ॥ अनुमवानि ॥ ३ ॥ सर्वान्द [illegible] मासन [illegible]

कं ॥ कलस्तुम [illegible] मत्वाध [illegible] पाश्रितं ॥ ३ ॥ प्र [illegible] नाम नाम तत्वं [illegible] यं नमु पायन ॥ [illegible] नम्तम [illegible] मानेष ॥ सर्वे [illegible] हितां [illegible]

बमादि ॥ ३ ॥ नन्द [illegible] यं स कार्य [illegible] ॥ यद [illegible] धी [illegible] जिन [illegible] ॥ [illegible] सानेगं [illegible] जिनो [illegible] ॥ [illegible]

नम्यांश्च गंधनेत्र ॥ सर्वान्[illegible] ॥ ब कृत्वा नाम [illegible] मासूयात् ॥ [illegible] ॥ [illegible] मन [illegible] जिन [illegible] ॥ सर्वं [illegible]

समनन्तमह [illegible] मसं [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] मीन [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] गुगम [illegible] धुना ॥ [illegible] नामन [illegible] ॥ ३ ॥ सर्वं [illegible] ॥ ३ ॥ नि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] वि [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] मादर्श [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] म्बानि ॥ ३ ॥ समश्रीजिन [illegible] ॥ [illegible] कायाथितं ॥ [illegible]

[illegible] ४

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लं॥ सर्वलोका ॥ समानी वर्णु गत ॥ सुविद्र्जनर्षिता ॥ ॥ ससा ॥ सार्द्न समानतारु सर्वो॥ श्लोकाश्चिमादि कान्॥ गन्तमाधे ॥ समनुकाय धर्ममादनुमान रता ॥ तद्वर्णे दृष्टवालंखा
उंसर्वदिग्ध ॥ समागतो ॥ ॥ श्रावाज्ञ यया विहानिर्ग्रन्थ केपिताश्रुपि ॥ कीर्तिका यत य श्रापि भागिना ॥ समानोमि ॥ ॥ ॥ कृतिवा नाजवंशा ॥ [illegible] पानाम्नु समान
कानदि अन्वमातु [illegible] ॥ सादि नन्न समनुष्ठ्नाथ ॥ ॥ म्हं इह्म वतिज श्रवि सार्थवान्नु ष्माला धवद ॥ ॥ [illegible] त्विन ॥ हाविय श्रपि तथान्य सर्वकाशि [illegible] ॥ ॥ पीना गल
प्काज्ञ वाक्नु सा नार्पिटि का श्रुपि ॥ एवमस्य पिनस्ता श्रष्ठिनल दे [illegible] नार्थिन ॥ ॥ सर्वेन समनु पाया मा ॥ श्राडा कृतं य वीश्व नं ॥ मृज सर्वपि [illegible] का ॥ [illegible] लिप
यामूवा ॥ प्रगत्वा गंगमहाति हं पनिरू सुसमनकाग ॥ ॥ पुन स्क [illegible] समाना वर्णु समाधेय समासन्ना ॥ ॥ [illegible] प्रज्ञा समापन्ना उपगुह्य ॥ प्रलाल्पिता था ॥ सुवर्ण गतादं
याद वालीवापाला ॥ सुवा र्वदा ॥ ॥ गन्धर्वा ॥ किन्नरनामका छिमा [illegible] वानवा ॥ ॥ मिद्धाश्च गगनानागा ॥ कृत्स्ना [illegible] नाका साश्रुपि ॥ [illegible] वनोकज धर्म [illegible] मूपाप
मन्नु ॥ एवंबोनानु पातिना धर्म [illegible] तमाद्वाता ॥ सर्वान्सतानसमानवर्णु सारंगा कीन्दर्पाणि महेदा ॥ [illegible] समनु काय सा [illegible] लि ॥ पद्मनागगा ॥ ॥ [illegible] ता उवि

मा ग्रानमिताः॥ पूर्वमूर्वविमालपानगा॥ जिवि अंचामिनमायसंवद्रुपद मामूपाः॥ भाषेगरुजनया स्थानं मजनतनुलषितं॥ वक्षुनलं नमामायवनं यंगदेवा
रा॥ रूपितिजनाईताद्दिष्टं नु लाराभाक॥ सतूपसि॥ मारथलपुन्नगोधितावाग्रामननन्द सूयामर्द॥ ततांदीमामहाशिद्दंड मगुरु॥ मतांपिकाश॥ उत्कायमागा तमथा
नवनलायमतसमाथ्यता॥ पवनस्य सनाउंडुः सान॥ पूर्णमनासूना॥ जिनलनभगंगलो रलानिमुद्दौ तवनता॥ ऊआ॥ सर्वजिनाः श्चैवं जिनलं पनवेगताश॥ जिन
म ग्रुद्रयानिलिवकजना॥ पावनस्तु ताणमे नस्पूथ तावनं नडसंदूपसवरा॥ जिन्नुस्पागेउतालाइं हृजयपगउत्वा वनता॥ ए सर्वदंयजिनलपणिभवडए॥ त्यागनामो
दवालं॥ तक्षि अद्युउनन्ना नतातरी तकनं संजडमे जिनलं॥ गतर्वपाद्धं वाचाविमन्ततमनमदडाफ मंथाधिविताः विध कंगाथितत्वाः मामन्नागुरुपनावृद्धवो
दवननि॥ ॥ श्रीरूपगोकवनिए श्री यशुनकोधिजनकिउत्तजपिनामन श्रावकमाननांघ्रुपमा॥ श्री यउसमाफ॥ ॥ सुपारवेगवा
सनुभाल मजिनलगर्थासनन्तु॥ विसन्नगमूनः॥ शांतुमननेवयविकमलु॥ नृपरण तवेनंगाकयजिनलंपणंसतु॥ विसुभंगणलन्तुनलिः ख्यावलिकामयहंपुनु॥

८

मदर्द्दिनंसमर्हतिहुं उपपृष्ठं जिनांपिकां॥ पूनर्नितु समामंतु एकानि मलमृकृवं॥ अकृणक मर्हतिहुयष्टक्रिमक्तपामथि॥ मद्दर्म ममुपादस्पृनितृ गात्रुस्थमर्हतिम्॥
मदर्द्दिनंसमर्हतिहुं उपपृष्ठं जिनांपिकां॥ पूनर्नितु समामंतुएकानि मलमृकृवं॥ पूनु॥ मलर्वसंति॥ अर्थिपृ समागेस्पृ पूनमम॥ जिनंनास्थसमृमर्हति समादस्थमर्हति॥
पद्विनस्तंमगकुंवंगवनासंपर्णस्याम॥ विमूनरांगडनृदिं स्यागुमिक्रम्पृहं पूनु॥ अर्थमांछिक्रिनंनाक्रमलस्नायार्हं क्रिनालक॥ समापिकां स्नुमूकाथ्यविकाय
वरहृवं मननसा थानस्वां नामाजांगमकाल मंविकृयत्नु॥ उपपृष्ठं नमर्हनं मद्भरावा क्रोभमाति॥ कतगंसमनुपायांगिमनांपिकंसतरूपांजि॥ डस्थानृतासमनुकायम
सासंमावनन्नु॥ मतृवांहृन्नामर्हति हृ॥ संतापिवांपचलामयत्न॥ तमांसूमांधेस्त्राकाभैत्तंहतासमृपाकनहृ॥ कतुसाईनकगकांगांदवनीयांतमांपिकाठ॥ तनाम थांसना मान
ऊलिप्रमहलनमहा॥ ग्रस्थपसंलांपा कृपारदमंविकृत्माधिता॥ स्वासनालिससामाथ्यत्रमांनयत्तमकृणाठ॥ कपुसाईनकगकाणादवनीयांतमांपिकाठ॥ तनाम थांसनामान
मंस्थेनवाकानिवांलांयत्न॥ फवातनंयथानाकांसांमस्लिः पूनपागक॥ नंस्वामृरुनितीकृत्वां॥ स्वापितिं नंउमांपत्यकृ॥ कमान्त॥ पृविकाठ स्तंवमूनांहिपा स्थ्याक्रिजाठ॥
मर्हस्थेवाकानिवांलांयत्न॥ फवातनंयथानाकासांस्लिः पूनपागक॥ सन्यापिवाथवाथमामहा सर्वमनाम्नृपि॥ एहृकाठ पांनिवाठ स्थाप्त्वाठ का
सर्वबाजकृमानाथवंपथ्या मेंद्विजनांसृपि॥ अनुमास्यामांन्ति पृजाथतविवाधानृतायवाठ॥

आ

[illegible] भक्ति [illegible] लोगानं सूर्यं [illegible] सर्वतत्व हितार्थिन ॥ [illegible] समाहितात्मा ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ स द्रुमें [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ — १२

[illegible] ॥ स द्रुमें [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ मानव [illegible]

नाम कलियां ॥ [illegible] पूर्वे पि [illegible] ॥ नाक पाला [illegible] सर्व पि [illegible] ॥ मानव [illegible] ॥ [illegible]

कथाय वा कृताम [illegible] ॥ तथा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] पितृ ॥ अ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्व [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] लिया [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ सर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ तथा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

ना ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रा पडुवां॥ संपदमर्वदर्शिनां निवापद ५ [illegible] ॥ स्वयमार्थदिताखिला [illegible] साधनाय ॥ [illegible] ॥ [illegible]

नत्वं [illegible] समालवं॥ [illegible] ॥ विपक्षि [illegible] ॥ [illegible]

मिद्धां [illegible] ॥ स्वयमार्थदि [illegible] ॥ [illegible] १

मीवर्णि [illegible] ॥ सर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ मानपक्ता [illegible]

३ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इ॥ भवविनिर्मुक्ता भवंति बाधिकागिनव॥ किंवयां मानुष्यजन्म श्रीजिन नापि जिनेद्रत्वं॥ यथा नविद्यते किंचित् सम्यक्त्व सर्वथा समं स्थितिः॥ भवमवंति ला कल्यं मानुष्यजन्म श्री॥ पुं
॥ ममयां व किंचिद्वस्तुन्मर्वनाम्॥ विनाश्यकं॥ यथाविशेषो गर्भ मर्मेन पृथ्वीनि क नदानं लो॥ किं यथा न युत्वेन तत्रे थक तमम यत्न नापि॥ अवापि योगाते ते धर्यिं किंस्त्वं नवृत्व
॥ तस्यां किंश्री मन्तत्वं तु वीर्य मनाजन्मे॥ कृतवं पर्युषास कथ समान मत्वेन जिन॥ य तमा लि मत तं पत त्वान मम्पुरि किमात्॥ अन्यामतो मद्धि का वमना थ स्थ तुपी
मुख्यानि मा॥ यत्र शांति जिनत्वानि सर्वदा च त्वं परिकिमाथ॥ जिनत्वाद्रि कि जो थ च सेवे धर्म थं कीर्तिं निर्तिप्राण॥ सर्वलिङ्ग को भी नाथि त ती निलिन मान्याम॥ जिनत्व मर्दमि माङ्गत सर्वी
पार्तिमनिताम॥ सर्वश्रीत्र त्व संपन्ति च संश्राव मम तत्त्व मुः॥ तवीतिः सेवम पत्र लान पूर्वं बाव स्तुका ध्यान॥ तत्र पुरुष्य सर्वमु जिन का नर्जा कं वनं॥ यन्नु स्थाभि सतिफा लाप
विशुद्धो भवः तथी अनि [illegible] ग र पनि त्रो काशे [illegible] स नः [illegible]॥ एवं मत्वा महा नान यदि संबाधि नितु नि॥ जिनतत्वे पन शं गत्वा रेशनिर्मुल्मा स्वनाम॥ कृत्वाथ त वी
जनांश्चापि साधयि त्वा प्रयत्नतः॥ जिनत्वं पनः संत्वा यानं पात्य यममाहित॥ एवं स्वव्यान हार न सर्वज्ञ मर्थ दापिता॥ निर्विं प्रं मकं श्री नाहि तवं वर्न तम [illegible]

आ

यनि पूर्वं यथाक्रमं ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ सर्वसर्वदर्शिता ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ सर्वसर्वदर्शिता [illegible]
[illegible] ॥ ११
८८ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] पाशुपतमादि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] चादि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] दिनि ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

कुर्वन्ति नर्थर्धिर्यं ॥ सर्वं कृष्णस्तु वज्राद्दित्ताक पाताहि ताभ्याः ॥ मन्दर्वानपिपश्चगाः तं न स्तुमि
मानगणाः दृष्ट्वा सर्वाय इव कान्ति नः ॥ छिन्नाक्ष वालिन थापि मः कुर्वन्ति नर्थर्धिर्यं ॥ सर्वं कृष्णस्तु वज्रादित्ताक पाताहि ताभ्याः ॥ मन्दर्वानपिपश्च गाः तं न स्तुमि
समन्ककाः ॥ सर्वयहगणा थापि सर्वमानागणो स्तुमि ॥ मयांसर्वास्त्वव काप्तुष्टं कुर्वन्ति सर्वदा ॥ सर्वमाकृष्णाः थापि सत्राचिन्नागणा स्तुमि ॥ मस्तेन व गस्ताकान्ता स्वर्णं
गर्भमधिपाञ्जपि ॥ सर्वांदि सर्वदावि प्राप्तान्नामानगणान्विपि ॥ नकान्ति समर्त निरूपमन्त्र वृक्षाः सतकेणः ॥ सर्वपिपामिनः निकृष्ट मुण्डाः सङ्गमसाधिनः ॥ वक्रयाः स्वार
वावीनान स्तु न्ति सानन्दवाने माः ॥ यनय मकोपसा थापि सर्वपिव स्वानि नः ॥ सर्वापप्त्यवर्णा निष्ठं स्तुवन्तो निसादिताः ॥ सर्वदेकाप्तताभिर्हाः सोगताः ॥ सिद्धावि
नथा छिन्नलनकांगवा मनूमाददन्ति सं मसिं ॥ सर्वप्रश्नावकाश्च निः सांगविकिणिस्त्रियाः ॥ पञ्चलक्षाडकांतकां उमाटं मनूमोदिताः ॥ नाधिसत्त्वानमानत्वाः स
र्वपिवा स्ममादिनः ॥ पञ्चलक्षरूपयाः स्थाने स्तुवन्ति सर्वदा सर्वदा ॥ सर्वपिलगावव क्षामनी स्काकान्त गामिनः ॥ पञ्चलक्ष इतरूपाः निरूपाल यन्ति सदा सदा ॥
स्कृत्य पानमिवां याश्च सर्वादव्यः सुसादिताः ॥ सुतवकांमेदक्षान्तः सं पालयन्ति सर्वदा ॥ ववंगवांपिंजनन्त समृत्या कान्ति समांसता ॥ सर्वज संगता निश्चं सर्वाविनिन

गी. [illegible] ॥

[illegible] श्रुतिः ॥ सर्वेष

[illegible] १०

७ [illegible] श्रुतिः ॥ [illegible]

[illegible] श्रुतिः ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

भिं॥ इणे गिय सदानम्बा॥ ३ ॥ [illegible] गंधा कृतलवा विय ३॥ [illegible] ज्ञर्म न [illegible] मिथ्याति [illegible] ॥ सर्व [illegible] विपवाणार्थ [illegible] ॥ [illegible] वाविभागे [illegible] वनिथ

किमंतरवो॥ [illegible] विनणा [illegible] ॥ गुणस्थानं विना कापि न [illegible] ॥ विनाम [illegible] ॥ [illegible]

त [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] निर्वि [illegible] ॥ [illegible] निर्वि

नो वितयं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] भवादि

संद [illegible] ॥ तद् [illegible] किं कानि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विना [illegible] ॥ [illegible]

तु॥ [illegible] ॥ [illegible] विना [illegible] ॥ [illegible] विना [illegible] ॥ विना [illegible]

यकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

आ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] १७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वालार्नी ॥ स्थ मानाविरुलिष्ठा ॥ ३॥ हयवा वहूता काभाउनिर्यान्ति पिण्डकवस्तु ॥ मानस्कं इ तु गमनान्वामन्यत्र तस्मान्नवर्जिता ॥ ४० धलिनानुस्वा ४ भूं गं कावि यान्ति सत्तापिता ४१ ॥ वयवा वि
दवि कला धना ऊर्नातनू म्रता ४ ॥ वनस्थ संवयं स्वताउनि यान्ति ए इक बस्तु ॥ नाना लोलापि कं वस्तु पनिग हस्त समर्पितं ॥ विहन स्वालसा स्वप्रा प्रकि प्रमादन ४४ ॥ वस्यानव
विहन स्ता ४ स्वाना मेना धरिगं ॥ वंइ डवा ऊर्नानका स्थानि यान्ति या पंक वा ॥ तालतलमलमहा ... धर्मकामनागि ४ ॥ धान्मेवोगत ४ स्थि स्वानानिस्यन्ति वधातुवे ॥
मानके प्रमता स्वलोपशिक्षा यथा स्वनावर ४ ॥ विहन विपश्या कामं जका स्काय यान्ति सर्वदा ॥ नाना लोउवि हनं स्वापर द्विषं मंगनामावना ४ ॥ कूदनवत ४ नेकवा मं का यान्ति सवन
ना ४॥ पथा गरद्धि धर्मस्का पुत्र पौत्र समन्विता ४ ॥ सर्वकर्माविहन स्वेव वनिर्यान्ति वि शंकिता ५ ॥ नाना लवा विज ४ कावि रुद्रशविद्य गिरिलिपन ३ ॥ हा विवो मंतना ४ धावि र्वी
सिद्ध नानवा हवा ४ ॥ कोवि स्त्री न्याधिपा ४ कोपि ब्राह्मणं आपि सवका ५ ॥ नाना हमारि जन स्यापि रवि यान्ति नसंशयः ॥ ५ ॥ सर्व स्वापि विहनं पहि नव ६ समवाक्षिमा ५७ ॥ स्वरनविमा
निनार्गा विहन स्वावनस्यान्ति सर्वदा ॥ प्रिनत्वानामनि यानि यान्ति कमीनिनानिग ॥ सर्वो स्थपि विहन व कनिर्यान्ति नवा मृवा ॥ एवं तं र्वेपि नाका ये सर्वपापविनाशनं ॥

३३ [illegible] ॥ निर्दे[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ३१

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ निर्दे[illegible] ॥ [illegible]

जवनं दर्पणमितिमस्तुं वंदस्वामि ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

मेवर्जितं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

श्री

[illegible]
[illegible]
[illegible] २९
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आ

भूतं वने॥ धर्मिनत्वं भवात्याणं एकत्रापावमनिवादि वं॥ २ ॥ यातत्वभगवंतं गत्वा [illegible] विद्यर्थाद्गृ तं वा॥ ॥ स वं [illegible] गावद्धि [illegible] संघनत्वमितिलत्वं॥ ३ ॥ [illegible] संव कु

यन्दनायवं॥ तत्नुदं नं यत्नातं क नवान [illegible] गुतं॥ ययतत्त्वाष्ठि नत्वतय [illegible] गनतं गनाया॥ [illegible] पावि निर्मुक्ता॥ सं प्र [illegible] जिनाताथं॥ [illegible] नि [illegible]

निवादका॥ [illegible] निगान कायनद्र [illegible] णतिंतत्वा॥ जिनतो [illegible] था जिनालनाथ॥ जिनानिन्द्रकाथ [illegible] भाल [illegible] पि॥ यावदनत [illegible] प्राति १८

त्रिवानिलनत्वा॥ नावत्वनात्र [illegible] जंनंगनुं त्रिन्नु एकं वं॥ यनाशे [illegible] तन्नाधन नौ [illegible] गुदं॥ यनापि [illegible] विंका [illegible] धर्म [illegible] त्वतता॥ [illegible] कथं [illegible]

कृनत्व धम्मकुति॥ अनंति [illegible] संतान [illegible] वं यथाविं॥ [illegible] जिनत्व गन [illegible] नाथ॥ [illegible] तताम [illegible] जिनाथ [illegible]

यावन्निवाघ्रयन्त गुरु॥ जिनत्व पार्वं [illegible] पालय [illegible] नाथ॥ [illegible] संगलं नाजन्नसर्व [illegible] मनात वं॥ जन्म वीधि बुतं [illegible] पद नाम्नयां॥ [illegible] नत्वा

दिनादि हूं [illegible] त्वा [illegible] तत्वं पंनि॥ तंत्य [illegible] नादि [illegible] प्राप्नुत [illegible] तं पार्वं दर्शो प्र [illegible] सवर्दं यनिन वो नवभावित [illegible] मह [illegible] यात्र [illegible] मत्वा॥ [illegible] आत्मनि [illegible]

॥ ऋषिर्वीतम

तु क्षा वो स्तं य स च [illegible] स कल्लं हि ग हृ दे या नि व छा न य को ॥

तुरकना किल वन्कि मह यो ७ ॥ धर्मिणा ला क ना थ स कल्लं ७ ॥ [illegible] नां मा तु क्षा [illegible] ॥ स द

ह कृत कमा नो वा [illegible] न हम सुत हि क वो धु ई लिनो मवि वी प ७ ॥ २ ॥ श्रुध श्रो का मही या ल ७ शक्र हि ७ पूर्ना [illegible] पे यु को ग म ई श नं मलो वं प दृन सु वी ॥ त्र

न र वा णा र स यं डि नल सम हवं ॥ ७ ॥ वंभ या वि नि वा स्य [illegible] सि श्व नि सा ह्ण पं ॥ स द [illegible] गवान्त कृ ७ हि य त्वा नो श्री ति वि ह्य प ॥ ममा या वु ञ् का वी वि तिर्मा मं सत्य मा नृ या ॥ त्र

तक मे ७ क्षियत्वा न स्क्रा या वी ह स ही त न ॥ कंव प श्र हि नि व पि ति त क्र में ह्या [illegible] ॥ श्ल गौत वा ह्य गृ वाल पं वि व र्ले न ॥ न ड्या न नु वं मा दि स्य मं वा श चि त्तु स नि ॥ अधि

मे पा धि नि ना स्य ७ लो शा ई न ता न पि ॥ मम ५ पो कं म सु पा त लम म ला श त नादि ग पु ॥ मा सु ७ ध्य म ता उ य या मे पुनः ॥ त्रि ० ॥ मया ई ग सु व सु नि मा य वि क्रा दि वा य त ॥

न य का [illegible] लि वी ध तुम प ह ता ॥ का श्य पं स सु पा मः स्तु ह वा ना म व मादि ग पु ॥ का श्य पम ता नि वी श सम ना व र्ले प स्व ना ॥ न य म न म ना यो ग ति सु भ व स लो वि वं ॥ अ

निर्हृत त्या वि म थ म श्व न ह्व मे ग वं ॥ न वा ई क मम स ह्र्म पा किन्नु प श्म नि वाति ॥ त्व वा म न वि हा न य ल दं ण सो वि का उ म ॥ [illegible] क्रया ना का उ बा वि य म्नु ल ग म

११ [illegible] ॥ कामम्म पंसंठप्रीतिम्णि पवंतिघांति पुक्षमंतिसा ३ ॥ मंदवाणं विचि वानानिसमानपविमंनदा ३ ॥ मन्तु कामा पिविलिनदा र्थ पणविधानिसांघिक ॥ मकुमंदि ण मांसु खास
वंदिसांघिकामृदा ॥ गणं णन ए मांघिलाणं डि सघांतिघ वांधिका ३ ॥ गण मं जेणवणे मझे पुण्णी वाघी लि सविमा ३ ॥ मं पुणसुमनिता कालितत्वानमानलानसा ॥ गर्ध
गसवं लोमतानामे पदि संपुण एघ छिं ॥ मंदल न कानमा सासुसाघपिय्यांतिसंवदा ॥ गनसमंपराल काउ कलवसीनि नूपया ३ ॥ अनादि पदिमलमना लांचिय ए
च्छिं मनर्धनं ॥ गनसमंमनसंपहि स्वामकापिकतला गया ३ ॥ लीं म फलमसमाधनाह्ठिमि घांति सामनगलण तासवानगपिनाणं द समाना मूर्य विमाणं घडा काम्मव २०
र्णमानुगा पारणंदक्कवांति घांति मा गण सवगया मता पाका मसघ णनएघानिकाम ३ ॥ मदक्लानाहिणानिक्रिस प वंतिय्यांति सरांवेदिता ॥ मवाएं मानसमा गनारे विपनाणा र्थ
वांधिता ३ ॥ द मा कूमलावयांसलंतियांति पुगलिक्ता ३ ॥ गाणलम्मानिर ए ॥ लोकामक था मसर्वविपांघिता ३ ॥ मवादि संलममा मझं वंतियांति पुघांघिता ३ ॥ गानसलस्म
ग कालंमा ३ ला णांत्रिमापर णांघिता ३ ॥ दम्मादुणलवयांसदवंतियांति विशंकिता ३ ॥ गणी मसप्संघका ३ मर्वसुरावामाघ संघिकामुपि ॥ द मा कूलमलसंत कामन्थ पि

[illegible] ॥ [illegible] पि ॥ [illegible]

[illegible] गाहा ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] पुव [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] पिया ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

उ. सर्वेऽपि लोका धृतिं लोकरूपं नमुख्य मा ॥ पूजनं यत्नेन विगृह्य सम्यगाया यान्ति दुर्गतिं ॥ न ताम सर्वेषु लोकेषु मा याता न स्त्वाभिषु ॥ कामिन येनाग्ने धर्मे स्वार्थमितिजितं ये गताः ॥ जाननी
कालियन्तो ये न सर्वेषापि महान्ता ॥ श्रीकृष्ण लोकाधिपाः तु या गति यान्ति सन्निधिषु ॥ सदा सर्वेषु लोकेषु पवित्र ज्ञान ज्ञाता ॥ सर्वत्र स्वार्थे लयं ये शुचि धर्मे सिद्ध्या सर्वमानं
या ॥ तत्वाना शार्थिक व सर्वे श्रीकृष्ण धर्मानुष्ठा निधेय ॥ विशुद्ध ज्ञानेन सम्याय ज्ञाता या यान्ति दुर्गतिं ॥ कदाचित् यो यत्नतया न हि सर्वमिति तमिमा ॥ नित्यं ते शुभि यथा क्षेम वि
यामिविरागयि ॥ सदा सर्वेषु ते लोके दुर्गतिं नापि तत्र ॥ सदा ज्ञानं समाश्रित्य वृत्तिं यान्ति कालिनिवर्तनी ॥ सदा सर्वोपि ते लोका ॥ कृपि यास्तान्न कामरूपा ॥ सोऽपि मा
विग्रहं कृत्वा सम्यग्याया यान्ति दुर्गतिं ॥ सदा सर्वोपि श्रद्धया सम्यक् ज्ञात्वा यत्र पूजनं स्पर्शेः ॥ कृष्णं ये भज ज्ञात्वा ज्ञात्वा यान्ति दुर्गतिं ॥ एवं पत्रीका लोके लोकेषु कर्मे कृपालुनि २
तिः ॥ नवसीमिन यत्र वाधि मार्गे सत्वाश्रितं ॥ एवं सूर्य पतिक्षय याव ल्लवि समाहिता ॥ ॥ वाधिव यो व्रतं तु ज्ञात्वा समवाव निवृ मर्हे क्षमा ॥ मानु दी दक्ष कर्मणा यस्य वाधि मा
धनं पदि ॥ उव ज्ञात्वा स्वर्गं ज्ञात्वा कोनि प्यवस्र गाहितं ॥ श्रुत्वा स कृत्वा गन्न मं तन्न समर्पणा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ तत्र चाधितरम्य वाना यो पूजा सत कृपि मा २४

नमः ३॥ वन खड्ग निवर्य्यायी यागिं छ स्तु मुक्तान मः॥ जनाक करविगं अमृतं॥ त्वाम तुष्टि गात कः ॥ जनाक दृगिगिं वेष्यं ८ स्तुत्वाणो मुपाय हता ॥ ध्वं क्षाम कजन्मालिन

न स्तुक्षि मानस ३॥ त्रिन मम ह अनं कन्वा सुन्दसुञ्ज मे मालसं ॥ वर्ण सुभ्य विरुञ्ज मा नवां ३ ह क्षुर्ने मालस ३॥ अनेक जन्म माहृंद्रं त्रि मनसानिसुन लकः॥ मना प्राविधि वर्वाचंव

न नंवाधि मानस ३॥ स्व म वानता हिता (धेमि आवन्न मा यथं शुतं ॥ मन्नमानसमनोन्द्र सपुनावृति ३ स्व ता ॥ मुधुनवाजन नमा क्षय सर्वाधि विकृत नुष्ट ष॥ पुनातन गनीन स्याद्

नुन मांतिवि प्र गो॥ मर्वधन्द्र हस्तिनर्नाम कृत्त नाम रत्नवान्नुधी ३॥ मस्तु वालिनिर्वपाप्रात ३ काप्युत नर्मा विगश॥ कृ न्नणा माय काष्टा दीन्न माद्दे वन वन ष॥ वे सत सा कृमाद्य

म गनेि थर्न कुवान धरा॥ सन्न ही नं सुहृदन्ध म प ध्य क्षान निक्रुर्गा॥ छ स्तुप्र कुक्षकं व दुर्ग स्फुल नन ३ प्रवादि नव ३॥ का कुतानं पनिशय कु नाजो निं १ त्युनगाय वनमुमकल रामजा मय

न स्य यताय मुं न मह॥ मना न्यान्त्विनं य पद्मन्न सौगं नरनुपाय यन॥ मनोवि नानत मह काय कु क हुन स प्रनादि मन ३॥ नस्तु पावो पुनन्न गमावन न्मुरा गमे ३॥ नतुकाध्य नान माया म

मुहर प ध्य कुनेव नंतु॥ मानं ८ समाना॥ मा ऊ हानं न्यधी दत्त॥ म कनंतु नानार वा तु क्षानं म ग यो दिष्टु॥ नाजी गधन मानं द ३ हराय गनन्नना विनमा॥ मा ध्य हत प्र पनं छ स्तु

आ

मिसमस्तप्राणिवंदको ॥ स्तुत्वा सर्वं स्तुतीन्द्रो तं सञ्चक्षत कृतकृत्यन्नवा ॥ ते तान सर्पि वा गान्तु ॥ सर्वा [illegible] स्तव्यं ॥ [illegible] सर्वा [illegible] स्तननान्नाप्त ॥ [illegible] म

नायप्रदर्शासु प्रमादितर ॥ [illegible] सकलनृपो [illegible] [illegible] मानुष ॥ तम नीय तस्याः आपनीयतनाश्रिव ॥ [illegible] कवाः [illegible] पस्या [illegible] ॥ [illegible]

र्णं सर्वं पंगाय स्थविधि समर्थयतु ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रतिपश्येवं मननस्य प्रतिलिपि च श्रातु ॥ [illegible] छत्रमौ

कनृ ॥ [illegible] छत्रत्नी [illegible] मानु ॥ [illegible] सर्व सनृ [illegible] ॥ बोधिमार्गे [illegible] ॥ [illegible] प्रतिलिपिं कृत्वा

कृत्कान ॥ सनन्वित ॥ [illegible] समी [illegible] कार्य प्राश्रयतु ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रतिलिपि [illegible] ॥ [illegible]

नृगोलनाई [illegible] ॥ [illegible] ॥ एवं प्रतिलिपिं कृत्वा [illegible] समादित ॥ [illegible] कान

[illegible] ॥ [illegible] भगवान्धर्मसमाधिं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नृ ॥ [illegible]

२८

सूध्रकृदिविगत्वामुदान्वबग्न॥ तथ्थैत यान्स्म क्रोमायी सुहत्वागंसुगगंसवा॥ कात्तदद्दं पविन्यवक्ष्म धिविगत्वा प्रवमतु॥४॥ अभंसरगवाला दोकृष्णकामर घूनाग्नव॥ भाम्यतुर्निमभवसुयर्मसुधाधि
प्रतिधिंबवधगु॥ यासोस्नुदृद्धुतिर्नाम कृतातस्यंमुनीश्वर॥५॥ यासीनदालग्नसंश्थीसुवान न्यायमहामनि॥६॥ यावन्मयसगी तान्यासात् दृवी यरत्था प्रना॥ वद्धुभिमंतुमहाआदिष्टं सुनार्दत्वं ध
यथ्आदितं॥ तरथेवालुपुता वोभितत्वाकाश्चेति आमय॥ वक्ष्मिगनोहृषादिष्टं श्रुत्वाराकाचरतत्पातिथा॥ व्योगिसंप्रीतिः श्रुप्राप्नुनन्दस्यवाचिक॥ ॥ वद्धुभिंडी
नहस्वामकमाला वंदृपृष्ठातिकृतककानो बवालं॥ २ ॥ अष्टुभयामालिनगतिहृउपर्णकायतीश्वर॥ अष्टुश्वेत कां वंगसुवर्णसुमनांश्च शिवमशवीहृ॥ ततवसन्द्यपवना
तासवर्गेश्चनामहृकला॥ कोश्चलायी दविंद्रसवासमगनयाजवहृ॥ तापितनमेधीकातंसवर्गीधूपावदेवतथा॥ अत्यामवमतापूर्यावातसंश्चहृ मानयत्॥ नृतादिमविंश [illegible] पानि
॥ इन्द्रियधुधी॥ दानेधर्मसमुत्साहि सद्धर्मलातेसंकवत्॥ तथ्यसवान्यतावपिपनकर्मसमस्पत॥ सर्वार्थीविन्नउपंश्चवपर्नंदवाप्रमाहिता॥ नदंवोस्तिन्दिन [illegible] भिम
नायप्रागता॥ कृत्वार्पविन्नसंपेघा। शांकुंजाकोमुपागृहं॥ भवनास्यपृहं वांक्षा थत्वा नद्रमयोनि॥ ॥ इतिश्रीपितिभ्व शागान्यप्रतिविंबित अक्षमाहिका॥ ॥ [illegible]

ज्ञानधर्म दृढ बाक्यं नत् ॥ [illegible] मसंशो [illegible] सर्व विषया का पानग ॥ संतानं विनाशात् [illegible] ॥ [illegible] र्पूर्वं पिता हि [illegible] कालं तस्य तं पु
ब्रह्मन सगानसाधन ॥ [illegible] क्षिनिव वाम तर्पत सर्व हि यातरु का ॥ सर्वानि नियम्य [illegible] मर्यादं वा तिना दि [illegible] ॥ [illegible] तावन स्व [illegible] ज्ञा [illegible]
[illegible] नलजा नीनि हर्वी ज्ञानं पदं नत् ॥ [illegible] मुनिर्निर [illegible] नमस्ता ॥ [illegible] तान न तथ्यं [illegible] ॥ [illegible] मुनी नां सपु [illegible] नं दि
वा नम्पद ॥ [illegible] निमि [illegible] बाधि पा [illegible] ॥ [illegible] बाधित [illegible] ॥ [illegible] नातीन [illegible] ॥ [illegible] न [illegible]
[illegible] नं ॥ [illegible] सभा गन्दे [illegible] मुपाद्य मह ॥ [illegible] सीत [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कादिपर्व [illegible] पूर्वि
[illegible] वा [illegible] भूमि माल ॥ [illegible] मस्तु [illegible] नातमक वाद ॥ [illegible] मनीत [illegible] ॥ [illegible] नाति ॥ [illegible] मदिर [illegible] पु
भाव ती ॥ [illegible] गवा [illegible] ज्ञिनागम ॥ पूर्वजिनानन [illegible] तनत [illegible] ॥ [illegible] समाना [illegible] ॥

र्यामिति ध्यानुनयतो यतः ॥ न याङ्गमप्लतगाप्य ध्यानलीनं विना वृत्तं ॥ ढियांधर्मार्थिनां कृत्वा मत्वा न त्वी कृगं ययौ ॥ ततः स तगवान्स्कन्दो धर्मि भूतं पुनाद्दगं ॥ सर्वमन्त्र हिता

र्थेनतक्रमं दृष्टं मेष्ठगवा ॥ ततः स सर्वविदुः स्वप्नमहात्या त्रुमपूर्वानि ४५ ॥ ततो मन्त्राय तस्यादि सङ्कमं तमुपादिशत् ॥ एवं स तगवान्स्कन्दः धर्मेवं धुवर्दयत् ॥ मदं वाले

नमानुष्यो नवतो नो । क्षेमयवगायग्री ॥ मेतत्कुर्गामन्त्रं यो नत्वा सर्वशोकात्प्रवाधिता ॥ तत्नामनिवस्तुगाल प्रसंवकृग मतनाविगत् ॥ गतेषु विचिन्न ४ ज्ञानसेवणर्भतगाना यो ॥ एव

न्ध्युर्दत्तुमाना मेव वस्तु वर्ष मृ वानि ४७ ॥ गर्ज्जो विकृता विहाय सौ नागमिनाति वत्तु ॥ तस्य दा गर्मिन ४ यायि वृत्युगायन्न धवत्वतः ४ धर्मानुपानि । तो वैनि न्वो वि कुछ न्नुमा

नि वा ॥ वयि स्वयुनाय कृत्स पापानि र्तवयासिन्नुत ॥ यायि स्वान्त्रिया (थेन यायिचे या वृगार्थिनि ४८ ॥ तिन्न्नतग्नं कृत्वाप्रावननन्याधि संवनं ॥ ततः स तगवान्यू ढाभिवाद्दत्तुमन्त

नोर्थि यात्रू ॥ वायिमाणं पूर्णि स्वाप्यात्ककृर्मे वानरथमवाप्नु ॥ ततः सर्वपितालोकायत कृत्नेना धनाघ्नता ॥ संयकृगनवं गत्वा पावन्न छाधितमनं ॥ मदं ततत्वं गावनत सर्वतमंग

तंयुनगा ॥ निनुत्वागंन हुत्वाहं कृगयग क्षुवारा वनु ॥ यदसौ मानजि हृदी मवं मत्व गुलोर्थलग ॥ वनतरगवास्कृगमानुकृतनेतरूपंगि ल्लमयो ॥ १ ॥ यकृतगोवि तं धर्म सर्व लोका

३१

क्षित्तनथ॥ वांछितवर्गसुखं [illegible] वतिस्यग्नि [illegible] ॥ [illegible] मंगलं तिन्नपदवं॥ सर्वज्ञापिमहा [illegible] ज्ञानं [illegible] तदा॥ [illegible] नाथ [illegible]

छित्लान मानु॥ [illegible] निर्ग्रंथ मात्ता [illegible] जिनालयं॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

थान [illegible] निर्ग [illegible] ॥ [illegible] निमानि [illegible] ॥ [illegible] तीर्थिका [illegible] ॥ १९

[illegible] मानि [illegible] ॥ [illegible] तीर्थिकान् ॥ [illegible] तीर्थिका [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] तीर्थिका [illegible] सर्व [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] विवाद [illegible] ॥ [illegible] तीर्थिका [illegible] सर्व [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

४ विष्णुध्यानं वा नरा ये यान्ति स्वर्गम् ॥ यथाग्नि पापकाष्ठसमूहान् दहति तथा व्याधि पापानि दहति ॥ तथा नराः ये कृष्णपादाभिवन्दनं कुर्वन्ति ते पापं विधूय यान्ति ॥ एवं सर्वे विमला नारायणं प्रति धर्मवन्ति ॥
मन्तारो ॥ पतन्ति ध्यायन्ति वाणीं विष्णुं यान्ति सर्वथा ॥ तत्र तस्य पापानि नश्यन्ति ध्यानपापकं नाशयन्ति ॥ नानाविधान् पापान् विमलाः सर्वथा नश्यन्ति सुरार्चिताः ॥ नारायणं ध्यायन्ति ते सर्वलोकाधिपाः
स्मृति ॥ यथा भास्करं गत्वा तमः विनश्यति पापानि चूर्णवत् ॥ यथा गजः सिंहं दृष्ट्वा पलायते तथा हरिं दृष्ट्वा पापानि नश्यन्ति सम्मुखं ॥ तथा नमस्कारेण सर्वं कृत्स्नं पापं
मानुषाणां ॥ मनसा वचसा कर्मणा यैः कृतं पापं तद् विनश्यति ॥ एवं सर्वं नारायणनाम्ना विधूयते ॥ भक्त्या च विष्णुं ये पश्यन्ति नारायणं ते यान्ति परं पदं ॥ सर्वं जनं
वक्ष्ये ॥ नाम्नो विष्णोः पापानि विनश्यन्ति ॥ तत्र यथा गङ्गायां स्नात्वा पापान्मुच्यते ॥ कृष्णस्य नाम्ना सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ध्यात्वा हरिं ये यान्ति नारायणं
यान्ति ॥ नारायणं विना दृष्ट्वा सर्वं सुमनसा नाशयन्ति ॥ तस्मात् कृष्णं प्रणम्य यान्ति सर्वदा ॥ नानाविधा सनन्दनादयः सर्वे ॥ नानानाम पञ्चकं नामानि
पश्यन्ति सम्मुखं ॥ नारायणाधिपास्तं नमन्ति सर्वदा ॥ ध्यात्वा पापं विहाय गच्छन्ति ते यान्ति सम्मुखं ॥ नारायणाधिपास्तत् सर्वं पापं कृत्वा विमुच्यन्ते
पश्यन्ति सम्मुखं ॥ नारायणाधिपानां योगिनां मध्ये नारायणाः ॥ २१

वैतस्वाहि का ॥ ४ वैसुखानि यान्ति ७३ तत्तु वा ॥ ममतन्मु र्वेपि तत्काश्च त्वामि धर्मान्नुवानि ७४ ॥ सकृन्म साधस्मा पुरुषार्थ नि यान्ति ७५ तत्तु वा ॥ एवं सर्व कृतात्कात्म नुर्वर्ग तत्काल [illegible] ॥ नानान्
पश्चनात्सर्वो न्यार्थ चिन्ता प्रयत्नतः ७६ ॥ स्वस्व धर्म प्रति स्थाप्य कृत्वा तु संयता धिमात्र ॥ बाधिमा मार्गान्न्तानाम् न समाद्युक्ति सकृच्च ॥ मत्तत्कृत्र्यो मन्त्रं पीत्वा सर्व तोका पुरुषादि ७७ ॥
थाधित्त्वा वीत्तं गं हत्वा वाति यान्ति ७८ तं तत्तु वा ॥ तदन्नतस्तु [illegible] त्त वश्च सर्वे वानिनः पड् वा ॥ सर्वत्रापि ७ तत्राहं गति यान्ति कतावापि ॥ मन्तु स्वच्च ससर्व बाधि सत्काश्च पुरुषादि ७९ ॥ सर्व
तोकाहि तं कृत्वा कायान्ति सद्विनं गता ॥ एवं गतस्त्वविनं स्थित्वा वानरस्याति तत्र तं ॥ सर्वान्याधिं पर्थ कायस्य या यान्ति वनिमानत्यं ॥ मतच्च कालो कालं बापि तत्कर्मकारी [illegible]
नठ ॥ नीर्थिका भवन्ती नरु कार्थिनि यान्ति पुण्यानि का ८१ ॥ ततस्तत्तीर्थकालत्वात्पश्च कर्मप्रणिदधिनः ॥ मानन्नमानन्ता कार्थे द्युक्ति सर्व कर्मा ॥ ततात्क हि तंतत्वात्मदे
लाथा ८२ प्रवाधिताः ॥ इत्थं कृपातधर्मस्य ध्वनि यान्ति सत्को विनि ८३ ॥ ततस्त्वापरतं का ब्रानिर्वाश्च रुन्निमत्र्या ॥ सकृन्मांधि प्रतिविम्ब पवनिन्म्यान्ति पुण्यादि ८४ ॥ पुण्यदं [illegible]
ना ॥ भवर्वाहिंसाकर्मसमुद्यमा ८५ ॥ श्रावृत्तिस्तुनमुत्तमं कृत्वा निश्च शास्त्रं सत्रतां ॥ कृतियोत्र तथा सर्वहिंसाकर्मसमुद्यमात् ॥ कृत्वापन्न सप्त पश्च [illegible] या सर्वाणि पुण्यानि ॥ पर्वि

आ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] २१
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

ज्ञानन्दरूपं स्थितं सः॥ ॥ वृहद्वृत्तं॥ कृतालस्य तस्य हस्तात् समुपाव्रजत्॥ [illegible] मायावं कृष्णकान्तं समीक्ष्य सः॥ [illegible] ततो [illegible] ॥ [illegible]
भक्तं कश्चित् [illegible] मन्वानि [illegible]॥ [illegible] समाचारोऽपि गन्तुं नाद्य सकृत्॥ [illegible] समभ्यागत्य समीक्ष्य तौ॥ कृष्णकान्तं नृपात् [illegible] ॥
ह ह्य वै विज्ञानो [illegible] गत्वा [illegible] ॥ [illegible] दीनानाथोऽपि [illegible] स्थिरः ॥ [illegible] सर्पिर्भिन्न [illegible] ॥ [illegible] काले [illegible] त्युक्त्वा [illegible]
[illegible] स्वर्गे [illegible] ॥ [illegible] वाधिसा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] यावत्
[illegible] ॥ [illegible] निवर्तक [illegible] ॥ [illegible] समागमत्॥ [illegible] सर्पिर्भिन्न [illegible] ॥ [illegible] वापि [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] समुपायथौ॥ [illegible] कृष्णकान्तं [illegible] ॥ [illegible] ॥
नतु॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

यथा ग मुपष्ट स्थित श्च सु निव मना निता ॥ जना धमा श्च सर्वज्ञ सु निर्मना ॥ धर्म श्वि ॥ कु

नः सर्वज्ञ नाना प्रवन्तिन समीन नाः ॥ स्वयं कुन्तु त यान कुन्ता त्वाह नवान्विता ॥ ५ ॥ पुर्व जिन प्रभादि ताः ॥ स्थान सर्व ज्ञ डानि दृष्ट सर्वमन इ सुयः

न पूर्व लोन जाः सर्वज्ञ ज्ञा यं ता लि न ॥ सर्व तत्वार्थ पदा सृवि ॥ विया ॥ ज्ञ निय जन मा: पूर्ण जिन पूर्ण ॥ कृत्या योगि वं ॥ कुल्ला ती र्थिका ॥ सर्व सर्व इ त्वा

॥ वानि निंक मती धूवं प्रायन स्व वाधिता ॥ सम नुष सर्व बु हा न्या सम्भूत का ॥ ज्ञाना ना निश्रा नादि पद कु ज्ञानादि ॥ ज्ञानं मन्त्व मुर्व विराधि ॥ जिनेन्द्र त्व तु सुवर्णाकि निर्मित कं

निला जिन ॥ जो दिना स्व विधा त्व विरहमं पार्थिव ति ॥ इह मुनानेनाय ॥ श्री पित सर्व स्मि नाम नी ॥ स ई गन्ता ना नन्दन मनं विधि दिव्य ॥ स लोम यं पूर्वा एक नाथ प्रकृत्य नानान वै ॥ पूर्व कामन न्यन य सु

हलो कं ॥ मल सर्वज्ञनाः सन्त नं सु निष्ठा ॥ एवं सर्व पि सत्वा ॥ जिनेन्द्र निर्मल का ॥ ॥ त ल मयं पूर्ण कृ ना ॥ पूर्व नृत्य नानान न थे ॥ सर्वज्ञ पिका सत्वा मत्स्य धर्म व माटि गत

वि भूवं ना विधादि ता ॥ जिनेन्द्र सर्व ज्ञ माताय नहा ॥ ध्यान समाधि तो ॥ श्रा विनु मन यं पन्थ न्या धिल सा महात्मा ॥ सर्व गो पि कान्त नाथ नहीं ॥ धर्म व मादि गत

॥ मन्न मूर्ति विद्ना श्च सर्व तत्वा हि ता थिन ॥ जिनेन्द्र रक्षा ना नी वं ज्ञान्य ग मनिना न थे ॥ मनाठ स म न्य न्या स्या ग विता ॥ सु मा स्त्र ॥ व ज्ञा नाथ कृत जन्म ना

[illegible]
[illegible]
[illegible] १८
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

काउ॥ सव्व दु णसनं छेत्ता वनिव्वयंसि मसन्त कुणाउ॥ कथमण सर्वतो काया सद्धर्म साधनार्थिना॥ समंत्रित गन थंगत्वा च वनि व्वयंसि संरंभो॥ [illegible] नामसव

फ्नि॥४४॥ शङ्का या गंन रवाक्ति त्वा वनि व्वयंसि उत्तम तवा॥ [illegible] स्थानं तवोन्ता [illegible] स्वानि देव॥ वाधिव योधे गं त्वा कनि व्वयंसि सतां पि कानु॥ [illegible] वा बिनका म

गन्तु [illegible] वानि॥ ४६॥ एवं [illegible] मानन बाङ्क कनिव्वयंसि जिनालि कानु॥ [illegible] [illegible] [illegible] संनतं [illegible] सर्व मय॥ [illegible]

मध्य नानि वं यीत्वा सर्व लाकाउ पु वाधि ता॥ जिनतत्त्व कनं तत्वा वनिव्वयंसि उत्तम तवा॥ एवं [illegible] सर्वा आकान्त क्रम वानि देव॥ वाधि नाग प्रति [illegible] पानमिथ

सि सर्व [illegible] पश्य वाभिनं मत्ता [illegible] वाधि वानि मोधा॥ [illegible] गं त्वा कनि व्वयंसि जिनालम मानु॥ [illegible] वाधिम त्वा [illegible] गं त्वा [illegible] ॥ [illegible]

नियानि समादि नाधा॥ एवं [illegible] तमा धिसिद्धि साधना॥ सर्वता कडि ता थे पदवनि व्वयंसि महातन [illegible] मंन [illegible] पन्ता काउ पु मादि नाथ॥ [illegible]

स्व गन धं त्वा वनि व्वयंसि समंत्र गो॥ [illegible] तो केमु मानिता वाधि वानि थी॥ सर्व मंतल [illegible] ता थेन साधयिष्यंसि मत्मनो॥ [illegible] विजवा [illegible] ममपदवा

[illegible]
[illegible]
[illegible] २२
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गउमरवाली जिनालञा३॥ बोधिसत्वा महापि ह्वाल ह स्थान धा[illegible]ला३॥ सर्वनिमान्यापिनाम्रा [illegible]मान धर्मावलक्षाणि थ३॥ सर्व्वथामुहमा[illegible] समर्थ्य[illegible]क पा[illegible]ला३॥ [illegible] व दी

पिवृ दीनाथा विसत्वा३ मनु[illegible]गा३॥ स्वस्व[illegible]ता लैमा गतृ प्रवनि ष्पफि तव[illegible]३॥ [illegible]नानावि[illegible]र्य३ [illegible]नना३ ममनाक३॥ बोधयि[illegible]कोन फनि ष्पनि नान[illegible]

सर्वाधि वानना लक्ष[illegible] जिवाम्य[illegible]धिमानु॥ बोधिमार्गेश जिव्हापवान्भिष्पफि संवनं॥ [illegible] सर्वौपमा तत्वा ग[illegible] न धे[illegible]॥ बोधिव्यपांश गे व त्वावनि ष्पनि [illegible]

॥[illegible] धा३ सर्वे मर्व सत्वानि बोधयका३॥ बोधिसत्वा महासत्वा रविष्पनि जिनालञा३॥ [illegible] धंगत्वाव [illegible] विनानि [illegible]॥ जिवि [illegible] बोधिमाला [illegible]

यु॥ [illegible]मान३ समाली क्व सर्वी न्हो न्वोधिशिरा गिन३॥ बोधि पाता ऐ पत्तानिर्व निष्पनि वियारि [illegible] नाना पाया विक्षने [illegible] मर्व [illegible] नवन [illegible] किमानु॥ [illegible]

निष्पनि रवानमानु॥ [illegible] नीर्थिका३ [illegible] सर्वानंतनु न्नापिना३॥ [illegible] धर्मसं[illegible] ज्ञाप्य वनि ष्पनि विनानि मानु॥ [illegible] सर्व तीर्थिक गन धंग[illegible]

मवनिष्पनि एवं बोधिका३॥ [illegible] मसत्वा तक्ष [illegible] पालवानि पं३॥ [illegible] स्थिपिय्व विप्प्रपशपि दृष्टिको॥ [illegible] पपंतनका [illegible] नाथवा३॥ [illegible]

ह गनाकु[illegible]स्कंधी ॥ यद्धनलोगत्य दानं [illegible] सर्वथी ॥ यथा [illegible] सतव घातो मन्त्रवसगावान्यल्तु ॥ यदर्कं जनयक्षो [illegible] ॥ [illegible] ध्यान्
तारे ॥ सर्वाधिमन्वा स वत्ल थी ॥ [illegible] स्थम दु दो दान प्रथ आर्थिनं ॥ [illegible] सर्व तत्व हि मार्थन ॥ [illegible] शर्वं शविनमान पु
न यत्नु ॥ सर्व सत्व [illegible] थै न कालो पदु बाधाा विन ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्व सत्व हिताय गय ॥ सर्वो [illegible] श्री
न्न वाधिं प्राप्य जिनो लवक्ष ॥ [illegible] सर्वत्र लोकेष वा [illegible] ॥ सर्व धर्म प्रतिष्ठाय निर्दे [illegible] ॥ [illegible] ॥ त्स
मापिद् [illegible] ॥ [illegible] पावनलभ [illegible] ॥ [illegible] पूर्व सार्थि पाथ्यजिनो लवक्ष ॥ [illegible] प्रमाद्य विप्रव
ध यन ॥ दानधर्म प्रतिष्ठाप्य पान प लोक [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
पा [illegible] ॥ [illegible] ॥ त्रिविधि मपि मन्त्र [illegible] बादं [illegible] ॥ [illegible] वना स

२३

॥ श्रीसिद्धीमत्कालाकाशालायां तु गवर्गा वा संकुलनासकृद्धिं भवनलोपवर्णनं समाप्तं ॥

सर्वत्रमवलल खाद्याः कलिंगरविविधि कानंपानि वृद्धवलावा ॥ ४ ॥ [illegible] नलैस्वैव मद्धवी ॥ ल द क (श्रोतु निश्छामि पूर्व [illegible] नाद्गतं पूना ॥ श्रावोकाय मुनीदुस्य भक्ता

॥ [illegible] कामनाना [illegible] लिश्च पूर्व मागणां ॥ उमपूर्व कं नामर्दंकं पूलनैस्वैव मद्धवी ॥ [illegible] तत्र्चाविंति नाद्धा [illegible] विर्ति नालका ॥ [illegible] तांवा

न गन लं व श्री ॥ यस्य व्यान त्यावनेन गन्ना (थ नवं लो तो ॥ म ह वा नन्त मुपाद पूलन ई प्रलल त्र वो थे ॥ [illegible] लाथ ॥ [illegible] निर्धापतिथ ॥ वंग

पिलमाला चैव मादिंगाश ॥ [illegible] नाम्स मा आय यथा स्व कृत लाक्षितं ॥ [illegible] काम [illegible] पूलु ईर्जनं लतं ॥ [illegible] नाननमावसीति विधृता ॥ [illegible] लत सर्व भृ

[illegible] लदीय कृणी ॥ पूर्व पृथ्यान तोथन शीत म्याकि [illegible] मृद्विवा ॥ [illegible] कर्म समा हि तथ ॥ सर्वलत्व हिताथ्रान सद्य धम लनी पि हृणा ॥ [illegible] कि मय

न स्विपातृणा ॥ [illegible] विना त्व वृद्धु ई [illegible] कान्त मानल्थ [illegible] नल नृमिव द कोरु [illegible] [illegible] थानमीहि [illegible] वांत वो धि वोद वो नृपा ॥ म रा

[illegible] नवपावन ॥ [illegible] मनतलाइ प्रावलेश लमका गांव ॥ [illegible] पन्नाको डा दिन दिन त्र पा व पतु ॥

[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ३१

[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]

सर्वस्मात्स्वेकुमालस्मृतं॥ १० ॥ वि ॥ ग्रहणं पूर्वस्तु समुत्पाद्य गोत्रविनम्य पापलस्तु पाहि शुभाय॥ जिनलास्तवारि वा मनुष्यावनादि पुरुषानिसमर्पयंत्॥ यद्भाति
नाद्वत मर्णन्वैद्विभाहूगी॥ हुपूर्वमुदानंतुवलत्रय सौख्य कावि॥ ग ल्लान्नवलविद्रुवानगतनिर्धेय योत्रद्गात समर्पगुणं नलनिर्धीन तु ना॥ यन्नुत्तरस्य ग ननी जननीय भ
ग र सेवादि गामनमि साधनं निर्विश्य॥ ग्रान्नन गनहिमानहि वाधि पक्ष सदृर्मनल निकन्न यहरुभवमर्थ॥ उजायथावि पल्लाद र्थ यं वलतानिन ह्या वा प्राणि॥ ग्रह वि
यहि धानत धर्म हलान्न वाप्राणि॥ ग लानन्न न विद्रुवा तृगणादि वोयुकार्यमन यस्तनं तृपणं हि वस्तु॥ नि॥ श्राप्य पवणमलापननवान्य वर्तिनि॥ ग्रहणयथा द्द
जिदायग लेसमनं॥ दानाश्रुवासभान्तु ढा ऊ वा पाला द्विन पार्थयथ॥ दर्गाय शूव लाकस्य मा लन्तु॥ कन्न गी छ र्ग॥ द स्पर्ष लोरमनकुत्या॥ प्रणि गृहं सुखापमलाहृ
क्षा॥ गलन्तु विहहा ऊ गनि यद मी दहा गिवाद्रु क्षिना॥ इन्न शहुगलन मर्याविवस्य वाप्द सागिङ्क नेपपि॥ साथा॥ लं यस्त दयुर्मी हिनतनं दलूं नवास वतु॥ दृ
वी मृत्वामि निनिराह्वतत्र रुगणा॥ वपामनवानविमाने॥ पनिर्णतिमा॥ यवा॥ तलितलीला तयात वार्हीकरानेराम्न विकाल दध रूलं तु पानं॥ कर्न सर्स्य द्वे

श्री म

नं मूर्निर्मिकं ॥ यथा विधिवत्तम स्यर्व्यां ऽने ॥ समयाय यत् ॥ तात्र कं स्तगणं सर्व संघं संपत्निवाधिवं ॥ ६ [illegible] सन्न पतिकं वांह स्मारी कमर [illegible] ध्यथाय ॥ [illegible] आगु कमा मूल पम् [illegible]

छन्नायनं ॥ [illegible] मतु पु सन्नात्मा गंसम संघ मभाद यत् ॥ [illegible] स्तत सन्ता बाजात मत्य घंगं मूनी श्ववं ॥ नत्वाना वा मनो मान [illegible] पार्थ सन्ना जालि पूदा ॥ [illegible] वत्सर्व विनाथ [illegible]

मम संधिकृ ॥ [illegible] गृह कतु मर्ह श्वैवं दयालि [illegible] ॥ [illegible] कत्रा वाक्त्री स्ता मता विकृत मभीष्कृतं [illegible] नेदैव पूदु समान मंत्री वमादि शत्रु [illegible] धनु तानिमु मंग

नंनिनु हड्वं ॥ यत्तं यं सत्तात्ना [illegible] श्री [illegible] नमा ॥ [illegible] विपाकात्रतं वाधिप्रदि [illegible] नत्कृ ॥ वाधिव [illegible] त्वा वनस माहितावे [illegible] ॥ [illegible] धिया कं

न वीधिसत्र [illegible] कनरवं ॥ सर्वस त्व हिताथनं नं सं वा वि हानमा प्र हि ॥ [illegible] विश्वे मुनी [illegible] सांधिक उममू [illegible] ॥ [illegible] नंतं नूयं [illegible] समुपाय यत् ॥ स

नर्वाधि मृतोंड्कं मसंघं सा [illegible] लि ॥ पन्न ॥ तत्र नाम दिकीन त्वा [illegible] कानूं [illegible] यथी ॥ [illegible] ततु [illegible] नत्व ॥ [illegible] गोकृव ॥ सर्वसत्व हिता [illegible] थनि सदा वनु [illegible]

ततत्वं ॥ यो सातवत कसना जावं [illegible] वर्दनि साधिप ॥ [illegible] यम वत्ता [illegible] मन्ये वा मिति निश्च यत् ॥ [illegible] न प्रवत्ता सर्वतं [illegible] ग [illegible] ॥ [illegible] कतिन्न वीया

४१

वर्द्धमानन सद्धिया ॥ ५ ॥ ८ ममन्तुष्य विपाकान वाधि सत्व ॥ ६ ॥ तार्थ कृ ॥ बाधित्त्व यो स्वर्वं छेन प्राप्नवन लुवि ॥ ८७ ॥ न लु क्र गिविपाकनमन्तालि ह्र ॥ तथा धिविनु ॥ सर्वमान
गमणि ॥ स्वामं व छा सुक्र गर्जुनु ॥ ७ ॥ एवं मनतवृ ॥ दिह्न कृ ते मे घा कथा धुना ॥ ८ ॥ बधी ह्यास मा स्या गं ॥ ९ ॥ न्याय वं वन त्वया ॥ १० ॥ एमा श्च पिम नून्नाज यी व धिस्वाष्ठ्य त्लेण मी ॥ वो
ध्विव यो स्तु ग स्काप वा मय त्वाम वाज त ॥ तथा गमद्र तं निभु सर्व ज्ञापि त व ज्ञवं ॥ ११ ॥ क्रमा स्वान मिना ॥ पूर्य स स्थापितं सम्पाप्र या ॥ १२ ॥ क्षमि गता ई वा दि ॥ १३ ॥ स्वा ॥ श्रो
ऋ स हूप जिया ॥ मो ॥ थ ह्म नुना दि त्वा प्राप्न न त्व नार्य ह ॥ ४ ॥ शो घ्र स्व द स्ना मिन लम ने क यी य व व नं प्रस न्ना ॥ १ ॥ धर्नि ॥ ४ ॥ व यानि प मु दि ग म न म पव ग क्ष
म नु ष्या ॥ सर्वं ग वा धि स त्वा ॥ म क से ॥ ॥ ग हुव यो स्व न नो ॥ उ ह्रा मी स्वं स प र्णं वि मल त म न सा या लि व त्रु स्ता ॥ ॥   ॥ पुनि सी मि स्रा ग को
मा ला ना वा धि स त्व ॥ ज्ञा न र्हि ज्ञ न्न दे गा म स्थ ना व पा नं त मा फो ॥   ॥ सुभ्य ॥ ग शो मे स ॥ या ला मु दि म ठ मा ॥ नि ॥ पुन ॥ ॥ उ प स्त्र पी स म हें कं प्र ग त्व व म
ता प्त मा ॥ रा द न्न ॥ ॥ उ मि छ्रा पि य क्षु छे ज्ञा मु खनं पुना ॥ ए ते नं य न त सं वा धि श्च पा का ना व म वं फ़ि ल ॥ ॥ त हू वा न्न व वि ह्र ना गा ॥ धु ब्व्रा व स न नं ॥ ॥ वि म ल ण म स्ता द ह्व

श्री अ

॥ संपूर्ण यथा स्थितिमत्त्वं स्मृतान्ताय लक्षणं हनन्तु ॥ मंत्र ७ नपत्र

कुमभवसनाकस्मिन् ॥ ध्रुविवतादिगंध्य चागलसमस्थितिसवीनसक्ष्मा ॥ अथासिद्धिश्रुप्रदीपकानकानमयन्तकौविविसिद्धसत् ॥ गं त्वथासिद्धिनमालकत्व सस्मृताय लक्षणं हनन्तु ॥ मंत्र ७ नपत्र

त्वनैवमवदद्रिपद्मसन्मम ॥ पद्मवर्जितत्वविमानिसिद्धि ॥ कारुणीतानतवा ॥ सिद्धि ॥ नवार्चितंगतेनावकुत्रपंप्र स्नानबनाङ्गं ॥ वृहद्गजपत्नीतत्र स्थानिकाकावा ध्वजक्षुभि ॥ शिवमन्त्रा

नवायल दृष्ट्वा यामवलु सृतां ॥ ध्रुविकनादिवंश्य चागगन्वंस्युधीवप्रकृ ॥ यथा न संतनगंगदैवीत्तवमशुदीस्थिव ॥ तपगेमवनवनाहदुरी नोयिविश्रीमिदेव ॥ हवत्तवर्ति ॥ श्रीकथा

प्राभ्रवंगंगसमृद्रकं ॥ मद्दत्तय हविरुचियंत्वादपवा ॥ श्रेमनतत्वयि ॥ नतं मनक्कतंडं यानंहिकमीन्याभावस्या ॥ दृष्टासुक्त्वामगर्भंतु सान्वयाः पिछ्त्रुदीप्तिकानु ॥ धीकर्मिणःमन्त्र

हसनतसप्ततत्त्वंसद्यशस्विनानु ॥ शुभसृतांतस्कनंतवाक्यंपदहनामाविनिगत्वथा ॥ दृष्टासक्तावांकुरः श्रनामीहविलितमनेवाहयतु ॥ नमपनाभवेना अंगन्तुना शाभाहविमादिनवा

श्वभितानंगींनाइलमलाय यभिवाः हिरे ॥ दश्वांगं हि नितनकामाधनेकाविवानंत ॥ मामेनंव हृष्ट आरश्वितिपक्षानंगनेवानयत ॥ श्रुविलिवानिनवामामापियश्रा

विनादिगथा सर्वोनकानवरुपिधनपद हव्यानवाप्तकग्रहं ॥ नवमनथि हया हविलिंगं विनादयत्र ॥ ननकानिविवियनगा गयानाअं वितुमुखा हनन्तु ॥ तथा सर्वान

४७

पाहक्ष्यहक्षिन्नं प्रयाधयत् ॥ प्रादन्नं विनयनेव सत्कृत्य समर्मीजयत् ॥ मपि हस्ती सुदाकान्ता सर्वान्कांस मृपाहृगात् ॥ ८ ॥ सर्वं हसलवृद्धगास्वकयासरवं ॥ तताव्य
मनि शुकान्नागजन्दुवक्किन्निर्मक्षियः ॥ अमाक्षियमस्तथीगीयनकोधानसमाहितम् ॥ तथाक्लिन्नं तु नालोक्य गत्वा शनिवसन्दनं ॥ नृपर्णितं प्रगत्वा सपुनर्वे व्यावदयत् ॥ प
मथ दवसतुपार्थायं विनीतायनमयासथ ॥ तथाहृत पुनश्च शाकाक्षनानिनि स्तुतीदमं ॥ ककृतिक नादिनेऽ स्वानुपाजि यस्य पथाभितः ॥ तमा धन ॥ नीलाक्ष पुननव मेकाय
ग ॥ श्रुत्वा सत्यमननापि नयं कथं प्रदेदिताय ॥ गाकृत्वनृपाख्याय मांवार्थयितुमर्हसि ॥ अश्विनाहासमाहितुमन्मुख्येन बध्यानताय ॥ माऽऽस्लिकेन्द्रपनत्वा समा
लाक्षनन्धवीय ॥ कार्यं हमार्धि विद्धंनागमनमन्धीक्षिवयन्नकथं ॥ वताद्मवि क्ष्मेगक्लिन्नेम मामिकार्थं वनेन ॥ कीथ्य यनाग क्ष्मनौ ना दूवतृहतामेक ॥ केनापि शोभा
नेकंगमशाक्तिकजकुर्य ॥ समृद्धानुपिनेवनं नीदयपिकिकारायते ॥ कथं विनन्दहस्यानं पदी फाश्रुपिवमन्य ॥ को नृपाति धनानुपानं कर्तुं नगक्षवलित्रं ॥ गीमवगा त्र्यव
नृपापिहर्तुमननगन्त्वयुः ॥ एवंधवमनसाविदुर्द मंत्रिवसंनिर्तं ॥ मनवापिवनवनं शमयितुं प्रगन्तुयुः ॥ बोधयस्याधिनवाक्यशमयितु मनं क्विन ॥ मस्या

श्री

स्पर्धा मे दान मातृ [illegible] निदानं ॥ दानं शील [illegible] वाचमानं वा [illegible] पांशु मानं [illegible] ॥ दानं वि[illegible] दानं [illegible] ॥ दानं स्वर्ग [illegible] दानं [illegible] कर्म [illegible] ॥ दा

न [illegible] दान न श्री [illegible] ॥ दानं [illegible] दानं [illegible] ॥ दान [illegible] ॥ दानं [illegible] ॥ श्री [illegible] पि

द [illegible] दानं सर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ३२

न [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्व लोक [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] सर्व लोका [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] धर्म [illegible] ॥ धर्म [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ध्यानसमाधिना ॥ [illegible] समाधि [illegible] दानं विधाय [illegible] ॥ सर्वविरत्याधिप [illegible]

[illegible] यतु ॥ [illegible] जिन [illegible] ॥ एवं वापि [illegible] यथा [illegible] वा [illegible] ध्यानसमाधिना ॥ [illegible] सर्वसत्त्व हिता [illegible] ॥ सर्वार्थि [illegible] यथा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] मान [illegible] सर्व [illegible] हिता [illegible] ॥ [illegible] पानि [illegible] ॥ [illegible] दि [illegible] सादिका [illegible]

[illegible] सर्वे [illegible] तथा [illegible] ॥ दानं [illegible] यथाशक्ति [illegible] सर्व [illegible] ॥ [illegible] मानन [illegible] त्यो [illegible] नि [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वार्थि [illegible] यथा [illegible] दत्त्वा

॥ [illegible] पान [illegible] मी [illegible] ॥ सर्वार्थि [illegible] यथाशक्ति [illegible] समीक्षिन ॥ [illegible] सर्वसत्त्व हिता [illegible] ॥ सर्वार्थि [illegible] [illegible] ॥ [illegible] निन

[illegible] ध्यानमं [illegible] ॥ [illegible] सर्व [illegible] ॥ यथाशक्ति [illegible] ध्यानमं [illegible] ॥ [illegible] दान [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] प्रतिपादिता ॥ दानं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] दान [illegible] ॥

[illegible] यथा [illegible] ॥ [illegible] दानं [illegible] सर्वाणि [illegible] ॥ श्री [illegible] स्वामी [illegible] दिता ॥ [illegible]

श्री ॥ श्री ॥

॥ ममं ॥ ९ तिमन्वा फ संसान मर्व णा सूय वाञ्छिहिता ॥ बलमायोष वागर्थं सम्बाधिकृतलक्षण ॥ अथार्थ [illegible] मनु [illegible] ॥ वा

॥ मर्थं कार्य नाना गय मय कृत हृता दिष्ट मिर्दं हृ लं ब ॥ अथ श्रीमालिनी नाम ब कृ [illegible] वा मत्त्वा यथा कु ॥ अथ धं सं गीतिगतिं [illegible] पुष्प मालि

मन्त्र [illegible] नि लत्वानि [illegible] म्बुं जातं द व तां ॥ [illegible] सिद्धि [illegible] ॥ [illegible] लमि

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्व का र्य सिद्धिं [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

३८

यत्नकृत्कृति पृथ्वस्य पूर्वं वनिनान्य कृतं हतामा ॥ आयुष्य सदीर्घ सकलत्वं गनलवानंतं पृथ्वीधितन्मनवाक्ति ॥ बलं पुत्रत्वं पानि वा नतमत्वं हत्वंनिम ६ मम मलधिपाबाला ५ ॥ पृ
ब्रह्मत्वं हि ध्वनं स्तुनले ६ सहस्र पूते श्रमसानिन्वमारिपि ॥ समद्ई तीमावं ३ कं मधिपिधी नत्त ६ धनन्नस्य हेलं विशालं ॥ विविध्य ६ मा मनमस्य धर्मैर्क्ति ॥ यत्र देनला नत्वं भित्तू यगम स
॥ मलाष्ठि नालंनि मदव पृथ्वी ॥ यह इवना ॥ मस्तानिद्रम घेरी अर्थवका स्तुनिनन्नेश्च ॥ सं पृष्ठ ग मानविजिन देवतास्य ६ धनमल स्तलं विशालं ॥ नृपंवी मधरपि लंब्य वि ल
यविब पानना ५ ॥ पनला कनिका या लि कर्मुवा पृथिनी निका ६ ॥ पृथ्वं स्वैंगं मदामित्र मनुगामी मुख्तार्थ लग ॥ पृथ्व नभैनत पर्वतारुलानां प्रवनेधनं ॥ यमन्नु मपिव गानं
विविलनिं दिरमा हता ८ ॥ मविपृथ्वस्य तगाय नीलप्रलयवायवं ६ ॥ सम्बदं गतिनला हृ कनिनं दृग वि मर्पिता ॥ पृथ्वनुन नाद मांधाशिवनुरु शासनवानि ॥ पुरवा
कीन्नरवा मने ६ सवकाशिरलनानला ६ ॥ कि तावाद कमानायां पृथ्वमकं नंद कगं ॥ एवं पृथ्वं महन्नला विनयदं ग पापम ८ ॥ सर्वसत्वहितार्थेन वनम पाधितान्वनं ॥
दीर्घा पुनवरविसर्वैन्नु मोविमुक्त ३ पांशाशिसीरयामडलांस ग णं ध ६ ॥ देवा इवाद्दिविविधैनितु स्तानित्व कं ६ धाशिपाग विनाशं सत्यस्तु विधानं ॥ १ ॥ इच्छा

ती मां

कारव बृद्धिमान्नीन ३ सर्वमन्वहिताणय ३ ॥ उह्लत्ववितं समुद्दीर्य हृतनत्वसीं तमर्कयगा ॥ प्रह्लाधनतधिकलं ऊन्ननमसुमुपमालं [illegible] ॥ प्रह्ला [illegible]

मिद्ध सद्द विवा वाठीर्य दिवृक्षिना [illegible] शकृ ॥ यानलकेनाकानिवं स्व [illegible] विय ल्नतना मत्तोई ॥ [illegible]

हनुतमा ॥ य द्दृ ह्रा मक्षे ला वा मतनाति मनगर्भ वमनवितनामत्तुकं हनना लीकं वनोतित्र स्त्वाति तमसवावो म ह [illegible] ॥ [illegible]

र पुकाने ॥ [illegible] ॥ [illegible] निमया [illegible] ॥ [illegible]

हुतह्ला ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ किंचिता

लो गगा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

हृन्नीन्नह्नीहतातमत इद्रप्रयत्नं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६

४०

सूत्रमार्गी रुद्व सून धर्मानादि मम श्रीमान मन [illegible] मिशा हो ॥ [illegible] तं त मा थो जिहि ह्गा ७ ध्या स्व [illegible] ला मय श्री मा ७ ता लि कर्ष्ठि ॥ [illegible] ला वा वि [illegible] क व ही [illegible] किं तं तं मूर्ति मु [illegible] गुं ॥ द

सूत्र लब्धा ॥ [illegible] स श्रीश नर्मा पिकं पूजा यितं नमे [illegible] ॥ [illegible] ण्यानी वाज्ञा ॥ [illegible] सा धन्ना ॥ [illegible] जिह्वा सना ह [illegible] जल स मु पाठ [illegible] ॥ [illegible] तं न मा ला [illegible] नि गं

ला मूनी [illegible] ना [illegible] लि सु [illegible] वो मा [illegible] दिशक्त या ॥ [illegible] सं नम न्या लो [illegible] स मा [illegible] ल ममु [illegible] ॥ [illegible] लि [illegible] प्राथी [illegible] मा [illegible] ॥ [illegible] नि [illegible] दं मु गं

गर [illegible] ॥ पुत्रो [illegible] नमि [illegible] लि न दन [illegible] हिं जिा [illegible] थि नो [illegible] गवा [illegible] लि ॥ नो [illegible] मा ॥ [illegible] मन त्वा [illegible] ॥ [illegible] न नि [illegible] त्वा

त्युक्तमर्दि विमा लि लं ॥ [illegible] विम [illegible] नना [illegible] ति लाये [illegible] न्कृ या गु ॥ [illegible] विगा ने [illegible] ॥ [illegible] गा न [illegible] प्राथी नाल [illegible] लि [illegible] विना [illegible] म

मानर्हेग [illegible] ना ॥ [illegible] तं [illegible] त्वा थे [illegible] ॥ [illegible] वा नर्वा मं पे [illegible] स मुन्थि [illegible] ॥ [illegible] स्व [illegible] वा [illegible] ॥ [illegible] नि [illegible] मं [illegible]

कग [illegible] प्र मूना व हने ननघ [illegible] धं दरो ध [illegible] ॥ [illegible] तां [illegible] तं [illegible] ॥ [illegible] त्वा [illegible] नलं वांधि [illegible] प्र [illegible] ॥ [illegible] सन्यमान हृदय मं [illegible]

श्री ॥ श्री

मत्वानंदासाश्वपथानुयायिनां ॥ अशुद्धासुदत्ताश्रीलत्वबाह्नणागकृ४ सगोनवाम्नासत्वानहावगं ॥ स्त्रगनुतिकाश्रृणिपानि श्रीथलंविदिर्विध्रमन्निवकृ बुद्धिनां ॥ उयाश्चनरा द्रुमस्य
काथंनभाणुवहिध्वयरासरवाविहृनतः ॥ सुर्पेहि निर्लक्ष्यकर्णत्वयामहृदेवापर्वतकिनुपलुः कत्रियामि ॥ अत्रवति वाक्षपविता बिभंनवीयुक्षत ॥ सासोपमितामिवाकुः ॥
सर्वं मनंनुपरिविश्रवक्षाक्षमाःकृ लिनवमुवाचतागः ॥ सान्यथासांमणनागसंस्तवयितुमर्हति ॥ सर्वेषाममनागद्भुतववांहागवीयशी ॥ मदा कोपिकृतावागनया
सोवानआधियः ॥ सफलमदिवसकोसीस्वयमेवासये क्षुवं ॥ ययक्षीनामन्त्वदत्तसफलमदिवसस्वयं ॥ मवाहंमनगंयामिसे सुमनेन नाधिपा ॥ कृतिनमरहिगंगः क्वाना
गासोपुष्टिनिवाधिगतः ॥ तथेतिनि श्चयं श्रुत्वा पतिर्गुणैर्वगच्छत ॥ कताम देवपायोत्त्वमुदानीतक्षयतन्त्र ॥ सफलमदिवसंगत्स्वयमेवायथोगतः ॥ गरुक्मिनीगवे
यांगेहस्यान्नपनकेनतः ॥ सस्त्रापुत्रनागत्वाप्रणत्वेवंनयवदयत् ॥ जयदेवपुरीदाप्रयत्नोगवागजतः ॥ स्वयमेवसमागोयथायज्ञलिंगपणं ॥ सप्रोक्तयाक्षमा
याहस्वाहत्विनंनंसमागनं ॥ प्रश्नपृष्टस्य कर्णनेत्वामाःकृलिनवमब्रवीत् ॥ कार्छिलकोणनोरडमार्गविज्ञाय गवाक्षा ॥ स्तुतिविनादयत्नाहरिनंगपत्

४४

नस्यत॥ कंद ध्यन गगनं ता का॥ सर्वंग विस्मयान्विता॥ तथा ऊं लिप्रणवेवं ब्रह्माणं मूध्रुमादिना॥ ध्यायंमानर्थितई हृ यदनन्मयध्यदितं॥ तथायं स्वयमायाति स्वगा
णोवाने थाधिप॥ धृतिं दोविवौ॥ थिं थिं स्तुवमान॥ बसानथि॥ तं गजाधिपमायान्तं पतं पुनरायथी॥ गजेमतान यौनाह गजेंद्र गम्युपाह नव॥ गा ऊं ति
पश्चीनत्वापुरुवदैयवदयश्च॥ पुरी दवयनागंड्य थोविहापितं मया॥ तथायं तव गोकसी स्वयमेव समागत॥ ऊं तिति श्रमिमी गनथ त्वाद स्फिंष गंमतं॥ स्वा
थानशं ममालक्ष्यमूकनव मलापर्क॥ स्तुंमयं समामाणि स्वयमेव गजाधिप॥ नतुर्ग विनय सिंगा प्रयत्ना वशी वनात्॥ ऊं आदिर्द्धं नवंडगं ऊं बोलक्लिपकापि मव
॥ स्वामिनिन्यमकं स्वपुनर्वं मयवदंयत॥ पथैनाजगगौडायं विनीतायघ्यामया॥ प्रक्षकं गत्वनियोपि मवनामग्रतो धुना॥ स्थानं मंतेमानी ह्वत्वाग
मानमातृठान्॥ हस्तिलिंगंपु नागन्वा ककं पिडमूपाववनत॥ गजगस्य गगंडुल्य पुनत॥ समनुवाप्रिन॥ दरोकाकानयापि छंअनुप क्वाप्येवमेववी प्र॥ पानोमिवं
मसाला॥ क्षेमवन्नाज्ञानं मानसा॥ सर्वं स्थाव सता॥ वाञ्छां दत्वं हस्वयमागमेय॥ तदिदवतानां स्वकानां निर्विनी तौपि मयायादि॥ ऊं मानी पानन यः॥ पिञ्छ॥

[illegible] तपणं कृतिका सागरा मनांवितं नमः हां धर्मनाथ नपालय

आ भविग व सर्व लोकानां हितार्थ पालवाय ग ३ ॥ य थ ४ श्रिया वान समुद्भूया छन्न स्तुति स्त्रिया क्र ध्यी नि नाजू मूर्त्ति ॥ [illegible] प्रथ म सर्माहि तति मनन्य वि

॥ स्तुति [illegible] पादिनं [illegible] नाना मान [illegible] समाहित ३ ॥ चिंद्ध गद्व विनेवं स्यादि ति मा मद्व वीति यां ॥ शाद गमव [illegible] नाथ पितु माशि [illegible] ॥ श्री समाधि सु [illegible] नि वानवि

दां [illegible] स्तुति सनि [illegible] लिनि भाष्य [illegible] सितिति नात्मगतां नि गम्य ॥ अथ मनः पाणि दं वीं ह स्वा [illegible] कृ या ॥ [illegible] मोति मथ्वा दर्य ॥ [illegible] वाथि वा ॥ [illegible] पुर्व गा १

[illegible] ॥ [illegible] सामार्थ विनजा स ॥ [illegible] कल्या [illegible] ॥ [illegible] सूरता मंस [illegible] पुना ॥ ७१

जि [illegible] मनुस्मा नि विलस ना ॥ [illegible] विलस्या ॥ [illegible] सब सता वन ॥ [illegible] विव [illegible] ॥ [illegible]

स्तुन [illegible] स्व [illegible] ॥ [illegible] पूर्वे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] तमुन यखिनय

पुत्रादि [illegible] स्वानि [illegible] वी गुं ॥ [illegible] निवगत [illegible] सनाभिरा [illegible] कामेकं ॥ [illegible]

नंदस्यासृथव सप्त समवाप निह प्रधार्थं॥ एनं तस्य नामिकृ गतांनन्दवयनतस्यनाथतामृपगतामित्र सर्वं कृथिवा॥ श्री साधव सनत्क ती तनुलाम किष्किं दिवक वानुशिय ये
नमनिसरथवा॥ ८॥ तित्र्याम सारव्यानं श्र त्वालूपा दर्थापिम॥ स्तव सताक्रिमा तावाविस्मर्य समनुनाय यू॥९॥ तांसर्वान्वि सप्याऊा पा हृदयानतव्या स हूपातिभाग कृतंमूप्रमव
श्व द श्वव मनव ता सूपा॥ सत्वा खापि ता तस्य विसन नमिमं ह स्तूर्णवपाक प्रियूये॥ स्या श्रीना मनन दान गीतां विधिता प थ्वक्रियाणत्समः॥ जिवंडन्द नामितो मद मस्यन्त्र्मौपर्या फा वि
छापि तस्य॰ सा सत्य सप्य कमिथयावृ ममति नीशृति वानयं ११॥ ष्ठाक सवं विव र्थानय मन्व गथा वासौ विदर्थाप यूण॥ तन्वायन थन् मुमनु यन्दिरा गं कष्मिं स्त न क्षाव य
हृ॥ कामी कमानस्य मनस्तन पर्थजानन्नु क्षानांन सं॥ श्री स्माप्याविविक्षा श्व वी भूनं नु हृ वा दान पूजि वाणा १॥ वानंदानम सा निक्षान मन गी वी माघ सा मन नं॰ वानं मतम
तीताराय मक मध्य कालने वरावधामंसाना २ ध्व प वि थमा मनयनं दानं हरनं वाहनं॥ वाननिका सक्षा पथान नु नुक्षं स तिम माक्षणिकं॥ विभव समुद यं वादीफ मा
हृराणं मेवा त्रिदगपनलिवाहंनु पर ४॥ सौराणमश्चा॥ यदृषि तक्षापि सर्वं वास मा प्रापि धानादिषि पनि गाधिना र्थ॥ वान दानानिव यांक॥ मानादानं दाने मानू कृनानाम

श्री म यगाह यद्गुरु सरवसंमयं ॥ भानुषंयद्र या ऽ प्र मणजवा हि तर्लिंडं स रवा सारं ॥ नृपोऽर्य कृत्वा न गि प्र कर्मिनिर्वृ कांक्षि विद्धे गृहे ॥४॥ तत्पुण्यं स कृदकल्पवृक्षा ॥ गांव स्वछ
मन्यानन्न ॥ग स्मा कुर्दू मिदं कृतु ध्वमत कृतस्वी थिमं प्रा फ्य ॥ तक्ष्मीनि वा गं यदु पाठे य ण प्रा फेन्व लोकाति म गं घलतं ॥मा न्यम दु [illegible] निवि क [illegible] न वार्व नी श्री
क्षम कानि पकार ॥ विनमगे याप गाठ कृतु मायुथ मृत नानं · दनवग इदं मंवि म य ता त मनस्तु मगं ॥ तवग मूलीडुव रत्न हि माति न ताथ मन गं दणादि न या वदं व मन् ८
गौहि नमक्ष विमथा ॥ जलनिधि दर्मक गौ प्रगन छ म मागा म व कृ ध मनं ना पनमडु गमि मं स म व पुवं ता ॥ प्रणम पूर्व कवलं विनि पा न त या प त्न पगु तास इ न्न २१
संकृ ए मये तन्न सर्व बनं ॥ य दुर्लभं का लय कोटि भ भें ननके मो नव्य मवा [illegible] प प स व मकं ॥ तत्वां प्र गं प्रा फ म णी त वा हि ६ [illegible] कार्थि क्रि धर्म प्रा वे [illegible] य म स ॥ प न्न वाय
जलवि नूरवं व तले भजाल प नि व दि ग त व पाल वि णा य गि क मि त्य ध स व [illegible] स व गी त नि स कृ तं ॥ ननम का या रो पु ण लि ये न रोर्वि कला दि ये न म न प गु ८
तिष्य प्र तालो १ कृ द कल विक्रम ७ ॥ मनि म वि णमि प्र हा [illegible] क न वा [illegible] दि ग जिन त न न वि दृ ध ८ ॥ कं पा तु मृनी न्द्र दया म दी ॥ म सा [illegible] का पं च व साय सर्व से

स्वय कार्यं पनसार्यधर्मं २ आगत्य वंदयमानं धर्माय स्मादमा ३ सर्वेत ।। नवंति ।। मोनीठं बांधनतं गनपंति सम्भि प्राम नमा रोप्रमादं ४ आत्मापाग [illegible] प्रवत्तय ५
नृपुन धनक्ष्ट वंदिनिहंति ।। विना धनलाव सानं रुद्र पंति सकलं अभव कृ प्रवनं ६ लि ७ [illegible] पश्चि विपद्य पंति सदा तर्वेष नमति धानं ।। इत्यादि [illegible] लवप्रलवा
यहंदि भ ति निर्दे ति सो त्वा मनंलनं ।। मदि [illegible] मवमव प्रमनं वं दय ८ ९ गुप्त संप्राप्ति निर्मे लमानता ९ ।। यत्र [illegible] खगलस्थे नापि यानि पान मोनापूयन्ति शिव म
रुमवाधि बीजं ।। विनामर १० नपि सम [illegible] कंत ११ सोधे मीन [illegible] गदि [illegible] ।। [illegible] कृ गतावि तवे १२ आप्य कल्पेन नत्व मोहा [illegible] वि
१३ मिलन [illegible] वि नाशि ।। [illegible] गसो [illegible] प्राप्ति १४ गो वां ।। [illegible] ।। नाकृ गतो [illegible] मीन [illegible]
[illegible] ।। मानुष्य १५ [illegible] ।। नाना [illegible] नानाकिंनवमा [illegible] ।। यदा [illegible] त्मा [illegible] प्रकाको १
[illegible] ।। [illegible] मानुष्यं भवि दुर्लभं ।। [illegible] प्रापि
[illegible] ।। [illegible] १७ ।। [illegible]

८१

श्री — श्रा

ईर्यं कृत्वा खलु वक्तव्य प्रकृत्यति॥ सद्यं दण्डादि वांदित्वा पुनर्न यदि कृष्यति॥ द्व य ग ग्रति व प्रतिषद्ध वद्व यस्तु मकर्त॥ दर्वविना न मश द्रविना॥ ॐ कमानादि
॥ गमना दुर्ग तां श्रीनाथ सद्धां वंक उंनम द्रुग॥ बाध्य बा॥ वस्तुना लीना दुर्लीता सद्य यकानि ॥३॥ य नीमिल यना द्रव्य नकाद्धित यना धाति॥ ग दुरवा गभमय बास्य धकी॥श्री॥ दु
याद्य ग न्न मा॥ सध्वा ग ठक्र गाठ्त्र उ दृढ् उ सद्रु मंवक गा॥ ७॥ दुर्बावाय स्थि द् द्रव्याजी यंत्रमा श्रुन॥॥ त्व व्वाकसम पुःधुंव न बांगसृप्तवक गा॥ प्रासादि कल्पं सीं मा
गंध्याप्ता ग्रंसप्तगा विलं॥ ब्रह्मवंहिं स्वं सीं ॥ंक्रमा हा शीतिसं द्रद्रत्नु॥ क्तमाय्यमेगे र साहबी र्यं ह्मा सप्तगा दिनं ॥ दवंसद्धि गाक्षन कामंसद्दि गस्तनप्र॥ वं
वार्यवानुवानान॥ सर्वलहिंगार्थ हम्॥ य(थाब्रि ग स्त्वंडक्वायानि वार्णा जिनानं यं॥ वीर्यं हिमं बं एधनंता निभानं त्। य सर्वाप द्रक्त न॥ वीर्यमहा स्नु वं
न॥ महाशिंग्राज गाभि वस्तु विविशंबमानं नाथा मृ बादि हवीर्यं य आभिमूर्त ॥ य द घ य त्रम्निद्रुनरे पवादि समतेसलानाव॥ गोम नेयन पुध यें ह्ननह॥ त्वा थि
सप्तक्रुमम नुरुम मा मुद्धानि॥ वि सरु उंजंत दि दवीर्य मना हें दृष्य॥ श्रुता निभिनं कनेरु रावि यदि रा मद्गुदृक्ष्म कनाकल्ल यनकुविलकु मानो॥ वी र्यं ६॥ लोम्य

३९

[illegible] वीर्या निर्ता ॥८ शीलं स कृतयति निर्मलता नं समस्तका मा या [illegible] तु ॥ म
त्पिवप्रविलं प्रा प्रसादा ॥ कृतं नरलयंतु णं न लक्षनार्जनाति ॥ नागा वीन्नुरगानि वायव पथा विक्ष [illegible] ता ॥८ [illegible] ति सी
[illegible] ८ कानाक नन स भनु पिमना पाके वर्षी या निं ॥ [illegible] जनमा पारश्मायगृ डाष्टिं ॥ मद वा वि य किं विमानवासि नाम्वा यं निर्द [illegible] समनस यति सी
मनस्यी ॥ [illegible] सुरव कलप्रत्नित ८ गावीर्य [illegible] विस्मित स्यसा विरूगिता ॥ वार्यवान्सकु धी अना वीन ८ [illegible] गानि निर्भयतु ॥ [illegible] मा वन
तृ ॥ [illegible] निर्व मीन मिरूपय धीनो ८ म [illegible] वाधिलक्ष्मी पद मा [illegible] ॥ [illegible] नी पुदि गनित [illegible] ॥ [illegible] तु ॥ [illegible] निमि कु कानु वा
गोदिशाय लिवया सर्वि वा यसवानु ॥ [illegible] तु मनन ८ म म लो [illegible] मा [illegible] ना हवति मन्न जात ॥ [illegible] वरा ॥ जिना [illegible] गानि [illegible] तवत मपन सर्वथम
लाभ लक्ष्मं [illegible] सर्वाधि लक्ष्मी पिंवनगुणम मयी [illegible] तालप [illegible] ॥ सर्व [illegible] नाधि पदं [illegible] पुरया ८ कृतं स यन [illegible] ध्याना [illegible] शी मम [illegible] सकलत
नदेनाय [illegible] वनि प्रमादं ॥ मो [illegible] नं प्रवि दाय तस्थ [illegible] नाव लालं कृतनृ सम नाकु ॥ [illegible] तुयं ८ तन मानु [illegible] हुउ ८ म [illegible] नाक तमा [illegible] ॥ अ

श्री मा

नाधारिहिनो ह्यनन्तस्थिरमतिमम्बर्यमन्तः॥ ॐ यच्चेतसानुप्रविश्य श्रीभिलाषुवचसामा
नविधंसिनि विलक्षिकर्मणामेवबुद्धिश्चनाङ्ग॥ वंदिनोनमो॥ नता प्रभविताव या गवा हिनो ह्यनन्तस्थिरमतिमम्बर्यमन्तः॥
वीविनिगप्रकाणिमि॥ सर्वविन्मारूं सनि धान सनर्थिमर्गप्रसारप्रश्रा हिरामानसं तं॥ किं छिद्रविरकूपप्रभु मोक्षरीनविलालनतो थवगवन्नवे॥ मनि मो नव प्रा
नर्नाधिपरञ्जविधा धापनिधा॥ मुविलग्यापपद मर्धनांपविशायपनुरूपीमप्रणता वाक्तविना सुरवविध्या॥ कनाणिमललकानिरेणिवर्दनलनाप्यगतुलनलवरदव ४३
नां॥ नृथामपंचावनतरप्रसह्णा मामनर्धनगावपुत्रदं गुणाविद॥ मदज्ञानाज्ञानवतलप्रग णवा पादशजनसप्तलिलविवेकुरुनां॥ तथेवयाज्ञीविनमदंगतलप्रपानस्व
नथाननिरिहवननप्र॥ सर्वविनियजागदिगनिशायनाज्ञा जप्रभिजिनानमनप्रज्ञ॥ ज्ञानस्वगणवामवतन्मज्ञान सुखावरणागमिवार्थे ति कुथमप्रथा सप्त कादि
म नामताप्रम्यवधीयदिवतन्मयरुच॥ नागमहगजनागमवदिसुश्वनवनानाणिगयप्रपूर्णित॥ यगथमहदमीमरवानमजययाननगर्दननिन प्रपारुपहं॥ या
र्पडरनान नाविनोनिवनस्तानिरुला वस्वयवनहसवनायु॥ मनुद्गनुपिणादयानन्नुपथं वराणपमीतयम्पणे हे रुतः॥ यमगीतकमलनां धानानीमयमन्य मिनिनीः॥

॥ विश्री ॥
नु॥ क्र॥ स्व[illegible]विनार्द्रनायः स [illegible] मा ॥ संता[illegible]दिनी ॥ कुर्वं [illegible] कन वानि [illegible] दिन मसो [illegible] नान [illegible] मयो ॥ नग [illegible] सु या मनि मानस धीन ॥ समीप्य [illegible] काद्व गो यें [illegible] मो ॥
[illegible] मानने कृत [illegible] कृत्वा विपाता[illegible]नि मान्य धीत्त ता ॥ य कोपि [illegible] काद्व वार्य [illegible] गण ॥ समीप्य [illegible] मर्थ दिग्व [illegible] ॥ नमा॥ [illegible] स्पर्शि मान्नि [illegible] पुनः [illegible] कालि व
ता [illegible] गमि [illegible] नार्म[illegible] सर्व सम [illegible] दर्शनात्स्तुकं ॥ तमनगा [illegible] न प्रवन [illegible] नर्य य धी [illegible] प यथा सुवर्ष ॥ सर्व [illegible] सनत सुख [illegible] दा [illegible] वानल प [illegible]
सर्व प्रवर्तन्तु ॥ श्रम विना प्रवृ [illegible] धियिता पुनर्ति गर्तु विनयं यथा ॥ तत [illegible] नाको [illegible] वत [illegible] पुन ना निवस ॥ श्रम [illegible] यानि [illegible] वल निज [illegible]
नगर्य [illegible] मानु ॥ समन [illegible] व्याकुल [illegible] निज [illegible] धलि वादि[illegible]नि स्वनो ॥ क्रिया दिना नं [illegible] यत्र था प [illegible] वना[illegible] पूर्णी ॥ विश [illegible] मना वि गो
मति [illegible] मानाम [illegible] का [illegible] ॥ विधिना [illegible] निर्गत वान [illegible] दुर्गी क्रियानि [illegible] विनु मानल [illegible] ॥ [illegible] पन [illegible] मना मीला मानु [illegible] पनि माय
ता॥ सतु ॥ [illegible] मालोक्य [illegible] विनु [illegible] ला मा [illegible] रुपि [illegible] यता ॥ [illegible] नवाग [illegible] पाम [illegible] मार्ग [illegible] माम [illegible] कान समु[illegible]ता

सयनक्षा[illegible]ची॥ [illegible] पन पीउ[illegible] मन॥ [illegible] श्री [illegible] पो॥ [illegible] पूर्वि [illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible] माई [illegible] मिवा[illegible]॥ [illegible] पानी [illegible] सर्वा [illegible] दिशा॥ [illegible]

[illegible] शील [illegible] नियम [illegible] पर्व [illegible]॥ [illegible] सर्वा [illegible]॥ [illegible]

[illegible] वा [illegible]॥ [illegible] कुमाप [illegible]॥ [illegible]

[illegible] लिप [illegible]॥ [illegible] सत व [illegible]॥ [illegible]

[illegible] लोका [illegible]॥ [illegible] धीन [illegible]॥ [illegible] देवी [illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

[illegible]॥ [illegible] परम [illegible]॥ [illegible]

३०

जि(?)। पुनर्भवं नवरादि [illegible] स्थाय किंचित्र [illegible] संत पनाहस्य संवद्न [illegible] काथं स [illegible] मया पि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] देवी [illegible] कां प्रियवादिनीं कां [illegible] प्रसन्नो [illegible] ॥ [illegible] नमि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] या पुत्रिका गया ॥ [illegible] यादवि यर्ते [illegible] मया ॥ [illegible] नामि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नसमा [illegible] वदा न [illegible] ॥ [illegible] पनि [illegible] दत्त [illegible] नामि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] यानन [illegible] नियति [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मयादत्त [illegible] ॥ [illegible] प्रियो ॥ [illegible]

[illegible] निजि [illegible] ॥ [illegible] संश्रय मयं [illegible] विकथ्यम ॥ [illegible] ॥ [illegible] मादिवं [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] पापप्र [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] सिलं [illegible] ॥ सूर्य [illegible] पृथ्वि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

श्री रा

1

नवीविद्धिमाकर्णिसूर्यथिर्नित्यसमन्वकम॥ तत्राज्ञतमनद्रत्नतां यथा शांवित्सयं पपू॥ तत्रागंयात्वकाः सर्वत्रय सूनप्रमत्वयूनः॥ अस्यापिर्वंद्वदत्वे सर्वसमपातकि

नः॥ नान्यर्वतिर्थितिः ६ सूनन्प्रतिश्च सुप्रमादि मतः॥ सत्कृत्यमानयज्ञ वंशःशागयम दूनय॥ तत्र सूर्य थिर्नितः सर्वद्रव्यं यथा समीहि कोल श्रीपूर्व

तिलाषष्ठे नाहकवाणि मंदरः॥ जयश्च महानागविनायकानन्दखीतयः॥ धर्मेण पालय श्रीकांविनाश सुसुदृढं बहु॥ इतिनर्सेनवं[illegible] सामन्ता

ऊोत्रिवं॥ तच्छ्रा पूर्व्वैति पापात्सर्व लालातयं ययः॥ तत्रैव थिनितः सर्व तद्रव्य पूर्णं तु पतः॥ अतः तत्स्वाहि च सदैव तच्छ्रा [illegible] नामुदात्त वनु॥ तया

विद्वनं चंद्रस्य श्री च सत्रि हि सुमन्विता॥ अनुर्नं कालत्तायेन बाहय की मूल्लव सतु॥ तत्र श्रीमान्सम हा पद्मं च सर्व लोकहितार्थीं च धु॥ अत्रैवतां न सर्वत्र का

द्वे द्वे च नृप वनतः॥ जैवात्त्तत्तयातावद्धर्मैषाज्ञ कर्मकगतः॥ समन्कातद्रष्टं स्तुं सा ह प्रज्ञाविहि सर्व काहि अथ॥ सताप्यातगावात्संप्रकाशयन्सर्वसत्ति

व॥ सप्तर्षिचित्यनं धर्मेमूपदं सूर्मुणावनतु॥ तत्रस्त गवां सर्वशांलोकानां तत्रकावतं॥ धर्मैमाहि गंध सर्वेद्र वत्र न्वन तमप्राप्य ता॥ तत्र वरताश्रमा सीनलंत

२४

नं पंतं मृत्वीऽश्मं ॥ इष्टाग्र त्वापितलोका मूदिगा मक्त्राम यवृ र्दूरा ॥ कथ सर्वपितलो का इष्टा गं मग गं मूरा ॥ नत्वाप्रदक्षिणी कल्या धर्म आउ मना ग्रय हृ ॥ न कृत्या सननउा
पिमृत्वार्न क्रिजने ष सहृ ॥ सं गी गि वादनो त्वा इ मक्त्रान २ष्ठ ३ पा वन्न ण ॥ मक्त गं मग गं इष्टा मूदि गष्ठ मननाथिय ॥ अ शत्वा मह त्वा ग त्वा षा क्ष लि ष्ठ स मृ पास्य नृ ॥ कोष मत
अनानाक्षप गधनं वा नंतनं मृन्नि ॥ त्रिक्षप्रदक्षिणी हृ यस म सर्व्य मृदान म णु ॥ गेग ष्ठ म सा क्ष लि मक्त्र पार्दं धर्मा म नं मृता ॥ पद्न ल्क्ष यत मे पं तं प गधन्ने क्ता म मा हि गद
॥ मक्षमक गवान्दू इष्टा मां म तां स मृ पा त्रि जां ॥ नपनितं त मां म श्रु ये गधन्नं वं समा नि गण ॥ ये द स्व नाक्षन्नित मजव श्रुगं स मान ना न श्ये वि नृ कि त्वान ती ॥ त न्नाथि वर्या
स रव इ ष्ठ मन मं पृथ्वं सलां नं म निक्ति यंक्षकं ॥ मानुष्यं तं मना य्य इजन ग ॥ ते शि क्षा इ त्वा पं क्र ता ॥ मक्षो लि श्रु गि का न गत् धं जं ने तिस्य पन ष क्ता यि नि ॥ या १० अं दम पा
नं सव न मन्यं ये न्नं प्रत गं हृ गे ॥ सं मा मां क्र अदन्न पृ पा गुप नि गाष्ठ प्राप्या कि इष्ठ स्वो नि गं ॥ मानुष्यं इ र्दुलं प्राप्य वि मृतं पा न वं वं तं ॥ नवं मं र्चे मनि इ कार्यां त वा धि मा थे
न व धा ॥ मानुष्य त्व ह मा सा प्रा वि यं हृ ॥ ता म्निं वं वं तं ॥ मृ त्वा म वा य र्दूवी ग य ण श्चि त्वा म छिन्नं ते ॥ य स्मा नृ ती वा मानुषं प्राप्य तं यो पि ता ष्ठ ग ॥ पृथ्वं म ल दृ

शी म

सतत प त्नं तागंभ महा पीपुदं ॥ नाना कानि गालक वायं दंतं पांखि तं सा धनं ॥ तस्या ह्तन मनका बाध नामनं संसान म्र कृष्णा पहं ॥ क्र कृष्ट ता गि पुरुषकं ॐ एकर्न सूर्यं पुन्नाम कत्य ॥
बाताविगु भ्रूण पन सू पानी सु शी लत कूर्म सुन तना सू ह्रं ता ॥ कसमा नूं शील सूपि नं पु पन्न भ्रू ताव नक्षत्र न जूक मतग्रा ॥ यथा मपु दे ३ सहुगा ५ मा जदे ४ प्र ह्र ह्र भाव ॥
ह्रुष्ठ पुकाउ्म ३ ॥ ७ ॥ मत विह्नल ह्रै तनवा त्यि क का पथि मधु श्री ल पना च्यू कान्न ३ ॥ कन दविष्ण गापि हि शीलका नाव बुनया पौनेम कु इंवा कु शीत ३ ॥ दमि इत ाव णि हि
शीलतां हुसान सतु नानातम रताष्ट्रि पिथ्यत ॥ सम्मान पनि गुन शाठ ७ दवि का माय कषा ह्विनाचि चलिनापिल नाविना चि ॥ गवानुमास्स तु पतन्माचियो सवोमन्न माना निश्च मि
मन कृ ३ शील स व ॥ नाका सूतं विवयज्ञ र ल यंतवनं धर्मानन ८७ विमण ३ स्याम सु मंउ ॥ कमान न तनूथे दूबान मलार्यमार्य य८ पाछु नि छ्रु कि स न क ३ शीलमनं
॥ योतु ह्र शील विन यत्तु विनाश कालो शेग ४ समा विलपि शील व माननालि ॥ तेता सुह ह्र विनय ३ पनलाक मर्न पाणु सिष्ठ मिय नकउ शीलेनवा ॥ शील सु
निश्चय ह्र न हिंवं पना जिनात्म क्षा मनन कृ ह्रि वे नम भोहि ७ ॥ नमा ह्रर्ग पिबुन वा सम्न कं पिह्रिं गं म पत्त्वर्ग मि क्र मि स न क ३ शीलमवे ॥ शीलं विना प ह्रन ॥ व ३८

न ४॥ निनक्रा शीलं धर्मं च न मना यमि महार्य मम ४॥ शीलं किंनं नृप गम पनु॥ निमित्रं शीलं विस्मयमान पि विलय [illegible] ॥ न क्ला शीलं लह र्गं हि ॥ वा नि मि ग्रौति
ख्या ॥ थान खलु शील समाप्ति व ४५॥ स्य नाधि मा वा न स्य पदि ५ अतुमिश्चै नृ य श शील मूर्ति नव लं हि ॥ न [illegible] ॥ म वैमगतलं बनि नं दनैर्ग मन मूर्तनं ॥ क [illegible]
त्नम स्तुर्यं सुणि घ ६ प्रीति कलि ना हृ ॥ गत्स्व क्रीधं नि ल्या दाकमो हं स्वाम मानि ना ॥ ५॥ नमनी व ऊिम लत्वाम शील वृत्ता व य ॥ नेहि दृष्ट मपा पनव क्रा नित्त
म गपे ४॥ मन्त्र कानि प्र यर्सन सवैस्तत्व नृ शौ व य ॥ मेनं धर्मं न ग क्रा फिन शीलि सुखम म ॥ नित्रिजानं श्रुतिं मानि दय गत्वं [illegible] शीलं व [illegible] नयथा
कि मा व ग्री व म वि भूत ६॥ ग्री वै मकं तु [illegible] न सर्वं दि शाहना ॥ विकल्पं नंन रेफ नेत्र तु ४ [illegible] दिवि ॥ [illegible] न मे वा सोम नं वे श्रुति वान या ॥ अ
नातृ पव कां क्रा व क्रम म्थ कृ स्प्रा मा न पि ॥ हन्का व मा थिंना मानां गत स्वा क्रोधं नि वा न य ॥ मन्त्र मैं वा दि ना [illegible] ज्ञाता मम्प पक्षानि ७॥ मन [illegible] नि नन वा न यो
वे न हे मानन ॥ ज्ञा नाति शुभ म पा पं श्री र्ये ग क्रम मा व ॥ मा मा प्रि ये या न्सु जनन श्री न प क्षानि ८॥ शुद्ध मवा प क्षा यं या म मे वा प नानि ॥ [illegible] द्विप

श्री गा

नर्द्दश्रुत्वा तु तान्विरं ॥ धृति संप्राप्य गिरा बाहुभ्यां लासाहेनिलत्तमनप्ति ॥ उपप्त्यानन्तरं तं गंसमासं श्रुत्वा मादिशत् ॥ आपृच्छ्य मनु मत्वा कामपथमत्तनुरुक्तो वादितं ॥ कथा रुद्रं कपुत्रमम

नदृष्ट्वा नलतु रातिविरं ॥ धृति संप्राप्य गिरा बाहुभ्यां ... [illegible]

मित्रं वक्त्र मावदानकं ॥ तदथा रत्नं नाना गोत्रम् श्रु ताशा निश्च सुधीश ॥ सदृग्रक्ष प्रताबास्थ यत्र गानताश्री समर्द्धिमान ॥ पितावनवेली कानां हिताय संतव संतनयेश ॥ नवप्राप

हीजगाव हीनर्वधान्तु विवर्द्धनः ॥ धृते निस्थापि वीवाणित कसविक्रं दवाहन ॥ कृतनर्द्धशिन्तुषान्सानपयात्वलखपि ॥ समवान्मत्त मावानकाशिपर्जश्रतान्धनः ॥ ४२

मुनिनाजर्द्धिय मानानि वा दरक्षे स्तर्द्धिं गां ॥ कस्ता तायीमे हजश्रीगीबारदवासमाकृति ॥ श्रुत्वार्थ पिप्रियाकान्ताय सर्वा कानति तंनिता धनारिरितह तस्तनाम

न तासक्ता वायामृता ॥ यथाला मंस रवेउ श्लाप्मसतं गीतिवान रोध ॥ सकवाविनेता यांगा वसंता सम यवन ॥ उ यान प्रियवान्या तिर्म्नं नमिद्रमे कृता ॥ नाम

शलपीनाशनावाअर्द्धिसह मृत्तवे ॥ नमोक्तिजनमेत्यथ घहद वेथ खनाजिवा ॥ किंजा विनगरबोधा काम नालो नेनाधिपाः ॥ नत्वा मुयान कृमीसंनमित्र

यावेन द्विहि आगजवनं समानृक्षी नाना वाद्य पुनस्तनय ॥ ओजिद्धु सहसो नाति ॥ पुत्रामहि विनिर्ययौ ॥ गजमार्ग सतागंतु उपगम्य सोकान्विनादयन्तु ॥

नवे ध्रुव नमहात्मा दे रूपना थान माय थी ॥ तत्कृपाकरु मवाजेल्ल ॥ कुमुतिक पाद पान्वकृतं ॥ तजवनवमा थानरुलपुष्याहि [illegible] ॥ नानाज मवनान्व [illegible] वान

नलमनकागह ॥ कृत्त्वा न्यस्ता नु ध्याग्ल्ल [illegible] किन्वा मद सेनतं ॥ [illegible] मनयगी र्क्कीषहु जावको काजनं ॥ गछ दमनर्य [illegible] किस्क [illegible] मनाथिका ॥ गं ह्लि पकामानो पव

नावेमताप्रत ॥ अनुनर्तं किनगानी यि वर्त मं का विंप मंदिगं ॥ अर्जुकु ध्यानप रन्वो शुनि यामयप्रयत्नक ॥ कुमुति हि वृंनेनकु गर्भ लो वी जेन मनानाचि ह ॥ कृष्णा कृष्ण

धाने धरुत्किनं तंन्वया मसयता ॥ गद कृष्ण नानाति शाविगंव परप्र नति गह ॥ वेणेन महत्सा थाव सार्थडु मात्सम दयनं ॥ ग छ द्व मनप्रवी [illegible] नाम्य पु गं का दर्जना गेषप ॥ मु

लेश्वदवे नौ ह सर्वाप्नुन त्रय [illegible] नम [illegible] ॥ [illegible] मान्ध छिन दनना थि पानि वक्त सर्व प्र निकान धारु धं ॥ समावतार्थ कृपि तापि गान्वय न्वि बाध्दिनंजी तमनु [illegible] निका दि

नं ॥ अ मंथ काल्ल हम हुवो हि गं वि लं [illegible] मका नाधिकप गतानन नां ॥ अकालकानानि थ्याव म ल नोगजाधमनार्थ निरुक्त नामयं ॥ अर्थ तंम भिक्षा प्राति यहि गं ॥ तिलं

मनाक्ज मा थं मनमय ह सुमागाण आपनाक्रम खान्वलनन गकु धर्मयं थानिवर्जि म सर्व गनाधिप ॥ लब्दकायन प्राणिवकु जी विगाव पंक्लिमा रुड तनमप तृज मन ॥ हि

श्री ज्ञा

मर्मसयवणगंकानंदहिनां ॥ १५४ ॥ कुर्वन्नमलंपवनमूर्तिमं साधवल्लवप्रवणीमात्र वर्धितकमपापनि मिति मृग ॥ स्वामस्मिन्

मज्ञा ॥ प्रमायमनोक्ष्निउतिगवासन्नमलमर्मयवणगंकानंदहिनां ॥ १५५ ॥ मनव ग्रंथस्य विशिं मयापृथ्व्याने मूर्खलजनसासर्म मधैवा ॥ उपाचान

मूर्खप्रविशिषवन्वा श्रमगवचाक्रगाज्ञन्माद्धि धेवक गलयवासाज मनमामृनाश्रिश्राविअग्निं वि नमनवग्रंथस्य विशिं मयापृथ्व्यानेमूर्खलजनसासर्ममधैवा ॥ उपाचान

मुक्त्वेनर्मांग विनिवंसनेन्द्रलनदेव सामान्य कीडुव्यमनेगनस्तेयायविनतेषाविहन्यगौलावाद्धितवग हनेपाव स्वभा॥ मूलनावधाकृष्णवन्तरगवापुञ्चमकानु ॥ याव

स्वार्थपनः मनोर्थलिमृवोर्हनांधिमृक्षान्वयः क्षापेष्वाहननपद्धिगायविमथः रोमन्वार्हगोमावितेऽ॥ नीकूलाकोभिनं कगानमनमासत्वं मानावदः सर्वाकान्प

नामकानमधूनवत्रनाडपत्रा॥ ४७ ॥ पत्रेविदिक्षूनिंदनिगमनाज्ञाप्रसन्नाभ्रमुपवनप्रभ ॥ सत्वार्थक्षमेनविरुत्तमेभिक्षुन्तपार्थराणविमृपाक्षनन्दन ॥ १५४ ॥ कीर्

र्मसमायमकलेगलितिज्ञिप्तसूपतागावगानेः ग्रन्थापिप्रञवयानिप्रमृदितमनमः ४७ ॥ ब्रूयावाधिकामोः ॥ सर्वाणि वापि सन्ना सकलानि वधवाश्रीनमः ज्ञानिमु कान्तु

दंसरामसकलेगलितिज्ञिकः सूपनासावदानेः यथापि ॥ इतिश्रीवृद्धावशानमालायां महज्ञानकमालायां मङ्गलाशाज्ञानकावधानंसमाप्तं ॥

ज्ञानोदयंसमतंडदः शवलनवनंभूयास्वनकालं॥

४९

९ ॥कृष्ण[illegible]कामसहीयालः ॥ सांद्रानिलसमुपागमयन् ॥ उपगृहकामनर्द कं प्र[illegible]सवमताग्रह ॥ कदकान्यन्मनी[illegible]धतत्कर्मप्रशंगंप[illegible] ॥ यन्ना[illegible]तगग[illegible]मासीपन स
त्तमादिश ॥ [illegible]विसंप्राथितिया [illegible]विश्रीर्दमसनामिव ॥ [illegible]कांतमहानाशंसमालोक्य माधिशय ॥ [illegible]धृमतनानामसूनीन्द्र[illegible]गपन्नु ॥ प्रथममपगुनृ[illegible]गंम
व[illegible]निम[illegible]दृंला ॥ [illegible]जगन्नाथ ॥ [illegible]नामवानूना ॥ [illegible]पति[illegible]मनुदृष्टसमृद्धिमानु ॥ ससर्वाम्मनलोकानां[illegible]थनाद ॥ पृथ्वी[illegible]तमन्य
स्वमाधि[illegible]नमन्नु ॥ मदन[illegible]जगदृश्यापनातकृतिलिणो[illegible] ॥ [illegible]दिवाम[illegible]विपिनेणकवानु ॥ दिव्यकामननगोप्योनपिनेवमु[illegible]नाद ॥ [illegible]गच्छिग मु
ग्वाश्वरं[illegible]गणविनाश्चलनंदन ॥ दिव्य[illegible]मद[illegible]सग[illegible]विसवर्म[illegible] ॥ मनोगितलाध[illegible]नागगोगनकोपिनातवा ॥ मपदानिम[illegible]ताप[illegible]पविलोकयन्नु ॥ दद्गमि
नकृतनावीथ्रागा[illegible]भावितापितामु ॥ [illegible]कमानिना[illegible]कृपा[illegible]नागानानपोत्व[illegible] ॥ [illegible]गणकानु[illegible]पतानानतो मामपतुम्[illegible]पाव्याधिक[illegible]गाविकानव ॥ [illegible]ध्यारु
नर्पनिगमाद ॥ तानवलं[illegible]तलकौविकि[illegible] ॥ क्रिगितलनमपाद्गि[illegible]काव ॥ सानंसानंज[illegible]का[illegible]मु[illegible]मक्रिकामारपानांसधकानगर्द्धमार्गि[illegible]तन्नपाताव ॥ [illegible]मा

श्री   श्रा

विमनानिप्रवक्ष्ये नवमनसिविषाधानापिस्वेदावलव ॥ अपविशनमांसास्त्रवाकर्दमास्थावगजस्यगंवाक्रसविकोनितीय ॥ गन्तुविवनमनख्याउष्णुंपादिनवर्ण
वमनसिविषाधानापिस्वेदावलव ॥ यदकृमनार्षक्रसमांसथवीनाथादिनैवपत्नि ॥ धार्मपिथुगंसोनकर्यविन ॥ गिविनपिमनमवृलंधयनासनाभिर्निविमनसिवि
षाधानापिस्वेदावलव ॥ क्वमपयपुनश्च ध्वंवणमुगिनिमंस्व प्रष्ठगिमकुसुम्यांथे — नक्रनाथागयस ॥ अगिनैविशयवार्थधीशिर्मसागया ॥ नामव मनसितिविषाधा
नापिस्वेदावलव ॥ यमनप्नर्ली निलिप्ष्ठगनीनगर्वजिनसागविवाणिमकुष्ठ ॥ यथापिनकानिममस्तसाकेसमागमनकाथधपमुष्ठभारीनं ॥ ऊनमपगंगनागं ४३
वीक्षमाथत्वद्दोमनसिजुवनवमेलिङ्गाधावलव ॥ पिशिनमनएयोगीवीक्षमाथसवयाथलवेदेगिदालावंवलेगसवंगेथ ॥ उलक्रुवमेपटलकुदवा
तुमांशान्वादेवमज्ञविशेगषविणवगातुथ ॥ कायेथसमसविकृतनःक्रमनिश्चयस्यनरअवाकृसमनाणिनिवाक्यवीं ॥ विछियमोनथहानिआगभोमि
कृष्ठस्वेमकाधयभीकमाधथ ॥ सवनकृष्ठवंमनिनावकोनतशायनत्रार्मनिवकमवं ॥ पनिधामस्वनावकाथमायोगगिनालागितिनिधगवास्तनाया ॥

उपदिश्य धियायया मनुष्याः पितृ[illegible] स्वप्नि साध्य स्वस्य लभन्ति ॥ तस्य मांसं व[illegible] पालायो यः सर्वाधिपत्यावकाने ॥ जय[illegible] जगद्गुरु [illegible] नानविपल्लमु[illegible] नंदनन्द[illegible]
ल्लं ॥ सर्वथ लीला स्पृश्यि वाग मुक्ता[illegible] लिन्नपा यों न विश्व[illegible] सत्त्व ॥ [illegible] त्रिजगद्गुरू यो नव धनत्वाव दन्त्र व जगदि [illegible] ॥ [illegible] यो न्तविरि [illegible] ॥
[illegible] किन धंग क [illegible] ॥ [illegible] पदार्थ प्रतिपत्ति [illegible] नवार्ये कर्मेद मतीत मानुषं ॥ [illegible] जगदू [illegible] मत व्याडेता [illegible] यस्य सामर्थ्य निस्पृहा ॥ [illegible]
[illegible] निश्चय निश्चलं मनो मन [illegible] नो बाधिय [illegible] नुपागितां ॥ [illegible] विनूय मुपायको [illegible] ॥ [illegible] नदाकृता ॥ [illegible] यतिके [illegible] यया यस्ता धेर्य नमस्कृत
[illegible] जगदेव [illegible] ॥ [illegible] पिता [illegible] पिता [illegible] मिवार्थ [illegible] ॥ [illegible] कान्त मेव यदि [illegible] वं [illegible] न [illegible] ज्ञान वाद [illegible] जगुरु [illegible] मन [illegible]
न ॥ [illegible] नपि [illegible] वित [illegible] मर्हति ॥ उपदिश्य निमं लोको [illegible] यास्तव [illegible] ॥ [illegible] संज्ञा [illegible] बाधिसत्व [illegible] प्रमादि [illegible] ॥ [illegible] ज्ञान मालीक [illegible]
[illegible] मयमव बोधं ॥ पीता मम [illegible] निर्वाति [illegible] पक्ष [illegible] तत्वार्थ मव [illegible] बल [illegible] ॥ पीता मम [illegible] विय [illegible] मय [illegible]

श्री ना

वर्यास सुविशिष्टायामुष नृपवि ॥ एणादृशविक्षेपान मिणाकं बोधिमाधनाः ॥ अपि धितु यवन नृपतृष्णं नूनं बोधिमा प्रयत् ॥ तद्गुतिमत्वा सर्व कोपि यदा कृतिनि विंगाजि ॥

तु भाव मन्त्रि सा कृत्वा चरतु बोधिसमवेः ॥ तत्तत्पर्श विपाकेन त्वे कोपि तु लाभया ॥ बोधिलब्धा मसम्यक्त्वाविर्यतिक्ति नश्यवः ॥ सा मान गलाक्षिप्त्वा पनि युक्तिः ॥

मानुत्वाः ॥ साम्रा दर्शन मासा प मनस्कृ पदमा प्रयुः ॥ तद्गुणिमनादिर्तं प्रत्वा सर्वत्र यादयापि ॥ लोकाः अपि प्रवाधेम ॥ प्राप्यमनन्त्युमादिना ॥ मानं सर्वपि लोकास

साकृपद ब्राधिमिताः ॥ जिनत्वेन में गत्वा वा वन सर्वदा पुनः ॥ तदनन्त्यवी वनमत्रिनिन पंजवं ॥ सर्वज्ञा कृवम्रा सर्वदेव गत्यं ॥ मासो खोवोधिनो [illegible]

धन्यमौना यमनौश्वम ॥ मा कोतानमवान्नि नमिति सत्वस नान्यथा ॥ तद्गुणि मनुष्याः तुं तो म मा कथो व्यग ॥ मत्त्वे वन्नपना गतुं वाधिव यत्रि गिवन ॥ सा

पिममा नाजं ध्यिना प्रयन्तमा ॥ बोधिवर्या वुगं त्का प्य पालय त्वम मा दनातु ॥ तथा तमंगलानि त्वं सर्वजापि त्व कृवं ॥ केनाद्याधिं समासा प्रमान्य कृ पदमामृ या

॥ तद्गुणितनार्द्धा दिर्हं तो त्वाना का यमत्रृ लिप ॥ माधनि प्रमितिविहृत्य प्राप्यनन्दनस्य पार्श्वद ॥ ॥ ७ ॥ इति श्री पनेस्य प्रथिता तत्त्वमिदं ॥ सिद्धिग सोवलानं संवा

श्रीसमन्तभद्रसिंहाय नमः ॥ श्री त्वं जिन ज्ञानसंपन्नः ... संस्तुयाय ... मादं

पित्रावर्यानि प्रभृदि तमनस ॥ ४ ॥ यायत्र मस्मी ॥ ५ ॥ सर्वतो बाधिम स्थाऽस्त कालत्र ... ॥ ६ ॥ ... श्रीमम ... ॥ ७ ॥ ... कामहानाज्ञा मृदिता ॥ ८ ॥ ... लिश पूनश ॥ ... कं नमः

॥ ... ॥ ... श्रीमहज्ञान ... दानमालायां ... संस्थावदानेन माफं ॥

... पूर्ण ... ॥ तदेत ... मि स्वामि पूननन्ते ... ॥ साधितं यन्मनीन्द्र ... पूर्वं ... यादि ग ॥ ... मिपं ... हा ... ॥ ... मतिश ॥ ... कं

... ॥ यन्मनीन्द्र ... ॥ पुनानन मनीन्द्र ... वाधिपमिविधि ... ॥ वा ...

... ॥ ... यथा ... न्तादिकं ॥ ... ॥ ... ॥ ... मिपि ... ॥

पित्वानन ॥ ६ ॥ ... बाधिव ... ॥ ... वाध्य दानवाध्यपि ... ॥ ... ॥ ... पिपुनानन व

वानिश ॥ सर्वे ... मनीन्द्र ... बाधिव ... ॥ ... मनीन्द्रासी ... ॥ ... ॥ ... पश्चन ॥ ... ॥ ... स

... मपार्जितं ॥ ... ॥ पुनातीह्यत्र ... ॥ ... ॥

... ॥ ... कालमेपु ... ॥

... कालिका ...

श्री का

सर्वमन्य ॥ न तत्र तस्य प्रतिपत्तिस्तिष्ठति यथा नानात्मवादे येकान्य ॥ इत्यर्थं नाम विवादे दत्य प्रत्याह न च मं कृत्वमिप नाव ॥ एकत्व न युक्ताधिगतं तवनक यं नमकापित तस्य

वैतन ॥ प्रागवगं भक्तिका न पत्नानो त्वाकंपरं यत्स्नेर्मिसंधे ॥ निहितं न यत्ना न यदविशानां प्राकांपिंत श्रीनिर्धनं प्रयानि ॥ तत्त्वाहि नामयम पक्षे पानाविते कमय पाति

तत्त्वस्तुनिधि ॥ मत्वा ति वा क्षेत्रप्रत्यक्षयचितं संवादिश्चर्या भिन नातं वत्वं ॥ न थालर्वकतसमकामरतडवीद्रपदं वापित्त हर्न नन्छ ॥ मद्दका समत्तनैयानि न न्याय गर्यानि निश्चि ४८

न्यायमुत्ता सर्वद्धि ॥ व द्धन्त तन्त्वत्तत्पुत्त त्वाकृतिमं यज्ञान माना क्षुनेगाद वेदं ॥ मद्धूश्चेतु समानान त त्वत्त वनास्त्रमात्र यमाधना यलिवीका भत्तो मनाश्च सनुमय क्षाया

तगनिर्हितायां वचनादत्वानिश्चये प्रतिपदर्थं तत्त्वप्रतमानम वा वक्तुत्वा यवनाचनन स्वरूप यापर्ते भत्वनाद्धिक मं ॥ संमानपूर्वाता समभेन शरिरं प्रसन्न पाय यापिका नृस्य

म्यो ॥ कल्याननत्यानि तितोप्रवर्दि क्षाना कनाप स्तुतपि क्तन्त्रव ॥ मेप्यवाह त्वस्यानिवर्त्यं यय संकल्पनागकत्व नम तुर्ही ॥ न थाप्यनाया यसतु ग्वाश्चिम प्रामिवार्न स्व

स्वर्वान पक्ष ॥ नमकामेनार्थेस्तु गाग कृष्चित्वक प्रतिप्रत्ययनर्तना यं स्वर्येत् स्तुनि न तैवायाभाव यन्न ॥ नक्षत्रप्रारूढेन पाविदितापनि ब्रपाठपरिक्ष ॥ किंचार

स्रा॰

ना का सँकुं वयमघ समृद्धा घयनि तानू ॥ एवं सन्नाजामृग मानन्य पुजान्नमस्त्वा एवा ॥ क्षे प्रति क्षयविकं ॥ मं बाधिव यक्षि गगादि नार्थ दथ सुदब मयागं उराम ॥ मयानि य तुथ कृ
तस्मानिक उवि हायम सभ्र न्दन नं जितानि ॥ मयाउ सृगन्धान्य मृता न्यव र्वनुहि मांउ सृ र्वप्रिविन्न गउ थ ॥ हि गध्य म दृ श्रव बो मृग श्री गने मन ष्ठे नानक लुनाव ॥ दिव्यानिवा
भान्यपि मं पुनम् ॥ सर्वथ ना ध स्वपि तड़ गालय ॥ मया उप मादि मा न्नास उ छ्रावो सा ति नो न्दि क ॥ विहायमा बनं कृष्ण बाला यम ह नाय थो ॥ मया नं क्षम ना गंडो बाधिभि निक्रिमा
॥ यथ ॥ सत्त्वाव कान्न राथि भा मृग द धी ध ऋार्थिनं ॥ एवं मन्द पनी नाम्रा पुष्प वस्यालय खम्राथ ॥ बाधिव यक्षि गंधे त्वा विनं गक्षौ उं शब मम्रा ॥ मया उ ते ल मयं मन् प्रायं ब्रु कानेम
त्वाम मादि गउ ॥ दृ हं सु क्षागय ॥ स्वर्ग दव रा जा लब ष्टिनं ॥ थो शी नामा मदी पाल उ मृग ना साति वं कृ मा ॥ मन्द्रव रुग वा क्षेत्र का मन्य बा मि थि नि श्च यथो यथा प्य मो मं त्ता मा
पु आनेन्द ॥ सात ब हृ बो ॥ सा पि मद्य कृ थ स्वर्ग दि व नाग स तोा लव मृ ॥ श्रुति मयून्य पंति दृ छं उ गं मया गथो ध न्यो ॥ कथंक व म हानाग संब कृ स्याव ध न न्वं ॥ म दव नं ना गं
नं लिक ट विनि पा तश्रि तम यं मन उ काया कार्य प्र विश्व यवि म संति कृ पगं ॥ नवा न्याव वृक्षल थ पनि दर्नायिउ ॥ कृ ग थुदृ पेसा वा उ ग उ कार्य त्रिउ वन न पुन क्षेव प्रि

आ

तागंवतजगत्‌ पकाशार्थमगानङ्‌ ॥ गुरा का मानं पिता कृतान पुरस्य नयानआयानन पका नगावभिससामयवर्णिनासय थेहुं यतहं पनजिन ममाधानधिङ्‌ मकपामृतऊन्म थ
ननगमनार्थवऊगता ॥ स्वकामसकानान्‌ विधार्थिनां विधं ॥ पयानां तेनं नेऽकृगत्‌ कृपिस्वामिया ॥ नमर्थमर्मिक्षसनाउनंजना ॥ ६ ॥ स्वमलनकाकनृ ॥ निवन्धवा ॥ ॥ तस्यां नर्पाङ्‌ समका
लमथ्याङ्वानसाकं ऋुं नैघनिविमिग्रवा ॥ धाम्नकानी ॥ भूयः पाप्यं यंकृन पुनारशृनंवमस्य मांसा सभ्री सम्प्रपयधूर्णिवंत अंथा ॥ कुत्वा थथनिमनमानवं मनया मांसः स्वम
नितमपपा गांपुद गां ॥ अ्रावाख क्रितिश्वन पां वृवान मावं गं स्वाधं कानिननतो यनृहि वा ॥ ४८ ॥ आगूर्द्कुटिकरबं ध्रुतिगाकवावीन्द्र्‌स्वृ मानति यनतोअंवन गस्वा ॥ हा ॥ ६ ॥ मि ॥
स्कुतविनमसंविलपदृथ्‌ ॥ ए ॥ ऽप्रभकूप्र पिधिन मान प्रजनां पाय ॥ मांद्या प्रनोविपूना यानन मावं प्र ॥ तावा ॥ मनपन वामिनां प्रना पाद्ग ॥ नका थिस्युतिद्दननानमा वसीं गुं त्वा
कायंकर्ममिति सां तवद्विकानी ॥ मानीनाह्र हृदक्रुवाव नों वकृ ॥ स्वपोति यां मंनति मनस्विना हृम गामासेव क्रितिश्वन सानधीय ॥ समन पयाकें ऊनमणिङ्‌ कानस्वृ
मम ॥ त्वाकाना मतिलधिका पकानन मयं मस्वामाव पवित मांसमान्तमावं ॥ एका कं स्वमननिपानत स्कूलन संसारं व्यातिनाणि मावव नोमाधु ॥ ॥ यह्न का पर्विनाहिताम

७१

श्री॰

विमलगृन्यालहराठकयगिदृनालद्रपुवरध्य॥ गाम्मवासपनिगणयय गेलतउ श्री स्वु श्री खगनमृपादध्यमालाख॥ तं मत्वाविनाग विकाल भव ये यो कागाधू म्लनुमिर्वर्विष्कि मृतमृ

भनेय॥ निठणंकोगाति गकपगिविर्भनाति ४ सायामीकेन्नृविववापनीत मन्यु॥ गडकयीनेवापाटलाग ९ स्मामं रवाड्डे ननय ३ वापमविवक्रो॥ सायाली दनिमम

कार्यसंतृषिद्धाल्वी श्रीवहृ ८ कदयायिवा क्रिकमथि॥ ७ अवक्नाज मथाखरवप्रकनाकुदखंद खड्ग कनवीनपृथ्याल्म॥ संप्राप्य घनंसमयविविचित्र सानार्वि न्द्याडर्कलोमि

वद्मातुनिर्जनेसय॥ वंक्रावेवणमुखकन्दवधीयवस्यनागजमविकगायमयख॥ गनादृपन पनिशाहकनपृ श्री विटइनविपुलमिगवीविययः अवलस्य॥ मत स्यप्रानिधिव

लावलम्बिनीनामाशानांकथनपिपूर्व॥ स्तृवगठ॥ संप्राप्य मनपृणनीनमवा त्यामांमंननिन्नतिगयांयमंवतान॥ दर्शनप्रथमादनक्रमकनेख्वि विक्षिप्तपनग

नीकृयनवाला॥ प्रपृणगहलनगिरवावतीट साथाठ केक्रमजगमिववाश्वनेतृमप्राय॥ कथायेयुगपन्दिगलागश्वगन्वे विशक्तं गकालिगको मेलाप्रयार ३ विष्कि

प्रसङ्गनंनिविष्टोगद्भवृद्व ठ वीप्राडमनसितिनादेध विवादऽ॥ पनिवयकगमागभीकमनकप्र ५ लागगा॥ पनिपरल्गक्षियमानगवीश॥ क्लिशितवनमनिशाया

श्री आ

धिमत्त्व ६ पुनात्य ६ ॥ गं मृनींद्रं समस्त सर्वसत्त्वांचिका मतांजयतु ॥ गण धमणं मुनिं मत्त्वा सत्त्वं पं यदि निर्वाधिनं ॥ सा ऊर्जिते ६ पु ४ ॥ निं कृत्वा मनसेयं धाविकायतु ॥ यथायं भगवा

ष्ठ रत्ना मा ध्व मुनिर्जगद्गुरुः ६ ॥ सर्वेषु ६ श्री धनानां [illegible] धर्मणीजय ६ ॥ [illegible] तु ॥ स्नुह सर्वपित थो कानं सद्धर्मं क्षयि गंभ लो ॥ बद्ध ६ णा धु मुनिनीम तव यं स्वर्गमार्गिजिन ६ ॥ पु

[illegible] प्रतिबोधि कृत्वा सर्वदिगाधि व ६ सुधी ६ ॥ जम्बूनीन्द्र स पादाक्र पद्मनाभ सकगा ऊर्जि ६ ॥ प्रथमत गर्वा स्म स प्र विधर्ने मना क्षणं ॥ विद्यायणं वदि नार्थ समानी [illegible]

मांदि गा ॥ अनु नाग्य में स्तुत मा [illegible] मि [illegible] सत्त्वमोहितं ॥ तस्य कुसं समाप्त [illegible] जिनतं गन धं गण ६ ॥ सर्वसत्त्व हिताक्षनं बोधिव र्मावुर्गं दधु तु ॥ संबोधि प्र [illegible] निक्षने नत्र

त्वनसत्व दत ६ ॥ [illegible] प्राणी वंबनं गंभी दत्वा धर [illegible] गावो कृत ६ ॥ सम स्थाय सत्त्वं यात्व दृश यथी पत्तास यत्त ॥ मन ६ व [illegible] जि म [illegible] श्री सर्व सत्त्व हितार्थ त्तम ॥ बोधि प्र

लिखि वि [illegible] न बोधि व र्या [illegible] वन त ॥ त्र [illegible] मनि [illegible] वन स [illegible] श्री वर्षि [illegible] प्रद ६ ॥ सर्वलोकाधिका श्री मा [illegible] धि सत्त्वा सद [illegible] ॥ नत्र सर्व पित [illegible] कृत [illegible] य थापि

व ॥ तथैव व गगा बोधि व र्याग्र मार्थिनाश वत्तु ॥ गं दा सर्व भि मा [illegible] श्री मत्त्वा [illegible] पार्थिन ६ ॥ न्द्र पाति पमुखान्त थ निपमुग्व यस पादि गतु ॥ तत्र क ६ [illegible] पगां वा यं य

७८

न्मयातु निरापणं ॥ उल्लिखितमिति विज्ञाय संसारमोहउज्झितं ॥ संसारेपि विनिमग्नेवं लोगभंघसमाकुलं ॥ सर्वेच्छ्यागतं भाद्व्याकृ तओवगसखं ॥ यावज्जीवं तथापि सं
वाधिताधर्मवृत्तं ॥ छस्वात्ताकाहिताधानवविनायातशेधिविलि ॥ धर्मोर्थकामाविनाधार्यविनाथ मैत्रिनिष्फलं ॥ किं गनक्रीविनानोतकावलातुर वाधिना ॥ धन्यास्ते पुण्यभाग
सर्वसत्त्वहिताभयाः ॥ शृंथिवावाब्द्धिपंदलावनन्निसर्वरातुष ॥ तद्गुणाः पुण्यभाग्यवविशीलसमाहिताः ॥ जिनलगनधंगत्वावन्नि पाधिसम्वनं ॥ तत्काभः पुण्य
मउवंशर्मविनाविनश ॥ स्वपवात्ताहितार्थेनवनन्निकान्क्तिसम्वनं ॥ वीनास्तपुण्याय उ सर्वसत्त्वहिताघमाः ॥ समस्ता विसाधनेकार्यमाधयन्निप्रयत्नतः ॥ धीना
स्मपुण्याय उ निर्जित लोभमोधिकानु ॥ समस्तावेविजमाधाय ध्यानतिपत्वकि योगिनः ॥ ज्ञानस्तपुण्याय उ सर्वविघाद्वि पानगा ॥ समस्ता धिनेलमामाताय पुण्यविसर्वम
गुत्तं ॥ विज्ञानस्तपुण्याय उ नानोपायविधानेक्षः ॥ सर्वसेवाः पुण्यधर्मप्रवाधवानयत्नपि ॥ सकलस्तपुण्याय उ समस्ताधिगुणकामिनः ॥ वोधमित्वाप्रयत्नेन सत्त्वार्थ
क्रान्तिपुण्यवर्णं ॥ वीतिनस्तजनाय उ वज्रमानगतानपि ॥ जिनानस्त्वान्विनाधैवऽापयन्निजिनालयं ॥ ज्ञानिनेस्तजनायमसकलातुरवसंतनोः ॥ सर्वान्मे वाधि

श्री

मस्तुध्वंविपाकानजमाक्षु छाणपातेवत्र ॥ बाधिविलंतमासाधवाधि सर्वालयध्रुवं ॥ गुरुश्च पानमिताय सर्वाँ मुनिपुंगर्यमथःप्राप्तं ॥ मानाजित्वामसम श्री वाधिं प्राप्य जिना
तवयुः ॥ धूर्गिविहायवाजंसुबोधिवर्यावृतंतया ॥ हस्त्यसेवाधिवामनः ७ वनिउमर्हसि ॥ कामकुकृमाकंस्व सनाकाणतिविलिकउ ॥ मस्पुष्कृद्धर त्वामी कसंनालो धेव
मध्वीत ॥ यसंकेणेमसाय धानितउवया तांकाघ संर्प्राथिनि ॥ कामव्याधपानव्यगासूपग ना दीना अबनितक्षा ॥ मर्दक नसंस्त्वा वकनु ॥ पुरतोहि नाकामधो त्वाम
क्रपक्षुनवर्षदीकामनस्त संपामुनिर्धानमः ॥ श्रीपिवतामसुलाध्यासंदूपात्यमिहास्त्वपि ॥ धनाहि गन्यणवाद्धहानंमव कृ मर्हसि ॥ क्षुसिसंप्रार्थिनि याकाशात्वामस
तानाथिमुंता ॥ नयस्वंगंसमातोकश्च पुनर्न के दृपादिगतु ॥ संश्रपतीमसनाम अयतांगन्मयादिगं ॥ यनातिगम्यमहानं संयहं पदंतांधनं ॥ दानंतागविधाहिताविधिमे
यं श्रीलंवनितक त्वाम ॥ कालिवसौंडकृपामहगणउएं पिनोवीर्यनिंनतान्वयं ॥ ध्यानं सर्वतवापपत्सूनपेगं पहातिनावैगिनीः संश्रयादस्य मादिः ॥ भालगावेतां पश्च
नगगधुनाय ॥ यस्मिन्विक्षिप्रकृगाण्मति के क्तलरं वामप्रपंतान्वयं ॥ बाकृतिप्रकृतिक्षिनाथेयमयातस्वालवंधेहतं ॥ यक्षुमध्यानेमितांहवंउकृ भालंवे त्वामसाम

५०

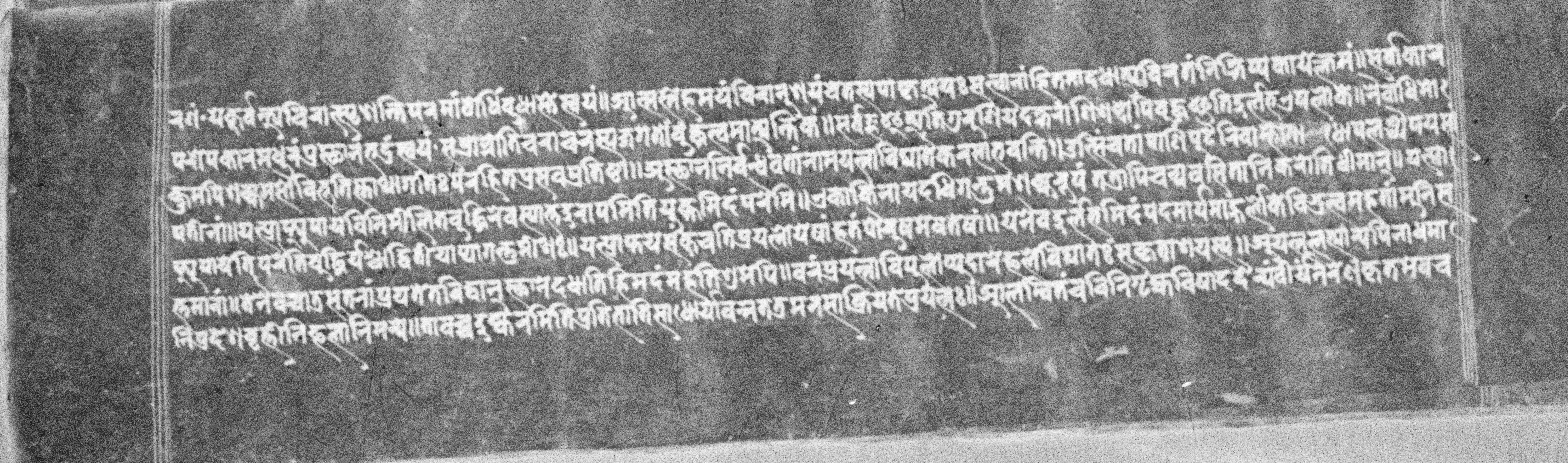

श्री अ

नुसृति ध्यानमनन्यमात्मनुरागप गलं मलीनवासस्तिष्ठितो ध्यायन्न ॥ विवासिनीनां विषयं नृत्यच्छिन्नं ऽ गात्मनिरोध लयच्युनि श्चय ॥ मदप्रमादश्च छित्वा नांसुत्वमधुत्वंसमाद्धि

मननामनुपश्यामि ॥ विसंवदन्तीव समानमार्थ छित्वा निर्विकाननमा ध पनि ध्यानमनानु ॥ छिन्नादिकालमऊ लांविधि ॥ पराग संग्रामाविकनन सवेष्टितुं अविवासं ॥ कर्म

कर्माधिनि पतानिश्च सहाय मनन सत्व निकालिलहमा धुवकानयहजा ॥ नवासिनी नयिविगाकमहाप्तमानिन्ययिड कर्मध मना शुल्लिनापक ॥ कामाद्यौ काल

नर्दग हहूल कूलां विद्युत पुनर्यादि वदेगन धीहृत्केषु ॥ धनाम गधूपमि मानव ननानि दक्षा दृष्ट्वा पशीध्य कृतु माक्षय वो पमपु ॥ स्वलोपि लागज्ञानि गवत् सर्वगच्छ

मर्कस्थपाय के ऊवाम स्वमनिव शु ॥ कल्पकमा यथन हरिमिष्टनेकानन्त धाता स्वमानग न तस्यणि ताकलामृ ॥ माधां प्रियाभिनन्नृतयेत सर्वालितयगी स्तुत्यिपऊवन ९

मध्यगपारवर्णि ॥ संगान्तवालहरि ॥ धर्मकर्म बंधवालिनिविशो कालान पवि धामकलानाति कृपा ॥ यवीन्द्रिया र्थ पनिरोगस्त्वालि तमो मूलं सत्यानन्न पूर्ण पनिद्य हि

प्रा ॥ अविलिन्नमयस्थयउ गसंख्याति कामान्यपानां विद्यमर्थ विषपालकल्प ॥ कालादृया कृमनवधमसर्वाभिनामांमा धामनिर्धति पदं वाम ताप गानी ॥ अन्यान्यानां दैव

११॥७॥

७१

नूतापितं ययन्मूत्वा ठकृतं पूर्णं तत्तं वक्ष्यामि गर६ध्रुवा॥ तथा यथा मम तात स्त्री वाधि तत्त्वा स्त्राधिप२॥ दिवा मत्स्य रवि नाम का क्विनामत धर्मसाधनं॥ तकवावित्तकाघमनासमर्यु लोक
दिमानलकाय सर्वश्रुतवनप यत्न२ न्वृद्धो मयाताकायन्॥ तदा तन्तकलंदं हि ठ पुरूत्वानि समुकात४॥ ततः सर्वविगत्ता कावतद्वू७ पापवानि ८॥ डामन॥ अपि दृश्वोताउव
तलधर्मलिप्त कृता॥ अदत्ता यायिनात्तु छाहूनायो वालिमानिनः॥ कृआमितं गामनका निर्विकल्पार्थमा श्रितः॥ कीर्यामात्तयं यो मान्याः प्राकृतनन्तं ठ्वानि॥ क्रियामपि
स्फीता श्रधर्मवामत्वानि ८॥ कुमतिर्गणालच्छा अनायवृत्ततालसा॥ येषां नृपिहूयावानां श्रमद्भूत्वार्थसाधकाः॥ मिथ्याधर्मेनयाहूला धावन्तनूनि मत्वानि॥
त्यक्त्वा धर्मेन श्रापि कृत्स्नेन वसानि ८॥ मिथ्यादृष्टिधना गका प्राकेन शुद्ध कामि पापि॥ एवमथापि तो कार्थ श्रुतद्धर्मी थे लाना ता ४॥ कृत्व कार्मवानि रत्नकृत ठ कोमा
रिमानि वावनत्नु॥ छिन्नात्रिव कुनावानाठ भ्रमतामृशिशानि कार्थ॥ श्रुतद्धर्मेन गाढ़ाठ प्राधन्रविगतस्यात॥ एवं सर्व प्रज्ञा कापि तेमूधर्मेण२ मशिगा॥ मत्धर्मसाधर
नाता हं कात्मा मिनमताहत॥ एवं तदवनाहू स्वरूत्तलोकतिवानतं॥ कल्प गाश्रितगाधर्म वानायिहुं यविकल्पयन्॥ ततः ८ समाधिना॥ येमत दवकादिव ख्यातो मत्यं वधि

कृ स प्र मा ल स्व न ल त्व त्व वी ॥ तत्र तत म्मा बाल ४ प्र ह द्वितीयं वांग ह ॥ क्रमादिषास्वधी वा ३ सर्वार्थ दृष्टि [illegible] त्व तु ॥ [illegible] सत्यविवान्स्व वीन्मंप्रवार्यय [illegible] प्रवा

मय स्तु त्व धर्म निय ध स मन्वा नय त ॥ तो म मन् ५ प्रोक्ता यव स न विवेक ७ ॥ स्व कृतं कृ धर्म [illegible] डवा नसा धेयत ॥ [illegible] सत्य [illegible] न्स्व वीन्मंप्रवार्य य [illegible] तं ॥ प्र

वा धम स्तु त धर्मप्रय कृ त मन्वान य तु ॥ एवं संमोणि मान्धीन ६ स्वपवा [illegible] र्थ त ॥ पृथिवी वाक्षिं दत्वा [illegible] त नत ॥ [illegible] स पित [illegible] स्तु स्वन्त्वा ति

का ॥ सर्व धर्मेषु [illegible] त का व त त ८ प ध्य कामिन ८ ॥ द्विज त पाद य थापि त र्वतो का ३ तार्थिन ॥ [illegible] स तं न का ५ [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] त म य ग त्र [illegible] प्रति

मनी श्वने ८ ॥ [illegible] णा र्थेन स तं प ८ मन पाव नत ॥ त स्तु पवन न र्थ जिना ३ मय [illegible] ॥ स द्व र्मसमु पाद स्व धिम हान स्त सोपि वा ८ ॥ [illegible] मा का [illegible] न स्तु न वा

[illegible] ॥ सर्व त पाद या [illegible] ला ल धर्म [illegible] माय यु ८ ॥ तत्र [illegible] निं [illegible] नत्वा ह माना ८ ॥ यथा विधिम समस्त र्व धर्म [illegible] मपा य ग ॥ [illegible] न्स्व वीन्स मु पासीनान्

[illegible] सतगा बा म ग ॥ [illegible] सतं ततम स स धर्मं त मु पादि ग ह ॥ [illegible] सा पीत्वा स र्व त पा दया पि ग ॥ [illegible] का धर्म वि [illegible] त्वं म त्वा [illegible] नतु ॥ तदा स र्व [illegible]

श्री जा

पदप्राप्यं वरवृषभगवानिशं ४॥ केचित्स्वापि मुनसत्तमास्तत्र्यया भवगंगनाः ४॥ सन्तः दाःमिसंसार्ख्यं केचित्वर्यांसमावमनु ॥ केचित्कृतः स्मन हत्वा जिनवल गुणक्षमाः ५॥ तत्र आप
नमंप्राप्य वरवृलहुत्यासका ४॥ केचित्कृत्यमुनीन्द्रस्य गमनतसमुपस्थिताः ४॥ जिनवलरूजनं हत्वा धर्मानतानि नाम वनु ॥ केचित्कापिमुनस्य धर्मनुसातितत्या विनाः ४॥ ६ व
सन्याव्रगंधर्वपुण्यान्तु सानि मोलक वनु ॥ केचित्कस्य मुनीन्द्रस्य समूहंसांमगलालसाः ४॥ सर्वं द्रव्यधर्मपापक्षेत्रे पापसकवुर्णं ॥ केचित्कृत्समनंधे त्वा सर्वसत्त्वहिताशयाः ४॥ वा
भिनवहंसत्त्वा वरवल्लवर्षीधिवानिशं ४॥ केचित्कृत्वा सलंपापहितवत्तपासवशे गताः ४॥ सद्धर्मसाधनं हत्वा वरलब्धुं स्वर्गगामिनः ४॥ केचित्कस्य मुनीन्द्रस्य गणस्थानसमृणा
श्रिताः ४॥ न्यूर्यसत्पूर्णमाध्ययवलब्धुं मोक्षभागिनः ४॥ अर्वमर्वापितावामकल्पासमनत्रद्रव्या श्रिताः ४॥ जिनवलक्षणं हत्वा प्रवरं ४ भोगगंध कौ ॥ तकीसोलग्नवाह्यस्वामसद्धर्मसं
प्रकारितः ॥ सर्वकुण्डवनस्थर्वपुरुवानसमाधिकाः ४॥ ग्रामकजनपदव्यालुनगरघसमकाः ४॥ सद्धर्मसमुपादिष्टवक्त्रामसहस्राणि कोः ४॥ कथाक्तमाय नंतरत्नाक्षरनेन मि
नः ४ एवं ४॥ उपानं वहिदृ्यानजन्मवनात्कयय था ॥ कृतजन्मवननम्रतगवान्तसलांधिकः ४॥ सर्वलोकाहितारथेनवि शहितेषप्रणासमनु ॥ तन्त्रावस्त्रानामाकर्ण्य साव

७९

नभीनवाधिपः ॥ मृदितास्य स्ववार्त्तं स कूर्मं तं तु भेकः ॥ कथ स्य समुदितानां । सहडाक समृद्धिरिति ॥ अस्मा स्व जने तार्द्धं मतास्य ४ पृथ्वा वन नृ ॥ म कस्य हन्त पीडा द्रुत स
म हुं तं म तां पिकं ॥ पृथन्त्वा स हे माग स्थ न्ल वा अ सम याव न क ॥ कथा पनस्य स्ना उडु ४ सा उ ५ लिव पृथ्वा गेन ४ ॥ यादा कस्य मनी द्रु स्व पृ तलो म स मादिनः ॥ नानक्ष्वे दि नि वी ल
मु स्या नरः स न्याधिपः ॥ मत्स्य हृ मीम्त तं पा तु म कालो म स दृ पाद न नृ ॥ अथ लेन गवा न्द वे न लर्ड उत्ता भायं ॥ सं वा धि सा पन लड्‌ स दृ अं स मृ पादि गा नृ ॥ मत्स्य हृ मी म्ता मीना स
ननमी प्र वाधि पः ॥ फ्रि नल ह ज नो त्ता हं व तु मे क त्य मा द पः ॥ म न व स न प्य नी ना जा सा क्र लिव पुन अ पु ज पः ॥ त गा व कं न मा ल म्य पा थे य दे व मान्वा तृ ॥ क गाय चा द क मि क त
गा व नं म सां पि कं ॥ त्रि मा स्व वें विं तं न मे पृथि वा सि तु म हे ति ॥ श्रु जिम पार्थि वं म नाऽऽह ३, त्वां स त ग वा श्रि नु ४ ॥ न ४ थे ति क पथ्या वाह स्य धी त त्वा म वा स क नृ ॥ अ पृ थ म न्क पा ति म
त्वा गा स्तु पि वा सि तं म नृ रा ॥ म दी घ नं म नि निं न त्वा म हा न न्त्रा यं नं पा थो ॥ म जत न नृ प स्वाम स्य पृ मा यात्म धि ॥ ना उ जानातु ॥ माधि वान्को ड ना जो वृ पद ४ ३ व्हं म मा दि गो नृ ॥ क न्य वृ यंवि
आनीधं यदि कादि ज गच्छ ना ४ ॥ उ प ना तुं म ते घ मो ज मा मा न न मा दि क ॥ म म त वा ति तां म नि त म्य दा न क ४ पृ शो ॥ ध्यपि ॥ म म हृ माम मं प्र स्य ऊ द्धया हं नि वं द्य ॥ पृ मा

श्री   श्री

नमिरु संन्या यं पश्चिमि नकूदावन॥ जनायतिमनार्थेन सर्वत्री नृ कुनामिन॥ कथमपि श्रमयमं नेषयाथिर्हनाविताः॥ इय सा ध्यायं इ नाना ॥ इदं स्थानाक्रशीपनः॥ कीदृ
नार्थी मह द्वृष्ट्र महद्धर्मस्तलापइः॥ इइव यानिर्मता योगः सर्वलीना वा शक्तिव ता॥ तत्रीन थेकनः पाप्मा सर्वगुरुणु शे नावाः॥ नावल्म्बुद्धि विधानतो तेन्वं थमेव
कनानालं यना मनस्य वनागं या व हुवा कर्ला॥ श्रुतिक्तवा महानोत्र नागं सर्वमनोलापः॥ जित्वा सर्वश्रयलन थर्मवन्दितु मर्हति॥ नामविद्वस्वानतलवयमेवं वनपुः॥ ४६
॥ मकन्त्र॥ नितात्राभ्यसं दंद विनसादनां॥ व्रजिनलादि नवाग धीवालं अवधानात्मः॥ उद्दिश्य मानसा शीतं सानथि मन्त्र सेहृधीः॥ एवं वनाम विषयेः क्रमतीवगा
॥ मलकुनग निता भ्यासं मंद्रः विनसादकां॥ क्वचिदन्वर्निधवा गश्चिना लमय वचा मन्नसाधुः॥ उद्दिश्य मानसा शीतं सानथि मन्त्र मेहृधीः॥ कथिन्द्रसघातः
नां सर्वमिदः॥ शिवमिनेकविधाः स्फुटनि॥ प्राप्तानमवविनमभिन नसानं विधानं॥ मदात्मकुदयान्याति सा कीर्मानि॥ किं वासमिसमाश्रितकपदे कायित्र दसयानि
ना यावा गानिता मयानि मनः थीर्नानाः समुत्कं॥ किं नवास प्रणमनविषयः पापनाशं चक्रवानः संप्रयमानि नवश्रिन यं विन्तु सर्व तुनानि॥ नवादि स्वाय मा
कृत्वा वाक्या मनस्यनन्तु॥ एतत्तवग्रहक्रान्कृतं सर्वमनविनायता॥ यययं तु पती नामा ॥ याक्षुकसद्भोनुः॥ सर्वानि प्रतिअनन मक्त्रमेघ वनक्व॥ मद्धर्मा नमः

सु मात्र प्रविश्य योगमात्सु तानु ॥६८ गयानीति निश्चित्य मदद सामनाविशतु ॥ ततः कृत्वा तावत्न महामात्र ७ सर्वाञ्छिमानु ॥ ततः पतितं समाम स्त्रु पश्यन्तव सवाहनानु ॥ विकड
अन्तआनीतय छद्मस्वरूपं महन्तु ॥ यदा कुणि हवा रक्षुःस्तु व ब्रूमि प. पुणांन ॥ कदाचित् स्त्रोकाव कुंड स्वयंभे स्वालय ॥ कन्या गमिति विकल्प्या स्थं जानयन्ति वेवा म्रगे ७ ॥
नागाव्याधिमहल्ल सुपूर्णानि निधि सर्वां मता ॥ गर्भे कन्या सतत नाम्र हूर्तीतस्तु वनेष्वपि ॥ भवाम्भव मुनीन्द्रा श्रीं कुंड माने गता स्तुपि ॥ वं जगच्छि लिपि ह स्तुं न गङ्गा वलिका कथं
न ॥ नवांग्य लोकेना भानं यो गन्ध योऽतिताः ७ ॥ रजानि मतर्गं सत्त्वां गयामव पनागति ७ ॥ गवांपू ज्यं जगत्स्रोका साध्याने ... कार्य कहां कदनुताव ७ सर्वं गतानि तु
७ स्वसागरं ॥ यय गवां मुनीन्द्रा श्रीं कजानि गन्तं गतो ७ ॥ गर्भं तव महानस्वा वाधितल्वा तव नक्षपि ॥ नतोप सर्वं पिशत संस्क ७ सर्वसत्वहि ... ७ ॥ सर्वं सर्वधा नाम ... का ७
प्रवर्त्य ७ ततः सदा ॥ ततः पानमितो ७ सर्वा पुनश्चिन्ताम थाक्रमी ॥ सर्वान्नानग ७ आज्ञि स्वो हं कोवाधि मूलाभूय ७ ॥ ततोऽत्र ज्ञात्वं न... क्र गायित्वा ७ लांवाधिं ॥ सर्वान्दु
पद कान्यानि स्ट्टीति समवाप्नुयुः ७ ॥ एवं विज्ञाय ना... यदी क्षितिपि वां गतिं ॥ संव ज्ञात्वं सर्वमसत्त्वा... क्षत्रं लोकवान ॥ तन्वाधि प्रति भानन्तवं नेतु वाधितत्त्वं नी ॥ ए

श्री

[illegible] नलिनी [illegible] ॥ नू [illegible] लभिना प्र [illegible] नगदि [illegible] नाय [illegible] याया ॥ श्री विल [illegible]

श्री [illegible] भागवद [illegible] नगउन आति [illegible] नानायूत ॥ [illegible] प्रतिवद्र [illegible] विनम [illegible] पालन [illegible] ॥ [illegible] नलिनविक [illegible] दप्रक [illegible] ॥ [illegible] पनि [illegible] पवाह [illegible] मान [illegible] २०

निलिन [illegible] नगुणं [illegible] सन्निधि [illegible] नं ॥ [illegible] थिगा [illegible] नश्रे पादम [illegible] मलिन विक [illegible] ॥ [illegible] पुरा [illegible] मालिन ॥ [illegible] लवन

यलनास्ता ॥ [illegible] पतिविवना [illegible] मिनाद [illegible] हिता ॥ नु [illegible] विर्दानि [illegible] नलप [illegible] ॥ [illegible] बहल मन [illegible] पलिफ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] सांप वां [illegible] विवि [illegible] श्री वि [illegible] लयं ॥ [illegible] नलिनं [illegible] लावना [illegible] ॥ [illegible] पालाठ ॥ [illegible] पु

थि [illegible] यानू [illegible] निलिय [illegible] प्रवचि [illegible] ॥ श्री विलाला [illegible] ॥ [illegible] पाथिय [illegible] ॥ [illegible] सर्वथ समन [illegible] मना [illegible] त्वान [illegible] पि मृ

नवलि [illegible] मफोहि [illegible] विपद्मव गा ॥ [illegible] ॥ [illegible] सहि [illegible] पालि [illegible] ॥ [illegible] सावि [illegible] ॥ [illegible] रानो

मृगपि [illegible] लहव [illegible] ॥ [illegible] पि [illegible] ॥ हि [illegible] तथापि [illegible] विज [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ अपि नाम [illegible] सकला [illegible] ॥ अपि

[illegible] नयाश्रुति [illegible] प्रजानां ॥ अपि [illegible] ॥ अपि [illegible] ॥ अपि सर्वविद्या [illegible]

[illegible] ॥ अपि नाम [illegible] सर्वनाम [illegible] ॥ [illegible] प्रवीन [illegible] ॥ [illegible]

नां ॥ [illegible] प्रजानां ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ अपि [illegible] पानि [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

श्री रा

नामतानाम॥क्रुध्यं नमपनृदिकादपनं गमीय८ संमानवानकनिव भानमपदव॥तस्माल्लुकार्य मलिनायमिलं ध्यव यमिस्त्रीकाय तत्पक मालहि गं कनु र्थं॥ कानिमा

न्यक्तगकर्मेत्र काविदिल्वामन्धान पर्वपवृप सवनादन लकाम॥पापान्यमक्ष पवि तापकृ लादयाति पाक्षा ग्रयापि यूनि वर्गायि शु यत्पर्षा॥ स्वकान्य नाविनि मनीय

कृतप्रपनिज न्माटवी महनु पथ्यदनापमानि॥ पथ्यानिसं विलुगमस्तुगि कानव त्राकन्याद मित्र ववर्ने हिनलं घनीयं॥ वर्षास मनत्तु भिष्म माहिन सान

हात्मानितिजपनृगु अनाकउन् कानक दह॥ अवशिलगकन्मीय६ पर्यह स्वात्मकार्य गमयि हृगनु पंत्व गमिवानवाह॥ कृशिजगाहय कीवा उकमु श्रीमनु

डा विपदभनिलिया गाव्यात का वृष्टिया गोक्ष॥विग नगलादपंकवामपर्यंक्री पाद्धि पाविलि ४स्व म थूरवा नोकामु कानयन्ति॥ मदू पदे गमाक्षय सर्वग मन्त्रु

मृदा॥ तत्थत्व स्तनु मादक समाव ने न्त्र हृगे॥ ... मन्न नाथ ८ सामासि ४८ स्नाधि ४८॥ स्वाहि मार्थ कायोकि निमक मानम ८ हृ ती॥ लोकचि पक्ष मा

पार्थदिवाश्रियपिनि ८ ह्य द॥ शुक्ला ति यं जाति धे न्वाहितार्थ समुपादि भा॥ तत्से वविपा कृत सर्वा ६ पानमिता ८ कमात॥ तंस्तुर्य निजय न्मानान्वाभि

५१४

प्राप्य जिनालयम् ॥ यात्रां सामासिक्येऽस्यैव राजा लोकहितार्थिने ॥ अथ सवऊ गच्छत्का भक्त्या मितं रक्षतस्तवा ॥ एवं स भगवान्सत्त्वहितार्थं स्थिरं तत्र ॥ लोकानुभिः स्म नृपि सप्तरा
पवार्थी जिनालयम् ॥ नानापार्थे विधानेन ऊगमीहितसाधनं ॥ समुत्पुरुषऊ सदा धर्मावदस्तानेय अर्थितं ॥ कथं नाम स्वतनाकोहितार्थसाधनोत्सुकः ॥ यथा धर्मिं निःप्रश्नं ॥
तत्सर्वार्थिनिष्ठतुर्वये ॥ तत्रथ तस्य व्यसाधेन सर्वदा मंगलं भवतु ॥ ऊमास्तानतिभाषणं पूर्यबोधिप्राप्य जिनालये ॥ इति मन्मर्दनोपदिष्टं लोकस्य सततपालितं ॥ तत्रथ तिप्र
लिविहृत्य प्राप्य नन्दतस्तथा ॥ एवं श्रीदं मनुष्यं सकलहितकृतौ समऊत्मावसानं यथापि अवयकीऊन्मुदितमनन्तसऊग्राह्यवार्तिकमत ॥ सर्वे ते बोधिसत्त्वाः स
कालहितोय ॥ श्री समऊ क्रान्ति यकोऽस्य श्री रत्नं कुशासवार्णे हसौ वलऊवनसंपयायुक्तऊ वाक्यं ॥ ॥ इति श्रीमहायानसूत्ररत्नावदानमाला यां सा सज्जनका
वदानं समाप्तं ॥ १ ॥ अथ ऊपासामहानोऽऊ कृतानौ प्रतिलिप्त पुंनागक ॥ उपगर्कनमर्हतं नत्वेवं पुनरब्रवीत् ॥ तद्दत्त ऊऊत्तमि कामि पुनर्नत्वा तत्वाधिनं
॥ यजनीऊ कृतं कमनिकत्तमामदस्य समर्हितं ॥ इति सं पार्थिनाह्वा भीहान्म सहसखी यतिश्च ॥ तनः गयो कंम हर्नाऊ समाते वै वमोधिनाम् ॥ १ ॥ ऊमासम स्नाऊयथो मत

श्री श्री

दिवाकार्या सन्दीनविमलनिकाय॥ त्वमा कानाम ककाश्रीलक्ष्मा व्याकरणवीर॥ कस्य एतत्सन्कुशिवीना धर्मादिलाविश॥ सर्वा श्रीलक्ष्म क्षेत्रसर्वप्यासं दत्ताग याश॥ कस्य पर्व

दिन व नमस्का सम दत्त श्वेतिश्च समृधी॥ श्वाम्ल श्रीलक्ष्म नामस्त्व सर्वविधात्र अधिप॥ सम्यक् पूजा पूजाकारत्न दर्शमूर्द्धिमानिव॥ श्रोतिगन्त्वक्रमो गोगिर्वाञ्जन व पवि

शाधिधुम॥ दिव्याभिसन्दन श्रीमानासम न लड्डन्तुपर्व॥ श्रीमन्त्रियाविशुद्धं भवस कर्मगुण ॥ नामक्तन॥ श्रीमया आन मोऽतस्य मस्यापवागा॥ महत्या प्रमादिता ममनायन

श्वेपप्रार्त्यकु समागागा॥ ततमक्तुग्रयं च सर्वकल्याणानिमर्हं सुता॥ समडुगर्भ स्वभुवनामं वक्ष पुमादिन॥ नमस्कानात्वदत्तशोवानमां दिव्यासन्दन॥ य ७८

श्रुमा सुमनदत्तदत्तक्षमिवपदक्षर्॥ कोमिवृक्षु पक्षा कृमान त्वसमाफवात्॥ वितक्रमाम मतेत्वा वाधिसत्त्व दानीवरा॥ कागात्र नृपुरमा बाले सर्वविद्या

नामाफवात्॥ सर्वप्रवादिना जित्वा गमका धर्माधिपान वसु॥ नमालवविनकांसो स्वक्षातेर्वान्यविप्रतान्॥ पुष्पजिगाविषुद्धान्वानिक्षे आविविज्ञानाङ्ड्य पसर्वान्मा

नरा॥ दिद्धिल्वार्त वोधिज्ञान साफवान्॥ माञ्जादर्दत्त्वमामोधसंवक्षतकुयागक॥ नमश्च सरगवान्द्व गतीनामस्थागत॥ धर्मवाङ्जयस्तुमामुनीन्द्रानर कवान्क

नाथ॥ तदा कृष्ण मनर्द्धश स्तुहत्ता काधिपत्तपि॥ तं वृष्ट्वा पद संप्राप्ते ह द्वाविंशतिं मुनीश्वरं॥ तदुत्र कृष्णा मत गजाशीर्लीकपाल गदा ८ मह॥ तं मुनीन्द्रं समस्त सर्वं पितृपाला
न्यपाह ननु॥ [illegible] सगर्कं नन्त्यों हृणा कृति पुरामद॥ तस्स कुर्मीमर्गं पदं सर्वगत समुपाश्रयन्॥ [illegible] यथा प्रियागिना पिसहं [illegible] ये ३॥ [illegible] कान्त्ययो किन्नमाना
क्रमाप्तुपि॥ नागमस्त्रागतुतास्थ्य पिविप्राथ नादयापिष॥ सर्वगतमनुपागमस्तु संवृत्तं मुनीश्वरं॥ यथा ज नंतसमस्तव्याहृता कृति पुरामुदा॥ जिनेश्वरं दिगीशं [illegible] पनिर स
नमनंत ४॥ तस्स कुर्मीमर्गं पदं सर्वाधिपुरा वाधिष्ठित ४॥ पुनः [illegible] समालो [illegible] समपुरकस्तना कोथा॥ गतां [illegible] पातीनां [illegible] सम्मुत्किका ५॥ [illegible] तिर्मकं मुनिन त
आर्थं भद्रवमादत्तोनु॥ [illegible] भगवान्दृष्ट्वा सर्वां स्त्राकान् परिकिणान्॥ [illegible] ग समानेत्युत्तम कुर्मीनमनुपादिशत्॥ [illegible] गाद ६॥ कार्न धर्म वर्ष्णं प्रवर्त्तयतु॥ आर्य धर्मी [illegible] ६ मर्वा
वक्रार्मीतस्समाश्रयनु॥ तत्क्षणं सर्वेपि ग्गोवाक्षर्म गजादयो मुदा॥ एवा ख्यिता मुनीन्द्रं गन त्वा स्वत्वालयं ययुः ७॥ तदा धरद्य यत्नात्काल कृत्स्नं गनं गंगमाण॥ [illegible] समस्वनं ध
त्वावन्द्वर्द्ध मवानि नर्द॥ वांचि कृष्ण तनं गत्वा त्वालतं नमनाद्यमा ४॥ [illegible] धिमामाद्यव तत्वर्द्ध यागिन ७॥ वांचि कृष्णु तर्न किन्त्वाप्रिन त्वा कजनाममा ७॥ सुलोगमि

[illegible]

श्री रा

तथाप्यासमय न्यानतेनान्तः क्रोधमत्र समाहितः ॥ तत्र राजानमभीष्टधर्मे रुरुषु मया गतः ॥ कथावा ऋतुमानानां सर्वे पिनमया प्रयतु ॥ पूर्वं विसम शाला ऽत्र न केन य
था स्मृतं ॥ तथाचानि मिधनाधिकृमान धेरानाथिना ॥ स संपरस्य मुनी ऽड सामहिन्या ऽन पृथिवीं ॥ एवं मान कृतान्न रमान सप्रयथि तिनकार्ने ॥ सत्कारैः समुप का पसर्व
व तत्रास्य सत्कृत ॥ एवं सर्वैः कृमान्ने सेन न नमितन् पारसे ॥ सप्तापि कें मुनीन्द्रे मं माव्य ऽय सत्त्वा ॥ एवं मस्य मुनीन्द्र सवा दृष्टा आजस हस्तुकं ॥ सत्कारैः सम सत्काय
सास्य स्यात्र सत्स्यतु ॥ तथाप्यमातिष्ठी नाह्व सापि मास ऽत्र गत्नुनाः ॥ सर्वोऽन्तः पूर्निका तिश्च समं सत्का व्यन्तन्तः ॥ एवमन्यापि ताश्चास्थ समकिश्चन पोनि काथे ॥ स तसप ८३
स मुनि कास सत्कार्नेन रा मुन्नुना ॥ तवा का ऽस्मुनीन्द्र सपिपात्र मुखि तांसदी ॥ नाह्ननं नमिनेतस्य पुनाः हि त ऽपु कार्यस्तु ॥ तमुऽर्ने वि रिरा ता ऽसमधाथि पृथि
व्यामनेकधा ॥ तत्व द्वीपस्थ सर्वत्र ताः कथि ताप्ये ऽत्र मन ॥ योवि ता स्यक्ष्य सा दक्षौ लिङ्गा मत्व हि ता पुष्य ॥ वाधिमार गपु तिष्ठाष्य सर्वात्रीका स्ववाचयनु ॥ सम गा गा म
नीन्द्रं गं सर्वेन पेऽ पूनु स्तमं ॥ त्यान ऽत्र कृत मोल कर्म पिलि तां ऽ समपावनम ॥ ततः स सा ऽश्चि तिनेन्तां ॥ मालसं क्र षा गतं ॥ पूनः ॥ ऽ समु पाधि प्रा र्थयं देव मा

[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] महति ॥ [illegible]

[illegible] सर्वदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विहाय [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

श्री ... ग्गा

हंनागं क्षणापिहुर्लीहं कणं ॥ वृक्षानाक्ष समलकि ४ मुहुर्लीहा करावन ॥ मुर्लीह ४ कृ णस ...न्द ४ मन्निर्यं वापि हुर्लीहं ॥ सं वाधि प्रानि धान ... र्लीहं हवनानुरल ॥ स्वर्ग

नासं महानागइ ४ स्थाने हवकानणं ॥ मुद्दस्वा नाहिनि वान ... मनेन्ध र्यमपी रुहि ॥ रवनु हवि नवीं हि विन इ ४ स्व ममेक ग ४ ॥ ग दनु मस्वनं ... प्र कृपा दाधिमा धन

॥ अल वर्स किना नाज न्द व मन सम स्वद ४ ॥ वाध्यव ... लानि श्री दकान ... यमो ... ना ४ ॥ य वाला ४ पं वाति ४ वाम ... न पलि ... फि मा ४ ॥ विमयय मवा नकर वां ... नि

न हल नप्रियं ॥ गम दान वकया गा ४ पुन ४ ... नापि गा ४ ॥ विनंकान ग व ... कि ... नि हु ४ रविन ४ मरा ॥ नियं ... पिव ओ कास संमी ... पतीगिन ४ ॥ प्र ... यान

हक्र ... माल नि इ ह विन ४ ... ॥ अम ... पिव ग गा गा ४ कृनि पा ... नायि गा ४ ॥ वि ... नां भवि ह ... न नि हुर्ग मवन ॥ मान ... पि ग गा गा ... प्रिय यथि वी

गिन ४ ॥ दनि ... प्रिय ... हु ... नानु ह वनि व ॥ वे ... पिव गंगा गा मदा इ कान मालिन ४ ॥ पन स्वनवि पाकाहि हु ४ रवा नानु हव ... वि ॥ दव ... पिव गंगा गा ४ ।

कास ... मि नागिन ४ ॥ व्यवग पादना ... नि ... नि दुर्य स्विमा गया ४ ॥ व वैहवान वावा ला ... मकप ४ यं ... नि ... पि ॥ नानावि ध नि ... नि ... वनानि

७ग ...

गा ॥ एवं हव समग्गद्द रवं विहूणय मल्ल खलकयथं ॥ बोधि विणं समा मणय ववन सम्मद्द संवनी ॥ विना कल्या णमिय ३ ॥ बोधि विद्गं नलक्षण ॥ बोधि विनं विना सर्व धर्म एव स्वल्पकस्य
॥ एव हरवेन णो वालाः ६ त्रिविधकर्म णामापिन ३ ॥ सरवह्न रवो निस्तुं णाणा ज्ञानं निरवषिता छद्म ॥ बोधि विहनन धर्म मूलं सर्व मर्यादा ॥ सर्व सेव्य हिता भन सम बोधि सल्ल
कम्मं ॥ कस्स वी सुम महा राज संसार बोधि बोधि एं ॥ विवामय नरव ह रवानि बोधि वर्ण ग्रंथ वन ॥ संसार बोधि रक्षु वाता ६ सतत भोगानु गोमिन ६ ॥ धर्म कि सहाम ना सम
म्मार्ग लल निन ॥ धं बोधि बानि ९ धी ना का कार्थं ब वानि ४ ॥ बोधि स स्वाम हा सत्व न वकिगण ता श्वि न ४ ॥ सर्व दुःड ना हृत्वा सेवं सत्त्व हि सा त्वयि ॥ आर्त बंस सत्व रवं
कुक्षा प श्री नि र्व्र जिवा सूप द ॥ एवं मन्त्वा स तेना गं विन मा हव वान ५ ॥ सं बोधि सा धनं वि हं निश्चय म सद्धर्म वन ॥ य द र्दा हि म हा नाज्ञ लोग वत्त मस्तु ॥ लक्ष कात
धिकान रवं ग ऋ ल तं कि मा मूधी ४ ॥ वह्न ऋ वि तनी वि लज्जयत्रि गं वनणा म्मूल बाधिनपु प्रत्य थ ति नन्द्र जनानन ३ ॥ क्रं रुंव ला वाप नं पीतल नंना क्रां रु
दा ॥ क्रांति श्री आ वि मा निसु धर्म बोधि ज्ञ गंमूला ॥ तद हवं महा मोज समग्द्र पत्त द्विय ॥ सर्वा हो विहना ध्यं बोधि वर्ण ग्रंथ वन ॥ यथर्व वन स वा कै रो मात्वं

श्री का

वसुदेवहि... [illegible]

नृप ... [illegible] ... यथो ॥ ... [illegible] ... ॥ २ ॥ एवं ... [illegible] ... ॥ तथा

... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥

... [illegible] ... ॥ एवं ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ अथ ... [illegible] ... ॥

विविध ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ११

... [illegible] ... ॥ अथ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥

... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥

... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥ ... [illegible] ... ॥

... [illegible] ...

मा॥ किंकन वान्य हं यह्न्वार्थ मा ज्ञाय प हता॥ रुक्मि संपार्थि तन वेशुव वाल सद्धि मा॥ वाक्य ३। ४ सव मक्क गं कमा ली धुं व मत्र वीनु॥ २८॥ युक्ता धिपा ता हं समं प मा सम त
मा॥ पूर्णा कर्तुं मन्निष्ठ नि दन्तो ली क्क मा वेन॥ रुक्मि तन ममाधि खं वेषा वर॥ अ निग म्य मत ४॥ स प्रमन्न मृत्वा शीघ्र ज लसा ती धं व मत्र वीनु॥ तथा मत्त्रा क्यु ३॥ इ गत्वा नि ध्या मि
मद्दिक्किमि॥ म यि विश्रुक्ष मा भ य ग तत्सा [illegible] म हे मि॥ कथं मूलं कुनय अ ४ संपार्थि तं ति नि ग म्य म ५॥ वाक्य ६। ४। म पु मन्ना लेला पुत्र न व मृ[illegible] गम्॥ म था थे ह म हा ना ग मि
नाम कमता य कान्॥ सर्वान्सन्वा भिव यो यां विनादस्य पूर्वा क्षेपत्॥ य य क्क न कें वा वाक्षि मिक्कति संवे व व गा॥ ग गी धं वृन्द न मक्क मृ या न य कु ला पु तां॥ को विवि दि वि व मी
॥ ख्रिड वानि कृत मोन्यापि॥ द्वि व सा दिव स पू र्णा क नि ध्या नि ठ्ठ ग कुं ना ७॥ रुक्मि तन दिज रुड लसं पार्थि तं नि गा म्य त ७॥ वे शुव ४। ५ पु स न्ना त्ला त थ्या वि प्राति गु रु वा नु॥
[illegible] ह्ला गत्वा [illegible] नाक्क वानु॥ हे नी मा ह सर्वा न्या न त्नि या श्चे व मा दि गम्॥ सार्श्व ४। ३ हं वि ज्ञानी यू र्ध स्वयं प्रा क्यु ३॥ ४ म धी ७॥ नाइ ३ २ न २ ४ मि न ४ गा॥ को
गुरु ह पूर्णा हितं ह ह तो॥ म तं धं न ल गं ह तां सर्वा प या ने २ ४ ५ म गा॥ स फ न यो ति स क्क म मे ॰ मृ प स्वा स्या ति क में॥ तद न त्त गर्न मूयं सर्वे तें मां द गा दना ता॥ गत

श्री आ

कृगालंकृतं सर्वज्ञस्य वदनं समंततः॥ अपुनिस्तां पृथिव्यां फलानीठंतमायत्ना॥ तया साति किम प्रापि कल्प वीयं गपादि च॥ यः पुनित्ताथि गंका यं मत्तां विद्युत् कुर्मे ॥

पितृर्वः मसर्व्ठो निर्विवादि गं नित्यमसः॥ समभूद् ना लो क्ता मां सर्वान वमतु वी ॥ यथेत्ता यदि सङ्कुर्मं वा श्रुत्वा कि मन् ॥ गत्वा स्वयार्थ दे माह्न सम्यक्

कलमा दत्ता ॥ तत्र दृष्ट्वा ममपा प्रिय सर्व हृत्य भगं वा ॥ अपि मध्यान्ते कल्पांतसमुद्भवं ॥ साहि ॥ संख्यानां च सन्ति सं सर्वापि केन्त्र ॥ सतक प्रसाद्यात्वा हं

वानय तज्ञ गाहुल ॥ ज्ञिन्नले तज्ञनाहुत ये छे मन्त्रा ज्ञि वायिता ॥ सर्व लोकहितं वा क्षेपवि न मम तः ॥ तथा विनतमादि दं स्वा पंचापि गतसा ॥ तत्पस्य १३

नृपादि त्वा स्वत्वा स्य दं कृतं मह्य ॥ तत्र दृष्ट्वा धि वः गजन्त्यर्थिं यौन्स पार्थ यातु ॥ स वीन्द्रवानृना दूय संनिमा क्षेत्र मादि ॥ सार्थीरव लविज्ञानीयत्वी दृष्ट्वी प

नगमिनः ॥ नाहुः स्वपा दितः शेषा का सः ॥ वाधि ता वुकः ॥ सति नल प्रसन्ना गानन्त गर्भं मनी ॥ मतं पंमफाव या नि तम पुत्काः भि कृति ॥ तत्रा स्मा

भिक्षु पानज्ञ म्बु वदनं समन्ते गः ॥ दिव्यानि सन्दर्शनं मा प्रकृतं स्वर्ग तन्नि ॥ वयमपि स्तानां सर्व तत्र गत्वा सं मा स्वा ॥ नत्वा गर्भं मनी कं मम पारिविस्म ते गम

हि ॥ कल्पकर्मी सत्वं वापि प्राप्त सर्वा महद्धना ॥ तत्र धर्म मनुष्याभावे समाधा स्त्रीपदि लभ्यता ॥ कृत्तिगन महद्गुण तु माधिर्दृष्टुं निगम्यता ॥ सर्वसौख्य ल याम त्वामं ॥ अम
न मक्रवतु ॥ देव कृप त्स्कर्म पृथ्वं त्रिनलोष्पु समाद्भोगु ॥ वयं सर्व पिनत्वं मनुष्या दाम्दम्बा ॥ तद्धानुष्या दनाशावं प्रथम स्थान्धं वयं मदा ॥ याधीवन लनी यांच म
मनिगो मयामहे ॥ एवं यामाधिप श्रपि संतुष्टि मा क्षिप्रपूर्व ॥ निर्माण नंनिप श्रपिनगयर्क श्रियापिव ॥ स्थानस्थानन्त वीन्त पार्षद्यानामलुंवं वमना दयेनु ॥ गम
र्व देवपूजार्थं सद्धर्मगुणं तालनाथ ॥ जिनस्य धनं कर्ड धर्मं वरं उत्तमीक्षितं ॥ गतस्तु पंच दवैजा स्पृपि स्वास्थ अनोन्विताः ॥ यात्रो गच्छेना यान रामयनो ५ म
नाथयु ६ ॥ गतम्म मूनीन्द्र स्मनेषां यादाव यो त्रिताः ॥ मत्त कृ मीमध्य प्राप्त मूपवक ३ समाहितः ॥ अभ्यव गग मुक्ता सं ममापि कं मनीश्वरं ॥ प यर्थेक्तो १ कृ
मूर्मदिय ६ मत्साज्ञे ६ समवाक्तिवनु ॥ दिव्यानि सर्ववाद्यानि वा द्यय गाम हाल वं ॥ प्रकुर्वन्ते ५ प्रणामाधि कृत्वा गरुड यथा थिनः ॥ कथ मत्त्रीमस्कु यो ५ मत्वन्तौ
दानवानामि ॥ अनुकंपे महायानस्थापयितुं मवाञ्छुगा ॥ एवं मस्थमने ५ स्कं मि मत्वा सर्व २ स्माधिपाः ॥ स्वस्वपार्श्व कुर्वने ५ स्माकुं मकुं आन्दवनये मु ५ ॥ गत

१३

श्री

[illegible]

प्रदीपयाकं प्रमादिन ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ एवं [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ नगवदेव [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७३

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ भगवन [illegible]

[illegible]

नर्द्धिदक्षिणा॥६॥ प्रेमासं प्रतिसंतर्जुमिच्छामः॥ आगत्य ७॥ तदा सार्थं दयावान् [illegible] कृपया तदा धन॥ एकैकस्य प्रतिमास्थानसन्निधि वस्तु महान्ति॥ [illegible] सर्वदा
प्रार्थितसन्मुनीश्वरः॥८॥ तानेवं वीन्स्य [illegible] लोकं रुष्टी तत्त्वा [illegible] यतु॥ [illegible] नानन्तं भीम साक्रं ति [illegible] ॥ मतं वंदं मुनिनेत्वा [illegible] नवोलयं यथौ॥ सुयोग [illegible]
माना [illegible] थौ [illegible] निमित्तं लिपि ॥ मतं वंदं जिनेनत्वा प्रार्थयदवनादि [illegible] ॥ तगव [illegible] यौ तिनकूर्न ॥ [illegible] यासनुपस्थाउनिच्छामितरसौदया॥ [illegible] संथा
र्थितमतनत्तगर्भ [illegible] वंदविधा॥ मुनिमिथं ममा लोकं रुष्टी तत्त्वा [illegible] यता॥ तत [illegible] निमित्ता तोजकृमानस्कं मुनीश्वरं॥ संसारं छिंदं समामन्तुय थौ विधिसमर्वया॥
॥ यथाई [illegible] तौ [illegible] मेरु [illegible] तरसाकमे॥ [illegible] प्रमुखानं [illegible] विद्यानमसाय यता॥ तत [illegible] विमानस्वलोकस्य [illegible] प्रमुखान्यतीत्तु॥ [illegible] तेषां [illegible]
[illegible] मरं [illegible] यता॥ ततः पाराद्ध्य पाठकेषु सर्वेषां [illegible] नामृता॥ मुनिमिथकृमानाशा [illegible] ति [illegible] मात्॥ भगवन्तं समं धंधं कृत्वा प्रदक्षिणीकृत्य॥ [illegible]
[illegible] प्रणम्यासनमुपाश्रयतु॥ ततः [illegible] भगवान् [illegible] दत्वा [illegible] तिरं॥ [illegible] वीन्द्रां तानमादयता॥ [illegible] भगवान् [illegible] सर्वमंसौ धि

श्री ॥ नवकलपकाः सर्वपुरुषार्थगवेषणानं ॥ बोधिसत्वान्नमस्कृत्वा सुपापिप्याणि संप्रदिवथा ॥ सर्वेन समुपागम्य गत्वपूजां यथाविधि ॥ कृत्वा धर्मसमाक [illegible] बनिध्यन्ति ॥ तद्व्रत ॥ समाधि वि
नवौधि यातो धन पुरुष पुरा ॥ ऋगन्या कार्यार्थेन बोधि वसति मा दिताथा ॥ तत्त्वं बुद्धा नंप्यगत्वा सप्तगवा धिवानिष्ठ ॥ तव सत्कीर्ति मा तत्व अवधि यान्ति सर्वतो ॥ य
त्राविष्ठाकः ॥ सत्व बोधिसत्वास्त्वा वाद्य ॥ पमान्तल नमा वीना छ स्तुं मकवत् तत्व यो ॥ जगत्सर्वविपाकत्वं वद्गत्वानु बोधयन्तु ॥ वंशाखे संघ्रीत का पत्र कानि यसा विवर्कि
कान् ॥ नसर्व बोधिसत्वाः निर्भव सगवान्नाग ॥ ध्वेतु तत्पा त्वभिवाय सत्वभिध्यन्ति सादनं ॥ पश्चात्कालपि भत्तवं बोधिसत्वानागो ॥ तम्यत्वं बोधि मायाय त ३८
विध्यन्ति सनोश्चनाथ ॥ तत्स स्तगा सर्वं सर्वं तत्त्व बनं गताथ ॥ तव सत्कीर्ति मानस्य समार्थ स्तकिमत्र वो ॥ एवं नामो मुनीन्द्रा ततस्तव सबर्मदगोक वो ॥ पत्र यो स्का त्वं
सर्वकृपाधर्म विनादिता ॥ बोधिमार्गे प्राप्ति चाप्पकृता ख्याप्य विवर्धिताथा ॥ एतमयीनु कृतं बोधिप्राप्याप्त सत्ता जिनाथा ॥ कृतिसर्व पिम व स्राव पथ्या कालानान्त
त्वपि ॥ त्वन्नामस्य तस्त्वा हिं समुपाद स्तुतिं सर्वकं ॥ मत्राणि विज्ञाकृत ला सत्व ह स्तुत्वा प्य नकथा ॥ कथित्सुकानव स्तथ पाव स्तुवेदना स्तुपि ॥ ज मत त्वा कित नाया

= नवकुश्यः गमास्तुरतः समालोदि भा/ग्र २ दे

= तेन वाचो हृदतयाः [illegible] विनानान्तिष्कापिता ॥ पाने वत्ते संयमे वते [illegible] वपि न पं [illegible]

सरस्वतं कषायिनाव हतु॥ भावकाहिंलं त्रवगु हक मूलं समाक्तिताठ॥ पुनस्तदृक्ति नाठ सर्वप्राणिभिर्विविधैनयि॥ स्मृत्यं वरं भाविताठ हत्वा कृमिनाम सवाक्यथ॥ पुन वा
याथिता कृमिं वधिना वकश्चियताठ॥ यावत्स्तुवदनाजलं कृमिस्वेनगुप्तातिनाठ॥ ग सर्वमंतुणामूद्रा लवयापुर्ध्यमयाति नाठ॥ रवनाक्ष्मनींक्त नीमानुषधर्मा सिवाखि
नठ॥ सर्वगां इवं विनवसत्वानां यार्धर्म विनाधिताठ॥ गवेंवापासनावेसनातविषयकितवारवत्॥ यत्रापिवाक्षगत्वमहत्वात्वया तथापर्ने॥ महिवनधमानुक्तयथाली
कृगमसेकाठ॥ नृपिकृगमिमा गैनदक्रिभाहिमूरवंगणाठ॥ गत्वया पृतुणा सर्वयातिनाभृविधदृष॥ कवलमालमुक्तांधप्रयकांवाधिमागणाठ॥ कविंतुवेचा
वाधिंवप्राप्ययासमिं निर्वृतिं॥ वगतत्वं वनिमिकृत्वप्रसंशर्मितं द्विजः॥ जगतत्वं पतिह्रायप्रातिनन्दातिवाविताठ॥ ९॥ ॐ लाहिसुं मुनीन्द्र गतः त्वात्तडामं रवी
मृता॥ स लभवं प्रतिक्षयप्रापनन्दतद्याधिगठ॥ अथमवाक्षरमानाक्षमनावृत्तिं विचानयन॥ संहानेतागतंनेकं मत्वंवंसमाविनेयतः॥ अर्यहिकृमिनीनागो गतज
तिथिमानसठ॥ स्तुताहं वाक्यं यन्त्रंतंसवाक्षीयाजयानिगत॥ स्तुत्वं वंसहिम्राक्षीत्वानपंगमेननेभिनी॥ पुनाठ समृणामेत्रु पक्षेनैवं समादिशनागमानुश्यंइ

तदेवमेवं सम्यमेठ

श्री श्री

जिनेश्वरसमाख्यातं निगाद्यतथ ॥ अनुत्तमामिनवाक्यात ॥ पुनर्दिनं यमन्द्रवीद्रु ॥ मुक्तांश्चिताजि अगार्तां यन्दर्थ दूद्यूत्ल ता ॥ मवनूकृत वार्नेष शत्रु माहि विमजुना ॥ कूर्तिविज्ञापि तानां सुद्धाम

८ भ्रमु पुगा न्नि तः ८ नमर्भि नं समानमत्तु समी श्रु वम ता वत ॥ नाकमं कनलावन्दु पावि पन्चु मदी पिनं ॥ मर्व मर्म कृता क्षुमा कौ विसर्न समपादि २ अनां ॥ मकू जिनाना वि जनार्नि नं यप

न वा धियू ॥ वाभिता इ तत्क्रू तिनेन्त्वा पुनी तुं शमन दे कल ॥ एवं वन्मर्ममा कान वावि म त्वा वि णी विनि ॥ मञ्ज पविनृत्कृति नसुवा दमू मर्दि नि ॥ कार्य भी कानमत्वाद्यु समन्तु

ह्मार ७ तुष्टा णि या ७ ॥ कानेवे कर्म भा वा पिंदा योयू क्षा म्न गदि ४ ॥ मदुक्तिं कषा र्थि नत्वा हमा न तं गर्ह म्न ७ भगा ण या ॥ मनन्दुं नमाला क्वू सा भव्दि विद्विन वादिना ॥ प्रविमेन नना ४ १०

ठ वाधिमर्व ६ ७ प्तु वा ग य ॥ ठ विन्तु द्वं जिनक्रतं पनिमं कानि मञ्जका ॥ मंच मत्वा ८ समनून्त्वा वी पीय कान्य पिता ॥ सर्वपि प्रतिभान नन तदुनिं सत्क्षमावत्त ॥ यथा पवि

भिनालन्वे यन यत्तू कानं कतं ॥ तथा न त्त्व न नलेव ता मं लानिक ताम्र वेद घ ॥ श्णि मनुं पवि हा य संवाधिनिनि का णे यथा ॥ जिनवत्त जनं क्ल्वा वन्नत्तया विस मन्वं ॥ तून

म न क्षिया वतन पूर्य पात्रेनि ता ७ ज नानु ॥ जिन्त्वा भि नगणा न्वावि पाप्म व द्धू पदं नत ॥ ७ ॥ कूति जिनजु नौ गद्र नेतमार्दि हूँ नि भमा म ॥ नने ता वृद्धि मान्य प्रणाम्न न्कृ धन्य

णो॥ कक्क सत्त पत्ति धुंमी मा नाउरु लि ८ त मूपा ए यत्तु॥ नल्लग हं मूली ड्डं गंप्प असे वंन्य व स्यपु॥ य घेवुं रगवन्ना ड्डि णजमणा वण मल ३॥ कद हं विकायि ध्यामि पुतिधम्मं पहु हरगाक्ष॥ य
रुसं माव गं वु द्ध ऊरु य धामे नो मम्हे॥ मे था ग हु व मा म य या धीय ध्वु त नागत ५॥ अ वि वि हापि णमा हा नल्लग हं ३ समलं वि त॥ न पत्ति गं मन्नलो बहुतम कूविमुना स्य त॥ ण काम सन्न
पत्ति निन्वा मा ऊ लि संमूली थनं॥ ण वा हंपि नहा धम्म मद्दि तात्ता स्व पडुनेवन ६॥ कउ व तालत्थ लिक्खाधानसं निहिता णय ७॥ वह कउत्त एव पु हं विण्णय स्त्रो विर्मि ध्य धेमु॥ १
अजुथ मझाम्र रंगा धुं वं माहा न न मिन ९ हणं॥ अनि मि पी ति धुं य धं नमा म स्त्रु व मधुवी ता॥ उस्ता धा लहु ना यं संबा क्षे वि हु त्वमा तल न ५॥ यंत्तु या साधि गं पु धं जालवं पनिय
मया॥ अनि मुं खल तं मा न श्री सम मत्ता मता धनं॥ म ता नं वं नमवाउ गंत्त हृन्म सीगर्ग विनु॥ वरु मि क नौ दि गं उ ता मा निमि धा न मात्ते ऊ ५॥ मुवा हि गं म मोनत्वा मा ऊ लि नं
व मधु वी ता॥ यद्य व स्यो दुपा था यो लाग दे हं नु णा गक॥ वं हु अरु पुण पू हं धि लय्यि ध्यामि संसल न त॥ यदि संधा वि वि हं भ उत्तत्ता गं य था खल्लु॥ पुनन ऊसमाग प्र कापि
ध्यामि लव ध व॥ यन्न सं साधि गं पुथं नत्त्तं व मपि महु ना॥ तं पत्ति णा मोयि ध्यामि वा धा व स्म मतं नपुन था वहु पु हा तिमुर्नि न त्वा सा ऊ लि सन्न मातं ऊ ५॥ ग वा हंपि

श्री श्र — श्रिनिनं मत्वा सर्वविग मनाधिपाय ॥ स्तु त्वा तस्त्रि [illegible] दर्शन तस्तु प्रापयत् ॥ गतमा तं स्तु मा [illegible] मनाधिपा नयि ॥ सर्वमित्त [illegible] समा देवा [illegible]
स मा गा गा ॥ कृ त ते स मागता ॥ [illegible] त्सर्व मनाश्च सर्वार्हत्कि मिमवाधनं ॥ [illegible] तपनि पश्च नि गम्यत ॥ सर्वर्ष [illegible] सत्स्व नामा स्व [illegible]
नमाक [illegible] ॥ सर्वान् [illegible] पार [illegible] ॥ [illegible] सर्वं [illegible] निम स्तुवा ॥ [illegible]
[illegible] किन [illegible] ॥ [illegible] कार्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] १४
नु ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रार्थयामि [illegible] ॥ [illegible]
ल गर्भ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
मिनं प्रार्थित [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्व [illegible] ॥ [illegible]

शेवृ साविगत्॥ यत्र वक्ताविमानीयस्ते स्वर्द्धापादिगोलकम्॥ समुद्रजलवत्स्वर्य्यमुनीन्द्रं सद्विकीर्यति॥ तथ्यं मतलागलाजस्वर्वनं समलकथा॥ १ शायथिनानलोवश्चिकावि
स्कायंसवासनान्यपि॥ कूटमञ्जमपगाकादिनतलाललकानमणुर्म॥ नानानलमयंदृश्ये॥ कानयमण॥ १ शतितं॥ दिव्यनलमयंवापि कूटागारं महलनं॥ नवलनिर्मूहवेष्ट
कूकानयगाति॥ १ शतितं॥ वदस्याविकं सनलं रत्नं॥ अलयमंवापि गत्सत्वा॥ गंथविद्राविसंक्रमगतजस्वर्वनं समलं॥ गजाधानसमागतयमत्तागेथमलकाय॥ १ शेय
विलामलों॥ शिक्षाविगत्सव्यासनान्यपि॥ कूटवंशपगाकादिनतलालकानमणुम॥ दिव्यनलमयंदृश्येवनाऽग्रय॥ १ शालयन्न॥ दिव्यनलमयंवापि कूटागारं महा
लनं॥ नवलनिर्मूहवदेवंप्र॥ १ शतितं मंवानयन्न॥ यथादिकंमसहाद्रे सललयासर्वविनिमना॥ तद्वाल मलकूस्म पलश्वसानेपयंयथा॥ तगुलदेवनाजानांपनगछम
णुपाहता॥ आनलवाकुलयथ सर्वसमीक्षवंनेवदमत्तु॥ मुमनतायथादिकंतवाहिस्कठमथावेल॥ जसाविश्चप्रकृगंसवर्द्धस्महिकितामुपं॥ नानसपक
ल्वद्धा [illegible] मधिगते॥ अवमीयेत्तद्यालज स्वर्वनं वातांकयन्न॥ तमसमेदिगा॥ तवेशाम्प्रदिगालमं॥ समुद्रजलसासाद्यंपनवंनवंदमत्तु॥ श

श्री [illegible] गवन्सर्वविन्नाथ [illegible] ॥ सर्वे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] र्ममाद [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ३१
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ नाना विधा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ एवं सर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

एष गंधद्रुमाश्रयसंगिसत्त्वसमस्वयं ॥ तथाचक्रं महानलं ममैव कायसंयमः पुनः ॥ उत्पन्नि संनखंग कोषमृद्धालन्धुमास्तयम् ॥ तथैवोक्तं मयावेनुच्यवं आवक्ष सपुना
नतिथि ॥ कापिन तत्रु तो निःसृत्य द्धानन्दनरं जयम् ॥ एवं वाकान्यका वेवमम वो कायसंयमः पुनः ॥ कापिताश्रान्द्रनेः श्रृं रेष्टं पंचक शि मसवा किन्नु ॥ स्वयं सन् पुनाअंस
स्यायतयज्ञनं तुलं पि लगवेकमं भूतीडुमं वीजयन्तमसंस्थया ॥ नाज भूतम हस्तं गन्दे योवी धंजलं दधम् ॥ एवमेव आवक्तं रक्तवीज यत्वं दत्त स्यम ॥ कादंबा जतहस्तं व यज्ञ
नत्रप्रर भोगिना ॥ तके वं आवर्ता वैवं वीजयन्तमपाजयम् ॥ कजानेक सहस्राणि पिशाचानि नाडागगणानि च ॥ समर्थं पंगति ने दर्पं धर्मश्रेष्ठं रजोडमाविनः ॥ दवकोटी सह
शुश्रुगणवततनूपाश्रिमेव ॥ पंचपद्महस्तिंमम मूलरूपाणि निपपात समनंतरं ॥ मंत्रादिव्यानि वा यानि समकर्णोद्दिवोधा सभः ॥ तगव हगना तत्प्रसादनाथवावयजन ॥ दि
व्यानि विविधैर्न्यज्ञ सृत्र धजाभ्यावा व्यपि ॥ सर्वलोकान युक्तानि जातान्यपूर्न्तसमनंतरम् ॥ यक्ष गणसहस्राणि त्यागीर्थवन्दनान्यपि ॥ आसाय लगवकोहपाद्वमार्थ
सपाहन्तत्रु ॥ नाशोयसुजनाभा आसान दमीन्नपाधिपः ॥ सतं पत्र सुनी कृत्य दीपान्नुकालयसन ॥ तत्रस्वयं मनाओ आलगवतः पुनः किमः ॥ एवं भाषितमसिका

∧ भवेआलि दायकोटि नक्षत्र हासहस्त्याथि

श्री आ

नाणं मं नवकारं सर्वसंधि वर्क ॥ मकच्छिति श्चल नानमय पूनगा ८ समपाउत्र यश ॥ नमिन्न समन नाम स्तान नमी समवाक ९ ॥ सर्वसंघि मं मूनी द्वंदर्षु पृ च्छा समपृणा शु स्वना ॥ सधना
ज क्कृ मना श्च सर्वो ने स म या मणा ० ॥ नमाग मंत सं पं कृ भ मम्याम मूया श्रायन ॥ कोद नाणा दय श्च नय समनि ड जन्न पानिकृ ० ॥ मसर्वसंघ मं न्मृनिं नंतत्वा श्च में ॥ अनु मृणा ग्र यनु
मान स्र्वा न्नम मृ या मीनो नं स्वप्न स गवा कृत न ३ ॥ प्रश्रं सम्रं सम्मा नेत्य सद्धर्म समपादि ग फ ॥ कलतज्ञ धीमं गंधा स्वा मसवे दनाम् ॥ बोध्य ४ ॥ धर्म वि । गंध कोहा ज्ञाप्राए
न न्द स वाधि मा ४ ॥ शु शुस्र स्रा कृ य श्च सो सं मुकृन मुत्र स्थित ५ ॥ मा कृ तिलं मृ निं नंतत्वा पार्थय देव मादना ॥ नगं ब स्तद्वि ज्ञानी या मतत्व प्रशं मि स मस ॥ नान्नि ५७
मिक कं पद्या म सर्व मोदह मर्द मि ॥ ज्ञाशि में पार्थिं य जनु त्रम गन ॥ यि यं ॥ समवान्न म मा लोक श्रा कृ न श्च मार्द ग गन ॥ यदृ त्राम श्वा नृत मं नंद ब्रह्म य समाम द
लनं ॥ युनाय हा मि ए स्व र्गादि अभि ६ ॥ समन्नत ८ ॥ सर्व नव कृत सू मे शि कायन्नती श्च ना ९ ॥ दक्षा श्च न्न प्रत्या ग शु धि पमानि यस्य सर्क पनि ६ ॥ गंध सम सु सर्व
प सं शि माइ सूर्य मं लाद ॥ मत्य मानि श्च न म्य सह विद्या यन्तृ ख गर्व ॥ एमितत्व प्रस न्त एवधि पा कन व ८ ध म ॥ नाद नतत्व प्र य पाद कृत्वा स नस्वर्दन हा मे

यद्वद्विविभिमा लायावाधयित्वान्वयादवाद् ॥ त्रिनत्न गत्न २ ध्यायवाधिमा ॥ गनिधाजिमा ६ ॥ यद्वापित्रकृत्वा दर्कं यांविनाडयमालना ॥ तर्मा वाधि पदार्थेन मत्न्यय्रक्रु

गत्त्वया ॥ एतत्त्वध्य विधाकानत्वप्रंडघ्न्त्वयं दभा ७ ॥ एतत्त्वप्रकत्नं त्वनंसमाधिपदनायिति ॥ यवकुञ्जमृगाण ८ सर्वं नुगादि कृत्वाव हिमा ९ ॥ गत्वां बाकर्मिन्यानिमृत्वा १८

तमर्मकाल्ं १० ॥ यज्ञत्वप्रत्वयादत्तं सर्वे बृद्धिंगात्तिगं ११ ॥ सर्वेन त्वं मर्थकृत्तं प्रत्यकंधिमितं गव ॥ मानिकृजातिसृवांगिलगमान्यत्कां नाध्यपि ॥ यावज्जन्मालयं याप्य

मिष्वानित्वमप भ्यथा १२ ॥ एतत्त्वप्रविपाकनमहत्त्वप्यपरंगा ॥ लग १३ ॥ संवाधितं लमानत्प महत्वौहि सावान्नगा ॥ प्रक्वाद्यि दृश्वैलाकांध्र मृ जानंग तमपुकुयो ॥ यावज्ज

न्मालयं गत्वाडच्चंनेवाभिगमायं १४ ॥ यद्वापित्राम १५ पमध्य ६ त्वमानानं महत्नं ॥ दृश्यंमगुलमालाथ शिवाल्द्रामप भ्यथा १६ ॥ एतत्त्वप्रविपाकं वमहत्वं ध्यं मसृज

वत ॥ मध्यया यत्न यालाकावाधिव यांनियाजि गा १७ ॥ सर्वंगनृत्नाधा ॥ कृत्वापको दत्तं स्वाप्रमालिगा १८ ॥ वर्धमृताहिनिष्पनिं ममापकान सत्कृम ॥ स्पत्नमरगनाये व

यमर्दवाधिता १९ ॥ वाधिमा ॥ गधिनिधाप्यमकूर्मेवाति २० ॥ ह्रीगा २१ ॥ नन्दगार्दिवयंमत्वं सिगा ॥ भ्यमृनीश्वरा ३ ॥ गगा सार्थकंपतु ॥ गा ॥ तावत्वा शमितमर्वाहि ॥ म्कुणि

= श्रिवाङक्षसे दवामालुता: वर्ग कलोकमानुकुमयाहिरे २५

श्री

न उक्ता सर्वपिजन्मावध ॥ उत्तमन्त्रिमन्त्रतिष्ठवनगणः किं बाधिष्व र्यया ॥ कतमनापि वृद्धजनविनोका मन्त्र लगिन ॥ सर्वदृक्तु गकमान् वानि ॥ जकर्मत्रपि ॥ यचनन मनीदृश मम
स्वंत सं गर्भोदृ मे ॥ कृत्स्नकामश्रीत्वं च मर्वी हिकर्म गपिनथ ॥ कल्पलं कप्रत मा स्पमनीदृश यथवा प्रयथ ॥ कारमा मत्त कप वृत्त्य हृध्यं वर्म निंकनाश्रयं ॥ यदिव प्राप्त वन्न उ सर्व
यामपिंउ्रमिनां ॥ मूर्व वृ ३ त्व पृ ण ॥ नामनि कृ यान्त मृ ग्रामनिच ॥ उक्तास्य यमनबाधि विनंहं सर्वात्तिना भय ॥ बाधिश्व यात्रुमं वापि वनि ध्यामि मणाद्विम ॥ धर्मेमुख्व प्रवं ॥ ५१
नमन्त्वाविनीय वृर्तन ॥ कृ यान्त मृद्ध कायश्च समये उत्तवन ... ष्टापि ॥ यस्मादहं वा ... इ गंव द्वकलं तथ यमकृत्तं ॥ यथैवा णापि सत्तस्य मृत्वनामापिन वाहि ॥ यमात मवाधि
मासा प्रकथ यं नराणां क्लिनः ॥ सर्वेषां सर्वदुःखानि ग मध्य यं समनकाम ॥ यदीक्ष्य मुण सम्पन्नं वक्तृ शतं मन्नमम ॥ स मवाधि धृति धर्मन वानि ध्यवादि सन्वनं ॥ धर्मप्राप्य ख्या गं
नन्ते तु नत्त गर्त सधर्मनाद ॥ आहत्री पूत्र हस्त्वा गं नमाधि विदत्वेकगं ॥ तत्वनस्य मुनीदृशस्य सर्वभामस मधु हवाथ ॥ सर्वतजामिनिकावानि ॥ क्षेन समस्त गण्यथ ॥ ता
प्रलय सर्वलाके सप्तविहृता धतमेनकाथ ॥ वृद्धकजादि सर्वाणि संखकाण्यां एवावयत्नुगतरा सर्वत्र संवृद्ध कप्रगा निसर्व भव ॥ नानाविधानाव धनकसर्वलि संघसमनकाथ ॥

के सुवि स्तनकावृक्षानिर्दिष्टानि समूपाणगां ७ ॥ कासवि दमि संवृक्षानि वीभ्याति संक्लिकाः ॥ कृष्णवि डाधि मत्त्वाश्ववाधिक कनलायिताः ४ ॥ जित्वानान गजाः न्यांधिप्राय वृक्षासन
क्लिकाः ४ ॥ काचि दृवादिति लीकी ६ पुनस्तु गाड पक्लिकाः ४ ॥ श्रीर्य मज्जसमानस्य धर्मवक्र प्रवर्ति काः ४ ॥ कवित्रे अवकाने वंच श्रेक समगा भूपि ॥ वाधिस्त्वामताति हाध्यव्यन
नाञगाद्विगा ॥ कवि सञा वेकाञ्च वाधिमत्त्वा नकाश्चन ॥ प्रथुकालगे गाः एवं कायिन्न वाधि वाधिव ७ ॥ कवि स्तुत्यं वसंवद्धे ६ उ श्रेकामयगनपि ॥ नुहे हि हि शाहि श्राधि अवर्क
व काविलू ५ ॥ कविसंसो गमन्याधं क्लिष्टे कंचाधिके काविता ॥ पनिगुह्यं काविहृद्गृंकंव निवकवाधिता ॥ कविन्न नोमत्तक्षता ६ कवि ह्रीनाधिमु क्लिकाता ॥ दाधीयु
काः ४ कवि स्तत्वा श्रु त्यायु का भूपिमा विता ॥ कानिवि दन्नि दंश्चानि वाय संवार्हि गान्वपि ॥ अत संवर्हि काश्च वंविव र्हि गानि कानिविता ॥ एवं सर्वजला कयु वृक्षे
आनि गकारणं ॥ वृक्ष पकोल्न ता नामं सर्वमाकारद दर्शिनि ॥ तानि संवृक्षता कानि वृक्ष पुराणहु यानि सं ७ ॥ सपुडन सुना तोक्ष नाजान मचमवेदीता ॥ पर धेगान्तृगा कृ
कयन शृंगानना धिप ॥ यतगनावनौ विक्लितला श्रुकिधिं कृतौ ॥ तदुत्तात्मयसं वौधिधि विहै वृक्ष पतो कयो ॥ ग हासमत्तीगतं कर्त यता कांत्रा मितृ पता ॥ कृणिवन

श्री आ

र्भि म त्वम तुत्र जग धि य ७ ॥ विंनू पाक्ता म त्तु ना जो वि प्रत्य त म नु पान्स न्तु ॥ नउ नु बान्क ॥ छ प्व विन पार्कं व मा ग र्ग ॥ ह्रा द नं स म नु पा म न्तु की त्व नु नि प्र प च न ॥ ता ७ सु ना गा ना अ

लं त म ह न्त न्तु मा द ना नु ॥ मा कु ति ७ त म नु पा सी न ७ त मा ली धैं व म प्रवी नु ॥ आ भ्र ७ किं त वा द गं वि नू पा क्रा ह मा ग त ७ ॥ वि क न वा ति त वा प्य त वा ह्रा प ना म न प्न ७ ॥ धे पु प्र म दु

कृ ना क पूर्व हा ह्र ७ ॥ ७ प्र मा दि त ७ ॥ विनू पा क्र म हं न्दु गं म ना ला धैं व म प्र वी नु ॥ प्र ज न व भा ह न क्र म त सं प स्य त न कु नां ७ ॥ त्र ज व र्या धि त्र का ने नू प स्था त्था मि म र्वे द ॥

ा ह वा न वि सं वा धि प्र ति धा नं त मा द ध त्वा ॥ त ज ना स्य मु नी न्द्र प त स प त्क ७ मे ह ि ॥ त्र गि त ना धि दे ति त्वा वि नू पा क्र ७ म वा ह्रि क ॥ त प पा ति प्र ति ती र्थ त्वा म ह सा ९

न्व पे दं य यो ॥ त ड त्र त्र ज ग न्तु त्वा न्तु मा द्य त मा द ना नु ॥ त द्वि प्रा र्क म मा र्क्षो य वा धि मा र्गे प्र मा द य नु ॥ त वा ह्र सं व ह क स्य से वं ना प्र ७ प्र धा धि मा ७ ॥ वी ते मे वि दें हर

मा भे प व ह प त्त ह्रुं मी द्वि नै ॥ ग ग श्रा क्षि म रा ति ह्र ७ पु नु ड न त नु लू वा ७ ॥ क्षे प ना ड्डुं म ह्रो ना कुं द्र पे मि कु कू प त्त न नु ॥ त्यु मे ना का वि तं म ना ॥ क्षे प ना ड्डु ७ ता वि ति

न ७ ॥ ग न्मे र्हैं ७ ता कं ना ग प्र त जा वि प्रा मि ध य यो ॥ त मा ग त म मा ली धैं व प्र भ्र ७ त त वि त्स य ७ ॥ हा द नं त म नु पा म न्तु को त्व वा नि प्र प च न ॥ वू ति प्र ध छि प्रे ना सी

९३

क्षेत्रनाथुः पुनः क्षितिगः ॥ साञ्जलिस्कंदिजं रूठर्ष्टं सभामाथेंद्रव मत्रवीत ॥ ज्ञात्रस्य किं न जानीषे क्षेत्रनाथाह्णुमागतः ॥ किं कार्यं ते वदाम्यत्र तवाद्यापय मत्यगः ॥ इति श्रु
त्वि ह्यापि सगन ज्ञात्रस्य गः स्वप्रभादिगः ॥ क्षेत्रनाथं तं नामस्य साक्षनमव भादिगतः ॥ महानाज्ञा हमजाय तत सस्य जगत्कृताः ॥ तं ते वर्णाविते सानेन्तु स स्का स्वामि सर्व
रा ॥ गं द्रवानपि सं बाधि प्रभिः धानं तं समाय हन्तु ॥ स जनास्य जगत्स्वान्तु ॥ समु पत्वान्तु मर्दति ॥ इति श्रुतिमनादि में ज्ञात्वा क्षेत्रनाथ स्व ज्ञाधिकः ॥ स रथं ज्ञास्व नु भादित्वा सतां
स्वालयं मयौ ॥ कतं स क्षेत्रनाथ स्वानां धर्मान्वकर्तोक्तथा ॥ ज्ञात्म्य कं तमां स्थाय बाधिमा गन्धयाजयतः ॥ तं पि सर्वं वगन्धर्वा ज्ञास्था निज्ञानिवाधि माः ॥ स तं पस्य
नृलोकेऽपि समस्त पत्काऽपि भाष्टित्वा ॥ अथ सद्व्ज्ञानं स्वाभि द्वितः सस्कंद पंडनाशेनः ॥ म न तं संस्थिता ज्ञाय पतंतं वं याविंकृ यतः ॥ स घर्षं रुवं तं स्वं बाधि मलिवं स्यन्येषु
कमां ॥ ज्ञा भैवं स स्वमेन्द्र क्षत्र ज्ञाविधि श्चा पितागतः ॥ स ज्ञा पुणि मतायं संप्रदानं स्तुतं मया ॥ कत त्वं स वस स्वानां बाधि प्राकृयतव तु ॥ तं प्राहं द्वाविपक्षग्ज्ञी
दर्शनमस्य हायतु ॥ स्वामाथि पतिश्च विश्वेश्व धिकाधि पा पिता ॥ तानि मिताथि पर्येवं निर्मितवं पवाहनं ॥ अधिपश्च पितर्वज्ञायान्तु दर्शनमम ॥ इति ज्ञ 1

मत्रापि सर्व्वं मामगृहात्यानि सम्पद २३ ॥ उज्झया मा मूलीत्रा वनिर्माणपि क्षु मूर्द्ध्या ॥ तत्पिंडम स्तुना स्थान २७ ॥ अथ पिता मम नत्र २४ ॥ साय प व नव स उज्ज्व कृष्णागंधं मह कृत्वा ॥ तत्र मध्य पि व
र्वृहि कृ स पत्र स्नम पानि व ॥ अथ गज्ज वनीथ्यात्ने संमापद्धि पुरुषा ईथ ॥ सर्व्वं पि पि व प्रध्याने मत्र कृ श्रे व म स कता २६ ॥ पृ ह दृष्टि १ पत्र कृश्व स्न ता मत्र व ठौ ॥ तृणादि नत्र प
थेश्च दि चा सा द्राम न्ते रु रत्नो २ ॥ छत्र ध्वज पताका ध्व शिविका नं स्त्र नाद्भुत ॥ सम न त कृ म नवं कृ कृ स मोन य न वी य व ॥ अपुत नाति व विमी र्यि पुंश्च ना [illegible] वत उजं ॥ [illegible]
ध्वं कृ पद्र ध कृ त्वा त मक्षि [illegible] ना ॥ न ध्यति प्रति त्रि हृ ष तज्ञ्या न मृ व ध्व न त्र ॥ न नु व वंजनानाह पू धादि ध्वं न धा दवा तु २ ॥ अथ पिता मृ लं कृ ध्व कृ समान य व कीर्य
त्र ॥ अक्रान्त कृ स्या स नाना कृ पद्र ध्व व समनक ता ॥ स स म्म व्व मनी ध्रु स कृ त्वा व सनं पाप स त्र नु ॥ का नु ष्व व पि ते २ मा त्रा य अनो जा थ मा कृ त गौ ॥ कमव अमृ णि ष्प्र प
त्वं वं न्य ध द य द्रा ॥ उप यत्व य ध्वा दि स्व न था प्रा त्वा ति गं [illegible] ॥ त व न्या पि म ह्यानं र पा ति गं ड स्व मह ति ॥ ध्व ति ति ह्ला वि ति गं य स त्र क्ष ना ग्रा प मा दि त ॥ नाना वा पं म प
स्याह ध्व य य गो त ६ मनन्वित ४ ॥ कत्रा यं त्र प स्न ना स्या म स म कृ जना न्वित ॥ ८ स्थानं स्थान नत्वा सा क्रि ति ६ प्र ता व म ष्ट्र ॥ ति क्षय प दं कि शी कृ प्र न त्वा मृ न उपा पु म त्र

॥ भगवन्तं समं घंसं प्रार्थयद्य समादनात ॥ भगवन्नद्य वा सर्वसांघिकानां वपूजयन ॥ गजने यसमुपक्षाम्यतस्मा मानुग्रहं कुरु ॥ इति संप्रार्थितेना सौ भगवान्समसांघिकः ॥
पुरोमयन्नमुक्षाय सौख्यस्थानं उपातवन ॥ ततस्सन्नृपवाक्येन्दुः समाचार्य समुद्भुमोदितः ॥ भगवानथ समं प्राप्य पाथं ददर्शयथा जसं ॥ ततः सभगवांस्तत्र स्वाम नतमुवाच्य यत ॥ स
वैसांघिकान्केतु यस्मान्यास तं यथा कर्म ॥ तत सवलयक्षालोक्य भगवन्तं समसांघिकं ॥ आसनसमुपासीनं प्रजयित्वं समानयत ॥ ततश्च समस्तानां तासां पूजा विधिवत्त्रासू
तः ॥ सर्वं कृष्णमरत्नानि वनिताधिका न्काम्यमार्वपूजत ॥ ततस्तौ सांघिकान्सर्वान्सर्वत्र पुरस्कान्यतीन ॥ नाना स्वयं वनीय यक्ष्यामतः समलापय तु ॥ ततः स्थेनमस्तावाद्वं
नृगन्धेन मालाभिः ॥ सर्वं कृष्णमुरसाद्य तं सांघिकान्स्थिमा यप्य ॥ ततश्च सन्नृपलोकालोक्य सर्वान्कान्वनितागाथितां ॥ गर्वां याञ्चान्वासाहुस्थहस्कारान्नितमरणे क्षयत्वं ॥ ततश्च आमु
क तान्युलगर सञ्ज्ञाक्षनमायने ॥ च कृष्णमुरख संयथार्थ मर्वैस्थानं यमिर्दद ॥ ततश्च तम्मुदितानाज्ञा सा कृतलिः समजनामृतः ॥ सत्संघं नृपतिनेवा पूरकमसमुपाश्रि यत ॥ ता
समलगवांस्तुष्ट सासमसांघिकाश्च प्रमोदितः ॥ तस्मै ना हस्तं लोकाय शुभा नाम्याशि संददौ ॥ ततश्च सनन्दितानीज्ञा सलायश्च साकृतिलिर्मुदा ॥ तत संघं नृपतिनेवाप्रार्थमदत्

कता ॥ चतुष्कं च प्रम सर्वेषु गयवृकान्तसां धिकाल ॥ मताम्मत्स्यमन्ता तीलान्ता द्वर्मसस्त्र कयतं ॥ कलं प्रसिषिण पन्नाति हसनवमन यानिव ॥ मय सर्वेषु यमरव प्राज्ञश्री नास्वीमउर्वती
कत्यापनिमल्लकुउंसफलंतमर्यां हिं सं ॥ मड श्रीनंसप्रवि श्रीश्च प्राज्ञश्री त्तस्नतीमु ख्वी ॥ मृहस्त्रयंजनायामं स्थान काये य निर्मलं ॥ अथ षष्टनेनि उक्वशे मान्वे मउ अवं य धा
॥ ह यथ भव थन्न सकृत्रो म थाधि मत्स्या न्कशाप्रिकानु ॥ व्यु सं रक्ष यान्तमावि रुता न्न यंवि मोति वाक्लानु ॥ पन्ने वाल मि शावे प्रां नस्य मांतानप गगगा ॥ प्राज्ञश्री च स
१ ह ब्रूं पुंड्र मनू ती कसमकुर्य ॥ गत्स्ता मन्त्व फ्माणि व सूनित मत्ताकमया ॥ मत्स्यौदि व्यावृद्यौ तमभउ ॥ नितिथन उक्वौ ॥ तयःन्वलमिनं तपन्नावृथिनं दिश्व विप्रसं ॥ आ त मू ८४
धीप्रथमवर्णं वितलो विहुणा ग्रय ॥ कि कृत्वा प्राविनानान नेनउमृतप्राप्तिणं ॥ मूनवर्त उति श्वेनंलक्ष मानं विमानाहि कां ॥ पुनष्टआडुरीवनं ग ॥ आविवानि फ विय
हं कीलम् थ्जलथन्वनां उका अनूल्व इन्कथा ॥ एन उमूलमा वीनैन श्रू मानंत्व उ उ हि ॥ मूक्काव गौषि गंकत्वाकीवि गं वाप्य लोकायम ॥ पुनाना उसतानन्यान्
दूकनाम्यान लोकमन ॥ कांक्षि न्नुत्रामृत्वा श्चापि माहिय वदनानपि ॥ कांक्षि लिंहमृत्वा श्चैव मन्यान्नुकमृत्वानपि ॥ श्रुगालवदनानथ मृत्वा न्नीणामृत्वानपि ॥

॥ =

नवमी ॥ ५ ॥

स्व स्व पुष्पित सर्व भ्रमन्ति त्वा पुष्पिता वक्तुः ॥ एवं दृष्ट्वा मूल स्कान्दं प्रसंगे मती कयत्र ॥ प्राप्ति हि दृष्ट्वा मार्गं स्नान स्थाव रं गत्वि कान्यन ६ ॥ मानवन्न पग सन एवं स्व पंच
दर्शन ६ ॥ पुनः स्नेव का यन सर्वा कान्त मर्वलि गान ॥ अनका स्तो विना ३ का प मध्य दश माघि ताहा ॥ पूना ना अत गत न न्या म यान्तं त गविश्र स्व ॥ पाडागी नर्म हि यानु गन्य प
थ दक्षिणं मार्गा ॥ पुनर्द्वा मनः ओ दिना पवाता ६ मना या ला ६ ॥ पपानि पुन ग स्न सम स पुण हृ येव म ऊ वन्न ॥ प्रस्म तिमा नि मध्य ति च उ गंगं विधी यता ॥ एमा यं सर्वथं मं तागी
तन्न ऊाय दी यतां ॥ द्वितीयं ता जय पूज्या न यानो ओ स्व हल गी य कं ॥ चतुर्थ मं ऊ नेत्र घ्र दी यमं डा स्वे ग स्व या ॥ ७ वा दि ष्ट नि ग म्या सी त म ऊ न ७ रान्त नो ॥ मा थे
ति वर्णित विद्व य वि तामत नि ज घ कना त ॥ ता जय मान उवो गी प्रति वृ ह ६ स्न म स्थित ६ ॥ विलि ता तून स्नन न का न्त वा न्यम न्वा य वि कयत ॥ अ हर मनमय पा त्व प्र न व का हि घ प्र
दर्शितं ॥ त थे न यां हन्तां नूयं स र्वं वा सो न्न वा भ र्वं ॥ ए गाभि निश्च मेना त्र ता भि स्व क त्व ता धितुं ॥ न ल ग हि मनी ओ म उ ठं ग का मि ता स्पु तं ॥ ए गानि लि क्षि प्त विश्रा मी स्व
ऊ न घ नू त्व क ६ ॥ प्रगाञ्ज नि त मा ता य न त्व ग ती ध म कन ता ॥ ॥ गच्छ त ता म ग ६ प्रज्ञ मुनी ओं गं स सा पिकं ॥ य था विधि मन म य व्या गा अ ने भत म मो घ य त ॥ ता ता ६ म त ता न

श्री

नमिपूजनयज्ञ ॥ सर्वोऽपि पालनिका श्रुधिं प्राप्य वह्रूपर्द [illegible] ॥ [illegible] मनन मादि [illegible] ॥ त्वामन [illegible] ॥ एवमादि संक माला [illegible] नव मङ्गलो [illegible] ॥ अलंत्वाम [illegible] धि

श्रद्धेनवाद मूलं हं ॥ [illegible] सर्वशाखो त्वां [illegible] भवतम [illegible] ॥ [illegible] मनसो हुं [illegible] मयाम [illegible] ॥ [illegible] अर्थ [illegible] नि [illegible]

नलकनन्दनी ॥ [illegible] सर्वाणि त्वं संतान [illegible] ॥ [illegible] विप [illegible] ॥ यानित्वा [illegible] ॥ [illegible] नाधि [illegible]

हुंक फट्प्रण क्षयामु ॥ [illegible] संबाधि [illegible] नालहतमम ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वस [illegible] ॥ किं [illegible]

त्रानं वाधिक्य विनाशवं ॥ सर्वमम्य [illegible] ॥ [illegible] धर्मक सर्वस [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] दि

धनेनं [illegible] मततपनिका ॥ [illegible] समाली [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

लाभिवाक्षुश्निसन्वाधि [illegible] ॥ [illegible] सर्वदारव ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] वो

[illegible]

[illegible]

१४०

भयहा॥ मन्त्रिता भ्रामहानाज्ञ व्याधिमार्गणि निवारक॥ सकृन्निर्लय ज्ञानीक॥ समस्य सर्वनन्दक॥ सुशीलसङ्ग भावानालि॥ प्रशर्षिकदकम॥ पृथिव्यानाम्ना प्राणाविल॥ मंत्र
कारिणीतर॥ सुविदित॥ प्रसन्न त्य स्वरावृन्दान संतन॥ सदानन्द तीता भवानिर्भ क्लेश॥ कटकाय॥ सङ्कमा॥ पूर्णि संवानानदमानग॥ शक्तिताय॥ सुप्रवो॥ भजिनानन्दा
व्याधिसत्त्व समागम॥ उत्लाद॥ सुमणाला प्रानन्तलि विद्यादकाकम॥ सतपडालिता॥ सङ्ग्रहान धर्मार्थवाहक॥ अप्राणि धी॥ विकीर्ण॥ विनमानि निर्मलान॥ कम॥ सुपानि ग
मनीय थे निध्याय॥ सुरूपाग्रय॥ सर्वतत्त्वम पानन्दगुण संपत्तिदायक॥ निर्वाणिपद॥ श्रामं सर्वाधिमागडलन॥ सद्वंन्यपावित्राय समस्त पद तोष्य॥ व्याधिवि
लं समूल्या घवनस्व व्याधिवानिर्वा॥ कृतिमन्त द्विजनाकी॥ कृत्वा सत्रा॥ व्याधित॥ पुष्टाहिंगतमालाश्च पूतन वामस्थक॥ अशप्रश्रा॥ सुनीति वर्षता हस्तिकाय
धि॥ लाकाकथागत॥ गमाकामनाशाय वंशपि॥ अनन्त धर्मनार्जन कथागोनतांडिया॥ सर्वयावानगवारुणमयि॥ समकप॥ यसत्ता॥ पथ्यकाकी नाम श्रावनृप
पुष्पकाय॥ गसर्वलसहणोप्य॥ धर्मन शुभ वाविवृद्धिका॥ कविदवमनप्रथम हरस्वर्धसमपद॥ अनन्तरविकि संपानं तत्त्व नृपकोमला॥ सस्वकर्मकलाप

श्री आ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

व्याप्तहञ्जतं॥ ६॥ सूत्र्यं गौ ३ सता क ४६ वे ग व ण ७ सनन्दिता ७॥ तथा सर्वतमाश्रय कृत् ध्वमिति वाक्य दृ[illegible]॥ प्रथमत्वामन्[illegible] थेवं विष्टु ढ्ता स्यद् भीजं॥ [illegible]
ननमे कृत॥ तनात स[illegible] यंम त्वा विन्दुं ट क ७ स स त्वन ७॥ सा [illegible] का [illegible] वार्रो कि मृ [illegible] कि न्त्रान्दि कवचेन्॥ त [illegible] सवा मृ [illegible] दू विन्दु ट कं मम ग ग तं॥ कौ सवान्त मृ मा या ह्[illegible]
धर्व पर्य ए कृत॥ [illegible] ति [illegible] छि न नासो विन्दु ट के उ पा जि मया॥ विपुं स मृ ड र्न मं [illegible] स मा तो [illegible] व स वें गृ॥ कृ [illegible] वियति वि [illegible] विन्दु ट का ह ना ग [illegible] म [illegible] मृ [illegible]
यं ये त्वा नि ध्याम ह [illegible]॥ [illegible] ति मं डा र्णि न तेन जा ह [illegible] मृ य [illegible] विन्दु ट कं [illegible] व ना धं व स मा र्क दू॥ विन्दु ट का [illegible] म त्र स स न्त [illegible] ग ग कू [illegible]॥ [illegible]
त्वा नेन य [illegible] मि स वे था॥ [illegible] नपि मं वा धि ण्डि मने म मा [illegible]॥ स्क ना स स र्न [illegible] स म मृ [illegible] सर्वि [illegible] त्र वाति नं [illegible] त्वा विन्दु ट क ७ स वा मि [illegible]॥ [illegible]
मि प्रति मां दि त्वा न मधे स्वा ल यंय यो॥ [illegible] तर्पि न्त मा हू य कृ मा [illegible] न्तो विन्दु ट क ७॥ [illegible] स्व न मा र त्वा य वा धि मा र्ग [illegible] ना द्य न॥ त ता हू [illegible] पि स र्व ग [illegible]
वाधिमा ७॥ वा धि वि लं स मृ त्वा य मनु ७ म त्व दु मी किन॥ त ग ७ स डा मृ धा त्य ७ स मृ ड न [illegible] न त्त का॥ विन पा को म त्व ना ग ड [illegible] मि कृ न्त स न [illegible]॥ त ग [illegible]

श्री आ

तातु मतमूढ न धत्रा लोषु सनसंवं बाधिन्नु य ग ॥ नूनं मवाक्षि गंमिद्ध य थामयात गीर्तिं ॥ नथ सर्व ठमला का धर्म त्र तु मिलागताता ॥ नद दं सर्व सत्वानां सत्वाधि वि कु व क्र य ॥

वगवन्ना मि मलिधं पूज य मं सुतां धिकं ॥ ७ मिनि क्षिप्य विप्रा रोस प्रसन्नजले नह प नमनकं स सं यं त य थाविधि समर्पू यन ॥ य था दं मां ठमेन पालो ठ सर्व प कर्नू ठे नवि

॥ सत्वान्ते नमू पक्का य थाठ जन्त तनं मूता ॥ नगवान्पित हकिं पनि ठुडु ठ सतां धिका ॥ आर्य धर्म समादि ध्यामवान्नो ॥ क्षे मनो न्दमनु ॥ कलत्र कु मांसं ग्रां यी न्वाम वंता काम

त ना न्दम ॥ सत्वाधि साधना मू कोव दव ठ प्रशिवाधि नाथ ॥ एवं सता मम ॥ नित्यं सफल वर्णा धून जनं ॥ सर्वार्थ सिद्ध न्तव्य प्रापक तमू हीय वं ॥ एवं वनाकि ठ मम ७९

न हुन ग ना लना ॥ स त्वाधि प्रति थिं कु रेवा मू नीरु सम सप्ता ॥ प्र संत्वा प्रा म ॥ दवा गन्धवा ठ मिलन वा मृपि ॥ [illegible] न्नाधा कानाक वा मृपि ॥ तृता ठ पुवा ठ

[illegible] ॥ वाप्र नियं क ठ सर्व ठ ज ग ॥ दि जल पादि स प्रीष्ठ सर्व प्राविग ग ॥ मृपि ॥ विनी मान हता यां संवाधि भा गेनि याक्रिका ठ ॥ नि धपि मादि नीमाभ्र ठ संप्रमि ता

विता मृपि ॥ पक ठ सप्रा ज ठ ॥ श्रीमान्त नंव प्रावान्पापि न ॥ ठ उन पीमि मा हस्तेव कनल न्यूपा दनत ॥ प्रा वर्णित ना गण्डु हय नवन नथापि ॥ मुनी ठाम क्रेग कुड

[illegible] केचित् [illegible]

[illegible]

= [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] पथापि [illegible] ॥ एवं [illegible] समं [illegible] सर्वाणि [illegible] ॥ समुद्भूत [illegible] नंदि [illegible] ॥ [illegible] मनन मी [illegible] ॥ [illegible] विमा [illegible]
[illegible] ॥ सर्वाणि [illegible] ॥ [illegible] सर्वं [illegible] समासीन [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सर्वाणि [illegible] ॥ [illegible] सर्वाणि [illegible] ॥ सर्व [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वाणि [illegible] ॥ [illegible] नाना [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] अनंत [illegible] ॥ एवं [illegible] सर्वलोका [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥

श्री रा

कृपयवक्तिकाः७॥ सर्वदामयतांगावर्णं प्रतापवपुः प्रमादिकाः८॥ यत्रापिनामधेयं मंगलं स्तं संप्रसादिकाः९॥ मे सर्वं पपप पर्यद्वं कृत समेवस्तु॥ प्रीतिप्रसादयं यस्य यस्मां स्त
वाउसादिकाः१०॥ गमर्वा वन ग्रं सख्ज्ञानवर्यर्हं वाणिनः११॥ यत्रापि नमस कूर्मं यस्य स्तं तागम्याथ॥ सर्वगवादिव्रज्ञीया तवयुनानिवर्णिकाः१२॥ समाधीं आन यीं क्षपि
सर्वापिमाश्चगडि काः१३॥ प्राप्य सर्वं पितरूर्द्धं कृत्यं सर्वजसर्वता॥ यत्रापि मं स्तनं नौ भंगि वतानि दृगस्य वा॥ १४॥ नामानतीनिर्मि तकवलैकृमानस्य १५॥ नामहं सर्वतन्
कृत्स्नकालपर्याप्तिकाः१६॥ संमृतं दर्शयें आदिशोपयेयं समाश्रम॥ निर्वृतस्यापि मयस्य नामधेयं प्रभाविकाः१७॥ कृत्वा सत्य युमान्मयं सर्वज्ञ स्तुतिनात्तमाः१८॥ क्रिया ४३
पियावमनामम छोत्वा सन्मनो मन्नाम॥ नाम सर्वाः१९ श्रीक्रियं सख्जानवम् पुन्यान्माः२०॥ यथापि तावितं वहुकृत्ं आप्रेयन्नल मां॥ सर्वमत्वहितं कृत्वा संवत्सप
दमापूरयः२१॥ ह्रीं हंगरत्नसमन्नं वद्धकं कंठतात्तयां॥ तवयादि त ता णीमः२२ मे श्वाविपाकुमस्तुह॥ कृतिमनुः रं कृत्वा च वा ओं स्ताजगत्कृत्॥२३॥ वाल्मी द
ग वद्धकृतवाकर्तुमर्हसि॥ वर्णानि संप्राप्तितं गतं नाश्चवरं जमितनामसु॥ लग्न शीर्मुनी डी श्रीनपमन मयादिशंगन॥ साथ साथ महानाम गम्भीनः२४ प्रतिवि

लवं॥ यथात्र प्रतिष्ठानं नगरं सर्वविशिष्टकुशलं॥ पश्चिमनाग्रतो दिग्जालं पश्चिमसमुद्रनाम्रतः॥ लोकधर्मतुष्टिदाहाक्षिप्य धर्मदृष्टिविनाजितः॥ तत्र स्थितो भगवान् बुद्धः
पापस्थनादिषु॥ सर्वसत्त्वहिताधानं धर्मं दिशति शाश्वतं॥ यत्र कश्चित्प्रबोधकानां प्रबोधकात् गगनापि न॥ सर्वेऽपि सांघिकाः सर्वे धार्मिका जिनात्मजाः॥ ते सर्वेऽपि गर्वं गतानां
सर्वदा प्रवर्धयाः॥ सर्वेऽपि ते समताशिक्षा समाधाने समाधिताः॥ सर्वे प्रजातत्त्वा कृत्वा बुद्धाज्ञया यथानया॥ प्रतिष्ठानं कर्मनाजन्म ... तथा पुनः॥ ... पापस्थन
सत्त्वनिर्देशमस्य कथं कुर्यात्॥ तद्धर्मं शृण्वन्ति तत्र ये सत्त्वा लोकनाथपि वा॥ सेवमन्यप्रेतानाम्रलोकधातु रविवर्षाति॥ तत्र च प्रभवि तस्य महितागन्नागा तत्र विवर्षाति॥ यत्र
तु पापनाजन्मात् बुद्धकृत्यं नास्य च॥ तथापि विशुद्धमहितागधनाशे स्यापि तत्र विवर्षाति॥ तस्याप्यायुः प्रमाणे च षष्टीकल्पं तत्र विवर्षाति॥ तावत्स बुद्धमादिशत् स्यात् सर्वत्र
गच्छति॥ ततः स भगवान् षष्टीकल्पान्ते धिनाशतत्वं॥ निर्वाणस्य विजगन्त्यां कर्त्तार्यकयादि धीनतः॥ ततः स मुनीन्द्र स निर्वृतस्यापि शासनं॥ मात्र भूतं च कल्यां
विद्धबुद्धं स्थापितं कुर्वं॥ ततः सर्वं कर्दिशं धर्मं कल्पदशगणनाकतः॥ धर्मापि विनाशितं निर्मलं लोकधातुरविवर्षाति॥ तत्र च भगवान् बुद्धः कालनिर्मिताभिनतरथागतः
६०

श्री आ

या ॥ ७ ॥ अर्धप्रमाणं च नवायसावविष्यति ॥ सर्वाभावे प्रति स्थाप्यनिर्धार्य समवाप्य नि ॥ प्रिय स्थितकल्पकारी समस्तु मंत्र स्व सर्वी कर्त्तव्यं ॥ ७ ॥ अथादिष्टं मलीनं तु ॥ स्वस्ति सा निमित्तम्
दा ॥ न लग्न मूर्त्तीः संस्थमानां वा ॥ ह साधयेत्ति ॥ ७ ॥ यदीयं स भगवन्तां प्रति पूर्वे न सर्वथा ॥ यदा भगवतः पादोपरेण संस्थाधिमानस ॥ ७ ॥ सदा मां सुगतः सर्वे सर्वदिक् च वसि
नाः ॥ कुपयालीकृत सर्वा ॥ अभ्यासं वै कुतेन फ्रीणी ॥ यत्र कुत्र पृथिवी सर्वा समस्मूडं शिलोच्चया ॥ सुपद्मश्री कलाकृष्णो भाद्रश्च तु सर्वदा ॥ सर्वे मामपि सत्त्वानो चिरं तत्र तु
निर्मितं ॥ सर्वेपि प्राणिनः ॥ ७ ॥ कृत वस्तु भेदमानस ॥ ७ ॥ यत्र स्थानानि मिथ्या नाम कुमानसः कृतं ॥ लिङ्ग ॥ पंक्ति ॥ ७ ॥ तत्र कोनां धं वर्णं सुनीश्वर ॥ तत्र दृश्यं पृथिवीस ५१
र्वाचवानं सर्वाङ्गिपर्वता ॥ यत्र श्रीकं स सूर्यस्थानि ॥ ध्वज ॥ सर्वरीनवा ॥ सर्वेन वागवा श्रीपित दिक्कु समाश्रि ताः ॥ यावत् कुसुमसमस्तं समव्याध्यो कुशानिद्वयं ॥
सर्वेपि प्राणिनः ॥ मेधाविनानि ॥ ७ ॥ गतायाः ॥ निध्वंसो भोग मकु नानकावलन्वं वधिवानि ॥ ७ ॥ शुभसम्भवा स्कुस्मानन्तगर्भीसिमीं च सं ॥ अनिमित्तं वि
न ॥ स्वप्राह स्कन्धं समादिशत् ॥ ७ ॥ इति स्थाने महासत्त्वे वा ॥ कृतस्त्वं न शाक्यजिने ॥ ७ ॥ वीनिमाव मही सर्वा तूर्यघोषापि निःस्वनः ॥ सर्वे सत्त्वा धर्मितः ॥ कां तथागतस्य

या ॥ राष्ट्र स्थाने ॥ भद्रकल्पे सम्प्रति यत्ताभविष्यति ॥

स्थानेस्थापित्वा अभिषेकोध्वनः प्रथमेकं च १

मुविहाविनः ॥ सद्धर्मतीर्थसंतनकारावन्ति बोधिमानसाः ॥ श्रुत्वा दिदं मुनीन्द्रस्य श्लोकसाधिनिमिधामृत ॥ उत्थाय साञ्जलिर्नत्वा तं मुनीन्द्रं विलोकयन् ॥ गत्वा ते कामका साधिषु
सर्वा बोधिवृक्षगतिं श्रेयसः ॥ गत्वा कृच्छ्रं मिमं पांशुं समानसभोसमाहितः ॥ ॥ श्रुत्वैवं श्रीमद्ज्ञानकमालो यासनिमिधामा अकृमानसासमन्केन समर्थं कर्गती कृपया
जनाममकथागतव्याकरणं ॥ ॥ अथ समुद्रे ध्वंस पुण्यादिमानः स्वामिनः ॥ निमिं नाम कुमारं च समाम श्रीवमादिगणः ॥ अनुमोदमे तासां गर्यत्तं बोधिसाध
नं श्रुतं ॥ यत्त्वया साधितं पुण्यं महाक्षेपवि श्रामय ॥ उत्थाय समा श्रय बोधिविलं अगच्छित ॥ बोधिवर्यावरं श्रुत्वा वन संबोधिमानसः ॥ श्रीगीत नेसमादिकं समं
उन्नामक ॥ निभाम्यसनिमीनाजकुमानः सउपात्रिमः ॥ साञ्जलिकं जिनं नत्वा संमासा चेत्व मत्र वीतु ॥ यन्मया लगे वस्त्रफलवं गांशना ः हेमूहा ॥ सर्वोपकारकाः सर्वं बुद्धाः
सं प्रापहसू पुण्ठितः ॥ यद्धानं मादिनं पुण्यं सर्वसत्त्वकृतं मया ॥ त्रिकायं साधितं वापि यत्रान्यकृतमर्जितं ॥ यत्रारभ्रान्तरं पुण्यं साधितमनुमोदितं ॥ मयेतत्से वंसम
प्येत सर्वा क्षेपति स्वामिनः ॥ अयमनिमिषांश्रुतं उज्ञापवनाकितः ध्वनः ॥ यज्ञायं श्रीगमकउसे स्वाधि मंति तास्वकं ॥ गत्वासौ रहगवान्याव कासतिधर्ममादि

श्री ...का

वंसर्वपिसत्वाश्च ययमस्लितावधिन ॥ ६ ॥ गगसर्वपिसत्वकुर्नवाविनं ६ सुर्जिनातज्जा ६ ॥ गगसर्वपिसत्वाश्च वृद्धकठममातिगा ६ ॥ सुदृिका बोधिसत्वा ध्यय ६ कामाय वीवना
दृया ६ ॥ सर्वतेमगव गृ ६ सुखकुर्वक्ष विनाभि ६ ॥ सर्वयावमिगा सुकृ तवयय बोधि वाविनं ६ ॥ सुप्रमा धंममाय ६ स्यान्निर्वाणं वयदस्नि गं ॥ यथ्यवं मप्रमिशुगसंवा
धिपाकुमलाह ॥ सुतिभि ना दिगं ... त्वानकृ गर्भ ६ मसर्वविग ॥ सहलोनं मे मालाय्क् ममामस्रुवमादिगत ॥ माधमा वमहासत्वपाि गामि सवज्जि मान ॥ लभानं पुधि
अनंग अभिसुखलकथ्नवल ॥ यकत्वं सर्वसत्वानां हितार्थाय समीक्षिगा ६ ॥ प्रभ क्लसंग गकृतमंबोधि प्राप्नु मिच्छसि ॥ गलनं पृमस्भ शी निनिगना मसिप्रुत्तु ॥ य ९१
थै तस्वाहि अनंगे सर्वसंसत्यगक्रवौ ॥ यावत्स मीक्षि गकालं बाधिवयाथन कवं ॥ बाधि सत्वाजगज्जीका हितार्थ मृगविष्यामि ॥ गंमा ६ काला नानयागव्रु दकुओ विष्य
गि ॥ सुवोव्याणुहृ विनङ ६ सेति यय्याति धकव ॥ मझेली ६ म मगकत्र संबोधि महिता त्यसी ॥ वृद्धत्व मन्के द्वालिंगेष्यगसी रविष्यति ॥ यकदा नवसद्धर्म त्वस्यानि
गुता ययाय ॥ बोधिसत्वा महीलिस्ताराविया क्षिम हर्द्वि का ६ ॥ निर्वृग नवर्मियना मरंश्या क्निगप्रमादिमा ६ ॥ गगगसर्वपिपापाश्चयास्पनिसर्वथाकृयं ॥ सर्वथा कुग

नास्य यवविदाध्रिध्यन्ति सर्वदा ॥ यथा सत्त्वा यास्तमास्त्याता तत्त्वि स्थिता तथापि ते ॥ ७५ आदिष्टं मुनीश्वरानन्तगर्भे प्रसिद्धिया ॥ ७६ त्वा धीमानन्तमहारूपी श्रीहर्षनं जिनसर्ववीरा ॥ य
दीयं लगव नाणपति पूर्निर्दिव्लम ॥ सर्वमां सुगाया क्षेत्याकृत्युं तु अगद्विता ॥ प्रकरप्य उमहा सर्वामसमृद्गिलाद्वया ॥ सर्वं सत्त्वाश्च सलोरव समन्विताः तव नापि ॥
दिव्यसुगन्धिपुष्पाणि प्रवर्षकुसुमनाशना ॥ गरस्थितं लसद्भूमं गन्धानि धनं तु ऋतं ॥ ७७ सुक्तान्तपमन्तालोमसरूपी ॥ सो कृतिर्मदा ॥ नतगर्भे सुपापाङ्गपे ७७ इ
दामकंस्थला ॥ गताप्रकंपितासर्वोमदासाद्विणिलोद्वया ॥ दिव्यसुगन्धिपुष्पाणि प्रवर्षन्समनकगा ॥ सर्वसत्त्वामहलोरवप्रापोप्रगतसुमादिका ॥ सम्यक्षेमसुगताऽस
र्वेष्याव ऋतं महामतिं ॥ ता ४ सलोगवाणं स्वामरूपी त्रिर्यं तमातनं ॥ हृक्रनजिनस्तिस्थाः प्रमासमासत्तुवमादिशगा ॥ उक्तिस्व सम गवा क्षेम्याकृतलत्वमनी ध्यनं ॥ कृपालत
४ धनिनापर्यं सृष्टिः ४ सत्त्वा ४ सुरवान्विताय ॥ तादत सुधिधनं ॥ सर्वसिंमतस्यगद्धवें ॥ सत्त्वं कृत्वं एवतनं गसमीदृजगद्धि ॥ ७७ आदिष्टं मुनीन्द्रे श्रीमहारूपी ४ सुप्रमा
दिताः ॥ उक्त्वायनं जिनं नत्वा गतस्ते काकमाशयता ॥ ॥ इति श्रीमहत्कालकमालायामिन्दुगोपकृमानस्य महारूपी वाधिसत्त्वसमन्तादजीनामतोऽध्या

श्री अ

सीतल रक्षोपन कारना गुरुला नायवीकानी ॥ वेउ जन रक्षोप मनाः मणा सीतला काकोवानी ॥
नेवानै रखिका वंस वानां सर्वधु सर्व घ्न: इणा श्राम्यानी १४ ॥ १

सेस्यतां ॥ भवान सुविनतः सर्व निर्दृ श्वर्याविस्मयान्विता ॥ कर्यं नून भसुखंआगमिश्च ज्ञागन्तो नम्नमा ॥ कृत्रमयी य सर्वयौविमन यो द्रुगव यमां ॥ तथैव ता सपू नाय कृति
मितः समस्त पापक्षयत् ॥ कस्तथापि पुनः स्कांगं सं सद् कुं कस्यनु पितां ॥ इ स्वा सा ज्ञा न पानत्वा कथं वै संप्रागतः ॥ [illegible] नान्तून मनु तावन सत्स्तुतं ॥ कुरु स्वेन स्यामभ
ा स्तोत्रं कायगतुनवान्यतः ॥ रके मिथ निश्चयं कृत्वा सर्वापि नृपतादिनो ॥ मंच कृषिनं पत्वान त्वा पूजा तमा यत्र ॥ कृतां स्मनमपातीता पूज्य स्तुवन् नित्यं तां मति ॥
॥ सर्वानपि समा मन्त्र्य प्र एवाम्नपादि त ॥ ताभ्यं सूर्यं तथा सौख्यं नमस्कृतं सर्वे पृथा ॥ नृपा च छाय धर्मी यसं पाद्यंवादिता नृ ॥ किं नेत्रं गन पं गत्वा द्य ज्ञा कृपाल वा ॥ १८
संवाधि प्रतिथिनिल्ला स्व नेता धिमन्नानां ॥ एवं का सर्वे रो वाति न ज्ञा यथा पृथक विप्र ॥ सर्वेषापि स रख्यावत ज्ञात्या स्य थ सम्मतिं ॥ कृता पादा मिताः सर्वाः पूर्व यि स्त्या धे था
अमात्य ॥ प्रतिथि र्वेश्वाधिनामा यतं व कृपद मास्यथा ॥ र्थमिनिल्ला समादि ष्टं यत्व सर्वोपितमदा ॥ कार्थापि पपितविज्ञ र्याकिन ल गन्ध ॥ स्वकार ॥ नमाच कृय धर्माय सं पाय वा प्र
दानयन् ॥ मदमस्य धन सला कां विधिम सर्व मवतत् ॥ ससूकृपदतं प्राप्ते स्वर्ग वाधि साधनं ॥ सर्वतत्त्व हि ताश्चनं तद् जीवश साधनं ॥ सूत्र ज्ञा सद्र सनाल सर्वात

नसंगमता ४ ॥ छिन्नतत्त्वनवंशं कृत्वा प्राक्तनकसमाहिता ॥ मोक्षधिमुक्तपापाक्ष सर्वविधिविमलागयाः ॥ सद्गतिं [illegible] सद्गतिं मनुपायय ४ ॥ एवं नेमि [illegible] सर्वविधि

[illegible] पिताश्रिया ॥ सर्वपि [illegible] सद्गतिं समनुपाय नन्नु ॥ [illegible] सर्वद्धव सर्वाक्वाल्यानां ॥ [illegible] विनाशमलवं [illegible] ॥ छिन्न [illegible]

[illegible] मनीश्वरं ॥ सर्वजनलयलसमलक्ष्मीधनमाविश्य ॥ [illegible] देवमानुष्य [illegible] गन्धर्वविनमा ४ ॥ [illegible] सर्वगविलसथा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] निहिताणमा ४ ॥ समाधिक्षनं वीतिविधा ४ माधेयिडं समनुपमा ४ ॥ [illegible] सवव [illegible] धिमा ४ ॥ [illegible] सर्वमानव [illegible] ॥

[illegible] ताधियाश्चापि [illegible] समन्विता ४ ॥ सर्वपिनानुमाश्चापि [illegible] पनिवासिनः ४ ॥ एवमन्यापिमत्वा [illegible] धर्म देव [illegible] ४ ॥ [illegible] गतगमनु [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] नमस्कृत्याल्लंकानमः [illegible] ॥ समागताः [illegible] मनीश्वरं ॥ समं [illegible] प्रा [illegible] सनपागता ४ ॥ यथा [illegible] मंत मस्य [illegible]

[illegible] प्रदक्षिणं ॥ [illegible] लिपुपानत्वा [illegible] समागता ४ ॥ पुनस्त्वं [illegible] समामो य धर्म [illegible] समाश्रयन् ॥ [illegible] नमा [illegible] ता समा [illegible]

= [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] २

६२

श्री जि

निःस्वानस्त्वं वृक्तउ समनकगा ॥ जिर्यरक्षायमतालाकाशतत्प्रतादयापिव ॥ दृर्वंगाउ पायिनाह्न काञ्कोपिनस्तवत्सिद्धि ॥ ममकृतास्य पाउ सज्ञासमायायस्वहृर्त

मो ॥ कदेवा पमनास्ते जिनस्तत्तनाजना ७ ॥ वाधिसत्वामहोतत्वस्तवयूउ सहृधीन्वि ना ८ ॥ सर्वतत्वहि माअमनेस्थ उर्ध्वक्ष्विताधि ना ९ ॥ पत्नाभरि द्म मन्दप्राणो उसर्व

आणिसमनाथ्वा ॥ जितेन्द्रिया विलि ७ क्षिद्धानि ८ लौ गोविमता गे या ४ ॥ अपरिग्रहसंतताउ अनात्रे री ग मानसा ७ ॥ निर्ममा जिनहं कानानि मीतस्नाथ्व जिमे गाव

॥ अनीर्वकाथ्व निर्मानानि लौता मृगत्तगे वा ८ ॥ सर्वेविधिमत्ताताल ७ सर्वपानमितृ गूना ७ ॥ सर्वार्थवतितमाप्रका ७ संधूमिवानृतीनना ७ ॥ कृपारमिपच ६३

प्रापा ७ स्थवर्मप्रताथिन ८ ॥ पावतेरस्तृ नार्थवसवेशु नलिवर्हितआनमाकृ गर्भ मा क सर्वसर्वनृ पपा हृवा ७ ॥ गउमसर्वसत्वानां लक्ष्मूर्यगमावृतो ॥ प्र

भिक्षनवरं गेनिवस्कि का मक्ष गे बहुवो ॥ निज यापितत्वे लक्ष्मसूनकातेवास्व क्लिष्टक्लिग ॥ जगमगे सत्कथामस्तु विपनी गान्नकनपवि ॥ नगउकेपाविस्पापना

मापिसमा त्ता दावना ॥ स्वर्वताकृ गे ता ध्रुव सर्वचगे पवा तत्वं ॥ नमेउमा दपिडंगन्थवृह्न केउ समन्नागउ ॥ दिव्यागिनि कृसोनाय कृगर्भ कोर्थं स्तुउंपवेक्ता ॥ सवस

गा २

स्यात्र तद्यां पादप्रिं गलक्षणान्विताय ॥ तत्र पूर्व मस्ति हि लवृक्षजगतवामता ॥ यथाहि तथापि तं बहु वृक्षनामपर्वतविंड ॥ गर्मा कथेयकाल्पवर्षि प्रकाश गदामता ॥ पूर्वाप्नेवाणसत्वाव
प्रसर्वान्पा सुख ॥ संबद्धापि टकं गत्र कायपर्यज गोद्विग ॥ उणितां संविद्ध दप्राफो ॥ सर्वस्य प्राणि तान्विणा ॥ वन्दनीयाऽगशाक संबद्धद्रवतानितथ ॥ नवीनपनिमृतद्भ का धा
मर्वीदनाद्भगाथ ॥ समाधिअवबीचि धाम ॥ अन्नत ममुषगाथ ॥ गत्र मरालि णा ॥ तल्वा ॥ नर्वभे विमलाक्रियापी ॥ वृक्षआनि सर्वाभितपरथ्य बहु समनात्य ॥ नवीनपि मुनीश्चास्थदपदि
कृत्यवरिक्षिणान ॥ गत्रक्षप्पि सर्वेषां नाम्य ॥ थ यर्दिन्न नत्वं ॥ मद्दीर्थ समापन्नो मन्यथा वग वर्जिन ॥ इर्गणि कृ ख्वग थापि नसेत् क्रआपि सर्वदा ॥ एवं नृपक्षग कृषं वृक्ष जंद
तानस्यं ॥ एवं अयथि सर्वेह संवार्थित्रार्थयथाहि ॥ तावदह वनि यापि धाधिव यांतदृक्नां ॥ यावदी छणुवेषपंकंत्रवृक्षशक्रनरणाथितं ॥ एवं सर्वेह संबाधित्राणव मांध्वनत्रेहं ॥
यश्रीदनतृत्वां वाधिमति तांसुग्गणाच्छि ॥ दग या ऊन माहत्पमा ॥ मवदान वग ॥ वाधिश्चाम इ क्षरस्वानलमयथ मृत्तिवित्ता ॥ अष्ट्रमो नो गमनातामलामुयनीदि रथ
दग ॥ नायुक्ष्मा अप्रमाणं स्वादसं ख्यमय थ्यं गोपिक ॥ नमश्चावधा संघा स्पान्त्रश्रके तु गतापिन ॥ वाधिसत्वामनामतवा एवं तस्वभिम सीपिकाथ ॥ सर्वेपि व मुनीन्द्रा कृतपादि

वाक्षसमीरि तव्य १

श्री आ

॥ ... ह स्या ॥ कृ सिणा साहू गा उत्रा ॥ मन स्य गिनी तु जा ॥ य सुरा स्पिया सम्र सुरवावर्मी ॥ संक्रिष्ट मानस पत्र य वा पि य सना ह गा ॥ कृ भारि मापि मा यत्र य वा पायलि मत्ति गा ॥
॥ मयदि मा मनु स्य रु धक् या गत ग गा ॥ कुमि तिनपि संकु स्य प्रकृ य प्रधर्गि म ह ॥ सर्व विमल ता त्मा ना धि वर्यो म मा हि गा ॥ हत्वा ता कोहि गं सो खं तु [illegible]
मृ सुरवावर्मी ॥ पंच कुमार्ग सं वा ना दी ना श्री पय नाय ॥ अ तार्थ मय संतु कारी ना तावि षं ति गा ॥ तपिव यदि मां स त्वा न म कुर्वी समा हि ता ॥ मे दु
हि स्वं प्रत्य णा का सर्व प्र य सुरवावर्मी ॥ यावका प्राणि नः सर्व सज्ञ मि स्य वा अपि ॥ कृ मिष्ट संगिना मृ दा मुस कर्म नमा गं भ या स कर्म निन्द का यु पा द पापा
नु वानिन ॥ ता व न्या पि स या द स्य स नीया य सुरवावर्मी ॥ याव का प्राणि नः सर्वे वा धि मार्ग मु निष्ठि गा ॥ मां व दु कृ प र्द या पु ने वा त्म ह स्म [illegible] ॥ ताव लो
लं ग गस्या तिहि गं कातुं स मत्त्व ह ॥ था धि म त्व वं गं स्वा व नि प्या मि स व सता ॥ ग तु कालान्तर तस्य संव कृ स्यामि गा य प ॥ स कृ में का हि गं ग त्र स मा धि प्रा तु
स त्व ह ॥ ता व द्वि च मनं का लं या धि म त्वा र वंन्नपि ॥ सर्व सत्व हि ता धा नं व कार्य न ना ध्य हं ॥ ... निस्त वा हि प्रा नु मा ध्य गा द्वि ग ॥ स म कृ प द त्ता गा य ७८

... ... स्थाने संघ ... सो ... स्मृति
... पश्चिमे ... संघ ...

संवाछे पनि तामय॥ यथेवं भगवन्निति छ्य प्रथम याति शीयम॥ ततश्च यदि पुनिः स्वात्तं वा छेव्वाकरावतु मां॥ सर्वपियमुनी ज्ञात्वा गदिकृत्य वक्रिमाह॥ संवाछे
मां समालोच्य याकृर्य कुप्रमो रिमाह॥ भूमिजनादिगभोद्वित्त गर्भमूनीश्वर ४॥ अनुनिमिषं कृमानं नं समालोच्य व मादिभाव॥ यत्र ग्रामसन्नगं सर्वप्यमायां अव
लोकिमाह॥ स्वगं स्थं मर्त्यलोका अ मवसि कुथातुका अपि॥ स्वलो ४ यत्प्रीति जानाय सर्वगं प्राणिनापि वा॥ कान्तं स्थ मूढ भानि सुंसमेव लोकिमात्वया॥ गेस्वामपि व स
र्वेषां दुः खानि विदिक्षनि वा॥ सुमालोच्यानि वानुष्यात्रिकृ संज्ञानि तं त्वया॥ तत्कृंभन्नित समुत्थानि दुःखानि वानुष्यान्यपि॥ दुःसमीकृत्य मान्से त्वां नीगवां कदुमि
ति॥ तस्या त्वकृत पृत्व मायां वलोकि मथ्वन ४॥ वाधिसत्वा मनुर्वलोका केनाथ्य भविष्यति॥ तं वाधिसत्वम प्यपि सर्वप्राणिनामपि॥ दुःखदुःप्रभामं क
त्वा वृज्ञार्यकानि ष्यति॥ तत ४ कालानेन कस्मिन्नमिताय यिनिर्दिश॥ तत ४ वालानन्तरं सप्तदम्र्मे कारिंदु वा॥ महोज्ज्वल मयं वाधिवृक्षं वज्रासनाश्रितः॥ सर्वान्मा
नगतो ध्रिस्त्वां सं वाधिमधियास्यति॥ समन्तभद्र कृपा कीकृत्वा अत्र ७ यात ७॥ संवृद्धा भगवान्स्तु सनाथ मना श्रीभविष्यति॥ यथुवाणि कालकादि निमुगलं संवत्य

* यस्यामे ४ लक्षां प्रथमे मामे २ नम्यामे ४ लक्षां पश्चिमेयामे ३ क

सुभित् वक्तव्या स्मृत्वकथाद्यदि श्रीर्वणी

दमाः

श्री गा अथव कापि गृहस्थेक एव भिक्षासुरताथिपिनः ॥ दुर्गमिनामक एव गणिर्यक्षः सुपिन कथितः ॥ न वापि पूर्वतात्र काष्ठव काभिता छन ॥ दिव्य सेन स्य पूष्पा नां त्र्काउव सूम क सः ॥
दुर्गधं नेवतउ स्था न्का क्षिस्व पिक सवन ॥ दिव्यां या नाति शीन स्य कूदं स गा सम कमाउ ॥ न वापि धोल्कू गउ गधा हव स्तीष्ट गउवाति ॥ हीना नाक्षि मक्ति काउ सत्त्वउ कापिन
मता त्वत् ॥ सर्व वेवर्ति काउ सन्मा त्वयम् कम महा गाया उ ॥ तत स्थ्यान वान्य उ एव सा क्रायग कष्ठन ॥ मधेव वयकाय गउ वं म उ वन पिवा ॥ याथाधि पापु मा को कैद नउत्र
कउ स्या त्रि कउ ॥ सम गा उव ना छ्यु त्वा फउ कउ म मा त्ववतु ॥ स त्याधिम ति तं व धम फउ नानि शं गि छुउ म ॥ अकनी कं स माउि म्य स नि र्दे तिं समा मू यातु ॥ य सत्वा थम
थमं वा धि मा र्ग संयाक्रि नाम या ॥ सर्वेग संपुजा ना सू यं द्रक्रउ नमवहि ॥ गर्न व बोधि सत्वैमेव हूक्रउंपूर माहिंगं ॥ समा कीर्णं प्रतिष्ठा पय गा धेयिष्या मि सूर्व ये ॥ मा
वदन्त्व नि था मि बोधि वर्या त्वव व नेत्र ॥ म हा पन्न व कानन्न पावन्ति ष्या दि गं मम ॥ उवंन्न पं मह त्कार्य कृत्वा संबोधि साधनं ॥ तेग उ सम्बाधि मा त यत्तं व कृ पद नाथ
यां ॥ वेतु र्दिप प्रमा र अम वा धि कृ का त्व व कृ या ॥ विधि पद गं नाना म स फन त्न मया म तान ॥ तं स्तेम कृव सो ग त्थर्वं क्रउं पनि त्कूट गू ॥ तन्म सं सं फ नत्वा क्र म

हृद्गतासनं लभते ॥ न हि त्वच्छासनं किंत्वा समाधिर्निहितो गयेत् ॥ जित्वा मानं गणान्बोधिं प्राप्य वृद्धं त्वमाप्नुयां ॥ तवासनं न मया यं यावत्कालं मुनिर्दृष्टः ॥ तावत्कृतेऽवसं किंत्वा
कार्यं कृत्यं मुनिर्निर्मितः ॥ एके काले निर्मिता बुद्धा बोधिसत्त्वसमृद्धिमां ॥ सद्धर्मं समुपाधिगम्य तद्दं कृत्यं हि स्तुकः ॥ एवं निर्मिता सर्वे सर्वसत्त्वा स्वयत्नगः ॥ बोधिमार्गं प्रविशिक्षा
स्म कृत्यं सद्विवर्धितानि ॥ एवं मुनिर्निर्मिताः कपिलवस्तुजकपि ॥ यत्न कोऽपि योगं कार्यं कृत्यं संबोधिसाधनं ॥ स्वादिगत्या सर्वेपि सत्त्वा भागिनापि ॥ तद्यद
गमाता प्रवृत्तये बोधिमं वर्ने ॥ सर्वेपि पाचिनः सत्त्वा समकार्यं प्रलापनं ॥ दृष्ट्वा यत्र स्त्रीमाकान्ते लभेयुर्बोधिभागिनः ॥ सर्वे विनदितमावृ बोधिसत्त्वे सत्यापि ॥ याव
निर्वाणपर्यन्तं लभेयुः सद्गुरुमप्यमाः ॥ नन्दियविकलामसर्वपर्षधर्मसाध्यं ॥ यत्र न यत्र योनावपि सद्बोधिभागिनः ॥ यत्र मे सद्गिमा [illegible] मयः स
मानताः ॥ तथापि सर्वे महासत्त्वा लभेयुर्बोधिलाभिनः ॥ यथापि मे गतः [illegible] क्लिष्टा यन्न यत्र [illegible] बोधिकां ॥ निष्क्रमसमहाविहारालभेयुर्बोधिलाभिनः ॥ यस्य मम सं
नक्लिष्टापवनयर्जगच्छिताः ॥ तथापि सर्वे सकलाविद्यामहाविहाराजिनालयाः ॥ एवं मे लोकिता यत्न कृत्यं धर्ममनिमाद्नां ॥ तथापि श्रीमद्गुरुप्रभावाल्लभेयुर्बोधिभागिनः ॥

श्री आ

ब्रह्मादिकरोडिसमानारूढ्र मादिश्यते॥ [illegible] संबोधि [illegible] सूनि [illegible] मुनीन्द्र [illegible] समस्यक्रिया॥ [illegible] मानार्गविनाद

[illegible] सर्वोत्राणं [illegible] नवमादिश्यते॥ [illegible] ॥ [illegible] विलोनिवा॥ [illegible] ध्यानल

[illegible] मुनीन्द्रस्य [illegible] परिक्षि [illegible] ॥ सर्वा [illegible] ॥ [illegible] बोधिपदं [illegible] ॥ [illegible] पिव

[illegible] ॥ [illegible] बोधि [illegible] ॥ [illegible] ॥ १७

[illegible] ॥ [illegible] सर्वलोक [illegible] ॥ [illegible] मारसुरनरदेव

[illegible] ॥ [illegible] सर्वबुद्धा [illegible] ॥ [illegible] मुनीन्द्र [illegible] ॥ [illegible] श्री [illegible] मुनीश्वरं॥ सर्व [illegible] सर्वेश्वि

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] धर्म [illegible] ॥ [illegible] बुद्धि [illegible] ॥ [illegible] मनोरथामिका

न धात्वधिमात्रपि ॥ बहुलीकाथिपाश्चपि सर्वं ग रुजनाविनाय ॥ तत्र समागता मत्वा सुमुक्ष्व [illegible] बोधिक्षितं मार्गिपि सर्वं [illegible] नमसता ॥ विनीताबोधिन मीसत्वा
पुनरुत्तेबोधिताय ॥ तत्र सर्वपिता लोकाः [illegible] संबोधि प्रतिष्ठिष्ट्वा बोधि व [illegible] ॥ संब [illegible] मुनीन्द्र [illegible] ॥ [illegible]
गन्त्वा पुरतनित्र [illegible] ॥ तत्र गं [illegible] मुनीश्वरं ॥ [illegible] सर्वपि [illegible] हर्षिताय ॥ [illegible] ॥ पर्वि
[illegible] धर्मं [illegible] मुपागतं ॥ [illegible] समय [illegible] नात्मना ॥ सर्वे [illegible] ॥ यथा [illegible] मुनीश्वर न ॥
॥ सर्वं [illegible] सर्वथा ॥ [illegible] सर्वं सत्वानां [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] मुनीश्वर न ॥ [illegible] समाधिं निश्चलाः [illegible] ॥ [illegible] ॥ नानाविध [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] सर्वं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वं [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्री रा

नारा.२

र्मि॥ अनुरागमिन मास सुप्रसन्ना तीर्थेव मादिगन्॥ अमुत्र धा मकत तृपमंदयस्त्वया ससु पस्थितं॥ समं पत्सनी मुरुस सर्वा मकनरलेभूयि॥ त्रिविद्या धिवनता निन्नु यानि पागिमाय

पि॥ एवा वस्तुम मीनीनां सहस्त्राधिनना ध्रिय॥ वगमहसमस्तं मवनं मान्नो हवं॥ सर्व मगंनं हरुयं संबाधे पतितां॥ मय॥ एवंतान्न मगव पूर्व मतस्त्रं नमवा धयतु॥ वठ

न श्रीति सा हसु का उत्सवा नोमानापि॥ एवं मह का मात्र दृष्टि मान हे मीननाधिपुरं॥ सत्ता लगरा कार्तू यांते सेन मंत्र सर्व समन्वितं॥ सा अंशति समं पाश्चिमवनेता गर्ह मु

नीश्वरं॥ नेत्रा मम् मृड न यंत्र मतस्य वव मह्रूर्वा॥ राननाः मननं न उठवनन वस तीर्थं वन्त॥ कांका मिडन वा पृष्ठ गंव पतानत्ते वना ॥ ९१॥ धानस्नामं स तंउ ८१

हकि मह गा यन्मत्र गता छ्यां विश्वं श्वर्म वनी हि बाधि मंउ नां सत्त्वां श्व मं मानय॥ एवं स म कोना ननउ गनुसा बा छाबि पा छ पंद म ता बा धिदु भोनु नाग छन्मा

तं मेलगर्दं मनि॥ मन्नागं व सेमुकुंजं गु नी हि राः ब्रंथी हर्षकुल वा जा स्ति गडाः हानि हि गं सा म मेन मोय पाश्रुनं नन्दतथा॥ मृष्टसोम गवान्न वी जलग श्री मनो श्वर

॥ सर्वा स्ता बाधि संनागोन्दु पूर्वं मम द्विक यत्॥ मदननादि संउं ण समुदं न धना त सा॥ मूलं स्यांवदका मता बाधि मारंगिनि ययो ठि गा॥ ११ तत्का पा हतं मा॥ ७॥

म॰

प्याक कृंद्या तसा भूला ॥ सर्वे दर्शयितव्याश्च वृक्षाश्रयाः समस्ताः ॥ ४ ॥ दर्शितस्तु गावा नोऽप्यावाधिविविक्ताश्च मायतां ॥ समाधिं विंद ॥ धेनवो बोधिचर्यापि श्रितक्रमः ॥ ततः सत्त्वगणा
निर्मतं जाविक्षुसमप्युक्तमः ॥ तस्मिन्नसमस्थानानावर्णैः समस्तकाः ॥ ४ ॥ बुद्धक्षेत्राणि सर्वाणि प्रावतःस्थाप्यदर्शयन्तु ॥ तथैव तानमालोक्य सर्वं कालत्रयस्थिताः ॥ ४ ॥ बोधिस
त्त्वानमुत्तरत्वाः सर्वे मन्त्रसमागताः ॥ ४ ॥ पंचांग भूमौ नीतो च्छ्रिमंतं समं पंच सप्तगसमुत्तः ॥ तताः प्रदर्शितीकृत्य भाजुः लयश्च प्रदर्शितम् ॥ ततश्च सर्वे प्रसन्नात्मा धर्मरत्नस्य तपाः सुवन्तु ॥
ततश्च समञ्जन्ते ... स्थाप्य ... संतनाधिपं ॥ कुरुवन्त मिननमानं ... संमानी यच्चश्रुवीतां ॥ तत्कालं सर्वे तं नामं न्यूत्त कर्तयचनीः स्थिताः ॥ ततः ... मुनीन्द्रस्य पूर्वाविशाय योः
भूता ॥ दर्शितवानादि तं ... स्थान ... मीननाधिपञ्च ॥ भगवन्तं मिनं जिनं तन्वा प्रार्थयन्त्वनमानाः ॥ भगवन्नाथ सर्वज्ञ संबोधिर्जयन्तमस्तु ते ॥ तत्क्षणात्कृत्वा लां समन्वा
दृष्टुं महति ॥ यः ... तस्मैः ... वर्णां ... स्थित तां ॥ सर्वा येकान ... निश्चयप्रतिस्थाप्य सौम्यं तं ॥ तत्क्षणात्कृ गंतैः सर्वसत्त्वमुपदर्शनाय ॥ नयोजन ... र्थेन
संवा ... सितां ॥ समस्त बोधि सर्वज्ञ नराः ध्यानसमाहिताः ॥ बुद्धक्षेत्राणि सर्वाणि यत्र सन्ति विचित्रकाय ॥ यत्रा हे भगवन्नाथि प्राप्य बुद्धा एव यहि ॥ पठम

श्री ॥ भजिभिअनंतयथाग सस्तुतिकृत्वा॥ यदाहं तवकांपापोकृर्यापि श्रुति वंदनाम्॥ प्रकमवस्तु तमासर्वा सनया॥ साध्विपर्वताः॥ सर्वापिसुगणा यतव पादि कृत्यवलिकाथा॥ प
यमता श्रुहसुंवा॥ सेयाकृर्यांप्रमादिताः॥ श्रुतिनिवमनाश्रमुः॥ सान्तसुमीक्षनाअलिः॥ पर्वश्रुतिवन्दनां कृत्वान्यपर्वतकृतिलामृतः॥ यवनाइशः पिनेस्त्वापृ
थिवीयंममकेणः॥ साध्विभितास्त्रया श्रमर्वाः प्रकाशिताः प्रकमयता॥ सर्वापिसुगणावृद्धाद पादिकृतसमोऽत्रिताः॥ तथासमीक्षुतंवा क्षेत्र्यावतकृ संनेनाक्षियं॥ मताः
सतगयाक्षेत्रसानलगगौमनीश्वनः॥ हस्तेन नक्ष्नेत्रयत्रानन्तभवसद्वीता॥ उहिस्वप्रवना सिह्व्याप्तमत्वंमनीश्वनः॥ त्वलितयंमहीतवगथवका
पविष्यति॥ वृष्णुदिर्दकृं मुनीन्द्रः श्रुनिगम्यमनवाधिपः॥ स्मृतलेमीसमस्थायप्रसन्नावांजिनंप्रनः॥ मुदितः सोऽकृतिमक्तसताबांतमुपाश्रितः॥ पर्वर्णा
सगतंताश्रीधर्मश्चअस्तुतमाहिवः॥ ॥ इतिश्रीमहक्षाणकमालामामनतनोमिनाताहरतिमिताषुनामनपौगरवाकानेर्थः॥ ॥अथ
सम्भूत्वत्व हस्तप्रसाहिनानेश्रमिनः॥ ततः पालिविर्वभक्षुं पुत्रमामसुवाप्रवीतु॥ तंवापिनृपमेर्द्धकुमानाजयपालितं॥ पवद्धकोत्तं मुनवसपुन्नस्तां

ॐ

भवनोद्धितामव्यान्
नवाये जनक साधु उ
पयत्राः इवगाया
दुः खमनुभवति ॥ अर्थ
नीति नाम मात्वगादिव
नवरूपयत्राः सक्तिव
विनाः पुत्र रत्न पात्रु
धवननि ॥ सर्व सत्व
मयाध्रनी ढिता उक्ति
न्यारा मित्र सतव्हा
विहरामि ॥ ७ मर्थुमि
शान्धकारे उपन
मूलभाविनेताप्त
शिवाहृत्य कान ५

र्थयाधनाः ॥ कुमिमतनादिनं मत्थ त्वासानिमिमान्यपातकं ॥ ७ ॥ साक्षान्मिलितं जिनेन त्वा प्रार्थये देव मायया ॥ यन्मया भगवद्रूपं गत्वा ग भवं गं कृतं ॥ सर्व्वापकानरोमि
तं तवतामन्नमू पाकृतं ॥ तत्राग्नेयं गतोसर्वं सम्बद्धपद लक्ष्यथ ॥ मयाङ गेक्षिता र्थेन सं वाक्षेपनि तोमेगा ॥ समफवर्षी तिव गह नहाध्यान समाहितं ॥ ७ ॥ बकृत्ता
तिमर्वाति पंथनर्वविविचिकाय ॥ यत्राईं गतर्वन्धाधिप्राप्यत्वं क्राह्नवयतिः ॥ वकृत्तउगथामस्याय र्थवासामिमितायथ ॥ ३ ॥ यावदस्तीजगत्कर्म्मणीमितायतंगतां जितं ॥ मर्व मत्व
हितं कृतं नक्का सर्वीतिवर्मसादिगतं ॥ जावदहं मुनीन्द्र स्थत स्पोमितायथ ध्वता ॥ ततप्रस्थाय सर्वार्थितं गयगं मर्नक्लिता ॥ ४ ॥ ततस्यूतिनन्द्र सनिवर्त स्वामितायथ ॥ ५ ॥
यावत्स्का स्यामि तद्धर्मं ॥ ६ ॥ सर्वलब्ध वेनन्नापि ॥ जावदहं मुनेस्तस्य गां मनेसमनुपाकृतं ॥ ६ ॥ वाधितवर्नीवग्रहं त्वा प्रवक्त पं जगेक्षितं ॥ ययमत्वा मयाङ्ब्धकृतं सर्वापि सर्वकं ॥
र्हतसिप्तविविनिर्मुक्ता बुजंगपृ तां सत्वाव तीं ॥ ययवापि मत्तासत्त्वां मां रंजय ह समाप्ताः ॥ गगं सर्वपि निव्यापार गय ह उद्धिताग याथ ॥ यवापि ममताना निसम्बन्ध
र्यसमाहताः ॥ समन्तुस्त्वमां निष्पं वन्दयह ग्रह्रयानितं ॥ मपि सर्व्विविनिर्मुक्त पागको विमला गीया ॥ समाहद्र त्वां भव उद्धा या म ह सत्वावतीं ॥ यवापि नोपि

श्री आ स्सर्वेसी मगात्वा प्रेहं मां क्षेपतिं प्रमय॥ कुंतिमनादिस्तुमाकार्यस्य स्वतुगत उत्थित ७॥ याङ्कृति निर्मलगम्भार्थं सभा मात्रौ के वमहावीर॥ यन्मयात गवक्र प्रणवमो॥ समन
मुना॥ सर्वा य कन केलिं प्रं सत्कृत्य सम सं यता॥ नत सास कर्मसर्वं कायवाङ्कि ऋसाधितं॥ मयात सर्वं कामत्र सम्या क्षेपतिं प्रमयाणां॥ नार्दं क्रि सं जिनकाउवनेयं धाधिस
कर्नं॥ नत्वा हं प्रात्तु मिच्छामि सर्वाधिक्रिप्यु मातना॥ यावकाउ प्रातिनार्थ यि तं थो॥ भयाजितामया॥ तात्सर्वान्धर्मनाकृतान्य स्थयं वमे दंश कात्तु॥ मावदर्हं क्रिनकाउ
वाक्षित्वयां वयकृद॥ प्रकृवन्सोगर्म कार्यंवमयंपि रुवानय॥ जिनात्स्वप्रमार्थं भव क्रुग उमहकृतं॥ सफलत्वमयं उसफप्राकाने उपनिंवाछि ता॥ सर्वेहुर्यं मयं ५९
सर्वनकृत्वविगउत्वं॥ हिम्यनत्तउ ता नीपिफ ता स्वत्वं रुवतास॥ केपं कापिन सत्व भ्यान्मो त्पालमैम मृ कव उ॥ मत्वांधु कउ आता मे सर्वास्तय पादुका उ॥ न
॥ कवडि कासना हृद्विलागाहि ता मिवउ॥ प्रीति धर्मे मे त्वा सना उ सर्वसत्वे भ वानिंट उ॥ वाधिमत्वा म स मत्वा सर्वमे उध पत्र जि ता उ॥ यैने पात उ सनाथ
वेत्तनकृ वीवनाहृता उ॥ सर्वसत्व हि ता धनसं वाधिमुत वोनिं उ॥ सर्वा वि धांउ नो धना पक्ष निहा विवङ्गा उ॥ समाधिमन वीतिम्रा मानमि ता सम पवा उ
६०

॥ दार भवं भीताश्रमक्रान्तिं अविक्रिं गं ड्रियाय॥ पवित्र कृपि कायार्थ नितीर्या विमलां गयाय॥ स्वपनानं समा वाताय उर्ध्वमू ध्रुमान्विताय॥ क्रिन्नल सवकाय सर्व कृ ध्म सफलम
न्विताय॥ यज्ञा छिन्ना म त्वानांय थकाम न त्वार्थ गाय॥ विकाम धिम तानन्त श्रीम मृक्ति समन्विताय॥ वक्र गा दि सर्व म त्वय मा धन्नय मरवंनमाय॥ सर्वार्थी मृख तक्रदू समक्रूमं
गु मतायकाय॥ सर्वपितम शानत्वा गवया समतानं ताजाय॥ यथा ति वांछि तं कर्त्तुंप ध्येय तत्त समनकाय॥ यं भ तित्ला विगड चाल तय तिसमनकताय॥ सर्वेषांगत संलानामक
वृ तिधि स्मत्ना॥ सर्व कृप त्ता लाय निर्वि घ्न सिद्धि ता तवन॥ नाप सुतावज्जू तस्व सर्व पिमतत्वयप्रमाय॥ गीताय॥ कृति मासादि कृ भवंग गूढापि कतनो॥ नवक्रमगतावाधि
मधूगत्यापिन तावित॥ मतामकृ में संगीति कृ तित्व वसम कृनाय॥ कामीप तं हिताय गंधानि श्चन यतकृ कार्यन॥ तं गीति तृयवा ध वाविगधा व्यनतदे॥
गनाय पननिताय गंदाक्लिन त्रगृध वार्लिताय॥ वीक्षपि दक गधार्थ निश्चन यद समनकताय॥ याद व्याक्षेपतागम श्च यथा तित्ला विवानपि॥ माद्य कागमी न्नू
मानांर्लतत यत्ना गत वनाय॥ वृद्ध कतथमर्वाम द वाय तदीगताजयाय॥ युक्त कत्व वि धाक्त सर्व पिता कृ ता मना॥ अकापिन गगातत्र त वत्सकं कार्यायिकाय

श्री आ

गं गंधिकं इष्टुं नत्वा सा कृतया मृता ॥ एवं ॥ ४ ॥ तस्याः प्रिय प्राप्तिमिच्छन् वनादनागत ॥ तत्र स्थाणुं द्विजा नीय च यं दे [illegible] दागता ॥ ४ ॥ यदि सा स्वस्ति गंगा कार्यं [illegible] हा प य ऊ

ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूमि गे दैन जे ४ सर्वे ४ प्राथिता द्विजाः स ४ ॥ स र्वान्का नानवा न [illegible] तमामसौव मादि गत ॥ यत्र या नवाच सकल वर्षा [illegible] ये ज गडुन ४ ॥ सर्वेष कन र त्वं

तौ इन्द्र प्रकाशुं निमज्जु गं ॥ तद्व वीपि सर्वत्र वाधि प्रतिधि मान ४ ॥ ४ ॥ तत्र घत्य मनी ड्र सखं [illegible] द्रूयाद्दनात्र ॥ ४ ॥ [illegible] जि जन समा ख्या गं सर्व ज्ञानवाधि पा ४ ॥

गंथि वितिलाव कर्म द्विजमव मक्र वन ॥ यथा दि ष्टुं त्वयावि प्रसन्न कृत्यं ज गच्छु वा ४ ॥ वाधि प्रतिधि मालन्याति द्यामाक्रु वंवयं ॥ [illegible] क्राम [illegible] सर्व

सतं घत्य ज गच्छु वा ४ ॥ वाधि प्रतिधि मालन्य सभूप स्काष्ठु मीप्सितं ॥ [illegible] तत्त्वा [illegible] कामधा [illegible] तानपि ॥ पृथ्वी [illegible] समानत्य द गैनि [illegible] वा [illegible]

गदर्शवा द्विगमा ना ४ सह सा मन्त्र मादि ग ४ ॥ सर्व मान गो ते ४ सार्द्ध वान्धू [illegible] या ये यी पून यो [illegible] गंधा म [illegible] द स्व समान ४ अगिनं [illegible] यत्र ॥ [illegible] लिन य

मिक्त्वा प्रणा एव मङ्गवी र ॥ जयास्तुगं महला तागमा [illegible] त समुपागत ४ ॥ यदा सि मध्यिकार्यं गं गदा ख्यापय उक्रे वं ॥ [illegible] तिन [illegible] माका [illegible] त मज्जन [illegible] ह्लाद

१८

कै॰पु॰हरिनाम॰ ४

नायु ग्रामानं गंसमागं पथ्यन्सुमाम श्रेवमस्त्रवीत् ॥ यदहं मानमुनीन्द्रस्य सफवर्षाणितिनि प्रभ ५ ॥ सर्वाय कान २ तानीमं नृपस्कन्दं तुनिमकृत्य ॥ तं हवानपि संवाधि प्रतिक्षन्त हं ना

गयथा ॥ धृतयान नृपस्तावयलक्ष्मसयुगगतुं ना ६ ॥ कृतिनिगनादिगता स्वामसमानव पनिवाधित ॥ सगतलं दिने ८ नृपं सुमामश्रेवमस्त्रवीत् ॥ तथापि विप्र कानि यामायथा दिदं

त्वया खलु ॥ सर्वाधिप यत् संप्रातुं शक्तं तु ७ ॥ सननय ॥ कृष्णस्य क्षा मुष्टस्तन्यात्मा मानव सर्व ग ते ९ मह ॥ मत्वाने ५ तमनु पस्कातु मेस्कृतस्य जगत्कृत्या ९ ॥ अथ मत्राम् २ क्ष

त्वं ना महतत्र कृत्य ते मात्मना ॥ अनुनृपो विपर्णि दुष्टं समाकांक्ष्य मसमरव्ये ॥ तथा कयं पनिक्षय स अनुनृपापि विपथा द्विज ४ ॥ मत्त्वक्षमु समागत्य गां द्विज संमुखयथो ॥

नत्समवाक २ क्षा ८ वह मतात्र क्षा ३ नमागतं ॥ मातृ लिपि मतस्मान लो पं ५ धन्नस्मृत मस्त्रवीत् ॥ आगच्छ तु मतात्रकृ पवि गतु तवानि दा ॥ स्वामेन नृपहं को स्वाकनातु

मह सर्वानितं ॥ यदहं नकृगर्व स्वमतं पुष्पसगतं कृत्वा ५ ॥ सर्वानि कान २ तो ५ सफवर्षो ५ सतितिनिमकृत्य ६ ॥ तं हवानपि संवाधि प्रतिक्षनक्षता गयथा ॥ तदनुमो कत्वा कत्वा

समनुपस्कातु मर्हति ॥ सर्वान पितव तं पातुं त्रामनुलो नाधिसमन्वतं ॥ सर्वाधि प्रतिक्षनेन संवानपि तु मर्हति ॥ कृति मंत्रार्थि जगन समनुजम्मना थमत्र ॥ मत

सहस्वाः

आ नताधिद ॥ किनीयान्कृता वा खे संका भिना नि याजित ॥ स्वदर्ना सप्तदे कान्ध्यनलीनाविविना य ॥ [illegible] ॥ एवं पाल्यकाध्यपि सर्वत
नि सिद्यात्स्य ॥ कांहना गात्र स्वनयत्व सत्ता सर्वपिन मया ॥ तन्वा खे मधिगायन्ता द्वितीय सं निवृ भिना ॥ संकापिना [illegible] नी सर्वधनत्तु माद्दि नाथ ॥ [illegible]
[illegible] गदि कृविविधिताच्च ॥ [illegible] माधीयतिजमिनात्ता गण या ॥ [illegible] सर्वान्न नाधि पादिका नु ॥ [illegible] ॥ यथा सर्व
[illegible] या ना न्तराभिनत्पादयं ॥ [illegible] सप्तमीमात्सना नु ॥ तत्वा खे [illegible] वा धिवं या पापा ॥ [illegible] सर्वं नव ८०
[illegible] लंकवपतिग [illegible] सूनीपिता ॥ [illegible] म मत समस्त [illegible] ॥ [illegible] गवां कृ [illegible] विना [illegible] मा दित
॥ नित्तनि पीत सारख्या ना सर्वाधि विदत्स्य न वा ॥ [illegible] सा दिसर्वा पन्न सूनस्य सूखा मृ भार ॥ एवं [illegible] निर्गा [illegible] ॥ [illegible] सर्वा
[illegible] मनन्त गत ॥ [illegible] मादि सर्वानेष्य सुलात यन्नु ॥ [illegible] सर्वं [illegible] पादय ॥ मनस्स सर्व समापन्ना [illegible] ॥ त

[illegible]

धुन नीच सर्व धांवि मन या कृतांत कमां ॥ पूत्या निर्मि गाकु क्षुण्ण प्रति किं सवे वमणू वीर्य ॥ मायी सर्व रत्नवर्णा उद्भिष्ट नां मन माधि नृप ॥ भगवन्नां मुनीन्द्रं शंङ्ख हूं गण कुसावक मं ॥ यम
८ मनदृढः ॥ ओं अक्ष नमा फ समूक वां थिंकाय ॥ पू गान्य प्र मुनीन्द्रायं नं कृग गांगमिष्यति ॥ ४८ कि सं आदिना भेन सर्व निर्मि आ स्य ॥ उत्काय सहतां संमृनां शंन ॥ ८॥ मिनां कि
क ॥ नतप्र वर्षा पिण्ड तस्नेनां इत्वा ॥ ८० मिन ॥ पूर्व ॥ सम पाति स्वप गत्वं मांक्र लया नयव स्यत् ॥ बाज कबालिं कानी ॥ ना यदृश्यं सफ वा विंक ॥ यज्ञः ॥ मनमृड्न ॥ ८१ ॥ कि सं मानिक य
तव रूपि ॥ निर्दवं गर्वाकुन् स्नान काग कीं आगहृतुं ॥ ८ ॥ वसां चिद वर्षाण नाहन्ये प्रशांमि ष्यति सांडगं ॥ ८० ॥ शिता ॥ ८ ॥ द्विजा नाना सानैः ॥ ८॥ धर्मान्नाधि प ॥ ॥ उत्काय तवर्थ मानुष प्र
कृक्षदद्दलचक्र ॥ प्रक्षिख्नस प्र गमंस दृव नागाग ॥ क्षिप्ता ॥ ॥ वांम नरि धवा दृष्ट्वान सांत्वा हं प्रवेक्षिरं ॥ काभ्मन नगला क्रन्दन सर्व कि ॥ स्वानल गोरम हा ॥ का छनाणि कथ
निवक्षण प्रकृष्ट वनमनः ॥ पूर्वा शर्वनेभ कृच्छ पश्चाभय मनं क्रमनु ॥ मांकृ लिर्दनगान त्वा भमेनीन्द्र मपावन्नतु ॥ तत्र कस्म कृगक्ष्मान् ॥ यामासमतपतिर्मशा ॥ स्वगत्वा
सा कृतिकृत्र सर्द कानं समाप्यत ॥ न्यपान्नु कार्थ सर्वेगं कीं छना ओदया पिव ॥ स्तुत्यपि वगधनत्वा मुनीन्द्रं गमपाश्यतु ॥ प्रथम सङ्क्रम ८६ सत्रा कर्णां ननाधि

...नव पि
पि: २

मं... ॥ २ ...
...१

श्री ग्रा

सर्वक्षरसंनिपातगत्ता ॥ धर्मधर्मे नाशाद् विष्यामि ॥ तस्या स्यादयं प्रमाणं च दृशेकालपर्णं तव च ॥ तावत्स आदि मधर्म क्षत्रियामि तत्परस्य ॥ तत्र कल्पस हस्त्राणि बहुकार्यसमा

म्यत ॥ म्लानोच्छ्वसनिनिर्वाणं स्याद् पि विचित्र तत्त्व यां ॥ तं च कालान्तरे तस्य सहू धर्मेण हि तिरपुन ॥ अपना नामसर्वे पि वितीर्ण कथं तु विष्यामि ॥ तत्र [illegible] लोमं ताहि [illegible]

मेवामेमनोश्चव ॥ जीनतत्त्वश्च पापा तथास [illegible] गतां तविष्यामि ॥ तस्या स्याद् प्रमाणं च दृशे कालसहस्त्रकं ॥ तावत्स तेगवान्धर्म आदि [illegible] स्याच्च तिरुद्धं ॥ तं च

कालसहस्रान्तरगतानन्तसमाहितः ॥ समाप्य योगगं वार्ज पनिनिर्वास्यति स्वयं ॥ [illegible] स्यम नीरन्ध्र यनिर्वृतास्य [illegible] ॥ सप्त कल्पान्तरे [illegible] मेरु [illegible] ८४

स्यति क्रमात् ॥ नूनं वान्यपि संवृतः प्रभुसंस्थयोर्मुनीश्वरा ॥ उत्पत्त्य च मतिपिम वक्षस्यत्नि पूर्वक्रम ॥ निर्वाण [illegible] यास्यति [illegible] च कालं [illegible] ॥ [illegible]

दकोटि मधर्मतथ्य सान्यानि [illegible] वहं ॥ [illegible] यकल्पान्तसेवकेत्तरगतालयां ॥ [illegible] विर [illegible] कालं [illegible] विष्यामि ॥ [illegible] तो क [illegible] ता

संवर्द्धिनोपि वर्द्धिना ॥ सदेवं सत्कियांसेवति [illegible] स्यात्तिक्रमात् ॥ [illegible] त्वं च पंचाशद्वाधि [illegible] यत्न ॥ सर्वानानेग [illegible] सं वामिभिर्गत [illegible]

[illegible] अतिका [illegible] नी [illegible] समे संख्ये [illegible]
[illegible] संख्ये [illegible]

॥ धर्मनाशा जगत्स्वामि तन्मूर्नाम सर्वविद् ॥ मुनी[illegible] भगवान् [illegible] आगमा [illegible] विष्यति ॥ श्रुत्वादित्यं मुनीन्द्र [illegible] गर्भ [illegible] या ॥ [illegible] नाम निर्गमे वंश
नावमनु ॥ कृतांजलि [illegible] र्वाधिमत्वा ॥ ४ ॥ समाप्ति का ॥ ६ ॥ [illegible] वाधि संशाल [illegible] वादि गु ॥ श्रुत्वा [illegible] जनन [illegible] र्थिन मुनीश्वर ॥ ७ ॥ [illegible] समा लोक
समाम [illegible] माहि [illegible] ॥ ७ ॥ श्रुत्वा [illegible] महानाम आगमाय [illegible] ॥ ८ ॥ वन्दित्वा मां महाशीला [illegible] नार्थिन ॥ ९ ॥ [illegible] सर्वे [illegible]
[illegible] पिठिजन ॥ सर्वे ॥ संशा [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ प्रथमं बाधि मासा [illegible] विष्यति मुनीश्वरो ॥ ११ ॥ श्रुत्वा [illegible] मुनीन्द्र [illegible] समाधि
सुनि गम्य ॥ १३ ॥ अन्तर [illegible] पृष्ठं च मुनीन्द्र [illegible] वीर ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] संवाधि [illegible] विष्यति ॥ श्रुत्वा
[illegible] सर्वविद ॥ [illegible] समालो [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] महत्यार्थ [illegible]
[illegible] ॥ श्रुत्वादित्यं मुनीन्द्र वाणि गम्य [illegible] ॥ अन्तर [illegible] मुनीन्द्रो [illegible] वीर ॥ [illegible] मुनीश्वर ॥ [illegible]

श्री गी

गता ॥ यावत्कृष्णसमर्पितत्वाच्च न यं बाधितमर्पनं ॥ यावत्कृष्णात्संगतस्यापि तत्कृतमेव स्वातंत्र्यमिति कृष्णवशः ॥ यावत्कृष्णं ताम्पित्वा त्वत्सर्वान्तिकं स्वयं पालयन्नास्था ॥ यत्तत्तत्सर्वं गतं कृष्णं स्म

कृष्णस्त्वंकीर्दितीतत्वमः ॥ तत्तत्तत्त्वेन संबाधिमतिसुम्पादममत्वहं ॥ एवं नृपं तदा वृकृष्णकृतं तं तयन्नसम ॥ एवमेवाहमानीतं कृष्णः प्रपद्ययं गच्छति ॥ एवं निश्चयेन तत्कृत्यं वृष

कार्यं तमनंतम ॥ एवमेवाहमात्मापबाधितं वृकृष्णत्वयहितं ॥ एवमेव उगमत्वात्स्वनयं पालयं मत ॥ मावत्कालं तव निश्चयं यावत्त्वाकं च बाध्यसे ॥ गत्वाहं निर्बाधं या

त्यं यथा भगवत्कायनुर्मम ॥ निर्बंधं ग्वोपिम गावत्स्वकृतमेव स्वातन्त्र्येण कृतवशः ॥ सर्वापि मत्कृतं यदि बाधितं क्वचित्तदा ॥ तमकृत न स्याज्जातु तीव्रकृष्णाज्ञया पुनः ॥ कृष्ण ८८

वे निर्मितानामनेनात्र पुनः काधितं ॥ नत्वगतीमनीश्वरं निर्मितनमवमत्रवीत् ॥ कृतकृत्यमतः कार्यं संप्रार्थितं त्वया यतः ॥ तेनावाप्तिर्निरुद्ध मत्तः सामग्र्या तत्पदं ॥

यथा मत्प्रार्थितं तत्र गच्छ सर्वं न विच्छति ॥ मत्तः स्वातंत्र्यं मत्तस्वातंत्र्यात्स्वं बाधिमा प्रयासि ॥ मंत्रकृष्णमं प्रतिनिश्चितं तत्र न मनि कृष्णाज्ञं कथा गताः ॥ सर्वेष्वपि समकृष्ण

त्स्वतंत्रं कृष्णदिद्वियार्थप्रबोधकः ॥ गा ताप्तेवाडत्वा काहितत्वं तत्कृष्णमार्थप्रदायकः ॥ सेव्याधिष्ठानयमं तन्मानितंनिधिं कृष्णानि निर्विघ्नमेति ॥ कृष्णमिमनमनी

ई॥ समादिदंनिगमयसं॥ निमीकुमारं स्मा तामनलग कृंगमवीषु॥ यधजासगयकेनापा पनिषुर्यंगमतथा॥ यवादंत गवसाकृर्यापंवृप्र॥समर्ना॥नपासर्वमुनी
डाश्चदर्णादिकु समाश्रिता॥ सद्यमासमालीकृ व्याकृवेके उवादिता॥ मृतनापयकृ दिथ प्रवर्षकु विलसयमत॥ सांद्वि गेलामहीमर्वान्वकु यनीननादि॥
॥ कृस्युक्षातुनिमीवाजकुमानयमाक्ष तिर्मुदा॥ नलगर्कसपापाकृ यमतपकृ पणीमकं॥ गयातर्वमुनी डाकं व्यावज॥ सगणयर्द॥ वांति ताता द्वि गे लात लुया
कृदिनिपानि॥॥ गयातएगवानृ वृ निमिनंनगं शुता गयौ॥ दकनगिनतिस्वृ समामस्त्रु वमादिशत॥ ऊदिकृतं महाकामन्याकृ गत्लं मुनीश्वने॥ वानि ता
वमदीसर्वापृष्यकृष्टिश्च र्घागि ता॥ गनृनं तगवा ... ता धर्मवाजो विनायक॥ सर्वसाहंत्व मान्त हृत यांगा तार्दिव्यानि॥ कृआदि मुनीद्ध॥ तनिमी साक्ष ति
र्मुदा॥ उत्थाय नं मुनिं नत्वा गत्सवेवाना माश्रयत॥ ॥ इति श्री महाकाव्ये मालायांनिमिनामकृमान य सुप्रतिष्ठितमतिकुमाजनाम सप्तम स
र्गाः॥ ॥ कुयेसमंडमं॥ मृ पुनाहि मादि आर्कम॥ कृद्रगर्वोवाजपकृ समामस्त्रुवमादिशत॥ प्रन्त्वे पात्र महुता गतकृजीतमुपाऊ॥

श्री आ

लगांर्थं सर्वविन् ॥ नस्तलाजितमितुरा स्पृष्ट पन्न नृवं समादि गात् ॥ उक्तिष्टस्त्वं म नतरत्व यधिम त्वाञ्मगाद्विर्मा ॥ कृत्वा संवांभिमानाय वान् मस्त्व शगाताराकामृ ॥ मवादिर्ह निमिषिग्र त्वा
वगार्वे भाव नान् रा ॥ उत्स्थीय नं मर्तृनिन त्वागत्तर्ता का ने मायया ॥ ॥ श्रुति श्रीमहज्ञानकमालायाम भवन स्थर्म व गवतें श्रीवन नयोगाल त्वाव न प्रमिति
॥ ॥ अनुसमकृन शुवस समफ मं वन्द्यात्मगां ॥ मंग आमर्वं म नास र्त्वं समान श्लोव मस्व वीत ॥ त्वं वायम समगं ॥ स्तुष पारीन स्वका गक्तिगी ॥ यथाहित्त
यिमकृत संयाधिप्रार्थयाधुना ॥ वस्तुमितानोधिअरुं यस सर्वादि सूनि ग न्याम ॥ ॥ सूंगक्र ॥ सुप्रसन्नात्माम न्स्वो याति स्तो कल्यन् ॥ नन्त गुर्तस्य वाक्ज प्रसन्नाम ॥ ९ ॥ अंते लि
र्मेष ॥ पूनगा ॥ समृपाणिमत मी श्रृत्वं न्यवदयम् ॥ सर्वज्ञ राग वृन्नात सकृ मैर्षं पुकाधिकं ॥ संश्लिष्ट स्तो गार्गकृत संबोधि शपु मतम ॥ ॥ स्यत्नेनाम वा निर्षं एधा नयायाम
लोकिका ॥ ॥ तलो ॥ प्रवा ॥ पि गोवाश्च प्रहाय कं कदाचन ॥ गर्भवासीनि सत्वानां माम्प्रज्ञा मा पिन कृतत्रिका ॥ सर्वं पिवा मतान्तत्त्वं तवे य वो प यादृशा ॥ ॥ नं वा स्वयान सत्रा
वर्वेदर्मि स्तनर्वा क्षा विन् ॥ नका य स दकृर्गं ध्वं गां यथि कृष्क मापिन ॥ सर्व पि दव श्रा काना ॥ सुदीप्ता ॥ ॥ रत्नग मिन ॥ ॥ महांगि ज्ञामका मस्त्वात वंयपूर्वाधि वानिर्ण ॥ ॥ नाम
काः

ते (रे) इत्य नाना रत्नै नाना लंकृता भवेयु । नाना रत्नेषु ष्या नाना रत्न वस्त्रा नाना रत्न माल्य नाना रत्न भरणा नं कार रत्नं कृता नानामान्येभ्यो नानाबाधे नं नानारत्न भवन नेकी ना रत्नेषु पश्च ते रत्नव स्थालं कृतो भवेयुः ॥ नमत्र तथि प्रसामेत भन्दगृ यथ पुष्पाः सर्वे वेषु बोधायश्च बोधेयु: संप्रतिनिभ्य श्च पुष्पे भ्यो बोधित त्वा: प्रत्या मयेयु: ॥१॥६॥

॥ सार्थकरे महामाया रत्नपुष्पा चिर्ते ॥

॥ सुमेरु वज्रकाय वि मर्दनाः ॥

त्रयं पुरुषोत्तम श्चनव पावाः ॥ गार्जनाथ ॥ नक्षत्रियनाः० नाथन रशीलं काष्ठ पारयाः ॥ सर्वार्थकृत माध्यम गर्भलिन्नमयीनवतं ॥ नक्षत्रालंकारान समयन्न कालपरकंपुरमासिता ॥
दिव्या पद्मान समयन्न विमानप्रतिमण्डिताः ॥ सद्धर्मगीति समन्वाद्य महासत्त्व सुरवान्विता ॥ तत्र आगताश्च ये सर्वे बोधिसत्त्वाः पुष्पकलाः ॥ महावीर्या महावीर्य यथि दय्यु सोगकाल्प
काः ॥ ये सर्वदर्शनि यूहत समाधिं समवाप्नुयुः ॥ गत्त समाधिप्रभावेश्च परश्चयुः सुकलाक्षि नान ॥ सर्वेषामपि बुद्धानां सद्धर्मदर्शनामपि ॥ ये त्वासं बोधिश्वर्या सपूर्वनेयर्श्मे
छिन्न ॥ सर्वेशानि लब्धाश्चापि तवयुः श्च महर्द्धिकाः ॥ यनविमलं किंरक्षपि महाति स्कुते तो कनाः ॥ ये सत्त्वा क्षांत समाधिं विपश्या ॥ समयुः समाहिताः ॥ वायवः सुरवमं सगौर्थ
समनयः सुगान्वितः ॥ सत्त्व कांपिता पृथ्वीं सुबोधिसत्त्वाः समाधिकाः ॥ सुरवा सनेस माधीना समाधिनिर्हारगामियाः ॥ सत्त्व समाधिवशीभावे दर्शदिक्षु मनीश्वराजाय
अविधि समसत्त्वानि वर्द्धय यस्थ ॥ छया ॥ ये मानसान वेपथी सुपर्यक्ष समनुपाविताः ॥ ध्यानसमाधिसंनीतानि प्रीदयुः सुसमाहिताः ॥ धर्मतत्त्व मनस्काने दर्शदिक्षु
मनीश्वनाना ॥ संप्रश्रुतानि शत्त्वा ध्यानत्वाभिश्च युनातवो ॥ ययापि प्राणिनेः सर्वप रस्थयुर्मीय छकया ॥ नयानसंगतो धर्म उंश्च धन करायन ॥ यथोति कांक्षिता

श्री अ यथुयमयं समकरण या ॥ यत यतेवतू पवधर्मेश ताच्च म मनथ ॥ गत गतेव धर्मे लताघु यस्यं पताधयत्तु ॥ सर्वविद्या गुरुः महावंदगविनवाप्रवाधयत्ता ॥ तर्वफमयिपिनिका
मिताघुमयंयथेष्टथा ॥ सर्वान्तु वाधय नत्वान छज्ञतितव वाबिनथ ॥ वाधिमार्गप्रतिष्ठाव्यकानिष्ठामयविवर्द्धिकाते ॥ यथागडातिनथ सर्वेवाधिव यांसमाचना
थ ॥ सर्वान्वानग ताश्रितत्वात तर्षु सुभोगमंपदं ॥ गथमर्वज्ञ सम्वाधिवर्याक्षमप्रिकाणयत ॥ लक्ष्मा समनगणालडंवानयर्यंश्रिमतुका ॥ यथाननतहे धीनर्धर्मिं हगान्धे
तसश्रिया ॥ प्रतिधनेह्नगंवाधिमयाप्यवंकूतंरवता ॥ यदीयं तगवत्ताणमति दूर्यकमगथा ॥ सर्वज्ञ सर्व तत्वानां सर्वदुःखं प्रणाम्यतु ॥ सर्वसाध्वनि थ आगम
थ सर्गोत्वाथ ससू रवान्विमाथ ॥ सद्ध धर्मसूकर्म ध्यातवकुविमलागमाथ ॥ पथ्यकुगसनीन्स वीन्द्रादिकृत्यवकि मातृ ॥ कत्तजातत्वनाथ सर्वतवकुवाधिमानता
थ ॥ सूहके दर्शनवूहसमाधिना समनकगथ ॥ परथेयं सगणान्सर्वान्वाधिसत्वससांधिकाते ॥ थक्षितिमनादिगसर्वडापिधनेशानं यथा ॥ सुधाहसत्वयं न्वापित
वांछितेनपथ्यत ॥ थक्षितिमनाकुमाकर्षवनत्तगर्ह थ ससर्वविहा ॥ भूमिषंगमहामत्वं वमालावें वमादिभद्र ॥ साधुसाधमहातागमर्वतिश्रीकुधमतव ॥ य ९९

द्रुकत्राति गु ह्मादि प्रतिधानं द्रु गं यथा॥ सर्वेषामपि सत्त्वानां विक्रान्ति पतिः ८ गाथयत्॥ सर्वज्ञत्वतूणां कृत्वा मतत्त्वयथर्द्धिमान्तवः॥ मनापि कृत्तपृत्त्वं वाधिस
त्वाजगात्सु ७॥ मता सत्त्वामतानि ह्लत वस्वतद्रु कृत्स्थी॥ तथे सर्वेल हेर्द्धनं प्राणिधानं त्र गं यथा॥ सर्वोद्र यान्मि मोह पूर्ये क्रमा धाथिमं वा प्यति॥ पश्चात्वर्त्त कत्रुमानी
उदीच्यांगतावियाचि॥ ज्ञानमायसर्वि उ ह्मालोकधउर्यधान्विना॥ तत्रैव समकत्त डत्वं जित्वा माना मतावलान्॥ संवाधिं प्राप्य सर्वज्ञ कृ थोगमोविनायकः॥ ज्ञानकत्र
विहरन्ति प्रश्नकत्वं हि (धा) जिनः॥ मुनीश्च नाजग धनुस्मा धर्मनामा रविष्यति॥ ततः समकत्तेड रमनवाह्नं जिनसावकन्॥ नत्तगर्भस्य पादाज्ञ्यपाजसां त्रति सेना॥ गं
हस्तुगता वा स्तुमात्मनलंगर्भ्य सर्वविन्॥ हस्तनजिनमिस्तुस्थसमामेनेश्व मोदि गत॥ उत्तिष्ठसमाधीन ये गंधकृत्तु जगाङ्कितं॥ तानेयत्तं कगघानावतुं॥ गामावधर्जिता
त्वं वः॥ इति गतमनीजं गं ममोदिर्घ्वं निगम्यत॥ समन्तात् डउत्थाय यतात्तजलि वर्ध्वं वलाकयत्॥ सुप्रसन्नमुखा मोजः शामनानं कजगरुन्नंयनत्तयोर्द्दसमानमप
नत्तर्त्तत्कालमाश्रयत्॥ ॥इति श्रीमद्ज्ञानकमालायां नमि घस्तसमकत्तेड वाधिसत्वज्ञानवत्रविहरन्ति प्रश्नकउनाम यथा गजयाकनगं

का ॥ सर्वपि सात्त्विकास्तत्रा अममा अपरिग्रहाः ॥ नगतीर्थिकाश्चापि नचैकान्तमतिर्भवेत् ॥ नविपरीतदृष्टिश्च नापि काश्चिद्विवादिकः ॥ नकायक्लेशमात्रेण नचिक्र
क्रमतापि वा ॥ नचयावृत्किलिष्टापि स्यादेकस्माद्धितापि हि ॥ सर्वपि विमलाज्ञानैः परिशुद्धक्रियाचिताः ॥ पंचाविंशद्गुणाख्या वाचित्र याक्रमाश्च ते ॥ नचैकत्वापि
सत्त्वस्थत्वाकृष्णाः हर्षमनः ॥ यथा तिलेषु तैलं वा गन्धः पाटवे वेत्तुरनः ॥ नतेजाज्ञानपशुभावस्वभावसंस्थानतादयः ॥ नेवाशुभ सुदर्शनविनाक्लिन्नाक्लिष्टादिदूषिताः ॥ पे ॥ १०३
शास्त्रादिष्वास्थांसमकानन्दपनागर्भाः ॥ सर्वेषीमान्धिकाद्य क्षेत्रस्वधर्मनिनोऽश्रुतः ॥ सफनत्तमयास्मततृष्णागानाथः ॥ हिताः ॥ स्तापक्षनपर्यंके प्रगाह
र्विष्वनास्तृताः ॥ अष्टाङ्गग्रासंयुक्तवानि पूर्वपूर्वमनावताः ॥ पक्षोत्ततादिसंपूर्णाद्यांडुर्विषु नाम्निका ॥ समनागात्ततृष्णाणां सादसीतिनतीक्ष्णाः ॥ मनोनमास्य
द्युतिर्वसर्वमेघिसूगता ॥ अनेककल्पवृक्षैश्च समयात्मपणसंगने ॥ हेनसेवलसंयुक्तमपताः ॥ पनःनमिगे ॥ दृष्यमहसवस्त्रादिनत्वातक्षानलम्वि
तैः ॥ कृतधृत्पताकादिभूषिकाहान ॥ हिंगे ॥ मूर्तांकनोमदीसर्वोषमत्तिमविमनाहना ॥ दिव्यगन्धाम्बुर्भसिक्तासर्वजकानातवता ॥ यदेतिलो

घि गं ड्रव्यं प्रार्थयित्वा समाप्ता त ॥ सर्वं स्वश्वरत्व आसाय उच्छ्रापयं ४ म घाल्वं ॥ बाधि वृक्षा म हस्त्रारव ४ सफनल्म मधामम ॥ ग ग ४ स ढूर्म म तना दानि श्चम काय नमिम ॥
ग ४ सूर्यवत सूक्ष्म सर्वगं विमलो गयाश ॥ नि ४ सो गा ४ स कु शेन कालावं यवं बाधि वागि न ४ ॥ मानु अमाम व कुञ्ज मवं ४ म कृष्णं त न ग ४ ॥ नव का श्चि कि कि हूं र्या मालय इं
मि ता श्वय ४ ॥ नमथ नकाय्य संशी गं प्रम दालि ४ मे हाव वज्र ॥ मनागं वि कृ मृपध तनु ध सभ्भिसाय दा ॥ कता गां सेनि नी श्चं वे स्त्रा म विन मा लवं गा समाधि विस्कोना
म हृन्वा सविजि तो द्रिय ४ ॥ मान पा भो विनि श्चि अय व पनिं सं म म गुरु ॥ यावं सु पं भूवं ४ थ सना दाना पिय त मा ॥ तथा मा गविंदी कशा उ स्वा वना मि भी लवं गा ॥ गा हि
४ ४ मला ४ भ्रिय श्रपि स ता सौ स्थान ता वि गा ॥ न कि श्चि ४ स्तो गता पाप्य लव य ई ४ विता गया ४ ॥ ग र्भ स्त्रा दानका श्चपि तानि कायाम स्वा न्निगा ४ ॥ सफनं दिव मं आ ता थ
मयू निर्मिता प्र या ४ ॥ तत ४ माअन नी सो पि ता नि का म ह सो स्थि ता ॥ गत्वा पम्रा कनला ला सु स्त्रा स्नीत्व लवत्समान ॥ ततास्त पतू घा ४ सर्व पनि गु ढ्ढ तिम गुना ध ॥ विना
गा समाधि मो प्य वन यं वो क्षि वो नि का ॥ बोधि प्राक स्य भेना मे गं ४ व यं षे प मादि ता ४ ॥ ते सर्वे वि मला ता मा ता ल वं य बाधि वा वि ४ ॥ तत ४ सर्व पिग व्यला व कुञ्ज वम

श्री ॥

दिशतृ ॥ उदिव सूमनावी अवडति अनं रुगयथा ॥ तथा गमत्स्य गन्नूनं गतमुमीवखुगंयवन ॥ ननलमतुनिति रव्यागा वाधिमन्वा तह्वात्मविग्रु ॥ मत्रेव लाक धागान्वं भहासत्वा हविष्य
ति ॥ गवातंस्व्यमकत्पागा सद्दर्शपृथतकथागग ॥ निर्दृग सुगतनयमद्भर्मनादिंग पुलय ॥ त्रिकालागगवापिवद्धक्रतुपु (अभिगं ॥ अवधमामिति रव्यागं पनि जर्जना विष्य
ति ॥ गडसं वाधिमावाघगथागं गासूनी श्रुतद ॥ नागविनर्दिगे श्रुयधाधानाम हविव्यति ॥ नगतसंपनि म्रायवउर्द्धभृविदान हेक ॥ वाविनयाभ्रगंक्षेत्वाकनिम्रैऽग(
द्विगं ॥ वसुधादिर्द्धं मुनीन्द्र ॥ नन्तभेदनिर्गमयत ॥ उत्कृष्टवदनाम्रात्र त्सत्ताकानमाण्यगु ॥ ॥ इतिश्रीमद्रत्नाकरमालायां मं ह्लानम्नावा ऽहकुमान १९१
स्यनागभिन्निर्दिशत श्रुतपायनामगणागमव्याकत्रं ॥ ॥ अथमार्दव पूर्वमेव पंच गार्णेर्नृपात्मजे ॥ यथागगा ४ मुंडत्र प्राप्तिअनं रुगंगथा ॥ गहृष्व न
रूगर्कसमूनीन्द्र ८ पु सादिना ॥ कृमाना अपिमर्दसंवा(श्रेव्यां हतामथा ॥ ४०० ॥ अथचतुः ॥ गगा श्रपिनाजपूतान्नसाधिमा ॥ प्राप्तिदव यथावज्र स्कम्प्रह्लाव गा
ति ॥ गपि सर्वकृमनाश्चनन्तगर्भ गप्त मिना ॥ सर्वकृपन तथा मत्पुमखा(श्रेव्यां हताअपि ॥ ४०० ॥ अथेकान्ते स्कपालकनवशितिर्नपात्मजे ॥ यथा समना(

= अन्योन्ये सुलोक धातुष ४ =

कडनप्रतिक्षनं हसं तथा ॥ सपि सर्वमहासत्वान लगर्ह एवाञ्छितं ॥ वद्धकृतं समादिश्य सर्वा(क्षे व्याहृता स कथा ॥ ॥ अथान्ये श्चाद्यानेश्वर हद्य संप्रसादितेथ ॥

वतुन गीतिमाहस्ते ३ प्रतिक्षनं कृतं तथा ॥ सपि सर्वसमा लोकनलगर्ह एवाञ्छितं ॥ वद्धकृतं समादिश्य सर्वा(क्षे व्याकृता स कथा ॥ ॥ एवमन्ये कृता लोक्यं स्थिति

श्वशाश्वकादितिं ३ ॥ समूह पद्माल स्वा प्रक्षिप्तनं कृतं तथा ॥ सपि सर्वसमा लोकनलगर्ह एवाञ्छितं ॥ वकृकृतं समादिश्य सर्वा(क्षे व्याकृता स कथा ॥ ॥ अथ समं

स्वस्थार्थं पत्रामृ गीतिमानवा ३ ॥ ता वेवान लगर्हस्य गहृ स्व शवि नादिना ३ ॥ सर्वांश्च पूर्व वित्कालमानलगर्ह नकृत समृद्धीः ३ ॥ समूडम्यन्तु वार्यवे ३ गीतान्यारहिवक ए

३ ॥ पितासमकृत्य ए ३ संगमालर्ह विवक्ष धं ॥ विलोक यत्न मामन्तु पुनरेव समताघन ॥ समतात्र मनोऽडस्य पुनगलङ्गछि मे ॥ सर्वाधिष्ठानि धिं ह्यागहा गाकृतमी

श्मितं ॥ ७ इति पित्रा समादिष्टं पुत्रा सनन्द नामृता ॥ पितरं गं समा लोकपुनस्वेय समताघन ॥ तात त्वं प्रथमं गावोलितहनादं नदस्व मे ॥ पश्चादहं कृतिष्यामि प्रतिक्ष

नं यथेप्सितं ॥ ७ इति मातृणादितं पुत्रा कनकाः सविनादयन् ॥ अालङ्गंसमा लोक पुनरेवं समादिशत् ॥ कृत त्वं प्रथमं पूर्वप्रतिक्षनं यथेप्सितं ॥ पश्चादहं कानि ।

स्वत्यूपहृ ३ इति ८२ एककर्मे ३

= स्वत्यूपहृ ३ कुएकैवकामे ३

श्री ग

लि॥ नलगर्गस्य पावाकुनि पया गुणलक्ष्मीः॥ ततः स तलमवान्दृष्ट्वा निपतनं यतात्मजं॥ हस्तनभिनिर्मिस्य स्नातमवं पुनरब्रवीत्॥ उत्तिष्ठ सम मा सर्वं प्रविशतु गवत्रिं॥
सन्दृष्टा नगवान्कृष्णो मा तवि ध्यानिब्रवीद्वचः॥ ततो गग नमस्कारो सम स्थाय दूताः कृत्तलि॥ नलगर्गमनानन्य नतलोकान्कमाधायत॥ ॥ कृत्तिश्रीमद्दूता
गर्भमालार्जिन लय दृ मानन्य पमाहनम थोगम यावतनगं॥ ॥ अथ नमः उत्तलुः सुहृत्, गस्थान गोमिन॥ ॥ ध्यानत सम्यनं नातसमान सर्वमब्रवीत्॥
म कृ मामल्वयापुर्ण्यं गह्ववासमयोर्जितं॥ एतद्दूत्र मरुत्प्रायेसंता॥ पेवनि पामय॥ वृद्धकरुणागमृतं यथेक्तात्तितमथ्य दवात्॥ निवमासमदुनुत्पार्थयत गदी ९४
स्थितं॥ कृत्तितलन समादिर्भूनिगमयश्रीम्वनः सुधीः॥ साश्वीलितं मुनिं नत्वा पुनरेवं न्यवदयत्॥ नेकवलम हं क्षितुं तुकं उत्तगच्छतो॥ सर्वमतत्क्षितं कर्तुं तं
वार्धिं प्राप्तुम तूहह॥ ततो गगन मृडं नृपशिशुनैकगां यथा॥ तेथा हंशीगाकैवसत्वाधिप्राप्तुमुत्सेह॥ यदीयं तगवेन्ना गापनिपूर्ण्यं गमग था॥ सीका धावत सर्वमत
संगगा त्वापि॥ सं पनलमयाय कृष्णो सर्वगृहा नलनिवाथ॥ समनलमयाहिश्चपर्णाहिः समनलं कृतापा॥ मकाजलप्रविश्यन्ना आमृतंवत्रमयवत्॥ गलक्षिनलेग

ऽपि सकृन्मेरुग्रासंनदथा॥ सर्वपान्निमिथा गच्छश्रीसिद्धाचलसमन्वितः॥ वनवेणानयगदथलिक्षनडुममनागतः॥ जम्बूद्वं पध्यं यपि सत्वाक्षे विमना भव्याः॥ वाक्षेविकुंस मत्वा
प्रलयपूर्वविवर्द्धिकाः॥ गनेवंवाहुतः सर्वलोकमुत्तवत्वगथा॥ तपनंतलमयाद्धजामकाहाना किलविनाः॥ समनंतलमयाहित्थंपंक्तिः समनंतकृताः॥ समंकृत्यपि
मत्वा दिशस्यनि मनूकृथा॥ तपुत्वा सामवनः पण्यनमुदितः साक्षत्लिमंत्रैः॥ नवलगर्भस्य पादाङ्गुष्ठ ऐलेवंनवदयतः॥ यदिम रगवना गसिद्धोरुहवपापूनः॥ ज्ञानवे
माननेनामस माधिक्षिनिलरयाहि॥ तलुध्रव गवानाक्षेवाकृत्या मांजगतिर्ज्ञितः॥ ऋषभ सासाम्नन् कृसमनेः पादनेनामव॥ गतध्वलगवान्दद्धनवलगर्भकृ ऋषभः॥
ऋतुलनिनर्लिंरस्राममकुर्ष्यवमाद्धिगता॥ साधुसाधु महाभागप्रक्षिसनंकृतं यथा॥ तथा सर्वसु सिद्धक्षेत्रावलमादसर्वथा॥ गतात्वं कृतपक्षात्र सर्वमत्वहि ना
धिकृतः॥ भगवन्नाववीनामसर्वाभि सत्वारवस्वहि॥ जगतांत्वं यंकलाककु पूर्वर्ष्या दिशि सन्मतः॥ आदिहस्तामनामाहि लोकवैतगविष्यसि॥ तत्वं भगवान्धर्मदगवर्जो
भूर्जातिवध॥ धर्मनाजाज गच्छकामनगात्तगविष्यसि॥ नवादिक्षमितिकुलालभगवंवोवतः स्वद्धा॥ सा ऊर्ध्वं तिन लगर्भेस्यन्यपताद्धनं वाभवत्॥ ऋषभकुलनगांदश्रम

दिवसर्षांदिरामगंगा नदीपालिकानमेंशुक्लपक्ष(?) मासरातःसमानिशुकृष्णोत्र्यातिकृपया (?)

श्री रा नीयेव बाधिमार्गनिवाऽयन्तु ॥ बाधिद्वयाद्वितस्कापयपालयम्स्वगच्छन्नाम् ॥ ततासंस्थयकालपांऽउपनिसाऽवाप्यसः ॥ नीलगन्धपुरासप्रीत्यांकथउर्गविषयामि ॥ सतत्वं

सकलान्नानांविनिर्गिसुऽजगच्छितानामसंघाधिप्राप्य सर्वहित्वंसर्वाऽविनायकः ॥ प्रणमविनऊः समुक्तयगो ॥ न्धश्चनातिधः ॥ सर्वविद्याधिपः श्रावकाकंगागतविद्य

सि ॥ वक्ष्मादिष्टमुनीन्द्रं ॥ सिंहगन्धः भरताक्रलिः ॥ नलगर्भस्यपावाकुन्यपगच्छिनतामृता ॥ ततः सरागवान्दृष्टासिंहगन्धंतमानतं ॥ ह सलगिनिमिस्सस्थास

मस्थधिवमादिगतः ॥ उद्धृश्वासनन्नदेवपूजितसत्त्वानयन्तंतवगतिवाणिहृ(?)विमानं ॥ क्षित्वाद्गुर्गभिरस्वलोगवस्थेनोस्सलनः ॥ मम सत्त्वं तत्कृविष्यामि ॥ तत

सोसिंहगन्धश्च समुत्थाय हरागाङ्गलिः ॥ नलगर्भमसानमयतलत्वेकाकमात्रयत ॥ ॥ अथ सिंधीसरक्रानकमालायामगऊसऊकमानस

पुरासविनगः हसंकृयगो ॥ न्धश्चननाजकथागतवाकल्पतं ॥ ॥ अथसमङनयुश्चद्वाम्वक्षः सपथाहितः ॥ अथसमर्पितनामकमानमेवसप्तवी ९८

तः ॥ त्वंवापिहनानांस्यमुनीन्द्रस्यपुराणगः ॥ यथापितलिगकत्रसंधार्थिंपार्थयाचना ॥ प्रोगितनेद्विजेन्द्रः समादिष्टमुनिगम्यमः ॥ अभिधाविहउत्थायनत्वा

व सर्वात्रीमत्खंड प्रभात दि(र्ने)कृत्से ३ ॥ ८ ॥ २ २ दीन पुरुष समाधिना समस्त सर्व पुरुषान् पश्यति ॥ अनिश्चितन माधिना व(न्म)त्मन् सुस्ते वा मे दर्दितं ॥ सर्वदेवै तर्हि काले वाद्युत्तरे दर्शि वि विदते तै पुष्पै मांसे च्युतं
दिव्ये पदे वीथे : सर्वाभिश्रान्तु तत्र भिर्य (?) भिरैवैद प्रभुमे म ॥ उत्थानका समाधि नाद उत्तरे सर्वे सर्वे यं ॥ भातिनिषु समाधिना प्रवत्स्यात्माविनष्टु मा मेन
सर्वदृष्टेर्वा च हंसी निमै: पच्छिम ॥ अत्तन समाधिनासृष्टि तस्तौन वृक्षेषु वीथि वनानि तानाम नअनुष्टानाम् दृश्यते तत्का पुरुषेन पश्ये मा: २ ॥ ८ ॥

गर्भस्यसमुद्भवाः ॥ पाताङ्गमाङ्गमत्तिर्नत्वा पुन: शक्तिरेव सव्रवीत् ॥ यावन्मनीन्द्र संक्षिप्य वृद्धकर्त्रवनन्तरं ॥ याधिवर्यावृगं क्ष्त्वा वनिष्यामि रुगक्रियां ॥ यावद्गमह
स्त्राणि वृद्धकजाति यान्यपि ॥ क्रियानि वाविशुद्धानि कंनिष्यामि समन्कतः ॥ पवित्रुद्धागये विहितं मेना या नृपति स्थिते ॥ याधिवृत्तेः समाकीर्णं वृद्धकर्तृतां
स्वदः ॥ याधिवर्यावि नन्त्राकं कृत्वा सर्वत्र तद्गतां ॥ पश्चसंवाधिमासाद्य तथैयं तडकक्रिनः ॥ समाधिस्थितः सहस्त्रेश्च दर्शनव्यूह पूर्वकैः ॥ वृद्धकर्तृ सर्वत्र सं पश्यं स
कलाङ्क्रियाता ॥ सर्ववार्वभिपिवृद्धानां पुत्राभर्थैः समन्कतः ॥ समाधिस्थादयः सर्वोजांवान पर्यय(थ)कया ॥ निर्मायि तगगा त्यूर्ध्व सर्वकजनवाय्यपि ॥ दर्शयित्वा सर्वाङ्गानि
कान पर्यय सत्यापिव ॥ दर्शयित्वा वसद्भर्म अवपर्य सेमन्कतः ॥ सर्वी स्तान्तानकी यांयश्रापय यंछिमातयां ॥ एवंगिर्य (?) सर्वक पुंग (?) सुद्रान्तसर्वापि ॥ गन्धर्वात्तन यक्षेषुता
ग(?)गरु(?)ड स्थापि ॥ किन्नन्यपि भीवंच तृ तास्त्र यक्तनस्थपि ॥ कटप्तूतनलावा(?)च सर्वजतुवनस्थपि ॥ एवं इष्ट मनुष्याश्च एवं अन्तपापनवादिषु ॥ गणिकासन्नृदृष्ट वनी
चकार्मपरक्रिय ॥ वणि क्रुपिलकाश्च केपि कर्मकानस्थपि ॥ एवमन्यय सन्ते सर्वेषु रतवाणिय ॥ यथा नृपात्सलवनसर्वत्रमेदर्शनात्सर्वे ॥ तथानृपाधिनिर्मा

उत्तमसमाधिना
सर्वेषु भवती केनचि
त्स्वभाव समता कवि
वितितरेण तैन कवि
समागमा पर्वे दर्शयं
म ३ ॥ ८ ॥

श्री मा

गदि क्षिप्र ता ४ ॥ मन्द्धु व प्र तिपूणा मतिव कुधिम नाणाया ५ ॥ नि ६ हूं गा विगमे र्थोश्च निर्मोत्सर्व विकानि ग ६ ॥ बाधि वर्षा दूना वानात वकु सग ता लसगा ७ ॥ कृ

तिसं प्रार्थ्यी शांतिं प्रथ कृमाना ठेप्र लास्व बो ॥ व कृतन्नो स मा वायव्रविक्षप वितायमि ॥ मगन्नीव कन्नी ठेप्रवन न्नो विहाय ला ॥ स कृ मे सर्व लाकं ष ल माधि

गम्भ प्रवन्तु ३ ॥ यद्यां प्रवृद्धिप्य षेत कृ मे गया निवर्भित ४ ॥ मयां नात्सर्य वि कादिवाया ५ सर्वैप्रनवित्ता ७ ॥ सर्वं सलां धंग कृ मे प्रवन संप्रवाधिमाया ॥ बाधि

वितृं मम त्वाय प्रवनू र्धांधिमृं वने ॥ एवं गी व कृन्नो वो मर्वो न त्वा न्हू तांग यान्तं ॥ कृत्वानि हूयगत्या प्र मिं धयलां तिष्ठतु ८ म प्रु ध ॥ सगाव मेल गवा हू ग न्नान

न्नगर्श्री न्नेनो ज्वव ९ ॥ अ मिधतं म हास त्वम मा लो कृ व मादि ता ॥ सा धम धं मन हाया हू थन्या भि स गा मा ल जु ९ ॥ अ निप्र (भा ति न लड प्रति धातं कृतं

त्वं या ॥ व कृ न त्ला सा थ्य नात्ना कृ मय थ न्वा या दि ता १ ॥ व न फ स्म वैं लोर्कं च हू भ ग मं धा कृ ना वि पि ॥ सर्वा न्ह त्वा श्रुति थाप्य वाधिमा र्थे स माहि कानू

॥ मूव सा स्व ग ग न्नो वं प्र वा ग ता ८ मूनू स्व व ॥ ग ना यि कृ तल प्र त्वम कं यानाम मे नामि ९ ॥ बाधि म त्वाम हा म त्वा हू व त्व स ग गार्थ हू ग ॥ ग हा वं लं

भगवद्गीता १०२

नं:

महाभाग बुद्धकृतं यत् पथि प्रियं ॥ सर्वसत्त्वहितं कर्तुं संबोधिं यदि वाञ्छसि ॥ बहुशादिक्षु मुनीन्द्र राजा ॥ ४ ॥ श्रुत्वा सुप्रसन्नं प्रसादितम् ॥ ४ ॥ तच्छ्रुत्वा मुनीन्द्रं तं नत्वैवं पुनरब्रवीत् ॥
कीदृशं भगवन् बुद्धक्षेत्रं वाञ्छसि मा हं कुर्वे ॥ यत्र सर्वे जना लोके सुखिनो गताः ॥ ५ ॥ समं ॥ अनुपमं स्थलं यावत् कण्टकं गर्भनाशनं ॥ दिव्यं नन्दनसमाकीर्णं सर्वसम्पानि कृता
पमं ॥ मद्बुद्धक्षेत्रं सर्वगुणान्वितं ॥ इच्छामि भगवन् ग्राम्यं बोधिसत्त्वसमाश्रयं ॥ तत्रैव न कश्चिदपि मत्सरी पापी नापि लोभिकः ॥ ६ ॥ कश्चिद् दर्पितो मद्यपः दुर्जनो मना
कुधी ॥ दुर्गतिश्चापि कस्यचिन्नैव स्याद् भवनेषु संसृतेः ॥ दिव्यपुष्पसमाकीर्णा सर्वकृत्सनमनोरथा ॥ न चापि तत्र सत्त्वानां अनाथाधिव्याधिर्भवेत् ॥ यत्र सन्तु विद्यमानाः
लमनवन्दनः ॥ जिनमनुस्मरन् तं कृत्वा पापं सत्क्षोभ समाहिताः ॥ सर्वेऽपि सत्कृताः या यत्र कश्चिद् दुर्गतिं व्रजेत् ॥ न च बुद्धे दर्शनेनापि कश्चिद्विना हितमर्त्यवत् ॥ सद्धर्मश्रवणेनापि
संघस्य सेवया दिव्या ॥ सर्वेऽपि सत्त्वाः श्रीमन्तः शुभाङ्गा नयानि ॥ ८ ॥ न गीतलयः सन्तु नवनामनिमित्तकं ॥ नैव मानावमानं स्यात् सत्त्वानां तत्र सर्वदा ॥ नापि कश्चिद्
दुर्बलो भवेत् सर्वदा दुर्भिक्षो जातः ॥ नैनीयाकुलमनसश्च सर्वसत्त्वा भवन्तु मानिनः ॥ सर्वेऽपि श्रावकाः सन्तु धर्मसामग्रीं भणिताः ॥ सर्वाभिसाधनाय कार्यत्वं सुविहानि

म्नातबुधेः ४

श्री श्री

ग॥ प्रादुर्भूतं च सत्त्वानां हस्तिस्कन्धमवलम्बनं॥ गन्धर्वं च कुम्भाण्डयक्षपतिश्चामितं॥ गन्धहस्ती समागच्छत्कान्तगतिर्मुनीश्वरः॥ द्विजपतिं तं समालोक्य पूजनार्थं समादिशत्॥ सा ध

सार्थं महासत्त्वः प्रतिश्रुत्य हृष्टमना यथा॥ तथास्थितास्ततः सर्वे तस्य शीघ्रं गताद्भुताः॥ ततस्तया सर्वसत्त्वाः स्तुत्वा कृताञ्जलिं विनताः॥ तथा सर्वे पि सत्त्वाश्च वन्दनमादाय कृताञ्जलिं॥ तं

नत्वैवं कृतपूजास्ते बोधिसत्त्वा महामतिः॥ गन्धहस्तिनि निरयान् तत्र शीघ्रमभ्रद्भिमान्॥ तथा तं रक्षायकान्त्या कीर्त्युद्भवः कान्तमतिर्निर्ययौ॥ सद्धर्मे न्ताहितं तं तत्र संबोधिमति

तासमं॥ संबुद्धाः तथागतांश्च सर्वधर्मनायो मुनीश्वरः॥ स्तुत्वा सर्वं यथा तथा गता तत्र विप्रोस्मि॥ तथा प्रादिशत् मुनीन्द्रं गन्धहस्तिः प्रसन्नबोधिकः॥ सा हृष्ट्वा निश्चलं मुनिं प्रणम्य | एकप्तेपिथते । १०६

स्पनेनेदं वन्द्य॥ यदीयं भगवन्नामापि पूर्यं ग मंगलं॥ बन्धकपुष्पवर्णानि निपतन्तु समन्ततः॥ तस्मात्समाप्तमनसा गन्धहस्तिर्जगद्गुरुः॥ ततः गत्वा

स्पर्शनात्कृत्य पतत्सौख्यं निर्मलं॥ तथा तेन यथा रक्षां गताः सर्वे तत्र गताः॥ बन्धकपुष्पवर्णानि निपतन्तु समन्ततः॥ गन्धहस्ती समागच्छत्कान्तगतिर्मुनीश्वरः॥ हल

नभिनतिसद्धर्मा समामनन्ते च समादिशत्॥ उत्तिष्ठ त्वं मत्संबोधिनं सर्वसत्त्वान्प्रत्याश्वयत॥ तथा दृष्ट्वा समुद्धृत्य छायापथ सर्वपापान्॥ तथा प्रादिशत् मुनीन्द्रं गन्धहस्तिः

सउत्थितः॥ साकृत्स्नं मुनिं तत्त्वात्तस्यैकाग्रमानसः॥ ॥इति श्रीमहज्ञानकमालायां हिमत्ज्यकुमारस्य गन्धर्वसिद्धिबोधिसत्त्वसुवर्णपुष्पनाम गाथा
गतव्याख्यानं॥ ॥अथ सर्वभूतगर्भसिद्धिं नामस्त्यालङ्कं॥ एकादशगं समासेन पुनर्नवमेतावतः॥ तं वाप्यन्ते मे सुरागेसुनतस्य प्रोवाच॥ वज्रकायं नरा
लोक्य धार्थीयस्वयं दीप्सितं॥ इत्यादि दुर्भिजेन्द्रसत्त्वो सिंहः सउत्थितः॥ नत्वा गर्भस्थ प्रस्तवं पार्थयत्सोऽञ्जलिर्मुदा॥ अनून भगवन्त्राताद्विघ्नेन कार्यं यथा॥ अग
द्विगमयाप्यवं प्राधिक्षेनं कृतेन   था॥ एवं मयदि सिद्धयगवद्धि कृताथा लभ॥ सम्यात्थीमां भगवानाथ रवान्याकर्तुमर्हसि॥ इति संप्रार्थ्य सिंहा थ सर्वेन्द्र मयं
धर्मं॥ गम्भुतक्षेमुनीन्द्राय नियाधिय मनसा॥ यदीयं भगवन्तो पनि पूर्यं गमनाथ॥ सर्वसत्त्वाः सम्यग्मिं हत्वा वनं सुबोधि वानिकां॥ सर्वपापनिमाघका स्तु
र्म विहानि नः॥ कदापि न निवर्त्य एवं बोधिसाधनाप्रमात्॥ एवं सगत्स्मास्याय सिंहः साञ्जलिर्मुदा॥ बजगर स्य पादाञ्ज न्यपप धाधि मानसः॥ सदा सर्वपि
गमत्वाः सम्बोधिज्ञानलालसाः॥ सर्वपापनि माघ कास्त्रसक्षेशविहानितः॥ नहद्वष्ट्वा समगद्धका रगवान्स मुनीश्वरः॥ हत्नान चाद्धिनः सत्त्वा सेमामसंभवमा

श्री रा

भिंद्य मत्पंना मम नामस्यैव मखवीर्य ॥ कुमुत पत्तया पूर्व गृह्य समर्पार्जितं ॥ मत्तर्वे वाधिशं प्राप्ते पतिंगम्य सर्वथा ॥ ऋषिवाक्यनदिगाडेषां समाधिर्दृष्टं निगम्य सः ॥ अतुल्यां
नाज्ञकुमानवंशाममृ समय मखवीत ॥ नालयं यान्न्यादिष्ट गया कर्तुं समक्तुः ॥ अतुल्यां मम मतीर्डे भर्ता सक्रा लिनव मखवीरा ॥ नकवलम त्वकृतैक्षि प्रमतो ऽस्थनः ॥ सर्वो
धिमहित्मना हृषिद्वा मिथ्रिअगरिमः ॥ यक्तेनताननका लाकाल्वियर्क्षमयामिकाभूपि ॥ तनोहं भोगमकृतं संवाधिंपाप्तुमत्तुहं ॥ यतविते हृवेद्धर्यमेवाह मिमेनानता ।
मत्त्यापता हि भ्रलौकधत्तु ध्मवर्जंगात्तया ॥ मत्ताहं भोगमकृतं सप्तावधिं प्राडुमत्तु हं ॥ ततमेनगवक्ष्य भूमामम्यादद्द्दमहीश ॥ अथ महामात्रयावाग्रजनानामयाचि
नः ॥ पुनःपश्य मुपक्षाप्यन स्वेदं प्रार्थयंनदा ॥ यदि मे भगवन्ना भीपति पूर्वं गतमर्वथा ॥ समाधिंदर्शन तूर्हं तो ह्यं गतेन वा वनः ॥ यनाहं तवदेश क्षः सर्वतिष्ठुकः ।
भूपि ॥ यन्नपुष्पप्र वर्षनं परमर्षयं नज्ञनामुदा ॥ ऋषिभावादिरा कृत नल गंशीन तामुनः ॥ सेमाधिंदर्शन दृष्ट पपदम्ना त्वयमरुथा ॥ सवैत्तं त्ववनश्वैव पंचसद्द्विंशव
हिंसा ॥ नहद्युसांऽलायानाज्ञकुमावाविंहिंगाजवत ॥ तहद्दामग्रगन्धामान्तंगर्भधसमादिगः ॥ अतुल्यं ततमहा मतं सेमावौद्धुमादिभारा ॥ साधुतममहमतडं ९७

प्रति ध्यानं च ॥ शाश्वतं ॥ त्वया परिस्मृतो गंध चछुक्कं कण्ठं गतुक्लमं ॥ समाधिदर्शनं वृहत् ॥ प्राप्तिलब्धस्त्वया गुरो ॥ न च व ज्ञायमानस्तु नरा ति वर्षिमान्यपि ॥ शङ्कर स्तु प्रगिता
न चैव संमतं स्वं गच्छति ॥ सर्वमानगं योगि तस्मात्समाधिं प्राप्य सिद्ध्यति ॥ एवमादिष्टे मुनीन्द्रैश्च सांप्रतं संप्रमादितः ॥ प्राञ्जलिर्नत्वा गर्भं गतं मुनिनश्चैव मध्यवीरः ॥ यदि
मत्तगवन्नाग पत्नि पूर्ण तमर्वथा ॥ तदा गतमनाः सर्वं सिद्धं तु गमनं गतः ॥ तथैव गगनं किंचित्प्रवर्तते समन्ततः ॥ एवमुक्ते गणनाथ प्राप्य पार्श्वं नागः गताः ॥
तु दृष्ट्वा तपो वांश्च सोनलगश्च मुनीश्वरः ॥ अथ योगीन्द्रमाला वः पुनरेवमुपादिशत् ॥ कुमार तन्मां गतोऽसौ यथा दृष्ट्वा तं त्वया दृष्टः ॥ तथा शुभगतं सर्वसिद्धिं गन्तुमनाः त्व
जेः ॥ ततः दिक्कृतपञ्चत्वं गमनं मुक्ताहितश्च स्वदीः ॥ बाधितश्च सो मता तत्त्वा तव स्वर्गी सर्वसिद्धिमान् ॥ यथा कृतसमय प्राप्य पूर्वं यास्यति गमनं ॥ ततः प्रभृति यासौ तव काउ
लव रविध्यति ॥ तं तु संबोधिमाला सुप्रभा सुन्नाहितः स्वमाज्ञितः ॥ समत्व ... ॥ रविश्यसि ॥ रविविन्ध्य महाप्रभ माला सा विकावाधिवानि ॥ अथ ...
प्रमाणं तत् रवि ध्यातिनि सो कृत्वा ॥ सम्मति गता सर्वप्रणिधानं यथोक्तं ॥ एवमिति विहाय समाधिर्वयावधे तं गच्छति ॥ एवमादिष्टे मुनीन्द्रैः ॥ समकुमारः ब्रह्मा ...

[illegible]

जा. अन्यजसगणेयन्येषु प्रमत्तं नैव गच्छत ॥ यंच क्षाथ सगणाः सर्वतो घन ममम सहधान् ॥ भूयः सूर्यंय सर्वदा रायपूर्वाधिलाषिन ॥ कालं हत्वा गगन्धत्वा नाना कृष्ण ममारु
म ॥ सर्वेषां विमला सानाराद्वयपूर्वाधिवाविशः ॥ यत्वापि नाम धेयं मे कृत्वा कुर्युः सदा स्फुटं ॥ मं सर्वापि मम म क्रोशं श्रीकांक्ष यः सम कुर्वं ॥ मयांम नेत्र कालो दे शकास यं गम (
निवा ॥ सुक्रमदेशानां कृत्वा कथयं प्रवाधपत्र ॥ गलविलप्रसादन गपायदुष्कव भास्विमा ॥ निश्चिका रचं समाधिं बलगं सूर्य मंगास्तहं ॥ मगमं ज्ञान मनेन्द्र कुम
क्रू स्समुपागता ॥ निश्चक्रो भो विमला साना राद्वयपूर्वाधि वाविशः ॥ यव संसानना गोन्धा मम स्पष्टं तौ प्रसादि गा ॥ मपाश्रुं सम यन्न को किश्च यतासयन्नून ॥ ९१
गगम भो ममा लोकमू धातु मध्य मदेशानों ॥ शद्व्या यंन दंगत्वा रुजयुः माद्वने मृत ॥ ककं कथा पुनः किल्वा मगत्सहं प्र साम यन्न ॥ सद्धर्म सम्पादि यथे देशंयं म
मानयं ॥ गतक थर्म माकर्ष मम सर्वप्रसादि गा ॥ काल दर्हं समंतल सनियुः श्री गतालयं ॥ सूर्यप्रदीप मोसाघ समाधिं मा हृदं ॥ ममाजं समाग यप वनपूर्वा
वि संवनं ॥ सर्व संस्थान दं सर्वस्थि थातुक निवासिनः ॥ थांथ यिन्त्वा प्रयत्न नं आपयं यंऊि नालयं ॥ पंचानन्त र्यापि स्तन्म सद्धर्म निन्दकानपि ॥ आर्यापवादिनस्त्सा

= अस लमा भिना ९ ५

सर्व्वार्थं समुत्सृह॥ यथागतस्वाभिक्षनं समं प्रतिश्रकृञ्जगद्गुणा॥ कथमहं बोधिमिच्छामि त्वावान्नप्रसीदतु॥ श्रुणितनादितं गुत्वान त्वगर्भ ६ समर्व्वविद्॥ अंगगंतं म हासत्वं म
मात्वाश्रुवमादिगतं॥ साधुसाधु महासत्व एभिरतैनतसमीहितं॥ कथा सर्व्वप्रमित्रकुच्छ्रितं त्वमीदक्षगच्छिथ॥ श्रुणितन मुनीश्वेरं समादिष्टं निगम्यस॥ अथ कुमलं अंगनाथ
स्यास्ति जिनवसभवीत॥ यथैव सर्वनाथापनिपूर्यते समयादि॥ वर्द्धते वान्दनेभूपूर्व सर्वजदृगादिक्ष्वापि॥ पथ्वं मतलाकृतमाद मात्राय श्रीगिमाप्रयुद्॥ त सर्वविमलात्वा
नात्वचतु बोधिवानिशा॥ अतस्तं माधिमाप्रयांग श्रीतेप्रतिमलमां॥ यत्वयमव पठाथयं सर्व्वजुवनक्षपि॥ श्रुमुख क्षान्तसमहासत्वाल्पात्मसा २ अं अंमहा॥ नलग हैरव
मारडे पुवनामन कुमाकृ ल्लिधो फवान्त तं समाधिंत प्रशीमप्रभृतिमात्मनो॥ यत्वयमव सर्व्वजपाडाश्रीत्वीगताल्तयान्॥ सर्वैजवान्दनं वर्षं पयाकदगदिक्ष्वापि॥ पाडा
कुश प्राकृतीलगा ६ सर्व्वमुखाल्कमंगजं॥ मगा ६ सनक्त्वेगत्ततमक्षजमाति लोकयन्॥ हत्वेन भिनस्ति स्फुटस्वा समतथा येवमादिजत॥ अभिजीवीपुं महानागगन्धवृष्टि
३ प्रवर्षितां ६॥ सर्व्वसत्वार्थसंबोधिविक्रुपापात्वचनक्षपि॥ तन्नाहि कृतपूजत्वंमितं गत्वाजिनात्मजं ६॥ बोधिसत्वा महासत्वा तवस्वधर्मतानाथि ६॥ सर्वसत्वान्वि

आ नोमिमं ॥ नद गोकृ गत्वा नर्क न धर्म लोन वंक्रविहृ ॥ विसंवादननबांव गोन्द पग कासव्न ॥ यावत्तंवाधि पर्यकंति नत्त स्मन ८ रामता ॥ अति नति मक्षा त्वाहतं पुगं स्वा
स्ना मम ॥ मरावि नहि नापि स्यात्तं वद्धृ द्गौभनन्दा ॥ मद्धर्मे त्रिव ८ ॥ नापि सं पापस्के नवर्यया ॥ संसारं संस्रनं श्वादेम गुरु सर्वे ज्ञनम ॥ ७ ॥ एव आदेवनमानस्य सदैवं ५ ॥ ९
विध्याति ॥ ८ ॥ निःकृ श्रिपि विशुद्ध त्वा वउर्द्ध कृ विहानिक ॥ ५ ॥ सद्धर्म दायक ६ ॥ स्त मतवयं प्रीतता नवान्न ॥ नम वा पद्धि मं गाम मापपर्यक पावन ॥ नापि थ्या नम
कुविपाहि र्लीतयं यं पर्वाश्वन ॥ नवा न्यानृव मर्दयं पाङ्कि व्यनपवादिन ॥ ३ ॥ नमिथ्याधर्मम द्दि गध सायधु यंथनादिकं ॥ ४ ॥ एन्यमा प्रतिमं यकं म द्धर्म सुङ्कि साध १०१
नं ॥ माकृ श्रीमाय सर्वज्ञदगाययं मतात्रिणं ॥ ५ ॥ कृत्वाल मनतना दं माक्र श्रीमस्सम वंकश्रानदर्नोद गींधर्म दगायं मतामिमं ॥ नवतन्तु विका वत्न नवं माकृ प
वाहृना ॥ न व विश्रि फ न कवं दगायर्यं सहायिनं ॥ निश्चे वाहं मसायान्न प्रतिक मानो मश्री म गां ॥ ५ ॥ सं ह्रांस मत्ताय एवं यां धर्म मास्वान ॥ ५ ॥ मद्धर्मता धकं निःसं
सकृ र्वाञ्छ यामसा ॥ स्वद ह्रोविगनापि सवयय मपेह्नित ॥ ४ ॥ नकृ र्वापनकाल दंपाशापाधिवान र्भा ॥ श्रपिद यामर्थार्थि एव सर्वस्वापि गत्थ मितं ॥ नमं

त्वं कर्मणां नापि मात्सर्यं हृषितं मनः ॥ स्वच्छन्दश्री विविधं दत्वा सत्वान्यनुग्रहमानवः ॥ सर्वीर्यार्थि [illegible] ॥ सर्वान्सत्वांश्च कृपाविमानः ॥ [illegible] मनसा ॥ पिपा

तयर्यंविभावयन् ॥ एवं कृत्वा लिङ्गिनं वापि गच्छन्नस्कलिंगिनं च वा ॥ इच्छानां पच्यनापध्या वा दययं कपायन ॥ निमुं वला [illegible] सत्वान् [illegible] विमगेस्तुं वन ॥

तावर्यं विषयां सत्यक्षान्तवयं विजितेन्द्रियः ॥ मत्तामं वाधिवर्याम् सर्वान्सत्वान्श्रवाधयन् ॥ तिसृषु पालयन्नव वनं संपोगाग्रं मं ॥ एगं कृतगवन्त [illegible]

मानं दत्तं मया ॥ यमेकसुदि भानमं मम न्यश्च यूक्तथा रवेन ॥ कच्चतां कनां सामवज्ञानत्वा मनोलिकाः ॥ पादूर्त वकुतर्या [illegible] मनानिकाः ॥ [illegible]

[illegible] व गनेव मर्मिं पन मवृद्धिना ॥ [illegible] विक्तिमवकुनत्वा पुरा स्वनो ॥ [illegible] सत्सर्माभि धीविसयान्भिः ॥ [illegible] लिकं मं निं नत्वा प्र

ननं वृत [illegible] ॥ यदिसतगवन्ता भा पश्चि वर्य तं सर्व था ॥ [illegible] शक्कंतु वकृनला भमम ॥ न [illegible] नागच्छोमभा यान येतुवं ॥ व [illegible]

वि सर्वा [illegible] सना ना [illegible] तिम ॥ नोक [illegible] सर्वपूप्रवनमीमहत्वने ॥ सकृमंमसदया [illegible] वानयत्कुसमकाग ॥ [illegible] आविना सर्व [illegible] द

[illegible]

श्री उ

लक्ष्मुतमामवंश्रुवमादिगणः॥स्त्रधस्रांधमहातगमहामनीतितन्मगितिः॥अद्रक्रतंजगद्वूर्वन्स्वमाण्दंउमिष्यामि॥तवत्वंमन्मत्प्राह्रुःबाधितेतांविणुष्ठधीः॥अकाष्ठाना
मसर्वार्थविणानवाविवक्रमः॥ततांसंस्थयकत्वान्न्पूर्वस्यांदिशिगमवना॥श्रुतिर्नामनिर्गिरिव्याग्नाकमष्टुर्यविष्यति॥मर्यमवंउमहिद्रंस्वात्ववनिश्वर्तंकृतंयथा
॥कर्थत्वमकृर्मांबाधिंकाय्यवद्वारविष्यति॥श्रुकोस्यज्ञवनामत्वंधर्मनाशामहात्मनः॥तर्वज्ञानगवाद्रुमनाणअगणातविष्यति॥कश्चादिदेशसुनीन्द्रणनन्तराय्रंर्ग
तत्सत॥श्रुकोरवंमउत्तनात्मापुनेरयमकाधतः॥यदायंतगवन्नाशपतिपूर्यणमतथा॥तवउसर्वामहनन्मामवर्गुलान्निसन्नितः॥सर्वंमत्वांसत्पवाद्याधर्मत
विलश्रुतांगयाः॥सुशीलाविमलात्मानातवन्धाधिवानितः॥कुत्रकामसमपाक्रामस्याबाधिमत्वःउमादितः॥नत्वगहस्यपापाकुपुत्रनामस्रकाज्ञतिः॥
अभीलस्यतघामर्वप्रतिवेत्रंस्तगंथ्यः॥महीतवारतवर्यतानम्यासमरातालवतः॥सर्वंसत्वाःसत्वाश्चाधर्मजविलाःउतमायाः॥सशीलाविमलात्मानावेतवु
वाधिवानितः॥ततःसतगवान्दहाधनमक्रायंमतमाति॥दक्षनाभिनाभित्स्वद्वासमामसुवमादिगणः॥उदितंउसमत्रक्रोतेतिप्रयागतमत्तमीतितांतविष्यतिर्म १०३

गच्छस्तात्तस्पुरीं द्रष्टुमागंतव ॥ ४९ ॥ ब्रह्मादिदेवं सुनीश्च ७०॥ त्वा ॥ श्री मंघ धर्मउक्तिमा ॥ माऊ ऽत्तिस्तं मुनिं नत्वा तत्र वैकान्तमाश्रयत् ॥ ॥ इतिश्री मद्रुक्मांगद माला

यामाभिधनाम्नी नागप्रभूताख्यानोद्गमयागमव्याकानं ॥ ॥ अथ समद्धुन गश्चवादृ ५३ संत्नपालतं ॥ द्वा गतं हि नर्थिनामससामसौख्य मादि शत ॥ हि

मालयस्मातामीगत्वं वासयस्तद् वाश्रमं ॥ पुनस्तत्रार्थयसर्वं न ह्यकृतं यथा मिलिता ॥ ५५ ॥ ब्रह्मादि दृष्टिगोप्रद्युत्तिगम्यानेन पालसां ॥ ममसूत्थाय स्वर्गोडनांग वत्वा स

मपाश्रयेत ॥ गतस्ताहिमवति श्रीत्वा समाधिनिहिताशय ॥ प्रतिक्षत्तं तथा कामी दर्शी च्यनयथा कृतं ॥ तदा सत्य वान्मत्वाश्रितिर्देवैनेहर्षंगेयथा ॥ हिमवति नाकुमाव

शर्मेन शुद्धात्मना सदा ॥ हिमवति मने माल्म हं क्रुमानं तमिपालसां ॥ विलोकयन्नमामसुपद्मप्रवंसमादि शत ॥ साधुना धर्मतोयागप्रतिक्षतं कृतं यथा ॥ तथा सर्वं

शिद्धान्तस्य पुरीं द्रष्टुमंगव नं ॥ ५८ ॥ पश्चात् दिनं तु त्वा हिमालये सप्रबाधितः ॥ माऊ ऽत्तिस्तं मुनिं नत्वा पुनः प्रवर्णयं वदयत् ॥ वद्धुर्धीन मनस्कानं सर्वं तत्वात्तदन्तरपि

॥ प्राप्तवितु सर्वंसा हत्तक्षुकृतं नवं वर्त्त ॥ गजं यंवद्धुर्द रस्वयवत्तपतिता ॥ मितं ॥ यथा गता दिशः सर्वं सत्त्वाश्रमादिनः ॥ वद्धुस्यति मनस्कानं तत्प्राप्तवान् गङ्गा

संक्रमसमितसाधनं ॥ -------------------- ॥ स ---------- २

श्री ग॰ गणव्याकरणं ॥ ॥ अथ समस्ततन्त्र ॥ ४ सूत्रचतुर्थं न्यासः ॥ सूत्रं ॥ अनंगधामनिदं च मनन मामस्ते वसवनी ॥ त्वं व्यापदं कृमानात्र वृद्धकृत यत्यप्रिये ॥ संवृत्तमदन
स्याद्य प्रार्थय स्वजगत्कुना ॥ १ ॥ वृत्तिमनवादिनं गत्वा सानंगः [illegible] पालस ग २ ॥ सा अथ निर्जनं गत्वा येन स्वैव प्रार्थयन्मृग ॥ यथा मन्त्र प्रियानं न प्रतिक्षस्य गच्छति ॥ वृद्धकृ
तसमाप्तिस्य समन्वाधि प्राप्तुमिच्छतं ॥ तथा तु मपि समन्वाधिवृद्धकृतं गच्छति ॥ यात्तुमिच्छामि सर्वकृतं तदनं भ प्रसीदतु ॥ वृत्तिमन्वार्थितां गत्वा नन्लगत सर्वविद् ॥ मनं
गतं कृमानैर्गं समाला वृत्त मादिशत् ॥ सार्धं सावमनं सत्त्व प्रतिक्षनं मदनत्व ॥ मथाभिताधिनं सर्वं कथ्य सर्वप्रसन्नत्यभिप्रा ॥ [illegible] भावकामप्रतीनिर्णिविप्र [illegible] ॥ श्री
भिन्नत्वामतामस्वत्रिनातलजाग विष्यसि ॥ संमानं सं मनन्याधिव यांचन गच्छति ॥ [illegible] र्विनिर्दिष्टवृद्धकार्यं कोनिष्यति ॥ विन कालानं यापपूर्वसादि
भिलम्बेन ॥ वृत्तम् २ निमित्तानामतां कमेतु तं विष्यति ॥ मस्नित्वं सोगतं कृतं सम्वाधि मति तासमं ॥ वृद्धसमनकमंडा [illegible] भगवानविष्यति ॥ त्वयाऽगच्छता
र्थं प्रतिक्षनं कृतं यथा ॥ तथा सर्वममकृगनीर्वर्धं प्रसन्नास्तर्व ॥ यथा तन्मनीड्ड नलगर्षं मार्थिना ॥ [illegible] नसम्वाधि [illegible] पालस ग ३ ॥ ग ९४

= सुगडांगदु० स्थितना ४

नकाणसमाइन्नाऽ साधुकाव मङ्गुर्मेदा॥ दिवावन्दनहूष्टि श्वनिमयाणविडायमऽ॥ अथवाकञ्जसानासावनेंगधऽ प्रभादिमऽ॥ नलगर्भमनीऽत्ते कंप्रवत्वेवमकाघन॥ यदिभू
लगवन्नाभापनिमुर्यंगसर्वमा॥ मवेंत्रेधातुकालाकादिव्यगन्धतत्त्वपानवत्॥ जिघुययैवनंगन्धंगपाहुऽ रवानिसर्वथा॥ कायवाक्षिहृगाणानिप्रणमस्यधतमेकनऽ॥ सर्व
सत्वाश्वतज्ञन्वधीनत्यविमलागयाऽ॥ सम्याधिसम्वनीयकारवयुर्वधिगमिनऽ॥ अत्रकामपविष्ठकदपहावनावअपानतऽ॥ नलगर्भस्यमाधाकुंप्रवनामकता
कृलिऽ॥ नकारशदिव्यगन्धनतेधातुत्त्वनान्यपि॥ प्रमाणामिप्रवानंधपनिस्फुटान्यलवत्॥ नङ्गर्भप्राणिनायपिसमोप्रायप्रमादिनाऽ॥ मेवनीनामुआसन्नि
ऽक्षऽमऽसत्तरवान्विताऽ॥ ततऽसुनगवाञ्जुभस्नानतगणीविलोकनं॥ हस्तनेपीनमिस्याद्यासमामनोवमादिगत॥ उत्क्षिप्तस्तणगान्धेऽस्फुघकेलोकमानवऽ॥
सर्वेपिनीनजाऽमस्तालवन्निसत्तरवान्विताऽ॥ वङ्गमादिरंमनीतेऽ वाञ्जत्वामानेंगरऽआमृता॥ उत्क्षेयतंजिनेननत्वानतस्तैवाकमाणयत॥ ॥ वक्तिगीमहत
आनवामालायामनञ्ज्वेकूमानसवेजञ्जकवुह्यवराणपीवाविलत्वसमकलङनामकधर्मोऽव्याकनणं॥ ॥अथसमकुञ्जनवतं‌पंचमंनुपर्णऽमता॥ धे

श्री धर्मोक्तृ मयूर्ध्व तूर्णमादिता ॥ मनदर्शनिमात्त धपनिवर्द्ध्य यत्नात्मना ॥ कसर्वविमला ॥ तुम्रसमान्यप्रतिगुरु ॥ स्वकायशीविनवाविनिर्विकार्थिका ॥ सुनिः स्वकृत ॥ कार्तिगण्य
क ॥ धमनावलवे गानघमंय ॥ शा ॥ तुद्वन्द्विया लवयस्मतवा ॥ धर्मविवर्तिका ॥ मेवेमक्षान्वनकृकाधायवीवनात्तृगा ॥ समाधिंसूविन कामृतलस्ययुक्ते मत्यानिगा ॥ ग
वैकलापिसलस्यनलवर्द्धवकृछवता ॥ न्यायकृजयलयन्मशीलवयूर्ध्वनमाधिता ॥ स्वयंशा अत्तुनाकमान्वयमवलसमात्रये ॥ स्ववायु अत्तुनाप्रुयन्तिप्रमवशीवामानम ॥ ९८
सत्रमशीगमनकृतसर्वमलंपुगंकता ॥ विनाशमधिमहानलाप्रोतुर्लवयनुकृमा ॥ मस्वताफनिसंस्तुस्वमूर्व्ययवस्सर्वत्तुरवता ॥ यत्वयूर्यविंगनलगर्भाकृगण्यनर्य
कुशन ॥ स्वकर्मपूर्यवेसंलेलंगनिःपापयुता गया ॥ मज्जयुत्रीमन्यधान्ननयनाय कमवन ॥ सदानसीगमकृतपुवसागाता ॥ पुताणयो ॥ समन्नकृत्रर्ममोकर्मव
नयुशीगभांविधि ॥ समाविनेतिलावृत्ददर्शनेनसमनुता ॥ तद्धर्मगवरलनसुसंघापकानवर्षया ॥ मत्तमसीगमकृतंनेक ॥ पवकयानिका ॥ पुष्प्रकयानिका
मेकासर्वस्यवृद्धयानिका ॥ एवंमसीगमंकृतंमहकृनपवलत्विनं ॥ सर्वकृताधिकोदानयथस्मृतानिर्गलवर्ण ॥ सर्वमलेश्वदरयनसुगामेमंयनिस्फुटं ॥

नेकाधिकृ विगमकत्र सर्वदिय्यसत्वाशिन॥ नावदहंवचिय्यामिवाधिवर्याजगाद्धिग॥ यावन्त्रेवविधंसिद्धंवकृकृतंगतानम॥ ततः पश्चाद हंतत्रवकृकत समितिद्धिग॥
सम्बाधिंप्राप्यसंवद्धीतवयंतिजगाद्धिग॥ वाधिप्राफस्यम गान्कुनप्रमाध॥ प्रतलवग॥ लन्नधातंहत॥ काय॥ संड्रपधनसम ताक॥ पश्चयर्यंव मांसत्वाम सर्वविमला
उयाप॥ नि॥ ता गानिर्मलात्माना लवयूवीधिलागिन॥ समाधिधानतीक्षिप्रापतिलत्तोविवक॥ वाधिसत्वामतात्तिह्य लवयनविवर्द्धिन॥ पश्चयतीनकीयानांम
पिसर्वविकल्पसाप॥ पविशुद्धजिकायार्थेलवय॥ सरवलागिन॥ ततश्चसत्वामम कृत्प्रमाआना॥ सत्वाशिन॥ वाधिवंयीवनमीम लवयनविवर्द्धिन॥ पश्चयपुष्
मिकाप॥ यत्रमांसे सर्वविकिन्वि॥ घाप्मनि॥ गा॥ विमलात्माना लवयूदिव्यलागिन॥ ततश्चसत्वावमकृत्प्रमाआना॥ सत्वान्विता॥ वाधिवयीनाप॥ सर्वलवयस्तेवि
वर्द्धिन॥ पश्चयर्यंवणिर्य हमांसम सर्वविकल्पसाप॥ नि॥ ता ॥ विमलात्माना लवयू॥ मेसत्वान्विता॥ ततश्चसत्वावमकृत्प्रमाआना॥ शुताभयाप॥ वाधि
वृतवना॥ सिद्धा लवयूवीधिलागिन॥ तवाश्चपिमथान्यपि पश्चयर्यंवमांसत॥ नपिसर्वमलमत्वालवयूवीधिमगिन॥ प्रमाणप्रतामसत्वान्मुक्षप्रमानकें॥

श्री ॥ ॥ तदादेशमहत्त्वाभिरूपी पर्नी मृगाविनौ ॥ समस्थयमूनीन्द्रं संप्रणत्सेव सत्तामिन ॥ स्वयं सर्वैज गल्लाथ तव्रतं भूतर्णं भक्तिताध ॥ तम संन्यमयाबाध्वव
सान्ध्याकर्तुं महीति ॥ स्वजायं संगच्छ नीला न्नूसमकालड न्पाक्तविनु ॥ विशुद्धसोमसकृत्वाविंशाप्यविना नवता ॥ जर्नवाहित्व यंसवर्द्ध पयधूमसंगमाते ॥ कुमाराथा नुमिना
थत्सर्वांध पूर्वाभिवाञ्जगद्धिगता ॥ सर्वजनड्ता क्रन्याजितामान नरीनापि ॥ श्रीदेवाबाधिमामाथ्यवद्मसतगतो प्रपि ॥ कृतिंशे प्राथितातवे नव्यगर्ते समर्दविद
सर्वाक्रान्समूपामस्तुसमालाधंद्वमादि गतु ॥ यदास्मनक तडायंयद्धावा विमवापश्यति ॥ ततासर्वपिदूयंतत्तीमक लाकाश्चतुष ॥ बद्धक्रजयपद्ध मर्वा धिंशाप्य
रुत्ताद्धिगं ॥ गंसकान्वादिनन्यासहार्मधायमातविद्यथ ॥ सर्वतांदगकल्यायपुप्रमार्वधातविद्यति ॥ समकालाक्षिति श्रावितमकालंवनिर्दमा ॥ श्रेयादि हु
स्तीत्वलमर्थसाकूलथामृतो ॥ रंभग्राविसहभ्रातपरेसर्कमनीश्वरौ ॥ गतक्रास्तुतानासर्वाजत्यगलौविलोकयन ॥ भिनसप्तपातिशास्नूस्वसमार्गश्रुवमा
दिगतु ॥ उद्धिष्टतमसेतोतागोमत्तानयमजगद्दवाता ॥ कृतनगमर्वगाहडं तविद्यथमनीश्वराय ॥ कृष्णादंयमूनीन्द्र यथो ॥ त्वासर्वपिमसवाजाग मातेनमालाय
ॐ महतैलका नीका वडात मेह लख्यानकडरेभ्याः योवा रेभ्योरं महतं महानीश्वरं योमा नामा रमयन्तसह स्वउवमनयोर्वेश्वर राजनामा ॥ भयरं सहतं प्रहीनमनयोश्वर राजनामा ८
भयरं महतं किमल योपते नेश्वर राजनामा पभवर पंचपडाह ऊकामा चैत्र नसूर्यपोपनामाभिवि ध्यति २ ॥ छ ॥ १००

गतश्चैकान्तमाश्रयत् ॥ ॥ ॐ मितीमहज्ञानकमालायां दंगकृपीदं प्रविसहस्रगण्थगत व्याकरणं ॥ ॥ अथ मनुतमः ॥
मु.७७ संयुताहितः ७ ॥ ॥ अथ मिंधारय्यं स मामस्तु दानमवमब्रवीत् ॥ त्वं चापि स मानासु संवकृ सच ५ ॥ ॥ भाधनु ॥ वाधिवि कृ
समस्ताप्रणार्थं यो योगतं यदं ॥ श्रुतिकानद्विगज्ज्वस्य समादि दधुनि गम्यतः ॥ अधिं धानवमाना हृष्ठपत्रामुदामसं स्थितो गतो ॥ बोध्य लिखत मत्पाणि सुनल गर्तस्य मकुना ॥
मानाकृत्य गणिं कृत्वा समाली बद्ध्वमब्रवीत् ॥ भगवन् कवणा गुरुं वाधिवि कृत्य गतिहृत ॥ उत्पादयामि गहनस्य क्लेवानेभरवमकुनयो ॥ वाधिवर्या वा नियामि ते द्वैयालव
दाहृया ॥ नवकुसुगताः सर्वे तानि लगात्र ते ममम ॥ यावज्ज्ञानं तनां वाधिमति संतान्यु ध्यात्मना ॥ अप्राकर्णनं नम विदं माविदः १५६ कपावल ॥ मयाद्वप्रतिहृष्टयो
दक्षा यावि वि ययेः क्वचित् ॥ यथां वादीत्तथा कानी काहयं यं परीक्ष्यन ॥ नमज्जवकयानेव समत्व यगमानसं ॥ प्रश्रकाव कृत्यानपि नात्व यगकयोचन ॥ नकामनाय
विकृत्व नम्यानमि कृत्वाद्रियं ॥ न मया लोककृवां वत्स्यं नव योक्तस्य मादितां ॥ विविकितां कृतं नेव स्यात्कराविनिर्णानमम ॥ नापि मात्स्यर्यकोपार्द्धनयाथ मति

श्री   श्री

पुन ॥ २ ॥ गुणगाना ॥ स गुणधर्मध्वन य ॥ ५ तं प्रमादि ना ॥ ३ ॥ नरकयोग कियाम ॥ ग्राम्य य ॥ ५ ॥ कृ गला पुत्रा ॥ ६ ॥ निर्मल ज्ञान व सं वाना तदे [illegible] पुण्यवानि तां ॥ ७ ॥ जातम माकुमार मापि श्र ह्य या स त

मन्तरं ॥ ८ ॥ गत्वा सापि ने कस्य तत्त्व स्थापित वं ज्ञानि न ॥ ९ ॥ ३ का न कोन रत्नं संपन्ना ॥ १० ॥ तर्व पि वीपपा ह्कृता ॥ ११ ॥ नि ॥ श्री गौतम नाम्नो ना तद य वोधि वाि नां ॥ १२ ॥ समना वान य ॥ ॥ कर्म

॥ कामिनर स्वर्ग तमी न ॥ १३ ॥ ग्रनि स्थान्त कपु न्यन्तं संतानार्मिनिनि ध्यानं ॥ ॥ तद्गुण ह प्रव ॥ ११ ॥ कृ त सर्वर्वमाणि वोधि गा ॥ १४ ॥ स्वर्णनी व भाधिं म तत्रय ॥ ४ ॥ कर्मसादि ना ॥ ६ ॥ जितत

मार्थि लिना ॥ ७ ॥ सर्व गुणमा वरा मिलान ॥ ग मनी ना नीरा मा ध्यमान्सर्वा न्त ॥ प्रार्थना तन्त ॥ वाना यसं हि ते ॥ ४ ॥ र्वनिर्श्च न्न नत राप्ता वि ना ॥ जिन्तन्त्य ॥ ५ ॥ तं वीतं कि ग ह ज व वि निश्च

न य ॥ वाधि द्व ज्ञानता मीना मुद्गुरु नाथह ता ॥ ७ ॥ ग्रनुत्त वाणि वीवाधि या पव वर्ग वर्यानि ॥ वाधि प्रापक समकाया स्वतादि व्या ॥ ५ ॥ मगृहत्वा ॥ ता नस्य नी ज्ञातत्व द मी य

पू ॥ ५ ॥ समन्त्रा ॥ १ ॥ द्वार त्वन ७ सर्वाधि वुद्ध क्रमाधि पूजयन ॥ ग्रार्य त पुंस मानत द गायपं त ग्राधि ॥ ५ ॥ ग ॥ पूर्ण ग्रगर्भ सर्व मे स्थानिनानि ने ॥ ८ ॥ प ॥ पय सी मम का ॥

धर्मविक प्रवर्त्तक ॥ यत्रो नमो ग ज धर्म वि ग जिनं भाया तव ॥ ॥ ज मदं जौन मा ज न तव यथ्म प्र वाधिना ॥ ४ ॥ मे मय आव काली का ॥ ४ ॥ श्री ॥ त यूर्नाम वर्दि कं ॥ मर्व ॥ ई ना   १०४

सार्द्ध से महा
...ई से ५

तवयुक्तं विमाकथमन नाशिन॥ पुष्पकं यानिकार्यं मे भूपूर्वानिवर्द्धकं॥ पुष्पकांवाधिमामाप्यवृजयुक्तं तन्निवृत्तिं॥ यमता यानिकाधर्मपुष्पवृत्तिकागता॥ समाधि
मानवीपाका तद्वयुक्तं विवर्द्धिका॥ ममगाववकामं पवस्या दत्तं त्वया पुष्प मयक॥ पुरा॥ ध्यानानमत्कानि निरुप्य विविधिगंदिं यच॥ यदाग विपादानां त्वं रथ्यं य प
थिवीमत्त॥ तपुष्कराणि पद्मानि पाद्यवयं समकाग॥ तानि पद्मानि पुष्पमवकुरुत यमर्चक॥ गन्धमनामव कृत्वा निश्चयन यम पूत्रक्रमा॥ ममगतवो किं नि धर्मं उत्वा
मसंगुमादि नाथ॥ म तर्व क्रम मत्कृत पार्थयय पुराणार्थिन॥ कृतमर्वपितरं कृत्वा कृतानि वकुन्यपि॥ तत्र श्रुत्वा मम कृतमर्थयं पुण्यमन्विताः॥ मतर्व विदिता
स्नान॥ सर्व भूतम नास्तकं॥ अनिशं दुःखमात [illegible] कवयत्रिम यानिन॥ तत सर्व पितृणां नाधिमत्वा विमान दा॥ पुष्पयान निमाप्य कातवय धर्मतो नकाव
॥ ततात मडितमना म हाति ह्याविवक्रमा॥ मर्वमत्त्वहिता यकातवयु बोधि तागिन॥ दृश्यत्वसहस्राणि तिष्ठंय कृतानां हित॥ मर्वभद्रं कृत्वा तगानि
ईति मा भूयो॥ तिष्ठं न त्यापि मे धर्मलिखवत्व महाकृते॥ एतन्मे यदि शिक्षा ना मा वृत्तं मत्ववाधय॥ इति संप्रार्थिता तत्र भगवान् मुनीश्वर॥ महात त्वं नमा

अट् लवनानितुव
तविमानानि १

श्री आ

षांश्चस्वः सुधीर्वायुविभूतिर्मनगप्रियः॥ प्राकारांतं च सर्वज्ञं नत्वैव माहतां प्रीतिः॥ सर्वज्ञः समयः पंचकषायव्याकुलात्मवं॥ बोधिमासाद्य संवृत्तः स्वयं प्रवृजितागतिः॥ यदीये
भगवन्नाशासमिच्छाम्यनगारिताः॥ तदा तं भगवान्बोधिक्षेव्याकर्तुं च विलोकयन्॥ सुरैः संप्रार्थितो भगवन् जगति पालयितुं क्षितिं दीक्षितः॥ पश्यन्नस्मद्वचः सुरैर्नत्वैव माहविस्मितः॥ किमर्थं
मयमालोक्य वायुविभूतिर्विचक्षणः॥ कषायव्याकुलकालेन संबोधिप्राप्तुमिच्छति॥ अग्रायाख्याय विलंबो विस्मयकौतुकाकरं॥ भगवांस्तमतिः श्रीमान्कविनादयितुं महत्
मयमालोक्य वायुविभूतिर्विचक्षणः॥ कषायव्याकुलकालेन संबोधिप्राप्तुमिच्छति॥
पितः॥ उर्जितगणादिगणशोव समृद्धस्य च नादनाम॥ क्षितिपालं समालोक्य समाम नीवमादिशत॥ यत्स्तोकोकान्क्षमदकोमहासत्त्वाः कृपालवः॥ स बोधिं प्राप्तुमिच्छयुः कालपं
चकषायितः॥ अथ स भगवान्दृष्ट्वा वायुविभूतिं समीहितं॥ प्रगाढितं तथा वाक्षेत्र व्याकर्तुमि समादिशत॥ साधसाधमहासत्त्व प्रतिक्षणं यथाक्रमं॥ तथा सर्वज्ञतिर्ज्ञात ऊष्टे
नं बोधिसम्भवं॥ ऊर्णां संख्ययकल्पान् लोकक्षेत्रं कषायितः॥ पूर्वस्यां दिशि काषायध्वज्ञो नामभविष्यति॥ तत्त्वं बोधिमासाद्य संवृत्तः क्षमवाञ्छितः॥ प्रातिः स्वा
नामसर्वज्ञस्तथागतो भविष्यति॥ ऊर्ध्वादिष्टमुनीन्द्रेण वायुविभूतिः समादिशत॥ भगवन्कमालोक्य पुनर्नवमहाघनः॥ यदीयं भगवन्नागमपतिं पूर्यतमयं व्रतं

११०

॥भगवांश्चेत् सोमर्षि स्थापयतु ममाधुना॥ इत्युक्त्वा समवसरणे तत्र वायुभूतिः प्रसादितः॥ कर्मगर्भस्य मायायां प्रश्नानामकृतोऽस्ति च॥ ततः स भगवानेवं वायुभूतिं महता-
विनः॥ मन्यसे मूर्छि परलोकोऽव प्रतिष्ठाप्येव मादि भगः॥ उत्तिष्ठ समर्थो धर्मो वायुभूतिर्वर्णितं च॥ तथेयं प्रति धर्मं गतः सिद्धा नप्रसीदन्ततः॥ इत्यादिष्टमनीषः स वायुभूति-
श्च उत्थितः॥ भगवन्तं प्रवन्दित्वा तस्मै कालमाश्रयत॥ ॥ इति श्रीमहाजनकमालायां वायुभूतिवाक्यं प्रस्ताव तन्नाम गणधरव्याकरण-
ं॥ ॥ कदृष्टाथ समुत्थाय छेत्ति व्याल प्रमादितः॥ नत्वा गर्भं गमानन्य माज्ञ स्ति न व मम वीतः॥ भगवन्नहं न ध्यवं कालं पंच कषायिक॥ संबाधिमर-
हि संवाद्य समिश्चा मिजगाद्भि मे॥ यदीये भगवन्ताभ पत्रिस्ति छ्रमम कथ॥ तदान्नां भ्रम यायां छेव्याकुल उजगाद्भि मे॥ इति मे प्रार्थिगमने नत्वा गहे समर्वविभुः॥ यो-
सिद्धो तं नमो मम स्थपध्यन्नं वं समादि भगः॥ साध्य साध्य महासत्व यथा त्वया समीहितं॥ मत्य भगवथ सर्वं तस्य भीद्द्रव्रगं वचः॥ तीकथागौम हारव्यायां कालेपंचकेषा-
यिभ॥ नेत्रा मायुपृथिवर्षी धां वे त्वा विं गल्ते हप्रि कें॥ तदा क्ष्ये महाकल्प प्रथमं त्वं जगाद्भि मे॥ इद्धमानगभो छित्वा नि श्रीकरभाई मलीश्वेन भ॥ सर्वहृद्ध भगवान्-

= केनकारणेन महेतु स्यात् महालेत व्यारागस्य महालेतत्वादेव स्य महा ले मोहस्य
महा लेशावन्धनाना तेन कारणेन सालोके भावे महेतु स्यात्॥ अत्र महा यालो के
धानौ ने भडको नाम भविष्यति महाकल्पः। तेन कारणेन स्यात् भड कल्पः २

मैत्रतनया प्रतिपद्धिः १ निःसत्त्वतया समाधिपरिशुद्धिः
निर्वीर्यतया प्रज्ञापरिशुद्धिः १ निस्संगतया विमुक्तिपरिशुद्धिः

श्री [illegible]

मैत्रीचक्रं १
अनित्यचक्रं १
अशुभचक्रं १
अनभिनाम्यचक्रं १
नैर्याणिकचक्रं १
नैर्वेधिकचक्रं १

पुनस्तत्र सद्धर्मं समुत्पादितम्॥ सत्त्वार्थं साधयन्त्वा क्षेमं त्वयैव पवित्रमयं॥ पवित्रशुद्धसशीलश्च पवित्रशुद्धसमाधिविन्॥ शुद्धप्रज्ञो प्रज्ञाप्रसमः पवित्रशुद्धविमुक्तिगः॥ आकाशनिर्मलात्मा [illegible] सर्वनिखिलविनायकन्॥ अनेकधर्मनिर्याणधर्मचक्रं प्रवर्तयन्॥ सर्वी पुण्याधिमासाय सर्वसत्त्वहितार्थकृत्॥ मोक्षो दर्शनप्राप्य संबुद्धः सगतां तवकृत्॥ इति मत्वा महात्मा गताधिमो [illegible] समाविनन्॥ संबोधि प्रतिक्षणनवनलोकहितासन॥ वर्षाणि विस्मृताय तविष्यामि यदानंम्॥ तदात्वं सकलं मा नाथं त्वानिः शोकं आत्मविश्॥ भवतां नाम संबुद्धो धर्मनाथो विनायकः॥ सर्वक्लेशहृद्गच्छ स्तो तथागता तविष्यामि॥ इत्यादिष्टं मुनीन्द्र एतत्त्वगर्भं सम्माधिः॥ निर्मल्य विमला लोमसंवेभायन् [illegible] हिशीलसमः॥ मुदितः साञ्जलिर्नत्वा तत्त्वगर्भं मुनीश्वरं॥ तं समभ्यर्च्य सत्कृत्वा उवाच वे प्रसन्नधीः॥ भवनाथ महाविज्ञ श्रि विनाशय॥ तवाद्य [illegible] मां वा क्षेमापयन्तपद्मं॥ इति संप्रार्थनां सत्त्वा सर्वेभायन आदेन॥ तं मुनीन्द्र समालाप तत्त्वगर्भं काम्य मात्रयत॥ ११४
॥ इति श्रीमहज्ज्ञानकमालायां वैभायनस्य भवत्यस्य व्याकरणं॥ ॥ अथ समञ्जयं धर्मपात्रिगतां ह्रींकालं मह॥ ततः सर्वकानी

सं॰ [illegible]

महत्=

यात्संमहा शिवगच्छेच्चितं ॥ त्वशिष्यं वदेमि ह्यन्कं सर्वविद्यार्थकोविदं ॥ माणवकं समालोक्य समासनस्थेव मादिशत् ॥ सामतावगच्छानि त्वं संबोध्येकिं नवाचम ॥ उ
त्पादय जगच्छ्रीकरहितार्थेकान् सर्वहन् ॥ संबुद्ध शरणं गत्वा बोधौ चित्तं समाहितः ॥ प्रार्थयस्व समालोक्य वज्रकृतंजय रथोपिशं ॥ संबोधिप्रणिधिं छित्वा वनचर्यां
वृषीलमां ॥ इति शास्ता समादिष्टं गुरुत्वा समभाणवकः सुधीः ॥ शास्तानं तं प्रणिपत्य समालोक्यैवमब्रवीत् ॥ नाहं शाउपाध्याय गच्छामि शीतरं तव ॥ नव चावकं प्रब्रज्य काव
क्यान्तिघसंस्तुहं ॥ अनुत्तरं तु संबुद्धयानमानं क्रमवर्धे ॥ सर्वसत्वहितं कर्तुमिच्छामि वनि उद्वेगं ॥ तस्मात् कृत्स्नमुपाध्याय प्रव्रज्याय यस्ममब्रवः ॥ सिंहनादं नदिष्यामि संबोधि
व्रतसाधनं ॥ इत्युक्त्वा समहाधीमान् संबोधिप्रणिधानत्वः ॥ संबुद्धस्मृतिमाश्रायतस्को ध्यानसमाहितः ॥ अथ समन्तुभद्र पुष्प समानानिक्षस्य पानको ॥ पंचाप्तकाय कान्
पच्च तंमाम स्थुव माधि शतो ॥ सर्वरतनकायूयं तत्त्व यदि वोक्षथ ॥ बोधौ चित्तं समाधाय सुपात्य जगदूना ॥ इति शास्ता समादिष्टं गुरुत्वा गवानकोपि ॥ सर्वगत
नुमानस्य पच्छनक जवमत्कवन्ते ॥ उपाध्याय तदस्मा किंकि स्पिनविघ्नतः ॥ ससंघस्य मुनीन्द्रस्य निर्यातयमवस्तु यत् ॥ तत्कथं हिवयं शास्तनननवनफको गताः ॥ वाचि

श्री आ

वर्धापयिष्यसि॥यावत्कल्पान्तं निर्वृत स्थापितं ध्रुवं॥ सद्धर्मं श्लोकास्यत नद्यल्लद्रम प्रतिरूपकं॥ ततः स्कन्दादिना धर्मं सर्वक्रतुवनस्थापि॥ त्वद्धातु स्तूपगर्भं श्राजिनधम

स्तानविनश्यति॥ ततस्त्वद्बोधसत्त्वा सर्वक्रतुवनस्थापि॥ पश्चात्तद्योगतंथ मर्दयिष्यन्ति मां ध्रुवं॥ ततः प्रादुर्भवे वेथि न्यामशिनन्तागताःश्रिया॥ सर्वान्नपानेनाम्भोदीन्वर्षिष्य

न्ति समकत॥ सर्वधातुद्भवगान्निर्ग्रोहितस्य महोषधीः॥ वर्षयित्वा जगत्साकं पालयिष्यन्ति सर्वदा॥ दिव्याश्च गान्धि वृष्टिं प्रवर्षन्ति नामाधिपत्यमः॥ सर्वत्र वर्षय सर्वा

न्सत्त्वान्संतर्पयिष्यति॥ त्वद्धातुस्तूपगर्भस्थाः समन्वद्भ विग्रहा अपि॥ यावद्भूम्यषु सर्वत्र वज्रमयम्मसर्वदा॥ सर्वं ग्रामेपि सत्त्वानां श्रीभाग्यान्यपि॥ शमयिष्यन्ति सर्वत्र

दिव्यसौगन्धवृष्टिभिः॥ ये ऽप्युत्तमोपि मान्सत्त्वा दुष्टाशयान्विनाशमान्॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य चानयिष्यन्ति सम्वरं॥ एवं हि प्रतिक्षणं सर्वत्रिभुवने पथ

त्तमितिमत्त्वानां हजन्तसंघगुणवन॥ इत्यादिष्टे मुनीन्द्रेण ततस्ता संप्रतिबोधिताः॥ सर्वे च शक्रनागाश्चाभिर्विमलप्रेवमब्रुवीत्॥ यदि भगवन्निर्वाणं प्रतिक्षणं तथा

वत्॥ सम्यग्धर्मं न बोद्धुं स्कन्धस्य पश्चात्पूज्य पालिता॥ इतिप्रार्थितानान्तत्रगर्भस्तसर्वविद्॥ दक्षिणस्तेन तन्मार्गेप्रमुखे वंचमामादिशत्॥ वनत्वं जगतां ११८

अ १००१ ५८० ५४

को:६४०००
ग्रा:३००००००००
वे १०८० द १

नाथो बोधिचर्यां समादिशत ॥ एवमुक्ते मुनीन्द्र स्वं गत्वा शीघ्रं जगद्धितः ॥ ततः आदिष्टं मुनीन्द्रेण तत्वामासिषु समादिशत ॥ तं मुनिं साञ्जलिर्नत्वा गत्वा तेकानामाश्रय
त ॥ ॥ अथ समुद्रे नगरे मागधवर्कोविलोकयन् ॥ दिव्यनवासेसाक्षात्समालोक्य समादिशत ॥ साधु साधु महाभाग बोधिसत्वा शिक्षामुखे ॥ समाचरि
क्षनेन रत्नेन कस्मिं प्राप्तु ॥ त्वया लयं उपस्थानं भाकर्णय्यं मथामम ॥ जिनश्रेष्ठ नेत्र त्वा बोधिचर्या व्रतं चने ॥ ततः स्तोमामादिष्टं ततो त्वा समस्ति बोधिनत ॥ त
स्थानिशानि विद्युत्य बोधिचर्यानि शोत्वत ॥ ॥ ततः निशीमह क्षणक मालोयां महावलेश गवं धिमान वकस्थानं नाम गथागत पद्व्याकेनेदं ॥ ॥
अथ समुद्र नगर धर्म सान्मर्या न्यर्थ सत्वे गानं ॥ बोधिसत्वान्महासत्वान्सेमीश्वरं व्याविकयत ॥ मये गवहव मत्वा बोधयित्वा प्रयत्नत ॥ सम्बोधिप्रणिधिं दत्वा बोधि
सत्वा ततो सुपि ॥ तद सम्प्राप्तिन सर्व सं बोधि करानि श्रेया ॥ बद्धं गाविन्द्रु निपान्नि गत्कम्मि सग्रपे ॥ नवयोकानवि कृत्व कालियुग कायायित ॥ बद्धक
उपनिक्षिप्त बोधिं प्राप्तुं समिच्छाम ॥ मदोपवर्हिसे धर्मकालोपयेर कषायित ॥ इत्युक्त्वा नगराः आश्रित्वा बोधिं प्राप्तुं समुत्सह ॥ ततः सर्वेषु विनिश्चित्य समद्भुत

विमलवैशाघ्न मातावर्क मैत्रेय सहदे ८० ॥ उंभरु कनकमुनि ३००००
धातुविलु शिघ्र शालेन्द्र राज विश्वभूत्र काश्यप २००००
मैत्रिश्याल क्रकुछंद ४००००

श्री मा

अपि स्वरवासीनान्दिव्यव्रतान्नहि मानिनः ॥ संसारदर्शयस्कृन्संवानयिष्यामि सद्रुमं ॥ देशानपि महावीनान्नीरिव्दध्यामि हि मानिनः ॥ सर्वान्कानपि सद्धर्मं साधयिष्या
मि वाधयन्न ॥ नागानपि महोरगांश्च विद्यान्नि कालि गाननान्न ॥ नानपि सोगगं धर्मे अवायिष्यामि वाधयंत ॥ यक्षान्कामनसा सकाक्षी समन्छामि हि मानिनः ॥ अपि यं दर्श
यन्धर्मवानयिष्यामि भोगमं ॥ गन्धर्वानपि संसानन गि हागामि लालसान् ॥ अनासदर्शयन्सर्ववानयिष्यामि सहर्षं ॥ किन्नरानपि नागेन्द्रान्महत्सर्वद्धि मानि
नः ॥ अलिनं दर्शयन्सर्वं स्थापयिष्यामि सत्यर्थ ॥ सिद्धविद्याधरांश्चैव कलाविद्याहि मानिनः ॥ दर्शयन्नृत्सर्वं पहिंसा धयिष्यामि सकृशानु ॥ तथान्यान्स्त्रानि
नः सर्वान्कैश्चतु लवव्वानि दाः ॥ वाधयत्स्वभर्मनवीदुवानयिष्यामि संवयं ॥ नावदपि वचेन्त्रीकायज्ञानि पुठे मन्नापि ॥ वाधिव यीवि वर्यहि यावेन्नकलि नाग
नः ॥ यदायं स्तानि पालारव्या माधवकीगगक्षि ॥ वाधिं प्राप्य जकृष्ठेन्दलक्ष्मगणा हविष्यति ॥ तदा तस्य मुनीन्द्रस्य धर्मचक्रं प्रवर्तितं ॥ ठस्थानमादि गात्मा हंत्र
ध्या गान्धर्वंगमः ॥ पुत्रश्चापि उगमा दायादित्य ध्यानाजि गाडियः ॥ यमिनहत्यदेपाप प्रवर्यं व्रजयामि वां ॥ ततः कस्यगगःकास्तुनृपदमाक्रगछि तं ॥ वाधिव १२३

यो बुद्धं संज्ञा लब्धं धर्मलाभकः॥ स शान्तियानमानस्य धर्मं यथाभिवाञ्छितं॥ हितान्सर्वत्र लोकस्य कुर्यात्तदनिमग्नं॥ निर्वाणस्य मुनीन्द्रस्य शासनं हं प्रतिष्ठितम्॥ सद्धर्म
देशनाय कुर्याद् बुद्धकार्यं जगद्धितं॥ यावन्नान्तर्हितो धर्मस्य शासनं महीतले॥ तावद्देवं वनिष्यामि बोधिचर्यां जगद्धितं॥ ततः कालान्तरगते धर्मस्य ह्रासके॥ लोका
षु पि वविधार्थे उत्पन्नो मम सन्मतिः॥ कल्पेस्मिंश्च महायाने संबोधिं गौतम गद्धितं॥ कालक्रमं भिन्नान्नस्य स्तूपादि गतानि भविष्यति॥ मयाप्यहं मुनीन्द्रस्य शुद्धयान
नं गगनः॥ एवं ख्यातं तमामासाद्य नव वंशस्य विधास्यति॥ ततः स्यात् संघस्य तु नाद भाषितं जगद्धितं॥ बोधिचर्या प्रविगतं कृत्वा लब्धं धर्मलाभकः॥ स शान्तियानमानस्य
धर्मं यथाभिवाञ्छितं॥ हितान्सर्वत्र लोकस्य कुर्यान्निखिलं सदा॥ निर्वाणस्य मुनीन्द्रस्य शासनं संप्रतिष्ठितम्॥ सद्धर्मदेशनाय कुर्याद् बुद्धकार्यं जगद्धितं॥ यावन्नान्त
र्हितो धर्मस्य शासनं महीतले॥ तावद्देवं वने महि बोधिचर्यां जगद्धितं॥ ततः कालान्तरगते वंशस्य ह्रासके॥ लोकायुर्विवर्धार्थे विश्वग्रकाशितः॥ स
धीः॥ स श्रामणे महायाने संबोधिमाप्ताः गौतम॥ कालक्रमं भिन्नान्नस्य स्तूपादि गतानि भविष्यति॥ मयाप्यहं मुनीन्द्रस्य शुद्धयान नं गगनः॥ एवं ख्यातं तमामासाद्य नव

श्री गा

किं कस्यचिद्वा वक्ष्यामि ॥ न ह्यात्मप्रस्थना मापि ग्रहीष्यामि न कथन ॥ किं पुनर्बोधिचर्यायां वक्तुं गच्छन्ननन ४ ॥ न दास्यमपि विद्यादिमानवान् कृताननार ४ ॥ पंचकषायिका

न कस्यचिन्निश्चयमप्यसत्यता ॥ नवागकृगतेर्निः ४ पापास्थानीयवानिः ५ ॥ यावद्वर्षदं भायुक्ता न विष्यन्ति क्र मानना ६ ॥ गमुसंकालिन कनवद्गर्दिष्क्र समं पालिन ॥ नमादि देवेभ्योऽवतार्यत्वं

वाचगीयाहं सत्वानुकुर्तुं सममा ७ ॥ सर्वान पिन दासत्वान्नपायन प्रवोधयन् ॥ क्लेशपंकात्समुद्धृत्य स्थापयन्यं गुनपथि ॥ कषायं न भीक्ष्यं सवां बोधिमार्गप्रदर्शयन् ॥ सं

बोधिसाधने धर्मे चोत्तमधर्यं समक्रतं ८ ॥ नमः सर्वपिन सत्वाः सद्धर्मेनादिनामया ॥ बोधिचर्यात्रिगं हित्वा वचिष्यन्ति महाशुरा ॥ नमः प्रध्वस्तदुःख क्षी सर्वक्षमा छुताग्र ११३

या ९ ॥ सद्धर्मसाधनायत्न कालं विघ्यन्ति समनावि ने ॥ नमः पुच्छानुतादंक्ष वनुद्धर्मकृ विहानिका ॥ क्रमात्तु वर्जिता युक्तश्च निष्यान्ति सरखान्विता ॥ यावद्गीतिसाद

सवर्णीयं स्यान्न धीक्रमान ॥ नदाहं भगवन्बोधिं प्राप्नुमिच्छेऽनुगाह्निन ॥ यदीयं भगवन्नावं छात्मसंनिध्यमनंत थारवल ॥ नवामां भगवान्बोधिः क्षोम्याकानान्तु गाहिन ॥ नयं

दिनलप्स्यामि न विश्व अवकोपिन ॥ प्रत्येकसत्वकान स्थानापियाम्यामि निर्वृतिं ॥ यदाहं सर्वसत्वानां हितार्थे संसमेनक ॥ बोधिचर्यात्रितं हित्वा वनं यं न्विनवालय

बोधार्थेन ३

बोधिसत्वाः

सत्त्वात्

॥ कश्चीयं भगवन्नाथ परिपूर्यते मयदि ॥ भगवान्सर्वविद्भूम्ना गत्समादेष्टुमर्हति ॥ इति संप्रार्थिते तेन भगवान्स मुनीश्वरः ॥ मा [illegible] वकं गमालोक्य समामन्त्र्य त-
मादिशत् ॥ साधु शृणु महाभाग संबोधिं यदि वाञ्छसि ॥ संबोधिसाधनं धर्मं वक्ष्यामि तं जगद्धितं ॥ ये कुलीना विनीतात्मा हीनकुलीनार्थिकाश्रिताः ॥ अथ वक्ये महत्सं-
नकाः प्रवृत्त्यर्थं कमलगोत्रा नपि ॥ यथार्थिप्रार्थितं द्रव्यं न ददाति तथार्थिने ॥ एवमनुपमसम्पत्तिं सर्वाभिलषिताः गयाः ॥ वज्र[illegible]प्रोक्ते प्रतिक्षणं नन कुर्वते ॥ न ते सं-
बोधिसंप्राप्त्या यत्नं कुर्वन्ति कदाचन ॥ सन्ततवासिसंनकाः दुःखान्यन्तर्भवन्त्यपि ॥ एत[illegible]संनेकाः [illegible] न्ति तपिताः गयाः ॥ क्षिप्रमनुत्तरां बोधिं नाधिगच्छन्ति
दुर्धियः ॥ ये सम्भीलाः तुमात्मा हा[illegible] ज्ञानवान्तो जितेन्द्रियाः ॥ महायानिकसंनकाः सर्वार्थिदानसंनताः ॥ दुःखिताः [illegible]का [illegible] विहारिणः ॥ ते क्षिप्र-
मधिगच्छन्ति संबोधिज्ञानमुत्तमं ॥ इतिय शृणु सम्बोधिं प्राप्तुमिच्छन्ति सज्जनाः ॥ [illegible] बोधिमार्गं [illegible] विशंकितः ॥ पानमितासमुच्चयकः सत्त्वान्तु-
तिपूरयन् ॥ [illegible] सर्वसत्वानां बोधिं जगतां हितं ॥ [illegible] सर्वसत्वार्थसाधन ॥ जिनतः संनतः [illegible] करुण्या नत [illegible] हितः ॥ [illegible]

१ हीनमन्याशयः
२ हीनसहाय १
३ हीनपरित्यागः
४ हीनपरिपाचिः
इति चत्वारि बोधि-
सत्त्वानां कुलानि ८
वर्त्तन्ते
बोधिसत्त्वानां चतुर्धा
गुणीनसुसंनाहः
सर्वबोधिवोगवोधार्थे ३
महायानिकबोधिसत्त्वैः सहस्थः = बोधिसत्वा २
सर्वसत्त्वदुःखशमनादपि कक्रुणविहारिः ४ ।३

१ बोधिसत्त्वानां चतुर्धा मैत्र्या [illegible]॥
दानात् [illegible] १ धर्मश्रवणात् [illegible] २
सत्त्व [illegible] ३ भावनात् [illegible] ४
१

८ बोधिसत्त्वानां चत्वारः धर्माः
पारमिता [illegible]
सत्त्वानां संग्रहवस्तूनि
[illegible] विहार ८ ३
अभिज्ञा [illegible] ४
१

बोधिसत्त्वानां आशयनिश्चयः १
श्रद्धा १ धर्मदेशना २ [illegible] ३ [illegible] ४ १

श्री रा

वद्भुवं ॥ यावांस्के यांव सर्वषांव ह्यानोंअवकाशवत ॥ यावान पि ममेवास्य संवद्भ्रस्य जगद्गुरोः ॥ यावतश्च मृग गाः सर्वेम लाड कालि काजिनाः ॥ विनयपूर्यंथ सत्वा
न्विनेष्य गावतालथा ॥ यावतः पापिनाद्ग्रुतां स्पर्शेन कार्य कार्या विशः ॥ सर्वोकानोपि सद्कर्मेवान यत्यं समं ह्यनून ॥ निरीतम्या पि भगतजथा उ ह्यपा प्रापाहितानाः ॥
सर्वज्ञ सर्वगा कूर्य मेकृलं निन्न यद्गवं ॥ गत लङ्घु पाजिनाव ह्याउर्का का हिगत लथा ॥ वद्भुकतव गुन्यथ कृयातालेवा हू लात्मकाल ॥ पक्ष हूर्लिङ्का कानाथिका
मतिः सम् लवत ॥ मद्ध लान्सर्व लोकघनलवेदिंप्रवर्षयंत ॥ सर्वान्निपातलाग्यक्षदिवाहि गत्समसोषधीन ॥ क्षांउड व्यां भि सर्वाधिप्रवर्षयन्समेकतः ॥ तथापि
नागका कोवसद्धाउवेत्प्रसन्तता ॥ दिव्यं सोगान्वि दत्स्विश्च लवेत्तवेन विहृता ॥ मत्सगान्वि मघ्राषसेड वन यहितलिपिताः ॥ नागिनानीव ज्ञास्के स्य संक्षि प्राथ
उत्तागया ॥ ततः सर्वापि गत सत्वाः संवद्भृतं नवाञ्छिनः ॥ तिनल लजनं लवापुववयृः सदागता ॥ एवम हंजगत्राथवाक्षिवयाश्रगंवननं ॥ पात्तम लवं सत्वांथ
वनिव्यानि सदागत ॥ वोविशा फेथसंवद्भकार्यो कृर्याजगद्धिम ॥ निर्शेनापिव सर्वज लडकूर्यां सम न्केनः ॥ यदीयं भगवन्नाम पनि पृथ्वीगमतथा ॥ लाकं र वय

११७

लमाहं वनयं त्रिजगद्गुरो ॥ दशदिक्षु कितावद्बुद्ध पञ्चकामो क्षयादधा ॥ सम्यक्संबोधिसंप्राप्ते व्याकुर्वन्तु जगद्गुरो ॥ तवान पिहि सर्वज्ञ श्रेयसे नमस्तस्मै नमः ॥ तथा मां तग
वान्वाक्षे व्याकरोतु जगद्गुरो ॥ इति संप्रार्थितस्तेन मानवकेन सद्गुरुः ॥ नत्वा गर्त ८ सर्वज्ञस्तमास पुरेवमादिशत् ॥ साधु साधु महोत्साह प्रणिधिः सिद्धिरस्तु ते ॥ ते चेत्
दृढ व सत्वानां गद्गुरव कृपाकर ॥ लोके बुद्धो भविष्यति विमलो नाम सन्मतिः ॥ बोधिसत्वो महासत्वो भव त्वं जगतां हितः ॥ यथाहं त्वं तथा सर्वज्ञो प्रथमे तथा
॥ लाडकल्पिक बुद्धानां पितुर्मातुः प्रशास्यति ॥ यावत्त्वया स्वयं लडुप्रभि क्षमनेक गयथा ॥ तथा सर्व भूमि प्राप्त प्रसीद जगद्गुरो ॥ तीर्थं निकूड लद स संबुद्धस्त जग
द्धनाथ ॥ पश्चिनिर्वृतिया तस्य सद्धर्मं कर्हि तविनाश ॥ तत्क्षक वा यति लोके लोक गमान तगत्कृत ॥ तत्र संबोधि मासाद्य सम्बुद्ध तगवाङ्गिरन ॥ सर्वज्ञा हि जगद्गुरु स्ता
धर्मनाशा विनायक ॥ नावानाम मुनीन्द्रस्त्वं मथोगताल विष्यसि ॥ याव तेषां व सर्वषां लाडकल्पिकेता यिनी ॥ तावत्कालं तवैकस्य सदीर्घायुर्भविष्यति ॥ या
वान्नेषां मुनीन्द्राणां सर्वषामपि मांपिक ॥ तावानवं तवैकस्य संबुद्धस्य लविष्यति ॥ याव तावित यिष्यन्ति सत्वान्त लाडकल्पिका ॥ सर्वसत्वान्स्त्वं मकापिता

श्री जा

गच्छितं॥ क्रमात्स्थानमितामत्वंवचन्याधित्रगंवन॥ मथास्त्वं प्रनयन्स्वीश्वपानमिमायथाक्रमं॥ नि४मौर ण्णनिर्जयन्मामान्स्वाधिमाहिमात्स्यमि॥ ४प्तिसर्वत्रलाकानांवाधिव

र्यामृतात्वनृ॥ उिनलमगनं हत्वाखगंवनसमाहिमा४॥ उमत्स्यथ्वेविपाकनसंप्राप्यवाधिमलर्मा॥ सर्वस्त्र ईन्मशाहिस्त्र धर्मनाशाद्विध्यामि॥ ४स्यादिदेमुनीन्द्रदत्त्राम्भ

४मप्रभादिमा४॥ लयसंमृगमंनत्वा साअंलिनवमत्रवीम॥ मावदहंजग स्सुलसमाधायजगाच्छितं॥ वोधिवर्यविवाचिष्यामि यावन्नकालिनागूंम४॥ ऋत्र्याहंपुसाम्या

मिसर्वार्थिस्थायार्थसितां॥ मत्स्यक्षेन्यापिसत्त्वस्य४ सर्वस्य४ पानिभामयनृ॥ ममश्वहंवनिष्यामित्रगानिइत्त्वनान्यपि॥ उमत्स्यथानिसर्वस्य४सत्त्वस्य४पानिभा

ममत्र॥ दययाहंसहिष्यामि पर्वे४ हतान्खुद्रपभ्रान॥ मत्स्य४ तिव सर्वस्य४ सत्त्वस्य४ पानिभामयनृ॥ वीर्यदमत्स्वाविष्यामि यत्कार्यं जिजगाच्छितं॥ मत्स्यथानि १२१

सर्वस्य४सत्त्वस्य४पानिभामयन॥ ध्यात्वा गहावध्यिष्यामि यत्कर्मवाधिसाधनं॥ मत्स्यक्षेन्यापि सर्वस्य४ सत्त्वस्य४ पानिभामयन॥ पञ्च्या साधयिष्यामि संवाक्षित

लमत्कर्मं॥ मत्स्कलानिहिसत्त्वस्य४ सर्वस्य४ पानिभामयनृ॥ उमत्स्यथानुलावेथ्व संवञ्जान्दर्शादिक्लिमानृ॥ अत्यर्थ्यानागयिष्यामि सर्वडव्यनपाक्लिगम४॥ म

सुसादवस्तेर्लीदा पंचातिह्व पदं महत्॥ वाचयन्सर्वसत्त्वांस्तवानयिष्यामि सद्गतिं॥ क्रोधिमापि द्रुपावा ध्म मात्सर्यव्याधिमानिनः॥ सर्वान्कान्वाचयन्दानयाज्ययिष्या
मि यत्नेन च॥ दुःशीलान्दुर्गिरो नृदुःखान्क्लिष्टान्दुःखिनो मार्गयान्॥ तानपि स्थापय शीलं तवानयिष्यामि सम्भवं॥ क्रोधिनो हिंसकाश्च लुब्धा क्रूरान्मानापकारिणः॥
तानपि श्रावयन्क्षान्तिं स्थापयिष्यामि सद्गतौ॥ दुःशीलाश्च कामनाशीका निर्गुणान्विगतक्रियाः॥ तानपि प्रव्रयन्धर्मं याज्ययिष्यामि सर्वथा॥ चपलान्मोहसंकीर्णवि
हानव्याकुलान्भयान्॥ तानपि याजयन्ध्यानं साधयिष्यामि सन्मतिं॥ दुःप्रज्ञान्कवनागर्लामदक्लिष्टान्मतिमानिनः॥ तानपि दर्शयन्शुद्धं दर्शयिष्याम्यनाहतं॥ असं
लेगादुनान्सानोदृशः॥ कुगलवाविनः॥ तानपि वाचयन्नयन्त्नाश्चानयिष्यामि सद्गतिं॥ सद्धर्म निन्दकाश्चापि पंचानन्तर्यकारिणः॥ आर्यापवादिनाश्चान्ये च सं
गाने च पनिवर्जिताः॥ तानपि वाचयन्यत्ने च साधयित्वा प्रसादिताः॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य वानयिष्यामि सत्वरं॥ सर्वपि पापिनो दुःखार्ता गाः पलाः पिपासवि
का॥ तिर्यक्षु नारकाश्चापि प्रेता मिकीयादयापिय॥ यावन्तः प्राणिनः सत्त्वाः पापिष्ठा दुःखलागिनः॥ तान्सर्वान्साधयन्धर्मं प्रनयिष्यामि सद्गतिं॥ दर्वां

श्री ग्र

सादिम ॥ उत्क्वा यं मुनिं नत्वा तत्कथां कथयाम्यहम् ॥ ॥ इति श्री महक्रामकमालायां समुद्रदत्त कथानक व्याख्यानं ॥ ॥ अथ समुद्र

द्रत्यादि द्वितीय वृत्तं व्याख्यायते ॥ उक्तस्यापि मुनिर्नत्वा भिक्षां समुपाययत् ॥ वार्धौ विक्रम ... द्विर्बभाषितान् ॥ ... पिवथ ... गद्विम ॥ ...

समालाक्षनलगर्ग समर्थ विना ॥ ... मासं वाक्ये वाक शान्तथा ॥ ... नवत नयगा ॥ सर्वान्... ॥ ... वार्धि ... ॥ ...

कृत्स्न ... विनोदं कृत ॥ ... तथागतावि ख्याति ॥ मदादि ... नलगर्ग ... कथां कथयाम्यहम् ॥ ॥ १०९

इति श्री महक्रामकमालायां ... व्याख्यानं ॥ ॥ अथैव ... नलगर्ग मुनिं नत्वा ...

॥ ... नलगर्ग समर्थ विना ॥ ... वाक्ये ... गद्विम ॥ ...

... विख्याति ॥ ॥ इति श्री महक्रामकमालायां समुद्र ... व्याख्यानं ॥ ॥ ... समुद्र ... ॥ नल

धर्मनाथ
आ० १०००००
राजकुले
पारंषी

अरनाथ
आ० ८४०००
चक्रवर्ती
हितनाग

कुंथुनाथ
आ० ९५०००
राजवंश
राजदत्त

गर्भेतमानस्य सर्वाधिप्रतिलिंदधु ३ ॥ नललगर्भेपि तान्ड ल्लमसर्वानंवाधिवाल्किन ७ ॥ यथाक्रमं भिनस्य श्रासंवाक्षे व्याकृतनारूथ्या ॥ तगतमर्वपितवाधिमत्वा ३ ठक्रा
गयामुप्त ॥ नललगर्भेवमानस्य मत्लनेवाल्कमाथ्र्यत ॥ ॥ अथ समडन ८ आयतिया श्रुनाम कानिका ७ ॥ श्रागमानमानुया नवा न्वाधिमा गनयो जयत ॥
मानगवाक्षितनमर्वानेनाहिम ३ मर्वाद्विमात ॥ समडने ८ ५ यथनतममाम नुवमोदिगक ॥ पूयमपितवनोरस्य मूलीकु संपृत्राधना ॥ संवाधिप्रतिर्षि हत्वाणार्थयर्थ
यत्थन्नया ॥ कुमूरकृतनननमर्वतिकाटामानवाश्रुपि ॥ तत्वाकांधगति विहग्यडवाधिमां थतमस्थिता ७ ॥ नलेगर्भेसपापाकुनत्वायाअरतयस्तथा ॥ संवाक्षेप
लिधिंप्रत्वासमयनत्वनाग्नाक ॥ मर्वमतग्गवाकषांसर्वयां बाधिगाविनां ॥ उक्त गर्भसमालाथ्रुसंवाक्षे वाकृत्वा लथ्या ॥ तगत ३ मर्वपितथीवाबोधिमत्वा ३ प्रसादिता
३ ॥ नलगर्भेजिनेन त्वागतलां समूपाग्रयेत ॥ तद्विकाटामूनीडा ४ लडकातस्तथालवेत ॥ विप्रश्रेस्य ३ जितीनाम विश्वतर्जाम पश्चिम ७ ॥ ॥ दक्षीमत
कुमकामानोयांतिकायमानवर्वतथागमवाकानर्भ ॥ ॥ अथोन्यवमतातिहा ७ मतस्तवद्या ० काउ ॥ गपितम्बाधिमंडाहप्रतिआनंदधर्मवी ॥ म

श्री गा

स्थाप्य मनः स्वकं ॥ ततः पीठे च भक्तो वह्नीं पद्मं संस्थापयन्मुदा ॥ मीव र्णिनं स्तं संपूर्णं गं गाभं च मगाल्यं ॥ सफनन्त मयावापि यष्टिः सवर्णं कालिमा ॥ संवृद्ध स म रं च सं घनिर्या पि वे न्य

वदम तु ॥ तगवं स्त स्वमनः पश्चा त्दकल्य कषायिण ॥ तस्य काङ्क्षा गं स तमा घ्राणं मानव यां स मा कृतं ॥ मंत्र मं कर्पहिंग ततः सर्वा न्दृष्ट्वा गणो ऽ स्य तः ॥ जगाद्भिं ना य सं वा धिं ङ्का फु मि

त्स्यमं नदा ॥ यदीयं तगव न्ना ण पनि पूर्यं ग भ मरा ॥ तगवं नां स मा तां च वा क्षे वा कर्तुं मर्हसि ॥ धन्म सि संप्रार्थि ग तनन त्वग र्भस सर्व वि तु ॥ विश्व गुरुं च ग मा म्वतं म मा तां च

वमादि श तु ॥ साधु साधु मे नाम सन्च त्वया यत्थ मभीहितं ॥ तथा मर्वं प्र मि प्र स्तु ग त्यु ती द्व गं च न ॥ गन त्वं स्व म म नि धी माने वि प्र गं ऽ त्य ऽ णा ऽ य य ॥ बाधि मन्वा म ता सत्वा त व ११२

त्वति ऽ ग ग ङ्क्ति ग ॥ ग स्य कनक म्मे नं श्व म च्छ मं र कोहिं मं ग त ॥ पश्चा त्नु सं हायी च तो कथा ग़ो का घा यि ग ॥ कालं विं ग मि ता हृ स्व र्वा यु षि न ष्टां ग ता ॥ सर्व माने ग श्रो ङ्कि स्त्वा म

स्वा धि म मि ता त्स्य म ॥ वां च्छ धाना म सं च क्षा ध मं ना ऽ मी मुनी श्व र ॥ सर्वं क्षी र ग वा स्कु र स्ता ग था ग ता त वि ष्य सि ॥ अ ग सि स घे प नि ज्ञा य स मा क्ष य ऽ गा ङ्क्रि गं ॥ स स्वा क्षे प्रा सि

धिं तत्वा वा धि च यी द्व गं च न ॥ अध्या दि श्रं मुनी न्द्रं ग ग त्वा स कान् श्री गा य श ॥ न त्व ग र्भ मुनी न्द्रं गं पूजा ऽ ऽ श्च म प्र अ य तु ॥ ततः स म म्प्र स न्ना स्य स्त स्य णा स्तु श प दा ः

पाठन सा
आ २००००
ग्राम ग्राम कृते
उ. लंति २

स्तुत्वा ॥ प्रणम्य शाङ्करं लिङ्गं कृत्वा गत्वा तटे वा नगमात्रयत् ॥ ॥ इति श्री महद्भागवते मातायां विष्णुगङ्गाकल्पे आख्याये स्य काश्यपनाम कथागमव्याकरणं ॥ १
प्रथम मङ्गल श्रेष्ठ सविमलं वै भावयेत् ॥ माधवकं मम मां मन्त्र पूजयन्त्वमपादितं ॥ त्वमपि कृत्वा पूजां मित नदस्य कृगङ्गां गुणा ॥ ४ ॥ नत्वा ग्र श्रीगङ्गं कृतं प्रार्थयस्व यथास्थितं ॥ ॠ
षि गास्तुं स मां दिव्यं माधवकानि भाग्यम ॥ ४ ॥ उत्थित ४ शाङ्करं लिङ्गं नत्वा नलगर्भमुपावनतं ॥ कश्यपस्य मुनीन्द्रस्य पादाङ्गं शाङ्करं लिङ्गं मनसा ॥ प्रणम्य समुपस्थित्वा पुनः प्रेवम
साधयत ॥ भगवन् कृष्ण मध्य वं भडकल्प गङ्गे छिन ॥ संबाधितं प्राप्य मित्र शमित पंचक पायिका ॥ काश्यपस्य मुनीन्द्रस्य सम्भूर्भग्ना हि गङ्गा मातृ ॥ न्त्र स्म माय तवि धाव यु
गवर्ष सहस्रकं ॥ गता ला काश्यवि ष्यन्ति मानव यानि वानिक ४ ॥ पवित्र गङ्गायामृ ता मद मा हाति मानिन ४ ॥ काम मा गा ति मोहान्ध ४ पापमित्र व र्ग गता ४ ॥ स
कर्मनिन्दको दुस्साद गा कृ शल वानिक ४ ॥ अनर्थिकाक्षि ति यानि क्षिन्न त्व स्मृति वर्जिता ४ ॥ सत्यधर्म गुरोवान वर्जिता श्रुनि गान ता ४ ॥ गत्काल कल वि ता पि बाधि वर्या
गाछि न ॥ वनितुं गगरुतं नवकृत ४ सम्बाधिना स्य न ॥ ताग उज्मान्मनुष्या ३ ॥ माय हर्निवृज्झि ष्यंति ॥ याव ह ष गता युक्ता तद् विष्यन्ति यदाननी ४ ॥ मदानकृ गन वि

श्री गा

त्वं तडकल्पपि वाधिप्राप्य उगच्छित ॥ श्रीहरिपदवृष्टारायकथागामाविघ्मेति ॥ उवंगनमुनीन्द्र णमर्वगवाहताऽपि ॥ सदा तस्य मृत्युपाकीनरवैकाकसमात्रायत ॥

॥ श्रीमहाभागवतमाहात्म्ये पंचमाध्यायकथागताख्याकनं ॥ ॥ अथसमडुनगः समंवलावगक्षविते ॥ पूर्वगः समयामनुवाथयन्नेवमब्र

वीत् ॥ त्वमवाकिं महाभागदीर्घकालं निरीक्षसे ॥ गृहाणमृत्युगत्वं गदृढ्यकतं यदीप्सितं ॥ संवक्र्गनदंगत्वा वाधिविर्यायवन ॥ संवक्रुपदतांतायप्रतिक्षनंतमाद

क्षम ॥ निमज्जुपउगन्नौकं सहकमीमत्तवर्धरेतेथ ॥ मार्वदीर्घनिवोऽस्तस्त्वमावनउगच्छित ॥ श्लम्यक्रामसमहाप्राज्ञकंमहावगक्षवितं ॥ गच्छंत्वा उगच्छन्तुनाकिकं ११८

समयानयम ॥ कृतसमयासंख्यतगावतः पुनागतः ॥ मामाकूसाकूरं लिर्नेत्वा समालोर्वेवमब्रवीत् ॥ किंयकोऽतगावनंतडकल्पमुनीश्वराः ॥ उदयन्ति उगन्न्वा

कंतत्सादस्वर्मर्हति ॥ श्लतिसंप्रार्थितगनगवान्नविलोकयन् ॥ माधवकंगमामनुपनवंसमादिगत ॥ क्रमेणसमगंगास्मि तडकल्पउगाछ्विमं ॥ वजुवतलनमा

हस्तं मुनीन्द्राणांमृदव्यांति ॥ श्लत्यादिश्व मुनीन्द्रगर्त्वासमपविमादिगतः ॥ माधवकामुनीन्द्रस्यपुनउवंन्यथवयन ॥ यावत्क्रमेणगवक्रातडकल्पमुनीश्वराः ॥ स

पश्चात्पश्चिमकोरसप्रउजोनामममारावकोऽनुनरांसम्यक्
वेशिमानिसं मोत्स्यते हरिपत्र्वज्रक्षे वामतधाली भाविष्यति तावचिरं

धर्मं समुपादिश्य स्थास्यामि त्रिजगत्सु ते ॥ यावत्समग्रान्बुद्धांश्च सर्वान्पश्यामि निर्वृतान् ॥ तावदहं चरिष्यामि बोधिचर्यां यथाक्रमं ॥ सर्वेषामप्यहं तेषां संबुद्धज्ञानमुपशि-
नः ॥ प्रदर्शयं धर्मं विपुलं याजं पायय संप्रति नं ॥ सर्वेषामपि तेषां च सद्धर्मं धारयामि ॥ सर्वेषां बोधिसत्त्वानां सर्वसंघान्भजामहं ॥ स्वयंभुवं यथा तेषां प्रत्येकानां अपि जग-
त्सु ते ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य चरिष्यामि समाहितः ॥ सर्वेषामपि तेषां च निर्वृतानां यथाविधि ॥ धातून्वा सर्वतो हृत्वा स्तूपांश्च स्थापयामि हि ॥ त्रिरत्नभजनं गत्वाच न-
न्यानि मितान्यहं ॥ बोधयन्सर्वसत्त्वांश्च चरन्पर्यटन्नवनिं ॥ तेषामपि च बुद्धानां निर्वृतानां समन्ततः ॥ सद्धर्मकार्हि गत्वा ज्ञालयं यं हितार्थे ॥ पंचकषायिके काले स-
त्त्वान्पालयामि वै ॥ बोधयन्नपि सर्वान्स्तान्स्थापयेयं च सत्पथ ॥ सर्वदुःखगतानां दि महाव्याधिलयान्यपि ॥ सर्वोपायविधानेन शमयेयं समन्ततः ॥ सर्वेषामपि
सत्त्वानां व्यसनं आत्मसमं करोमि ॥ स्थित्वा संबोधिचर्यायां प्रत्ययं ये मनान्वधीः ॥ सदा सर्वत्र लोकेषु सर्वदुःखलयान्यहं ॥ शमयं समगं तउं कुर्वं श्रेयसमातरं ॥ ततश्च
अहं तत्र तउकालोर्जगत्सु ते ॥ सम्बोधिज्ञानमासाद्य तथा यं स्तगताभिनः ॥ यावत्कुर्वीमनीन्डाभिं ताउकल्पिकमायिनां ॥ आयुष्मान्वनमम कस्त तेच्छुस्यत

श्री आ

सर्ववर्णानिर्वाणं कथं सर्वत्र जलवद्बुद्धिः॥ यत्थेगवन्त्वं सत्त्वाः संबोधौ व्याकृतास्त्वया॥ मामपि च तथा बोधौ व्याकर्तुमर्हसि॥ सत्यवादी महाप्राज्ञ हृस्स्थ मजालिनीं

मानि॥ चिरं बाले प्रतिष्ठाप्य हरीकर्तुं गच्छाहमि॥ संबोधिं प्राप्तुमिच्छामि कलौ पंचकषायिते॥ उपायैर्बोधयन्सत्त्वान्भावयिष्यामि संवरे॥ एवं सप्राक्ष्य संनुत्वा गं मृ

नीऽहं प्रसादयन्तु॥ साञ्जलिः सुप्रदानिं कृत्वा गच्छोपस्थाग गच्छिन॥ तदा तत्पर्षदि क्काक्षे सद्वास्तु मानुषाः॥ सर्वलोकाः प्रसन्नास्ते प्रभोः सर्वं सुधा वदन्॥ साधुसाधु

महासत्त्वप्रतिष्ठानेन यथोक्तं॥ प्रार्थितं तत्स्था सर्वं सिद्धमुत गच्छतु॥ कुशिम संभिगः सर्वलोकैः फलत्त गोचि गे॥ सद्धिजेन्द्र प्रसन्नात्मा गन्धनेन नत्वा वीत्स

नथ॥ भगवन्त्व त्वयः सत्त्वा मया पायोर्विमादिताः॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य सर्वथा वर्धितस्त्वगाथा॥ ग सर्वजडिगादान वैज्ञ गाति मान्यापि॥ कान्यव पावि

रुका गिनद्धिस्थानिकं वन॥ पवित्रद्धाभयान वसत्त्वान्कृ गत्तवान् नरः॥ वारं क्षेविन तुमिच्छ किन्तु क्लिष्टान्न्यापितभ्या नेन गवां कश्चिदकापिक १२०

नीमस्त्वान कषायिगान्॥ विनीयवाथयन्नाक्षे संस्थापयितुमिच्छसि॥ ततातत्र कलौ सर्वसत्त्वाः पंचकषायिताः॥ श्री गा लिप्रहगा सानाद गाकृ गलंबा

भितः॥ इष्टाः गाअइवावामा असत्क्रमीनवागिनः॥ विप्रषी णाहि वाक्षनः सम्पसंश्रमनिः हरणाः॥ मदनागाहि मानान्धा मानवयन्वानिनः॥ कामरागाभिसंन
क्ता मात्सर्यघ्यातिनाधिनः॥ सद्धर्मनिन्दकाश्चापि पंक्तेभ्नन गायतानया॥ आर्यापवादिनः सर्वे ते विघ्यान्ति कलीननाः॥ मन्त्रितवर्जिताः सर्वे पापमित्रव गाढि
नाः॥ असत्वा मानूकास्तुभाः सधिश्रनविवक्षःनः॥ स्वयंनष्टाः परांश्चापि नाशयितुं समुद्यताः॥ आगितद्दाश्च दुःशीलाः स्वकुलधर्मवर्जिताः॥ निर्गुणाः स्वन
ति हाश्च विविविहीनवर्जिताः॥ वाधिव यौनिनूत्ना हासेमानसरवलालसाः॥ तयवानगवद्धाश्च दुर्लभ्य दुःखलागिनः॥ अज्ञानभ्रश्च गतव्याश्च तविघ्यान्तिनवो
ः वैतो॥ लोकश्रमो महायांवव क्रुक्रगमतानना॥ स्वलोभ स्वोकविघ्यान्ति यावदः श्रद्धगोविनः॥ तेषाहं तगवंरी यांधमोथीयुःपवक्ष्य॥ वाधिवर्यीववं ल
रुसर्वाभिभ्राप्ठु मत्लहगोगन्नमाते रवास्तुसंस्काप्रतिक्षनिजगङ्क्रिग॥ कथागातिलिङ्कि संतानं संपूनयितुमर्हसि॥ स्तुतिसंप्रार्थितो गौनन्तलगर्लः मधर्मना॥ स
मइवेनमालोक्ष्य वर्गेऽखिवंसमादिशेत्॥ माधमाश्च मतसत्वसरडंग समीहितं॥ गत्सवैहियथ रवगांसंखे स्वगगथारवल॥ नगत्तथं पवित्रावणेधिक्षायग

श्री गी

थामिजति थानं यदाहितं ॥ [illegible] सामन न्यतन्त [illegible] ॥ अनकं तं समाला [illegible] वमस्तकम ॥ किंमात पनि [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] पि संवाधिं [illegible] मयाहि ॥ [illegible] समाख्याय मन [illegible] ॥ [illegible] कनि यानि तथा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] वंसमाहि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] संवाधिन ॥ पनि

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] संवाधिसाधने ॥ [illegible] पनि वाधितः ॥ १०८

[illegible] संवाधि [illegible] दथे ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] पीति

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] संवाधि [illegible] यथा ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] वानि [illegible] ॥ [illegible] मातां [illegible] ॥ [illegible]

स्तवार्थमिदं गायंत मनकादयः॥यदीयं तु गवन्तां यो पनि सूर्यक मतस्था॥तद्याक कंवाउ सां गा क्रमस्तवार्थो हि ज्ञगाद्धि मे॥ एवमुक्तो तेन गोकामनस्तुगर्भेश्वमादिनयः॥समूदुन
शस्तुतं यथ्यन्नमानस्तुव मादि गद्य॥ माध्विदं कृतप्रज्ञ प्रतिभानं कृतं त्वया॥यथान्वं ज्ञगमीना त्थाथाविसत्वोसवाथ स्तु॥ कृत्वा तत्तया कत्र पथा न्को लं तमुम यो रेवलं॥
उत्पत्तसमीनतां त्वकालस्तउ समायना॥ नवदूतीर्णिमास्त्रउ श्रु यूथिसमयगथा॥वाउदीपिवनिस्थकं वृक्षकतं वि ष्यामि॥ मतु संवाधिमासा मतन्न कृत क्रयाजिन॥स्व
इभि कृत गशूर कथा थगता तं वि ष्यामि॥ एवमादिष्टं मुनीन्द्र ततः त्वाम मा न्या मृता॥साकृतलि मी मनितं नत्वा मम मा न स्तुव मब्रवीत्॥ यदीयं तु गवन्तां यो पनि सूर्यक भगवान्॥ली
हिगसृष्टिः यांयामे सर्वेऽद्यू प्रवर्तते॥ सर्वं पापप्रज्ञ कमस्तव सर्वान्यानवे स्तुत॥ पक्षीश्च सूर्यनि र्गी पानि श्वेनं तु समनकादयः॥ एवमुक्तो मम सत्तात्वा माणव स्तस्य हृत्वा॥
नलग र्भस्य पा दाकृ पुननाम कृता क्रि॥ मेवानाम वृ सर्व सू वर्ष वनको मे कृत्य॥ पंचाङ्गे कृत्य श वापि निन वन कृत कृतव॥ म दुष्टान लगं शीशि तगवा नस्तत्वा विनं॥
चाधिनाभिन्नधि स्व स्तुप मामस्तुव मादि शेतु॥ उत्सिष्ठ सर्ग मया सा क्षाम वृ कृत स्तुं तविष्यामि॥ तत्सुधी दविशु क्रात्वा ब्रणवनं जगाद्धि मे॥ एवमादिष्टं मुनीन्द्र ततः त्वासंप्र

श्री आ

स्याधर्मसञ्ज्ञो विनायकः ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा शृणुध्वं प्रागमात् रविष्यामि ॥ शृणुष्व त्वं समाश्रय बोधिचर्या व्रतं वनम् ॥ सर्वसत्त्वहिताधानं कृत्स्नसम्बोधिसाधनं ॥ इत्यादिष्टे मुनीन्द्र

तस्मिन् प्रसादितः ॥ ततो गर्भपापाक्षयघ्नामकमाकृतिः ॥ तं समानतमालोक्य तं भगवान् मुनीश्वरः ॥ तस्मिन् निमित्ते श्रावममाम श्रीवमादिदेश ॥ उपविश्य

1 समाधीनसमुद्रममवादः ॥ बोधिमार्गप्रतिश्राव्य वानयस्व जगद्गुरुः ॥ इत्यादिष्टे मुनीन्द्रे तस्मिन् ध्याने समुत्थितः ॥ साकृतिं सम्मुनिं नत्वा गत्वा तत्र कानकमार

गुरुः ॥ ॥ इति श्रीमहाज्ञानकमालायां ध्यानीयानं कृतानन्द तथा गमव्याकरणं ॥ ॥ अथानन्तरं नीमतदिलोकप्र १११

सादितः ॥ साकृतिं सम्मुनिं नत्वा पुनः कृते खेवमब्रवीत् ॥ भगवन्नहमप्येवं कालेकसाय संस्थितः ॥ जगद्धिताय संबोधिमधिगन्तुं सर्वथास्मि ॥ यदीयं भगवन्नागम

यविनिश्चय समतथा ॥ देवो भो कृपया वा चैव व्याकरणाउ जगद्विशः ॥ इति संप्रार्थिते तेन नलगर्भेस सर्ववित् ॥ तुष्ट्वा तं द्विजं सम्यक्प्रमास मस्त्रीवमादिदेश ॥ सा

धु साधु महासत्त्व बोधिचर्याव्रतं वनम् ॥ सर्वसत्त्वहितार्थाय कृत्स्नसम्बोधिसाधनं ॥ तृणमाय यदा चित्तं दत्त्वा महाज्ञकेन ते ॥ जकृताञ्जलिस्तथा धर्मस्कं संप्रयाणं मस

गुप्म ॥ लोकज्ञो महायानं महदुत्कृत्य कथायितः ॥ सर्वसत्वहितार्थाय सम्बोधिसहितास्तथा ॥ सर्वमासमगात् ... त्वा धर्ममाज्ञाम्मुनीश्वरः ॥ कनकमुन्या ... कथ
गमानविष्यति ॥ इति ... त्वा यदि ... बोधिचर्यां व्रतं चरन्तु ॥ सर्वसत्वहितार्थेन सम्बोधिसाधनं ॥ श्रुत्वा इदं मुनीन्द्रेण ... कथितं मुदा ॥ तथा ... प्रस
न्नात्मा प्राञ्जलिस्तुष्टाधिया ॥ ... प्रणम्य ... तिर्मुदा ॥ ... पादाब्जे ... नामसुसंबोधी ॥ ... भगवान्सुगतः ॥ ...
जिनश्रियं ... नाम ... सादि ... ॥ ... सम्बुद्धस्य तथादाय ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य बोधिनये ... जगताम् ॥ श्रुत्वा इदं मुनीन्द्रेण ... लोकेषु
स्वर्भूता ॥ ... मुनिं ... लोकान् ... ॥ इति श्री महज्ञानकमालायां ... कनकमुनिकथाभगवद्याकरणं ॥
अथ ... विश्वभूप्रमुखा ... मुदा ॥ ... गत्वा ... सप्तवीरं ॥ भगवन्महासत्त्व बोधिचर्याव्रतं चरन्तु ॥ पंचकषायिताः काले बोधिं प्राप्य समं
स ... ॥ ... गताः स्म ... यामांसं गच्छत ॥ ... सद्धर्मं वाक्षि व्याकर्तुमर्हति ॥ इति संप्रार्थयित्वा मानसा विश्वभूप्रमुदितः ॥ समुपन्नस्य ...

श्री रा

विकुंसमाश्रयवनमबाधिवासिकां॥अथसमद्भवगच्छवाम्रगमांकिलाकायत॥वद्धप्रणामपनिस्कानांदत्वैवंसमणादिगत॥एतानिसमुपस्काप्यसमंघस्यगगच्छताः॥वा
धिविकुंसमत्याप्तगगनगनर्धगगाः॥गणायूयंसमालोच्यवद्धकृत्यंयथप्सिगं॥आयूर्वनियमत्वांश्चप्रार्थयध्वंजगच्छिते॥कथासर्वाधियप्ताकंसंसत्यंकिंजगच्छिगं
॥सम्बाधिमपिसंप्राप्यलविस्यथजिनाध्वनं॥व्यूढ्वाक्षोभयुतन्मस्त्रिकलगुजायसद्भियं॥मफेनलमयंकर्णूलसर्वसग्रमूदत्ते॥द्वितीयस्मैस्वशिष्यायसङ्कलगुजा
शिक्षेयव॥सफनलमयंकर्णूलवटकंसमुपाहत्य॥तृतीयायस्वशिष्यायजलगुजांशिक्षयसंत॥सफनलमयंपीठंददौगाढ्वाप्रमादयत॥चतुर्थीयस्वशिष्यायवग
गुजांशिक्षयव॥सफनलमयंदत्तुंददौसंबाधिसाधनं॥पंचमायस्वशिष्यायमानगुजांशिक्षयव॥शौवर्णमयगुंगानंदत्वासंवृद्धश्रीतय॥एतानिपंचवस्तूनिदत्वा
गास्मासंबाधयत॥पंचअपत्कायकान्सर्वान्कान्समालोच्यवमादिगत॥गच्छगमानिवस्तूनिसंवृत्यजगच्छताः॥दत्वासंबाधिविलंसमत्याप्तगगनादनाग॥गणश्च
वीपियूयंगत्वंवद्धस्वप्रमादगणः॥सम्बाधिक्षिनमामाप्तलविस्यथजिनाध्वनं॥इतिगात्सामेमादिष्टंजत्वासर्वपिगेमदा॥गत्वदत्तानिवस्तूनिगानिगृह्यगणा ११३

वनत्॥ गतश्च सहस्रागत्वा ससंघस्य गुरुर्गताः॥ मानिवसन्नपपस्याप्य प्राप्तयंगवसंगताः॥ क्रमात्कलिः पुरानत्वा सर्वसत्वहिताशयाः॥ बोधिचित्तं समुत्पाद्य सर्वार्थयत्र
वमास्थाय॥ तथैवं सर्वे विक्रुणोवयैव्रः गवसंगताः॥ तेसर्वान्तागतवान्वाक्षेव्याकृताः उगच्छिस॥ एकानि पार्थिते सर्वे तेगवोन्त सनीश्वराः॥ सर्वात्कालाहपालाय्य न
क्षिनसुसमस्य गत॥ ततः तत्र गवास्तुत्वा स्वाहत्कनतिनतिस्य गत॥ प्रथमं कान्तेरुगारव्यं तं समामन्त्रं स्वमादिशत्॥ साक्षीकनेउगाक्षेत्रि तडकात्यागच्छिते॥ हह स्व
वालिभनत्वं तथागतो भविष्यसि॥ ततनतेन भवंत्र स्वात्तत्रउअं ससवंविता॥ तस्मान्नितिनतिस्य श्रामसालीवन्वमादिशत्॥ साक्षेत्वं तडकेल्ये पितस्मिं बोधिं समापव
त्॥ संखान्ति ये मतिनीम तथागतो भविष्यसि॥ ततनतेन तेवंसगाव्योगत्तउअंवेतं॥ तस्मान्नितिनतिस्य श्रामसालीवे वमादिशत्॥ त्वंवापि सुमग तडकल्ये बोधि
मवाफवान्॥ सार्थवादिनिति ख्यातं तथागतो भविष्यसि॥ ततश्चैव समसर्वहस्तं वंगउअमादनात्॥ तस्मैननितिनतिस्य श्रामसामन्त्रं वमादिशत्॥ त्वं साक्षे तडकल्ये पि
बोधिंप्राप्य तगोच्छितं॥ आर्यपसन्न छद्रुख्याख्य तथागतो भविष्यसि॥ ततश्चैव सगाभ्यार्गवत्तउअं विलोकयत्॥ तस्मैननितितिस्य श्रामसामन्त्रं वमादिशत्॥ साक्षे

श्री रा

नेरात्मना ॥ नत्वा गर्हमुनीन्द्रं तं प्रार्थितं समुपावनत् ॥ तं दृष्ट्वा गगादेवा प्रत्नका संभ्रमादिकाः ॥ दिव्यसत्कार्यवाद्यानि वादयन्समन्ततः ॥ नानामृगान्विपक्षादिभि
र्विविधैर्वृतः ॥ सा स्वनाद्देवकन्याः सर्वरूपाणि समवर्षयन् ॥ सर्वेगमदिनाः तानः साऽतल्लयः स्तामितोयः ॥ विलोक्य गमनात्त्वमतिव न्यधेनमूर्धनि ॥ सा धेरा दे
महाता गसमपङ्कजमसंकुवाः ॥ प्रार्थयन्त्वं पात्त्वं प्रणिहितं त्वयाय यथा ॥ यत्क्षेगव्या कृतेवाल त्वमवसद्धार्थत्वतः ॥ इनामगेन इः रेवाप्पिंत्वनेप गमथियस्ति
॥ प्रतिक्षनेदृष्टा कृत्वा त्वावासमहर्षीत्वात्र ॥ जित्वा तत्रनं कुर्वन्कनाङ जिगगाहितः ॥ दक्षिणे मनभद्देवः समृदिगंनिगम्यसः ॥ पूर्वाहितः प्रसन्नात्मा ११९
सगवन्कमपावनत् ॥ कृतमत्राक्ष्य श्रमस्य तगवगःपनागतः ॥ उदहत्वतनासंगहमी ज्ञानूनिक्षयत ॥ सप्रसन्नमुखोऽसाऽरुः माऽऽलिनारितोकायत् ॥ नत्वा
गर्हस्य पादाञ्जं प्रणतेर्वंतनावद ॥ भगवन्नाथ सर्वज्ञ संवक्ष्यामि जगद्गुरुः ॥ ध्यानानामोतियागी तावसर्वविधतङ्कतः ॥ तामित्वपालयनत्वा दृष्टवदं ध्व
वर्मजेत ॥ सर्वडयार्थसंहार्यविक्रवर्त्तिविलपाशिः ॥ तडद्रपीप्रसन्नात्मा त्वक्षपिविक्षिगाद्वियः ॥ नदमिकोगनीवत्तंजामसयन्सर्वमीथिकान् ॥ नत्वा रगेः कंपि

गामित्वं ह्रदविक्रुः मूमनूवतु ॥ नक्षात्रिगामिमंसारसमुद्रस्थवसंसनन्नु ॥ गुणसायप्रवाशीत्वं सत्वयु सागनाम्ब्ववतु ॥ सर्वतिमलपंकानिप्रक्षालयगुणाम्बव ८
तु ॥ दरुक्षौगायुयंसर्वदावंवह्निनिवाक्षलेन ॥ मक्रुसनकोविदापिवायंनिवसमावनत्ने ॥ ओवायामिमहालिक्रुः सर्वसत्वनि रशीकथ ॥ प्रवेर्यमिमरोध
र्मेनागं ङवक्रु गढ्डिम ॥ नर्पयमिजगस्थांकैः मेरुस्तिनिवमर्वदा ॥ प्रमर्दयमिदुस्थघान्दुस्त्वहांनिवपक्षिनाद ॥ प्रमक्रुमि मगन्धीनिदिव्यपुष्प ५ वानि
ले ३ ॥ नायमिमधनंवाक्यं वालविंकरुवह्निजः ॥ वेयनाशामिसर्वक्रुः सर्वइः ख्वेप्रभावकः ॥ समविकामिमत्वयुमागवेभ्र रमावीनी ॥ अनुग्रहकरीसर्व
मत्वयमिज्वद्वनी ॥ हक्षयक्षीगमानानीनवक्षमिवमत्कृनन ॥ सवभ्रूमूलयाश्विग्विगफूनिवेद्ग्रनायाने ॥ मानयमगजगन्धीकोन्ममद्वनन्हेवादशः ॥ १
विधाविधवमर्पाडादरुक्षौगरुक्रुनं ॥ क्रुनगीमुपुराक्षीदेगमङ्कड ५ वादिनः ॥ प्रवावयजगत्सर्वपमंस्यरुवाक्षनः ॥ कल्पवक्षा ५ वामित्वंवा १
क्षिगार्थरुलप्रदः ॥ अविमर्दर्षगामिगनूमानिवपक्षिणिः ॥ निर्विकल्याविदान्नालास्रहमस्य गोपक ॥ शून्यमवजगत्सर्वंमीक्षमत्वमसंस्थितं ॥

श्री आ

मंयंदवमुपासत ॥ तस्यतस्येवनृपत वाक्यमन्त्रांप्रसादितान् ॥ तस्यत स्यानृसारेण कृत्वा धर्मानुवाचिताः ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याउ यथं जगछित ॥ तथा सर्वान्तु मछितं म[illegible]दवांश्च
पिप्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याउ यथं जगछित ॥ तथान्यानपि सद्धर्मे दर्शयित्वा प्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याउ यथं जगछित ॥ भिक्षून्विद्याधरानन्यांश्च तान्
समार्याननाप्सनागणान् ॥ सर्वान्धाकाधिपांश्चापि सजनसेन्यवाहनान् ॥ गन्धर्वांकिन्नरानन्यकानगुह्यकानाऽऽसानपि ॥ कुम्भाण्डनानृजान्नागान्तरंगप्रगापिभावकान् ॥ प्र
पर्वसर्वसत्त्वोश्च नानापायेषु प्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याउ यथं जगछित ॥ तिर्यञ्चानारकीयांश्च दर्भयान्त्रिर्मिताक्षिनान् ॥ कृत्वा पार्विशिगानसर्वान्सुख १२६
मयंसत्त्वोलयं ॥ तत्रतान्सुखसंप्राप्तांसंबुद्धगुणतावितः ॥ पविशुद्धागयान्दृष्ट्वा याउ यथं वसंवत् ॥ तत्र श्रीतिन तान्धर्म सर्वान्तोन्याचि बोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रति
ष्ठाप्य याउ यथं जगछित ॥ ततः सोऽयं महासत्त्वो बोधिसत्त्वः प्रमादितः ॥ जिनलक्षणं कृत्वा चयपूर्वोधिसम्बरं ॥ ततोस्म सः सुनाक्षि त्वा उ त्वा धर्मप्रसादितः ॥ सत्सप्रा
सर्वेनांकृत्वा वर्षयपुञ्जगछित ॥ एतान्सर्वान्महासत्त्वो बोधिचर्यासमन्वितान् ॥ जगछितवानान्वाः ४४ कुर्यामप्यविवर्तिकान् ॥ एवंम स्मनधं कृत्वा तत्र यू[illegible]गनेवं

गताः॥ तानपि समतीत्यान्ये दूर्यामप्यविवर्जितान्॥ तथा त्रयस्तु सत्कर्मैर्वृद्धकृतवस्तिनिमिताः॥ सुगमं दर्शयन्धर्मं वान्यं यं न वाञ्छति॥ यत्र तान्निर्मितान्यज्ञानतमोऽच्छ
संप्रसादिताः॥ गत्वा नरसमागमयरुजयः प्रज्ञयादिताः॥ अपि मे नमः कृत्वा भमनः प्रज्ञयागताः॥ प्रबुद्धस्तत्त्वं ज्ञात्वा प्रव्रज्यायां गच्छति॥ तां श्रुत्वा ज्ञानयान्ते
स्थितिनन्तयगवाञ्छितं नः॥ क्रियानधर्ममानस्य दशमयं यं यदीप्सितं॥ गत्वा ज्ञानाधिमत्कायसंसारान्विनतास्तवाः॥ गान्यर्थाच्छुभवक्तायानयाजययं प्रवाधयन्॥ यपि म
क्षाधिमत्कायं संसारगामिनि सत्यताः॥ सर्वान्प्रश्रयकायानतान्योऽजयं प्रबाधयन्॥ यच्चो तर्वाधिमत्काश्च सर्वसत्त्वहिताय याः॥ तान्नत्वा नमः यानयाजयं यं
क्षाधिमत्काश्च संसारगामिनि सत्यताः॥ सर्वान्प्रश्रयकायानतान्योऽजयं प्रबाधयन्॥ अपि सर्वे समागम्य नमः प्रज्ञया महा॥ सत्कारेषु समुपस्क
तागच्छितं॥ एवं यं यपि मां दृष्ट्वा स्वेत्वा वापि प्रसादिताः॥ अथ त्वापि मनसा ध्रुवं रुजयः प्रज्ञया दत्वा तु॥ अपि सर्वे समागम्य नमस्ते प्रज्ञया महा॥ सत्कारेषु समुपस्क
य रुजयः शरणं स्थिताः॥ कोऽपि तस्य स्तुतं मनसि स्वात्वा धर्मे ज्ञानं साधितं॥ धर्मानि साधिताः॥ कोऽपि तस्य नयं प्रगच्छितः॥ कोऽपि तस्य धर्म आपादि कुलार्थिनः प्रमादि
ताः॥ स्थानाय लिहुलप्रापतः प्रमादेनाश्च कचन॥ सकृद्रागेभिनः कोऽपि कृथे नागमिता यत्र॥ कोऽपि तत्र ध्रुवं सत्कर्मवनयु बोधि वाञ्छितः॥ सर्वपि गम

श्री आ

प्रतिष्ठाप्य सतगमनकर्ठमिच्छसि॥ यथा नवांछितं सर्वं मिष्टान्नं तथा खलु॥ एवं कृत्वा जगद्गुरुं तद्कीर्तिं मया प्यसि॥ एवं धनवीर्य भावाधिसत्वं प्रमादितः॥ सा
शांतिसंयुतं नत्वा समीक्ष्य वमता पगः॥ नवीर्यभवमेस्तावांकलोप्ता गविमाकर॥ यथा वीर्यमसत्ता र वलोकः गमन्त निष्यसि॥ यथा मत्तानिशां तं वतलथमि
श्रुतं कृतं॥ जगत्कं मान्विनि हत्वा सक्रमं कीर्तिं मा प्स्यसि॥ ततः स्थायस्तत्त्वं ऽपि वाधिसत्वसत्थमृत॥ साधुः तिसंयुतं नत्वा प्राह वं संप्रसादितः॥ दृढवीर्यसमु
त्साहगुणवान्स्वयं सपानिधिः॥ तवैव कृं जगत्सर्वं भावयिष्यं संभिक्षसि॥ तथा मिष्टान्न सर्वंगप्राप्ति क्षणे त्वं यथा॥ संस्थाप्य निर्वृतसर्वांनिर्वृतिं सौख्य मा प्स्यसि॥ यथा
त्वं विमलं ऽपि वाधिसत्वादिमादितः॥ साधुः लिसंयुतं नत्वा प्राह वमति लोकयत्॥ कृपाकानृष्यत द्धात्मा जगद्धर्ता तविष्यसि॥ तथा प्रतिक्षणं तं तथा सर्वंम
न्त्रणां॥ सर्वगवलक्षवीर्यं बोधिसत्वस्तथा मृत॥ गा कार्तं तं सुनत्वेवं प्राह पं पन्नाः ऽतिः॥ कलौ सौख्यकृत्त लोकं बोधिं प्राप्नु यदिच्छसि॥ तथा क्षणं गतेः
क्लिष्टप्रतिविक्षसमन्त्रणां॥ ततन्मादनां कृत्वा श्रीनिश्चलापि समागतिः॥ सन्निधौ त्वं प्रसन्नं सर्व मान्यपगम ऽनुगा ऽलिः॥ संबोधिज्ञानमाप्नुयस्तुमिक्षनं १३३

कृतं यथा॥ तथा गंभि कृत्वा वाधिवर्यो बृगं कलावपि॥ वत्सतं दर्शनस्थापि वाधिमत्वां गिरर्षिगतः॥ साञ्जलिकं गुरुं नत्वा समीपं श्रोव मताप ग॥ अथ हा हाल प्रदीपं समत्व को गान्धे
नागनं॥ तथा कालो सम्यक् कृत्वा नपुवान यजगद्गुरु॥ तथा सर्वे मला मल्ला वाधिमत्वा प्रभाभिताः॥ साञ्जलयः प्रशस्तैर्वं गो गानं गं समयवित्॥ धन्यासि त्वं महावीन यत्को लौ वाधि
मिद्धमि॥ तथा यं स्तुति क्षानेन गतिलकृतु जगद्धिन॥ तथा सर्वे पिलोकास्थ मत्सल समपापि त्रिताः॥ मद वामस्त गन्धर्व कि न्नरा भिकृत्य कलाः॥ विद्याधरा श्च नागाश्च गत अ
नाङ्गमाञ्जपि॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि समक्तिवत्सपार्श्वगाः॥ आग्रु … कृति याश्चापि वे … रथे गताः॥ मानुषाश्च … नोन्यपि पक्षि … जगत्काचापि च॥ तथा नु मे
दमानालेक्षर्षिताः गत नम्रखोः॥ सम्प्रसन्नाननया दृष्ट्वा कृताञ्जलि पुटा मृता॥ आम … गं महातिहं … स्तवं … धन्यासि त्वं महाभाग सर्वमल्ल … तात्त्वरः॥ तथा यथा
प्रतिक्षानं गं संस्तिकृतु जगद्धिन॥ तथापानि ताः सर्वा पति पूर्वं यथाक्रमं॥ वाधिवर्यो हि सं पूर्णं वनं वाधिमवाप्नुहि॥ यथा फलं वशादिष्टं तथा सर्व समन्कृतु॥ य
थात्वया प्रतिज्ञातं तथा कृत्वा जगद्धितं॥ सर्वज्ञ हि जगत्स्वास्ता धर्मता जाम नीश्वनः॥ जगद्गुरुर्जगन्नाथ त्वया कवा … पो निरः॥ अ … वयं सर्वे त्वं … मनुवाति

त्रिरत्न शरणादि पारमिता चतुर्ब्रह्म ८ दशबल वैशारद्य प्रज्ञापारमिता अभिसंस्कार
प्रतीत्य निरोध शान्त उपशान्त दि नानाशासन् २

श्री आ

त्रिजगद्धर्मसंस्थानां विष्यन्ति मुनीश्वराः॥ तदा ते सुगताः सर्वे स्वक्षेत्रेषु च वर्त्मनां॥ आनन्दधर्ममाविध्य कनिष्यन्ति जगद्धितं॥ भवानपि महासत्वः कालोपंचकाधि
कः॥ बोधिं प्राप्य जगद्धर्मं काले विष्यति मुनीश्वरः॥ तदायथ पुनि म्नानं तथा सर्वार्थसिद्धमेन॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य कनिष्यति जगद्धितं॥ इति मत्वा भवानत्र जिनाल
यंगतः॥ बोधिचर्याव्रतं लाभः कर्तोऽत्र जगद्धितं॥ तत्प्रसादेन सन्निमित्यं पृथक् लवत्त मोहितं॥ तथापि पुत्र निर्विघ्नं भवतु सफलं॥ इत्यसौ विलयं यातु
सर्वतिस्वस्तु गवरम॥ सर्वजमंगलंयास्तु जयतु सर्वदैव॥ चक्रदुत्वा सत्ता सर्वे बोधिसत्वो जिनो अपि॥ अयं च भगवान्वाक्ये व्याकरोतु जगद्धिते॥ इति सर्वपि
लोका अपि स्तुत्वा जिनन्म नं॥ अतिव न्यप्रशंसेवं तत्रैव समुपाश्रयन्॥ याश्च तत्र पुष्पवृष्टिर्देवलोक विसर्जिता॥ सा सर्वत्र लोकांश्च प्रसन्नाया पतत्क्षिति॥
तत्पुष्पवृष्टिसंजातं सप्रशासं महानवं॥ जिनसुत्ता नत्वा सम्प्रान्वयं समन्कारः॥ तत्र जिनालयस्थाः सर्वे ऽपि मनुजादयः॥ सत्वोभ्यवानमादराज्जिनाल
यंतेययुः॥ तत्र पुष्पवृष्टिं सुश्रुत्वा सर्वसत्वाः भगवान्याः॥ बोधिचर्यान्संनकावद्भवबोधिभागिनः॥ तदा सभगवां सत्रकर्तुं सद्धर्मदिग्गनां॥ लोकपालाह 131
भद्रकल्पावदाने १

तंनामननभिम कांचमुक्त राज॥ तदस्मिं प्रसन्नमा सर्वलोकाय सुखवाति श्री॥ अवलोक्य जगत्सर्वं धर्मात्मा सम्बोदयन्॥ तत्र तस्मिन् प्रताप्य स्वालोका सर्वप्रविष्टि
नां॥ विविधान्नृप संस्थाने धर्मरत्नस्य पावनं॥ कश्चिद्दिव्यस्य नृपतेः शक्रान्नृपतेः कांचनं॥ कश्चिदग्निनृपते यमनृपतेः कांचनं॥ नैरृत्यानृपतेः कश्चिद्वरुणिनृपते
कांचनं॥ कश्चिद्वायुनृपतेः जलनृपते वापनं॥ कश्चिद्यक्षनृपतेः रुद्रोन्नृपतेः कांचनं॥ कश्चिद्गरुडनृपतेः कुम्भाण्ड राजिनापनं॥ कश्चिद्गन्धर्वनृपतेः सिद्ध
नृपतेः कांचनं॥ कश्चित्किन्नरनृपतेः साध्यनृपतेः वापनं॥ कश्चिद्गुह्यकनृपतेः देवनृपतेः कांचनं॥ कश्चिन्नन्दनृपतेः नागनृपतेः कांचनं॥ सुपर्णाः सदृशाः क
विद्यवकल्पासमापनं॥ विद्याधरसमासंज्ञ गन्धर्वसदृशाः॥ राक्षसमसदृशाः कश्चिद्ब्रह्ममूर्तिसदृशापनं॥ कश्चिन्नानासमाकारानाम्नधान्यत्र समेन्निता॥ एवं
सिंहादिजन्तूनां सर्वेषामपि पक्षिणां॥ संस्थाना कारन्नृपेश्व सदृशा स्वलेतांशिताः॥ कश्चिद्ब्रह्मपर्वताकाराः कश्चिद्वृक्षसन्निभाः॥ कश्चिन्नानाशो सादृश्यपुष्पा
कारारूपधापनं॥ एवं नानाविधाकारान्नानानृपसमाश्रिताः॥ धर्मराजं निषवकृष्णसदृशगात्रपनसमेनेः॥ कथन्नृपाश्चात्सर्वंस्वर्णकार्यं च राजन्॥ अथाशिला

श्री ग

निं कृनदि शास्त्रकृद्वानितः ॥ कांपिल्यपि महासत्वान्बोधिसत्वाश्च गच्छति ॥ बोधिचर्यानुसंस्थाप्य कृत्यासिंबोधिलाभिनः ॥ एवं सर्वांश्च सद्धर्मे ऽनुष्ठन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गप्रति
ष्ठाप्यवानयंयंऽगच्छति ॥ ब्राह्मणानब्राह्मधर्मेषु ब्रह्मन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गनियुक्तंवं वानययंऽगच्छति ॥ वैष्णवान्विष्णुधर्मेषु विष्णून्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गनियु
क्तंवं वानययंऽगच्छति ॥ शैवांश्च शिवधर्मेषु शिवन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गनियुक्तंवं वानययंऽगच्छति ॥ सौर्यांश्च सूर्यधर्मेषु सूर्यन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठा
प्यवानययंऽगच्छति ॥ वाड्डांश्च वाडुधर्मेषु वडुन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिचर्यासुसंस्थाप्य वानययंऽगच्छति ॥ ऊडांश्च प्लेच्छधर्मेषु बाधयिष्ठन्नुपलक्षक ॥ बोधिमार्गप्रति १२७
ष्ठाप्यवानययंऽगच्छति ॥ आरुन्यानाग्निधर्मेषु बाधयिष्यलाग्निन्नुपलक्षक ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्यवान ययंऽगच्छति ॥ यामांश्च यामधर्मेषु यमन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमा
र्गनियुक्तापिवानययंऽगच्छति ॥ नाकुमाताङ्गस धर्मेषु नागोन्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गनियुक्तंवं वानययंऽगच्छति ॥ वारुणान्वारुणधर्मे पाशिन्नुपलबोधयन् ॥ बो
धिमार्गप्रतिष्ठाप्यवानययंऽगच्छति ॥ वायवान्वायवधर्मेषु वायून्नुपलबोधयन् ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य याऽययंऽगच्छति ॥ यक्षधर्मेपि यक्षांश्च यक्षन्नुपलबोध

यन्न॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ उत्थानानेन धर्मपिबाधयन्ते गन्नूपषट्कं॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ देवाश्च दानवधर्मे देखन्नूपलं बाधयन्न॥ बो
धिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ पृथ्वीहकांश्च तद्धर्मे पृथ्वीन्नूपलं बाधयन्न॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ नागांश्च नागधर्मेण नागन्नूपलं बाधयन्न॥ बो
धिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ गान्धर्वानो ऊतधर्मे गान्धर्वन्नूपलं बाधयन्न॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ होतांश्च लतधर्मेण लतन्नूपलं बाधयन्न॥ बोधि
मार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ प्रेतांश्च प्रेतधर्मेण प्रेतन्नूपलं बाधयन्न॥ बोधिमार्गे नियुक्तैवं बान्स्य यं जगद्धिताः॥ पेशाचांश्चापि तद्धर्मे पेशाचिकान्प्रबाधयन्न॥
बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ गरुडान्बाधयन्त धर्मे गरुडगन्नूपषट्कथा॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ कोमानांश्चापि तद्धर्मे स्कान्धवन्नूपलं बाधयन्ते
॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ महाकालांश्च तद्धर्मे महाकालस्यन्नूपषट्कं॥ बाधयं स्थाप्य तद्धर्मे याजय यं जगद्धिताः॥ सेनवा सेनवधर्मे बा[illegible] सेनवन्नूपष
ट्कं॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजय यं जगद्धिताः॥ मातृका लकिकांश्चापि मातृकां बाधवन्नूपषट्कं॥ बाधयन्स्थाप्य तद्धर्मे याजय यं जगद्धिताः॥ एवमन्यापि विलाकांश्च

सर्वेलहार्षं गुरु स्रौ श्रेः वलि काल दु विवाद दुर्भिक्षरोग पर चक्र प्रत्युह बाल्पुत्र विद्वे सर्वं प्रशमितं यः स्यात्सेव अकृतत्वाच स्थनविप्रहा मुनिश्रा सर्वं सहे तो कथाको नतिबहु ॥ १ क
नर्मति पुनः शोभावं कांचन व हेति हे पुनर्वे स्याना कल्प पुनस्ता नाति रवनी नमणि रत्ने मध्य पुर्वं यावद् कलिष्ठ भुवनेता नोतिक ठरण्य गुण रीक्ष ॥

श्री मा

निरुक्ताव प्रवदन्य ॥ श्रुतमस्त ॥ एवं द्व्याः स्तनत्वा सर्वं गुरुत्वात लानुधां ॥ सर्वीत्याग तयं भार्गीं कृत्वा कृर्यः सन्वा तं ॥ गर्भाच्छ तानि नत्वानि निकाय्य कतुतिरूपमे ॥ सरूप
विमा दिकान्कृत्वा तजं पृथ्वक्ष्या मस्ता ॥ एवं तत्र पर्वे नैना कृ व पवित्र ऋ डिकोधिका ॥ त्रिनत्व तजना पूजा तदेय वाधि वानि तः ॥ तत्र अपि त्रियानेक सं मा ताद
धि पान गा ॥ सर्वाधिन तत्व मामध्य त्रा प्रयः सगताल्लेयं ॥ तथा शास्त्र कल्प कल्प ः कानिस्य उवन गतः ॥ दत्वा मां विन्दु नील खक्कितः पुष्पादि वर्धयन् ॥ ततः पूर्व
दवंद्व मक्रमीदृ शानान वाः ॥ त्रिनत्व एले ग दाश्चनि श्चनयुः ममकताः ॥ त कुदं वस मा क श्रीवृष्मराजा दयो मनाः ॥ स्त्रत्वा स्व कृत देवानियान यपकृथ उवि ॥
सर्वाति शास्य कर्छुद सर्व लोकाः पुज्या धिताः ॥ त्रिनत्व तनल हृत्वा च वयः सर्वदा तं ॥ तानि पुष्पादि त्याकारं गतत्वा विविधक्षे तवः ॥ नत्वानि स्वर्जनी तानि
निपतयपूर्वहि कल्प ॥ तानि दृष्ट्वा समामायम सर्वलोकाः प्रहर्षिताः ॥ दत्वा शेनोनि नी गक्षनिरुक्त कृर्य भिः थाकृतं ॥ नव गंधा गवः सर्वमर्व तरातलांधां ॥ स
र्वीत्याग तयं भार्गीं कृत्वा कृर्यः सर्वेरातं ॥ निक्षय तानि वत्वानि गतमे श्वपि श्चमुनि ॥ शेषावि मादि कान्कृत्वा तजयः पञ्चयामरा ॥ तत्पर्वे श्च पिमत

मत्स्य महापुरा
टीका कृष्णगुप्त
१२९

= तत्पातिःकुमेरु पुरा भयोपायात् काञ्चनवद्भिस्थितं हेतुःलाभि समये सिद्धिता कल्याकान्ते बलेशाविगुह्ये प्रगदे पूर्वा दर्शनिश्चतन पञ्चतीं पुष्पवृष्टिप्रवर्तनम्॥ पादङ्गानाद् कल्पेपि यथा पूर्वोक्तं॥ [illegible]॥

स्थाः शुद्धा स्थानस्थिता अर्थिनः॥ जिनन्तरगमनाय युक्ता सदय बोधिसत्वानिर्मिताः॥ यत्रनामाभिनिर्मितास्तत्र लोके सर्वत्र वर्तन्ते॥ सुकानि स्थानानि आश्रयोप सुखसुखानि प्रवर्षयन्तु॥ प्रा
कारणानि पर्याप्तानि [illegible] कुशलानि नेय॥ तत्वाध्योषध्यः नत्वानि निपतन्तु पूर्वं हितकृत॥ ममापि पुण्यं वर्षाद्विविविधधर्मसन्तनेनाथ॥ जिनन्तत्र नमो भाष्य निःखनयः समन्तान
॥ ततः कुद्रुमाकर्ण्य बुद्ध भगवान्दयामनाः॥ सत्त्वानां कुशलं नेदं बानि दानं यस्य सतथागतं॥ कथं कुद्रुमाकर्ण्य सर्वसत्त्वार्थं प्रबोधिताः॥ ततः शेषध्यानत्वानि समापा
यप्रमादिताः॥ ममपर्याप्तं सर्वान् निर्मुक्ता प्रमादिताः॥ जिनन्तमनसंकल्पा व बनय बोधिसत्वं॥ एतत्सप्रेष्य समन्तात्सर्वमन्त्रिणा पतताः॥ सहस्तमर्द्धि
सम्यग्ज्ञानं सर्वबोधिसत्वाः॥ एवं महाज्ञानवत्सापि तद्वक्तव्यं कतीयु रंगा॥ नानापायेर्जगद्धितं सत्वा संबोधिमार्थनं॥ सर्वान्सत्त्वान्विनोदयन्तं सत्त्वा संबोधिमाधिनः॥
नियमं जिनयानम् विदध्वं न विवर्त्तिकान्॥ एवं सत्त्वा न्विनोद्य निर्वृता पालिकाः [illegible]॥ याः बोधिमार्गे नायानयन्तं जगद्धिताः॥ एतमर्थं भगवान्दि [illegible]
ज्ञानं यदिच्छथ॥ ततो मां भगवान्बोधेक्ष्याकानां जगद्धितं॥ सर्वपि सुगतानाद्दष्ट्वा मनामयदि निश्चयं॥ मां तथा तान्मं बोधेक्ष्या कुर्वन्तु जगद्धिता॥ अथ वा स

श्री श्री

साञ्जलिः सकुन्तासस्य प्रणत्वा वचनमब्रवीत् ॥ नैवान्यस्त्वत्समो लोके स्थापयित्वा तथागतान् ॥ यत्त्वं सर्वगुरुस्तापसान् वावनप्रक्षामया दृष्टिः ॥ तत्त्वं गुरुप्रभुत्वाल्लोके सर्वविद्यागुणा

कनः ॥ धर्मनागामहाविद्यालविद्यामिमथाख्यातु ॥ तथावर्मिहगान्धापि बोधिसत्वः प्रसन्नधीः ॥ साञ्जलिः सकुन्तासस्य पादौ नत्वैवमब्रवीत् ॥ सद्ध्यानस्य कालोऽसौ भ

मानकर्मसमाकृतं ॥ इदं तेषां माद्य यन्तस्त्वा धर्मं बोधिं मवाप्स्यति ॥ तथा समन्तकोऽड्डापि बोधिसत्वानुमोदितः ॥ साञ्जलिः सकुन्तासस्य पादौ नत्वैवमब्रवीत् ॥ य

त्वयातवकोनानत्तोनामिभ्यं कृता भयात् ॥ गृहीतादस्य सर्वानां मांसात्प्रभेयशोभिनः ॥ तथा मान्द्रेर्गान्सर्वान्नानो यान्ते प्रवाश्चयं ॥ बोधिमार्गप्रतिकाव्यमे कृतं

बोधिं मवाप्स्यति ॥ तथा श्रावामहासत्वः प्रसन्नोत्मानुमोदितः ॥ साञ्जलिः सकुन्तासस्य पादौ नत्वैवमब्रवीत् ॥ अविद्याक्लेशसंस्पर्शानि मग्नाः कामकर्दमे १३

॥ गृहीता यत्त्वया मन्त्राः प्रत्यानन्तर्यकोनकाः ॥ तथा नानाविधाया ये सत्वान्सर्वान्निबोधयन् ॥ नियुक्ता बोधिचर्यासु कालो मन्त्री बोधिमाप्नुयात् ॥ तथा व गन्ध

हस्त्यापि बोधिसत्वानुमोदितः ॥ मञ्जुश्रीस्तस्य प्रणत्वा श्रीसाञ्जलिश्चैवमब्रवीत् ॥ यत्त्वं इदस्थम कृत्वा सकालो पंचकाषायिके ॥ गृहीतादस्य संगानाः सकृत्म

निन्दकाऽपि ॥ तथा तान्कष्टितान्सर्वान्नानाप्यायैः प्रबोधयन् ॥ नियच्छ गमसनवोद्य सद्धर्मकीर्तिमान्भूहि ॥ नलकोत्तमे तामस्त्वमस्थानन्मादिनागयः ॥ पाशो
तस्य गुणान्स्त्वा साञ्जलिरेवं समब्रवीत् ॥ ज्ञानशीलसमाधानशोभाकान्तं स्वयं क्षितम ॥ एवंकायत्वयासत्वो स्वार्थापवादकोऽपि ॥ तथा तान्यापिनाथ्यवं नाना
यत्नैः प्रबोधयंतो सद्धर्मसाधिनः कृत्वा धर्मकीर्तिमानितरः ॥ विगततयसंतापाबाधिसत्वापिभादितः ॥ पादीतखण्डानीन्स्वाञ्जहवं नविताञ्जलिः ॥ त्व
यान्तोस्व कलीमत्वा क्रूयपापगणिसंनताः ॥ एवंतात्क्षमिपापि दाक्षिणलेशस्यकाऽपि ॥ तथा स्वं तामसहाति हृडाति तार्थैः प्रमादयन् ॥ जिनलपनेरसर्वी
न्नियमसमयारेभतरः ॥ तथा यात्पलत्क्षापि बाधिसत्वान्नुमादितः ॥ माञ्जलिः संकुनास्मस्यपादोन स्वेदं समब्रवीत् ॥ कृपाकान्त्ववीर्यत्वं जित्वा सर्वरि
स्वार्थिगतान् ॥ वनयानन्तरं क्षान्तिपापिष्ठानपि दृष्ट्वा वितान् ॥ यथा तिहितमंवं तं सर्वे तास्मद्य [illegible] कृतं वं ॥ तथा सर्वीन्स्मसत्वान्ला त्वा सत्कीर्तिमाभूया
॥ फिर्ह स्वज्ञानकीर्तिस्थ बाधिसत्वान्नुमादितः ॥ वनरजो सकुनास्मस्यनत्स्वा हवं वञ्जलिः ॥ क्षमारागमपगपो स्वं मानवलं प्रमर्दयन् ॥ गोमसद्द्व

श्री जा

घ्यं दत्वा संप्रेषयन्ति स्म ॥ अथ सर्वे महासत्वा गच्छन्ति संप्रसादिताः ॥ स्व स्व गृह स्थानमानम्य स्वस्व संघे समन्विताः ॥ वस्त्राभरणविमलं पुष्पं समादाय सहोत्सवैः ॥ स्व
स्वकुलानुशिष्टकाऽऽगत्य समीनः समन्वयुः ॥ सर्वे गत्वा संप्राप्तानन्तगर्भं मुनीश्वरं ॥ सभामध्ये समासीनं समीक्ष्य समुपाचनत ॥ सर्वे ते समुपाश्रित्य अनन्तगर्भं मुनी
श्वरं ॥ विविधपूजोपचारैस्तं समाराध्य यथाक्रमं ॥ ततः सर्वेपि ते नत्वा लोकनाथं कृताञ्जलि पुरतो मदा ॥ तस्य गर्भस्य पादाब्जे प्रणामं कृत्वा नमस्कृतः ॥ ततः स समनीक्ष्य
सत्वः स्कंधं विलोक्य ॥ महाकारुणिकः श्रीमान् मिति व्यविकल्पयत् ॥ ततः स तं समालोक्य विज्ञाय समुपोषिताः ॥ वन्दनं विमलं पुष्पमुपस्थाप्य वंशध्वजतो १३८
धन्यासि त्वं महासत्व साध्वस्तु प्रबोधिता ॥ कश्चिद्दःको गतं दत्तं सिद्धं तुग समीहितं ॥ इमानि सुगतो सर्वे पथ्यादि प्रतिमानितं ॥ एवं कृतो गतवसपिसा
वकानश्च प्रपिकः ॥ यत्त्वे यावत् बालाकाञ्ज्ञसंत्वेयाः प्रबोधिताः ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य सुगताय बोधिचित्तः ॥ समसर्व बोधिमासाद्य धर्मवज्रं समन्ततः ॥
लोकप्रवर्त्ययित्वा पि वानेयि घ्यंकितो यतः ॥ धन्यासि त्वं महासत्वः मत्तत्वषाऽऽगतस्त्व पि ॥ सन्निपत्य सत्त्वजन्मा अथ धर्मार्थ कृद्भिगं कनः ॥ यथा त्वया प्रगृह्य तं

कलौ वद्ध यताफय ॥ तथा मिथ्यात्व सर्वज्ञ जयतु सर्वदा भवान् ॥ अस्मानपि च सर्वांश्च सदा यथ्य कृपानिधे ॥ कृपयानुग्रहं कृत्वा समुद्धावयितुमर्हसि ॥ ७ ॥ एवं बोधि
सत्वोसे सर्वद गदितागताः ॥ विनायकं महासत्वं शरणं गत्वा समुपाश्रयन्तु ॥ ॥ तथा सर्वे गत्वा ब्रह्मणः समागताः ॥ बोधिसत्वा महासत्वा महायान
समाश्रिताः ॥ प्रत्येकयानिकाश्चापि श्रावकयानिकाअपि ॥ शैलकावासिनश्चापि तथा चापासिकाअपि ॥ सर्वे शक्रादि देवेन्द्राब्रह्मादि लोकपालकाः ॥ सिद्धा विद्याधरा
माश्च यक्ष गन्धर्व किन्नराः ॥ राक्षसानाञ्चाश्चापि कुम्भाण्ड प्रेतभूताअपि ॥ नागाश्च गरुडाश्चापि तथान्यत्र महोरगाः ॥ असंख्याता योगिनश्चापि यत्र यत्र व्रतपालिनः ॥ ब्राह्मणाः
क्षत्रियावैश्याः श्रेष्ठ्यादि कुलपुत्रकाः ॥ अन्यापि समुपागत्य सर्वत्रगं मुनीश्वरं ॥ दिव्यपूजोपचारैश्च समभ्यर्च्य प्रणेमिरे ॥ तत्र ते समुपासीनं महालोकानुशिक्षितं ॥ ढ स्व
न्तिकाः सर्वे तत्र समासीनाः शुश्रूषवः ॥ ॥ अन्यापि त्रं महासत्वं सर्वसत्वहितार्थकः ॥ यथा तत्प्रतिश्चनेन सर्वविमिथ्यात्व सर्वथा ॥ साधर्ज्ञतमस्ती यमगत्वाहं कुगच्छिमः ॥ य
स्वयावहयालोका बोधिमार्गेनियोजिताः ॥ सर्वेपि समहासत्वा बोधिचर्योत्रिगा यताः ॥ यथा हि वां श्रीमत्कालेवापि यथाक्रमं ॥ संबद्धयदमासाधर्मविकल्पवर्द्धिकाः ॥

श्री ग मार्यलिपिगणितास्कंधं ममपाणिग्रसहतुंनं॥ लिपिगणितकलाविद्यापारंगत्वायथाक्रमं॥ सर्वाश्चवादिनाम्निंत्वाशनून्सर्वान्सुमारयत्॥ सतयान्विचिमितान्कृत्वापाठययं
जगाद्धिता॥ यौवनंसर्वांगिनत्यादिकलाविद्यादिवक्रथान॥ सर्वाज्ञित्वासतडाश्रीः॥ तार्याःप्राप्यसमहकृत्॥ नमित्वादर्गयेन्वर्मितंसानक्षितिसाधनं॥ सर्वसत्वहि
ताक्षनसाजययंजलपिताः॥ ततस्संवादिताद्वेः सर्वश्चतगर्भन्वपि॥ विनक्रानागवर्मासत्साधयिर्जगाद्धितं॥ तातार्यानिःस्पृहत्वाक्षमाकृत्सर्वपविग्रहा १२४
न॥ देवेन्द्रध्वविताताब्धौ तत्सूनात्रिगर्भाज्जगत॥ ततानरध्वलिनिःसम्यक्तादवेर्विमाविनः॥ कित्वातिनास्वयंवाभान्कोपायवीवेवाहृतः॥ अर्वीधामात्रभृवे
त्सतत्कार्येनहिताविनः॥ ततोगिनोगयाशीर्षगत्वेकाकीसमाश्रयेत्॥ तत्रासनसमारूढयमस्त्ववीहकृतंनतपः॥ कृत्वाविलापयन्वाच्येयाजययंसत्वानपि
सद्भुर्वाङ्गितद्स्थ्योयतीर्थलाल्वाविशुद्धधीः॥ शुद्धयादरूमातृधूपायंसमस्तापमं॥ वाधिवक्रनतगत्वापर्यंकसमपाश्रयत्॥ जित्वामानगधान्सर्वान्समा
धिनिहिताभयः॥ सर्वाधिहानेमासाप्यसमवहुपदसाप्रवेत्॥ ततोहिहाजगद्धाकालयंतगवाजिनः॥ ततःकोपीप्रदगत्वामगोवावजिनाश्रमं॥ स

वीवर्णीसत्त्वान् धर्मासनसमारोपयन्॥ तत्र श्रामणेरादिश्रावकसंघार्थिनश्च॥ आर्य्यसंघं समानतो धर्मं च क्रमं प्रवर्द्धयन्॥ बोधयन्सकलान्सर्वान्श्रावकान्समानुषान्॥
विनीय संगतधर्मे याजयन् यतिमार्गे गच्छितः॥ एवं तत्र भिक्षुश्रावकान्बोधिचर्यां प्रदर्शयन्॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य याजयित्वा जगाम हि॥ तत्र श्रमणस्य सत्त्वानां तीर्थिकानामुपाश्रितः॥
॥ अनुयायानां तीर्थिकान्सर्वान्विनीय प्रतिबोधयन्॥ प्रव्राज्य शासने बौद्धे संघे च स्थापयामास नापि॥ कृत्वा त्वश्रवकान्वा क्षेत्रे यज्ञयर्यं जगाम हि॥ एवं स्वशासने तत्र धर्मे विनायके॥
धर्मानवान्॥ सर्वांश्चाकान्विनीय च धर्मसंघे प्रतिबोधयन्॥ प्रव्राज्य शासने बौद्धे नित्यं कृत्वान्तर्वासं निवासयन्॥ संघकर्म चरकान्नित्यं सर्वाम्यावसथिनः॥ कृत्वा तत्र तांश्चिकाश्च
प्रतिजनस्तथैव प्रतिष्ठापयन्॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य तानयं यज्ञं जगाम हि॥ एवमन्यो यथा दुर्लभमानन्दकं त्यागिमानिनः॥ दुष्टानपि इन्द्रवान्नकं शाकं गतवानितः॥ आर्यापवा
दिनश्चापि सद्धर्मनिन्दकानपि॥ पंचानन्तर्यदुष्कर्मवाचिरान्यानि पापिनः॥ एवमन्यानपि क्रूरांश्च दुर्निर्वारणि तालतमान्॥ निर्दयान्क्रोधिनान्दुष्कान्मातृघातापि
पापिनः॥ सर्वान्क्रूरान्समावर्ज्य विनीय प्रतिबोधयन्॥ क्षयन्तर्वपापानि कृत्वा च विमलाशयान्॥ कांश्चिद्ध्यानकान्कालांकांश्चिच्चैलकानपि॥ कांश्चिच्छ्रावका

श्री ग्र

यत्र ॥ भासनमम्हासत्वं प्रतिष्ठाप्य श गच्छन्ति ॥ समाप्य सर्व कार्याणि संख्यायां निर्वृति स्वयं ॥ निर्वृत स्वामि मध्ये तु महा गर्भ प्रतिष्ठित ॥ सत्कृत्य पूजितास्तोत्रैस्तथा कुर्या
द्गच्छन्ति ॥ एवम कृतं तु वैशुं गं सत्वाने ८७ क्रियामृता ॥ तत्रैव स्थापि संख्या धर्म वस्त्र विवर्द्धिकाः ॥ गते मध्ये स नयवम् द्विकाः पदस्थानकाः ॥ ज्ञियान धर्ममान स्वदृशा
ययुर्ज गच्छन्ति ॥ सत्त्व कर्म प्रसन्नार्थ ८८ यु ८७ क्रियामृता ॥ तपस्विन स्वर्ग सत्वा संख्या धन विवर्द्धिकाः ॥ एवं गदनमाद कासकर्म रूपकं मृता ॥ तत्र यू स्थापि संख्या
धर्म विर्य नवि वर्द्धिकाः ॥ यायेन्ना कार्हि भार्व मा निर्वृत स्वामि मध्ये उवि ॥ तावन्ने क्रोड्ये स्थापि ह्लिस्वाक्ष पर्यांजं गच्छन्ति ॥ भगावर्ष सहस्राणि मत्कर्मैः कार्हितं उवि ॥ प्र
त्या पर्द्द स्थ सासत्वा निवि धक्कु क्ष विधार्ति ॥ तदा तत्ता प्रमुखा कृतकृत्य प्रतिन्नू पक ॥ पंचवर्ष भावा स्यव सर्वतु प्रवयत्कुवि ॥ सैकापिच्य चेम महा उत्स पानां प्रति
नूपकाः ॥ गोनापि यननाल कृता ८७ यू ८७ क्रियामृता ॥ तपिस्वविमलात्मानः ॥ सोमागस्य गिरा विनः ॥ बाधिसत्वा महा सत्वा सर्व यत्न विवर्द्धिकाः ॥ सत्कर्म
प्रतिन्नूपंगक्ष गायय यूध्व यननाः ॥ तपिस्व विमलात्मानानावयू बोधिरागिनः ॥ एवम् दृश्य तं कृता ८७ यू ८७ क्रियामृता ॥ तपिस्व विमलात्मानानावयूवी १२८

धिगाणिन॥ यथा यत्र न भाद क्व क्व कर्मणा धर्मं मृगा॥ तत्र यस्यापि सत्त्वा गवय यद्धिगाणिन॥ एवं तथापि यस्त्वा मत्वा मस्मन संमृगा॥ कृत्वा तत्र यथा त्वा
यगोपि सर्वाधिगाणिन॥ यावन्ना कोर्हि तत्र मापि म कर्म प्राणिनः पयाः॥ तावन्न कुर्व धर्मापि किं त्वा कुर्या जगाद्धितं॥ तत्र थान्कोर्हि तो गलिन्मा कर्म प्राणिनं कथ॥
ननाम कुर्व धर्मापि व कथ काश्च न प्रक्रमं॥ नत्राधे काश्च नव प्राणिध त्त्व संप्रत्तामय नु॥ तत्त्वा कन्ठ मतिनीम वर्ण यस्य दिन्विवम्॥ पनाम व सत्यां वत्तां कथ
मामसमकानय॥ दुर्हिंमं महत्त्वाणं त्वं वत्त त्वोन कानकं॥ त दुर्हिंमं महात्वां सर्वत्रापि वन्तर्हि॥ नदकापि गदत्वानं गमस्थितं नगक्रयां तं॥ मदाससंहितं कृत्वा क
निस्थत्ते वनस्थितः॥ विविधं सत्त्व तत्रार्थ पृथ्व वृद्धिं प्रवर्धयन्॥ तत्र गंसः नपृथ्वी स्वधस्त कर्म गुणं प्राप्यमः॥ जिनेन्द्र गुणं गणार्थ निश्चयं युः समन्कं॥ तक्क
सं प्रस्तगं त्वां प्रम गक्रादयामनोः॥ स्वनकं स्वस्त देवानिवानयथ्य कथां कुर्वि॥ गायेव गच्छ दमाकर्णे मर्व मत्वा प्रवाधिगाः॥ जिनस्त्र मनगं कृत्वा प्रवय
मृत्युग मेरा॥ गानि मृष्यानि वाकारणं तत्त्वा मण्डलकां वनाः॥ विविधक्ष कर्तुं यानि निपतं पूर्व हीनतां॥ गानि ड्यानि संगृह्य सर्व लोकाः प्रमादिताः॥ दत्वा दाना

श्री आ पर्यपर्थिता गम्याः ॥ अत्र प्रवर्द्धितास्यासुभं गंविलोक्य समादनात् ॥ कंमनीलंद्रु समतर्व्यी नत्वामाऊलयाम्रता ॥ मशकानूनिकं संचसम्झनवन्दर्षयत्र ॥ मकसुर्वापि नलोकाः
श्याक्रलिपृयम्रता ॥ मस्यपादोन्वअनत्वाप्रगंस्ये वंदनाविधः ॥ सार्थसाधमनाना गयत्स्यैवं अंगगच्छिनं ॥ प्रतिक्षमनंनसंवाशेष्प्रतिक्षामहनीकृता ॥ मत्सर्वप्रतिक्षनंनप्र
तिहावयथाकृता ॥ मथमितिक्रतुनिर्विघ्नं संवक्षानां प्रमादनः ॥ मेन त्वं सर्वसत्वानां कृः स्वल्कासरवार्थकृत ॥ मनानेयसक्तनामित्राणानाभः पवायनः ॥ मथमम
वपूर्यगांसर्वायथ हाणाअगच्छिम ॥ मथामिवांछितं सर्वमन्निर्विघ्नं प्रमिक्रतु ॥ मथायं लगवास्कृत्काधर्मनाशामृनीश्वरः ॥ संवाक्षेव कमायांखा व्याकनाउगगच्छि १३१
म ॥ कृत्स्नाम सहालोकाः प्रभंस्यगंमलांगयं ॥ अतिवन्स्प्रणत्वाच समागतः प्रमादिकाः ॥ ताश्च मन्तगुक्रापि वाशा मथेनिभर्त्स्यंतन ॥ मकासतत्वं गमान
स्य प्रगं स्येवमलापत ॥ अहायनमगर्मानि वृक्षिः सरवंषनाप्रिगः ॥ दयाकानूद्धेमसम्पन्नः सम्बाधिपथदर्शकः ॥ मत्वंपेशाउकलोकगास्को सन्मार्गदेशकः ॥
सम्बाधिसम्बवावोर्था लविष्यसि दितार्थकृत ॥ मन्निषम्यसमालोक मथावलोकिनिश्चनः ॥ नत्वासमझनर्भगंसाअंतिमयमद्ववीत ॥ सर्वेश्वगाकषलवा
सं=

नमस्काक्षतीन्द्रियार्थेष्वनतीन्द्रियचक्षुषे ॥ कर्मापि येश्वर्यमिहेन्द्रियासंगताविष्यगसौगतधर्मकाणां ॥ तथाप्यसुकरालोकः सर्वस्यार्हन्जितेन्द्रियः ॥ अद्रिभिछिद्रसमास्या
तविष्यगितुतार्थरूप ॥ नष्टकृत्वाचमता स्मामप्राफउ स्थायमाज्ञस्त्रिः ॥ पार्षीतस्य गुनानंत्वापस्तु ४ ह एव मखवीग ॥ मत्वकार्येम हस्रादीं कृगलार्थसमुच्यगः ॥ वह
भिज्ञानिकानूर्ध्वे महापवममेम्नाति ॥ मत्स्वमसंरूपलोकानां धर्मनाशविनायकः ॥ सर्वातिलायमेतलोलविष्यमिनमेगयः ॥ मेघूत्वामनपापिलमसकृपीनपि
साज्ञस्ति ॥ सकृनाकस्य पादाक्रुपेऽस्त्वेवमताघ्रत ॥ ६ ट्वीर्यसमाश्चनदनपहृाविचक्रस ॥ पूषुम्ि धाउपैलापागवंमित्वंहितार्थकरु ॥ तथागम गेम्मज्ञापिवा (
धिमत्व ४ हलाज्ञे स्ति ॥ पादाक्रु सकृषाकस्य प्रमत्वेवमताघत ॥ एवंदकं स्त्वया घनं सत्वस्य ४ देपयप्सितं ॥ गनत्वंक्रीधका त्वपिजगन्नो थमलविष्यति ॥ तथास
मत्यितांवमकृदप्रहृावतामकः ॥ साज्ञस्ति ४ मकृनाकस्य पादानत्वेवं मखवीग ॥ यथाकोंगं हविक्रीर्ण भवंगकन्नूधागार्य ॥ त्वयासंबाधिमागाीपं सत्वस्य ४
संपदर्शितः ॥ गनत्वं प्रियगेन्नो थमलविष्पेस्तिउ आकानः ॥ यथारिवांछितं कार्यं सत्वानां गसमेदृक्तउ ॥ गन्त्रिगम्य प्रसन्नात्मा वगवेगावनापिमः ॥ मो

श्री ज्ञा

र्गान्वक्षरूपस्थिविते ॥ समयवापि संघ ॥ ध्येयाकमाति जगच्छति ॥ पतितोऽप्यत्र मान्यवत्कुर्वन्नाति गच्छति ॥ सर्वेपि बोधिसत्त्वाः सद्भुसनलितमाप्नुवा ॥ यथाक्रमं समानस्य सं
बोधिसाधनंत्रतं ॥ संबोधिप्राप्तिधानं न संवनकंज गच्छति ॥ तत्र कापि कलोपंव कषायिं जराप्यपि ॥ संवृजयदसंप्राप्नुं नोत्सेने जगच्छति ॥ तत्रैवाक्रामत् रमाविह्ला मस्ता
कानुगिकाः सधीः ॥ संबोधिप्रतिधानं न दक्षाति बोधिसत्त्वं ॥ वर्द्धक्षापि समास त्वान्नानापाये ध्रुव बोधयन्तो ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य त्वानयं ति गुणावनिं ॥ कालोयं याज
गत्संचे कषाय याकृतं तंदा ॥ तदावद्धपदप्राप्तुम् त्सगतकास्थन ॥ क्वचिस्त्वासमरूजलापापातान्न धर्मावादित ॥ कालो जगच्छिन्नं कर्तुं संबोधिं प्राप्नुमिच्छति ॥ १३
सत्त्वभोलाकर्षकोद्व त्यापान्यां दुर्दमैर्जनैः ॥ सत्त्वापीकृत्न श्रुत्वाशिव कृत्तं समापितं ॥ बोधिचर्यामार्गं वर्धन्तम् क्षमत्निं गमत्यक्ति स ॥ सम्बोधिसाधने द्रुमे
र्लोकान्विहर्तुमिच्छति ॥ पापिष्ठानपि सत्त्वांश्च दुर्गपापानमानपि ॥ दृष्टान्त्वाभेयान्यान पापकवानि ध्यापिक्ष ॥ आर्यापवादिनश्चापि सद्धर्मनिन्दकान
पि ॥ बोधयित्वा प्रयत्नेन विनाशपतितान्बोधयन् ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य त्वानयितुं जगच्छति ॥ बोधिसत्त्वान्महासत्त्वान्सर्वान्कर्तुं समिच्छति ॥ एवमित्यत्र

तीन्द्र स्मन लगार्हस्य सकृता॥ पुनरु समपाशिय पादोन त्वा समाङ्गलितः॥ कलौजगच्छिदं कर्तुं सम्वार्थिप्राप्तमतातन्न॥ निवर्थेवं प्रतिज्ञाय पार्थय सोगानं पद
॥ एवं गत्वाथिनि इद्दं स्वा सर्वलोकाः समाप्तिमाः॥ माङ्गलय प्रशंसां गंडाम्रःधमवमद्भवन्॥ धन्यातित्वं महालागयथैतत्वमाधना॥ समाख्याय प्रतिज्ञानां गंथस
र्वं समप्रभुउ॥ भगवानपि मुनीन्द्रायं सपयान्त्वां जगच्छि ग॥ तथा व्याकृतसम्वाक्षवनरुत्क्रान्तुं सर्वदा॥ उक्ति सर्वसमाख्यागंगुं त्वासंमृदिता भयः॥ व्याकान
ती समालक्ष्यं संस्थितमनुः परः॥ तथाक्रिंणं तमालोक्य भगवान् प्रसादितेः॥ सनम्रिवांसितं मुख्यं नरीय तिप्रकोणयन्न॥ जगत्कृते संज्ञानं लामिकाम्या
दिवो उहै॥ सर्वत्र जायते लोके यक्षतिमन्यगनान्यथा॥ गद्य स्यं यदि वो वा स्थं विघ्नं गांहिजालमं॥ नत्लागर्लसमकृमं ज्ञ्ञं वापि यदा ख्यथा॥ गजस्पर्धं मन
लस्य पगत्वा वनधा म्वृज्ञ॥ अस्य लवधं धकोशात्वं पृच्छागत्धा तसदृशं॥ गत्वा गं व महासत्वं सहावानुध्धिक द्विजा॥ उच्छ्रय प्रश्निवांशवागच्छधं पण्यमादनानु
सां धेयानं प्रदत्वास्य यशावणैनु पीर्लिने॥ सर्वाश्राकान्त सीसीनानन्दय ध्वंजगाह्मिणः॥ उक्तमादि मध्य जिनाः सर्वसर्वं गासन धमनकं॥ वन्दाल विमतं प

श्री भा

यं बुद्धं विप्रयाति॥ तथा गुरु गणहानुसुवादं यज्ञिजगद्धिते॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा नवयं धर्मतां गतः॥ तथा त्रियानमार्गस्थ धर्मं यथाधिगतो धितं॥ दिगन्तसर्वत्र लोकाय क्र
र्यान्तन्मङ्गलं मम॥ निर्वृतस्य मुनेस्तस्य शासनं संप्रतिष्ठितं॥ तद्धर्मं दर्शयन्कुर्याद्बुद्धकार्यं जगद्धिते॥ यावत्ताः कारिताः धर्मा मुनेस्तस्य समन्ततः॥ तावत्तत्र वनियामि बो
धिचर्यां समाहितः॥ तद्धर्मं कारितं तत्र सहायां स्यात्तथा मम॥ अन्यत्र लोकधातौ च वनयं बोधिचारिकां॥ एवं सर्वत्र बुद्धानां उद्द्यानेऽवतं गतः॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा चर
यं त्रिजगद्धितं॥ तथा सर्वविधां तांतां सम्बुद्धानां प्रसादतः॥ वाक्षेत्याकनंगलं स्तुत्वा वयं सुगतात्मजः॥ ततः सर्वत्र लोकेषु नानारूपं ध्रुवाबोधयन्॥ सर्वान्बोऽभ्रति १२३
स्थाप्य पालययं समाहितः॥ एवं ह्यपि वला काय त्रिजगत्सु निमित्सने॥ ततोऽप्यहं त्रिरत्नानां अवयर्यं गुणान्नुधा॥ एवं सर्वत्र लोकेषु सर्वान्सत्वान्प्रबोधयन्॥ त्रिरत्न
भजने स्थाप्य वाचेयस्यं गुणं सदा॥ एवं सदा गुणं कृत्वा सर्वजगद्वयन्नपि॥ क्रमात्सान्निमिताः सर्वाः पूर्णयंस्त्रिजगद्धितं॥ सं बुद्धं सुविधे गत्वा तत्स्तो काङ्क्षिपानि
र्वयन्॥ ततोऽप्यहं त्रिरत्नानां अवयर्यं गुणान्सदा॥ कृत्वा मानमवान्सर्वांस्त्रिरत्नभजने धिगतान्॥ तद्धर्मं साधिताया ऽभियाजयं यं प्रबोधयन्॥ कालं तं प्रगीक

= यदनिर्व्वर्तत्समलोक व्याधिमता मरणं वध बन्धन हरिकिराक. दद पीडा भवि. ऊर्ध्व क्रिया भ्रम क्रय विक्रय आर्त्त कानां दिग्याव सुखदुःखादि छिन्नपादि छिन्नग्रहान परस्परं ...
= सत्त्ववती पृथ्वी पाषाण शर्करा पांशु शिला पर्वतो जला च धरत्ति भविष्यति॥ पतंग दंश मशकाशीविष व्याघ्र मृग पक्षिगणा शीर्णा भविष्यति

मा॰॥ अहं यावत्कलिप्रवर्त्तनं॥ गावः कृतादि धर्म्मा नित्यं मानितः सूर्यैः॥ यत्र पृथिवीलोके एव कलिप्रवर्त्तितं॥ तदा लोकान्भूनाथानान्य धर्मकृत कृपाहनः॥ मा
सर्वान्मनमाद्य स्थानं गाः कृपालवानितः॥ तदा मानिसंतं कान्तदर्ध्यमिं लता छत्रात॥ सद्धर्म क्रिया लोहानस छद्मानुवादितः॥ स्वपत्नीकश्च सर्वान्स्मृत्वा धर्म्मप्राति
मानितः॥ असन्निज्ञान मार्गस्थ मन्त्रित संगानितः स्वहाः॥ मानवर्यात्र अस कान्त्रिनलगुणेन्द्रियवान्॥ तीर्थे धर्म ग्रस्त लोहानार्य सत्त्वोपवादितः॥ सत्य धर्म प्रति
ज्ञि फान्यवश नंकर्य कोवितः॥ एवं सर्वान्मिनव्याधीं स्वातिनार्हनिता गयात्॥ निष्कृपान्स्त गिनः क्रनां हिंसा कामीति लोल मात्॥ कान्कलिनाक सप्राणान्य धन्वा
न्यध्यवादितः॥ सर्वान्वबाधयन्धर्मे याजयित्वा समप्रगतः॥ गताश्च स्वामन्त्रकाय्य भजयं नाम सन्मति॥ अतिथिं व्याधियन्यं गंगा पापृत्वावेन्ने कुदि॥ नपण्ड साध्य लामाया गर्हि
वासस माश्रितः॥ येन यान्दगेय न्धर्मे याजयं यश्च बोधयन्तु॥ दगमा सा कलन्त मम छिनिः स्तन थ्प गामयन्नु॥ समस्तान्मे कलान्सा कान्मादर्य यथ मास्यन्नु॥ आगत मम पदे स्मृ
अकि दिक्कम साजमन्नु॥ सिंहनादं नदन्मायान्मान यथं विधादितान्॥ वात्यकीर्तितानगः कान्यो धर्मगालोपवानरेषः॥ विस्मय न्त कलान्साकान्नोदर्भ यथं तं तं गगन॥ को

री आ

यावाधिमार्गसंस्कापितामृतथा॥अर्हत्त्वं प्राप्य निःश्रेयसं गम रावय वाधिमार्गगिनः॥ एवं सर्वपिवेन यायस्य यस्य यथा यथा॥ गम्यतस्येवन्नपल गथा तथा प्रवाधयन्॥ सर्वान्
स्तानपिवेन यान्विनी यथाद्भुमलनै॥ वोधिमार्गप्राप्तिवा प्ययोजयरयंजगद्धितः॥ एवं यव दविजास्तान्दत्वा ऽ वंपु तारयन्॥ वाधयित्वा प्रयत्नतः॥
संवाधिसाधन धर्मचानयरयं सदामदा॥ यथापिनागिनः सत्वाः कृपया तां विलोकयन्॥ कृत्वा ऽनीनकः पश्चात्यानयरयं ऽ तेसरा॥ सर्व धर्मानुयाः सत्वाः कृपया ता
स्ववाधयन्॥ कृत्वा पुण्डेयाधर्मयाजयरयंजगद्धितः॥ यथापि क्लेशसंतप्तकान्नपिपविवाधयन्॥ कृत्वा गुह्य नयान्वमे याऽजयरयंजगद्धितः॥ सर्वापि दुःखिनः
सत्वाः सर्वान्स्मान्पविवाधयन्॥ त्रिरत्नभवरसस्का प्ययाजयरयं गुह कथा॥ यद्व्यामद मात्सर्य संक्लिष्ट व्याकृता नस्याः॥ तानपिवाधयन्तानं याऽजयरयंजगद्धि
तः॥ दुःशीला यऽ नात्मान स्तान पिपविवाधयन्॥ संस्थाप्य संवदनवोक्त्वा नयरयंजगद्धितः॥ यथाति क्रोधिनो दुष्टास्तानपि पविवाधयन्॥ कान्ति व्रतप्रतिस्थाप्य
याऽजयरयंजगद्धितः॥ निन्दुत्साहाः कुसीदयानानपि पविवाधयन्॥ सद्धर्मा गिनः कृत्वा याजयरयंजगद्धितः॥ तां गवि क्षिप्य विक्षिप्त मानपि पविवाधयन्॥ स्म १२१

नममाहितान्कृत्वायाज्ञय्यंजगाछ्रिम॥द्रष्टुप्रज्ञायस्वभाशान्श्रमकान्पिपनिवाधयन्॥प्रज्ञमनत्वार्थिनि॥कृत्वायाज्ञययंजगाछ्रिम॥इर्धिथायतनुपायज्ञ॥गानपिपनिवाधय
न॥कृत्वायायविक्षानज्ञान्याजययंजगाछ्रिम॥निहानंप्रणिधिमनायगानपिपनिवाधयन्॥संवाधिप्रणिधिंक्षेयाक्ष्वानयंयंजगाछ्रिम॥इवलायनलिहृध्यगान
पिंपनिवाधयन॥कृत्वालिङ्गावलाग्रक्रान्याजययंजगाछ्रिम॥अविद्याभाहिगाश्रवगानपिपधिवाधयन॥संवाधिमाधनुस्कान्प्ययाजययंजगाछ्रिम॥एवमन्यपिम
त्वायमिथ्यामन्मार्गवादिनः॥मानपिवाधयन्नस्युयाजययंजगाछ्रिम॥एवंसर्वजदरभाघस्वयंवनन्तसौंधिक॥आर्यधर्मभितंवर्षन्तर्वान्सत्वाखसादयन॥वा
८०र्व धिमार्गप्रतिष्ठाप्ययाजययंजगाछ्रिम॥एवंयावदशीत्यब्दशीवन्तिकन्वाजगाछ्रिम॥प्राप्तिहार्यसमावर्ज्यसर्वान्सत्वान्प्रसादयन॥यथाहितत्पिमेधर्मविवश्यवा
धयन्क्रमात॥वाधिमार्गप्रतिष्ठाप्ययाजयित्वाजगाछ्रिम॥आर्यमत्स्यसमानस्यत्रियानमयथाक्रमं॥नियम्यवाधिसंतानंप्रनयित्वाक्रमशत्र॥सर्वान्कृत्वामहास
त्वान्वाधयित्वाजिनात्मजान्॥सर्वमानगतान्द्ध्यानन्स्वादनविवर्जिकान्॥गांधंसर्वान्नयथाकालंयाकुमसोगमपद॥विनीयमासनासाकानर्वाङ्गुमविमोद

श्री आ

स्य मनेर्वं दिमनयं तथापिन॥ सर्वसत्त्वहितार्थं बुद्धनयमवसर्वदा॥ यावन्न विधूमयप्तं दानखगादि माधिर्गं॥ उतरत्न धनसर्वयां तडंसवकु प्राप्तिनां॥ यद्व पानं मयादतं
सर्वार्थितायार्थेप्सितं॥ न हृस्त्व मन्नमारेणि मपियाकुजि नालयं॥ मवद्ध्यानि मत्त काखनन्नि मर्दिताय्य॥ मपि सर्वे गुतलानां तवकु बाधिताभिगतय॥ मन्ममया सा
धिर्गं पृथ्वं सर्वसत्त्व पविज्ञता॥ उमलऊगतांत डंसवकु मर्व पाक्रवं॥ उतनप्रार्थयनान्यत्तम्पलोय मूरवमाधनीय॥ नवाहं स्वर्गगीवासं नापिप्ना काधिपश्चिमय॥ नवापिव्र
मृमलीरवं प्रार्थये न्यद्व सत्त्वं॥ नश्वेतत्कुगलोयप्राकुं अवकाधिमत्तह॥ नापिप्रत्येकबोधिं प्रार्थयामि जगकृता॥ कावतं सर्वसत्त्वानां दुःखं तत्कुतरवाद १३०
यं॥ कतुंसमत् मां बाधिं प्रार्थयामि जगद्धितं॥ उतदपिनमिश्वत यदि मदेव यागत॥ तदाहं ननकल्कित्वा दुःखवासीदं समत्तह॥ यावन्नानकी यासी सन्तुस्थ
समनिर्वृताय॥ तावकुजापि न त्याप ता ग्धानि तकुमत्तह॥ मर्वाव्यादिघमन्नतक सर्वमत्तहतैस्कतय॥ उस्थायगच्छितालानाखजकु मृगपालयं॥ तियरखस
मवसत्वाक सर्वमत्तहगान्विताय॥ विमकुपातकाय्य कप्रयाकु मृगपालयं॥ यवान्न यामि वाय उता कपिमत्तहतौ कतय॥ निर्गत्य विमलालामीगद्ध

४

त्रुसगात्तयं ॥ यदापि दुःखिता यक्षा रक्षांश्च नागसप्तूपि ॥ गन्धर्वाः किन्नराश्चापि विद्याधराश्च गुह्यकाः ॥ दानवा गरुडा नागाः कूष्माण्डाश्चापि भाविकाः ॥ नराश्च

पापिनाः दुःखाः सद्धर्मनिन्दकादयः ॥ आर्यापवादिनश्चापि पंचानन्तर्यकारकाः ॥ तथैव कुशला ती यानिर्मूक सर्वपापकाः ॥ प्रयताः निर्मलात्मानश्च त्रुसगात्त

यं ॥ तावच्चिन्नमहं बोधिचर्याचरितुमुत्सहे ॥ यावद्यथा गुप्तिस्थाः सर्वपिना निर्दिष्टाः ॥ यावन्ति कुशलान्यत्र बोधिचर्याभवानि मे ॥ तानि सर्वाणि सत्त्वास्ते सर्वे स्युः

पविश्रमयन्तु ॥ सर्वसत्त्वार्थसिद्ध्यर्थं दुःखितमानसः ॥ बोधिचर्यां प्रगृह्णन्त्वा चर्यां सर्वे सुखं वं ॥ एवं मत्वा गवक्तुनं प्रणिधानं जगाद्भिता ॥ यदि सिद्धं कथा गजमां

आकानां तु बोधयन्तु ॥ माक्षीरस्तां श्च सर्वे पि मनोराः दशादिष्ठिताः ॥ यदिमां ग कु मालोक्य कर्वन्तु जगद्धिताः ॥ एवं समं उन धर्म प्रार्थयित्वा जगद्धिताः ॥ मत्त्वापि वि भ

वगं वन्दनत्वा नक्रोप्रतप्स्यन्तु ॥ सनेवं प्रार्थितं श्रुत्वा बुद्धः गङ्गा दयामनाः ॥ प्रसन्नागगः सम्भिक्त्वा पुष्पवृष्टिं व्यसर्जयन्तु ॥ सगन्धर्वाः किन्नरा यक्षविद्याधरा सुरासुराः

॥ मयुषक कहया साधितीकाः सर्वप्रसादिताः ॥ ततस्तां संस्थिता तीवाद्भाः प्राप्ति यादयः ॥ तपस्विना यागिनश्चापि मौथिकाश्चर्यापि च ॥ सर्वतसाथितं श्रुत्वा सा

२१॥ छित्त्वा छत्रं कृत्वा च वामहे जगद्धितं ॥ महावान् सर्वदा लोक रूपया मत्वा तिष्ठ द्यन् ॥ निषमृ वाधि वर्याम पालयितुं समर्हसि ॥ सर्वदापि वयं सर्वे तवकां गन आज्ञिका
२॥ हितार्थं सर्वदा स्वामी त्रिपुकर्तुं मलं तामहं ॥ गत्युपीरस्तु सन्निजरवा कुश्लका हितार्थं रूमा ॥ सर्वदा सान्ततो पोट स्त्वापपथ्ये क्रोतुं समर्हसि ॥ स्तुतिं सर्वे पितला का वि
स्तुष्य गो द्विजाधिपं ॥ स्तुत्वा क्रो ये ४ सुत्तो वाच गोल्हं ईश्वा सताप्रिता ४ ॥ तत्कृ समुद्र वधु ४ स वोधिस त्वा सता मतिः ४ ॥ तथाति सपिसंघ स्वे गान्सर्वान्याति वादयन् ॥
तस्य तगवना ४ गान्कुनत्लगर्र्सा समकुवाध ॥ पादाकुप्रणतिं हत्वा प्रार्थयितुं मपाप्ययग ॥ यदा सर्वा महीसा प्लिश्व वा तसमहीध्वनाथ ॥ सनकृ त्य यानकृष्टि ४
सर्वो ४ प्रेसस्वि ॥ वसो वायु ४ सुरव स्पर्श ४ सुगन्धि सत्तलगीमत्त ४ ॥ दक्षिणावर्तिका ४ कालो अनन्ता ४ संघ गजात ४ ॥ नवि वेल्लोदय ४ सर्वत्र सालो नावि निक्रिय ॥
घनास्त गन्धिसुवर्णाट गा [illegible] सर्वधेन स्वना ४ ॥ प्रेम का दवेक न्याति ४ सर्वफल गलस्वपि ॥ दिव्य सुगन्धि संयुक्ता निपतु ४ पुष्प वृष्टय ४ ॥ सर्वा श्विपि व वस्तु निडया ।
धि वर्द्धिता निर्व ॥ मञ्जलार्थी हि गं मानि वल्वु ४ सर्वत्र गत ॥ सर्वसत्त्वा ४ गुणाता हास्य कुसाधा ज्ञो र्थिन ४ ॥ एक वैना मिथ ४ स्नेह मैत्र का मासंस्मा रुव

न्॥ तथागतगवां कृत प्रातिहार्यं प्रदर्शयन्॥ सर्वान्सत्वान्समावर्ज्य यस्य क्षेत्रे स्थिता मल्लकानं॥ तस्मिन्नत्र सहायत्वा नानाभावर्द्धि ४ सन्तर्पय ॥ प्रव्रजा ४ सर्वलोकप्रभावत्वा स्वा-
प्र भावयन्॥ तदृष्ट्वा कृतनेमिशं सर्वेसत्वाः ४ सुवादयेत्॥ किमतादितितायन्के कलसुसं दिव्यमानसाः॥ तथा सर्वे तत्लोके संप्रदंग दिव्य समाशिताः॥ संवक्षः ४ सर्वेन्द्रा लो-
कननन्तुरुस्नमहस्यतं॥ तथा लोके च सर्वेषां वुद्धानां समाश्रिताः॥ सर्वेपि बोधिसत्वाश्च वहवृर्वि स्मयान्विताः॥ तत्र ४ सर्वे महासत्वाः किंभगत्यस्य कारणं॥ तस्मिकं यदि-
दं ज्ञातुमिच्छामः संकितां गुयाः॥ ततस्तत्वान्तं ज्ञातुं सर्वे ते विस्मिताशये ४॥ यन्निष्टेच्चा मुनीन्द्राः सर्वेप्येवं समादिशन्॥ अयमिन्द्रभौमा अनामलोककर्मनानत ४॥ त-
थाहिं तथागतान्ख्यानन्तगर्भ ४ समास्रयन्॥ सर्वसत्वहितार्थान धर्मसंवोधिमाश्रयन्॥ सर्वावबीमतास्तस्य क्लिन्वादि गतिसाधुतं॥ तस्यापि जनको बाहु ४ पुत्रा हि तादृशाः क-
मत्॥ मसेत्क्रमेस्मतं पीत्वा समन्वोधिसाधनात्तक ४॥ स्वयं वोधिव्रतं देत्वा परानपि विनादयेन्॥ वोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य वोनयन्ति जगद्धितं॥ वहुसंख्येय सत्वान्स नाना-
पाये प्रवोधयन्॥ समन्तभद्रपदं संप्राप्ते वानयन्ति ग्रतां विभिं॥ तापि सर्वे महासत्वाः प्रसादभाविताइ धना॥ तत्तगर्भ मुनिं नत्वा प्रार्थयन्ति यथाक्रमं॥ तत्तगर्भापि तान्स-

श्री भ

यीसंप्राप्य यः स्मृतिर्दृभिः॥ अयं क्षणेन सः क्लिष्टवद्धकृतसमाप्तिमत॥ दशाद्यनमायत्का धर्ममादि ष्यतिष्यति॥ यंदया वर्धमसंबोधिं संप्राप्य सुगतास्तु वत्॥ वर्षे थ पंचविंवोद्धिं कार्य
सर्वकर्मिष्यति॥ एवमयं महाशिक्षाक्षगीवसौ मुनीश्वरः॥ सत्वकालेन संबुद्धः सर्वकार्यार्थिसाधयत्॥ पापिष्टान् दुर्जनां अपि बोधयित्वा प्रयत्नतः॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य
संबुद्धा यात्वनिर्वृतिं॥ एवं द्विजत्वयाधीमं सर्वसंबोधिसाधिनः॥ अतिलयकृतं प्रसं प्रतिध्यानं गच्छितः॥ यत्वमवं परिक्लिष्टवद्धकृतकषायितः॥ पापिष्टानपि
वेनयान्यतिगन्तुमिच्छसि॥ नानकीयां स्व दुःखोद्वीक्षियेच्यानि गतानपि॥ सर्वान्सत्वांश्च संबोधौ नियोक्तुमतिवाञ्छसि॥ तद्गण्यासि महासत्वः सर्वसत्वहि १४१
तात्मकः॥ यत्वत्वावयिसंबोधिं प्राप्तुमुत्सहसे यथा॥ नमस्त्वां महासत्वाये ऽद्ध सौगतालेय॥ मा भव एवमत्वा क्षेविनत्वं प्रतिबोधिःक्रमेः॥ सर्वपृथ्वीमुमास्कृपि
पुण्डरीकापमानेन॥ इति सर्वमुमे ताविहे नोदितं हाय गीतवयो॥ येषु कालपरिक्लिष्टकर्तुं पंच कषायिकः॥ तत्रापि प्रलवान्सर्वान्विनेतुं प्रतिविधिं गतः॥ नमस्पृथ्वी
पद्माहृयाः पुण्डरीकापमाहितं॥ बोधिसत्वा महासत्वाः सर्वसत्वाहितंकराः॥ तद्यथा बाम्ह्रणो ताहि क्लिष्टकृतकलावपि॥ सं कालान्वाधिनाप्यर्व वाक्षेनियोक्तु

=भडकलेपिंहोनत्तु घतवर्धीश्चवेषु नरतम त्मोवेंस्थेनायके १कृतादेजमार्गमलसंक
ध्याद्यभानभन्वाड पवादो: सत्कर्मजति भितेमूला पतिंस माप्यते १

मिष्यसि ॥ तत्त्वमवत्रिलोकस्य पृथ्वीकायमामहात् ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन संज्ञानामि मयानिरं ॥ मनसर्वेमुनीन्द्रेण साधकाते त्वप्रदीयते ॥ हृताक्षत्रयविता श्चात्रपूजा
र्थेगवसन्मते ॥ महाकारुणिकोनाम्ना त्वं समानश्च सकिल ॥ सर्वेमुनीश्वरैर्दृष्ट्वा त्वद्यार्यकनूनाम्चितं ॥ गत्वा गंस त्वसेमन्नं नंडाधिकानं स्नानं यथा ॥ कालो लोकपति र
क्षितः ९ शुद्धसंबोधिमाप्तवान् ॥ तन्त्वद्धारगवास्तु स्नाथमनीज्ञ विनायकः ॥ सर्वेशाहेश गन्तात्थाविद्याधिपा मुनीश्वरैः ॥ निर्जित द्वेगमावानिश्चस्तु बुद्धिम् विहा
निकः ॥ गत्क्रमुनि निर्गितिरव्यानं कथगतो तविष्यसि ॥ तदाम साधिकाश्चापि व उर्व्वम्य विहानितः ॥ मम त्वया महाहिताः तविष्यन्ति कलावपि ॥ सर्वे भातिग
तायुक्तावर्षी नमातवास्तु ग ॥ यथोकामं तत्त्वं स्नावनिर्याति त्वे वांछितं ॥ तत्रापि त्वं समाक्षय बाधिव यं प्रिकागयते ॥ सत्कमेतमपादिष्य वनिष्यसि तगच्छि
ता ॥ एवं सक्रति संज्ञाता न्स बोनत्वा त्सुवाधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य पूतव सालयिष्यति ॥ यथाय मुनि नायूषानेस्व कृ २ नेक कल्पतः ॥ सकलं लोकगतं
कार्यं कृत्वा यास्यति निर्वृतिं ॥ एवं कृत्वात्र तं पंच वर्षाणि भाति वर्षतः ॥ सकलं लोकगतं कार्यं कृत्वा निर्वृतिमाप्स्यति ॥ निर्वृतस्यापि तस्ये उः सर्वेष्ठवनस्व

मनः कृत्वा गजाश्वादिमल्लाश्च यानि ॥ गन्धवस्तूनि सर्वाणि नत्वा हि हृदयान्यपि ॥ वस्त्राणि विविधान्येवं द्रव्याणि सकलान्यपि ॥ संप्राप्य प्रणिपत्याथ श्रीयां सुप्रसन्नः पूजयेद्वि
नः ॥ तस्मात्सर्वमहामन्त्रैः संयाति स्वर्गं पुनः ॥६॥ गन्धमाल्यानि धूपानि दीपाश्च यांश्च स्वजनानपि ॥ तार्यः पूजा कुर्यात् ... स्थस्थानं ... हास्त्रियानपि ॥ मान्यतनुः विधिवच्च मौक्तिक
मयानुग्रहान्यपि ॥ शिवाङ्गिनासिकाकर्णजिह्वादन्तोष्ठमस्तकानि ॥ बाहू ... पादादीन्यनेन स्वार्थिनामपि ॥ तत्समादाय संपूर्णं कुर्याद्दानं स्वर्गं गच्छेत् ॥ एवं ग
माया ... वर्णयं सर्वजातिषु ॥ दानं स्वर्गं सहायकः स्यां संबोधितु कृतार्थकरः ॥ एवं शीलस्वर्गं चापि हि गच्छ सर्वं च जन्मसु ॥ पृथ्वी चापि हि हितं दत्त्वा पूर्णं कुर्याच्छुभार्थले
न ॥ एवं क्षान्ति स्वर्गं चापि गच्छ यथा समीहितं ॥ कथा वि ... संसिद्धं कुर्यात् क्षान्ति स्वर्गं ध्रुवं ॥ एवं वीर्यं स्वर्गं चापि सर्वदानं सहायकः ॥ यथा समीहितं दत्त्वा पूर्णं यथेप्सितं १४४
जगद्धितं ॥ तथा ध्यानस्वर्गं चापि सदा दानं सहायकः ॥ यथा तिर्यक् छिन्नं दत्त्वा पूर्णं यथेप्सितं ॥ प्रज्ञापारमितायां च सर्वदानं सहायकः ॥ सद्धर्मो ... धीपकश्चापि गच्छ
मंगलं ... ॥ एवं जातिषु सर्वासु सर्वपारमितास्वपि ॥ सदा ... सहायकः स्यां गच्छ धर्मार्थपूजकः ॥ कृपाविशेषतो वने ... फलावन कृत विनृ ॥ नानाफलवन

षा। क्षेपुनयर्यं मनस्कव॥ सर्वथा ग महाप्राज्ञ संबोधिव्रतसाधन॥ धैर्यवीर्य महात्मानं वर्द्धयस्व जगद्धित॥ यदा संबोधिप्राप्तस्त्वं तदाहं अव कन्य॥ पुत्रछात्रत मा मात्र तथयं
वमस्वाभिकथ॥ वत्तुन गोगि सद्धर्म स्कन्धदश गोतान्यपि॥ उक्त्वा समनुपाख्याय दे गेयवंसमनकथ॥ तदा त्वं तगवाङ्छमा कृपया मां चितया यन॥ स्मृत्वा कन गहतो वा। क्षेप्या
कृर्याच्चिनवाधिप॥ श्रुत्वा गि संप्रार्थितं ताने तत्वाम पृच्छा लम्थ॥ महाकान्तिकाविप्रथ सार्द्धिगितं प्रसादयन्न॥ तयापि मां अञ्जलिर्नत्वा नलेगर्भ मुनीश्वरं॥ गमाजीवकमा
लाथनन्दयन्नेवमब्रवीत्॥ धन्यासि त्वं महाभाग यत्र संबोधिसाधन॥ बोधिव्रर्यां समुन्निश्चितविद्धं सर्वदेकस्मि॥ तथाभनंग्रहं कर्तुं सदा सर्वषु जन्मसु॥ अहमस्मिता
निवसन्तीया चितुं समुपाक्रमत॥ तानि सर्वाणि वस्तूनि दयांगतोद्भृया मुदा॥ यमि गच्छत वांस्तत मा ग्यक्ष्लकल्पवत॥ यत्त्वया सह सद्धर्मे बोधिं गमन तथा कथा॥ तत्स्
थमस्थाने कं प्राप्य च्छिन्न संशय॥ यदाहं त्वत्प्रसादेन संबोधिं प्राप्नुयां तदा॥ विनाय सर्वथा बोधी क्षे बाकृत्यावाज गच्छित॥ श्रुत्वा गि नेसमाख्याय तं मस्तत्वा मीवका मू
दा॥ कंम नीरूढं क्षिरं गव्यं नत्वा गतैव वाश्यत्॥ तदनु स समुद्धं स महाकान्तिकाच्चिरं॥ नत्वा गर्भमुनीन्द्रं गंतस्वे वं पुनरब्रवीत्॥ तगवन्बोधिचर्यां यान्नत
रतन भीत्रि चर्याव प्रम्नुवाच पुरोहितं॥ रिपु मे क प्रार्थय त्वे तस्माद् तेनुगोशाप भार्के॥ इत्युक्त वन्ति सर्वज्ञे बोधौ धर्मी प्रकारिकः॥ मत्वा मिनः पुरः प्राह मुनिकाम ... तिक तथा॥ सद्धर्मगुणाकीर्तीनां यशांसि संप्रकाशने॥ रि पुत्वेन भवत्सेवां करिष्ये निजमस्तु॥
चरम भविष्यत्स्याहं येन बोधि पुनासक॥ वपनीक स्यते विप्र धर्मीकी र्तिप्रकाशने॥ संसारिक प्रबोधार्थ मारकीयो भवाम्यहं॥ स तु त्वा सेवां कृतनत त्वं सद्धर्मं भवोदधौ॥ बोधिमार्गे प्रति ध्याय निर्वाणो पदस्य भव॥

श्री आ

न्यायागिनायकुसाधकाः । दृक्प्रकृपिण्यावाश्च वगाताश्च तथापयः ॥ मानद्रव्य ममकायाम वीवन खंडु श्रानिणः ॥ सहुनाकृपि संनत्वानंत्र्यपूः सप्रसादिनाः ॥ एवं मकृषीयश्रपि
ग्रासूधार्थं नपत्विनः ॥ नाकानः कृतियावेश्याः स्तोतिनश्च महाजनाः ॥ अमात्या मंत्रिणश्चापि शिल्पिनो वणिजो पिच ॥ धनिनः सार्थवाहाश्च मानयंत्युत्सवादिनाः ॥ व
वेनिर्माल्यपण्यानि संददर्यपेमदाममं ॥ मांश्च नश्यद्वालोके सर्वलोकाः सुवादयः ॥ यथापि मस्तिष्कं त्वासवनस्यूर्यत्थाप्तिनः ॥ मानप्यवेयद्वालोके सर्वे सत्वाः सुवाद
यः ॥ यथापि मनमस्कृत्यपूर्ववेयः समीहितां ॥ मानप्यवेय वालोके सर्वे सत्वाः सुवादयः ॥ यथा ज्ञानीविद्या द्वे त्वावयंयमीप्सितं ॥ मानप्यवयूत्वालोके सर्वे स
त्वाः सुवादयः ॥ यथापि समयमस्तुतोः सनयंयूर्ममाप्यर्यं ॥ मानप्यवसूत्वांगेऽस्मिं सर्वदेवायमादयः ॥ यमन्नामस्तिं कृत्वा गच्छयूर्मेनचांकृवं ॥ सुगीतंगमनगच्छेयु
वायूत्सवजिनालयं ॥ यथापि नन्नकाशीनामत्रामस्तिं भानचागृ ॥ सर्वपिस्तमम्त्थ्यं वृजंयः समागतालयं ॥ एवं सर्वेपिसत्वाश्च यममर्णन श्रियाः ॥ निर्मुक्तपातका
गच्छालयं यवोधिलाहिनः ॥ नवंयशाच्छया पार्षप्रदयर्ममाप्नोत् ॥ मपिजीसेतु ज्ञामंप्राप्यजिनालयं ॥ यथा भेदाच्छया स्नानं कानयद्यथाविधि ॥ मस

१४८

वैविमलाक्षान ॥ संप्रयायर्ऊँनास्यदं ॥ पंचसगन्धिलि र्थव लपयय र्मनाश्ययं ॥ नपिशी मकु ला न्व्रज्ञालल्यर्वोधि मकु ॥ अनु ॥ यव भ पुष्पमालालि ॥ पूर्णा कर्पूर ॥ समादना
नु ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवाप्येकने पुष्पने पुजयय र्मनाश्ययं ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ सेनलड व्यञाानि धूपयंयथ
यमम ॥ पुनरूपि महासत्वा लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवम शुद्धया लक्कप्रदय वीवना श्यपि ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवंभ लाग्यवल निशुद म ॥
शुद्धयादना नु ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवमपु नमाशेयं मकु लमयपनादना नु ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि साधिन ॥ यवमशुद्धयाके
नं संप्रदय ॥ समादना नु ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवाशम ध्वमाविर नानामा पयेयन क्लिमाने ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यप
वत्मचयय र्ष्थपमा कामाश्रम मम ॥ नपिशी मकु लाक्षना लवय र्वोधि वानि लथ ॥ यवापिर्मवि हानपविनय र्विनानकं ॥ नपिशी मकु लावासा लवय र्वोधि वानि लथ ॥
यमस्वांगप्र लमानि हत्वालऊँयनादना नु ॥ नपिशी मकु लावासा लवय र्वोधि वानि लथ ॥ प्रदक्षिणानि मकुर्य ॥ शुद्धयाभप्रसादिमा ॥ नपिशी मकु लवासा लवप

श्री जा

रत्वापि भा॥ यापि ल्गाप्र पापिवाल्लवन्॥ वल्अलापि लवन्नेवंआ गापि म्लकआनिष्॥ तथनी वस्लआगाप्यहं संबाधिमानमः॥ सर्वसत्वहितान्येव कृत्वावनयसर्व
सा॥ दनिद्रायदि देवन नैव कुर्यां हि दृष्टिं॥ सर्वसत्वहितान्येव कृत्वाव नयमन्व॥ सा भीत्स्वापि देवन प्रथा॥ धापि भवकोः॥ क्लेषिकृस्य पालापि तान्वा
सलवन्नपि॥ लम्यकर्मकानः शिल्पीवधिक्ता वप्रमोधकः॥ परप्रमोनिकाप्पर्वेसार्थवासालवन्नपि॥ संबाधिप्राप्ति श्रमनन सर्वसत्वहितार्थकृत॥ वनयसं
वंगावेवदृष्टीनेकसाधन॥ नत्र सर्वनृपादिशत्वक्षक्षाम लाजनथा स्त्राक्षक्षाम तामांशा लवंथमानयीनथी॥ तथा वानुत्वशारलत्वायाश्रमेन्याधिपापिव १७३
॥ स्मासु॥ सविद्यामन्त्री लत्वाप्रज्ञाधिपापि विद्या॥ असमाधिपः पनाश्वेक्षः ज्ञानपराधिपापिव॥ असमाधिपापिनोगि ह्राशान पालालवन्नेपि॥ कोटनाशीमहीपालश्च
कुर्वलीनं पापिवा॥ सत्वासत्वहितान्येव कृत्वाव्वनयसम्न्वगो॥ ब्राह्मण अपि समाप्राज्ञ अपिवाणप्राप्ति सन्॥ पंवाहिश्च पदप्राप्तेः सर्वविद्यासमृद्धिमान्॥ सुश्रमप
कउपाक्षयः सर्वविद्यानुपानगः॥ षट्कर्मनिरतश्चापि अतियापि द्विजालवन्॥ लोमिकापि लवन्वेशः संश्रापिदेवविक्रथा॥ सर्वसत्वहितान्येव कर्तुलवस

पालनम् ॥ कथमंगीकिवा याग्दिकृगलान्तस्य वा न कथ ॥ नंजयनस्वरूडार्थं वनितु मुत्लाहलव ॥ गोर्थिकापि तवन्नवयागिर्लत्वाप्रिमापमस ॥ प्रव्रजितो लव न्यागी व्रतकृवानी
लवन्नपि ॥ एवं सर्वषु लोकषु ज्ञातष सर्वासु ज्ञातिषु ॥ सर्वाधिपाठिक्षेनेन कृमीभवजगद्धिते ॥ बोधिसत्वा महासत्वाः सर्वसत्वहितार्थरता ॥ बोधिचर्या वर्गहेत्वा वनितु मुत्लाहस
ता ॥ ततृष्णग स्तुतिक्षेनेन सम्वाधिव्रत साधन ॥ यदिमि श्रीलथ नूनं सम्यग्समनुपादिना ॥ ततृ गिसंप्रार्थितानन्तलगर्भ सर्वविद् ॥ सर्वागितं महासत्वं समो लोक्ष्व माहि
तान् ॥ साधं साधं महासत्व यथेत्स्यासमीहितं ॥ कथ सर्वहितिक्षिल गत्स्तन्नासमास्वन ॥ ततृष्णादि ग्ध मुनीन्द्रसफस्यच्छ्रमर्गसदा ॥ ह्मनभिनामि सर्व ह्व सर्वाछ ध्वं वमादिना
तु ॥ धेन्यार्यं ऋिजगन्ना धेबाधिसत्वा लवन्नेपि ॥ बोधिचर्याव्रगं हेत्वा कृयाहृडं समाल वं ॥ यदयं पनिक्रि ख्यिलोकपंच कवाप्रिथ ॥ कलावपि जगद्धृडं सम्बोधिं प्राप्नुमिक
मि ॥ कथ स्यसत्यां सर्वयथानने समीहितं ॥ अप्पानष ऋगज्ञाक सवारुडार्थ सम्बन्धेत ॥ सदार्यं प्रिजग ज्ञाक बोधिचर्याव्रगं चनन ॥ सर्वभूमि मार्गश्रादिग्ध सर्वासत्वानुवा
नयन्तु ॥ स्वयं समन्वेमाक्षय पवा न पिज्ञक्षानयन्तु ॥ सर्वत्र हृडं गोकृयाद्यावन्त कालिनागमश ॥ कालिशवणि बोध्लाक कार्यं सत्वहिताभ्यास ॥ जातानपकृ सधी मान्सर्ववि

श्री आ ॥ प्रथमस्तत्र श्रीकुन्थुनाथो मुनीश्वरः ॥ सर्वसत्त्वहिताधायी दिदेश धर्ममुत्तमं ॥ अनन्तप्रथमं बोधिं विलम्भ्यादितं पुरा ॥ तत्कथां प्रवक्ष्यामि ... साधु समाहिताः ॥ पुरा
कल्पगणैरनन्तैः क्षीणकल्मषोऽभवत् ॥ सर्वसत्त्वहिताख्यः श्रीधर्मनामा कथागतः ॥ तस्य शासने पूर्वं ननन्दश्रीगानमत्तनामा पुरा ॥ बोधिचित्तं समुत्पाद्य प्रथमं सो बोधिचित्तं
॥ तथा स्वयं भवेत्संबोधयितुं प्रयत्नतः ॥ बोधिमार्गे प्राणिश्च प्रसन्नियुक्तो निर्वाणिताः ॥ तपितन्नादितः सर्वे तस्य शासने प्रशासिताः ॥ संबोधिप्राप्तिक्षमनसा
सत्त्वकृन्नन्दं गताः ॥ तत्र बोधिचित्तं प्रवर्धयित्वा समाश्रित्य ॥ सम्यक् प्रविधेनयात्स्वर्गानपदं गताः ॥ बोधिचित्तोपचितं प्रत्येकबुद्धपदं गताः ॥ पश्चात्कथा
मिताश्चापि विनतुं प्रार्थिताः कल्पा ॥ तथा स भगवान्बुद्धः सर्वान्संबोधिसाधिन ॥ यथाहि प्रार्थितं दत्वा संबोधौ व्याकरोत् ॥ पुण्यस्य पिताथ नन्दन महात्मा
स्तन बोधिताः ॥ संबोधिप्रणिधिं दत्वा वाणिताः श्रीगताश्रयाः ॥ ततः क्रमसमर्पितसत्त्वागतप्रकृतयः ॥ गत्वा ह्यंबरं निःसंख्याः सर्वसमर्पिताः ॥ ततस्तस्य मनन
प्रपेविक्लिष्टजिनालये ॥ पश्चात्कषायिकाश्चापि विनतुं प्रार्थयन्मुदा ॥ तथासौ भगवान्बुद्धः साधु साधिति सावदत् ॥ यथाहि प्रार्थितं दत्वा संबोधौ व्याक १४०

१८

नादपि ॥ अक्षोभ्यापि महासत्त्वः सर्वसत्त्वहितार्थभृत् ॥ तस्याश्रमः समानिसंप्राप्त गच्छन्नंगमत् ॥ ततस्तस्य मुनीन्द्रस्य पादाब्जं साञ्जलिर्मुदा ॥ प्रणत्वा समुपानिष्ठि
ष्टवद्भूत्कथापि ता ॥ विनीय तत्कलोत्तं त्वान्यापि सर्वानुमोदनानपि ॥ बोधिसत्त्वान्महासत्त्वान्कर्तुं संप्रार्थयन्मुनिं ॥ ततः स भगवांस्तस्य वाञ्छितार्थानि पूरयत् ॥ बो
धिचर्याकनकं दत्वा विलसं पर्यपादयत् ॥ एवं संप्रार्थितं मनश्छन्दाद गदितं भिक्षुकाः ॥ सर्वेपि सुगतास्तस्मै साधुकारं ददुर्मुदा ॥ ततो महाकारुणा वेश्मा वनसौम्या दिश
कृतः ॥ सर्वे ते सुगता एवं रक्षापि तारत्नं मंगलम् ॥ ते महाकारुणा वेश्मा वनसौम्याहितार्थदिक् ॥ तत्वा नमितं संस्थाकं स च स्वाधिमार्गदर्शकाः ॥ पुरानीं शासितं बुद्धा ध
र्मराज कथमागतः ॥ श्रुत्वा लोकधातुस्थाः लोकाः स्वयं भुवनत्रयं ॥ सर्वा वशीता सीनाद्वा आदिसत्वान्कलेडकं ॥ आर्यसंघेषु मानसं समत्र्मेषु पादितं ॥ ते ते प्रथ
मं वा क्षेत्रियः स्थापितास्तु पुनः ॥ ततः सर्वे सुगणा द्वीपं कृत्स्नं आयेसमवादयत् ॥ ते भक्तुं विनाहृतोः सर्वेपि समुपागताः ॥ श्रीगौतमं मुनीन्द्रं नानापुष्पैः स
मार्चयन् ॥ ततः सर्वे सुगताभ्युं वद्भूतः समाधिताः ॥ ततस्तेवं महासत्वान्तम्नो भावस्य भाजयन् ॥ दीपांकुरा मुनीन्द्राः सर्वे आदित्य सह ईशं ॥ विनयं गता गंका

निर्मोशादेति १ उप्त १ ...४

श्री आ

नां कृत्वा मावृतावपि साञ्जली ॥ तं मुनिं प्राक्षुधं गंधर्व नत्वा गतस्पृहः नयी दता ॥ अथ वां मित्र वनं स सूदर्गी यूथिकाति ४४ ॥ गजाक्षपि मया तो लाक्ष्म दिनाः समुपाश्रितः ॥ नल गर्भ
सुनीन्दुं गंधर्व त्वा साञ्जलिर्निर्मदा ॥ मतकानुमितिकं गंधर्व समालोक्यैव मब्रवीत् ॥ अहं गतानया विप्र एवं यं सर्वदां न मम ॥ बाधिष्ठा फालवान्यैव्याकृर्यान्मांगतच्छिता ॥ ४५
मितं प्रार्थ्य गजास्ये मुदितः साञ्जलिः पुनः ॥ तं मुनिं प्राक्षुधं गंधर्व नत्वा गत समाश्रयत् ॥ गच्छन्मुदितावेदमन्यां शिरवनदवना ॥ सोन्यार्किंशुकानामा साञ्ज
ली पुनः ॥ किमाज्ञां न त्वां गतस्य योगं गंधेप्राक्षुधं सकृत्पृच्छय ॥ मतकानुमितिकं नो गंसमामन्त्र्यैव मब्रवीत् ॥ द्विजाहं गपियालार्यात्मवयं सर्वभागिनम् ॥ बाधिष्ठा फोम
मा न्वार ४६ व्याकृर्यान्मांगमासमन्वन ॥ अथ कादंबनानाम देवस्तु कपिलाक्षसः ॥ स प्रसन्नेः समुत्थाय साञ्जलिः पुनरागतः ॥ नल गर्भस्य मांपाञ्ज प्रणत्वा गवच्छितं १४३
मुदा ॥ मतकानुमितिकं नाम समालोक्यैव मब्रवीत् ॥ अहं गद्विज दासः सालोमुपलायकः सदा ॥ प्राफ बाधिश्रेणं धर्मन्तुथमं प्रार्थयन्नमा ॥ त्वत्तः प्रमोस्तं गपीत्वा प
नि सञ्जलियः सधीः ॥ प्रततस्मामन्वनं तत्त्वावनेयं त्वम्पावानि को ॥ सर्वलोगगभन्तुस्तानीता अपि दुगनाप यात्रु ॥ निर्जिता हं त्वमासाद्य प्राप्तृयां सोगतं पदं ॥ ४७

गंगानदीवालि
कोपाय ३

स्य गत्वाभिषिक्तं नगपुत्रकात्समया हतं ॥ प्राप्य याथिक्षणं वाक्षे व्याकुर्यान्मां नदीवान् ॥ ४३ ॥ क्रम्य मस्तकाल्लात्र सत्वा माञ्जलिः पुलः ॥ गंगामिन्द्राम्ब संगमर्दयेव समुपास्थ
मम् ॥ एवमन्यं पिलोकाश्च देवनागामृत्यादयः ॥ सर्वे नकगपालोका मुदिताः समुपाश्रिताः ॥ माञ्जलयामेनीतुं गंगां सम्यक् संगम सन्मार्गे ॥ महाकान्त्रिकं नत्वा प्रार्थ
यन्नेवमादरात् ॥ वयमपि महाप्राज्ञ गंवसर्वार्हकोगिसृ ॥ अनुष्ठितिवचाः सर्वे एवमदि मसानुगेः ॥ वाचिप्रापा स्वान्नकृत मदास्तान्कृपयास्मवनत् ॥ सर्वान्विला
स्य सर्वाक्षे व्याकुर्यादपि सत्कृता ॥ इति संप्रार्थनां कृत्वा सर्वे गण्यस्तादयः ॥ लोकास्ते सुगगंगेश्वरं नत्वा द्विजमुपाश्रयेन ॥ अथ संज्ञाविकनमहीपानां मप्रमादिक-
ः ॥ आजीवकाः समन्वयपन्नगः समुपाश्रितः ॥ नत्वा गंगेश पादाञ्जं सत्वा माञ्जलिर्मुदा ॥ महाकान्त्रिकं गंवं समप्य प्रन्नवमब्रवीत् ॥ अहं गंगामस्तस्त्व वहूप
कानसोवकः ॥ उपजीवी महायश्च सर्वयं सर्वजन्मसु ॥ सर्वधर्मार्थसारूपकानेकाक्षिकापि ॥ दानेपानमिमाया गलवयं यावकाप्य हं ॥ सर्वोपकानेवकु निज
स्य श्च कृत्स्नानपि ॥ यान विमान रगहाधीकाग्रामजन पदानपि ॥ पूतनेगगन वास्तूनि वाजधनीः पुरानपि ॥ कृतजीतावनो यानंतमप्यकानसमाश्रयात् ॥ वार्याकूप

श्री आ

कर्मनिन्दकान् ॥ यत्नेष्वप्रमाद्यन्तो बोधिमार्गे समसूयया ययुः ॥ क्रमशः प्रान्तिमांश्येवं सर्वथानमितास्त्वयि ॥ कृत्वा समसूयकां वाक्षे वा कामादवि विवर्जिकान् ॥ एवं त्वं स्यान्म हासत्त्वाय
थात्त्वया समीहितं ॥ तथा न सत्त्वम सर्वमितिमस्तुंप्रमन्यतां ॥ गिगनम नीरुण समादिष्टं निगम्य सः ॥ समुद्भव सुनालोक कंमनीरुंगत्यब्रवीत् ॥ एवमेवकृतं सुकृतः ॥
प्रतिक्षनं हातं मया ॥ यथा सर्वे विमस्त्वात्क संबाधिं प्राप्नुयुर्दिवं ॥ तथामत्र गवन्सत्त्वाः शासनयउमाश्रिताः ॥ प्रव्रज्याद्रु गमासाद्य काषायवीवनावृताः ॥ न्द हि धर्मसमा
वानामानवर्यास्समानताः ॥ दृष्ठ्वी लोनिर्दत्तमूढा निर्लज्जा मदमानिनः ॥ कुनाशैयाः कुनाचाराः महामात्रा वा मिथः ॥ कामस्त्री गमनूनकान्यकुर्जमद्रुस्तसंगिनः ॥ ता
नपि शासमवोध्य विनाश्य परिवाक्षयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य व्याकुर्यामविवर्जिकान् ॥ यद्यपि तापना क्षम शासनं गम क्षगताः ॥ शालूसंज्ञा समूत्यायहे कृत्यः ॥ ते
नवान्विताः ॥ स्वयापि क्षण संग पापनिगृह्य खलागिनः ॥ यद्यात्मागान्ति संकामहा कृत्स्नं ज्ञानाः ॥ पूतानन्तव्यस्तलापलमयुः सल्लभिनवाः ॥ तदाहं मांस्तमोला
क्य कृत्यर्यासं गाधिमा नयोन् ॥ क्रमेण शासनबोध्य विनाश्य परिबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य व्याकुर्यामविवर्जिकान् ॥ एवम बोधिप्राप्ताफ स्यनक बालायवीवनं

१४७

॥समाचारयिताः सत्त्वा वहंत्यः सर्वदा तव॥ तानपि त्वत्प्रतिष्ठितानि विनाश्य संप्रसादयन्॥ बाधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य त्वा कुर्यामविवर्त्तिकान्॥ एवमनागिनः सत्त्वाश्रीवनं व
उत्कुर्वं॥ अपि मूर्ध्नि वहंत्यस्ते एवं यन्तीव गौरकं त्वं॥ यथा देवेन्द्रिगाः सत्त्वाश्रीवनं कस्य खंडितं॥ मूर्ध्नि त्वा वहंत्यस्ते एवं यः श्री समर्द्धितः॥ यत्रापि दुर्गे मूर्द्धवह
पश्रीवनं मम॥ यापि स्युः सुरगाः सकलाः सर्वसत्त्वसुहृत्तमाः॥ विन्ध्याय त्व लोकानां वहंत्यः मूर्ध्नि चैवनं॥ खड्गं गापि जगन्मोजा एवं यः प्रियकानि तः॥ यत्रापि चैवनं हत्वा
पुनीयुर्याः क्रमाहव॥ गजित्वा वेनिताः सर्वान्स्पृशयेयुः स्वलिसंयमाः॥ यविवादे वहंत्यश्चैवनं खड्गमात्मनि॥ गजित्वा वादिनः सर्वान्वहंत्यः विजयश्रियं॥ कल्पहृपिव
हंत्यस्त्वं चैवनं खड्गमात्मना॥ गजित्वा क्रोधिनः सर्वान्स्वाप्नुयुः शीघ्रमुत्तमं॥ एव मद्भीवनं कृत्वा प्रगमयस्मिन्साधवः॥ यापि न त्वानि संप्राप्य पुण्यमयः स्वलिनाजगं॥ अ
वं मद्भीवनं कृत्वा प्रवमयः समनागतः॥ सर्वज्ञ सर्वदा कर्या कुर्युः सर्वजिनाश्च तं॥ देवाः सर्वेपि नश्यन्ति सर्वलोकाधिपा अपि॥ दानवा यक्षगन्धर्वकिन्नरा नागास्सम्भ
पि॥ ग्रहा नागाः सर्वा विद्याधरा अपि॥ राक्षसा गुह्यकाश्चापि दानवा मातृकागणाः॥ महाकालगणाः स्कन्धविनायकगणा अपि॥ डाकिन्याः पिवयोगि

श्री जा

द्धियमपि वांछय ॥ शक्रेन्द्रत्वं न मे वांछा यदि सत्वहितं विना ॥ सर्वसत्वहितार्थं तु गन्धर्वीमपि कामय ॥ सर्वलोकाधिपत्यं न मे वांछा हितं विना ॥ सर्वसत्वहितार्थं
तु प्राप्नुमिच्छामि ताद्धियं ॥ सत्वाद्धियां न मे वांछा यदि सत्वहितं नहि ॥ सर्वसत्वहितार्थं तु ताद्धियं प्राप्नुमुत्सहे ॥ अनुत्पन्नस्तु वनजाम्याप्यहं सत्वहितात्सुकथं ॥ समा
धिं संक्रिमायोगीकं निष्यामि जगद्धितं ॥ नूपधर्मस्तु समनुत्पन्नोऽप्यहं सत्वहितान्मनोधं ॥ यत्क्रमं साधनाध्यकाथ कनिष्यामि जगद्धितं ॥ कामक्षमो समनुत्पन्नोऽप्यहं लोकहि
तात्सुकथं ॥ यद्दृंगपावगोघकृथ कनिष्यामि जगद्धितं ॥ दिविलगामनेऽंत्रोऽपि दिव्यलक्ष्मीसमृद्धिमान् ॥ वर्षन्यथ पिंगण्डपं कनिष्यामि जगद्धितं ॥ तथा हत्वाप्यहं १७१
वक्रिथ कृत्वा कार्यं यथोचितं ॥ सर्वसत्वहितान्यवं कनिष्यामि सदा तव ॥ यथा हत्वाप्यहं सर्वसत्वनियम नभसकथं ॥ संसाने धर्मसंस्कानं कृत्वा कुर्या जगद्धितं ॥ तत्वा
हं नाक्रमाप्यवं सर्वदुःखान्निशोषयत्न ॥ पालयन्न कृतात्वा वा कनिष्यामि जगद्धितं ॥ नागत्वोऽप्यहं तत्राविनीय पुनयन्त्रवं ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य वानयंयं जगद्धितं
॥ तथा हत्वा मनुष्याहि सर्वसत्वसुखावहं ॥ प्राग्धसंधमसंकृत्वा पालयंयं जगद्धितं ॥ तथायक्षोऽपि हत्वाहं सर्वदा वसमृद्धिमान् ॥ दत्वा यत्सार्थितंद्रव्यं वनिष्यामि

जगद्धितं ॥ तथा लताधिपा रत्नत्वा ग्रासम्यन्तु विनायकानाम् ॥ यात्वयन्मुकणानकानुवर्तिष्यामि मयाकृत ॥ तथा गन्धर्वलोकपि जन्मतश्चा समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्वहितान्यव सर्वदा क
र्तुमुत्सह ॥ तथा किन्नरलोकापि जन्मासाद्य समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्वहितार्थानि कर्तुमशात्सहकव ॥ तथाहं सिद्धलोकपि जन्मासाद्य समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्वहितार्थानि
कर्तुं सद्यात्सहकव ॥ तथा च साध्यलोकापि जन्मासाद्य समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्वहितान्यव कर्तुमशात्सहकवे ॥ तथा यक्षपिजन्मा सौहं सर्वविद्याकल्ल समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्व
हितार्थानि कृत्वा वृत्तिर्तु मूत्सह ॥ तथा च दानवारत्वा मेरुवीर्य समृद्धिमान् ॥ सर्वसत्वहितार्थानि कर्तुं सदात्सहकव ॥ तथा नागेन्द्र सजातक्षितिको मगिसमृद्धिमान्
॥ सर्वसत्वहितार्थानि कर्तुं सर्वोत्सहकव ॥ तथा च गोनुजन्मा नामे हक्षगपताक्रमी ॥ सर्वसत्वहितार्थानि कर्तुं भव समुत्सह ॥ रत्नाम सानग थ्यापि मत्स्यादि जन्म
जापित्व ॥ सर्वसत्वहितान्यव कर्तुमशोत्सेहकव ॥ निर्यग्य्य निपक्षालापि सिंहादि पशुजातिषु ॥ तथा च सर्वजन्तूनां पक्षिजन्मस्वपि यानिषु ॥ यदि देववियोकनक्षु
नि कीटादियानिषु ॥ दुर्गतिस्वपि जातापि नैनक्रय तमनत्वपि ॥ दुःखसहान्यपि दुःखवानि उक्तायावकृवं सदा ॥ सेर्वा प्रतिक्षानं हि निर्वजस्काजगद्धितं ॥ तथा

श्री ग

प्रमाप्यूर्जिता नयं ॥ यथा विप्र गङ्गायां पुष्पस्कन्दं मनोरमं ॥ एवमयं महासत्त्व मन्त्रिपारगामिनन्यगां ॥ यथा सूर्योदयगामि पृथ्यादि विविधान्यपि ॥ प्रस्फुरन्ति गानि क्षोभयन्ति सु-
र्व्वाकिरणां शमयन्त्यपि ॥ एवमग्रे समासीनाः सत्त्वा विविधं नृपकाः ॥ सद्धर्मे नास्मिं संस्थाः शरणं गताः शमयन्ति बोधिं ब्राह्मणाः ॥ यथा च प्रगुणीकांगङ्गा मनलं सर्वं महगुरु ॥ त-
थात्वमन्नर्हे सत्त्वः सर्वसत्त्वहितार्थतः ॥ यथा समृद्धिगः सूर्यः सर्वाणि कुसुमान्यपि ॥ तथापि प्रतिसंस्थस्य प्रस्फुरन्ति कायान्यपि ॥ तथा समृद्धि गाव जाः सङ्घर्महा-
नन भिनितः ॥ संस्थस्य शमिथयन्धर्मवान यतितः समागतः ॥ अमं स्थया शुभ सत्त्वा त्वया वाक्षे नियाजिताः ॥ बाधयित्वा तु सर्वं गं उपनीता मे मार्गिकाः ॥ सर्वे शुभं प्र-
सन्नाभ जनं तं समुपाश्रिताः ॥ संबोधि प्रतिबोधिं श्रुत्वा प्रार्थयन्ति यथेप्सितं ॥ केचिद्राज्ञो हि ब्राह्मणि वृक्षाकाराणि भजन्ते ॥ सत्त्वास्तु ब्राह्मणयानं बोधिं नत्वा प्रार्थयन्त्य-
पि ॥ केचिच्छ्रावकयानं ब्राह्मणि वृक्षाकाराणि भजन्ते ॥ सर्वान्य जगतिं अपि विनत्वा प्रार्थयन्त्यपि ॥ यथा हि प्रार्थिताः सर्वे गताः सत्यनृपेष्वपि ॥ तथैनान्तर्ज्ञानी
सर्वान्समाक्षेप्याकुलाम्यहं ॥ येतु गच्छन्ति सम्यक्त्वं वैनयानपि संज्ञानान् ॥ तर्वं विनत्वा सिध्यन्ति महासत्त्वाः न गोखलु ॥ एवं कृत्वा पानि ब्रजिष्यकालपर्व्व काचा यि १२९

म॥ चिनतुमतिवांछन्ति सर्वानपि गुणाश्रितान्॥ मनुजेषु हि सम्मतास्त्वा॥ सर्वसत्त्वहितार्थिनः॥ बोधिसत्त्वा जगन्नाथा बुद्धपुत्रा मुनीश्वराः॥ ममापि ते गवाक्षका नत्वागमी
मुनीश्वराः॥ प्रबोधयन्तो नानाभाषा कुतीर्था व्यपेक्षया॥ मदङ्गुलीविनिर्याता नत्वा समन्ततः॥ पूर्वस्यां दिशि॥ सर्वा पूर्वस्यां दिशि प्रासमेतत्॥ तथा कुस्थाने ध
लोकधातौ गतः सत्यां गताः॥ श्रीगीतिसस्ये वज्रस्यकेतुं समवलोकयन्॥ मदवलोकिते गत लोकधातौ सम्प्राप्ताः॥ एवं कृप सत्त्वाः सर्वे ते स्थ समन्ततः॥
सर्वज्ञा नमा नामे संवरुद्राई मुनीश्वराः॥ कलियुगान्ते लोकप्रमारः कुर्यिताग्रयः॥ ततोधिकानुमर्वेपि सत्त्वाः ... संप्रदाययः॥ कलियुगेनयाकु
कुप्रमारः कुर्यिताश्रयाः॥ तत्र सत्त्वांस्तान् सर्वान् मनसा नाशितः॥ त्रियाने नायसत्कर्मभोगं समनुपादितान्॥ गत्वा इन्द्रियः सर्वे इर्वद्धि बुद्धिगानकाः॥
तत्त्वकर्मा म्लानापीत्वा वत्वत्वृ प्रतिविभाता॥ मनसा धियः सत्त्वाः सर्वसत्त्वाः प्रबोधिताः॥ त्रिरत्ने कुशलं कृत्वा बोधौ भवाविताः॥ एवं तच्छोगानन्दं गतं व
भाषानसंमुनिः॥ सर्वान्त्पश्चापि तान्सत्त्वान्सर्वगविनयेयः॥ अधस्ताद्गवोत्तलगक्षान्विसत्यान्विनान्॥ एवं समनुज्ञं संसमामन्त्रैव मादिशत्॥

श्री ना

पि॥ सर्वेषां सुद्दगांकृत्वा वृद्धकार्यं करिष्यसि॥ सद्धर्मसंस्थापनार्थगतवर्षसहस्रसंज्ञितः॥ वनिष्यसि विप्रश्रेष्ठः सर्वतत्त्ववमस्यपि॥ यथा तमपूनः किं त्वा प्रतिक्षणं कृतं त्वया
॥ तथापि सत्समागनूनमिति सद्भक्तिप्रमनघगां॥ इति तत्र जगत्कृष्णसमादिष्टं तिनाम्यमः॥ समुद्भवं वनं त्वायमाञ्जलिः समुपाश्रयन्॥ न लंगर्हस याथाकृपया
स्वैव मनोरथं गतः॥ अन्यायतत्सर्वाणाकृतं विनाणतं त्यक्तिनः॥ वार्धिर्वर्यस्त्वयं ध्यात्वा वनान्यं हंसं गच्छन्॥ संगमनं यत्र हंसं स्वामिनं यथा न्यपयाश्रमं॥ सर्वत्रापि तवा
श्रीकामसंपालयितुमर्हसि॥ इति संप्रार्थनां कृत्वा ब्राह्मणः सप्रमोदितः॥ सांजलिर्मुनिं नत्वा नतेव समुपाश्रयत्॥ ॥ इति श्रीमन्महर्कागम १४३
कमालायां समेडवन ब्राह्मण स यो कृष्ण निर्वाणगमनागमनवर्णनं॥ ॥श्रथ श्रीतयन्नागा ब्राह्मणः सविलासकुतूहल॥ मुद्रिताः सहसोऽभ्यु
यपूनः समुपाश्रयन्॥ नत्वा गर्हमनोऽद्भुतं प्रणत्वा मंत्रवादवं॥ महाकान्तिकंपश्यन्नाञ्जलिनवमब्रवीत्॥ ब्राह्मणः समानत्वं गत्वं सर्वपूर्वमत्॥ वाधिर्वर्य
सहायः स्यात्सर्वार्थसाधकः॥ वनमतविकसौहं एवं यं जनका भव॥ वाधिखाफास्यत हंसा मत्रदान पोगि स्मृत॥ व्याकृत्यालल दामोर्वेसम्वाख्ये तगवानपि

॥ ४४ ॥ एकः प्रसन्नात्मा गजेवं समुपाश्रयत् ॥ अपराविनीगर्वच्छिन्नामसमृद्धदवणा ॥ गदृष्ट्वा प्रसन्नास्या समुल्काय प्रागता ॥ नत्वा गर्भस्य पादौ कृप्रणत्वा साञ्जलिर्मु-
दा ॥ महाकानन्दिकं गंधवसमालोक्य वमब्रवीत् ॥ साक्षाहं भगजन्तीस्यां मामा सर्वधर्मज्ञमस्तु ॥ वाधिप्राप्तो रवाप्नोः क्षे व्याकुर्यान्मां गतमात्मनेनु ॥ ध्वनि संप्रार्थनां कृत्वास-
मृद्धदवणापिता ॥ नत्वा गं स्तुग गं गंधविप्रं गजेव मोत्रयत ॥ अथवन्नु नवाविजनक्षुतानामदवणा ॥ सा गदृष्ट्वा प्रसन्नास्या समुल्काय्य स्वागता ॥ नत्वा गर्भस्य पादौ
कृप्रणत्वा साञ्जलिर्मुदा ॥ महाकानन्दिकं गंधवसमालोक्य वमब्रवीत् ॥ साक्षास्यां श्रीनक्षत्रा ग मामा सर्वधर्मज्ञमस्तु ॥ वाधिप्राप्तो रवाप्नोःक्षे व्याकुर्यान्मांस्मन नक्ष-
त्रा ॥ ध्वनिनिवम सोऽदवीस प्रसन्ना गंधामुदा ॥ नत्वा गं स्तुग गं गंधव पथ्य नक्षत्रेव मोत्रयत ॥ अथमनमा तिथौ गजा पानधिन्यति क्षरयन ॥ गावुःशे गतस्समा-
लाक्य समुत्काया प्रयोगगो ॥ नत्वा गर्भस्य पादाञ्ज प्रणत्वा साञ्जलिर्मुदा ॥ महाकानन्दिकं गंधवसमालोक्य वमब्रवीत् ॥ आर्यां तदिजसन्निजरत्ववर्व सर्वमिमस्तु ॥
वाधिप्राप्तस्य पक्षेवानं छिमां छेमव काहमो ॥ वाधिप्रापो रवाप्नोः सा लगवान्नो गंधास्मनन्तु ॥ व्याकुर्यादपि मां श्रक्षे कृत्वाप्रहार्द्दि भाति नो ॥ ध्वनि संप्रार्थ-

रामा २ तुविमा २

अथ श्री वनकाली शिक्षा पारि भाष्
ग्रं सं मन्त्र संख्या दि

श्री रा

स्त्रग्गुणिल ग्रामयार्थिनः ॥ ७५ ॥ मयवाधिवर्यास्मत्तया मत्तगच्छित ॥ ७६ ॥ सत्कामसमस्तां मत्तकानुमिकी मृता ॥ नलगर्ग मुनीन्द्रं तं स नत्वा चैवमब्रवीत् ॥ हे गवन्वाधि
वर्यास्तु वनगा ममया वकाः ॥ एनतः सर्ववस्तूनि यावयूर्या वदालिकं ॥ यानिसर्वाणि धं हं गरणं प्रकृयामप्रसन्न धीः ॥ सर्वाधिप्रतिक्षननप्रदर्या यावदालिकान् ॥
यदि संवाधिसंप्राप्तात्त्वानर्थिना मम ॥ संमानाश्च सम कृत्स्न कापर्ययंन तत्त्वं यथा ॥ नवै शवकयान न प्रश्नक यानकेनवा ॥ मत्तया ननवावारक्षेत्र्या कृमीता च्य
र्थप्सितं ॥ तदाम मृगताः सर्वं सर्वदिक्ष समाश्रिताः ॥ मविसंवादिना मे त्वकता किं मे ब्रूताधुना ॥ ततः स तत्र विप्रर्षिः नलगर्गः समर्थवित् ॥ साधु साधिति तं नाथ पू १४७
नस्तमेव मादिशत् ॥ एवं कष्टवनं सा क्षप्रतिक्षानं गच्छति ॥ यथा मनुमिरवानंदनं धनमुनिना कृतं ॥ तथा यथा तत्त्वनामीता कालं ते स्वयय कालयकं ॥ मा कालीकश्च
ना क्वगीतास्तु अगकाज्जिनालवत् ॥ तस्मात् यथाधिसत्त्वनम विज्ञनमत्ताविनी ॥ प्रतिक्षनं तथा कानि यत्र थवानीं कृतं त्वया ॥ कथं लोकश्च या क्वगीतक थगतः श्रुमादि
तः ॥ तं सु विज्ञाति धंवाक्षेव्या चैकानं गच्छति ॥ तेथ्य सप्राप्त सर्वाधिः पूर्व क्वांदिशितासयत् ॥ संज्ञालप्रतिसंख्यायां लोकक्षेत्री कथायितः ॥ वकृत्कृत पतिक्ष

ष्टकादिगतास हस्रिम ॥ वर्षगताय् लोकानां अकाल्हगवाञ्छिनः ॥ ज्ञानमुष्यविनज्ञस्काहुय वा धीश्वनाहिधः ॥ सर्वज्ञाईन्मज्ञाहिङ्कथागतामुनीश्वनः ॥ सङ्कित्वा पंच
वत्वारिंशद्वर्षस्थिजगद्धिताः ॥ कृत्वासम्बुद्धकार्याणि समोप्यनिर्वृतिंययौ ॥ तस्यमुनिर्वृतस्यापि सर्वज्ञस्य वनस्यपि ॥ सद्धर्मे भासनान्यं वं तस्त्व वर्षसहस्रकं ॥ ततद्धर्मो विन
ष्टपि तद्धर्मप्रतिरूपकः ॥ ततवर्षसहस्राद्विप्रावनत्तौ गतागम ॥ तदासर्वविहारेषु हितरूपक्षाहिकवापिव ॥ उपासकाश्च सद्धर्मप्रतिरूपस्य गंवेनाः ॥ दुःशीलाविष
मावानाः लोपिक वस्तुलालसाः ॥ धर्मप्रज्ञापकलिनः सद्धर्मेयाति निन्दकाः ॥ संघदज्ञाप हरनाश्च मानवर्यानगाः गभः ॥ गृहिधर्मेद्रवाचावानानिर्लज्ज्या अृहिमानिकाः ॥
आमिषलाजनाश्च कामूढाः सद्धर्मनिन्दकाः ॥ यथेस्वाकाम हागमानि पज्ञकाप्रावेत्य युन्नागयाः ॥ तानपिरूपयायपक्षन्तमनर्लोक्ता दयागयः ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य
सद्धर्मे समयाजयन् ॥ कांश्चिच्छ्रावकधर्मे कांश्चित् प्रत्येकसम्बरे ॥ कांश्चिच्च बोधिचर्यासु विनाय्य संन्ययाजमन ॥ शिक्षवाप्यति दुःशीलाः कामास्थवीवनाह्वहाः ॥ ठिनत्त
स्तेणि मध्ये विमुक्तिपदगाविनः ॥ तानपि सजगन्नाथः कृपादृष्ट्या विलोकयन् ॥ संमानाशः समुद्धृत्य बोधिमार्गेन्ययाजयत् ॥ दयापरिसमापन्नानपि स

ज्ञानजश्च मवि...
लोकोद्धृत्य बोधी
धः २

श्री आ

सर्वधीरा भक्षना लवयूं र्वोधि वामि २३॥ एवं मनिर्देश स्वापि क्ष उरूपं विभयथ॥ मनत्न क्षत्र पापाण कोष्ट मन्दि दृष्टिकादि हि १४॥ एति मां बा विक्षयेवं वितयित्वा पठपिव॥ यथाविधि
प्रतिस्थाप्य लक्षयूं ४ प्रज्ञयामृत॥ तथा तत्पुणितृ याणि रूपविम्बानि वामृता॥ विक्षय विधिनास्थाप्य लक्षयूर्य प्रसादिताः॥ गन्धमाल्यानि समाल्ता ब सप्रसन्नैवात्मा॥ नमस्कृत्य वदनो
पि लक्ष्यर्य्यैव मादिताः॥ ध्यात्वा सत्त्वान मत्कृत्वा लक्षय १५ पृणिमासम॥ अपि सर्वमता मत्ता धन्यमात्मान ४८ तोषया॥ क्रमात्यानमिमास्येवं प्रवन्नमाजगच्छति॥ सर्वधीरा
भक्षना लवयूं र्वोधिवामि नए॥ यथैते स्तुति क्षनं मस्मि अर्दवं जगाहिता॥ संबोधिं प्राप्नुमिच्छामि यत्नैस्मिन्नन्नतत्लह॥ इति भगवन्कामतो विविन्नाक्ष सर्ववित॥ भगवान
सत्त्वहितार्थं मोवा क्षेत्र्याकर्तुमर्हसि॥ अन्यथा भवन्नेमवांछा संवस्कृत्य श्रम्यापि॥ किंत्री मकुशु वियाणि विना सत्त्व हि गेतव॥ सर्वाहुरीगरुविद्यादीन्सर्वपाने मिता
न्नपि॥ समाधिक्षान्तीमक्तु मस्तथवीर्यसायनान॥ सिद्धिसाधन सम्पत्ति वलकृण प्रज्ञाक मान॥ एवं से बोधि धर्मादि सत्त्वानां हितसाधन॥ बोध्यर्थं जवसत्त्वानां संबोधिं प्राप्नुम
त्लह॥ सर्वकर्मा हवान्धर्मान पि सत्त्वहितायम॥ एवं भगवन्बोधि प्रणिधानं जगाहिता॥ तथेमाद्रि समिच्छाम संबोधिं प्राप्नुमेत्ल १८॥ यत्रर्वं मत्त्वयो नापि संबोध्ये

१३०

व पिनात्मह॥ सर्वेषामेव सत्वानां रक्षार्थे धर्ममाचर॥ सत्वानामेव रक्षार्थे सर्वार्थिसाधयार्थिनं॥ सर्वसत्वात्मजदानांश्च संप्रदातुं समुत्सह॥ स्वकायावयवान्सर्वानपि
संप्रार्थितार्थितिष्ठ॥ तत्क्षयाद्धेत्वे सत्वानां तावदातुमर्थिनमुत्सह॥ यथाहं सर्वसत्वानां हितार्थसाधनायत॥ तवनितुमुत्सह धीवृद्धिगानि त्ष्कामा अपि॥ तथापवादिरिति दुष्टे
सर्वेणि सम्पादितेषां यह॥ प्रणामिति निर्दिश्य अपि मा क्षयेयं कमी वृक्षं॥ सर्वदुःखग्रत्यजित्वा सर्वसत्वहितायत॥ दुष्करा अपि कार्याणि सत्वार्थमितुमुत्सह॥ क्रिया
दियाविशुद्धात्मा स्थित्वा ध्यानसमाहित॥ सर्वसत्वहितार्थं संरक्षतुमुत्सह सदा॥ सर्वमास्तोत्रिसंसारे ... प्रज्ञानवन्तस्समाप्नुवन्॥ सर्वसत्वहितान्येवं सर्वदा कर्तुमुत्स
ह॥ सर्वविद्याकलाशिक्षा नानोपायेषु प्रयत्नत॥ सर्वसत्वहितान्येवं कर्तुं सदोत्सहस्व॥ संतिष्ठ प्रतिभानेन धर्मार्थसाधनायत॥ सर्वसत्वहितान्येवं कर्तुं सदोत्सहस्व
व॥ सर्वविद्याकलाभिज्ञो वशीमभिसिद्धिसद्बले॥ सर्वसत्वहितान्येवं कर्तुं सदोत्सहस्व॥ सद्धर्मज्ञानदीपेन तमोहत्वा त्रिलोकयत॥ सर्वसत्वहितान्येवं कर्तुं सदोत्सहस्व
॥ ठौ ... धियां नमवांछा यदि सत्वहितं न हि॥ सर्वसत्वहितार्थेतु गच्छिहं तुमुत्सह॥ बुद्धशुद्धियानमवांछा यदि लोकहितं न हि॥ सर्वसत्वहितार्थेतु ग

श्री मा

धिगंतू मंगरथे वगा सुमी क्षित्र ॥ तथानूपंच गा स्नानं नलगर्हं सुमी क्षगं ॥ सर्वतसन्नि षण्मूसलक्ष्म र्म ऽरार्तु समाहिताः ॥ सर्वापित सगासीनाय स्वापि ततृ पाप्रिताः ॥ निवक्ष्यक्षि
गापव सूतलयस्वस्व पिव ॥ सर्वमगंजगन्ना थं स्वस्व संमय वसं क्षिगं ॥ सुमी स्रगितप्रसन्नाश्च मनूमेवं व्याविकायन्तु ॥ ममे वाऽय समासीनः मन्त्र क्षायंजगहुनूथा मा
मवसतु ष्पयं ध्वनन्त क्षर्म सम्पादिरगात ॥ जंभूवे गं मूर्नि द्वापारथे कैको विविकायन्तु ॥ सर्वे पिसप्रसन्नास्स समुतिष्ठन्म रगोनेवाण ॥ तवं सर्वन्तता सीनानकथा
नानाविध्यास्तागीनु ॥ दर्शयं तछि मास्तुरीमा केगवान्समंगतिष्ठत ॥ तथासमुद्भव तुः सत्ताश्र तलं मनोऽर्थवनं ॥ बहुपत्र पमेलं पुनगाः समप यथेता ॥ अथसंत
गावां हस्व वास्मृतं गं पूनः क्षितां ॥ समुद्भवनुमामेन्मु सम्य थन्नाव मादि गता ॥ साधुसाधेत्व भंवामिवेन्य वानूलिकः सुखी ॥ सर्वषामपि सत्वानां हिताघतः
पलास्वनः ॥ तथ्य थापिद्विज रूथेस मंयन्नं नामविस्तृतं ॥ पुष्पस्वर्ण महायानं नानावं ः समाकुलं ॥ नानावर्णसूप ष्यास्वं नानास्त्लन समाकुलं ॥ नानासुगन्धि संप्र
र्णं नानास्य गीसुरवास्यदं ॥ नाना कान्त पताशा दृं नानोदगुश्ररणा शितं ॥ नानामूल समापन्नं सर्वौषधीसमाश्रयं ॥ तत्सम्पन्नं महायानं सर्वान्नाकान्त गन्धिति १३८
संयं यम हो प्रान सउपाया योजनप्रोतुप्रमाणेन वर्णितामधन नामपान्ति विरोचनमि
दियोजनप्रानके पि श्रियोजन प्रापे मानं सावन्नसर्व सातृ श्रीपिकान्तोक मापुं
वर्णितागन्धेन तपन्ति विरोचनमि ॥ क ॥ ७

चतुरशीतिर्लक्षसहस्रायुष्कत्वेन ॥ ऋषभनाथप्रभृति तीर्थंकराः ॥१ चतुर्णवतिः ॥
लक्षसहस्रादिस्थितिः ॥२

॥ प्रव्रजित्वा सर्वद्धिप्रमादयन्नितावति ॥ सत्त्वानि समाश्राय यस्त्वा विकल्पन्द्रियाः ॥ सर्वसंस्थाप्य सर्वयः पर्याप्तेन्द्रियाः ॥ तथा नानाविधेषा गेहेष्वस्य
स्व इत्वागया ॥ तपितश्चासना स्थानिक स्तुलागया ॥ यत्रापून्ये लोकाः इत्याख्यानतत्त्वरहितः ॥ तपि सर्व संस्थितेस्त्र सर्वयः पृथ्वी विवक्षः ॥ एवमप्यपि दृष्टा
दिविकलात्रयभाहिमा ॥ तपि तत्र अन्य संस्था काः मगाः स्थताग या ॥ तत्र सर्वत्र संज्ञा पञ्चेन्द्रियाः सर्वकर्मा ॥ हे मघपञ्च पूर्वेषुर्य दण्ड सण्डलक गर्न ॥ सत्य सीलाक
अतः सर्वीनाम्ना विस्तवनन्त ॥ वर्णनाप्येव सास्वं विनात्र यत्र ॥ ततः ॥ यस्त्वा नागास्तफा यथात्मक्रा इवा गया ॥ विकलेन्द्रियास्त्र यस्य को यव कर्म गति तापिता
॥ तत्त्वत्तास संस्थाप्य अन्य वासिनापि ॥ सर्वनीवृज ॥ सक स्थितिसक्तेशुलागया ॥ पृथ्वीन्द्रियाः सर्वीसत्का निषत्ता ॥ सकुवानता ॥ यत्राश्चिनम
ता ॥ सत्त्वाक अन्य श्रेधिवासिता ॥ तत्त्वता संस्थाप्य लसज्ञीविता न्द्रियाः ॥ तयः संस्थान संनकावन्ध भिन्न समन्विता ॥ यथाकामं सर्वं उत्कावनयः सर्वदा
म ॥ ततः सम सम्यस्त्वात्रातास्तफेवनान्यगत ॥ जिनलोभंगत्वावनयवाधिसमवनं ॥ तं सं विमलाभानं स्वं दुर्द्धर्ष विहारिनिलः ॥ जिविशं वाधिमासास्य सं

ॐनमोऽर्हिते मुलमर्षे ज्ञानं प्रवेशे ॥

पि॥ सर्वेषां मृडतां कृत्वा वृद्धकार्यकवित्पति॥ सहस्रमेकं वर्षाणां तत्र वर्षसहस्रसंख्यितः॥ वनिष्यामि वितृष्णो गः सर्वजंतुवनस्वपि॥ यथातथ मयूरस्त्रिः किंत्वा प्रतिक्षणं कृतंस्तथा
॥ तथ्यमसत्यमनूनमिति सर्वं प्रमन्यतां॥ इति गतजगत्स्नुः कृतसमाधिस्थं निभम्य सः॥ समुद्धरन् जन्तूत्काय शांकरलिः समुपाययन्॥ नत्वा गते स पापाङ्कपक्ष
त्वेवमतावगतः॥ अद्यानयसर्वाणां कृतविताणयं भावितः॥ वाधिवर्यायुगं हत्वा वनान्यहंकोगाक्रिगः॥ मं राभमनु यदृहतत्वा सेयमग्धनल्पपयाटणः॥ सर्वेत्रापि तथा
कृतकामसंपालयितुमर्हति॥ इति सुपार्थनां कृत्वा ब्राह्मणः समप्रमादितः॥ शांकरलिस्मुनिं नत्वा गतेव समुपाययत्॥ ॥ इति श्रीमन्महाका १४३
कमालायां समेडनः ब्राह्मणः स पंचानूनिर्नानिमत्थमागतयोकतनं॥ ॥अथकौतपूरुगोणा ब्राह्मणः सविलाङ्गकमात्॥ मृद्गिनाः सहसोत्थ
यपूर्नातः समुपाययत्॥ नत्वा गत्वा मनोडंगं प्रणत्वा गंजवाणवं॥ मसृकानुषिकांपमध्यन्या शांकरलिनवमद्यवीत्॥ ब्राह्मणस्ततः समानत्य गवं सर्वं षडंनमत्॥ वाधिवर्या
। सहायः सान्तुकृतवर्थिमाक्षकेतः॥ वनमगविकसोहंग्वयंगनपालव॥ वाधिवाफासगहसामग्रदानपीगिमृगः॥ व्याकुर्यालकदामांखं सम्पाद्येतगवानपि

॥ श्रुत्वा स्फ्रक्कासप्रसन्नात्मा गर्भेव समुपाश्रयत् ॥ अथ पद्माधिनी गवर्द्धिर्नाम समभूद्देवता ॥ गच्छद्ध्वसप्रसन्नास्या समभूत्काय पृथागता ॥ नत्वा गर्भस्य पादाब्ज प्रणत्वा साञ्जलिर्म-

ता ॥ महाकानृधिकं गंध समालोक्येव मब्रवीत् ॥ साक्षेहं गगनत्री स्यां मामा सर्वयक्ष्मसम् ॥ बोधिप्राप्तो भवान्वा (क्षे) व्याकुर्यान्मां न वास्मे नेतु ॥ इत्युक्ति संप्रार्थनां कृत्वा स-

मुद्रदेवतापिता ॥ नत्वा गर्भस गर्भगंध षिप्रं गतेव मा प्राश्रयत ॥ अथवनु नवानिफनकृता नाम देवता ॥ सा गच्छद्ध्वप्रसन्नास्या समभुत्काय पृथागता ॥ नत्वा गर्भस्य पादा-

ब्ज प्रणत्वा साञ्जलिमूर्द्धा ॥ महाकानृधिकं गंध समालोक्येव मब्रवीत ॥ साक्षेस्यां श्रीन … मामासेर्वयक्ष्मसे ॥ बोधिप्राप्तो भवान्वा (क्षे) व्याकुर्यान्मां स्वेन नक्त-

ता ॥ इत्युक्ति निवम सा देवी सप्रसन्ना गयासुता ॥ नत्वा गर्भस गर्भगंध पश्चिन्न … गेव मा प्राश्रयत ॥ अथ सनमा … पान … (क्षे २ यत ३ ॥ गावूषो कृत्समा-

लाक्ष सेमूत्कायोपयोगतो ॥ नत्वा गर्भस्य पादाब्ज प्रणत्वा साञ्जलीमता ॥ महाकानृधिकं गंध समालोक्येव मब्रवीत ३ ॥ अथ … सर्वज्ञेनम स ॥

बोधिप्राप्तो सप्रह्लावान … बोधिप्राप्तो … कालगता … ॥ व्याकुर्यादपि … हर्द्धि … ॥ इत्युक्ति संप्रार्थ

यामा १ तृतिया २

श्री आ

मम याचकाः॥ भगवन् सर्वेषु वस्तूनि याचयन्तु यत्ककः किंनराः॥ तानि सर्वाणि वस्तूनि शुद्धया हं प्रमादितः॥ यावत्त्वं तदर्पणकं दद्यां कस्मैचिद्यदीप्सितं॥ यदि न यात्रा सा तान्कांक्षितुं
न दद्यामर्थिवांछितं॥ तं वयं भगवाः सर्वैप्यविसंवादिता मम॥ नाहं स्वर्गफलाकांक्षी दानं दद्यां कथार्थिने॥ अनुत्तानफलावाप्तेर्ननिंद्यं सुष्ठु विर्ममः॥ यदि स्वर्गसुख
कांक्षी दानं दद्यां यदर्थिने॥ सर्वेऽपि भगवानस्य कीर्तिसंवादिकाः कृताः॥ यदि नाथा विलासा हं दानं दद्यां यदर्थिषु॥ तन्मे सिद्धिरहं कोऽप्यर्थी सत्वकं नतकोपिहि॥ एवमहं
सप्रसन्नात्मा सर्वेषामर्थिनामपि॥ बोध्यर्थं श्रद्धया दानं संप्रदातुं समुत्सहे॥ एवं नापि यदि स्यान्मे दानं स्वपि न त्विनेहि॥ नापि संबोधिसंप्राप्ते धर्मसाधितुमुत्सहे॥ संसा
तामवसेवेषां संबोधिपदसाधनं॥ पृथ्वीवावपि संक्लिन्ना दुःखानि तान्कुमुत्सहे॥ एवमहं सदा सर्वपापानि तासमुद्यताः॥ तत्पक्षन्यापि सत्वानां संबोधिक्षेपयामि तमसयं
॥ एवं यद्यपि सत्वेषु सर्वसत्वाः प्रबोधिताः॥ संबोधिं नाधिगच्छय बोधिं प्राप्नुं नेवाप्नुयां॥ इति भगवन्सपर्यं प्रतिज्ञाय जगद्धितं॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा यत्नसंबोधि
साधय॥ एवं संगतं बोधिसत्वं हि विज्ञाय सर्वविन्॥ भगवान्मां जगद्धितं वाक्ये व्याकर्तुमर्हसि॥ इति भवन्तं प्रहृष्टात्मा वाक्यं कार्यं जगद्गुरुः॥ सर्वसत्वहितार्थं मां नि १८७

त्याज्जुसंप्रसीदस्तु ॥ इति संप्रार्थितस्तेन स मुनीन्द्रः प्रसन्नधीः ॥ साधुकारं वदंस्तस्मै पुनरेवं समादिशत् ॥ धन्यासि त्वं महासत्त्वा यत्त्वानुरक्षणं जगत्सु ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन
सम्बोधिं प्राप्तुमिच्छसि ॥ तथा प्रणिधानं तत्र सर्वसत्त्वे कृपां ॥ सा शंकाविरहितधीः हि प्रसीद समस्तार्थकेवं ॥ इति तेन मुनीन्द्रेण समादिष्टं निगम्य ते ॥ सर्वे ते लोकिपाला
श्च सद्गीतां प्रसादिताः ॥ साधु साध्विति तेषां च कृत्स्नधर्मानुवादिनः ॥ साञ्जलयः पुरस्तेऽवं भक्त्या श्वन्तनुवादतः ॥ धन्यासि त्वं महाभाग यत्त्वं सर्वं समभ्यगात् ॥ सर्वपा
पमितायर्थं त्वं स जगद्धितम् ॥ तत्र यथा प्रणिधानं प्रणिधानं कृतं यथा ॥ इति वीर्यमहत्त्वा द्वन्द्वं निर्विवादं क्रमात् ॥ तथान्ये च महासत्त्वे प्रणिधानं कृतं तदा ॥ सं
स्काविकारं हीनं च श्रोत्रविज्ञानं कृतं यथा ॥ एवं सत्त्वेन संस्थाय प्रणिधानं कृतं तदा ॥ मत्वा समन्ततः प्रभाव्य नन्दतुषादिताः ॥ गगने समुद्गतेन सर्वाङ्गं प्रणतिं नन्दिताः
धाशाकृतिं कान्तं लालम्बान्तमालां कृत्वा समर्पिताः ॥ अनुमोदनं तत्रनुप्रणिहितं मया यथेच्छ ॥ यदा तेन मुनीन्द्रेण संबोधिं व्याकृतास्य हि ॥ तदा विश्वानि सद्धर्मकीर्तिं लोकत्रय
गाय्यहं ॥ पंचके बोधिं कल्पानां जरामरणं पंचविंशायके ॥ संबुद्धः सुगतो नाथः सद्धर्ममार्गदर्शकः ॥ सार्थवाहो जगत्कल्यधर्मराज तथागतः ॥ यत्स्मिंस्तिम्मा

श्री जा

बोधिवानि लभ ॥ तक्किं माउत्समयपव लजय षु समपतिकाय ॥ तपिश्री सकुलावासा लवय बोधि वानि लभ ॥ यक्रुगितिर्लजयर्मसम्प्रसन्नागयाभ सया ॥ तपिश्री सकुलाश्रन्ना लवय
बोधिसाधिन लभ ॥ यत्र संगीति वाघ्रेथ लजयर्मप्रमादिताय ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवेय बोधि वानि लभ ॥ यत्र न स्थविता मेश्व लजयर्मसदायर्म ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय
बोधिवानि लभ ॥ यत्र संठक्क सवेज र श्र मयर्यर्म मा श्रम ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय बोधि वानि लभ ॥ यत्र निर्मात्य लोकानिष्ठा प्रयर्मप्रसादिताय ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लव
य बोधि वानि लभ ॥ एवं मे ऽत्र द्वयो रप्याल जयर्मङ्लात्सर्वं ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय बोधि वानि लभ ॥ एवं मे तक्किं मार्ते न लजयर्थप्रसादिताय ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय
बोधिवानि लभ ॥ तथा श्रम्त्वा प्रमत्तार्थ लज यर्मासमाहिताय ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय बोधि वानि लभ ॥ तथाच स्थिति मात्रुलज यर्थमसमाप्तनाय ॥ तपिश्री सकुलाश्रन्नो ल
वय बोधि वानि लभ ॥ तथानामसेसु वाल्य लजयर्मसमाप्तनाय ॥ तपिश्री सकुलासंगा लवय बोधि वानि लभ ॥ तथास्य दर्शनं कृत्वा लवयर्थप्रसादिताय ॥ तपिश्री सकुलाप
न्ना लवय बोधि वानि लभ ॥ तथा मे सप्र र श्रव दृष्ट्वा यपारि नन्दिताय ॥ तपिश्री सकुलापन्ना लवय बोधि वानि लभ ॥ तथा सलाविरं धर्मं श्रुत्वा यमनमादिताय ॥ त

१४९

पिशीसकृ आश्वनालवयम् वीथि वानिश ४॥ तथामद्रभि संस्तृत्याय प्रसन्नाश्रुताथिन ४॥ कपिशी सकृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ यथेकाविलमाऊ नलऊय भैक्रधं मुता॥
कपिशी सकृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं स्वप्रपिवे गानि लस्त्राये तर्षमामृयु ४॥ कपिशी सकृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं मनामऊ त्वापि लवयं यथ्र सादिता ४॥
कपिशी सकृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं यऊलमाऊ नलऊयं मेप्रसादिता ४॥ कपिशी सकृ आश्वना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं यपंत्रलि वापि मूऊयय श्वमांमृता॥ कपिशी
सकृ आश्वना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं सह्वमे माकर्श्चे लऊयनेनसादिता ४॥ कपिशी सकृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं सत्त्वम मसंप लऊय ४ समयाक्लिका ४॥ कपिशी
सकृ आपन्ना लधयं वीथि वानिश ४॥ एवं मणमनंक्षत्वावेन यथऊगछिम॥ कपिशी सकृ आश्वना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं मकिलावनेकूर्य ४ मत्वाहिं तंत्रयं॥ कपिशीस
कृ आपन्ना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं मदृश लावंन पनिलाम्पतआकर्य॥ सकृमेकीर्लिनत्वानि कूर्य ४ प्रकलिमान्यपि॥ कपिभश्वियेकलिन ४ सक्कमेर्थपुवाशका ४॥ क
पिशी सकृ आपन्नां लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं कालूपविलाथ सनयृथनुमापिमां॥ कपिशी सकृ आश्वना लवयं वीथि वानिश ४॥ एवं मसर्वलावनलेनययनेनाकृता॥ क

श्री श्रा

पादिशत् ॥ तथ्य वैलानिवाधीश्च वेशानघ्यानिवस्त्वयं ॥ समधीस्त्वर्व संघस्य उद्दिष्य समुपादिशत् ॥ तथ्य सर्वाणि संबोधि पक्षाणि सकलान्यपि ॥ स्वयमधीश्च संघस्य उद्दिश्य

समुपादिशत् ॥ एवं सर्वाणि धर्माणि संबोधि साधनानि स ॥ स्वयमधीश्च सर्व स्त्वा लोकाय ॥ समुपादिशत् ॥ एवं सद्धर्म ॥ प्राज्ञ्मन लोग हसि शासनो ॥ सर्वसंघे विनशो स प्रय

त्वानञगच्छित ॥ तथैत सांघिका स्त्वर्वतद्यदत्त शक्षनकाः ॥ बोधिसत्त्वा महासत्त्वा वत्स वै बोधिवाहिनः ॥ एवं सर्वपिसत्त्वाश्च शास्तृकर्मी मङ्गलाञ्जिनः ॥ जिनत्व सङ्गनेस

त्वा पुरन्तः सर्वशाज्ञुत ॥ तदा सर्वे ते लोकाश्च मङ्गलं निनृपद्ययं ॥ संबोधि साधना लोहमस्तु पुण्यानुभावतः ॥ तेन ते स लगवान् अनुकम्पावलग सोऽज्ञगच्छतां ॥ कृत्वा संवृक

त्वार्याधिसमाप्यनिर्दिशंयथो ॥ तन्निर्देशं पनिश्चत्ये महाकारुणिकोपसः ॥ यथाविधि समस्तर्चा स रक्षाप्यगर्भ मङ्गलो ॥ ममकवन्त मर्यमक्ष्य महद्दुले समभ्यर्चितो ॥ १३८

कानयित्वा प्रतिष्ठाप्य यथाविधि समादधात् ॥ ज्ञुकृस गन्धि पानीयेः स्नापयित्वा यथाविधि ॥ नाना सुगन्धपुष्पादि पूजाङ्गैः संसमर्चयन् ॥ कृतधूपपाकादिना

नालंकारमच्छितं ॥ कृत्वाशीमनखधूपेश्च पञ्चदीपैः समुद्धृतैः ॥ फलमूलादिनाद्येश्च नैवेद्यैर्विविधेन सेः ॥ स्फुटधीभिः सक्षकाष्ठैः पानैः ज्ञुद्धैर्वीणा स्वैः

= संकृत्वो न भगुवल्ले न भथोयोन्ननविला रेता २

॥ संगीतिवादनात्साहे श्रुतिहि श्रद्धिवानिशं ॥ प्रदक्षिणाप्रणामादि सत्कारेः सर्वथाहरन् ॥ तथा सर्वर्द्धिजातोऽस्य लोकाः सद्धर्मवांछिनः ॥ सर्वथा तं समस्त्वर्थ सत्कम स
र्वदाहरन् ॥ एवं गहनं कृत्वा सच्छिद्रः कल्याणमयः ॥ प्रभावयन्वरूं सत्वाक्रियान सन्नयाजयत् ॥ गतः समसद्गुणोक्तस्य स सनन्दुयागतः ॥ एवश्रूणुगमापाय
ब्रह्मचर्यं समाचरन् ॥ मस्तिनः क्षिविक्तिनीयात्पातिः कायाययीवनः ॥ निः कोऽप्यहं नमहातिक्षावसुवानीसधीनरहन् ॥ तद्दकवासिनां श्वापि सद्धर्मेणतां वांछि
नां ॥ वरतुन गीतिसाहसूं पदश्वेवं गदन्त्वभात् ॥ गानसर्वपितारिस्याविनीकावाधिसंवय ॥ सूहनाविडितनमा धयेसुवर्धमवावितथा ॥ समस्यनतलगर्भस्य यसनं
संप्रतिष्ठितः ॥ दगवर्धसहस्राविसद्धर्मेथनेकालवगे ॥ गतसमसंप्रतिष्ठित्वासद्धर्मसमुपादिगत् ॥ जिनस्य मेवरणस्थाप्यसर्वान्सत्वान्विनोदयन् ॥ ओयासर्वकेवग
कांश्चित्कांश्चिच्छ्रावकसमन्वेने ॥ ब्रह्मवर्यव्रतगर्वांश्च कांश्चित्तसंकसंवरन् ॥ वीधिवर्यो व्रतकांश्चित्कांश्चित्सक्रमवसंवेन ॥ महाहिंडिकोगत्य विनीयसंमया
जयत् ॥ पक्षहत्त्वमयेलोकं प्रतिसास्वादसंस्तवं ॥ गन्यात्मकोजगत्सर्वं लंगरमनकत्लिनं ॥ स प्राप संवसंस्थानं क्रमात्संनिष्ठितं ॥ मनोयदकगानंद्रप

उ
पासग

ठी ग्रा

त्त विम्रातीसमृद्धिमान्॥ मतःसर्वद्धिमान्नात्वाननिर्जनमंगलवर्नं॥ तौ कान् पसमाउ ष्टं गतोवृक्षसमाश्रितः॥ तदा कन्निकाट व्याधः समवागधनुर्नायुधः॥ स्वपवानुसन कतश्च ह
ावनमगनपृः॥ तत्राशिमस्वधेवर्कं तंविलाक्य सर्वद्धिमान्॥ वणूलः सहसोगच्छत्तासयंस्त्ववमब्रवीत्॥ अयधीवन मां हन्तुं त्वमिहायासि निर्जने॥ तदत्र गक्षियं धीर्य नद्दा
मपृणामम॥ यदिगच्छामि मां हन्तुं हत्वाउं त्वं गतं ममा॥ अथ गच्छति तत्रैव हत्वात्वां मम हं ध्रुवं॥ इति तत्ता हि तं व्याधं सव्याधस्तु भितान गयः॥ त्वया लतं मसंत्रास समब्र
वीदवमानतः॥ तापनपापनाशं त्वं किं मेयाउ कृतं त्वया॥ यत्त्वं निहन्तुं मां ह्यागमिष्यसि गत्वा थेवद॥ अपनार्थं विना [illegible] हत्वा मां यदि [illegible] क्षमि॥ नाजात्वानन नरो कान्तं १६०
हत्यानिवृत्त्य पीतयत॥ इति विनापनार्थं तमा हन्तुं कथमर्हसि॥ यं या क्षिवापनार्थं ममाथापि कर्तुमर्हसि॥ इति संप्रार्थितो नेन सव्यधस्तापहि शोधितः॥ हिंसो निव
र्ध्यमम पवर्धसंपन स्वमब्रवीत॥ अत्रत्र किं त्वयाख्यातं मयपनार्थं कथं ननु॥ यन्मृगमदीन गृहत्वा गुच्छायेनमिहर्द्धिमा॥ किमगोऽयं पणाि: सर्वं च पनार्थं ह्यागतस्त्वमि॥
यदर्वेनि बिममस्विप्य पण्मृत्वापिर क्रमे॥ अगन्मा हापनार्थं गयत्तसपृत्वनवासिनः॥ गृह गपत्रा गिनाहत्वा विक्रीयाऽर्ज्य यसधनं॥ किमगद्धनमसमग्राकावल हृः स्वहमेव॥

आनिहिंसामता यात्र पात्रकीर्त्तिसुखदायिनी ॥ यहिंसा शिनि हंतानस्मै सर्वेननकोगता ४ ॥ सुवीथि वह्निकत्थाक्षवसन्नात्ता गवर्भार्दिना ४ ॥ ८५ गिरिहिंसापनिग्राया सकृतिभीर्त्व
वांछितिसि ४ ॥ स्वहिंसाक्षिनता ४ सत्वानतग कर्मिस्वगींषि ॥ अहिंसापनेमी धर्म ४ सर्वतीर्थनपावन ४ ॥ समस्वाधि लानसंतलीसे वसत्त्वहितार्थकृतु ॥ ८७ गिरिविद्यायसंखवाधमसली
खंयदि वीछकसि ॥ हिंसादिनतिमत्त्व्यवनधर्मसमाहितः ४ ॥ धर्मगणकमग्निविलं गद्धविवत्तगवत्त्ववी ४ ॥ सधीर्विद्याम हाति द्विशः सवक्षुर्णी संम्यद्धिमान्तु ॥ गतः ४ सर्गीसम
ह्मयादत्तार्थिस्यायथेसिता ॥ मत्त्वर्त्वस्वयमात्तुक्षुपेनानपि वराजयत ॥ स्वपनात्तैर्हितं स्तक्षांसंव कुतीरुधात्सका ४ ॥ जिनेन्द्रं गौनगंगत्वा गकन्नगाणगवनेत ॥
गतः ४ सुकानुवानी से सर्वसत्त्वहितार्थीकृत ॥ समस्वाधिप्रतिक्षानन वाधिचर्यावियंवनत ॥ गतः ४ सम्बोधिसंलनं पुनयित्वाय पाजनी ॥ जि विश्वं वाधिमासाप्येनिर्ह्गीतिपद
माप्नयात ॥ एवंविद्यायसम्बोधिपदं यदिस्वमिच्छसि ॥ ८८ हापिवसपारुड मोक्षानिशकुमिच्छसि ॥ तदनत्तापवृत्तस्त्वंविनेम्यवाधिमानसः ४ ॥ जिनत्वं गंग्वंगत्वा गकन्निसं
समाहितः ४ ॥ ८९ एवं भवत्व ४ जत्वा जिनतं गनंगगतः ४ ॥ संवाधिप्रतिक्षानन यदित्वं वनमस्तुतं ॥ तपत्तप्रसगोरुडपन्नगापितमगोगतः ४ ॥ आमंगवाधिसंलानं पुन

श्री आ

ष्टः साक्षयन्त्यर्थाः पात्यमित्याय धर्मक्रमं ॥ निर्विघ्नं वाधिमस्मान्नपनय धर्मनामध्वगं ॥ धर्मिष्टः परित्यक्तात्मा सर्वधर्मस्य रक्षकः ॥ सर्वज्ञोऽहं नमस्तारित्वः सर्वलोकाधिपात्रवत् ॥
धर्मिष्ठाख्यानयो विद्या सर्वधर्मार्थसिद्धिमान् ॥ सर्वसत्त्वहिताख्याने मित्रविद्याधियोगवत् ॥ धर्मधाममगिधीनः संवाधिव्रतसाधकः ॥ त्रिविक्षांबाधिमालाप्यनिर्दृश्मिपदमाने
याद् ॥ तस्मात्कर्मसमाक्षायवनिगर्वं स्वार्थसिद्धिः ॥ पापकर्माणि सर्वाणि वर्जनीयानि सर्वथा ॥ पापेन दुर्गतिं याति दुःखानि विविधान्यपि ॥ दुःखार्तमन्विमं ह्यात्मा नरके प
तत्यवश्यं ॥ यथा हिंसानृतात्कृत्वा परपापविधायकाः ॥ गच्छत्यभीविमादृत्वा हन्यमानः स्वजनेनापि ॥ नरके पितामाता वनित्वक्षयमर्कि कते ॥ स्वर्गिगोऽपि पञ्चेवनो १५४
रक्षकपक्षिजन्तुहिंसा ॥ यदत्तादायिनां नीचास्तानल्लादा विद्वेषकाः ॥ गवः ॥ मदोन्मिताः ॥ कुक्षामैः पाः ॥ कृपया सर्वनीति दुर्गमाः ॥ परत्रापि च मधुगाः ॥ वीमुखा मर्दन्तः ॥ कु
त्सिपापाप्सिसंदग्धा विद्यमानादीनि जगत् ॥ मिथ्याकाममनां याता दुर्गतिं विकृतवानागि ॥ मद्यधर्मयपानात् सत्यवर्णिता विकस्वपि ॥ मद्यामांसमनवकायातात् ॥ मांसमलीव
कर्मविशिताः ॥ तत्सुमतत्कृत्यमाना श्विवान्नं यतिजीवि र्मा ॥ मिथ्यादृष्टिमिथ्या यत्र गतिः स्वात्मा कनिन्दिताः ॥ सदानामप्निसंगपाद्धक्षा व्याकुलि गाये याः

श्वः   श्रा२

॥ खिवकयान्तर्तकानामुणाश्चिनन्नकगताथ॥ विधुमुश्चघ्निमग्नास्कर ष्ट्रकंकलमिकीटके॥ किन्नप्रलापिनासवनमहिथपमिवर्जिताथ॥ सवज्ञा गअप्तिसंगफाक्षथकु
यशाख्नकिहर्द्दगौ॥ खिनाणिहु थरवर्तुआनाम्मणाआणाश्वनानवा॥ पीक्कूर्लाणयलिन्नाअभलक्ष्मकेवगुपक्किलिथ॥ पेगुनपेलाखिरंगाथवगत्वाधपमिवर्जिताथ॥ समिता
थमर्वेवनाश्ववनकिकालसर्प्यवग॥ जिक्कानागअप्तिसंगफामणानेनयेसंतवाथ॥ उमकिंदष्धमानाक्षश्वगअनतादिगरूतुलिथ॥ पान्नष्यववस्तुर्येप्नाकिसाधकरूनान
यि॥ सर्वेश्च पनिहीयकर्इगेंनाथहूणिमक्रनेथ॥ पनरुंननकायाताथ क्रखिपासाप्तिदाहिताथ॥ अथायउणनिगफानिउक्काभिमेवगममताथ॥ वा ॥ पवालिश्वमममा
क्रानकविलास्कद्विनोकलाथ॥ अविश्वमयानिनमाथस्वगनेभिरुश्चवान्धवेथ॥ पनरुनंनकेयाणानिवक्षयमकिंकनेथ॥ गक्किलिर्हन्यमानास्लखिनान्मश्वरनिआगविगं
गायवव्यापन्नविक्सकमन्धधेमसुखांपिताथ॥ दिव्यामत्यंप्रउक्कापिनेवमलक्किसत्तखं॥ पनरुपिमखंनेवललक्किश्चरवभवग॥ कीत्रक्रणअप्तिसंदरमालक्ष्मकेक्रनगगरु
लिथ॥ पंभिश्वाहस्तुयामृद्धालपिविश्वमघातताथ॥ कीत्रनागअप्तिसंगफोधनक्किश्चनिगमदा॥ पंनरुनामकीयास्लसवाद्वथरवाप्तिताथिताथ॥ उमकानननकथव

उतनपाहिमनीश्रवाहि वाह२

कानसुजे२

श्री ग

भसनमेव पाणकरणा निवारयन्॥ बाधिमाधनवयीम सर्वान्श्रीकानवानयत्॥ एवं मद्विषयं सर्वमन्नप्यसमवीर्यवान्॥ मद्धर्मवान्र भत्वाहे नकाशात्संप्र शशिनो॥ एवं समसर्वलोकानां

नाथश्चाम्रफादिनाथ हगुः॥ जिनत्त्व गतं मंक्त्वा सदा वंनजं गच्छितः॥ एवं सर्वपि फलोकाक्ते तद्धर्मनिवासिनः॥ जिनत्त्वं गतं क्षत्वा प्रवेनः सर्वदा गुरु॥ कर्णवैसातिम हाधीरा छ

दवीर्यपनाक्रमी॥ भूम्यानषिमहीपाला निर्जित्य प्रगिवाधयन्॥ पाणकरणा निवार्यवं प्रावान यत्सगागुरु॥ गथसर्वपिगतयाक्तदनः णामना स्थिताः॥ जिनत्त्व गतं पंक्त्वा प्रवं

मृधिसमवनी॥ एवं क्रमेण सर्वान्सलया जित्वा हिवाधयन्॥ जिनत्त्व गतं रक्षेकाप्य प्रावानयन्सगागुरु॥ एवं समनिर्जयन्सर्वाजि मन्द्वीपाधिपानपि॥ जिनत्त्व गतं रणत्का प्रावा १७८

नयत्सगागुरु॥ गथसर्वजित्वी सर्वजम्बूद्वीपाधिपश्चवः॥ चक्रवर्त्तीमिहाना ज्ञातवस्षधवलागिधः॥ ततः प्रथक्षवलत्रयी सर्वाल्लोकान्युवाधयन्॥ पाणकरणा निवार्यवं सद्धर्म

मन्नियाजयन्॥ बाधिमार्गप्रतिष्ठाप्य वाचयित्वा सगागुरु॥ जिनत्त्व गतं रक्षत्काप्य प्रवेद पालयन्॥ गथसर्वपि लोकाजम्बूद्वीपनिवासिनः॥ तदनु णामनाश्चानाविन

हपाणकात्सवाः॥ सद्धर्मनिनशात्वा हाक्षिनत्त्व गतं हंगताः॥ बाधिवर्याविगंधत्वा प्रवनः सर्वदागुरु॥ गवासर्वजलोकाम निवृत्या गंगुहान्सवं॥ महानन्दसुखाप्त्यासंभाव

र्जितसमकत४॥जगत्समस्तंवर्तुमीन्ड४पृथ्वीवलीनृपाधिप४॥जम्बूद्वीपतःसर्वत्रदरणक्षयमघामयत॥इक्ष्वाकुयाववकाःसर्वयज्ञामार्यनृपाधिप४॥सर्वार्थिरप४प्रदानानिक
र्तुमिक्षिगिसाष्ठ्रगं॥गदत्तयार्थिनालोकासर्वसमूपागमा४॥नृपमश्चाप्पितंदानंप्रतिगत्वैहेतुमर्हथ४॥श्रमश्वंधायत्तांकृत्वासर्वप्पार्थिजनामृदा॥सतसास्येनतद्रुसपू
र्वतसमूपायय४॥तत्रार्थिजना४सर्वतस्यनाज्जयातिथं॥उद्दत्वेनंप्रसम्यापिप्रार्थयन्त्वंमीप्सितं॥सनामागान्तमालोक्यसर्वानर्थिजनान्मुदा॥यथार्हितंविगंडवद्दत्ते
वसमूपादिशत्॥तावकार्थिन४सर्वेप्रत्येकुभवचाक्षना॥यदहंदातुमिक्षामितत्सूक्ष्मंवजगाछितं॥गदतत्मवव४कृत्वायंसस्वसमाहितः४॥मद्वयानिविसमारायवनं
सर्वदाशुभं॥यदिमेरवेसदाकुंपन्नतापिसमिक्षथ४॥विनयपापंकामस्य४प्रवनवंसेदाशुत॥कस्थंयद्विवनजातसदावीमेक्लेशवत॥मुर्गिनापिगक्षणसदाराक्षग
सद्गतिं॥आमलवाधिमंतानंसूनयित्वाजगाछितं॥तिविक्षंवाधिमासाघनिर्वृतिपदमाप्य४॥श्रुतिसत्त्वंपनिक्षायछिनेत्वगवर्धगता४॥सर्वसत्वहितार्थंसप्रवनवंस
दादेवात्॥श्रुतिजननतद्दुदसमाहितेनिगम्यत॥सर्वगतथतिविहृप्यपाप्नतन्दस्ववाधिता४॥ततकर्थिता४सर्वगदत्तेःसमनानता४॥सेनावांक्षारिलक्षार्थिमुदात्व

श्री उत्त

वाणि लं४॥ज मा त्या न मि गा ४ सर्वाः पूजयित्वा अगच्छि गा॥ मा वा त्रि र्थिं ग्य संबोधिं प्राप्य स्तु ४ सु रा ता अपि॥ एवं विस्मय संबुद्ध गनर ए समुपाश्रिता ४॥ बोधिसं ता न स क्रम्मं कल्पि

बोधिं वांछि ति ४॥ ए बुवाच दि दिं मुनीन्द्र यथ उ त्वाम कल्न क्षमय ४॥ भूदि गु कथ ति विहृत्य ग ए व समुपाश्रय गा॥ गच्छ त्वा मुदि ता ४ सर्वे लोका सत्ते भिति ति हि ता ४॥

स क्रम्म सा धना त्ता र प्राप्या स्तु बोधि वानि ल ४॥ गत सा न ए गु कृत्वा ना आ संबुद्ध मा सन॥ स क्रम्म सा धना त्ता र स म काय क ता उ लि ४॥ नत्व गर्क मनी ढं ग प्र ण त्वा स मु

पस्थि ता ४॥ संव र्द्धं वे ग वयो श्री प्रव्रज्यां स म याच ता॥ ते गा व त्त्र ए मा ला क्षु सं मो दं व्र ग मु द नं॥ प्रव्रज्या ख ग भिक्षा मि तं न्नम प्र सा ५ म हि ता॥ एवं ज्ञा ता सं प्रार्थि ता गा न त गवाम्स (१२१

मनीश्वर ४॥ ए क्तं न ए ह्युन ४ स्तु व्वा मरमा लो क्ष स माहि ता गा॥ जा हि हि हे मा म हा सत्त्व ख ग व्वे ने स माहि ता ४॥ ए वं सु त्वा भ म न वांछ्र ना आ र्नं स म म य हि ता॥ एवं हि नि स म पा दि

ए गा न ग स्त्रा म हृ प गि ४॥ सु हि गु ना ४ पा त्र दे हि क्षु का षा य वी व ना त्व ग ४॥ सं ह व्हा न न सम्बोधि प्रति क्षन स माहि ग ४॥ नि ४ क्र र भा हि न हा स त्वा व त वे व्र क्षु भिक्ष णि ४॥

गहू स्वा ग स त तु ४ स हस्र गन या अपि॥ अं न य नी ति ना ह स्र का ह ना आ ४ प्र मा दि ता ४॥ म ध्य दान वा ति प्रा ग कां ध्या पि सं प्र मा दि ता ४॥ संव द्धु भ स ने ग प्र उ द्धृ या गा न

= गपिव २

१ अशीतिधर्मस्कन्धसहस्राणि श्रावकयानकथा २ ३ सप्ततिधर्मस्कन्धसहस्राणि प्रत्येकबुद्धयानकथा २

संगताः ॥ जिनस्तत्र तज्जनं कृत्वा संप्रार्थ्य तं मुनीश्वरं ॥ प्रव्रज्य व्रतमासाद्य बभूवुर्ब्रह्मचारिणः ॥ सर्वेपि ते मुनीन्द्रस्य तत्र गर्भस्य शासनात् ॥ सद्धर्मसाधनारूढाः सम्बोधिपदलाल-
साः ॥ आकाशानि निर्मलान्मानः पवित्रा ऋद्धिमद्गुणाः ॥ अर्हन्तः सर्वलोकानां पूज्या वन्द्याः सदा भवन् ॥ ततः समुद्गतः श्रीमान् सुखावती क्षितिकोद्भिजः ॥ ततस्ते तु गत्वा [illegible]
श्रमणक्षत्रकालवत् ॥ श्रावकयानधर्मादि स्वयमधीत्य गत्वा कथां ॥ सर्वश्रावकसंघस्य पठित्वा समुपादिशत् ॥ तथा प्रत्येकधर्मादि स्वयमधीत्य गत्वा कथां ॥ प्रत्येकबुद्ध-
यानस्य पठित्वा समुपादिशत् ॥ तथा च समहायानधर्मादि अधीत्य स स्वयं ॥ गत्वार्थे बोधिसत्त्वेभ्य उद्दिश्य समुपादिशत् ॥ तथा सम्यक्प्रकाशं तु स्वयमधीत्य विस्तरं ॥
सर्वसंघस्य उद्दिश्य संदर्शयन्नुपादिशत् ॥ तथा स्कन्धविशुद्धानि सर्वधर्मेषु यत्नान्यपि ॥ स्वयं विशोध्य सर्वस्य तस्य पठित्वा समुपादिशत् ॥ तथा समाधिज्ञानानि स्वयमधी-
त्य विस्तरं ॥ सर्वस्य सांघिकस्यास्य सदुद्दिश्य समादिशत् ॥ तथाधीत्य स्वयं वासौ प्रज्ञाध्यानविस्तरं ॥ सर्वस्य सांघिकस्यापि समुद्दिश्य समादिशत् ॥ समाधिध्यानवी-
र्याश्चाप्यधीत्य स्वयं तथा ॥ सर्वस्य सांघिकस्यापि समुद्दिश्याप्युपादिशत् ॥ तथा ततः क्षितिविमोक्षाणि स्वयमधीत्य स सुधीः ॥ सर्वस्य सांघिकस्यास्य समुद्दिश्य ख्यापयत् ८

५ शतसहस्र स्कन्धविशुद्धिकथा
६ शतसहस्र आतुस्कन्धविशुद्धिकथा
७ शतसहस्र आर्याधिकस्कन्धकथा ३
९ शतसहस्र प्रतीत्यसमुत्पाद स्कन्धकथा २
११ शतसहस्र विमोक्षमुखानि २
८ शतसहस्र रागद्वेषमोहप्रहाणस्कन्धविशुद्धिकथा

मत
१ शतसहस्र महायान महायानकथा ४

४ शतसहस्राणि स्कन्ध... कथा
१० शतसहस्र समाधि स्कन्धकथा २

५
वसुन
श्री श्रा

कादिवानिगं॥ आनामवकारग हानि लंको त्यागमवर्ज्जयत्॥ यकाश्च कुपिता क्रूर प्रवचनकाः समकगतः॥ शीसमद्भुत्यमाहस्या निवृत्ताः समवर्जयत्॥ ल तलगनपि गावाश्च प्रव
नकादिवानिगं॥ आविरश्वोजः समाहस्य महत्यागमवर्ज्जयत्॥ पृथिवीव खलीत गानिन् क्रमलः रसोषधी॥ प्रवल सूर्यनुकफाओक्षणधूलिधमल्ला॥ वृक्षाः उत्कप
ला भाश्च वियकृपथ्य तःषः॥ विरुलमस्य सस्याश्च वदवर्द्दगीताल्कव॥ नदीकूपतडागादिजलाशयाश्च पंकिलाः॥ उत्कूलत्यक्त जलनिस्पन्दाश्रमतकेतसमकगः॥ नि
राज्ञश्च रसाः सर्वे पथ्याः औषधादयः॥ स्वल्पश्रीनाश्च गावापि सर्वव पशवः कृथा॥ तदा सर्वे पि मत्वाश्च निर्गमा विनगो धमाः॥ सत्य धर्मनिवृत्ता हाश्यासक्तापात्मिनापि १७९
ताः॥ तदा सर्वे विपन्ना गाः कृत्स्निमासा निराहिताः॥ निर्लज्जा इति तासकाः पनसनविनाधिताः॥ विगलत्कवचा यित्वापि मृषित्वापि यनस्पर्द्धे॥ यथा लज्जा गेनं तत्का ध्रु
वबई इनि गाव ताः॥ तथा ति पापसंलकाः उत्तगत्ताविवानितः॥ पनसनौनि हत्वापि तुष्टा ताः कुं प्रवविन॥ तथापि पापसंघाना नमथास्ता गवव लेभ॥ गते तस्य गमी कर्ड
मकापिनसमेहत॥ सर्वपिता पविक्षिप्य स्पृहिष्य आनां मानसा॥ हिंसालि निनेगाश्च धुः ष्लका नृवाविरक्षवचनत॥ प्रकोपि न तदा तत्समक्रमेवन पार्थिकः॥ सर्वे वि

प्राद [illegible] या लोकाः स्तु ब्रह्मन् वापि ये भवन्तु ॥ तत्र संकर्ष [illegible] लोकाः एवं दृष्टवान् गत [illegible] ॥ ६ [illegible] स्थितः [illegible] मनसैवं वापि कायतः ॥ महाकष्टं महात्मानं हरिं केवलं [illegible] ॥
पालसर्वपिमानः स्याद् भवन्ति पापवापि तत्र ॥ तत्राहं किं करिष्यामि यत्र लोकाननुपादय ॥ ॥ दृष्ट्वा गया दृष्टो वा वाराहं [illegible] गतलवापि त ॥ मद्यमानाति [illegible] ॥
[illegible] पिता गयायां ॥ दृष्टो [illegible] गङ्गायां दृष्टो लीलां [illegible] ॥ स कर्मनिन्दकादृष्टा [illegible] वर्यानिर्यापि त ॥ हिंसा हि निन्दिता [illegible] निर्लज्जा [illegible] निर्वकाः ॥ यत्र [illegible]
[illegible] कानां नियमस्तु पूर्वजानां ॥ [illegible] कालिवापिकाः ॥ कुलधर्मपरित्यक्ताः गणिमार्गस्थापिताः ॥ [illegible] प्रवर्तन्ते [illegible] ॥ तत्रो
एवं महात्मानं हरिं केवलं तथा सूनां ॥ तत्र सर्वपि तल्लोका भवन्ति दृष्टवत् तागिन ॥ तथापि तत्र [illegible] साधवः का पि [illegible] ॥ स कर्मतमुपाश्रित्य वर्तितुं नैव वाञ्छ
[illegible] तत्राहमुपायं न वा अधर्षितुं [illegible] ॥ [illegible] माकुरु ॥ [illegible] लोकान् [illegible] ॥ [illegible]
त्वामहं [illegible] ॥ तत्र [illegible] मनसत्वानां हितसाधनं ॥ [illegible] प्रवर्तन्ते [illegible] ॥ तत्र [illegible] ॥ [illegible]

श्री त्वादिष्टं नन्दन ब्रह्मन्न अन्तः सुप्रसन्नधीः ॥ नृपर्षिं तं समालोक्य साञ्जलि र्वचमब्रवीत् ॥ शृणु साधु महाराज यदहं निवसन्वने ॥ सर्वानपि नवाक्रम्य हत्वा लोकं सुमुक्तह ॥ यक्ष्णां नाम्नां कृत्वा
वारुणः कृगलवाणिका ॥ पूर्वं धर्मानमाशाया न नकं वयमाब्रुया ॥ मेत्र नन्दकं याताः सम तत्व दनाउञा ॥ तन्निष्ठा ॥ कार्यं भा मृत्वा वसयर्यो वर्त्याम कं ॥ योत्रा गतनकाप्यलि गत
घातेऽप्यणयसमहत् ॥ धर्मेणव गतकार्यो ना मषा मषत्त विख्यामे ॥ तस्मादनादुवावानान्दर्भे कृगलवाणि ॥ पापिष्ठानर्जनान्हत्वा खोदितुमहमुत्तह ॥ यदि वर्मविन मेत्र ग
मेनांम हाभिलक्षितं ॥ पापिष्ठान्दुर्जनान्हत्वा तुङ्गमानान पापताकु ॥ तत्त्वापि नापपर्न्हत्वा वलिंदयाक्षुताक्रम ॥ तथा शापिजनान्सर्वान्या पिष्टानौकुमेत्तह ॥ यवापवापि नात् १६३
स्थानिह गावधंधामकें ॥ तपिनिर्मुक्तपापाहि संप्रयाति सनातनं ॥ श्रुतिविज्ञाय नाऊंस्तु पापिना धृतिभोगयान् ॥ वलिंदत्वापि तुक्ष्णापिथमनेवनपातकं ॥ अपनाथवि
ना हत्वा महापापमवाप्नुयात् ॥ यावन्ति गनराणि ता तावत्कल्पानि दुःखलाकं ॥ अस्मात्पापिना दुःशान्द गर्भकृगलवाणिका ॥ वत्तेनापि समाक्रम्य हत्वा लोकं सुमुक्तह
॥ धर्मिणं निर्मलात्मानं ज्ञात्वा तं विलोकयन् ॥ वक्तव्यानि देव्वाह पालयामि स्वयं तव ॥ अस्मादहं विगतज्वर ॥ अप्यकाकी निवसन्वक्षणा ॥ सत्वा नर्मविनरुं मां प्रमां

मि गुण हेतुना॥ दत्वानपि महीपाल स्वयं धर्मं वनं स्तव॥ वाधयित्वा प्रज्ञा श्चापि वार्यिवृंदं वृषध हि नि॥ धर्मे तत्क्षणं भवाजन्मसर्वजापि समापिय॥ जीम सद्धिश्रुत्वा तां हस्त कुलकी
र्तिसत्सर्वैः॥ धर्मेश्च वीर्यवान्धीमान् सर्वसत्त्वहितार्थकृत्॥ दत्वा दानं सुपार्थिवादिव्यश्रीसुखमाप्नुयात्॥ धर्मे वेदविच्छुद्धात्मा गुणवानजितेन्द्रियः॥ निःक्लेशो निर्जयन्
शास्त्रमूलं समवाप्नुयात्॥ धर्मे समविशुद्धात्मा स्वपनाद्रहितेन्द्रियः॥ क्षमाश्री सुखसंपत्तिसंयुक्तो निसमाप्नुयात्॥ धर्मेषु वीर्यवान्धीमान् सर्वद्वान्तिनिर्जयन्॥ स्वपनहि
तकार्याणि कृत्वा समन्त्रेव न तु॥ धर्मे ध्यानसमाहिततन्त्रात्मा निःक्लेशो विजितेन्द्रियः॥ समाधिनियमायोगी निष्ठ ध्यानसमाहितः॥ धर्मे सर्वविद्याश्च पानपाको विव
क्षतः॥ सम्बोधिं नत्वा माप्नुयु सर्वधर्मार्थ हृत् भवत्॥ धर्मे धनापाय विज्ञानविज्ञान शास्त्रार्थवित्सुधीः॥ सर्वसत्त्वहितान्यनकार्यकृत् सदा गुरु भवन्तु॥ धर्मे बोधिसंतानं संबोधि
प्रतिक्षणक्षेपक॥ प्रनयन्सर्वसत्त्वानां गुणार्थे प्रवर्तते॥ धर्मे समवन्मानि जित्वा सर्वदुःखप्रमर्दकः॥ सत्त्वानुकूल प्रणिधाम्य वानयन्तस्य वनं न्वयी॥ धर्मेणवादिनां जित्वा मरा
तिक्षा विशुद्धधीः॥ सम्बोधि ज्ञान संबोधि लब्ध्वा प्य धर्माधिपा भवेत्॥ धर्मेश्वादियमान ... श्री सम्पत्तिं संभुंजि मानुष॥ सर्वलोकेश्वना नाथः सर्वधर्माधिपा भवत्॥ धर्मे

श्री आ

मयन्याघात्वानयति राम नंदन ॥ दनिवान्धनिन४ कृत्वा पापिनो मित्र हानतान् ॥ मद्दुर्मम कृ लोत्साह एवानयति भीद्रयत् ॥ उगक्रमीन् रावनज्ञाम त्वायत्र पुवर्द्धितं ॥ निनृत्यातं त्व
हिकंश्री समष्ट क्लिश्च हवर्लभ ॥ नाआम्यस्यापदर रागनविनमया पवान लोक ॥ मद्दुर्मे वानरलोकात्महोत्रावर्लभत्र रवनते ॥ मद राग्यान् रावन धर्मवर्याप्रवर्लभ ॥ पापस्य यानि
हीनानां त्वयभगन्नवान्यथा ॥ तस्माद्य समामन्तु वाधयित्वाप्र मत्तनं४ ॥ नृपासन प्रति श्रृंप्य कर्तव्या तन्नपक्षेत्र ॥ तथावन्न४ सवार्द्धं निनृत्यातं रावदिन ॥ प्र
आश्रपिपत्तन्ना४ सुनिश्चयवं कर्तुमर्हथ ॥ वद्गितितनादितंप्र त्वा सर्वेन मर्त्तिर लोकजना४ ॥ तथापि प्रतिवध्यकन्तं नतपं कर्तुमीकृतिन ॥ तदर्दिवसंत्र कृ सर्वेन मर्त्तिर लोकज १५७
ना४ ॥ तंमकामेत्व मामेत्व सादनमवमव्रुवन ॥ प्रसीद राम रामत्व यदस्मा हिर्यिरथादितं ॥ तथा तत्त्वं समाकर्ष्य चिन्तु महंसि सांप्रतं ॥ मदत्रनपरावरं शाविप्रमेना
पिकथन ॥ नदनाज कथं नाथ प्रजा४ कोताहि पालयन ॥ अन्यं४ कोत्र महाराज त्वामं वादंतिगच्छ्याम् ॥ सनाथं नाथ माक्रमं नूनं गच्छाहि स्यमि ॥ गतात्र गच्छावा ना०
जम्यप्रजा अस्यापि पीड्यन ॥ सर्वत्वमपि वाहनस्य महात्मानं कविष्यसि ॥ अस्मोन्तर्वीनमाश्चर्यं जनांश्च सवकानपि ॥ कतम नीत यनवः हन्यान्दृतं नसंगच्छ४ ॥ ना

वत्सलकं प्रजानां च कोऽन्यः कोऽविश्रमयति ॥ सर्वनिःशरणस्यास्य कामविच्छेदकोऽनि नाणिनाथः ॥ तद् त्वां कंठज्ञानो वनकान्तरकान्ताम् ॥ त्वां नेतन्मरुडाब्धेस्तानमुद्धारं दमर्हसि ॥ इत्युक्तिभिः प्रा
र्थितः कृत्वा वत्सलत्वमदयामतिः ॥ कृतं श्वासं त्वा गत्वा मर्गां तं नताकर्तुमभेच्छत ॥ ततः सममतिधीमत्कान्तर्वान्स्मृत्वा रात्रौ जनान् ॥ समाममत्नु समालोच्य सोऽञ्जलिर्बद्धमब्रवीत् ॥ प्रभुं
नीव कुलेऽज्ञानस्थ कुलेभ्यः शिक्षितः ॥ तन्मन्नमासनं कोऽपमानयित्वा वनिर्ययौ ॥ यदि मामसत्तं कृत्वा सर्वलोकाः प्रबोधिताः ॥ विनम्यमापयो निर्बन्धं वनयबोधिसमस्तं तं पदा
हेलं च यादिर्हसु मानयस्थित्वे नलावहन् ॥ लोकाहितार्थं एवं तडाङ्कं भाषितुमर्हसि ॥ इत्युक्तिमान्विदितं कृत्वा सर्वीपिमसन्निरसान् जनाः ॥ तरथितिप्रतिगोमित्वा प्राग्मनन्नसुबाधिताः ॥ ततः सं
राज्ञधयित्वा पयाधनियमस्थितः ॥ अनुलिप्य चन्दनं पंकजं नाऽन्तःसमीसमाप्नुतः ॥ ततः समन्तपरिलित्वा न्यासेन प्रतिष्ठितः ॥ पृथ्वीवल्लभनयस्तात्र महदैश्वर्यमाययो ॥ तेन तस्यामिषे
नं च पृथ्वीवल्लभ इत्यभूत् ॥ तत्रास्मासमहीपालः प्रतिष्ठा महत्तमेनतः ॥ यस्य पृथ्वीवल्लभेन च सर्वलोकावरोऽस्मिताः ॥ विनीताः श्रामनानेकावरवृन्दनन्दीविनः ॥ ततः सानुरोधः
राज्ञा पृथ्वीवल्लभेन नाधिपः ॥ सर्वेऽपि याधिकः श्रीमान्विनताऽजमहर्द्धिकाः ॥ स्वथं समन्तपतीनाज्ञा पृथ्वीवल्लभसनीतिविन् ॥ विनीय पुत्रवत्सर्वाञ्श्लोकान्नेमस्यपालयत् ॥ धर्मेन

तद्वारभ्य समस्तात्मा ईर्ष्यामात्सर्यलोलुपः । धर्मेऽत्याद्यामीति दुःखितैः कपितो भवत् ॥ २

श्री गा
सकलसंबंधीनां
तुलाः कलुषाः उं
दरीके सन्ति ॥
पंचविंशति साह
स्त्रिकायामपि स
र्ति ॥ २

संलभ्य पतिः पूर्णसुहृदं अर्थं ॥ तत्सर्वं समादिशन्मामत्र पतिर्वाक्यम् ॥ तच्छ्रुत्वा संप्रार्थितः स भगवान् सम्बोधनः ॥ प्राञ्जलिर्गृहं महासत्वं समालोक्यैवमादिशत् ॥ साधु साधु महासत्व
यत्ते बोधिसिद्धि साधनं ॥ तत्सर्वं प्रवक्ष्यामि समवहितः शृणु ॥ समाधिधनवीर्यास्ता धनापायकौशलं ॥ ज्ञात्वा हि लक्ष्यमानेन प्रज्ञया त्वं प्रभो ॥ तेन सत्वहितो
र्थ सुवर्णप्रभास विमानिकः ॥ जिनेन्द्रः संबोधिमार्गं तत्वं समाहितः ॥ एतत्सर्वं विपाकेन महद्धीः सम्यग् बभूवनु ॥ संपद्यात्र सन्त्यात्मा सर्वार्थिकाय स्थितो ॥ ततो
लपितु ज्ञात्वा सत्वहितार्थाय नाथ ॥ सर्वसत्वसमीवावाव ज्ञानेस्तद्वत्स धर्मचक्रं ॥ ततः प्रज्ञाप्याधीनः स्वपनात्म समानधीः ॥ सत्वेषु सुप्रसन्नात्मा समाधिपर्वतं स्थितो ॥ स
भीवीतामहात्मा हि सर्वसत्वहिताय च ॥ सर्वान् दृष्ट्वान्यतोऽन्यबोधिवर्यान्विवनं ॥ ततो निर्जित दुःखानि जितेन्द्रियाधिकमध्यधीः ॥ समाधिध्यानयुक्तात्मा योगी बद्धः
गच्छितो ॥ ततोनितः क्रमेण ज्ञात्वा सर्वविद्यार्थान् ॥ प्रज्ञानतावशासनेन सम्यगन्तर्बोधयन् ॥ ततो ज्ञानमहात्मा प्रज्ञानानापायेः प्रबोधयन् ॥ सर्वान्सत्वांश्च सद्धर्मे नि
युक्त संज्ञानवान् यतः ॥ ततः स सुगतपदानि पतिमीयज्जगाच्छिवं ॥ संबोधिप्रणिधानेन बोधेस्तत्र बोधिसत्वाः ॥ ततः प्रतिज्ञावलिस्था सा सर्वान्सत्वान्विनादयन् ॥ नियम्य वा १३४

नयन्सत्त्वान्संबोधिव्रतसाधनं ॥ ९ ततश्च ता कन्या विहृष्टाः सर्वधर्मगुणाधिपम् ॥ समीक्ष्य तं महाप्रापी दयाल्लमीश्व मां भवन्तु ॥ १० एवं वचनं श्रुत्वा दीक्षा दत्तवलीकृतांश्च बोधिसत्त्वो
महासत्त्वो भवत्सर्वलोकाधिपप्रभुः ॥ ततस्ते भातु का ती के लडव्रयान्त्रकापि ये ॥ माभानि क्लिशमस्यां बोधि प्राप्य व्रत्तल्पवरं ॥ एवं विज्ञाय सम्बोधिव्रतसन्तानसाधनं ॥ यथा
क्रमं समाश्रयत यत्नं भवन्तु जगद्धितं ॥ भवाप्येवं जगत् इह कर्तुमिच्छामि सर्वदा ॥ ये यत बोधिसंतानं प्रत्यविशन् समम्पूर्णा ॥ तत्सन्तानसंपूर्णं सत्त्वेषु जगद्धितं ॥ बोधि
सत्त्वा महासत्त्वा महादिव्यः क्रमी भवन्तु ॥ [illegible]स्वा मानरास्मनाम वाग्नीश्चन्त्रोऽर्हन्तमाधिश्रुताः ॥ संबोधिं प्राप्य सर्वज्ञा धर्मनाथा विनायकाः ॥ जगद्धितस्ता जगन्नाथा जग
द्धर्लोकहितार्थहेतवे ॥ मुनीन्द्राः सुगताः बुद्धास्तथागता जिना भवन्तु ॥ ते च सर्वत्र लोकेषु धर्मचक्रं प्रवर्त्तयन्तु ॥ बोधिचर्याव्रतं सत्त्वान्सर्वान्समतियाजयन्तु ॥ एवं सर्वत्र लोकेषु स
द्धर्मं संप्रचारयन्तु ॥ सर्वाणि बुद्धकार्याणि समाप्य निर्वृतिं व्रजन्तु ॥ तथेति सा निर्दिष्टा साधिता धातुर्वे सर्वगाः ॥ ततो मासस्य बुद्ध्या लोका हृष्टाः स्थिता सदा ॥ यदा
क्रतुदेवे धर्मप्रणिमासं प्रसादिताः ॥ हृष्ट्वा बुद्धयानकाः तेपि सम्बोधिलाभिनः ॥ यदा बुद्धं तकिनो लोकानां गच्छ क्लिष्टगामिनि ॥ सज्जनाः ववसंज्ञा भवन्तु बोधि

उ
वल्मस
श्री आ

हाद स्वाहिंसस्तथीर्यतिः॥ अगम्यगमनं महापापं गंसमामत्सेव मादिगृह्॥ साधुपुरुषमहावाक्यशीघनन पनाश्लगं॥ संध्याक्षिसाधनंकर्मणाधादि ग्रोतुमिक्षति॥ यथमगुरुशूद्रादिर्हं तथा
हं गंप्रसन्नर्थी॥ सर्वसत्वहिंगार्थाय प्रव श्रूमि समासतः॥ तपथ सौम हासं त्वां महाकानुभिकायदा॥ स्वर्गदेवगा॥ ये साङ्ग्य धर्मेन मन्त्रमाचनं॥ कराअसंकर्षणा रक्षायां लोक
भगीमरीगस्त॥ आसन्नसर्वेननाइपश्च अनीतिवर्णजीविकाः॥ योगत्यानादूसावानादगाकृपणेन वाचितः॥ गोधिकवभगाःश्मश्रुसक्रमेणले निन्दकाः॥ मानवधर्मानामन्ता मिथ्या
कामनसानगाः॥ येऽथ स्त्रीमाग्यं गुंडानाद्गतिमार्गवाचिकाः॥ पापिष्ठाः पापसंनकाः पापमित्र वशाश्रिताः॥ सायपवादका धोना पातककर्मसाधकाः॥ एवं सर्वेपि सत्वा
धनिः क्षपातृविमागयाः॥ पत्र स्वनारि निन्दकाः पथविनिरतिमानिकाः॥ ब्राह्मणो भूपिङ्ग्रुह्यवदधर्मपनाघ्रखाः॥ मानवधर्मानुसंनका सद्भापानि मालिनः॥ सद्गुरां
यिनात्मज्ञानुस्त्रावानाइमागयाः॥ निर्दयाः क्रोधिन इत्याहिंसा धर्मानुरागिनः॥ मिथ्याधर्मवनामद्राः संध्याक्षिप्रगनिन्दकाः॥ स्त्रीस्त्रवृद्धवानावानाः प्रवंनू भलदक्षिवदः॥ नास्त
वापिङ्नावासनातिधर्मपनाघ्रखाः॥ स्वस्त्रीकामनसाममकाः क्रूराणि लालसाः कूपाः॥ वेश्याश्चापि ङ्नोवानाः सत्यधर्मपराङ्मुखाः॥ ङ्याणि लालसालुभानिर्दया क्रोधि

ता गताः ॥ मन्त्रिणोऽपि दूतावाना नीतिमत्सुप्रमादिनः ॥ स्वेच्छाप्रवृत्तया लोकाः स्वार्थसाधनतत्पराः ॥ वणिजोऽपि दूतावाना मिथ्यार्थसाधनोद्यताः ॥ कृतदृष्टिपवित्रत्वाः प्रवञ्चनई-
षिणस्त्वपि ॥ शिल्पिनोऽपि दूतावाना मिथ्यैकार्थसाधिनः ॥ धर्मज्ञ ण विद्यानाज्ञा [illegible] पि पञ्चवृद्धप्रगल्भिताः ॥ कृषिकर्मकराश्चापि सत्यधर्मातिनिन्दकाः ॥ यत्र तत्र [illegible] हीनाश्च
प्रवञ्चनविनतात्तवाः ॥ एवं सर्वेऽपि लोकाश्च मिथ्याकामार्थसाधकाः ॥ [illegible] मिथ्याफाः प्रवञ्चनईर्ष्यापि ॥ तत्रैवं कृतसर्वेषां लोकानां [illegible] भागिनां ॥ [illegible] समालोक-
नार्थं त्रिदशाधिपः ॥ तं प्रकोपितमोक्षाय सर्वलोकाधिपोऽपि ॥ [illegible] तार्थविमुखा बद्धाः ॥ ततः सर्वत्र [illegible] कृतेश्वा विनाधिताः ॥ विहाय पन [illegible]
[illegible] पि नर्थहिन ॥ [illegible] पन [illegible] विनाधिताः ॥ तथा [illegible] मानोन्मीः कलिं [illegible] वनम् ॥ तथा [illegible] वानं दृष्ट्वा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] दुःखान्तां [illegible] ॥ यमस्य किन्नराश्चापि [illegible] नादिवानि तं ॥ निर्दया [illegible] संगं [illegible] नो बहून् ॥ [illegible] पि [illegible] प्रवचनादिवानि-
तं ॥ उपजग्मुः सदा तां प्रवञ्चनविक्षनतः ॥ [illegible] वैवं वानय [illegible] वाहिनः ॥ [illegible] यनो [illegible] दृष्टिं पर्यवलोकयन् ॥ वायवोऽपि [illegible] प्रवाय

५
श्री रा

येवान्वृक्षगतासीन॥ संतिष्ठकमदर्द्धिक॥ समीपस्थस्तत्र पञ्च त्यमह सावधमाठ यत्न॥ एकस्मै हनुमानात्र गर्जयन्नवमब्रवीत्॥ अनवत्वाधपापिष्ट मया नन्नष्ट पत्राधिन॥ त्वा
मप्यवं हनिष्यामि यक्ष्ये धर्मेन विप्रग॥ यापिसाध ७ सामावान॥ सहृमसाधक॥ सुधी॥ संवन्य॥ पूर्गनीर्या हिनेववरम्या यि मृत्यु॥ ययदृष्टाहनावानाद् गीकृ गतवानि ए
॥ गोत्ताने वसमाजम्य दृत्वा रक्षन्नि हावत॥ यदित्वं मद्व ७ त्वा विनष्य पापकं मम॥ जिनत्वेन गनं हत्वाधमेव नामि सर्वथा॥ वध्रूड व्यानि दत्वा त्वा प्रयय यं गिक्रात
यं॥ मत्ताभिव मपापानं हत्वा गुरु व वर्यदि॥ नाम्वदेवं नमं व यंतो हनि ष्याम्य हं ध्रुवं॥ तगनमयार्जिति ज्ञानमन्य थान्व कनिष्यम॥ ष्ठुणिगनादि मंत्र त्वाही गाहं मृग
गधनु॥ माक्रु लिस्कं समान स्पनुदन्नं वं निवदय॥ सा धपसीद मानौकी ततवड्न शमाश्रिया॥ त्वयाय थाम मादि ष्टं वनिष्य हं गणापुरं॥ ष्ठुणि मया समाख्यार्मर त्वा
समंपृवाधिन॥ वंद्रूड व्यानि दत्वामां प्रथयामि निक्रान्यं॥ ष्ठणिम मंपनि स्याय यच्छ क्ति सदागुरं॥ गजिन त्वं रगग पाउवे नकु सर्वदा गुरु॥ यजिनत्वं तउ नमूरु
नगं गच्छन्ति दुर्गतिं॥ सक्रतावव संगामाथ्वनन्ति सर्वदा गुरु॥ नमाय श्रीसमन्द्राम्प्रापं सवाधिमानमा॥ वाधिवर्यी व गंधत्वा संवन्य मउग ज्ञित॥ नणा क्रमेव गत

१७२

नमश्च लानमाक्त सर्व व्याधा सद्दि ... कस्तथा । धनुर्वी ... समस्तं ... चिरले समुदाहरन् ॥ तत्रागत्वा वने ... समामालु रजसं । सोऽपि त्रिसत्यमालाय ... [illegible] ... यथा काम ... सहवासका ॥
नच्छर्मनी ... धनादा ... सुका ... धर्मरोगो भवन् ॥ तद्दृष्ट्वा ... सर्वे व्याघ ... [illegible] ... विक्रमिना ... सर्वे ... धना ... तथा गमन ॥ ... [illegible] ...
मङ्गाधाः ... भीनास्य ... सर्वेऽन्विष्यतान्सोऽन् । ... [illegible] ... गाजावनं ... दिनाः ... हरिगा ... ॥ ... [illegible] ...

त्वा बोधिमत्वा ४७ तं कनाथ ॥ सर्वसत्त्वहिताधानं वनं किं बोधिमन्दनं ॥ तत्थागत बोधिसंतानं प्रनयित्वा यथाक्रमं ॥ त्रिविधं बोधिमासाद्य सम्यक्पदमाप्य च ॥ ४८ जितिमनसमा र
त्वोऽगं निःशम्याहं प्रबोधिकः ४ ॥ विनेम्य पापकर्मस्त्वा धर्मवनि उत्तमः ह ॥ स्वयमपि कथं सर्वं विनमयेद् दश पापकः ४ ॥ जिनलरजनं कृत्वा वनथं सर्व ... ॥ जनर्गं ध
विपाकेन स्वयं सर्वोऽपि निर्मलाः ४ ॥ सर्वसामग्र्योगानाऽधीतमञ्जूर्विध्यथ ॥ जैनं बोधिसंतानं प्रनयित्वा यथाक्रमं ॥ त्रिविधं बोधिमासाद्य सम्यक्पदमाप्य च ॥ ४९ जिति
मनादिकं कृत्वा सर्वेऽपि ... बोधिनाः ४ ॥ विनम्य दश पापस्याधर्मम्बानि उभीक्षिथ ॥ नाना सर्व प्रसन्नात्मा विनम्य दश पापकः ४ ॥ जिनलरजनं कृत्वा सद्धर्म प्रावनन्तरा ॥ जगद्
र्मन्तुलवनतो सर्व तरनाल ॥ सम्यक्त्वं सतोल्लासाः हं निन्दुत्यागं समाचरन् ॥ नरा सर्वेऽपि मानव्याः ४ पश्य ... विकाः ४ ॥ निर्वाणवाणि निर्वाणकां ... लाविनः ४ ॥ नराम
वे प्रसन्नात्मा वज्जल गौसेनानराः ४ ॥ अहातस्य समस्तं सर्वभिक्षो गंसप्रवर्ति न ॥ ... थेन नाहं ... दिधिपानपथः ॥ ... नाम ... निशाम्य विस्मयं ययौ ॥ न
रः ४ मनःप्रीतिः ४ श्रीमत्सवाकृतिना गयः ४ ॥ इमानं समाहृत्य पद्धवमलाधन ॥ अनन्त कथं मकाऽनंगलनिबसत्वनं ॥ मज्जनाऽपि तत्वार्थं ... मिलितान्हृद ॥ ५०

तः । ये घनानिलनि ... धीश्वरासो ... ॥ ... यन्न ... ॥ ... इतिनद् ... कर्मा ... सुमनलनः ॥ ... [illegible] ... निषिद्ध ...
... [illegible] ... सर्वं ... क्राम ... ॥ ... [illegible] ... सर्वजन ... [illegible] ...
... [illegible] ... कथानन्त ... ॥ ... [illegible] ... भीमन्हावीर ... बोधिनाथ ... [illegible] ...
... [illegible] ... नि ... [illegible] ... मद्गाजलं ॥ ... [illegible] ...
... [illegible] ... मागोवलमलिना ... इतिना कथिता ... [illegible] ... ॥ ५ ॥
धान् । ... [illegible] ...

श्री आ

वं सत्त्व हितं तत्त्वाणां त्को वा धिष्ठि गं वनन्॥ तत्त्व मा दिश्य मा कर्ष्य सर्व लोकाः पुष्पादि काः॥ सत्का नेमीनयामास मूर्त्तं पवलं महामतिं॥ ततः स सर्व लोकस्य प्रार्थयद्दयामीप्सि
तं॥ समादाय तथार्थि त्वा दत्तो सं वा धिमानसः॥ एवं स सर्व लोकानां हितार्थं द्रव्य माददत्॥ दत्वा दानं महादानं मेघवनं स्तको सर्वविनाश॥ ततः स तन्पगी वाजा समयय
मगमसनात्॥ वागाली मत्स्य नाग्र स्तादं हं स्म स्नाय योदिवि॥ तद्दहं मत्क्रि रक्षामाम्याः पूर्वाहिता दयाधिशाः॥ विधिव दोक्षि संस्कानं कालेवं संवगाधिय॥ काथमतक
निध्यामेः प्रेतान सर्वानकानहि॥ तत्र नोमिहं नाथं पालयं यंकर्थवयं॥ तदत्ते कोमहासत्वो नाथ पालनतत्परः॥ अस्मा हितं लिविं न्यां शुकालेव्यान्तपाकिः पुत्रः॥ १६६
तदत्र कोमहासत्वो विद्यते नोमि विस्कृतौ॥ सा स्माहितं लिविं न्यात काभिष्यतोन्त पाधना॥ तत्कोकगतं मकालता गोर्थिकां तिमस्य द्रुमातं॥ सर्वान्त्का न्मक्ति रक्षामाम्या हाटा
रक्षेव मता घता॥ अहमत्र त्यजाना कं संवि त्तु गणा मि सर्वथा॥ तत्रवहितं हंना गाकारुण्यं महता धना॥ एतत्कृत्कामाक र्ण्य तत्वीन्त काम हर्षितेः॥ सर्वान्ता न्मक्ति र
रक्षामाम्या न्ममास सैवमब्रवीत्॥ एतत्सत्वमक्ति रक्षामाम्या हितार्थ सुख्यमनथना॥ तत्रव ताति ज्ञा यर्थत कुर्वन्तु नाथ पालनं॥ यद्दिशुत्सौर्थिका धामा न्वाह्व ः द
दसौः

गीर्विचक्षणः ॥ महत्त्वसद्धिसम्पन्नः श्रीमानप्यतिमानिकः ॥ मतनीलानवक्रान्ताकूपरंभत्तत्तिमागयः ॥ निर्लज्जो निर्दयश्चैव धर्मकर्मणि निंदकः ॥ जनकर्थं तमनाम्नाय
नीतिधर्मविधानयन् ॥ लोकान्विनीय सद्धर्मं वानयितुं प्रगल्भयात् ॥ योऽत्र साधुः प्रज्ञावान् हि स्वपरात्महितार्थकृत् ॥ नानाशीलविज्ञाता दयावान् क्षमानसः ॥ वीर्य
वान्वद्धिमान्धीमानि लोकविजिगीषुः ॥ सत्यवादी विज्ञातानीति विद्याविचक्षणः ॥ प्राज्ञ उपायविज्ञानी सर्वसत्वहितार्थयः ॥ वृत्ताशेमत्तमापन्नः धर्मज्ञ ज्ञान
लालसः ॥ सर्वधर्मानुसंतर्की सर्वधर्मानुगामकः ॥ सम्यग्दृष्टिः श्रुतावान् सद्धर्मगुणलालसः ॥ सत्ववान् समाम्नाय नीतिधर्मविधानयन् ॥ लोकान्विनीय सद्धर्मं पालयि
तुं प्रगल्भयात् ॥ तद्गच्छक्रोवि वायाधिनाऽधर्मविचक्षणः ॥ ममलिर्धिगिर्व्य नाशाने कोऽप्पमहं हि किसाम्प्रतं ॥ इति तानेन समाख्यातं सर्वं निशम्य भाजनाः ॥ कामनाऽनुमते सर्वे वीक्ष
मामिति वाडवेन ॥ ततः कथं सर्वतिर्विशानीति धर्मविचक्षणः ॥ मन्ति सतां तत्सम क्षेमसमाम सम्पूर्वमब्रवीत् ॥ रावणोऽयं महासाध्वप्यन्नाथि दयामतिः ॥ सद्धर्मनीतिमानस्तु
सर्वसत्वहितार्थकृत् ॥ नूतनमर्यं उपायनवखलफलसमकवः ॥ वाधिसत्वाम हासत्वो लङ्कात्तुमिहागतः ॥ यदयं निर्जनेन रक्षक्लिन्ना लौकान्पागतान् ॥ गृहीत्वाऽ

श्री आ

याचिवक्रगृह॥ जित्वाप्रवादिनः सर्वान् कुक्षाकामसुखानपि॥ सर्वान्धाकाङ्क्ष्य काम्यबोधिमार्गेपि वानयत्॥ संबोधिप्रविधिं सत्वानाम काम्यपि नितष्ट हृतः॥ सर्वान्यविग्रहं
स्यक्षास्वयंवनं सपादन॥ तां अपि संमुक्ता यबोधिरुक्त समोऽयत्॥ जित्वा मानगक्षान्सर्वान्स बोधिज्ञानेन मा फवान्॥ सर्वज्ञानं संलाति हृश्वमर्मनोज्ञामन्ती श्वनथा। तग
बाढ्रिं जगद्गुरुःस्ता सर्वविद्याधिपा जिनः॥ सर्वलोकानुत्कर्षी समृद्धिमान्विनायकः॥ वेदकः श्रमकूर्मनिर्नामगतथागतो विधानि॥ तातः सलगवांकाकामदेवबन्
वपि॥ सद्धर्मसमुत्पादि श्वकतिष्यति जगद्धितं॥ सर्वान्सत्वानसमालोकपापिवानपि श्रमयत्॥ संसारोद्धुःस मसुद्धस्ववानेभिव्यति संवरा॥ क्रमशः याजयेश्वर्मसत्रूप
नमितास्वपि॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य सर्वान्कंदकनिव्यति॥ एवं सर्वत्र लोकेषु कृत्वासद्धर्मकडता॥ समाम्परोगतो यः स्वयंयास्यति निर्वृतिं॥ तस्यसनिर्वृतस्यापि अ
कवापि जगद्गुरुः॥ कृत्वा सर्वत्र लोकेषु स्त्रासयन्ति सुविनंउधि॥ यत्रास्य श्रावकाः ख्यातिकृत्वा गतोगतिमाश्रपि॥ सत्कानेः षद्वयारक्ष्यं रुजिव्यन्ति समाध्नाता॥ सर्व
निर्मकमायापासे उद्धतानेः उत्तार्यातः॥ बोधिसत्वामहासत्वास्तवि व्यति जगद्धिताः॥ क्रमशः पूजयित्वा तं सर्वेषां नामिमाश्रपि॥ जित्वा मानगक्षान्सर्वान्स्वपि १३३

सोगकंपदं ॥ यवासमनसासस्त्वाश्रद्धया गत्यंगता ॥ ४ ॥ ध्यात्वानत्वा तजिष्पत्ति नपिसंबोधिसाविन ॥ ५ ॥ यबकुंगनसंयानि न मगकाकिदुर्गभिं ॥ सर्वथासुगमो याकालव
म बोधियावितिः ॥ ६ ॥ क्रमसो बोधिसंतानं प्रत्यर्थित्वा समाहिता ॥ ७ ॥ जिविसंबोधिमासाद्य संप्रयाये ज्जिनालयं ॥ एवं विहास संबकुं श्रद्धया गत्यसंगता ॥ ८ ॥ यथाशक्ति तस
र्वलक्षं सर्वशदत्वात् ॥ तत्र स्वयं विपाकेन पतितः क्रतिमस्तुला ॥ ९ ॥ क्रमसो बोधिमासाद्य लप्स्यसे सोगर्भं पदं ॥ ॐ क्रादिकं मुनीड्द्दनि गम्यत्तास्य ॥ सर्वलो
का ॥ प्रमादेनाव ततव ॥ प्रगिबोधिता ॥ ॥ ततश्च तं पितसोका स्तलेतासमुपाशिता ॥ ॥ महासंत्वेगनस्यविरक्तुत्वानत्वा सुपाश्रयन ॥ तदासमत्वतत ॥ समताग पीड
पागिना ॥ पश्चिमं जिनः कालं तत्र नानादिवंसमुदन ॥ ॥ ॐ तिथीम हुक्रागं कैसालायां समङ्गन ॥ मेता कानुषिक बोधिसत्व पा संमतिनाम तपधेग
तथाकन सपनि वर्ह ॥ समाप्त ॥ ॥ अथ तत्त्वाश्च रत्नधीमान्महाकारुणिकः पुनः ॥ सार्ऽलिसंजगत्नार्थं नत्खेवंसमपक्वकग ॥ सगेव किंयता बोधिः सं
तानं समधिगम्यते ॥ तेनलसमादिश्य मांसम्यक्त्वं बोधयितुमर्हसि ॥ कियत्संतानसंपन्ना बोधिसत्वास्तथागताः ॥ सर्वमानेन धृष्टापि बोधिवर्यगतं वयः ॥ कियताबोधि

श्री ग

गिरा स्तपमाङ्कुरं॥ अनिशं श्रमनुत्पादं प्रगिरुत्वा परमं रवं॥ ततस्तपश्चिनिर्वाणं संबोधिज्ञानसाधनं॥ अकांचिद्गुह्यनिष्ठत्वं निर्मलं सुगतालयं॥ दर्शयन्बोधिसंभारान्ना
र्यमार्गप्रयाश्रयन्॥ सर्वान्सत्त्वान्प्रतिष्ठाप्य समाधिं संधिकारवान्॥ तत्कथं सद्योगं कार्यमवेक्ष्य जगाद्भिदं॥ संबोधिनिहितात्मावनिर्दिष्टो रुग्नसुनालयः॥ तं निर्दि
गं पत्निश्राय सर्वं गत्वा प्रणाविनिष्ठ॥ तद्दृष्ट्वा नं प्रसन्नास्य सर्वमहत्पूजा समन्धिष्ठितः॥ वह्निसंस्कान्सपाशये प्रागवयित्वा यथाविधि॥ तद्भास्तु गार्हीत प्रुपं सफने तमयंय
ध॥ ततः कश्चिच्छ्रेत्त सर्वसन्निष्ठविनतार्दिताः॥ समाधिप्रणिधानेन नन्तवान्मतयः यज्ञतः॥ कश्चित्सुरविरयागाः कश्चिद्वज्रि गालयः॥ कश्चिन्मनःस्ये लोकश्च १२१
कश्चिद्भवनं वशपि॥ नागलोकश्च कश्चिद्य यक्षलोकेपि कश्चन॥ कश्चिद्गन्धर्वलोकेपि कोपि गुह्यापि कश्चन॥ तथा सर्वत्र लोकेषु प्रतिनेश्वमपि यानिज॥ दृष्टि
श्वपि यावत् प्रचरन्बोधिसंवरं॥ यस्मिन्दिने गतः कोतं महाकार्षिकाद्विजः॥ तस्मिन्नहर्न्विधर्मान्तगर्भस्य धासनः॥ तथाभ्युन्द्य नपृथक् स्वर्णदेवधेतमर्द्धि
तः॥ तत्कर्मसेनुयाद्विश्वतः ते लोकहितान्तकः॥ मर्त्यलोकप्रवृत्तानां पृथक्तन्यथप्रपाकलः॥ बोधिवर्याविनतोत्सप्रवचानजगाद्भिदं॥ एवं सुविदंतं भगवानाह

॥ रक्षितिंहाजगकुरु ४॥ समुद्रं वं तं न रसोविप्रक्रताहमनवंकिल॥ उगलस्वविपाकेन संवक्षुर्मसामुनं तव॥ एवंमहत्नंपश्यं संवाधिप्रगतं तव॥ तमूयमविविह्वायवन
र्ध्वं वाधिमस्वनं॥ संवाधिप्रतिक्षमनयक्र्मसाधितं तव॥ तद्विपाकेर्वक्त्रनं संवक्र पदमाफवान्॥ ४ तस्मादिदं मुनीन्द्र संबुद्धत्वांतं साधिकामेता॥ कथंतिप्रतिविदुष्य
प्राप्नुनन्दसुवाधिता॥ ५॥ इतिमयन् त्वदिदं संशृणुतंमया तथाभव्यात॥ त्वमप्येवंमहावाञ्छवनधर्मंजगद्धिता॥ प्रजांश्चापिमहाराज बोधयित्वाभयत्व॥ ६॥ बोधिमार्गप्र
तिष्ठाप्य यानयस्व जगद्धित॥ तथा तं मकुन्तं निर्वृतिनिर्विघ्नं सर्वत्रात्र वं त॥ सन्ततं पुनयत्नेवं संवक्षुपदमाप्स्यथ॥ ७॥ इति गतस्मादिहतादिदं संशृणुत्वा रणमकुरुमन तपाति॥
॥ कथंतिप्रतिविदुष्य प्राप्यनन्दनमार्गदः॥ ८॥ समुद्रमंत्रानंवपानमनं एवंकिंय अवयतीहयव॥ सवाधिमस्त्वा ८ ससमन्छिमकः ८ कृत्वाहि तार्थतिदिदं वगत
न्ति॥ ॥ इति श्रीमन्महज्जातकमालायां भगवन्नमुद्रन सम्बुद्धजन्मावदानं समाप्तं॥ ॥ शुभा... मकामहीयासः ८ साञ्जलि
समुपागयन्॥ उपगम्यं तमानम्य पार्थयंस्तेव माप्स्यात॥ हेदके ... मिछामिती घननञ्ज गद्धित॥ पेवायस्तवलगंदानं तन्म सर्वसमादिशा॥ इति संप्रार्थिति नो

उ
वाल्मी

श्री रा

पिला जगद्भिम ॥ वाधिम स्वामस्तत्वानि ॥ क्र ॥ पर्हस्म समधीथा ॥ जि ख्यामानगणात्स्वर्वा निर्वृतिं परमां प्राप्स्यथा ॥ अत्र भवव नं ॥ त्वा यदि मे वावय ॥ ७ ॥ निक्रम्य स्वर्ममेथ मासं
तुं पुर्णपियय त्वा हि तं ॥ श्लिमानादि तं ॥ त्वा वा श्रपि हीर्ति वाधि म ॥ समवा सं धनन्तुत्सु मसाक्र लिनव मब्रवीत् ॥ अपा त्रणस्त्त नाथरवक्षन नमाप्ति नय ॥ यावक्री वं वा निश्च
हंत्वरा हंगिनमावहन्तु ॥ नक्र मक्री विनिना थक्र मस्त्व मप्रवाधनो ॥ पत्र वन्मास मालीशू संपात्ले यितुमर्हसि ॥ श्र्निसंज्ञाधिगानेश्र ॥ लेः समप्रसादितः ॥ नंपपर्ष कन्तृ श्रद्ध्या
समाक्ष्मास्येवमब्रवीत् ॥ माली व्यधि तथा सत्यं ध्स्त्वा वधिष्यसि यदि ॥ नक्रामितं ससारं हरसा मितथनान्यपि ॥ अन्यथा वनमस्य युर्मं स्वं क्रमपनायदि ॥ मव न्धस्वजनं क्रत्वाव १६१
निगृह्णि ष्यामि सर्वथा ॥ अथ भव वनं ॥ त्वं वनिष्य सम ॥ ७ ॥ यथाहि लक्षि नेद्रवं दत्वा नेक यमवहि ॥ ७ ॥ ततस्य समाख्यातं ॥ त्वा सर्वाधउन्मना ॥ वक्र लंग पुनर्नत्वा
साक्र लिनवमब्रवीत् ॥ मत्र मवंवय यं हित्वेन ह्वणिनेमावहन्तु ॥ मयक्रि मनं कार्यं गर्मिं मां सन्नियाजय ॥ श्र्नितानेस माख्यातं वक्रलः समप्रसाद्यन् ॥ तं व्याधं सहितः
पर्धेन्यनेन वम् पादितगत्र ॥ हा क्षम् ॥ मयाख्यातं सवाधिसाधनं द्ब्रतं ॥ विनम्यत्वं समाश्रय श्रीक्षालमुलगं ॥ निनले तक्रसक्रमे ॥ त्वा सभा ॥ ७ ॥ नवने ॥ ततः स्वे गृह्ण

यादानंकृतसंबोधिमानसः॥ अतस्त्वध्यक्षिपाकेन गीमोतागंसमाप्नुयात्॥ सर्वदासकृतिंयाया दुर्गतिंनकदाचन॥ अमर सबोधिसंभारानं पूरयित्वा उत्तरायथः॥ बोधिसत्वामरात
त्वः सर्वसत्वहितार्थभृत्॥ श्रीमान्मानगत॥ अन्ते सर्वाञ्जित्वा दुर्निर्जितमडियथः॥ त्रिविधांबोधिमासाद्य संबुद्धपदमाप्नुयाः॥ इतिमत्वा हि समाधायपवने धर्मजगद्धिता॥ तदन्ये थारु
स्थितलमिथ्यासाक्षात्कौगतं॥ श्रुत्वा ज्ञानप्रसन्नात्मा दत्वाद्वयानिबोधमस्तु॥ गतवर्ग समाध्यस्थे मज्ञासंप्रथयश्रुहि॥ तंतः सेव्यावथश्रुतायपद्दलं दवामवानातु॥ स
न्निर्गतंगमभाममनुनत्वा गहंसंतायथो॥ ततः समस्तं हसोगत्वाभिगत संप्रसादितः॥ तार्यायेगतस्तु दत्तानिडयानिसमनधाकयतां॥ ततः पूजान्दहिकुंथ ह्लागीन्भिताभिवा
न्धवान॥ श्रामन्ते गत्स्तुवे तांर्गे विकृपंदत्यवदयत॥ तदर्कं सर्वमार्ग सर्वपिता प्रबोधिताः॥ तदनव्दलिमाक्षयम प्रसन्नात्मायामृगा॥ त्रिनलेत्रगनंकत्वाप्रवनन्दु
सर्वदातुरेत॥ तथ्यमपद्वेगान्यषां लोकोनांसमुपावनम्॥ जमतसर्वं प्रस्तकाकोविसत्पनगनाथदयत॥ तद्वुत्वा गिविसलयाज्ञानो हृदयास्तर्वोपि पोनिकाः॥ सर्वमंगसुप्र
लोकं पप्रच्छ तंसभगोगतकां॥ ततस्सधीवनश्रमासर्वषां पनवासिनां॥ पृनस्त्वा तंसंद्लानकविकृत्यं ते वेमन्नवीत॥ अमृतसिन्धिर्जितनाथ्यवश्रामाशिवलीकृगीयवी

ततोभार्यावकृथनंदत्वातिर्कविताशया॥ अतोशविन्नाभोधूर्तानीतहलाः स्मदेवयं॥ इस्तु
कंससमाकगर्य ततस्तुसाधान्मयालब्धं॥४

श्री आ

मुक्तिमार्गैकलक्षिकिन॥ हदेवनन्दकाशीनाक्षीब्रह्मरत्नानि गायिताः॥ निःक्राथः स्वकृतागन्धवकुक्तास्तिष्टप्रत्नालवां॥ ॐ निविश्वायतमीलु किनन्यदगपापतः॥ स्वयंदवनन्त
वाधर्मविनयश्चप्रगाद्गपि॥ ययपापननाइष्टादगकृणलवानि नः॥ ननसर्वदृनालभाइर्लगनमकाश्रिताः॥ ययधर्मनताः सकाः सपाकृणलवानिनः॥ ननत
वैः मलात्मानः सतगाः स्वर्गवासिनः॥ ययवृद्धगणानकाः सन्वाधिप्रवानिनः॥ ननसर्वमहासत्वाधिसत्वालवन्दपि॥ क्रमणवाधिसंतानं पूनयित्वाजगद्धि
ग॥ संबोधिहानमासोद्यसंबुद्धपदमाप्नुयः॥ ॐ गिमत्वा मनानाऊ सेनारूढ यदीक्षितम्॥ स्वयंविनमयदृश्यैश्चनधर्मसमाहितः॥ सर्वोद्ध्याकान्तिवीर्येर्वदगाकृपाल १८१
कर्मणः॥ प्रयत्नेर्वीर्यधर्मवान यस्वसमादनात्॥ संबोधिप्राप्तिअननन्तमिन्लगनसंगताः॥ सर्वसत्वहितार्थं निकृर्वन्निस्पंडरत्नवन्॥ नथकनमंगलंवनंरुवंतलर्वसर्व
ता॥ जामणवाधिसंतानं पूर्यवद्धत्वनाप्नुयाः॥ ॐ गिगनसमाख्यार्गनिशम्यमननाधिपः॥ कृगमि नेत्रकेतुलो धर्मविनिर्दुभेक्षग॥ ननभसनुपनीनागाविनम्पद्दृश्यै
गः स्वयं॥ त्रिनलगेनणं हत्वा पूर्ववानगुरु तसा॥ प्रज्ञालेक्ष्याऊरनान्सर्वानमोक्षमनुक्तिमहायकान्॥ निवार्यदगपापरस्यः सावानयगनमन्त्रणो॥ ननाम स्वनन्तसु

विषयमृषमनकनत्॥ निद्रुया— गंशुणात्मा हंड्रावर्दीननिना फूलं॥ सुरिश्चवीसम्द्धालनायुष्याषिप्रवर्द्धितं॥ सर्वपिसमुपा नकावत्नवर्धमेवाचित॥ तष्ठुत्वामम धीय
लः समातीक्ष विवानयत्॥ विस्मयाज्ञानाविक्षापिमुदित स्थैवमुपाहनन्॥ अहाधर्मस्यमाहात्म्यं यदतव लीगतं॥ तन्यमवममारव्यागंधर्माहडं हवा दिगि॥ एवं स्मृ
पतिधर्ममाहात्म्यसमुपाहनन्॥ च ओ लंगंमत्ता मध्ये प्रगांस्यैवमतावन॥ धन्योसित्वं मे हाम त्वय मांपापान्निवानयत्॥ वै क्षयेन्वाधिव यांयानियाजयसि भक्तुव नृ॥
गन्भकात्वा नमित्रतंत्वनृधामसि सकुन॥ सद्धर्मदर्शकश्चाभा क्षसन्मार्गनिवानको॥ तस्माद्यथा त्वयादिष्टं गथा हंगांव धर्मिकत॥ सर्वसत्त्वहितार्थानि कृ वैवस्वाचि
मन्द्रतो॥ अपानरय रवान्नुस्मासन्निज सकुनर्मम॥ संवाधिसंधनं धर्मसमुपाद्ध स्मनर्हसि॥ ममालयश्र्हा वासवसं उपस्था यथासुखी॥ निशंसमासनाशीनाप्तत्का नां
धर्ममादिग॥ सवाहं संपुदास्मामि ये थमद्य या राजनं॥ सत्कोनेर्मनियन्निम्यभूपस्कोसामि धाम्बत॥ ममेग स्राथनो हैत्वा हपयात समावसन्॥ संन्वाधिमार्गमादि
धनुडंकर्तुंसनाहंसि॥ इति संप्रार्थिता नाश्रावञ्जनः सस्यामति॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन कारथितिपणिरुफवान्॥ तथा निर्द्धंसनाशीनावाधिवर्यासमादिशत् सम
७=

धर्म सन्निधानेन यं यं पो व क: । न च तत्ता लो ध्यि च लाल कर्म तप स्थितं वो मया ताता चे त्वं नीर्थि वीनक्षत्र विलाउदे दिमे। इति वा कुं समाकर्ण्य बोधितो सो नत विधेः। स्वामा नां समामंत्र्य दत्त्वा त्रवीद् धूनं। यावज्जीवमयं सत तावन्नं भ मतिर्नहि। तस्मान्धर्म सत्कृत्वा युष्मान्सं नीव
मधर्मे ति। इति प्रबोधित तेन तन्मैत्र्यां कृपितात्मा यः। उत्तरे सा कृत्वा यस्त्व मेव मसा ध्रु मुखे धुता। तत्वा ह त्वत्र य रा ज्ञ रोप न मी य नां ज गतः। स त्वेति नारकी यांच यथा निर्द्धन भवत्। तस्यैव प्राधरं कान्ता सिद्धान्तप्रभावतः। उषां भूयां धर्मि को प्रसन्ना मति वा भवत्। त
उत्वा ति त धर्म कं त कवचारा तत। चित्तं स्मर लो स्यन्न धर्म रत्नायतेतिच। सा श्चर्या भ भवन्ती वै उपद्दृष्टिः प्रपातत्वात्। ततस्त्वाय प्र ग्रपा त्मा चर्म संकल्प्य प्रादत्। स्वप्नमे दिवसे भूयात्सिद्धा वै प्राधरी तव॥ ५॥

श्री

आ

मत्वा घाजीविकाय स्वयं ददौ॥ तत्क्षेत्रनेऽप्युदत्वा सन्निधिधार्डं तु खेनयः॥ साञ्जलिर्देवतानत्वा प्रार्थयद्देव मादरात्॥ प्रथरु देवताः सर्वाः खेचरा नृपास्तथापि॥ सर्वज्ञ सर्वदेवदेव
प्रमुखादशदिग्गजाः॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि सर्वयोग्याः सुरासुराः॥ सिद्धा विद्याधराः सर्वे यक्षगन्धर्वकिन्नराः॥ अवयामहर्द्धिकाः पिशाचगिनायतयापि च॥ देव्यास्थगत
तानागाः सर्वपातालवासिनः॥ सर्वेऽर्हत्कामदाः सिद्धाः सिद्धवाक्यं ब्रवाणिनः॥ साधिसत्त्वा महासत्त्वाः सर्वे वसुगणा अपि॥ यन्मयात्र कृपादत्तमिदं नतद्वयं स्वयं॥ नगरस्थं तु सर्वा
धिलालयपविश्रम्य च॥ तत्र सुधविपाकेन सर्वोपायनिगाः क्रमात्॥ पूर्णं यत्कृतं बोधिं प्राप्य चक्रत्व मा प्रयां॥ ततः सत्वान्समुद्धृत्य प्राणान्संसारसागरात्॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठा ११२
प्यवानेयं समं कुर्वे॥ यथा तत्सन्निधिषु सिद्धप्राप्त आजीविकाद्रियं॥ मानिर्गर्धं चरविद्यास्वयावन्नतिष्ठतु तथा॥ एवमुक्तं प्रार्थनीकृत्वा पूर्वावलम्बतत्पथि॥ आजीवकं समास
त्यु पुनर्नवमलोघतः॥ तावीनद्भुद्याचचन्दनु सं संकल्पितं मया॥ तत्कृत्सुसमुत्सृष्टं स्वयमादातुमर्हसि॥ एवं नानतरु सुसमाख्याते सतु स्थितैः॥ भूमिनाञ्जलिनाश्चर्मस
मुत्सृज्य मदाग्रहीतु॥ तद्धर्मसमता दायस्वर्गे देहता वर्जनं॥ तद्धर्मकल्पं विधिवत्तत्समसाधयत्॥ तथा तत्साधितविद्यासिद्धोरुत्तफभोदिनये सापि सुखवला भासा दर्हे
तद्वृक्षोभसचिवाधासं हाहाकारो महान्वसनान्॥ केचित्ताडयामासुः केचिच्छलिखरे॥ तथापि दत्तसर्वांगो तद्दुःखपलोचिता॥ राजानाद्भुत आर्धवीन्या नाडयन्ते स्वपन्त॥ माक्रुते रोग विधिं च मेडलयन्तीह ते॥

समस्तान्वान माहूय सूचिवार्संनिपात्य च । स्वासनेस्था पवित्वा तं स समनुशास्य बोधयन् ॥ पुण्यमात्मस्य मादिस्य प्रजापालन कर्मति ॥ सोभिषेकेन विधिना राजानं समकारयत् ॥ अपारम्य प्रजाः सर्वा राज्यं मान्यतां सदा ॥ दत्वा यानि सर्वाण्यस्मच्छमि
ति चक्रवीन ॥ स्वाधात्मे स्मृति माधाय चिरं तत्त्वं निभाविनः । निर्मुक्त यानकाः सर्वे म ताः स्वर्गे प्रयायुः ॥ कांश्चित्स जाः स्मरं त्यक्तं स्वर्गतामर्त्यमागताः ॥ नैव नरके गामिन्यस्तत्प्रभावाद्धि कल्मषाः १ ॥

स्वकुमेघं ॥ ततः स स्वस्मिमाधाय सम्यग्विहितनिश्चयः ॥ चिन्तनं संस्मरन् ध्यात्वा दहंस्तु स्वादिवंशयोः ॥ ततः पिम वितुल्लाला पृथ्वी समतीतकः ॥ दयस मास मासीनः सद्धर्मं सम
पादितः ॥ ॥ सदेव धर्मं माहिंगः स्व यमा मामी हि नन्दितः ॥ कुलादितिः सूर्यः सर्वस्व कोशं वनन्ते दा ॥ ततः स मङ्गिः सर्व विधिना सर्व्यं स्तं कनं ॥ तीर्थनीत्वा पि
संस्थानं विधाय समरं धाधयत् ॥ ततः स मङ्गिः सर्व सामाप्रजन पोषिकाः ॥ विधाय सम्मगं तज विदधन्नं पर्णितिं क्रमं ॥ ॥ तदनु श्रमनं कृत्वा सर्वं गमङ्गि
लोजनाः ॥ सामा प्रपोषिका स्थैवं श्चिनं धर्म समावनत् ॥ ॥ यास्मानाज्ञा महावीन ४ पृथ्व तानुपाधिपः ॥ समडन नवा तल्लान्या भोगि पमन्यता सु ॥
नवं समगवा न्पूर्वम पायन जगद्विः ॥ व अल जन्म श्रामायसद्धर्मस्वयमाय जेत्वं ॥ पनान विविनीयं वेष्टयत्न नारि वाधेयन् ॥ वाधिमार्गं प्रति [illegible] नियुक्त समवा
नयत् ॥ [illegible] वनकला वपिक सोमिन ॥ निर्मिता स कलो न्मानान्वाधिं प्राप्य क्षिना तवन् ॥ [illegible] वाधि वर्य प्रकाशयन् ॥ सर्वान्स [illegible]
[illegible] निर्दिशिं स्वयमाययौ ॥ [illegible] पनंनार्थं जगद्धितकानेकं ॥ [illegible] त्वापि [illegible] वार्धिगधिः ॥ यः श्रीमन्महावृक्षं भगवे नमः ॥

व३

आ वज्रद्रवाधिदत्वाधिपूत्रव त्वास्यामितं ॥ एतत्समसमगंमत्वाय दितुंगीवमिच्छसि ॥ सद्धर्मा विसमाधयठस्त्वाधर्मसमावन ॥ यथवंभवद्य ॰ग्रु त्वाधर्मं वचितुमिच्छसि ॥ वि
मृत्यत्वांय थकामं पालयिष्यामि सर्वदा ॥ मांव दवं निवध्य त्वां दत्वा गा त्वा मयसंश्रुतं ॥ वक्तुत्वा नामरयं किं सर्वतः त्वाश्रिज नवं ॥ श्रुणि दिसमतां मत्वा विनमयदसपायस
त्रिनत्वं सनयं गत्वा मद्य संभवनमर्वदा ॥ एवं वज्रतन वज्रंड भिसमसूत्रापि सर्वदा ॥ नतथाइ गीर्तियाथ्यात्रउ श्विमंजतिसदा ॥ यदिवेन स्मयारत्यात्म ग्रुत्वात्ते विसम्हतो ॥ सदा
तस्याधिकत्वा नंबोवेतु मवनंत्रउ ॥ श्रुणिगतांधितं ध्रुत्वा लब्रकः सांतिवदितः ॥ वक्तुत्र मयि गंनत्वा सासुलिय वमत्रवीत् ॥ क्रमस्वभयपनाथ वचं क्रपया नक्रमांस १०७
तः ॥ त्वया यथा समादिष्टं वक्षिष्यामि तथा सदा ॥ श्रुणु त्वाम वनुत्वा त्वागस्यभनयमाञ्चितः ॥ नदात्वं जिनमाहात्वा धर्मं विचिठसेत्वत ॥ गतः सकतूपा त्वानंसत्धर्मसाधना
त्वकं ॥ यवंगुशनयं मत्वा नवमूयाधिसत् ॥ यदि सत्यं समाधयत्रगंवचितुमिच्छसि ॥ सद्धर्मा विसमाधयवोधिवर्यत्रिगंवन ॥ श्रुणु त्वामविसूत्येनंदत्वाद्र्यय ८थ
सिर्वं ॥ वाधिमाःगत्रिगिस्वात्प्रावानयक्रगद्विगं ॥ कतः सलत्रक यामीत स्येवमवकः सहत् ॥ तत्विदंसं समाधयप्रावन स्ससूपद्भितः ॥ मथानहृतिमाकस्यी सर्वग त्वज

नान्नृपि ॥ नस्थैवंभवतीं गाव्वाह्न स्याञ्जास स्वदानृणा २॥ तथ अन्याम्ह रुकना द्दष्टासमाजभ्याति स्थित्यन् ॥ वीथ धिस्वाससमाग्भ्रव्य स्ववरन संन्यथाऊ ष्मत् ॥ गथ वंत्रमिता २ सर्व नस्थैव
भनथाष्ठिताव ॥ श्रुत्वाहं जिनमात् आवन्वुनन्तृवानियथ ॥ गगरथैकदिनत्रगछिषयाधिपानृप २॥ मिक्षानामप्रमका त्माप्तगयानमिलालस २॥ मन्त्रिस्तेन्यगरथो २ माईधनृ
र्वात कृपा वष्टकृ ॥ धूर्म्भानृद्दावनपष्मिरुगा दंतुं भृयावयनन् ॥ नस्पगानृमनन्वगाद्वमनापद्दगावन ॥ मृदून निर्जनरथ्यविववानजनं मितग्र ॥ सनत्रविमनन्मा गंसुनना
साष्यमृसाक्तुन २॥ इक्ष्वाकूलात्रयंपश्यस्तुद्रावनदनिकं ॥ तंदृष्ट्वा कनृपा त्मामसनमसृपविलाकयन् ॥ वङ्गाणा रुवनगी भूमिसमृष्यस्येव मब्रवीत् ॥ जनमोनारुपयापीस्त क २
र्त्वमिस्त्रगावन ॥ यदिमजीविमवांक्षाव दमस्थंम माफ्रम ॥ स्तृतिनना दितं प्रत्यासाजायिसप्रमाक्षित २॥ निस्थस्थानियनद्दमोऊ दं गक्षो यमर्यथ ॥ तं प्रमादिगमालाक्ष्य मकनृगात्
मकाद्रगं ॥ प्रयत्नेनसमृत्क्षाप्य समालाक्ष्यैवमब्रवीत् ॥ स्थैर्यमालव्य मारुधक्त्रमांपस्थ्याति स्थमाक्रम ॥ कोत्वान्कथमकाकीत्वमत्रवसिताग्रन २॥ यदिमजीविमवांक्षाग्रिन
त्त्रम्नर्वं दूरत् ॥ किमर्थमिदकाननक्षायामिगद्दस्वम ॥ रुक्तितनप्रिअप्राकं सनाजानिरुस्वमंथिवाक्तृ ॥ वननांप्रापसम्यथ त्रूत्थायैवनमब्रवीत् ॥ सादेवकथमत्राद

जा लोकाः २ सुराश्रिताः॥ ४८ तद्धर्मं मया स्वार्थं यदीक्ष्य निःस्पृहाः सर्वे॥ यतश्च २ विनाइस्या २ सर्वेण पापकानि॥ ४९॥ धर्मस्वामि विनाः २ मनः २ सर्वेण धर्मं वा निः॥ ५०॥ पापेन दुर्गतिं यान्ति च
न निःपापकर्मभिः॥ नराः पापेन विना पापेन नरके निपतन्ति न॥ सदा पिननकामी नाः २ स्वोन्यथ प्रकुर्वतः॥ किंचिद्दयिमःस्वात्मनः यथा वापि लोके न॥ सदा पितृ स्विपासाक्षी
नानाः २ स्वाहि मापिताः॥ नि २ शंक म्लेच्छ शिराः श्रमनपम ख्याला लसाः॥ एवं पापफलान्यवजुह्वा श्रम निनानर्क॥ स्त्रीव्यापादो निमग्ना सर्वे निष्ठ निपाव पापात्सर्वं॥ एवं पापा
निःसर्वाधिरिक्षे लिमस्तवानि हि॥ गहिपा का हत्वा न्यक्रुद्धः २ स्वानि विविधान्यपि॥ सर्वेषां पिरिकृ २ स्वानि विविधानि खवालय॥ सर्वापि तान्निर्दिष्ट निःपापसाकानि मत्स्यग॥ एवं १८०
विज्ञाय पापं याद अंगी पिविनम्यवे॥ शुद्धशीलाः २ समाश्रय सद्धर्मं विनूकादनाः॥ धर्मेण सकृत् नियामाश्वन निवाधि सम्यन॥ ततः श्रीमत्कुवाक्यानाः २ स्वपनास्पर्शिनं कथाः २॥ स
दासद्धर्ममाकर्ण्य श्रुत्वा निःसमाहिताः॥ ततस्ते विमनास्ताः २ पतिशुद्धत्रिकायिकाः॥ वीधिमस्वामहाविद्याः २ संवनयुक्तगच्छिनः॥ ततस्ते वाधिसंहानं पूनं पित्वाय धर्मं
त्रि विधं बाधिमाद्याय निर्दिष्ट निःसत्वमाप्तयः॥ एवं सर्वे पिमस्वाथ पापपुण्यविपाकगः॥ दुःस्वानि सत्वलत्वान्यवलहनिघ्नगोचना॥ एवं विज्ञाय संसाधसदाशीलं यदीक्ष

थ ॥ विनश्यपापकोधर्मविवर्जनगसर्वदोदयात् ॥ नथाव्रतं ६ स्वाहुरं सर्वत्रामितवहुवं ॥ सुजनावंवसंगोगा ६ सुखान्यवसदाप्रतु थ ॥ कृष्णियूर्यंसमाधायवक्तुब्रमं विलाविता ६ ॥
त्रिनत्वलजनंकत्वासंवनधंगुरुसदा ॥ त्रिनत्वलजनासव्रंपूज्यंनजीयर्णकविता ॥ नान्यत्स्वस्यपदंयद्याद्द्यास्संवोधिसमर्थदं ॥ कृष्णिनिनमसादिहं क्रत्वासर्वहिजायये ६ ॥
लोकार्थे ६ पायर्स्तत्रत्वावहवू ६ पूज्यलालसा ६ ॥ ततः ६ सर्वपिनलोकाक्षस्यानूक्षाप्रनायता ६ ॥ त्रिनत्वकजनंक्षत्वाप्रवनूर्वोधिसुमवन ॥ एकोपिनमदाकत्रयायवानीनूनाकय
६ ॥ सर्वपिसप्रस्तुधर्मनिनना ६ प्रावनश्रेष्ठ ॥ तदाकत्रकर्मत्वेवमतस्पृश्यानूत्सावत ६ ॥ कृष्णिनिनासतथोत्यानंप्रलनीससमनात ६ ॥ ततः ६ सर्वत्रलाकपूमंगलं विनूपद्रवं ॥ सुवि
क्षीसमद्धिसुप्रावर्तेतसमनात ६ ॥ तदावनीनूना ६ सर्वलोका ६ पूज्यव्रयाचिन ६ ॥ श्रीसमना ६ पुनाचावानावे ऊर्ध्वधर्मव्रतानिधा ६ ॥ एवं सनयनिक्षयसस्वित्रय्यानूनासनाम ॥ ध
र्मदयालयत्राको विनंतकोगुरवनत ॥ नथासकत्रूद्या त्वामियर्वालोका स्ववाधयते ॥ नियूह्य वाधिमार्गपूतको धर्मप्रवानयत् ॥ ततक्षयनेनस्नस्यस् विनादेवथागत
६ ॥ सम्नूतनक्षमाप्रान ६ सनीनार्के विमोकवत् ॥ तदासमं नपनिर्मत्वाम ६ सभयमात्मन ६ ॥ सर्वाकारासमंत्रि ६ समाध्यास्नुसासनत्रिवमादिशत् ॥ हास्यूयसंत्रि ६ ६ सर्वत्र

=६८

जा

दीतिमन्वयत ॥ यथार्हं देवयागतवृंदमलंकृत्य समंततः ॥ अनंतरं च निर्जगाम समवसरणमधिवत्सन ॥ तथान्यान्मूर्खानांश्चापि बोधयित्वा प्रयत्नतः ॥ निवार्य पापकर्माणि सद्धर्मे याजयामास ॥
तथा संतपतिं बोधिपुण्यत्वेन प्रबोधयत् ॥ निवार्य दंभपापस्य प्राप्तानयं समं हंति ॥ एतद्धर्मानुभावेन सर्वलोकानपादय ॥ सदनूनां सनामका ॥ सत्कार्ये धर्मं संपदो ... ॥ तथा धर्मा
देशानेषु ननु पानात्र नयालयत् ॥ एतद्राक्षा प्रभिमा लोका सर्वा धर्मे यथालयं ॥ तत्रैव समकला लोकाः सद्धर्मे आसनात ताः ॥ विश्वस्य पापमार्गी त्वां धर्ममार्गे विवेन ... मी ॥ तथा
ध्यानपिनृणा लावण्यवीर्यं तपनाजयत् ॥ विनीयात्र वरश्लाघ्य याजयामास सम्वन ॥ तथा देशे सकलान् तपात्रवशी कम्पप्रबोधयत ॥ सद्धर्मसाधिनः ॥ क्रमाच्चक्रवर्तिपदं ततः ॥ १८४
एवं सर्वगुणा जिह्व सर्वलोकाधिपः प्रभुः ॥ सर्वद्वयान्वित श्रीमान् सर्वसत्वमहर्द्धिकः ॥ यथा निजविभूतिं च दत्वा सर्वान् प्रबोधयत् ॥ बोधिमार्गं प्रति लोकाय आनयामास धार्मि
कं ॥ एतद्धर्मानुभावेन सर्वत्रापि समंगलं ॥ निवृत्य भगवान्महासत्वः प्रावर्तत कृतार्थ यथा ॥ एतत्सर्वं महद्धर्मं धर्मसंज्ञानुभावतः ॥ ... जिनत्यापि सद्धर्मसत्वश्री ... ॥ सर्वद
मपि संकल्पश्रीवितत्वपि निःस्पृहः ॥ स्थित्वा ... समभिक्षितं ॥ तदत्रापि भवत्याम सद्धर्मसत्वसाधनं ॥ कर्मविविघ्नांकर्तुं भव मर्दनि साम्प्रतं ॥

क्षमितात्कल्पादि संत्रु त्वामर्वतमन्त्रिऽ चाऽजनाः॥ सद्विजात्मकं तन सुर्व विनत भवमक्रवत्॥ सत्पभवमहानाऽजयथादिष्टं तथाऽवत्॥ यन्तुविहृत्यग स्मातिक कृवाः क्षेत्रस्तु सर्हति॥ तथा
न्ति सर्वत्र पालाजिः स्वाधर्मानुशासनः॥ चक्रवर्त्ति पदं प्राप्य सर्वकर्मधर्मसाधकः॥ तत्कथं दस्मू स्त्र ध किमता घाधिकं पदं॥ प्राप्तुमिच्छ क्षेत्रं गीजिकामप्यस्मे दातुमिच्छसि॥ यदिदान
िवां क्षेत्र तद्दत्वाप्यघ स्त्र मिच्छितं॥ सदयर्किं प्रदातव्यं तस्मात्रमा रूसंकृथाः॥ सर्वद्रव्या विद्याद्यो नित्रकाप यिऊज्ञानापि॥ तज्जि तथ्यः प्रयत्नेन नष्टा स्ववधर्मवांछितिः॥ ज्ञात्मानि प
न भादवः सर्वधर्मार्थसाधकः॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पालनीयः सुखार्थिभिः॥ यथा स्यवदरू वालीका दासी नाथ मर्लालसा॥ तत्सर्वं त्वा स्मरु द्रार्थं ददेत तत्स्य सर्थिनं॥ यत्सती लस
मावा नाथनं न वरुः अतुर्ग॥ तपिस्वा त्सद्भिसाऽर्थं तत्स्वधर्मार्थकामलालसा॥ यवदयालवाधीनाः स्वयनात्मदिर्ग कनाः॥ तपिस्वात्सम्भ खोऽर्थं नवनना सहनृ तो सदा॥ यववीनाम
हात्लात्स्वयना धर्दिनाघनाः॥ तपिस्वा त्सस्तुरवाऽर्थं नवनगाट्स्कानं तप॥ यवश्चानान तासीनानि कृत्वा वि डि तः स्त्रियाः॥ तपिस्वात्ससुखोऽर्थं नवसन्नितिप्रिग्रनस्वपि॥ यवप्राह
महालिह्नाः सर्वविद्या विचक्षणाः॥ तपिस्वात्सत्कुमाऽर्थं तप्रवदनिम सुताधिकं॥ एवं सर्वाधिकर्माधिधर्मा ज्ञिवत्र मान्यपि॥ स्वात्मसंपोष्यं दिता धर्मार्थकथितानि मुनीश्वरैः॥ तत्कथं त्वं

श्री आ

सार्थं

कस्य न विघ्नं मनसाप्यर्द्धकृतुबनस्थपि ॥ सर्वेषामपि लोकानां सदा मत्पृष्ठमन्वहं ॥ ४ ॥ केनापि न वध्यं नेव कर्तुं शक्यते नाथिगत्य ॥ मद्भूमिर्द्विवलवानन्कार सर्वाग्रसतिर्जीविनः ॥ कापि न

श्रीमितां गुरुं स्वकार्ययोगमगम ॥ सर्वे देवासुराः स्थं मद्युर्तुं नतावका ॥ मद्भुवीपि हि नान्तवार्त्ति स्वप्रार्दे हि निर्दयः ॥ एवं मदिन्नोक्तं सन्मान मद्भूमौ र्थ्ये समकगतः ॥ पश्यदं का

नदं कायमपि दानुं समृद्धं हि ॥ यद्व्यापीयमयासर्वकर्मसु दीपनिवासिनः ॥ लोकाविनादि सद्धर्मेनियकसन्निर्धारिणाः ॥ दानं वापि मया दत्तं सर्वार्थिभ्यो यथेप्सितं ॥ निर्मार्य पाप

न श्रेयं सद्धर्मसंख्याजिताः ॥ तदत्र किं मया तस्य दकार्यं मन्यथापिवा ॥ पृथिवीवहवात्स्वामी दुर्गधीडिकुर्लनः ॥ किं ममाननकार्यं न गोपिमिन स्वधर्मिणः ॥ सर्ववधं वागमाग १५१

स्यडथरवम वालिलमयस ॥ तथावलोक्य नायं कायामाशा भ्रिनामम ॥ तावद्धर्मसमोक्षायवनिर्छं मनडलहे ॥ यदातु मद्युद्धंगेन वा गनाहि पीडितः ॥ तदाहं किं क

रिष्यामि यदि धर्मान्विकं मनः ॥ अवबंधे ना विनाले मा रवन्ति तववानिर्धं ॥ तदत्र कोपि विवादस्त्वं ना स्याम्यस्मिं यदीप्सितं ॥ कायादन्योपि नरःपश्यन्नान्यश्चदकोपि न भृति ॥ न

दर्शितं नागिनि त्रारर्थकायपि ममार्कं स्यस्य ॥ यद्यापिपोर्थ्यमीडथ्यीनदव यदिदीयतः ॥ तन्न सर्वर्थिनश्रीमा रवकि नन्दिमाडियाथ ॥ प्रार्थितार्थं मदन्तेवमानयद

१ र स्तुतं वर्तं भ पालं प्रत्युतः सचिवाख्यः ॥ सर्वथारक्षणीयो हि वाममः सद्धर्मसाधकः ॥ दानार्थं यदि तेचित्तं पापिनी देहि खप्रजां ॥ इति वाक्यमिमं श्रुत्वा भूपालः पुनरब्रवीत् ॥ २

न्वभायदि॥ नैवाथ यविन्तु वान्त्सा दयाह्नडागिर्वं मृता॥ किमव वक्नुदत्वापि यत्नार्थानिवतुष्यमा॥ तिनर्थभव तद्यानं निस्कृतं नापि मत्स्यमा॥ यतानसिद्धमा मृष्यंनेवनिश्चयप्रमा
स्कृतं॥ किमवनिस्कृतं मानं खिन्नापिताबीजवर्॥ तकृदवपुरातव्यं यदेवार्थसमीपितं॥ तस्कृतं हिमहत्तुरव्यमीपिता र्थोतिसंपदं॥ कृत्वा ईदतुमि इच्छामि यत्नार्थितं मदेवाहि
अन्यथाकिं पुनर्मनेन यमेछस्कृतं नसिद्धमा॥ अहं हितो द्रुमस्य कुत्रचनमच्छि सिद्धये॥ संवाधिप्राप्ति मानेनरातुमिच्छेजगद्भिमा॥ इष्ट मिविज्ञाय मे दान्वे विधातं मातिधीयतां॥ सुप्रसन्ना
भवेनतु कर्दथे वानुमोदना॥ मेमत सुप्रसन्ना ४ स्कृ अजस्य मुष्य तागिन ४॥ वाध्विर्यवितं प्राप्य सर्वाधिमपि लप्स्यथा॥ इति तनन वद्धनसमास्या वंनिश्चयमुत॥ स्तजनामस्ति रथा
मास्थाठ सर्वकृद्धी ववक्तिमाठ॥ गालदन्मुखाञव तत्कुर्विंतिन्नमानसा॥ किंचिरदपि पुनर्वकुं नैववक्तवन र्थकिंथ॥ तत्र ठमनन्यतीनाञा पृथ्वथवतन्छप्रसन्नधी॥ अनुजीवकं त भः
मातोवस समाम वुवमादिगतः॥ उपलालवप्रती दत्वं दास्यामि तेयदीप्सितं॥ राजन्यामप्रदत्तं तत्कालिगनं धातुमहीति॥ इत्युमें मनेयनयुग्मेपाक्रगनकमासैअं॥ दत्वातपंवव
कैं पितलतयोर्हं जगद्भित॥ इदं ममस्वर्कंयमपिदातिनकमातङं॥ दत्वावजतनुंलज्जालप्स्यसे वाधिमत्नमी॥ इत्युक्त्वा सप्रसन्नात्ता पृथ्वथवत्त भवपाविना॥ उवोन्नतोम

मा॰स
४र्म
३३
दिख
वृद्धु

ज्ञा तयन् ॥ गुरुह्लानाधिगहानपक्षांनैवयल्लोकयन् ॥ तद्भावार्थंविमूढाएवतेवृक्षच्छिषयनया ॥ नखुदलंवर्लिन्तुस्कालूनानेवप्रगाषिनाः ॥ उपउवादिहुलेववृक्षग्रसमन
नः ॥ नैः समाप्त्याधितांधवाः प्रार्थ्यमानानऋांक्षमं ॥ सुपिनेवप्रसन्नाक्षप्रामांसृत्यायनाघिताः ॥ नदानडागमानप्रथंप्रीकानानिनाश्रयाः ॥ कृत्यिपामाप्तिमिंनफाएवंनष्ठे वि
मृक्तिताः ॥ तथानिमृक्तिताएवंकांचिन्मताः स्वकर्मतः ॥ पतन्तोनन्तकेह्याश्रस्काइः स्वानिवद्रमृः ॥ कश्चित्स्वकालयथानीझूलूप्लानिदादिताः ॥ स्तम्भमन्यपितृज्ञानावि
ग्रमन्तःपुत्रविरं ॥ निर्यस्यान्यू द्धवाकविद्ध्यानिआनिनाश्रयाः ॥ सन्धाद्रुः स्वानिमंतफाविज्रमन्तःपुत्रविनं ॥ नदान्यमाषवश्मेनाः संवृद्धानवाघ्रिनाः ॥ ग्रिनव्वस्त १०१
नवांकृत्वानरूर्ध्वानसमाहिताः ॥ नवामवन्दिनडागाः सतोस्यानीः श्रमंगयन् ॥ स्वक्तिऋयगुणानान्यमसमन्नाकृमनानवन् ॥ नदन्यथांकृसर्वथानेवापश्चमिनानुकः ॥ गृहमृहे
मसोस्यानंप्रावर्कंनिवानिशं ॥ तद्दृष्ट्वाकनूनंस्मात्मदेवः कोनूत्त्ववांदिनः ॥ नदृङ्कांकृर्भीत्स्वकोन्यथाश्रवंयथविनायनः ॥ कृषाणपसमावाना : प्रवर्कनापूनज्जवि ॥
नक्तार्थेनात्रमद्धर्मसूयदिन्यवनयहि ॥ यदनमानवा : सर्वेषीर्थिकधर्मवाञ्छिताः ॥ नेवराः स्वन्तिमद्धर्मभानयपूनकवन ॥ तद्यायविधानतानिवार्यपापकर्मणः ॥

बोधिमार्गप्रतिस्थापनावनयं यं जगद्धित ॥ श्रीजिनस्थितये देवैः समवसृत्या मम स्मृतः ॥ दिव्यलक्ष्मीर्निःपितप्रक्षा सर्वलोकसुखायया ॥ नतोपायविधानस्य समवसरणभूमि
कः ॥ वक्रालमलस्वरूपस्य श्रामार्गस्य मम गुरुदेवतम् ॥ नमः समवसृत्यां वीतरागः सर्वापायविवर्जिताः ॥ श्रीसम्यक्त्वसिद्धिसम्यक्त्वं महद्वीर्यवतीं कृतीं ॥ सर्वाधिप्रतिष्ठानेन संयमधर्मगुणावता
॥ सर्वसत्त्वहिताधानेन बोधिर्वर्यवर्त्तनम् ॥ तदा सप्तास्मात्मलाभाद्दुर्विधानतिमानिकान् ॥ बोधयित्वा प्रेयतेन धर्मं हितकामो भक्तान् ॥ नमः सर्वविज्ञानतत्त्वगतो वीतरागस्य
कः ॥ शिक्षिया धनुर्वाणदकावीवनवर्त्तनम् ॥ तत्र सद्भूतभावस्तु त्वं स्वर्गं सम्पाराग ॥ समस्तागं समाक्रम्य पिबद्ध्येव मतापरः ॥ अनपायिसुखभोगानां सम्यक्त्वयात्रप्राप्य भवया ॥ स
स्तोत्रं पलायमानं त्वाहं सम्प्रभवं ॥ भूमिमायं नत्वा मत्या धनिसं तानयः ॥ भूतोपसूर्यपरतः स्यांगस्तो विनान्विनिमीमतः ॥ तं गत्वा हि गमीलाभं वक्तालः समयो वा गा
॥ समस्तायं समाधिसुसमाश्वासिव मत्रवीतः ॥ अव चिंतं विदं थत्र मगवधेविहघिनः ॥ यथा स्त्वा मग्गानस्विगथा तां हाकुमूस्तः ॥ यद्वमानाद्विगकायपापएवसमाप्तिगः ॥
नत्वां मत्वापि नां पापं धर्मं भवं समाप्नूयां ॥ यदि नविषतः किंचिदपि धर्मं नाकिस्विषं ॥ सेव त्वां हन्ते मर्त्तासिवधं सर्वं नोहि धर्मवान् ॥ नास्तं कं विधर्मवचनं रुंतु मवनिसंघगः ॥

ञा नादिनिग्रहं गंमयात्रवो ॥४३॥ एवं त्वमपि विज्ञाय तद्वशोत्थं यदीच्छसि ॥ विनश्यपापकर्मत्वं वनत्वबाधिसमर्पनं ॥ यथा प्रवंविवनम ४ पापमडर्महि नवनयनं ॥ ४ ॥ सूक्ष्मामजीविनं वञ्जन
दर्शयर्यपथ ४ पूज ॥ यदि पापेनलिप्तः क्रान्तश्चिवाधिसमर्पनं ॥ कृत्वा कृत्वा वलिंद यां स्यात् सुहृदुर्गमि ॥ क्षणिमवत्रमं सानजीवसोर्थ्यं यदीच्छसि ॥ यथामया समाख्या
नं गथावनसमादितः ॥ ४ ॥ तथात्वं सुविनंजीव प्रजाधर्मेण पालयन् ॥ सुरवंत क्राविशुद्धा स्या यायाश्चनन्वे जितात्मर्य ॥ क्षणिनिन तमात्वार्म यत्न त्वा सनय सिक्षत ॥ ४ ॥ जीविनास
वेलक्षासक्तस्थ गिपपिवाधित ॥ ४ ॥ धाकृतलिप्तमतासत्वं कनूता त्मकमादनात् ॥ प्रत्नत्वालनलं कत्वासमानन्त्रेवमब्रवीत् ॥ मातस्य कन्या चमित्रत्वं ममपूज्य नलक्षस ॥ य १०५
त्वयादिष्टमाकर्ण्य मनामपनिवृत्तये ॥ नहत्वकायथादिष्टं ४ त्वाहंजिनसासदा ॥ विनश्यपापग ४ सुधर्मवनि तमूलहं ॥ सुद्यापृथसमदागर्दशानरं लसमूयाविप्रण ॥ ४ ॥ प्रि
नल्ललज्जर्नसूर्य वनिध्यवाधिसमर्पनं ॥ नहत्वनूमात्कापिद्यमत्मार्गे निवानक ॥ ४ ॥ सन्मार्गदर्शकाद्दृष्टोत्थं निर्दिष्टं जिदर्शक ॥ ४ ॥ गमनपुत्रससाक्षयमया मार्गं पूजनवसन ॥ प्रजा
स्त्वेवमूपादिश्य प्रबोधयितुमर्हसि ॥ समस्त्रिसविवामात्सत्वना ४ पूनिका प्रजा ॥ ४ ॥ सर्वथयं त्वयादर्शनं त्वाम्ज्ञावनमर्हसि ॥ तथा त्वाम पूजलाकान्निवार्यपापकर्मणः ॥ ४ ॥

सद्धर्मसिद्धिनताः कर्तुं प्रयातास्तु मर्हर्षिणः ॥ कुमारसंज्ञार्थितं नामद्रव्यं गृहीत्वा समकत्तुं वात्सक ४॥ तस्थिवांस्तु नवधर्मप्रधानपितृभेक्तनः ॥ ततः समभूदितीनाऽनामसमृस्थापयत मादनाम् ॥ सत्यं पुष्प
समानायाम्लयं पश्चात्पूर्वावनत्र ॥ ततश्च तत्पद्मा ताम्रजननस्तु तुंगा चित ५॥ कौलानाविश्वसनं स्तूपं पूर्वमार्गमुपाययौ ॥ तथागतं नृपमायायां हृष्टश्चक्रे सप्तत्रिंशत्योजना ६॥ सर्वसेन्या ६ ४
दत्तोपयुक्तास्सौदासाऽप्रतस्थिरे ॥ ततः संकोशलं प्राप्य सर्वतः सप्तत्रिंशत्योजना ४॥ ज्ञात्वाऽथ नृपं तमालोक्य कोपं मिमिलिरे विवदन् ॥ तेन वर्मुदितं गृहीत्वा पक्षं क्षान्तिं समया विना नु॥ सत्वा
गैः समस्त्वत्कालेन समादिष्टा समुद्बोधयत ॥ तत्र यादिष्टमाहात्म्यं सर्वपितृप्रबोधिता ५॥ संप्रेत्वा ऊर्मसत्ति विहस्य समस्तां घयत ॥ ततस्तं पूनां कायमस्तु यामसप्तत्रिंशद्योजनाः ॥ सामा
सुप्रेष्य पोतार्थं समस्तास्ताः ६ पूर्वविलम् ॥ तत्र तं पोतिकाः सर्वदृष्ट्वा गृहीत्वा वनहर्षिणं ॥ विस्मिता ९ साधनं तत्त्वप्रेक्षणं संमूः ९ प्रसादिताः ७॥ ततो नाऊकूलेनीत्वा समहीं स्थाऽहे ६ समादना
नु ॥ सत्तामं रक्षसमूहं कार्यं विभिंसन्मनस्य दर्शयतु ॥ तत्र तं पूनस्तोऽपसन्नं पवाक्षं पादय ८॥ सर्वतः सप्तत्रिंशन्माला ९ सर्वतः सन्नूजीवित ९॥ गृहस्था ९ पोतिका ९ सर्वसार्थवाहादिवा
सिनाः ९॥ तथान्यपि जनाः स्वधर्मे प्रतस्थुः पात्रपम् ॥ तदा संकत्र दासाः सर्वे श्रीकाराः प्राधिकान् ॥ दृष्ट्वा तं यमामसप्रसमस्यश्च नव मादिशत् ॥ तानाऊन्तर्वनी पिसर्व

आ ग्राव विघृत ॥ एतन्मसमयस्तकृत्स्नमह्यमादातुमर्हसि ॥ इत्युक्तः पार्थिवस्तेन ब्राह्मणेन प्रगल्भिना ॥ मद्गजनः स्मृतिश्वान्मायूत्नवमनायत ॥ भूतवदनमुत्कृत्यकर्णीनातुंसमुत्सहे
तु ॥ तदन्यद्वस्तु याचस्व दानस्यामितयदी प्सितं ॥ इत्युक्तिमइकृमाकर्णी ब्राह्मणः सप्रगल्भवाक् ॥ प्रत्याजनंतमःश्ये कि मिथ्या कैव नतावनत् ॥ एवंसप्रार्थ्यमानस्तु प्रतिगादपावि
त्रमन् ॥ कृताश्वासदनामायप्रेक्ष्य प्रावृत्तस्यथिः ॥ एतच्च कालामाकर्ण्य धर्मात्मनः समम्राट् ॥ ब्राह्मणं तं समायान्त्यपुनन्नवमनायत ॥ किमर्थं मे महाभागप्रत्याजनंयदीप्सि
तं ॥ तस्मान्मात्रमसमास्त्वो हिं संप्रदास्यामितं कुर्वं ॥ इत्युक्ति वाह्यमसमादिष्टब्राह्मणः सप्रमत्तधीः ॥ प्रत्याभिषं प्रदत्वा तदर्थे वाह्यानयवदयत् ॥ वाज मेधमकृतार्थनकर्तुमिस्कामाहं म
खं ॥ तच्च प्रतिजिहीर्षं प्रत्याजनं सदस्यम ॥ तदतयावमानातु प्रतिगादं पूर्वं तमन् ॥ कृताश्यतदनामासीविधिवीतमित्यक्षुः ॥ तद्युद्धाममहावाजमदस्कार्यमितिवर्य ॥
त नस्यनमूर्नाकः पूर्ममहमादातुमर्हसि ॥ इत्युक्तिसंप्रार्थितस्तनधर्मात्मनः सम्राट् ॥ सविवेकं समायान्तं मनसैवं व्यचिन्तयत् ॥ जपाप्रेयामल ध्यायताऽगनमञ्ज्वादिनः ॥
पृथिवीतवसर्वा लोकपृष्ठ प्रार्थिता इर्लभः ॥ तदहं निर्विकल्पात्माग्रयाम्य यदीप्सितं ॥ सर्वाधिप्रतिषन्नतम सुदयां समादनान् ॥ इत्युक्तिविपुत्रस्तात्माधर्मात्मनः सम्प्रा १८३

ह ॥ ब्राह्मण्यं तं समासमन्त्रपूत तवं संस्थापितम् ॥ ब्राह्मण्यसंपूर्णा स्यामि शुद्ध वा यदीप्सितं ॥ तवान पितद्रक्षत्य प्रतिगृह्य जगतो ॥ ह्युत्वापि ह्युत्यथ वा सर्वलोकाः
सतां ऋत्विजा ॥ किमस्य दिव्यमस्थामि मिश्रित्य क्वाप्यलपक्षया ॥ मत्रमपत्रि क्षमा मात्रा ब्राह्मण्यात्मपूर्णा हितो ॥ सदृशात्थ यतं विप्रं पवित्रा प्येव मत्रवन ॥ अन्य ब्राह्म
णद्वारा प्रियदीक्षा पिप्पावक्ष ॥ वेणुलापी द्व नं वस्त्र यावित्तं नेव मूल्य सदन ॥ कथं तस्य न पतदर्हड रक्षत्य निर्दया विवम ॥ जिह्वा कर्म चविद्या पिप्रतितुहितं मिक्षमि ॥ य
दिउ यथ पूर्वाक्षण प्रार्थयस्व यदीप्सितं ॥ नक्षमम पर्यी मिथ्या समक्ष व कार्यमपि ह्रदय ॥ मापूत नपियाव स्वयादिधर्मसुखमिक्षमि ॥ सून्यद्रु व्यानियावस्तुदय्याकयंत यायिय ॥
शुभितेर्मश्रिति ॥ सर्वन मासे ॥ मपूर्णा हि तं ॥ प्रस्थाप्य गमतल पं त्रक्षाम्समालां वमाविशत ॥ मामेवंव कुमर्दनितव नाम समायका ॥ नमस्तु साधनदान निषद्धं नव
मर्दथ ॥ यद्दत्तं धर्मसंप्राप्येमसर्वार्थि नायदीप्सितं ॥ नसर्वंशुद्धयाद स्वामसतानन्दमूर्खंलत ॥ यस्त्रम मदेवनप्रावि नार्थं द्विजाकस ॥ नक्षथमस्यास कान मन्य पाकर्त्तमी
सर्वं ॥ सूवध्यं वा विनाशावा तवानितवत्वा विशां ॥ वा विनावान्यथा कर्त्तुं कनहि सक्ष गतदे ॥ यदहमत्र संसानजन्मसुखासर्वत्र न ॥ नरस्तु मिथ्या धनार्थनना न्यथा

=बै.३

श्री रा

धिराधिप ॥४॥ तस्मात्पुष्यं महत्सर्वं समस्तक्लेशविनाशनम् ॥ प्रोक्तं कार्यहितं कर्तुं बाधिवर्यविशेषतः ॥ एतत्कार्याणि सिद्ध्यन्ते ममपुष्येण लावक ॥ तस्मात्पुष्यं नमस्कार्यं सर्वकार्यसुसिद्धि-

कृत् ॥ पुष्यमेव महत्स्मितं पुष्यमेव जगत्सृष्टम् ॥ पुष्यमेव महत्तत्त्वं पुष्यमेव महद्धनम् ॥ पुष्येण वर्धते लक्ष्मीः पुष्येण हीयते कलिः ॥ पुष्येण क्रियमाणं तु सकलं कार्यं विवर्धते

॥ पुष्यवान्विक्रमं विज्ञान्सर्वविद्यार्थसाधनम् ॥ पुष्येण लभते सिद्धिं सर्वविद्याविचक्षणः ॥ किमन्यं पुष्यमाहात्म्यं वक्ष्यामि प्रकथ्यते ॥ सर्वसंतानसङ्गमे मूलमपि गदवहि

॥ पुष्यबलेन निर्जित्य प्रवर्तते भविनवतानेपि ॥ उक्तमां बाधिमासाद्य समन्त्रा ॥ सुरगाजिना ॥ सर्वत्र हड गांकृत्वा बाधेयत्र दृष्टापि ॥ पवमानिर्दिष्टानि यानि यानि यासनपि ११०

स्वयं ॥ तत्पुष्यं च महत्तत्त्वं मं बाधिकी नृत्यप्रदं ॥ साधयर्यं प्रयत्नेन तस्यान्यप्रकार्थकता ॥ यन्मे पुष्येण सन्निरुद्धं प्रविनाशयमि सर्वं ॥ कादिमें मिश्रमासाद्य पुष्येण तत्त्वतास्य

हं ॥ ५ ॥ तिनिर्दिष्टमुपसंप्राहुः पुष्यबलेनपाधिपः ॥ पांडुधार्वंगमोमत्र पुनर्भव महायम ॥ प्रसीद त्वं महाभागमाख्याभिमं यदीप्सिता ॥ तथ्यासपुत्रं नत्वा त्वामनमसमादाय

महेशि ॥ ॥ ननाह्य समादिष्ट सर्वतो मक्ति स्थाऽज्ञा ॥ महाभागं महामार्गं प्रत्वेवं बाधिप ॥ गयदेवमहोनाऽप्रसीद माऽकथानृपाः ॥ विहृत्य गयदेस्माशिरू तवाऽस्तु

तुमर्हति ॥ उग्र इवाग्निविज्ञानात्‌ यस्य सत्त्वं ख्यातं नृपावनः ॥ जम्बूद्वीपाधिपानां च चक्रवर्तिनामपि ॥ तदन्यात्किं महत्सौख्यं सत्कुलकीर्तिसंपदः ॥ प्राप्नुवंत्युपनिष्क्रागं कर्तुमिच्छसि सा
मृतं ॥ यदि सा न समिच्छामि सत्य सत्पुण्यं कार्यं वयम्‌ ॥ सर्वापकारिण्यो गृह्यमाणानि सोढुमर्हति ॥ मासक्षीणविनिर्मुक्त स्वदेहं सोढुमर्हति ॥ अन्यानि सर्ववस्तूनि संप्रदद्या यथेप्सितं
॥ कायेन सा धर्मस्य संश्रेणी समुपस्थीयते साधनं ॥ तं स्कायं कथमुत्सृज्य किमन्यत्स्थीयते भिक्षामि ॥ यथा क्षतिमहत्स्यां स्थिनि लज्जायां भृत्यैः ॥ स्वयमालीहितं कृत्वा याचिवर्यो
ब्रूतं वचः ॥ उग्रात्स धर्मसहस्रंमि तत्समाविशति साधने ॥ स्वस्ति स्वर्गो विनयात्मानं पालय स्वर्गदेवननु ॥ [illegible] पालय कायमूलमे ॥ दत्वान्ये उत्पवस्तु निचन
धर्मयत्थछया ॥ कायानैव हि सागतं यानकृतीये प्रयत्नतः ॥ कायं विना कथं धर्मं वदंति विद्वानयः ॥ [illegible] मतिहि सर्वे विहायपि [illegible] निभन्य सः ॥ प्रथमवलः समाल
क्य गानवं पुनरब्रवीत्‌ ॥ सत्यभव समाख्यातं यः प्राप्तिर्मोहितार्थिनि ॥ तथापि यदलिप्रार्थी [illegible] समाहितः ॥ सद्धर्मसाधनः कायान् कृतीयः प्रयत्नतः ॥ न किंचापि
प्रयत्नेन विना [illegible] ॥ भवरंगनापि [illegible] कायः कास्यवरं [illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वेषामपि जंतूनामवधं मनसीनय ॥

आ

नानायकांसदा एवं वनगस्वकृयासुखं ॥ तथायं सूर्यं निर्विकल्पाऽगृहास्थानाविकल्पषा ॥ यावज्जीवं स्मरेद्गुरुकावेह पं संप्रयाससाथ ॥ कथनिर्मली र्थिकेऽप्राकं अ स्वामर्वमताज
ना ॥ प्रबाधिताऽपुरीनाम तथा वरसूर्यस्थकृया ॥ ततः सर्वपिपीनाथ तदन्त्सानवबोधितः ॥ निर्विकल्पनविकल्पनप्रवसूःऽयानक स्थपि ॥ तथा सर्ववनकक्षदशोंऽलवा
निदा ॥ दुबाबानाद्ना कानोद्गऽकर्माऽदाह नाभ्याद ॥ संक्लिष्टाद्विनानका मनायागकमंनताद ॥ क्रीडाऽनिमाषिमा आनावर वृद्धेर्गाऽअथा ततः सर्वपिपीनाकाद्यष्टं
लिंद्रव्यस्थालसा ॥ स्वयं स्त्रुस्थापयां च पित्रं च पित्रं समृद्धता ॥ मद्यमांसं पिनिन्दनाः पवित्रायतीनपि ॥ मिथ्यानुजीविनाद्कुश्चा नपिपातकं वनम् ॥ ततस्त्र यां
ममद्याधीममक्षपिपिदिनदिन ॥ क्रमतकथिताऽआमन्त्रयत्न साधितायपि ॥ ततः श्रीवदिताऽसर्वदापिडिताऽकृवलिकाः ॥ कृपिया सा निमंतफाडमलाऽश्व वे
निय ॥ कृथितापितदा तत्र विन्द्र मनाः सद्गद ॥ किंकिंकिंज्ञात्व माहाय्यं सदावनतोऽर्हताः ॥ तथा वयतयोध्यवं संत्स्हनानेवकर्कवनं ॥ ब्राह्मणाऽश्रोत्रियाश्च पि
नप्राप्यऽमत्स्ये भिक्षा विनुः ॥ तदा भनिधनालब्धाऽक्रमव्याह लेमानसाऽ ॥ दशकृतालम्लपकर्मस्वपिपुवविन ॥ सुदक्षा दाधिनऽसर्वलिङ्गवाब्राह्मणा अपि ॥ नाजा

११४

न॰ऋत्रियाश्वा पिभिथ्यकामार्थलालसा॥ दिंमावअजया॰क्र नाम्माक्षा मत्रिं॰याजना॥ वेष्यमहाजनाल्ल्ह्यामिथ्यतिलाषिदा॰लभ॥ येयुस्पवाम्मिन॰गूढ्राल्लग्रा
विव्रप्रलाहिन॰॥ कार्याधीष्ठजनाश्वापियानृष्यपनिगाधिद॰॥ पनद्रव्यस्य्तालूझावमिंज॰सिस्मिनाषिव॥ मत्रविद्याथ्वनावीर्याथायादाकूलिता॰या॥ पतिंगा॰मास्त्रवि
स्वर्थंग्यविकृहनवादिन॰॥ एवं सर्वपिलाकाश्वबत्वृणायमाधिन॰॥ गतेवंयायद्दूर्हिप्रवविर्गक्षमन्नात॰॥ दस्त्वादवाधिप॰भूस्त्र स्फूर्जविमुखोभवन॥ नंदवाक्षिपर्गिंमूर्ख
दस्त्वथ्वमीधिकाविदा॰॥ दगादिस्नाकपाला श्वमर्दयामस्त्रवाषिता॥ गथालाकाधियालानांगद्रजाद्दक्षिविथागग॥ दक्षनय॰मम्रूपाक्रानाप्रावर्लनाक्षमनाग॥ गदा
गक्रा॰नला स्यामवामा स्यामाश्रूपड्वे॥ मस्थ्रानसया स्यादर्हितिंजंपर्यवर्ल॥ गदाद्द्रग॰ सर्वयज्ञगन्धर्वकिन्नरा॥ कुम्भाग्रागनूतानागावतालानाक्रमासूपि॥ हग
प्रगपिगावोद्वृत्रवनना दिवापिग॥ विदंय काजगान्निहस्यागविषय॰वनन॥ गगलपालतोजस्का॰ सर्वगमानवासूपि॥ नानानागाप्निलक्षंगफामलस्य्भंकाविघार्दि
ता॥ कुक्कूषूपविदग्ध्यक्राउर्वलाड्रियाः॥ निश्वमनो विलोक्षेवपनस्यनेविघादिन॥ सर्वोयायप्रयस्नन गद्रागानेवश्राम्पिता॰॥ धिन दिनप्रवर्द्धना॰ सर्वाङ्काथाल्पी

कुम्भकर्णं।

आ

गितः १॥ त्रमन्तिनवकेतुः स्रा सफलोदयुतानिगः॥ दिव्यपुलायिनाथुवनत्रा स्मानंद श्वनाभिगं॥ त्रमन्तिनवकेतु स्राणीकूकयु कामायसं॥ ७वा४ यर्वविविधालवसु
र्दासानिस्रज्ञार्दिताः २॥ तफाक्षपाधिधिरुजानात्रमन्तिनानेकसर्वा॥ यत्र व्यापन्नवि क्लाक्षसमानूफाधिगाधिनाः ३॥ एवञ्चावदृक्षा तस्वैर्दयनायमनिकनेवी
यमिथ्यादृष्टि कार्क्ष सुः ४ पिवा वाञ्छ्यव घस्मनाः ५॥ ववन्तिक्रमयाः ६ मरक्षनिमस्मानानेकसर्वा॥ तथा न्यापकर्ततनि व्यूहत पिद् ६ सपीतिन॥ अन्तनवकेग
त्वामस्तु ७ रक्षान्यवापूर्यत् ८॥ एवंमत्वामतम्र्दावित स्यपापमार्गम ९॥ जगन्नाकदिगान कान्धवन्तिवाधिसम्वर्यं॥ यद्वनन्तिजगन्नाकदितार्थवाधिसम्वनं॥ १०८
नस्य १ सर्वमनसंस्त्वा २ पन्नद्रष्टस्मृ डिका ३॥ सर्वपिवाधिमत्वाक्ष मन्वाधिवगवापिराः ४॥ सपन्नाःसस्निगंक त्वाद्रुवनन्तिसदाशुरं॥ एतत्पृथ्यान्तताव
नसर्वदासस्फपिंगलाः ५॥ श्रीमता ६ सन्नुधाधनाऊजानाः ७ सतस्वंतदे॥ सन्वाधिपिधानन्नपापविनायथाजसं॥ पूनमन्तामसलाविहारवन्तिमृगानास्तु
ताः १॥ सर्वपिर्गमसासस्वाजित्वासानाक्रिगत्रियाः ३॥ सूर्दन्तोवाधिसासाद्य हविष्यन्तिजिनाअपि॥ एवंविद्वायत्पालजीवंभोरवंयदिकमि॥ विनम्यया

पकानिमं त्रिभवनं संस्मरन् स्वयं ॥ दानं कृत्वा समदार्थिभ्य २ गुडसी लब्धं गंधवन्त ॥ स्वपचाल्लस मंगा व्यक्तं त्वा समृद्धिकार्थकां ॥ नि२ क्रम ध्यान समतीरथं तु स्काप्रशांसमाभुज ॥ एन त्व
ध्यानवनं नविशुद्धात्मा जिनेन्द्रिय २॥ स्पृशं सर्वाधिमासाप्यवृत्तं मपिवाप्र्यया ५॥ याद्दिसानं समदार्थिभ्यो दनिग्रहं यपिमं ॥ मनाज्ञापि तर्वत्यून नवकवतीनृपाधिप ६॥ यत्र मुनी
र्लविशुद्धात्मा वनं परिघध्रुवं ॥ मृनवद्दिविदं वज्र २ सर्वलोकहितार्थनू ॥ य२ ज्ञानिवृतं ह त्वाकृत्य मत्वसिंमवा ॥ सयामाधिपतिर्जून तत्वर्त्यमसौ त्वक्रम ॥ य२ स्पृ
र्शमाधन लोकां क्षनयति स्वयं ववनं ॥ मतधिकाधिपा नूनं तत्र स्तंतस्मानम ८॥ य२ समाधिन गाथागी २ निष्क्रम च वनगुरु ॥ मत्व स्तस्ताप्य पत्र २ सनिर्माता नवीस्वनं ॥
मधप्रज्ञाम साव त्वं प्राप्त २ संबवनगुरु ॥ समस्त नस माय वीव सवलीन्द्र नामवन ॥ यश्चलोकाकृष्टं २ पापिप्रय वनप्रवाधयन् ॥ सम्पृद्धि मोत्तुलाभना मूलाम नाधिपस्त्व
नू ॥ सर्वाधि प्रतिष्ठान नय २ कनाभिऊगार्दितं ॥ मनिर्माथाविशुद्धात्मा त्र मस लाकाधिप तत्व नू ॥ य२ सद्धियावले लोकान्या भिसुंवान यच्छते २ ॥ सस्मानृप्याधिपतिर्यागी मनर्त्व
नोतवन्तृवं ॥ य२ संहृनमस्कारिहृ २ पापिलोकास्तुवाधयन् ॥ सर्वधर्माधिपावृद्धा दशत मीश्च नामवन ॥ इति सर्वधर्मनाज २ सर्वद्दि २ सर्वभावत्तूं ति २ ॥ समादि स्प्रभिर्व

जा प्रविश्य नसमादि गा २॥ तत्थे कायितमालत्रड्व्य पापन गापितं ॥ सर्वसत्त्व शत्रुतावानार स्वमन्हि वा विरत्या भवत् ॥ एवं मसड मांक स्वधर्मांक नो ननाधिपः ॥ धर्मं संपालय लोकान्
बोधिमार्गं प्रवर्तयत् ॥ ततो धर्मांकनक्षमो तथा स्यान्न पगीनपि ॥ जित्वा संजातयत्रवं बोधिमार्गे न्ययोजयत् ॥ तदाप्तो जिनसा सत्वा सर्वपितृन् पालयेत ॥ जिनमपदर्शी पाप नो
बोधिमार्गं प्रवर्तिन ॥ तथा सर्व पितृ तो नासु स्यानु भ्रासूनान्कता ४॥ जिनस्य पदं अपापं यो बोधिवर्त्या प्रवर्तितं ॥ एवं मसव लोर्जित्वा सर्वान्नृपान्प्रबोधयत् ॥ ॥ विनीय
सुबलो लोकाय वक्रवर्ति पदं ययौ ॥ एवं मसर्व नाकेश्वा धर्मं पालयकं गत ॥ जिनत्व लेजनं कृत्वा विनं तक्षेगुरुवचनत् ॥ तथा सर्व पिता काय वक्रवर्त्तिन विता मितांश ॥ कृत्वा
दानं मसार्चितां ज्ञ क्वामीरथं समाम्वता ४॥ गुडनीला २ घमाधायववेनाः यापधंवर्गं ॥ कमामो व्यमहत्त्रां वा २ मध्वर्म माधनायना ४॥ मि २ कुंभा विमलस्वान २ सुवर्मनिर्दिता मे १८२
या ४॥ प्रह्लानत्ल गुरवो लोमश्रीमप्रड़ा २ गुरुवचनत् ॥ तदा गर्भाक्रमे स्वायुर्बलवीर्यप्रवर्द्धितं ॥ जिनस्यांगं गुरुत्वादं मसयं पूर्ण श्रवा भवत ॥ एवं सर्वप्रदं स्वापु जिनू स्यांगं गुरुत्व
वं ॥ सुधर्मांकनक्षा लोकप्रपूदितरथैवं बोधि नायत् ॥ मसुधर्मस्यमातानां मसवीर्यबलाक्रमं ॥ यदर्द्धधर्मबलनेवं वक्रवर्त्तिपदं लतं ॥ यक्षायीभनपा २ सर्व सर्वलाको

श्वहतल ॥ निवार्यतापगांधर्मविनीय्ययाञ्जितासमा ॥ एतत्सर्वं विज्ञानामिधर्मश्चेवानुत्तायवत ॥ तत्सदर्ढपुदत्वापिमाधनीयत्क्रमहृषव ॥ ययर्थिह्यप्रमागस्ययावश्मदर्हमादना
तृ ॥ तस्क्षेत्रनमस्कृदस्ग्रद्वयादातमृस्वहं ॥ श्रृतिमिविचिन्नसत्मीब्राधर्मातन ॥ प्रसन्नधी ॥ तदर्थिनं प्रमालाक्ष्य तत्कौनदाक्रमृत्तक ॥ तदनकृष्ठिर्तमत्वाक्ष तद्वियागर्भंकि
गा ॥ दुर्लभं लितयधर्मज्ञ आत्रावलतमाश्विपर्वका ॥ तहृमिज्ञात्तेनेमिम्रूविवानयस्मृताधिय ॥ तस्यधर्मातनश्चेवं विततं तं समनस्यत ॥ ततश्चत्राम्नतस्त्वमिमान्क्षित्रंप्रमृत्त
क ॥ ब्राह्मणःस्वयमाश्चयतत्वार्थीतत्पूतवचनम् ॥ तमृयागतमालाक्ष्य कर्थिस्मराजनःपूत ॥ गत्वायस्य समासनत्रुपप्रस्कैवं समादनात ॥ किमर्थंयाचितं विप्रपूनस्मिंवं स
मागत ॥ तदस्यप्रदास्यामि ग्रद्व्यागयदीप्सितं ॥ श्रुतितनाथिनंश्रुत्वाब्राह्मणःसपूनःक्षित ॥ सराजनंतमालाक्ष्य दत्वाशिषंतथब्रवीत् ॥ महाराजनयदर्शनपूनरार्हं समा
वन ॥ तदर्थं तृपवक्ष्यामि यदिदत्तंममिक्ष्यसि ॥ श्रुतितंनाधिनंश्रुत्वा सराजनः सम्वादनात ॥ यतःश्रितं नपितं व्यंतदास्यामीतिवावदत ॥ श्रुतिमिदंकमाकर्ण्य ब्राह्मणःसप्र
सन्नधी ॥ महाराजनंतमालाक्ष्य सानंदं मधमब्रवीत ॥ शृणु माक्षमस्यहं कर्तुमिच्छामि सकृतं ॥ तन्नतस्यश्रीजिकांस्प्रार्थितुमिहागतः ॥ यद्यात्तं प्रदानतभाक्ति ॥

दिग्धाविषीसमन्तात्पांडुघोषंसमब्रवीत्॥ चणालोयंमहादुष्टः सत्कर्मपारगः कथीः॥ मोहयन्सकलांलोकान्राजाभवतिनारकी॥ इदानींपापनाशायदातामवति सर्वदा॥ तस्मात्तदानविप्रेभ्यश्चर्मार्थीभविष्यति॥ इतिश्रुत्वापांडुघोषोमन्त्रवान्समब्रवीत्॥ २

जा स्वातंत्र्ययस्य॥ तथागृहार्थिजनाः सर्वविनम्यदर्शयागतः॥ जिनलिंगवर्णंकृत्वासर्वविनिर्ममदात्मनः॥ तदेवदानसत्कीर्तिप्रविशंताःसमकमलः॥ पांडुघोषाःशिक्षार्थिभिःप्रजीवकानिर्गमर्गा॥ लोकेप्यिकृतंलुप्तामतलनाज्ञानमानसः॥ तत्कीर्तिर्गुणविदग्धोपनितांधेवमब्रवीत्॥ श्रूयतांयंसनातनंदुःखस्तुलोमेननाधमः॥ मापितामासहदानेविप्रस्थानेतुमहीति॥ तद्दृढंतस्यमहानेविप्रार्थेसमनुपावनम्॥ सर्वमपिभिर्जनतंयावयंप्रार्थयन्कृतः॥ यथाशक्रकृपयादयान्नूनंसमस्तमामयातु॥ अथतद्दानकीर्तिश्रुत्वानिर्गमत्मोरवयुः॥ कुत्रका

उ॰ १६९

कामिनिमाससूर्जीवकप्रगल्भवायुः॥ महामापद्मनाज्याप्रकल्पिकांदेवमस्मयावृत्॥ नाजन्यश्रुकृत्यानिरूप्यंसर्वार्थिनिसायःपश्चिमं॥ दलंलवयांगतकीर्तिनिर्गमस्तसमावर्ग॥ तन्मांगिमहतीमामेसंपूर्णपित्रमहीति॥ यत्महत्तंधर्मकर्मसाधितुमहमलहः॥ तत्वार्थ्यान्यदानननूनंतंपितृमपरोपिमं॥ यदिस्वर्गकामितसर्वाधिपांवामात्रजिनारवधः॥ तच्छ्रित्वासंपार्थिनामनपृथ्वंवलः सहसागः॥ तनाजीवकमालायपचच्छेदंसमानांगः॥ किंमहत्तंधर्मकर्मसाधितुंत्वंसमिच्छसि॥ कनार्थेनगुरुंउपयोगंनमद्रव्यंमां॥ तत्प्रादिक्षनेनवदेतत्सृप्ता जीवकउन्मत्तः॥ तंनपर्दसमालाकनिशांकजवमब्रवीत्॥ नाजन्विपांधनकल्पंमहासनप्रमर्दनो॥ गतंसाधितुमिच्छसिगनाहंगउपावन॥ तद्दातिसमृपहानार्थेजीव

नः प्रवर्त्तयन्॥ धर्मीस्तु ग्रामान्तरे नतो धर्मप्रभावजं ननवा पत्ने॥ गत्युदहिमहानाग यदि संबाधिवाक्कुर्मि॥ धर्मार्थिनां हि मना एतं हतं नेव महालक्ष्मि॥ धनिनां वार्थिनां तु त्वापधव
लः समन्मासि॥ गंविलावद्धप्रसन्नान्माध्यखेवं समविकयता॥ प्रतिलंबं महाजार्थं वेजावर्लिपंदे मया॥ गत्यु ध्यवतनेव गस्मात्स ध्यवतं मे हतु॥ असंख्ययानि मन्तेत्वो न्यु
यतेनेप्रवाक्षयन्॥ वाधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य वानेयामि शरणं सदा॥ निवार्य पापकर्मेभ्यः क्रियानवनियाजयन्॥ आर्यधर्मे विनाधाहं कनामि वाधिवानिदशः॥ प्रदत्वा शुद्धयार्थिस्थाऽ
यानि वांछितान्यपि॥ धर्मार्थिनापि तान्सर्वा याजयामि प्रबोधयन्॥ दत्विडान्धतिनः कृत्वा सद्धर्मेवानयाम्यहं॥ दुःशीलांश्च सुशीलाख्या आधिन थक्रमानतान्॥ कुशीलांश्च तु
सत्साहसमुपागतान् धार्थिनः॥ जातिविशेषविहीनांश्च निः आध्यानसंनतान्॥ दुःप्रज्ञांश्च महाप्रज्ञान्सुधीमतापि वक्रधीन्॥ सद्धर्मसाधनोपायविधान प्रतिसंविदः॥ वाधि
प्रतिविहीनांश्च विशिष्टबलशालिनः॥ सर्वसंस्थानमेनात्स्ये पून्याङ्गानलाविनः॥ कृत्वा सर्वान्महाहिद्धान्मेऽति हानवानिशः॥ सम्बोधिसाधनं धर्मं वानयामि प्रवाचय
न्॥ नागमलीनांन् ज्ञान्यष्टांन्धर्मनिर्वाणिनः॥ दत्विडा दुःखी समृद्धोपाप्तिर्गेवाजं शालिनः॥ कृत्वा हं भवमतांश्च विनीयवानयन्कलेः॥ वाधिवर्षखणावानान्करोमि वा
दृष्टा

श्री ग्रा स्त्वापि गतवंगस्वासउन्ति गुह्यया सवा ॥ दूरगतिं नगच्छन्ति यामाश्च सफणोसवा ॥ बोधिचर्याशुभं धृत्वा वसन्ति सर्वमंगलम ॥ क्रमश बोधिसंतानं पूनमित्वा उगच्छि
म ॥ त्रिविधं बोधिसाम्राज्यसम्बन्धपदमाप्नुयुः ॥ ॥ एवं मया श्रुतं आदिष्टं श्रुतमया ... ॥ सर्वात्मप्रियाः ... स्वयंबन्धुः ... समा ॥ प्रज्ञापि
प्रयत्नेन विनीय संप्रबोधयेत् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य संपालयितुमर्हति ॥ जगत्सु ध्यानतावन सर्व ... ॥ क्रमश बोधिसन्तानं पूनयं बोधिमा
प्नुयात् ॥ ॥ इति गतादि गादिदृष्ट्वा ... ॥ ॥ तथेति सुप्रसन्नात्मा ... नन्दत्त पार्षदः ॥ ११३
पृथ्ववलस्य ... कृते ... ॥ सर्वे ... ॥ ॥ ... प्रथम
... श्रीमन्महाकालमालायां पृथ्ववलावदानं समाप्तम् ॥ ॥ शुभम् ॥
मस्तु ॥ ॥ ... ॥

सू॰ उ॰ ॥ एकदा काशीमहाराजः सुप्रसन्नो बभूव ह ॥ साञ्जलिर्नृपशार्दूलो गंगां नत्वेदमब्रवीत् ॥ राजोवाच ॥ अद्य प्रभृति भिक्षामि सर्वं सुरसद्भावदायकं ॥ तद्वाक्यं समुपाकर्ण्य सर्वान्नस्तान्प्रबोधय ॥
गंगे त्वं प्रार्थिता ह्यद्य सार्धं मत्कर्मकृतासुखी ॥ सुलभं कर्म सततं वापि समालोक्य समादिश ॥ गं॰ उ॰ ॥ साधु महाराज यथा ममानुशासनमादिशे ॥ तथा हं तत्प्रवक्ष्यामि वीरवर्यात्र तं शृ-
णु ॥ तत्र प्रथमं विना लघुना कर्मकर्षणे पुन ॥ तीर्थिकाश्च वकास्सर्वलोका द्विजादयः ॥ तत्र ते तीर्थिकाः सर्वे प्रवचन्तां गृहे गृहे ॥ भिक्षार्थिनां गृहस्थानां पूर्वमेव समा-
दिशत् ॥ दाता ... समाख्यातः समस्ते सम्प्रति समाहिताः ॥ ... स्नात्वा च सा तेन सुखी कर्तव्यमीदृशं ॥ तद्यथा तत्र प्रसन्नचित्ताः तीर्थस्नानं समाचरेत् ॥ नानायज्ञसमैश्वर्यफलं तत्र नान्य-
देव तं ॥ यावत्येव सर्वदा तीर्थस्नानं नानायज्ञं फलं लभेत् ॥ तस्य पापानि सर्वाणि क्षीयन्ते जलबिन्दुवत् ॥ एवं मत्वा सदा तीर्थस्नानं नानायज्ञफलं लभेत् ॥ यः पश्चात्क्रियासु सर्वेषु स्नात्वा
स्नानं भवत्यतः ॥ आत्मानं पितृभिः देवैर्मानवाय सर्वाङ्गसम्पन्नं ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापघ्नीं यत्नतः सदा स्नानं ॥ स्नात्वार्थं समपि पापानि स्वात्मा पापैर्न लिप्यते ॥ तत्र विविक्तस्थ-
विलभ्य वनगतश्च कर्तव्यं ॥ न तेषां विद्यते पापं नापि गच्छन्ति दुर्गतिं ॥ यावदायुः सर्वं तु स्नात्वा प्राणान्तं वेदं तु माप्नुयात् ॥ इति मत्वा नित्यं तीर्थस्नानं समाचरेत् ॥

आ त्रिभिकाभिर्जनवन ॥ त्रिः स्वयं पाकेन मार्गदर्शयतस्तपथ ॥ इत्युक्ति गनाधिगंतुत्वा कनूयान्मासनं पूनः ॥ संप्राप्तको विवाहो कांम माला धेव समब्रवीत् ॥ मातेस्कास्वेर्य्यमा
लस्यतिस्थमतस्त्वावद ॥ यदर्थमिस्तकानामत्रमन्त्रायाभिमन्तिकं ॥ कास्त्वं कनात्रकार्य इत्रमसङ्गमवन ॥ तत्सुयुं वदसमाख्याय दिजीविनु मिलकांमि ॥ उत्तरकस्य
माकर्ण्य राजा सुत्र विनाभय ॥ साकुलिसं मसानोद्र मसमीक्षेवमब्रवीत् ॥ साक्षर्संनृपतीनाक्राम्रगयाहिवतायमन्नु ॥ सुस्यपक्षन्तएकाकीत्रमसम्बवमिलत्रज
॥ तस्मत्वं कृपयामार्गदर्शयाताशु माप्रियं ॥ वहूद्व्याधितादत्वो मचिष्यामिमदागृहं ॥ इत्युक्तिवचकमाकर्ण्य भागिकानूथ मानेम ॥ संप्राप्तयन्नूपायनवितन्तुभवमब्र १११
वीत् ॥ सुनराजन्स्वदेवनप्रविताशीदमन्तिकं ॥ गन्तिनत्वं स्मनांत्राधियदि मसनागिमिकांमि ॥ सुमात्रमनसंयायाः किञ्चित्सुर्य्यनगेयतः ॥ गतस्त्वं तनकथाताम हू
रवान्यवापूया ॥ इत्युक्तिवकमाकर्ण्य राजामविस्मयाकुलः ॥ सविनतांममालाख्य साकर्त्वविस्येवमब्रवीत् ॥ पर्नलाकंनमस्थरधर्मायमेनकस्यया ॥ तीर्थिका दिसमा
श्रयस्वास्मानमवपालय ॥ पापंमन्यंनपूर्ध्वं वमनर्यनेनकृतान्यपि ॥ किंपापस्य फलं संशायं पूर्व स्यापित्वं किंफलं ॥ एतत्सर्वं समाख्याय विसृज्य समाधिता ॥ य

=मि२

थान्वयाममादिस्तुं वनिष्यामि तथा खलु ॥ स्तुतिनाम्नादि तंग्रन्थाम मधीनवमख्रवीत् ॥ यदिमप्यंदथास्यत्र वक्ष्याम्नि मुमाममत २॥ यापानिद श्रमल्लानि दुःखानां ठव वा
चिर्णो ॥ पूज्यानि त्वार्यमत्यार्यमार्गयानम्ति तादय ३॥ पापनत्र गतीजा तो दुःखान्यव सर्वाप्नुत ॥ पूज्यत्नमज तोजात ३ सुखान्यवमवाप्नुत ॥ एवंविद्वयमयाल विन
स्यदमयापत ३॥ दुःखं दत्तुं सुखं प्राप्तुं त्वनितयं गुरुमया ॥ एवंवमूतयः सर्वनिर्वतिसुखलप्सय ॥ विवमयदमयापरम ३ विन्वनितपमाप्नुयं ॥ पूज्य स्मानो विगु
जाज्ञा ३ मज्ञमम न्यवादिनि ३॥ त्रिविधंवाधि मामाच्य निर्वृति भोक्ष्य मामुपू ३॥ यापान्मानाः ३ विगुज्ञाजा मिथ्यायनप्रवादिन ३॥ स्तुमक्ष दुःखसंगयानन कयूयकति
त ॥ यदि माहित माः ३ कृतादस्यत्वा गतिः ३ मया ॥ नवकपिगतादु स्तेष्ठ तत्रज्ञा विशा ॥ यः ३ दकाथधितात्व श्राः ३ कयत्ना क्षविरात्तिता ३॥ तंवान्ति तमख्याप्रता मन्त्र
पूर्वीयताजिनैः ३॥ मिथ्याकामनमायवतनुष्यपूतिदर्शिका ३॥ पत्यग्रमात्मलीनीकृ कम्प्रतिदनिताजि का ३॥ मृषाविता धिरत्नुयवमद्भुमाद्वगिता ३ भव ३॥ तर्षा जि
कानिकृष्याप्ति ३ स्वप्न तायमर्किं कर्नेः ३॥ पान्नुष्यगीकृवावाय गतीकृद्दः ३ स्वकायिता ३॥ पनत्रद्र विगतताम्रं पीत्वात्र मतिनानकः ॥ येगु न्यताधिरत्नाथ वनत्राप स्मानना

जा ध्यतमनुष्याप्तनं ॥ यस्मपुत्रान पुत्रीश्च विधिमदेवया गतः ॥ तत्र विषय कान्यः प्रजाधर्मेण पालयत् ॥ न्यायभव द्विषमीत्याभ कृमाद्य विनुं प्रजाः ॥ तद्व वहिर्मदनी यं धर्मका सद्‌
तार्थिन् ॥ समामनं प्रतिष्ठाप्य कर्णेशानपति प्रजः ॥ ऋषिनाम्न समादिष्टं गृ त्वाग मत्रिः साजना ॥ तत्र विप्रर्षि विहं यांर्गनयम स्वधीनयत् ॥ ततः स्नुनयज्ञं त्मह स्तीव्र ना
मा षिनायितः ॥ त्रिनत्व स्नन गं दृष्ट्वा दत्तं स्नकादिवंयथो ॥ ततस्त मत्रिणः सर्वं मन्त्रीनं यथाविधि ॥ संस्कृत्य वद्विना तीर्थे स्नात्वा सार्क यनाययत् ॥ ततस्त मत्रि सामा
त्याः सैन्याधिया महाजनाः ॥ कृत्वाभिसंगं सर्वेतभाम न्त्रेवमब्रुवन् ॥ राजा सामन्तं समतमा स्नः कृत्वा स्नत्त्रार्थे नीतिवान् ॥ कृपयात्र प्रजाः पालनं राजा हविनुं मर्दति ॥ ऋषिसंप्रा
र्थितं सर्वे दृष्ट्वा स कनूनां सकः ॥ सर्वान्स्तामन्त्रिणः पश्चन्नमाम न्त्रेवमब्रवीत् ॥ यदि भवामनं दृष्ट्वा व निघ्नथ मदागुरु ॥ तथापादं प्रजाः पालनं राजा हविनुं मूसदं ॥ ऋ
षिनत समादिष्टं गृ त्वा गमत्रिरः सामूदा ॥ सर्वविधिं व्यगंधीनंनयामतन्यवभयत् ॥ ततः स्नत्यपितृक्रत्वा मंत्रिणः सपूवाधिराः ॥ धर्माकिन ऋषिरव्याम ॥ ना
त्वाका नियथार्थितः ॥ ततास्तु यामतन मासीनाय धर्माकिन स्मत्पतिः ॥ सर्वान्त्राका च्चिनीयाग्र खवरा मसमथाऊयत् ॥ तथा सर्वपितलाका स्न त्यानुमामनानताः ॥ सूदाम्नं शिन १८१

साद्भिन्वाम्संवचिय गुरुसमा ॥ तदापृच्छाप्रकृत्य तत्प्रसृत्वा सदीतना ॥ क्षिप्रुयानध्यमिष्यन्वा तितृष्णामाविरथातिका ॥ सर्वलोकाधिपाश्चापिसप्रसन्ना १ सद्दृष्टिभि ३॥ दृष्ट्वाहिनम
तड्राद्वं श्रीमन्ध्यालयंयधु ३॥ तदासर्वपिनागाश्चनि ४ श्राश्चप्रनमंयय ३॥ तदाधर्मसक्षासांस्त्रावर्लनसमन्नाकाम ३॥ कश्चित्तइकृ नानाषीवंष्ठकाषिङ्नानयय ३॥ सर्वसत्वादयाग
मानायाकावाभेत्रमानसा ३॥ एकाषिद्भिन्नकानाषी कृ नवफ्तालइर्मना ३॥ सर्वसत्वामतालानाध उत्र स्त्रविद्दानिया ३॥ मृदकायानल आपिकृपध्यायिनकथन ॥ सर्वापिसंप्र
दायाना धर्मार्थयुपसमेतन ३॥ मिथ्याकामनमानकाङ्गवाचावानकथन ॥ सर्वगुद्वसमावाना धर्मार्थकामसाधिन ३॥ एकापिनमृषावाद्दी विश्वासमधर्मघातक ३॥ सर्वापिसमुसंस्थाथ
र्मार्थसमुयादिन ३॥ पैशुन्याहिनताइष्ट ६ कालिककर्षिष्ट कथन ॥ सर्वापिधार्थवाविज्ञानिर्मलतना १ सवाग्मिन ३॥ नापिठिन्नप्रलापी च मानर्ष्याद्दष्टमानस ३॥ सर्वप्रदाक्षेवा १ सिष्ठार
सूर्यधर्मार्थसाधका ३॥ कुनयान्नूष्यवाङ्गापिनकंचि मदगर्वित ४॥ सर्वापिसद्दयकाम्या १ प्रियधर्मार्थवाग्मिन ३॥ सूक्तिस्याकालधासापिलिङ्गकापिनकथन ॥ सर्वापिनिस्पृह
ङ्गा १ स्वपरस्ममताविन ॥ व्यापाद्दृनिमासापिनकश्चिद्दुर्मना १ कुधी ३॥ सर्वसत्वहितासात्मसद्धर्मप्रुपसाधका ३॥ मिथ्याहृहृष्टिकाश्चापिदुर्गनयनकथन ॥ सर्वसद्दृष्टिसद्धर्म

म४ =प्रा२

जा वायू४ मरा स्स ध्यावीन गति४ मुश्नी जल४॥ दिस४ प्रभ दिन सर्व[illegible]रा मायनुलामका ४॥ सर्वभव लस्मा मत्र गुरु सर्वे सिम मना मव॥ सर्वत्रलम्बुजनेकी र्त्ति वाद४ समावचन नु॥
सर्वलोकास्ता गाम्य धर्मानूषा मना नव४॥ त्रियत्न तत्ज नं कृत्वा पुवन४ सर्व दातु ए॥ एवंध पनिूलावनध मीका स४ संधर्म त्राह॥ दर्श विर्ष मस्त्रादि जीव लोकान पालय
तु॥ एवं सर्व पिलोका र्भ्मीनारव्य ४ पनमायू ष४॥ निनू स्यात मक्षा तसात्युलानूवानि४ध्यान मनू॥ नग४ कालमया प्रातो धर्मिकनाधिये वविता॥ ति नत्त स्मन र्द
कृत्वा सम्यक्त्वा कार्य दिवं यथो॥ तत्र दयाधिपे४ सर्वे४ मत्य मान प्रशंसित४॥ सर्वं सज्जनान्यवकृत्वायामालयं ययौ॥ तत्र या माधिया तु त्वा सर्वान्या मा त्र बाध यन् १८८
॥ वाधिमार्गी निमुखवं तक्षो गुरु समावचन नू॥ कृत्स्न भी भगवान् पूर्वबाधिवर्यो व्रतं वचनन॥ सर्वसत्व हितार्थीनि कृत्वा वचन स्मदा गुरु॥ यो शीध मीकवाना जाग
नूकि पाधिया४ लवत्॥ अयमेव मुनीन्द्रा दिने वान्य वृद्धि भिनन्यत॥ एवं पूर्व भगवान् पूर्व सर्वसत्वं हितार्थिन४॥ बाधि सत्वा मसामस्त्वोइ रूपेत्र ग मावचन ॥ तं नाम्नि
मृगत वृत्तं माक्षि सिद्धि जगत्स्वता॥ शुद्धयाशनवसंकृत्वा सम विनयं मदा सर्व॥ यस्मिं भवसंग त्वा तजं नि शुद्धया मदा॥ उर्गिनिं भनमकृति यानवमकृतिंमदा॥ मजनीभ

सुदासोस्यां पुरु स्त्रीभिः समर्च्छिकाः ॥ क्रमेण बोधिसंभारं पूरयन् बोधिमाप्नुयात् ॥ इति मे गुरुणादिष्टं श्रुतं मया तथा खलु ॥ त्वयाप्येवं महाराज चरितव्यं जगद्धिते ॥ इति सर्वं तं वचनं
बोधिसंभारं पूरयन् क्रमात् ॥ त्रिविधां बोधिमासाद्य सम्बुद्धपदमाप्नुयात् ॥ इति मेऽर्हतादिष्टं गुरुणा २ श्लोक २ मतय तिः ॥ तथ सुन्मनुभादि त्वाप्राप्तुनन्द त्वयार्पय ॥ तद्वं
दर्यवदानं त्रिगुणगतितक्रमत स्यधर्मास्तन स्य - श्रुत्वा निश्रावयन्ति प्रमुदितमनसा यथवतत्कि प्रसन्ना ॥ सर्वेऽपि बोधिसत्त्वा त्रिगुणधातुरत्नाः २ सत्त्वाः स्वयं चकृता कृत्वा
त्रैलोक्य तदनु निर्वाणं निलयं यान्ति सौगतावलीव ॥ ॥ इति श्रीसद्धर्मरत्नमालायां धर्मकावदानं समाप्तं ॥ ३३ ॥ अथ २ (?) कामक्षियानां सम्प्र स
त्रासयः सुधीः ॥ तमर्दन्तं यथितं त्वा तथाप्येवमनामयम् ॥ यदसोऽनगवानेवं बोधिचर्यां त्रिगंतं वचनं ॥ यथाऽपि लक्षितं द्रव्यं दत्वार्थिभ्यः स मादरात् ॥ पंचकषायितका लबोधिं प्राप्य
जिनो लयवत् ॥ तत्कथं सा कथं हिंसार्यके कलौ पंचकषायिके ॥ वृद्धअस्त्रे पवित्रिक्लिष्टं सम्बुद्धा धर्ममादिशत् ॥ तथा स्यानमपि सद्यस्का बोधिचर्यात्रिगंतं वचनं ॥ बोधयत्नं मंत्री सत्त्वान् कथं वा स्यै
न्ययाऽजयत् ॥ सूयसेव महावृद्धश्च कलौ पंचकषायिते ॥ सर्वबोधिं प्राप्य सत्त्वार्थं सं वृद्धाल त्वाया च ॥ तथाप्यौक्षि समस्तं त्वा बोधिचर्यात्रिगंतं वचनं ॥ स्वास्थानमपि संप्रेक्ष्य सर्वसत्त्वहि

श्री भक्ती क्षमाकरं ॥ एवं श्रावणमासे यत्र व्रतं यदि समाचरेत् ॥ सर्वार्थसिद्धि मासाद्य निर्वृतिं पदमाप्नुयात् ॥ श्रुत्वैवं सुविहाय सर्वाधिनिर्द्विग्नाशया ॥ प्रसन्न हृदानंदं कृत्वा तद्व्रतं ध्रुवा
धिसंवरं ॥ इति पितामहमादिष्टं श्रुत्वा सर्वं कुमारकाः ॥ पुत्राः सजनकं तं वसुमा साक्षेवमन्त्रवन ॥ यदि स्मात्कृमिदं सर्वं जम्बुद्वीपं समर्पयेत् ॥ तदा बोधिव्रतं ध्रुवं त्वाचरम सदा तु
सदा ॥ इति तेनिर्विदितं पुत्रे स पितामह मुदानयि ॥ सनि थाजं यितृवाक्ये पुनरेव अस्विनायत् ॥ मयथ ग सकलोकाज जम्बुद्वीपावितारुपि ॥ प्रसन्न हृजना सा सर्वा
ध यिन्वानि याजिता ॥ बोधिमार्गे विषद्धर्म आर्यानुरुपाषद ॥ प्रियानद्वापि सर्वकाय्य विनाद्यसंनिवेतिता ॥ तत्थेता त्वा समजां धपिसमया धिव्रतं वानरो ॥
नियाज यितृसर्वं तत्राक्षं सकृ सम्मुद ॥ इति निश्चित्य राजाम जम्बुद्वीपं पडंगिकं ॥ कृत्वा गत्य स्वपुत्रस्य स्याधिसमसमार्पयेत् ॥ तत स मन्त्रपौत्र स्वस्मासर्वा
न्यायि यहन ॥ सर्वेषु जना सनगत्वा प्रव्रज्याव्रतमपक्षीत् ॥ ततः प्रव्रजिता सार्द्ध स्तनक वीवनाहता ॥ विविक्तिवीयात्रस द्विकनकान्तो सवनवेसत ॥ तता विना स्तसो
नाम्ह घतपिनि पनपर्व ॥ विनुजा विपरकृत्वा महास्यानं प्रव्रज्ञित ॥ ततः कृषिषधनत्र जम्बुद्वीपपिसर्वतः ॥ इर्द्धिक महत्स्यानं प्राप्तवत् तसमन्त ॥ तदा सर्वपि सा काश्यं कृ १९२

गा २

हिंक्षा त्रिविद्या गिना ॥ कुरु स्थियामामिस्नं नफास्नमूपं थ्यमन्यपित्रास्तवन ॥ ननक्षपथ लक्ष्मना हृ नायिकापिमात्र्या ॥ क्रं माछिनपिता स्मानीमस्थर्षकासिमूर्छिना ॥ प्रलप

नीविनू क्षांमापनिहाप्यपनष्यनं ॥ उपवानविधानानिप्रमिक्तिं व्यासुनिन्दयन ॥ एवंमर्व पिमस्वाथ निरूपायनूक्षाकृना ॥ निवाशाविषमाहानाहकृप्रनाक्षवाहवन ॥ नथ

वमिंहनामादिपक्षवाक्षनवावन ॥ कुरु स्थियामामिस्नंनफावहवामनर्सयमू ॥ पक्षिरनापिनथमर्वपथ्यास्नानविद्यागिना ॥ कुरु स्थियामामिस्नंनफावहवामक्षमायमू

॥ नर्दवंमहरू स्यानंइ हिंक्नागिमंक्ल ॥ प्रहृकंमयगिर्द्धामत्रवंमममखिनायक ॥ क्षहायायप्रवानास्थरुर्विक्षमत्रवर्कनं ॥ मल्लिफावंदवानक्षः घक्षिथहपमवापिव

॥ नउन्नकिंकनिष्यामियरू पार्थनंशाम्यन ॥ मिश्वं इः खमपंपत्यंनकें थंनिष्कयनीवक ॥ नस्वास्नापिपनिपस्नाइ र्किक्षत्रप्रवर्कीन ॥ मत्वाः मर्वक्षक्षाक्षानाः

पालनीयाक्षमया ॥ किंमयाननदस्ननंगुपक्ष विनाभिना ॥ स्वधर्ममवमर्वघांजनानांमनवंहव ॥ स्वधर्मं विना निनाननकार्यनपूनिंकाविना ॥ माधनी

यः प्रयत्नेनमद्धर्मएवमर्वथा ॥ वनमवात्रमंस्याम ः स्वास्मापिधर्मसाधन ॥ त्रुकानामपिमर्वघांमखनक्षावगंवनं ॥ मत्वार्थमाधनंदहं व्यंवीर्यं क्वनवलं ॥ ॥

= व ३ = कं ३

आ

यिम महासत्व २ सद्धर्मप्रा धनात्मन॥ सर्वाधिप्रचर्यिषि त्वाम लोकाधिवर्णवन्त॥ एवंस महासत्वो लोकप्रवर्तकदायिक॥ दिवसेषु त्वाम सीलाकप्रालोकाधिपानवर्नु॥ स

र्वेषु त्वा श्रुयतनवोधयित्वा विमोचयन्तु॥ यथा हि लघिमंद्रयंदत्वा धर्मप्रयाजयन॥ तथा त्वानमयिष्य स्का सर्वसत्वहितार्थतः॥ वज्रकल्पसत्वमा तिमं प्रान संसनम्सदा॥ स

र्वेषु सम्बुधादिष्वेषु त्वा धर्मप्रयंजगत॥ बोधिचर्यप्रवर्तं त्वाप्रवर्वानजगद्विता॥ जगत्पुन्यानुपालनबोधिसत्व २ समवीजित॥ गुणा त्वाबोधिसंचोर्वं सं पूनय न्यथो कर्म॥ निषु

स्त्वा निर्जयन्माना न्वाधिप्राप्यजिनोभवत॥ अयमवजगत्का स्मा तगवांश्री यन २ किल॥ यातडाजा महासत्वोर्धनात्वा हितायनः २॥ एषु पिन गवानाह त्वयमवंस जा

नर्त॥ एवं पिमश्रनुभत्वा र्तं गंम यान त्वा यम॥ त्वयाप्यवं महानाजवाधयित्वाप्रयन्ते २॥ सर्वपिमप्रज्ञा लोकायाजनीयाम्भावन॥ यथा मोहगवा क्लेश स्म स्कास्ता

नमपिस्वयं॥ सर्वसत्वहितार्थेन त्वा धिम समाधयत॥ तथा सर्व एवम सत्वा स्मस्य शोभा त्रजीक्रुन २॥ नामनेन नं शक्त्वा ककृ मर्दनि सर्वदा॥ यतस्य सर्वगत्वा सजनि

त्रयासदा॥ इति निर्मलगच्छनि यानि मज्ञे जिमवन॥ एतिविस्रयमाज्ञ त्वं बोधिसर्वदा तथा॥ सम्बुद्ध मनसंक्तोठनसंबोधिमानम २॥ प्रज्ञापि न थ समंबोस्त्री १२७

को ऽस्मि पिप्रवाधवन् ॥ संवृद्ध ॥ न ॥ यत्कोप्यप्रवाक्यमदाशुद्ध ॥ तथागतसङ्घ लानिष्ठं सर्वत्रापि तवञ्कुर्वं ॥ क्रमेण बोधिसत्त्वानां पूर्य्यबुद्धत्वमाप्नुया ॥ इति श्रीमन्नार्द्ध माधिदिक्षं त्वादात्मा क्रमेण मल

यति ॥ तत्पूर्णगिष्ठागिविक्ष्य प्राप्यनन्द समयार्थद ॥ यत्रापीदं प्रमत्तामसन्देवनिपतई धनञ्चावदानं ॥ एवमनित्रावयनित्रमुदितमनमायवकक्षि प्रयुक्त ॥ तसर्वं बोधिसत्त्वा ॥ सं

कलधुरकवा ॥ सर्वसमन्तमदज्ञाशुद्धोपोर्ष्वमप्रदानामुनिवने निलर्थया निष्ठं बाधिकामा ॥ ॥ इति श्रीमत्क्षेमेन्द्रकमालायां बोधिसत्त्वावदानकल्पलतायां नामावदानं

समाप्तं ॥ ३६ ॥ सूर्यस्तात्की मदीपाल ॥ कृतागरलिपुण्यमूढा ॥ उपगुप्तं तमर्हन्तं न त्वावेवमस्त्वाक्षन ॥ तद नयमुनीन्द्र प्रपुनाऽत्मावदानकं ॥ श्रान्तमिका मयहंत्वाप्त स्व

समादस्य मर्दगि ॥ स्मृतिर्मया थिविनाह्मा दृष्ट्वा पार्ह समहासमित ॥ उपगुप्तानवर्द्धगं समाप्तन्त्रेवमादितन ॥ साधुनाऽस्महासागपुनलनस्यक्त गजुर्वा ॥ सुवदानं प्रवक्ष्यामि तत्कृ ॥ सुमसा

हिम ॥ तत्र धर्मीलाकधानु प्रपश्चस्कासानानपूत ॥ यस्त्रविधर्थागिता नामसर्वकथाधिमातव ॥ तदा सर्वधिसत्त्वाथइनावाना कथाधिका ॥ सूसहर्मानुवागान्या प्रादनन्ताशुर

सदा ॥ वनसायाविधाकनट्रुर्थिक्रमलवस्तून ॥ मसास्याणानिद्रस्माह प्रादर्ली तसमनकाल ॥ तदा लोकाद्रनावानादनाकृतलवाविद्रा ॥ कृत्स्निपामामस्माद्रस्वावठवुई स्वरागिन ॥ तदार्को

अवदान्ति ४८ काम-
सया येधु बाह्यंसंभि
अभि वाया मिथ्या

२ भजर मेरु ७ प्र

आ

सामिह हृप्र॥ ९ मादिर्वं तनमन्द्र मक्र त्वाम मन्त्रिः ऽमाफना॥ नपषिंगं मप्रमालाक्ष्ण पूतनवं स्यवदयनु॥ दवप्रमत्त विक्रादिकथिंकलं ददाति न॥ नक्रुथं तवमामाय दानं नियं कविद्यति॥ क
नं विनाकथं नाहू॥ तामधंदु बोद्व मातवत॥ दानधर्माधि कंकर्मकनदूषीन्नूपा विहि॥ २२ तिंगं निवदिग॥ मर्व वक्रुवर्कं मित पनि॥ ३ मंनाम्रानमाम्रो थप्रविना॥ वमादिनत॥ अनयूयं
नत्रानीथ तवकर्म विपाकतां॥ यद्या विनतक्षाविलांवियक्र दवक्रुवं॥ अवन्धनाविनाकाबा कवानि मञतिम्बपि॥ नदत्र किंयनद्रव्य मादाय काघमाधनं॥ दत्वातु क्षापिकिंमान
क्षि पृयाम क्ष वादपि॥ कृत्वकं यः पनद्र बंगम्रान्निवाप्रयन्वलाक॥ मदविद्राकुधीर्द वाङ्गेनाव वविद्रभव॥ ९ निमत्वापनद्रव्यं त्रक्रवं विघवमदा॥ कृदतंनकृदीनथ्यं मंतानत २००
त्वर्वाक्षि किं॥ पनद्रुवी नक्रिं धर्मक्र स्वापिमत कलं नहि॥ मत्रधर्मो किं मद्रुवंदत्वे त मत कलं लमत॥ ९ निमत्वामलाम वीवाधिमत्वीक्रगक्षित॥ मां मावनम्रपिदत्वे वंदनानिवापि
ममवनं॥ किंमनपनवमक्र निग्नीत्वेवं वनादपि॥ कनत्तद्रव्यमंपक्रि मंयूर्ण काघमाधने॥ मक्रिनाआपुजाद्वंवत्नायकात यवलात॥ द्र्याविप्रगिनक्षेवपुत्र क्षात्र मनतमत्
॥ मएवदिनयावजा यः प्रयत्वे नवांधयत॥ दत्वा हि वा क्षि मद्रवं या यापि धर्मं नियाऊयत॥ ९ मध्यदयनद्रर्मगहीत्वेवंक पावन॥ तु क्षादस्वात्रनाम्यपि क्षातु नेवममनृमद॥ र

दत्वैषां सकलं तेषु त्रैलोक्याद्वैवनं वसन्॥ सद्धर्मसंवर्णनं ध्यात्वा स्कात्रभवसमुत्सदः॥ एवं ध्यादिश्य ननं ब्रात्मोपुन्नु धर्मपुत्रवनमागत्॥ साधयित्वा समासन्तुप्रपनन्धवसाभिजक॥ ताम्नृपं पुषम
मान्यक्षयविनम्यपापकर्मणः॥ श्रिवन्ककजनं कृत्वा सदा धर्मं प्रतिवेन॥ यद्धर्वं वनसनिर्व्वसमत्य धर्मसमादिशथ॥ सदा गमसर्वं तद्धं सर्वत्रापि सर्वतक्रवं॥ सदत्वा पिप्रदत्वा सिद्धयंयकसम
प्रिविक्तिनं॥ ततदन्वायकाथे मंत्रक्तानमपुरवनत॥ एवं दिशं ननब्रु गत्वा सपुन्नु धर्मसुदा॥ तस्य निप्रगि विहत्य प्राप्यनन्दस्त्र बाधितः॥ ततः समाकुलिर्नत्वा नेपग ध्वन यान्तु
ग॥ तद्धन्द्र यसादायसहसा स्वगृहं ययौ॥ तथ्य सपुन्नुधा निर्वृत्तिं नत्वा समपश्चिमः॥ दत्वायानं यथा कार्यं सत्कृत्वा नेम पुरवनत॥ ततः सनृपपौनाजाक्षी दाध्यानवनं ययौ॥ तत्रप्राप्तो
मृपालाप्रस्वानसमन्तत॥ तत्र वृक्षतला सीनस्य प्रिसकं नमस्विनं॥ दृष्ट्वा तं सनृपानत्वा प्रार्थयदवमादन्वा॥ सर्वं सपुत्रप्रीदात्रयदर्तं रक्षत्रमृ॥ समाश्रित्य समाधाय
नत्वा विप्रसमुत्सह॥ एवं निर्भयप्राप्तिर्वाहा दृष्ट्वा सप्रनिनास्मविद॥ तत्पार्गतं समासन्तुपुर्भावं सर्वसमादिशनु॥ साधुनागत्राक्ष्य तानेन प्रात्रष्टद्वयाक्रम॥ ततप्रब्राक्ष्य सद्धर्मनिपृ
ढ्वा वाक्या स्पर्धं॥ एवं निर्मसमादिशं गत्वा सपनपरिनिर्भृता॥ ततः निधाकुलिनत्वा सत्सासवपुनवनगत्॥ तत्र सनृपपौनाजाक्षपृष्ठीयं सममनगत॥ पञ्च तत्र विक्रामानि कृत्वा सर्वं

भद्रकल्पावदाने
नं ८

जा ॥ यपूनर्जग्मामि मिषंदकी ॥ जयाम्भुतमहाराज समस्त्यक्तसमीक्षितं ॥ सर्वदासज्जनास्मार्तं प्रावर्त्ततसमन्ततः ॥ क्रमेणैवाथिर्मलावंपूनयित्वाजगद्धितं ॥ मित्रामात्यसभासाम्यमसर्वाधिश्री घना
नव ॥ तत्सूनामिषंप्रदस्वामस्त्राम्र रथाविविमिताशयः ॥ तं कृतात्म निमिपिकाङ्क्षयर्थं स्थैवमस्कृत ॥ महागनपनधानकायकिंचिद्यथापित ॥ मनस्यपिविषादस्त्वं किंचिद्दपिनवस्यतं ॥
तदूनिगत्वे यथामानाकमनोमत्राणिविधिर्मितं ॥ नरस्मर्तुंसमभाख्याय वाधयितुं मनार्दमि ॥ कुपितद्रकमाकथर्मधर्माकनधमसमन्ति ॥ व्राम्रधर्मसमालाकसाऊरसिनवमब्रवीत् ॥
यद्यम्व्राम्रशयस्कायध्वथपिनविमायथी ॥ मनस्यपि विषादस्त्वं किंचिद्दपिनमन्यथे ॥ श्रद्धयाप्रदत्वाशयधिममन द्रेप्रमापितां ॥ त्रैवाकृकायमतर्प किंचिद्भ्रापिनवष्य
ता ॥ एतत्स्मृत्वा व सर्वं नय यथापूर्वं गत्वा भेम ॥ कर्तुं गुर्जीवज्ञाप्य तांगुजाजिकावज्ञाप्यतां ॥ तत्सूनुः एवं तस्याज्ञा यथापूर्वं गत्वा पूनः ॥ कृतांजिकाममापन्नः ॥ पवित्रशोध्यनाज
ता ॥ गद्गत्वामित्रिरंतामात्याः सर्वलोकाः समागताः ॥ तत्यानिविस्मयायत्नास्मकृथिताः र्थिनारुव ॥ अथमदवनाशायिगद्गत्वाप्रमितिविस्मिता ॥ अकामस्याणूतावस्वमस्याकृत्स्नात्
स्वभावत ॥ ततः समस्तृ विनयपक्षनृस्कुर्मवीर्यं शंकितः ॥ व्राम्रशनपमृत्स्यस्वनूपरेवमब्रवीत् ॥ कृतांधीनमस्तामसल्वयत्स्रसर्वमृशक्तिमान ॥ किमनतत्प्रधानतत्वेमदस्य १८१
=शा३

दमिकं सि ॥ एतत्स्मृत्वं महावीनमया स्वयं कृत्सर्दशि ॥ ददवाद्यं प्रदास्यामि वांछितं भवनंतु ॥ कुलिनमादि स्नाक गर्भे धर्मा कनमसमन्यागि ॥ माण्डू लिङ्गं समालाक्ष प्रगन्तेवं नय
वदयतु ॥ नासंदवाधिधानन दाननान्यस्मद्दयदं ॥ कुकामिवाधिमवाधितदनामवदतिम ॥ कुलिनिवादितंत्र वादवत्र ॥ स प्रमाधितः ॥ पुंवाधिवदानमक्षकिर्नतागिवावद
तु ॥ कुलिनयादि स्नाक गर्भ धर्माकनायिम्रस्मित ॥ नंदवाधिपतिंपस्वपून नवमता सत ॥ तत्प्रसीदमनन्दा म्भिंकेमसवमत्रुनसदा ॥ धर्मे नयालयन्नाकांथिवंशीवस्मरंतंयत ॥
कुलिनस्मृणादि स्नं त्रु त्वामि भक्त्याद्वान ॥ सभनक्षिनमित्र स्थानशेवं पूनन्त्रवीम ॥ धन्यामित्वं महासत्वय धाधिष्ठान साधन ॥ महाभक्ति महावीर्य महा त्मार्क जगद्धित ॥
तद्यथ प्रपिधानतंत सर्वसंसं स्यत भूत्वं ॥ तथान्वं वाधिसत्वानं पूतयन्तीधिमाप्नुहि ॥ यद्वादंत मनाधीनंद्र स्त भवमृयावत ॥ नदनत्थापतन्वं भक्त्या सर्व सिमन्याग ॥ कुलु भवे
सदवस्त्र स्मादनार्दि शतवदन ॥ कुलदशिनिवाका सप्रतामस्य न्दिवंययो ॥ तत्र स्वर्गसदवस्त्र स धर्मायोस्मिमादितः ॥ सर्वमनस्त्र काननं विसनदांसमाधिमता ॥ ददादि स्नं
समाकर्णे सर्वदेवाः प्रवाधिताः ॥ धन्यकुलिन प्रशंसित्वा संजसर्षः प्रमाधिताः ॥ तत्र सन्वगसंर्ष्कापुष्पवृष्टि समवावन्त ॥ वेवान्वदसं सासाम्भि प्रतिसमभिलाश्वयाः ॥ दवी

आ दवस्वायासमसाकालगतस्थन२॥ चक्रवर्त्तिहरिलक्ष्मलभ्राहणाधिपानयन्॥ नविनधसमामायपितन...पोसनं॥ चक्रवर्त्तीमितायाजाइर्यनाख्यानपालवन॥ ततः२सर्वान्सहीया
लानन्यासस्थानुवाश्वयन्॥ बाधिमाजप्रितिस्थाप्यप्रवान्नयसमपशुरु॥ एवंसमकमाज्ञोकान्वाश्वयिखाप्रयत्नत२॥ निवार्यपापकर्मस्य२सद्धर्मसंन्ययाजयत॥ ततस्सर्वासमावा
नान्मकुलंनिशुपद्रवं॥ मुनिकृत्वक्रमताहतसर्वत्रापिमहास्सवं॥ ततस्तस्यनेपत्रस्यस्वालजानांमहतुर्क॥ अपिविनमयपापस्य२दुश्रलेघ्रमसावनत्॥ ततः२सर्वेपिमधीना
२संसार्नोगनिस्सृहा२॥ बाधिवर्यावनतापिप्रव्रजितुंसमिक्षिन॥ ततस्तस्यमुनीन्द्रस्यगन्धपसस्यवासन॥ श्चविनस्यार्हनाहिजासर्वेगेवनेदंगता॥ वहुन्नतकृत्वासंगं १९१
ह्मणोजरलिपुरान्मना॥ श्चविनर्गयणिंनस्वाप्रार्थयन्त्वनमादवान्॥ तदन्तमेनेसंधामानवर्गनापुनवयं॥ ततव्यान्तपयोमस्य द्रव्रसंदाजमर्दयि॥ लोनिगेप्राथितस
र्वे२श्चविन२सविलायकताने॥ सर्वाप्रव्रजितान्कृत्वासद्धर्मसमयाजयत॥ ततस्तमुन्निता२सर्वनक्रवीवनप्राप्नगा२॥ स्वाविकलीयात्राविलायावतवुर्बसवानिया॥ ततस्तस
र्वलोकानांहितंकृत्वासमाहिता२॥ सर्वत्रमानिता२सर्वेर्वन्दिता२संप्रवविने॥ तयासमर्यदृमानां२यत्नाहस्तस्यालजाश्रपि॥ धर्ममार्गप्रवनतापिप्रव्रजितुंतनस्थि
१८

य॥ नग क्वाळ्ड नकाबाजाप्रव्र ध्यान हिर्याष्ठिन ३॥ म स्वाघट स्वास्मजा स्सर्वी स्समाम न्तुव मादि मगत॥ कायू स्मा क मति प्राप्याय स्तूयं वा धि निहत स ३॥ मस्तूष्ठ जा मत वा पि प्रव्र जितं न
वाळूण॥ नहद धंकू मावाम पूनायहाति लाहना॥ सुमान जी विमर्द्धैर्य नेवति क्विनेपथत॥ स्नूवध मवसर्व भाग्राप्ति नामनवैलव॥ स्नूति मसात्रवृष्मा हि यांविम यंसूमनवनं॥ क्
ति पिज्ञा समादिष्टु सर्व पितद्भूसानका॥ पिंतवनं मेमालाक्षपूनेवं स्यवदयत॥ नागवयंनमं वाधिव्रत मिक्वा मदृवव॥ प्रव्रजितं मयीक्रनाविघतनङिनाश्रमे॥ यत्मस्तू
द्गतिर्द्वृ नकाल सद्धर्म प्रणिनूयक॥ प्रव्रजित मसाधयव्वेविर्तुनमस भक्ष्याम॥ नीलज्ञ स्याइनावान मफधनदानि डिम ३॥ कुणाफूलाविद्य कस्लास क्रंतं माव पंकिज॥ केप
विहृत्वमप्राके प्रमफा विहृन्व स्वन ३॥ विज्रुष्टपापमार्गे पृ कुणा स्याविज्ञमेतत्पा॥ वृष्प क्तिकां ममादीयपुवर्द्धिं तंनभक्षूयात्॥ कृत्यर्थ नाहि वांकाम प्रव्रजित मिहाधूना
॥ स्तूमिलेनिर्विदिवा मर्वर्जित कश्मनं पाधिप ३॥ तस्य का स्वास्मजा स्सर्वी स्समाला धं वमादितात॥ कूसो नायधिया वांक्ता प्रव्र ज्याइन वावरंध॥ वाधिवर्य वृगं भूत्वा मंवनध्व मि
हाधूना॥ एनत्पूर्ध्व विपाकनक्रमं ३॥ विमलाभया ३॥ गुज्ञास्मानां पुर्विक्रिस्तां पनिगुडत्रिकायिका ३॥ जिनप्रिया ममावा माङि स्वामानगन्धनपि॥ स्वप्रेष्व मसर्व धर्तेयूयं

आ

मृत्कालयमान्संतु स्फाशुरत्वनन् ॥ कश्चित्सीत्वाव गड्रकै मृत्तुत्पा२ग्रीतिम ङ्क्रिया ४॥ सुक्रावेनं मृद्वन्द्विज्ञुप्री तिसंज्ञा विनाकवन् ॥ कश्चिद्धर्मा हि क्षि विद्धनं त्राम्पपि वक कवन ॥ क्रिका

४कं विद्वनामाथ कविन्क श्रीथकवन ॥ कश्चित्वोस्तां द्रनूंवा पिक विद्धदश्न ानपि ॥ कश्चिद्धान्यक पालांव केवित्तज्ञा वर्षाप्नृपि ॥ कश्चिद्देकी निवर्मा पिक विज्ञाती श्वमस्ति

कं ॥ कश्चिद्धान्नाति गुल्मांथ कवित्त्राम्पूर्णत्वानपि ॥ कश्चिदामालिकर्षांथ कविद्ध स्कान्यदानपि ॥ कश्चिन्मृत्तुंपूजीपंच मालाज्ञपि वक कवनै ॥ तथा सर्वा निवाञ्जानि सर्वाव

यवान्यपि ॥ संनिक्षलुप्तिर्म्स्क्रमत्वाकार्याद्विनमृदा ॥ यथा कामं मृत्वंतु स्फाप्रवनू२ मस्तृधगथा ॥ एतद्धर्मानुत्तवनमदा सर्वत्र मंगलं ॥ सुश्रिर्जवमक्षात्साईक्रमात्संपर्य १८३

वर्जित ॥ तदा सर्वापि तत्सर्वयनिपूरुत्पा२गुर्जङ्क्रिया ४॥ श्रिनत्वनरजनंक्रत्वाप्रवनू२ ममवनंमदा ॥ तथा नस्यमृनोत् य२ मर्वान्यवयवान्यपि ॥ प्रात्तुर्त्वाप्रदूडांभिनेव किंकित्

कुर्यंयमृ४॥ पिजनवंमस्तादानंद् श्वागमम्नूताश्चपि ॥ श्चिनत्यपायमाल्यवकुर्वस्म विलापिता २४ संवांश्चित्तु लिखानन वांश्चिवर्याणि माय्वना २॥ त्रिमन्नरंजनंक्रत्वा संवनिनम

गश्चित ॥ तत२ सर्वं पिनयीता २ समृत्कुगुत्ताकालसा २॥ याश्चिमत्वामसाम त्वाकद्रीमस्तु मात्रया ४॥ सर्वमत्त्व हितंक्रत्वा संवर्णने समवनै ॥ नि२ क्रमांविमलांसानावकत्व

२२

॥ गंगानदीवालिकासमाप्ति नेत्राणि चतुःसमुडीदक्रप्रमाणं रुधिरा समेरु सं हृदंप्रमाणां मांसा: चक्रवाडप्रमाणा जिह्वा उगन्धर शैलप्रमाणां करणाः विशलासुमेरु

प्रमाणा नासा: गृद्ध्रकूट पर्वतसमाना दन्ते तिक्ष्णा प्रतीके ३॥

शुभाशा नाम्ना: शृङ्गकूट पर्वत समासादन्ते निकटता पुराते २॥

सुगता तथा ॥ एवं मयापि महासत्त्वाद स्वा स्वा समं तं नृ तथा ॥ दशवर्षं सप्तमाविनको बोधि प्रसन्न धी २॥ नापि मया मन स किंचि हि पुनि सा नव ध्दिर्नं ॥ सूनु सदेव मं बोधि प्रणिधानत
मा हि र्नं ॥ एवं सार्द्ध महा हि ह बोधि मस्वा अभवि न ॥ महा स्थान ब्रह्म ण स्वा पुनर्नवं यधि कायत ॥ सुहा मये कदस्त्न सर्वं सत्वा ॥ प्रणर्षि ना ॥ सद्धर्मं पिनियु का थ सद्ध मा मि प्रवा निना ॥ ए
न स्व र्षं विपाक नत्त्याधि म पुनर्भवं ॥ एवं स्वा त्य पवि प्यार्ग कृत्वा कृ यो अग कृ नं ॥ एवं सर्वत्र लोक सुतथा स्वा न मयि पि एजन ॥ सर्व सत्व हिताधानं कार्यं कुर्यां सुदा नव ॥ स्वत्ता अयदि
मा स्थिर स्ता स्वा धिं प्रा पुन सस्त ॥ सू स्थेवं म स्य नं नैव म स्वा धिम पि ना सत्त ॥ विनो म सत्व हितार्थी निप्रा र्ध ज स्मा पि ना सत्त ॥ सत्व हितार्थे भवात्र समंतानअ समाधनं ॥ सत्व हिता र्थ मंस्य
सं न न क्र व स मू सत्त ॥ किं न न अन्मना म र्ष धन धर्मान मा श्वगं ॥ कार्वं लस्य स्व ताना र्य य न्द्र व पाप का र तं ॥ अवश्यं भवत र्ग स्यं न व कायं स जी वि नं ॥ सुर्ति मत्त्व हितार्थे त्र सु जा मी दं
जग द्विनं ॥ एवं सर्वत्र लोक सु काय न स र्व ज न्म म ॥ सत्वा स्र्षु ना घ य स्व र्भ या ज य र्म स दा न व ॥ शुनि मय यदि मत्वं स्या त्र वि क्षनं कृ तं य था ॥ न थावय दि मित्र ध न स स्वा र्धिं प्रा पुन सत्त ॥
शुनि कर्म विपाकं भद्र स्व सर्व मु नी श्व ना २॥ कृ पया स हं मा लो ख पुनी दत्त सदा नवं ॥ कृ त्व वं स महा स त्वे ह प्र ति धाय अ गा द्धि नं ॥ प्रि न त्व स स न र्ग स्वा द र्हत्र ख्या दिर्व य थी ॥ त त्र

ना याय॥ सर्वमन्त्रसिद्धिकारिणे ॥ धर्मं तत्त्वस्य तन्नाथं त्रीश्वपिमङ्क्षिमानवम्॥ कायवृद्धिर्भवकृत्यत्रनीमिमद्वीर्न्दप॥ एवं यथपूर्व घात्रुरावरः ष्यनेवविमुच्यते॥ इत्युक्त्वा शिष्याय धर्मं एव नवाधिप।
एतस्मिन्नृपशुद्दृष्ट्वा कर्मणे वार्द्दगतवान्॥ मदन्यत्र महानागकर्मनीयामनाथता॥ एवमासुगत्वे सर्वनिवद्धिमसमक्षमि॥ चक्रवर्तीसमाना स्थानानवंमभूयादिशत॥ एवमवंसमा
ख्यातं नीतिशिक्षाविवक्षते॥ तथ्य अथ्यर्थिं नत्युद्दृष्ट्वा कुमसर्थसर्वथा॥ कर्मादिपनमाधर्मा धर्म एव तत्वप्रभु॥ प्राप्ताद्दिनार्थ्य द्वश्च॥ मद्दन्मित्रं मतानुग॥ तद्धर्मार्थमयं स्नातकश्रीयाम
याश्रुता॥ इत्युक्त्वा वापकाशीस्यांकमाकामापकानिधि॥ इत्यन्यपना धर्मं विनाकमानजायत॥ इत्युक्त्वा मापकानन्तं प्रतीक्षायपेक्ष मा॥ तदुल्लिकाकमान्नाकथवकाकापिनाविषं॥ तस्माद्धि १५२
पूर्वमह्नमित्रं तावनीय॥ मदादनीत॥ यावकाः मलकान्ना कइल्लताम्रूपकानिता॥ विनायकानिर्णीतां कसंगम्यं कमाश्रुत॥ विनाकमां नमस्त्रीर्द्धि॥ मदुर्मातनपिवर्द्धनं॥ तद्धर्मं स्यात्रु
तावनक्षिस्वामान्वगतानपि॥ निःक्रोधोई स्वमासाश्रमस्वृद्ध पदमाप्नुयाम्॥ एतन्निदानीनविईक्षा घातुव्यानकथं वन॥ कमाद्गुर्यमाइद्दृष्ट्वा कमाधर्मार्थमाश्रुती॥ किंयता
मान्यथर्यद्दिद्युक्तानाकगत्वापमान॥ माविमक्रोधविकपिमाविता॥ सर्वदुर्जना॥ दानंक्षेत्रविभं सर्वस्त्रीर्द्धिड व्यमकुर्ण॥ क्रोधे प्रकाशिदस्वप्न तस्मान्त्रीरःश्वामद्धिपु॥

=१३

क्रोधमकं तमादृ क्लिकमयनकृर्नकथन ॥ सक्रोधिक्लिष्टनु घद्रवयमंपक्तयापिवर्द्धिता ॥ किमन्यस्तस्त्रवमस्याक्लि ॥ संबाधिनाधिमस्त्यन ॥ तस्मात्क्रोधो निहन्तव्यो वनऊशीयाविना स्ववकृ ॥ किंवकुर्या

द्धिपूर्द्धस्य ॥ ऊसाकवविनाशय ॥ क्रोधस्सर्वार्थधर्मादीन्दग्धा धिननकक्रिपत् ॥ तस्मात्क्रोधं निहन्त्यात्दस्तीय ॥ प्रयत्नतः ॥ अक्रूर्नविनिष्क्रमय ॥ पामनीयानृघार्थिनि ॥ क्रोधेनऊप्रिया

॥ सर्वघनस्पनविनाधिताः ॥ दत्वा धनस्यनंयूद्ध मकायान्नियमालयं ॥ तस्मादवायूनाश्रधिपनस्यनाविनाखिता ॥ यदापिविप्रनं हत्वाद्धर्वनस्यत्यागमालवं ॥ कोपक्रिक्रोधीसुखीतृत ॥

सक्रोधिक्लिष्टनुधात्रय ॥ स्वघनस्वऊनेमित्रै ॥ क्रोधी ॥ दुस्सहयादिवक ॥ अमित्वात्मनिहन्नानंक्रोधंदत्वाप्रयत्नतः ॥ स्वयनाशमक्लितार्थनक्तमात्रतांसधीश्वनत ॥ ऊमीसद्धर्मनत्वानिवक्रव

क्लिमुत्वान्यपि ॥ प्राप्यसर्वत्रसत्वानां तद्धक्रुत्वासुखंवनत ॥ ऊमीनहुर्गर्मियायायुद्ध ऊदृद्वालयंसता ॥ मक्लमात्रतमोधय्यवनदूस्वपदापय ॥ यस्याहं प्रद्वयात्वक्लाप्रिनत्वंमनयंगतः ॥ संबा

धिप्रधिधिंद्दत्वाबाधिवर्यात्रिमंवन ॥ तदनपूर्वृषयंपक्ष्यनक्रुत्वापक्रोकथंवन ॥ मतमात्रविमूर्ध्येवंथजयथंसुमन्वन ॥ अद्धुक्रमसमतामस्त्वथक्रवकीनिपाधिप ॥ सर्वान्सत्वानप्रि ॥

मात्वान्मूननवमूयाद्भिमत ॥ मूक्शिनवधनाद्यनमूल्यऊनवलिवमा ॥ मात्रक्रोतवत्वादवंधनधन्यंवकत्यविता ॥ अमंवपूनृषंस्वात्ससमानयनभपेनः ॥ बाधयित्वाप्रयत्नतयाऊमि

१५५१ — क्रो ५ — क्रोधप्रतीत १

आ याप्रमाल्लयं॥यभ्राधिगत्तृगंकर्मसमालाक्वचिद्वानयत॥एवमपकर्मतास्यानिपर्यिठंयथाविधि॥यत्रकानामसुकर्माणिमंप्रमथस्समद्गतो॥यस्थेवयापकर्माणिमंप्रमथत्तुरुगतो॥
यश्चापिमित्रकर्माणिप्रमथंकृतंगस्थाकयो॥धर्मिष्ठःसंगतोजातःसदाधर्मपूर्मनगः॥सद्गुणमस्वतान्यानितंजातःसंमवनद्रव॥पापिष्टादुर्गतोजातःसदापापपूर्मनगः॥मंक्लिष्ट
दुःखतांस्यानितंजातःसंजुमेद्रव॥मित्रकर्माणमजातउत्तयामिश्रितान्यपि॥कर्मतोप्यानितंजातःसर्वदासंमवनद्रव॥तुतिमस्वात्रसंमातकर्तव्याधर्मएववदि॥धर्मविनात्र
मानुष्यकृत्यापिनिष्फलंभव॥यांजन्मामायमानुष्यसद्धर्मोविधिनाजिन॥मयस्थोतुसंपन्नकूलपिजन्मकिंभव॥मानुष्यदुर्लभंजन्ममजापिदुर्लभंजन॥मानुष्याप्यकृत्य १८३
धर्मंकृत्यत्वकथंकदाकृत॥जंत्वापिवदनस्येस्तृत्स्तजयमात्रजीवितं॥कयाकिजीविगमहत्वाविक्रमसेघकजिस्वपि॥धर्मार्थंभवसंसाविधिवंजीवितमृत्सस्कृत॥विंगन्नजीविग
नापियनवर्मानमाध्यगं॥वनभवाग्रीतस्मात्नीमिथ्याविनजीविगं॥यमाधमीनविधतयत्रापिमनसंकृवं॥ ॥ मदवंपूवकोमस्संपथ्यस्सर्वज्ञसंमखं॥स्वात्सानमपिध
मीर्थयत्रमिक्ष्वपिनरधूना॥यत्ववदकाप्ययंकायानस्थवधर्मसाधन॥स्वदकापिवनस्थनयर्थजीरक्षिसुरगात्रियः॥तुमिविद्यायमधाधिगुणमम्यलिमानमः॥स

जिनामपिक२ र्षेव दत्तु मस्त्रीममृत्सस्॥ यद्गमा र्तुर्मांजिजांकर२र्षेबज्ञ धर्तमुवो॥ दत्तावज्ञमथी जिर्द्धांवजक२र्षेममायूयां॥ नदत्रापिनव नांभम स्वाधिष्ठान माधन॥ मंप्रदानत्र
गविष्ट्रंकर्डंनाई निमर्वथा॥ मतृमाथेवतिस्ठन्तुमृप्रमन्वाश्रयामृदा॥ नत्वैगदानधर्मीमंमर्वयिममवाप्नुयु१॥ जनत्यश्वनृणावनमर्वजाम्यु१गुणानिव१॥ क्रमधा यिद्धिमवा
धिंप्राप्यवृष्ट्वमामुग्यथ॥ स्वृणिनममादिदिवंप्रु त्वामर्वयिमन्त्रिमद॥ मृमाप्नुत्राम्नमा धापिकिष्किर्क्रु नत्वोकिर्म॥ गतदंप्रमुखाएवताद्धिना भांजिझकिणार॥ मृरवाममुखाम
पत्वनग१ गद्धुर्मवेमन्त्रजिना१॥ मृथम्नयनाउँ द्रा धर्मकिन२प्रमन्नथी१॥ वाञ्छनंगंममामन्तुपूनर्वममादिशत॥ तत्राणव पृष्ठीदत्तु भिक्षात्तु गममीदिनं॥ प्रव्रयानप्रदास्यामि
नतत्र मांदातुमर्हसि॥ स्वृस्त्र क्रामममहाम त्वांधर्मांकन२प्रमादिन१॥ मांत्रप्ति१ मामवान्वृषोन्यर्वान्द्र स्वैवमब्रवीत्॥ तगवेनांजिना१ मर्वमर्वलोकाधिपानपि॥ मुम्नतिष्ठायमांत्र त्वा
पृथींदत्तुविलाकमां॥ यददंत्तुर्ईयाजास्मि त्वांलानंदातुमुत्सहे॥ नत्तस्याधिपदत्ता स्यैनवेवा मन्यदापयं॥ स्वत्राअयदि मिद्धम्ममसूर्वा२रवेचेममन१॥ र्शविराव्विमंमद्धार्मादिमवस्म
स्वाधिसाधन॥ स्वृस्त्र क्रामप्रमन्वा स्वामगृही त्वाविवत्वयमृदा॥ कर२र्षेजिकीवद्धि त्वांत्तुदद्येविप्रायमाद्न॥ माणत्रुवाञ्छ१२ यथ्वनर२र्षेजिकीवविस्मित१॥ स्वमीत्र क्रामभाव
=मा ३
=ला ३

स॰

भा॰ कल्पाकप॑वाग क्षनदायू षि ॥ संद्धर्मसमाधिस्थप्रवायस्त्र संभतन २॥ दमार्थ्ये ४ सकलं कार्य कृत्वाया स्पर्शि निर्ह॑ षिं ॥ तस्मि त्वव स्थितस्य सद्धर्मा पि विन स्रुगि ॥ दशवर्षा ति
गदाक्त्रय संग स्पर्शह विष्य भि ॥ गत ४ यस्मै स्तूनमत्र वाधिसत्वाम हामति २॥ संप्रेद मित्र बाक्षारव्ये ४ संवाधि माहिता स्यम ॥ संबुद्धा हगवान्वै नाव नध र्मा नि स्पोत वनु ॥ सा पि
कधाषि ग लोकप रुषेण क्षनदायूषि ॥ सद्धर्मसमूणा दिस्थ प्रवायस्त्र समनाम ३॥ दमार्थे ४ सकलं कार्यं कृत्वाया संपर्शि निर्हृ षिं ॥ सप्तवर्षा णि गस्यापि सद्धर्म ४ क्षायेगमथ
॥ गत ४ पुस्य स्तूनमत्रय सं गस्य ह विष्यति ॥ एतस्य सूत्र बावीना वाधिसत्वाम हासत्या २॥ स्वो न्मोन मपिदव्येवं वाधिवर्यां मसाव वन ॥ अन्यत्वेवं महासत्वा दत्वा सा नं प ४ १८०
श्रीग थाधिन ॥ सत्वां वाधिसाधनीं वर्या विनिरुं नेव रूपाकिन ॥ अन्य सर्वं महासत्वा ४ स्वकृप्र तिधिवा निय ४ ॥ तथ ऊत्र समस्य त्वा ४ संकल्य वविदु दिग ॥ सत्वा धिप्राप्य संबुद्धा ४
सकृ नानवश्य मन ॥ संगृह्य वाधिवर्या मु नियाश्च समचावयन ॥ ततनेत महासत्वा वाधिसत्वाजिना स्मृता ५॥ यक्षि सूत्र समय वाधिं प्राप्य नेवा लिवा स्थिन ५॥ यव कालय नि
स्व सत्वाधि प्राप्य वास्थि न ६॥ गतवरि महासत्वा वाधिसत्वाजिना त्मजा ७॥ यदिम पश्च महासत्वा वाधिसत्वाजिना त्मजा ८॥ वीनवर्यास्त्र सं क्षेत्वा पव व पि क्षगा स्थिग ॥ गत्विस्य

पिकालत्रममूस्पक्नाजगाद्भिन ॥ सम्यग्विंप्राप्य सद्धर्ममुपदर्शप्रणक्षयूः ॥ यद्वनघस्मरात्मस्वा२ पूतानननमहात्मना ॥ आवश्यभिंद नमद्धर्मप्रयत्नं नतियाजितात्मा मनेनघस्मरा
त्मका महात्मानामहाश्रमः ॥ वीतवर्यावित्रिनात्मार्दे ३ प्रवचनत्रिजगद्भिन ॥ गनकस्यमनीन्द्रस्यमह२ ॥ वीर्यवान्क्रमी ॥ नलतानसर्वक्षांयिप्रमत्तजुवनमपि ॥ गमयथक्षत्रपूनानीन
वृत्वगप्रकषायिन ॥ क्षजनमनूगुफात्यकमार्थमानूषायूषि ॥ गन्धपस्नमूनीन्द्रस्यमद्धर्मप्रमितरुपित ॥ समद्धर्ममसमावानार प्रावर्तनामममनागत ॥ नदम्यंतमवाक्षेत्रकामन
कर्मिंसामूनीश्वन ४ ॥ लर्गदवाधिपाहत ३ पस्यमल्लाकाम्मदीफल ॥ नमामवंघितलोकादशाकूगलवानिकाय ॥ मदगर्वाविमानाक्षं ३ प्रावननकयस्थकृया ॥ सद्धर्ममपि नद
कामहात्मीश्विकवादर्सनका ४ ॥ क्वार्यापवादिनाद्भुमहायातकमाक्षका ४ ॥ यनस्यनापपूर्वनक ३ पवित्रायपनस्वं ॥ सुधर्मकर्ममंत्रक ४ प्रावर्तककलोमदा ॥ एवंमत्राकपा
पात्स्थसुयदवा३ ममन्नागत ४ ॥ नत्रामननकुत्यातंप्रावर्त्यसन्मनाविव ॥ तथनत्वापमेवानमहात्यागविलाक्षसमः ४ ॥ दवत्राविनायदेवंदयाकानं क्षमवादिन ४ ॥ मूलन्मूर्थांउ
त्रावानाद्भुर्लिजंजुविवर्तन ॥ नस्मात्वपरूलेजमक्षामायमत्रिवानयन ॥ मद्धर्मेवानयंसूत्रमूर्यातद्वंममनंनत ४ ॥ विनीयमकलाल्लाकाल्याजयिष्यामिमहत्य ॥ क्षमितिविस

जा

यतिनालोक्य ता सर्वाः समुपस्थिताः ॥ सादरं मम पुत्रा मे स्त्रिय एवमुपादिशत् ॥ यामस्त्वाद् भिमं दद्धे त्वयमर्वे पतन्नगात् ॥ युष्माकं शासनार्थं त्वमस्मान् अभिन्नद्ध्या स्वल ॥ तस्मा यूयमिमं
दर्द मम मत्कार्यमस्य स्थस्तया ॥ तत ऊर्ध्वं पितिनिंदं नकं थिवत निर्विशंकिता ॥ एतमिन्ता दिनं स्वा सर्वेग त्वामिवि श्मिता ॥ विनभवं समालोक्य पवित्र आयनत स्थित ॥ सर्वा पिय ति
नालोक्य तानेवं समुपादिशान् ॥ तथा थवं ममाम स्त्रुमसा धाध तत्रावदत ॥ कुंऊ ममस्त मायथं भातश्चं का विवाच या ॥ तद्वय यप्रदर्लं हि मया सर्वाधिसाधनं ॥ स्नुस्त्वं गदित
तत सर्व पितर्गति विहिता ॥ किंमत्यमि निमांशकामपथ्य नाश्रवत स्थितं ॥ तानेवं समुपाशीना सर्वा स्पष्य स्नुषा स्तजित ॥ तथा पूर्व भर्ता घाघ प्रवादनो सत्याप्त ॥ किमवंयू १९४
यमाशीना स्तऊतपि वत स्तथा ॥ मासं प्रदान विघ्नं भं कर्तुं सर्द थ सर्वथा ॥ स्नुषितं तत्स मारव्यामं सर्वं त्यथ विशंकिता ॥ तत्थ मिप्राणिताथं नत्स भवतां कृमा नत नु ॥ तद्ददंग मम
स्त्रुमप्रपपृ नृधिनं मया ॥ तता मासे समस्त्रुमप्राश ऊताय स्थस्मिंते ॥ एवं तेर्तस्य मानाथि प्राणिदिनं प्रवर्द्धित ॥ नेवक्षीन शतदत्ता तत्स्य वप्र हिक्षवत ॥ एवं तं ऊनाव सर्व
सर्वपिय क्षिधाम्रथा ॥ उस्त्रुमप्राप्य स्वादनं प्रपयनृधिनाथपि ॥ एवं तं रवाद्यमाना सोत नृनाम्रधिरी निता ॥ दिनादिनं प्रवृद्धांत घप्पमतः समीहितं ॥ मसाद्य पर्वता का

तत्रत मतल्लप्रप
ताविलाप्य यो नृतल
वरुमाणामुत्रेनेनि
कतमापप्रतीकै

न्यायूनन कृत्यव र्द्धिताथा॥ नमस्कृत्य वक्ता द्याव ह्नवाह्न पदान्विता॥ सर्वास्तिताविव क्ता धीमान् पूषवत्समा धिमान॥ सर्वास्त त्वात्समाम न्त्रयथन्त्रवसूपा दिनातृ॥ तामस्त्वा त्रस्य यादर्कं
दस्सान भिदंस्तथा॥ तच्छ्र्यंनि र्विकल्पनतकजधंमास्समीप्सितं॥ पिवधंनू धिनात्थवमभ्मिन्कायाविवर्द्धिनि॥ समृद्धैच्यय थाकामंगच्छधंनयनान्यपि॥ तथाकर्त्तीयनामांच जि
कार्थंदभनानपि॥ अस्वाहतनू २ कथालोथहेदयंचव मोक्षपि॥ नाठी २ ज्ञामवमभ्मि कं स्वायूनत्त्राधिगु ल्मव॥ वेर्मा स्थि लामकर्मोथवाह्न न्यादान्कुत्रानपि॥ कृत्वमेग्रा हु कोभ्मं
खमूत्रलालांमलानपि॥ यस्यस्यनाधिकार्यंष्या स्तातृकृताकृमतनो॥ तथ्यमतनूमत्तत्त्वगृहीत्वाय स्तभिस्थितं॥ ततस्सर्वाधिकार्येधि कृत्वाधिनृतस्सहूर्य॥ सद्धर्मष्यानूताव नमर्वत्र
व २ मदाधुतं॥ तिनूच्याकंमहत्स्याहंतवच्छूनंनमभ्यय २॥ तृताय यंगुराबाना २ पविकुड्ड त्रिमत्तु लो २॥ वाधिविकंसमामास्यवाधिमस्वा तविम्यथ॥ ततः २ संवाधिसंतानं पूनधित्वा यथा
क्रमं॥ त्रिविधं वाधिमामास्यमस्पृद्ध पद्म भाष्यंथ॥ तेनाम्नूयंमहाश्रिया २ सर्वमत्तविनिर्तकना २॥ सर्वानितीर्थकार्याभिकृत्स्वानिर्दि शिमोप्यथ॥ ततिमसंमयाख्याकें विज्ञायास्मिंसमाश्रय॥
यदतिलधिलंकार्यंतत्सूत्रधंप्रबाधिताव २॥ ततिनतमसमादिष्टं गुरुस्वामर्वविधिमूपा॥ तथातद्दहमूत्त्वग्रहीतंसमूपाक्रमसत्॥ तत्रसंर्वविधिमस्वां कृचिदभ्र प्रबाधिता २॥ तथहुद्द

आ ॰ शुभि मन्त्र मंत्रान सदा शोध्येयदी कृथ॥ त्रिनत्व रूजनं कृत्वा वन क्षेम हृष्ट मना॥ शुभिम स्वात्रसं लानं विनाय्य दश पायक॥ संख्याधिप्रति धिष्ठ्वा त्रिनत्वं कृत्वा सर्व॥ शुभिमास्तस मा
चिद्दं अ, त्वा न थिजना मृषा॥ सर्वं नत्थ मिविहृ य्य प्रा प्तुन न्द स्तु बाधि ना॥ नाम्म वर्ग्न न्दिगांद स्तुं श्रीपि नाज प्र भाषित॥ दत्ता यत्थ स्थितं ड व्यं सृष्टा कृता मममणी यय त॥ तद्वद्दय
सादाय सर्व नार्थि जना श्रुधि॥ तस्मि नाह्ं जयानाम्य ममा क्षिप्तं दद सृष्टा॥ तन कृ थिजना सर्व नद्दं डं व्य मी प्सितं॥ समादाय प्रमोद नां स्वालयं सुदा व नन॥ एवं वा मो मत
सत्त्व क्रवर्ती मम मन्ति॥ विनी मम कला मत्कां स्तं लघु न्य धाजयत॥ कौ थि क्राव कं पान मर्का थि स्तु प्रकथा न कं कांश्चिद पि मत्ता यां नं विनी यमम याजयत॥ कदा तम १९८
कल्ताकाम स्यानु त्ता मनान ना॥ विनय पापकर्मा नं सद्धर्म साधनावनी॥ सुशीलाविमत्ता मान धक्रवृ पं विहा पि॥ बाधिवर्या मम साधना स्वार्थ धर्मानुवानि॥ प्रि
नत्व कृतं कृत्वा कलावादानंद्यथ स्थितं॥ एवं वनन रत्ता स्वार्हं जं कौ का सं मभाव नन॥ तदेतत्स्त्रीस्य चेत् पूर्व्वे सद्धर्म मङ्गलं॥ तिनु स्वानं सप्ति जं व प्रावर्त मम मन्ता नत॥ तदे
कस्मिन्दिन कालव सन्त ममपाक्तिना॥ तत्पति सवनन कृं सह मा धर्म पाद्वनत॥ तत्र मार्ग सनाजन्तु पूर्व्वे गाद्व बनं॥ वधाय वधकौ ध्वत्वा नीय मानं समपश्यत॥ तं दृष्ट्वा सम मस

मत्वान्नृपतिः कतृ पादतः॥ किमर्थं त्रिविक्रमायामितमान्यानरकं॥ कृमिरूष्टुनवडूतमाता॥ सर्वस्थानगाः॥ नृपर्षिर्गमहानाम मालाक्षेर्वन्यवदयत्॥ दयार्थंपृ नृपातुरुद्रादं
वस्य हायमाधिकः॥ नदघव धकेर्नी नावधाव्यव ध्वनृपलं॥ कृष्णमाये॥ समारव्यमनृपतिः ममयार्दितः॥ नामर्वान्मन्त्रिः याम्मानान्यमालाक्षेवमादिमत्॥ किमननकृतंकर्मदानृतं
घानयानर्कः॥ यद्ववेवधकेर्नीनावधायव ध्वनृपलं॥ मृत्यनामरुमात्रे घगोदवाकृप्रवन्वनाम्॥ मायनात्था पिमद्दृस्टुन घानथ्याहि पोल्यर्ता॥ कृष्णादिष्ट नृपष्टः सर्वमायकना रूपि
॥ स्वामिनंप्रशवाचममीधर्वन्यवदयत्॥ दयार्थंपृ नृपातुरुः॥ मयधर्मादिनान्दिकः॥ यदमन्नृपतेर्गगानन्दवाणिकदावन॥ सर्वयकृधिकर्मान्त्यात्रामकपंटयोनिकाः॥ षकतंन्
यनर्गी मयानांप्रददनिम॥ एतद्विनपतेनायनानंसर्वोर्थमाधवो॥ कावदन्त धमगवनायमधानगंवकम्॥ एतदिनाकथनाये भानदंपालनंरवत्॥ कायम् लंहि नाकाकृमिवि
नीतिविर्मायगं॥ कृष्णघपृनृपाद्व्याय क्रोधमलघानर्कः॥ गहवदयकर्तानयक यावधुप्रवहि॥ थानाफायपयकर्त्तानंमद्दानकंदतुयत॥ गम्यनाधकर्थनङ्कवंदुष्टममाकृल॥
दुरूनादतुयन्नाभानाथपर्तनमकृयाम्॥ गम्माद्युरुान्नृपारन्यासर्वेमत्वहितार्थतः॥ दुरूंकृत्वानपःपापेर्निष्पगनकृदावन॥ धर्मएवप्रह्मानन्यरुद्दृघागिन॥ नेवास्यविग्रगं

जा स्वमास्यानंदत्वान्यं दातुमिहार्हसि ॥ किं मयीस्य महत्वाजस्य ददर्शकुशीलम् ॥ त्वमर्वं हिममाख्यामि सताविनां नाथिपः ॥ स्वयना सन्निधार्थं पूर्वधिनयं सरवाधिति ॥ श्रुतिस्वयंसमाख्या
यकिमवमन्यथावन ॥ स्तुत्युगद्यानसंतानांगुप्तकान्यददिवांछितं ॥ धर्मार्थपालयदंदत्तार्थधर्ममर्जयत् ॥ उनाप्यामवसंवाधिप्राप्य वौदयर्पलमत् ॥ श्रुतिस्वयामसादिष्टं कृत्वा
सर्ववयंमृदा ॥ सद्धर्मसाधनार्थकार्थयामस्य समभवन ॥ यय क्षितिस्वात्स्यामृतं स्वेह ॥ प्रजास्वपिदयापिव ॥ तदस्मात्कौवव ... त्वामास्वास्यानं विधामय ॥ श्रुतिनिर्मक्रितिः सर्व
विद्याधिगमसत्तमाति ॥ नान्सर्वान्स्त्रिरत्ना मायोस्मानाक्षवमन्त्रवीत् ॥ सत्यमवंविधार्थं मेयस्यातिनवमृत्यम ॥ तथापि वस्तगलयम्न कृपात मममक्षिणं ॥ संसा नमर्वकना नांच
निजन्मवा हिनी ॥ सर्वसामर्थ्यपिसर्वत्र पूतनामस्तुतानवं ॥ स्वेच्छ नामस्तुनामर्वस्त्राविनानववाशिदा ॥ तहनत्का पितत्स्वत्नाजित्वा कल्पवलेनधि ॥ मस्य श्रिविमवान्वीय एकापि १८७
त्रिजगत्कृथी ॥ नि ॥ क्षय ॥ कृत्तवस्तु स्वामसर्वानाकाजगद्दवि ॥ गुद्द स्पृतयाम्पस्तु ॥ कार्थीर्यमवलम्बयत् ॥ निकृत्तीद्यनमा गत्यापन्नाधिस्वामहवंवनत् ॥ व्रम्हकर्णक्रादिदवस्तु ॥ सर्व
स्वदानवाधिपे ॥ सर्वस्वं श्रीये ॥ अपियं क्रमार्थविक्रिवने ॥ लिङ्गविशाधनत्राद्रिसक्रामाणि सर्वाधिके ॥ नाजसर्गवृत्तैर्नाग्गे ॥ कृत्स्नात्स्तुवमसद्दले ॥ ततप्रमपिनावेधर्मितः

दिक्षु नभस्तेषि २ ॥ रश्मि आदित्यस्य कि स्मि अपि यथा शक्या वादितं भिविषु २ ॥ गङ्गादिविलुकोखापि त्रिकीटादिति स्फथ ॥ अन्येष्वजन्तुषि २ सर्वसत्त्वं कुलं न शक्या ॥ तथैव मानवा सर्व
म्पया पितृपूर्जिन २ ॥ योगिनाथ नयश्चापि तिङ्गवत्त्रम्भवासिनः २ ॥ गुह्यकविद्याधरावा नाम्ना कार्या मनुष्यावि २२ ॥ यक्षसीपिनका विद्यावद सिद्धा नागानगा २ ॥ सन्ना विवक्षया २
प्राप्ताः २ सर्वशास्त्रार्थकाविदा २ ॥ त्रिकालज्ञाश्च देवज्ञा ध्यानि विद्या विचक्षणा २ ॥ वेदाश्च नागविद्या नां षट्‌त्रिंश पञ्चाचार्यविक्रमा २ ॥ ज्योतिकाश्च महाविज्ञा २ सर्वशब्दस्य यत्नेकना २ ॥ नाज्ञा
न शक्ति त्रियावीना २ निर्णितदुर्जनात्मापि ॥ एवमन्यपि लोकाश्च यावन्तो २ प्राप्तिनादव ॥ सर्वापि समाप्राज्ञ गणनापिता २ ॥ सम्त्रामदूपिता स्या नामस्थिता जं विनाडया २ ॥ ह्ला
पिवन्धस्कन्ध स्थित्रे २ पतिहासा याहानिशं ॥ सम्यक्पश्यानस्वानेकथ्यानमहाप्रखे २ ॥ पालयमाना सुपित्रस्या विप्राना विद्यामया २ ॥ प्रवीनाम नया सुज्ञानापिद्र स्वपिनिरूढा २ ॥
सङ्गेनेवालिवां कुयु निष्टे २ सप्रतिनान्यपि ॥ पश्चेनात्र वनिश्चयेनयाहन्तुं न शक्नुय २ ॥ सत्तामहावनफोणा २ प्रलय नाहिताहितं ॥ तस्मका ध्रुवमिस्थ स्था २ किंचित् स्कन्धं नश
क्नुय २ ॥ स स्कन्धसम्भूव मालाश्च तीनादन् पितिरूढा २ ॥ किंचिदपिषाते स्कवयायुसप स्कन्धमात्रयं ॥ तदा कोपिमहायान देवादिसर्व पथाववन ॥ एकएवक्रम कर्म संतो या

मू॰४

ज॰ कार्थहेतु ॥ तथान्यापि यनिक्लिष्टलोकपंचकषायिके ॥ बोधिंप्राप्य जगत्कालाजिनरत्नाक्षिकथन ॥ अन्यापि किं महासत्वाः संबोधिकृतनिश्चयाः ॥ स्वात्मानमपि दत्वैवं त्वनिघ्नि

जगद्धित ॥ एवमन्यापि किं क्लिष्टकलौ पंचकषायिके ॥ बोधिंप्राप्य जगन्नाथ तविघ्नन्निमुनीश्वराः ॥ किमस्य एवमासंत्र कलौ पंचकषायिके ॥ कथंमन्याधिमामायसद्धर्मम

सवानयत ॥ श्रीनिःसृष्टवनस्त्रनमाहं स्वि हृप्यवीश्वनः ॥ उपगुप्तानसंगंमपालोकेवमादिशत ॥ पश्चात्तनमुनीन्द्रप्र शिक्षनंत्करणंतथा ॥ सर्वाण्यप्यपि जानिवहेतु

सर्वज्ञमम ॥ तत्रापिमुनीन्द्राणां कलौ पंचकषायिके ॥ समबुद्धत्र्यधर्मा निप्राधान्यजगद्धित ॥ तथाममं महासत्वाः कालपंचकषायिके ॥ बुद्धत्वमपि क्लिष्टवोधिंप्राप्य १८९

जगद्धित ॥ सद्धर्मसमुपादिश्यवानयन्तः ममनानाः ॥ कथा सर्वत्रतद्वादि संप्रयानिमुनिर्वृति ॥ यननभाक्षिंतनवाधिंत्वाप्रयेत्नत ॥ पूनादोषोगतमर्भर्ति मूक्षसंप्रवानि

श्री २ ता ॥ तत्रैवं षष्ठमहासत्वाः संबोधिमाश्रनायताः ॥ स्वात्मानमपि दत्वैवं बोधिवर्याममावनन ॥ तथामपिवसर्वसंप्रशिक्षनंयथा कृतं ॥ तथासर्वाविभिज्ञा निवहेतुर्नापिवा

न्यथा ॥ तथातथापि क्लिष्टे षष्ठ सूपात्रिताः ॥ सद्धर्ममसमुपादिश्यपावान जगद्धित ॥ तस्मात्थैका महासत्वा भवतीद लोकिषः कृतौ ॥ बोधिसत्वामहाविकृः सर्वमलत्दिता

कत्र ५१

सप्तमे दिवसे २

र्थरत्न ॥ दक्षिणस्यां सर्वार्थ लोकश्रेणी समाश्रयत् ॥ सर्वार्थसिद्धि स्वामी कृष्णस्त्र क्षत्र काधिपः ॥ अंकत्र प्रमदा विरक्ता नामश्रमा तथागत ॥ सर्वसूर्य समाविहारमर्माज्ञामूर्तीश्वनः ॥
तत्र सनगवान्लोकांश्च ना मानूषायूषि ॥ सद्धर्मसमृपादिव्य नानपिवाधयत ॥ सर्वास्वस्वान्विनीयागु वाधिमार्गे नियाजयत् ॥ सर्वाविवृद्ध कार्या विमर्मा यानिर्हर्मिय
यो ॥ सूर्याधिपति स्वर्वेस्वा निमक्रिष्ठ कुवनचंपि ॥ सर्वाविवृद्ध कार्यासिद्धा वाविष्ट निर्मले ॥ एवं वाधिमनाम वार्वीर्य संवादनाविध ॥ प्राच्यामज्ययवस्याख्य लोक श्र
णीसमाश्रित ॥ सूर्यल स्वाधिमासायश्च ता मानूषायूषि ॥ सद्धर्मसमृपादिव्य प्राज्ञानयत् स्वर्मे गतः ॥ तस्याधिक्षतवे [illegible] क्रिष्टपृ तुवनपूर्व ॥ सूर्याधिवृद्ध कार्यानिक्रत्वा
कृष्णं निरुद्धतां ॥ एवं वान्यां महासत्त्वः सानन्दमुनिमाधिपः ॥ उदीच्यां हतसंकर्ष लोकश्रेणी जिनाह्वयत् ॥ तथागता हत कामूविधं स्वनविनाजकः ॥ [illegible]पिकघाधिक लोक सद्
धर्मसमवानयत् ॥ तथा प्रहृविसंकोपदृष्टा नामजिना स्वजः ॥ प्रतीच्यां हतवसांसे लोकश्रेणी समाश्रयत ॥ संवृद्धसमूर्यगकीर्ति विमल ज्ञाविदध मुनि ॥ [illegible]पिकघायिक
लोकसद्धर्मसमवानयत् ॥ तथा संसाव नाना मवाधि सत्वा महामति ॥ ऊर्द्ध लोक तथा यत्र ह्वाह् ज्ञानवर्विनिरुं जिन ॥ सूविंस्ता वनानामकथागतोह विधयति ॥ पंचकषायि

नाम पुस्तके

आ गुर्वाद्यपि च संमानं अन्यापि धर्मसाधनं ॥ विना धर्मं न संमाने ९ किं सुरवे ९ स्वकुटुंबेनपि ॥ श्रीमन्य सुमस्कंधेवकुतवीर्यवलेनपि ॥ यदर्थं जन्मसंसारमदवविघ्नगनदि ॥ किंत
नजन्मनाथ्यवर्के वलपाप साधिना ॥ पापतः दुर्गतिजातेः ९ पापघ्ने वानतः र्थेनतः ॥ तद्विपाका महाघोरं पातकं घातनं अर्थेनतु ॥ तद्विपाका महाध्याननरकं घूपमद्भवं ॥ विवि
धाव्याधिः ९ रवानिज्ञक्षीवविक्रमसमदा ॥ सुज्ञाधिलपमनेवकमानि ९ सुनियद्गनि ९ ॥ सर्वनाद् दुर्गमासाद्य निनाथमा सुक्षिप्तोऽमतः ॥ यावद्भवं सदानत्र निमर्पाद् ९ रवपी
डितः ९ ॥ सुक्तिमार्गमनासाद्य ऋमकिं ष्टिमादितेः ९ ॥ नदानत्र नकापि क्षा ज्ञाताभय ९ सुखक्कतः ९ ॥ सर्वथिर्मिकवक सयप्रदं नयूनिजक्ष्या ॥ धर्मविनादि सर्वत्र ने १०३
वकापि सुवलक्षणं ॥ धर्मं एव सुखकर्त्री सर्वत्रापि सुदानगः ९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सम्यग्धीधियदलक्षय ॥ स्वास्मानसापिसंमुक्ताम्बधर्मसाधयमद्भव ॥ धर्मयामसजनीजा
ग ९ श्रीमन्यकुथवीर्यवान् ॥ सुत्वा न्यवसदाज्ञुक्तोज्ञुरध्ववमसदाववनगे ॥ एतत्सुत्वे विपाकतनमम्याधिविक्रमाफवान् ॥ स्वयनालेखिना र्थेनवाधिवर्याख्यसंचनेन ॥ न
ग ९ क्र मधामम्याधिसंतानंपनिपूनयन् ॥ त्रिविधं वाधिमासाद्य निर्वृतिसुरवमाप्नुयात् ॥ कूनिनिर्वृतिसल्लोत्सर्वसंपाप्यप्रयत्नतः ९ ॥ स्वदेदमपिवन्वात्रक

* नवब्रह्मपदप्राप्त्येनापि कामसमृद्धोफथ ॥ २

र्य्यधर्मसाधन ॥ कृतिनिश्चित्यनाऊ ज्ञातृर्थाधन २ समयगि ३॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन सर्वालानंमुकृ मेष्कन ॥ तत २ शास्त्रं महाहिंस २ सर्वसत्त्वहितात्कृ ५॥ दगपालंनगंगत्वाप्रति

धनंयक्षत्पृन ६॥ यदमृकृ मिक्ष मि त्वदमधिमाम्प्रगं ॥ त सत्त्वहितार्थेन सर्वाधिमस्वलस्वथ ॥ नाम्यक्तीमरवसंप्राप्त्येनापिदिव्यमस्वोफथ ७॥ कावलोत्रिजगत्सत्त्वहि

तार्थेवाधिप्राफथ ॥ त्वदमपिमंस्त्क्ष्मासंप्रमाठं समृत्सह ॥ ५ ये कृदेवता २ सर्वा १ सर्वलोकाधिपास्त्वयि ॥ तर्पयिष सर्वसत्त्वांस्तमा सेनुधिन [illegible] ॥ तत्प्रसीद त्वं सर्व

पिदवलोकाधिपामम ॥ सर्वाधिमाधनं दानं रुत्वं नम्प्रसहायका ३॥ यदिमपूज्यया कांक्षि तेन मदक्तकृतिम २॥ किंचिदिहीनतांनया यायाकृक्षि त्वमनर्हि ॥ कृतिमन =दि४

सुधीयत्प्रणिधानकृतमदा ॥ वचानेवसं धामा श्रि १ मत्त्रेलावापिमविभ ॥ नृनृद्रदेवताः सर्वा १ कृदिप सर्पितं किताः ॥ सर्वलोकाधिपास्ताधिम विस्मयाविषधिन ॥ स

दाशार्द् महासत्त्व १ सर्वाधिप्रणिधानस्तक ॥ श्रिनत्वस्त्तिमाधा मुखयंतगापमत्वगात् ॥ तत २ पतिग एवाशीर्पनिस्तडामहत्कृत ॥ सर्वलोकानउद्धांत्भावतयाशिमहाकुयथा ॥ बोजनसातविलानदा बोजनमुत्तत्वेनीव ॥

समर्वपशिर्गदहृष्ट्वा वनकोऊ नावशवणा ७॥ सत्सामस्पागामपश्धनाडपताक्तिन ॥ एवंमत्त्योस्थितस्थ मा कस्यसंस्मागता ८॥ दस्त्वा सर्वलोकानं विस्मिताडपताक्तिन ॥ ततास ककतता २

स्वर्गी

वषारजात थाडमाः

आ नुः ॥ स्थिमान्सत्त्वान्दृष्ट्वा कुशलं संवर्णनात् ॥ विशाखः सम्यक्सम्बुद्धो देवैः सम्भाविनायकः ॥ स्पृहा सम्बुद्धिनायकाः सर्वे कुशलसंनताः ॥ एतत्स्वापविपाकस्य संदर्शितं प्रवर्तनं ॥ तथापि हि रविका

सर्वसत्त्वार्थं कुशलार्थाय ॥ सम्बुद्धो मानुषागतः ॥ प्रवचनेन गुरुः सदा ॥ तत सर्वकुशलसत्त्वाः सुपायधर्मा हि संगताः ॥ न तत्र क्षुत्पिपासादि भयं सर्वदा भवेत् ॥ तदर्थं पायमार्गे हि निवार्य

संप्रबोधयन् ॥ सर्वान्सत्त्वान्स्थितान्धर्मे यथाक्रमं संगच्छितं ॥ सर्वे निर्मलाः सत्त्वाः कृपाकारुण्यमानसाः ॥ दिव्यसुखं लब्ध्वा सर्वे धर्ममानसाः यात्वन ॥ सद्धर्मप्रबोधयन्तो नामसं

स्थितानां च ॥ धर्मसमाकुलीकृत्वा स्यात्सर्वासु पूजयेत् ॥ तथा सम्पन्नी नानाविधकर्मप्रणिधयः ॥ सर्वान्सत्त्वान्धर्मप्रबोधय ध्यायायतन् ॥ एवं सम्यक्लानि यानानुभाष्य १२१

प्रयत्नतः ॥ बोधिमार्गं प्रतिष्ठाप्य प्रावारयन् गच्छितं ॥ एवं समयसम्यक्कीर्ति सर्वत्र संप्रविष्टाः ॥ सत्त्वाः सर्वे तिष्ठन्ति संप्राप्तिं सम्प्रापयन्तु ॥ तत्र यथा यावत्को सर्वदत्वानामयथा

विधः ॥ यथा हि लिपिं तद्वत्संपूर्णया यावत्सुपात्रितानां ॥ साथ श्रीमान्महासत्त्वः सर्वानर्थिनां जनान् ॥ येषु सादरमानसा धनवमूपादितान् ॥ तान्सर्वार्थिजनान्सर्वे संप्रसव

यादित ॥ यदर्थिसिद्धाय यथा निध्यापितयन् ॥ सर्वार्थं समादायश्च गुणैलसमाहिताः ॥ त्रिरत्नभजनं सत्त्वान् संप्रह्वष सदा ॥ एवं निर्यसमाधाय च निर्णय दिवा

कृ थ॥ यथाहि वाञ्छितं दद्यांदा स्यामिवः सदा खलु॥ एतद्व्रतं श्रित्वा नानां सत्त्वाः सम्पूर्णस्तिताः॥ यथा कामं सुखं तुष्ट्या एवं व्रतं संपदाश्रयं॥ एवं व्रतः सदा बुद्धः सर्वज्ञाधिनवान् वै॥
सर्वसम्पत्सम् द्विवत विषयातिक्रमं ददाहि॥ तथा दानं स्वाप्रदानानि तुष्ट्या वा पियथा सुखं॥ यावत्क्रीडं सदा स्मादेः पुण्यं च क्षेत्रमादिनाः॥ तथा यूर्यं तथा स्नानः पवित्रं प्रियमण्डलाः॥
वाधिविद्ध समाभा सर्वाधिसत्वाः ऋविष्य थं॥ तथायूयं महासत्वाः सर्वसत्त्वहितायताः॥ वाधिचर्यावृतं स्वाव तिरुमूलहि घ थ॥ ततः समं वाधिमण्डलं नं पुनः यित्वाय आक्रमं॥ त्रिवि
धं वाधिमाभा सम्बुद्ध पदमा सुख॥ स्तुतिमवाधिमसम्बुद्धपदमो त्वं यदी कथ॥ सम्काद्द्ध्यं समादाय त्रिनस्ते फलं नादनाक॥ किं वा पिवुलं फलं स्मस्मेमान मानुषसदा॥ कदा विस्तुपस्य
गपुः स्वे सद्धर्मं च नच्छ्यो भवेत्॥ मानुष्यस्य सम्प्राप्य पिकुः सम्यक्त्वं दुर्लभा॥ स्मरुयाकिं मनुष्याधिपुण्यं च यी स व च न॥ मानुष्यं लब्धमात्रं तु दुर्लभं च सदा भवं॥ सुखं न सुख
पिक्षाधिलस्यतनकदावेन॥ कदा धर्मसिग्यायापाप सर्वसदा व च न॥ स्वधर्मश्रीवितानाधिकिंभवकत्ववा वस्ता॥ स्वधर्मं समानञ्जन्ति वीमतंच पुनः॥ तनेव कतार्थयः
कृथंवन॥ यदत्रस्ता स्मृत्वा प्राप्नकाधित्रापीनवित्पर्ग॥ धर्मएव कदाहमी सद्धर्मे पिवानुगः॥ धर्मतामहङिंयाया स्यापनस्तु गतिमता॥ मञ्जीवसदासा स्वयं सदा स्वानिर्गतो॥

दुर्गति
उत्तरन
नरका
स केता

ते विरत्न त्रयं स्मन्वादेह्यमस्मा दिवंयमो। संनो छिति मते सर्वे तमु गोविर चे॥ शिष्याणां स्थापयन्धर्मे सत्त्वाः स्वर्गमुपायषु॥ तद्दत्तं समाकर्ण्य चन्द्रः शीकासमाकुलः॥ तच्छिष्यं तं पुनः कृत्वा चिरमेवं वापयन्तो॥ ॥ अथ कालान्तरे तेषां चन्द्रनाम्नां मिथो भवत्
चिराय तोः कारतो नौ विप्रदः प्रमर्हन्त ता। चिन्तामणिप्रभृति धर्मं समसेव श्रीमतो। इति ज्वनेऽपूर्वं धर्मचन्द्रः समभवात्। जगदर्थप्रापितो धर्मसत्त्रेसगतो मूर्त्याः इति भाववचः कृत्वा मर्तिसमहर्त्ते निशि नम हृष्टप्रातो वज्रोभूवं समन्ध्रवाः पञ्चादितायमामास्ते
तया मतिमुगमन्धातवः। तेस्समाहूय प्रस्थित्वा दत्तं कृत्वाथ भूपतिः। चिन्तामणिप्रदायम कोष्ठागारे समर्पयत्। ततः श्रीघनभावो लोकभूर्वात्मन्मयः क्रमात्॥ कल्याणमित्रविद्योद्यकाले विदितं ततः॥ ३

सत्त्वान्न्तवगताः॥ सदीक्षा स्व कर्मसर्वसत्त्वार्थसिद्धये स्त्वपि॥ इति प्रणिधिं कृत्वा कृत्वा सर्वदि कार्थिनां॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा गच्छेध्यानमसमाहितः॥ एवं समुद्विग्नं त्र सर्वसत्त्वाहि
तार्थकृत्॥ मद्दीयं सा सर्वेला कर्मापूर्वं त्वतो॥ गतः समसमयकाले उपश्रिमसमाप्तितः॥ तदेव प्रणिधिं कृत्वा सर्वसत्त्वहितार्थकः॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा स्वकादरं दिवं ययो॥ तद्
दविधिना स्वर्यसंसृक्ष्मगतसंविघ्नकाः॥ कृत्वे संप्रतिष्ठाप्य प्रत्कं जिनमदात्मदेशः॥ तत्र स्वर्गपिधीमास्मसंबोधिप्रणिधानतः॥ सद्धर्मसाधनं कृत्वा देवः सत्सवमत्सवं॥ उच्चमो
गगवानास्तव्यमव स्कन्धगके॥ एतम्मा पुनरादिष्टं प्रसंमयागत्यास्यमी॥ यासौ प्रदीपप्रज्ञा तानामसवागानपाधिपः॥ अयमेव सूनीन्द्रो ऽसौ जीतमभ्युत्निमन्यकां॥ कृत्वं सर्वसंघाभिहूप्यध्व
स्यामन्नूगामनं॥ जिनलक्षणं कृत्वा बोधिश्वर्यो सपावन॥ तथा नावप्रज्ञाबोधिवाधयित्वाप्ययत्ना॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य बाम यस स्मदागुरः॥ गुरुकर्मविपाक दिसकवो न्यवमस्य
त्वं॥ पापकर्मविपाकं ततः स्यान्यवमस्यात्व॥ मित्रिकर्मपाकवमित्रानि तत्वमपि॥ तस्थवत्वं कर्मकमेगत्यवनपतनं तव॥ शुभं गयद्वशोआमात्मनाः सर्वज्ञ नाव॥ नास्मिना
दकगकर्मपुर्ययनापिवायूति॥ क्लिश्यगनोदकेनापि क्षीयगानेव हृमिथू॥ तत्तस्य निःस्किमी दिषं कृत्य कृत्यापि॥ जप्रका तिसदा कायिकं यं वनकपावन॥ सामस्रीश्वायका

०ऽक्वड : धर्म
त: आलवड १

२०४

ते पि दर्शनिनव वाचि ताः ॥ अन्यथापि तव देव कर्मणाभिः सम्भवन्ति ॥ इति मया महान् राजविनय पापकर्मण ॥ धर्म एव महाभाय वन स्वपालय स्वप्रजाः ॥ एवमुक्ते प्रयत्नेन निवार्य

पापकर्मण ॥ धर्म एव नियुक्षेर्वं वानयत्स सदाशुभं ॥ तथा गमुक्तं निष्प्रविनि त्यामें तव स्पदा ॥ कमाछाधियं मासा सम्प्रुद्ध यद माप्नुयात् ॥ इति तत्तार्हता दिष्टं श्रुत्वा लोक स्मृत यति

१ ॥ तत्थ निघ्राणिविहृत्यप्रस्यनन्दन्न पार्षद ॥ प्रदीयपुण्याग नपावदानं ॥ ब्रनियदानुवदनियत ॥ तसर्वं एवं कानि तीतवस्य व्रजन्तन नाम्यागमस्य लोके ॥ ॥

इति श्री मन्महाकाम भद्रकल्पावदाने दीपंकरव्याकरणावदानं समाप्तः ॥ ३० ॥ अथ अशोको महीपाल ः साञ्जलिः पुनरागत ॥ उपगुप्तं तमर्दन्तं नत्वेवं प्राथयत् पुनः ॥

तदनन्तरं तमिक्षा मिपूनन स्यस्य तापितं ॥ स्ववदानं गच्छन्तुं समादसु महति ॥ इति संप्रार्थितं नाह्ना मया निशमन सगा ॥ उपगुप्तान तन्तं समभासाक्षेवमादिशत् ॥ साधु रा

जन्महाराजय थामश्चन्तुः वादितं ॥ तथा प्रवक्ष्यामि तद्भूतं समासादितः ॥ पुनः कालान तत्र लोकं पवकधायितं ॥ सर्वलोकाइनावानादमाहुस्ले वा निश ॥ क्वचित्स्त्रिमानि

नामरूपवत्तु पापसाधिन ॥ गततन्स्यापसंवानाञ्जसांवासनिसीनमः ॥ दुर्भिक्षं महद्व्यापत्पापवर्षासम नागतः ॥ नानाव्याय विधानेन धुत्सार्तान समंपयो ॥ दिने दिने प्रवृद्धं पापव

संतोषतोकल्पे २

धा१

श्री विलंघ्य वनमायये ॥ तत्रानन्दवनं कृष्णा न्मृगाकें कांबुर्दिग ॥ पश्यन तिप्रसन्नात्मा पूर्ववद्विलंघयन् ॥ ततः क्रमं तद्वनमदमानन्दवनमानपि ॥ विलंघ्य प्रवनन्तं श्रीवं
पश्चं मुदावनम् ॥ तत्र प्रतीनमा माधवनत्वा गर्दभे मूर्धि मुदा ॥ क श्रमनमामन्त्र मुत्का सर्वं न्यवदयत् ॥ ताता ध्यावर्पं सर्वस्वकेन त ममाश्रिताः ॥ तद्वा स्वक्लिनानावं प्रयान
थित्वमर्हसि ॥ श्रुत्विदं प्राथिंतमनत्र त्वाम वदनाधिपः ॥ सर्वान्कामान्वदितः पश्यं समा मन्त्रेव मत्र वीत ॥ तावदि क्रो धिकाः सर्वश्वेर्यमालम्यवगमा ॥ सप्तलदवगाः स त्वा
मुंगिपधं समादिताः ॥ श्रुत्वा कामा मदावीनः सर्वान्कामान्वदितः कामान् ॥ नाथ्याम्यथतनेकन्नमहोदत्से यगा दद्यन ॥ तत्रानवदितः सर्वदत्त्वागमन् दकाश्वर्यं ॥ पर्वतान्काकावम्
कुर्यं ते नागमद्य विषादिताः ॥ तान्नीतान्वदितः सर्वान्दत्त्वा समा थीत स्तुतः ॥ समागम स्य मनस्त्पांधीनयन्तं व मत्रवीत् ॥ तव नारश्वेर्यमाल्यं यमत्सवाय न त्रयं मह ॥ निष्ठ
तमा विषाद स्वंमहत्कर्धं निद सांप्रतं ॥ यदत्रा विनतज्जूनं तवत्रा विना न्ययः ॥ भूवस्वंतावितो तावातव नृप वत्तव स्पदा ॥ गक्रिनन्त्र समर्गि धूत्वा श्वेर्यमालम्यानिष्ठ ग ॥ यदिवात्र
विषतिः स्यादस्माकं देवयागताः ॥ तथापि मन्दलंस्यानो यतः स्वर्गे वृत्र महि ॥ यथत्र मागतानीः थे सर्वतीर्थं हलानय ॥ मत्रा नौमन यांयानि सर्वयायुदि सफर्गि ॥ यथाधे २०८

वं प्रिनत्वानिस्मरत्वा प्राशं स्वरूपं निग ॥ सर्वस्मृ विमलास्मान २ सर्वं न न नक्षि नालयं ॥ स्मृतिमत्वात्र सं मान सर्वं धां मन २ तक्ष्व ॥ विषादत्वं प्रविलय स्थैर्यमालस्य निश्चक ॥ स्मृतिमतसमाधि
सं ग्रे त्वा सर्वं विधि ऊना २ ॥ नत्थमि प्रणितांधि स्वाधैर्यमालस्य गक्षि न ॥ नग २ सर्वं धिमसार्थ मुरूफ शंका विश्वाहि मा ३ ॥ प्रिनत्व स्मरनिमाध्यय संगक्षि नं समा हि मा ३ ॥ नग २ नस्यं वस्त्वं
नत्रस्मृ प्रनिगमस्वायूमि ३ ॥ क्रमं य प्रवनदश्रीमत्वाक नं स मायथो ॥ नत्रम व विऊ २ सर्वं स्मृ कीर्य मस्वादधे ३ ॥ नत्वाक नं स मा सा ग्र नत्वा निमम विन्वत ॥ नत्रनत्वानि संग ध सर्वं
धित प्रहर्षिता ३ ॥ न स्वव द् ॥ मानूर प्रणाग गुप्रग क्षि ये ॥ नगक्ष प्र क्षि ता २ सर्वं स्वक्षि ऊमसम न्वि गा ३ ॥ मस्मा मीन मास्य प्रमम् कन मस्वादधे ३ ॥ नगक्ष व धिऊा सर्वं प्रवनना २
प्रमादिशा ३ ॥ स्वक्षि ऊ मस मा यन्ना २ स्वद शं समूपाय यु ३ ॥ सर्वं मरू प्रविशा क्षवन्सृमित्र मग ना ३ ॥ स्मृतल क्षि हस्ती नं य स्व २ ए स्का निषादिन ॥ नग २ सर्वं धिमग स्य मार्थय
गर्निदनत ३ ॥ प्रिनत्व स्कर्न कृत्वा सर्वं म स मसाधयत ॥ कृत्वाथित २ मदादानं म स्का गप्रत्र यामुदा ॥ यथ का मं म स्वं ग्र स्का प्रवनि न गुरुं वृथ ॥ मस्मि द्वार्थ मति श्व शोमार्थे वा र
२ प्रमत्त धी ३ ॥ यथ हि बोधि ऋंड्र यं दत्वार्थि धार्य नश्री न्दम ३ ॥ प्रिनत्व स्कर्न कृत्वाग्रत्वा निर्यम नाधि नं ॥ यथ का मं म स्वंग्र स्का प्रवन वा न गुरुं मदा ॥ एवं सश्री समाधान ३

आ र्पयतु ॥ तस्मात्त्वाम महासत्त्वा तथा पूर्वजिनं किल ॥ तथा नत्वा कथं गन्तुमद्य विनाम हि समर्थहीनः ॥ तथाप्य सगृह्य संप्राप्य स्वात्वा पर्व हि संस्थप्सी ॥ ध्रुवं समति मान्यो यत्प्रार्थयद्देव सादर
वातु ॥ यदि मिथ्या विशं निमिष्टेश्विनाम हि नयं तथा ॥ यथा सर्वलोकहितं तत्त्वं पूर्वं वर्षं तु सम्भेनातः ॥ मुनि संप्रार्थितात्त नविनाम हि समर्थवित ॥ सर्वलोकहितं तत्त्वं प्रावर्षय सहीतल ॥
द्रुत्वा निम समादाय सर्वलोकाः प्रमोदिताः ॥ त्रिनकालजनं सत्त्वादत्वा सुक्षा सुवृत्तनरु ॥ सहर्षा नृपश्चित्तोंकालं महासत्त्वमोदनात ॥ ससाधुय समानत्वं प्रार्थयद्वत्स्ययाव
तं ॥ सत्र सालमहासत्त्व विनाम हि तम सम्मता ॥ अद्य कार्यं ध्रुवं भीमेनत्र श्रावयद्दो मुहुः ॥ तदा सर्व महाजनत्वं वाजा गच्छ स्वयं मुदा ॥ कोषागारं प्रविश्याय सा पश्चिता यथा प
यतु ॥ तस्मात्त्वाम महासत्त्व पुनर्दृष्टिं किल ॥ पुनानत्वा कथं गत्वा विनाम हि समर्थहीनः ॥ तथाप्य सगृहन्त संप्राप्य स्वात्वा पर्व हि संस्थप्सी ॥ ध्रुवं स्वाना यत्तद्रत्नं प्रार्थयद्देव सू नमू २१२
रव ॥ यदि मवि निमितं मिध्यं दर्यं विनाम हि तथा ॥ सर्वसत्त्वहितार्थय महासत्त्वा निवर्षतु ॥ तथा संप्रार्थितस्तत्र विनाम हि समर्थवित ॥ महानत्वा निप्रावर्षसर्वान्सत्वान ता
र्पयतु ॥ ततः समस्त प्रसन्नात्मा सर्वास्मत्वा प्रबोधयत् ॥ त्रियानं प्रविश्य सा पश्य सर्वोत्तम मयाजयत ॥ तदृष्ट्वा दुर्मतिर्मानि स्वयं सावद्वं किल ॥ मायया पश्चिनृप स्रुजं सत्तम

याह्नतृ॥ तद्दृष्ट्वा समहासत्व २ पुनर्इ दृमिनिर्ंकिनय॥ तथा नत्वाक नगस्वाथि नाम यि मनद्रदीत॥ तथा भगह समं प्राप्य २ स्नास्वापर्व तिमंयनय॥ धूकस्नानाप्य तद्र स्त प्रार्थयदेव मू स्तव॥
यदि मम स्यगन नंप्रतिष्ठान मर्यम वि॥ सर्वाकि बाक्ति ना त्यत सर्वद्व्यानिवर्षत्र॥ तथा समं प्राप्थि तगन विनाम ति २ सर्वनय॥ सर्वद्व्यानि प्राप्य सर्वम स्वाने भादयत॥ तद्दृष्ट्वा विस्मि
त २ धूकस्य विकं मिमास्य या॥ मैयया तन्महानर्वं धूकस्व नादिं तयथा तृ॥ तद्दृष्ट्वा समहा हि हा विस्मिताधि विनादयन॥ कनदं भ भत्तनत्वं मायया पत्नं खल॥ तत्कृत्य प्रसन्ना
त्मिता स्वयन समभाक्त ग॥ लब्ध्वा कामं प्रसन्ना स्नाना न्यत्किंचिं दायतन्यथा॥ ततश्च सत्व महाम स्वा इति कृ ला मसंक्तिनय॥ पुनाव त्वाक नगस्वाथि नाम थि मम प्रदीतृ॥ तत २ मा मित्र
मस्वा त्वा प्रस्था गृहं हा ति नय॥ त्रिनत्व स्थन वं च त्वा ध्यान्वं वं मम विनायत॥ सहं नत्वा कनगवा मफ थाधिश्रुत्वाविनय॥ मतानत्वा निसं गृह्य खक्षित्र स्वत्रैरुद्र॥ तथा समित्र्यां म
वे प्र तिष्ठान तत्कृत्य था॥ अनया नत्वा वंत रवक सर्वरुग छूरं॥ लब्धि ध्या स्वाम तु ज्ञानां स्ना स्वापर्व तिमस्य ति॥ धूक गद्र त्व मा ना यत् प्रार्थय देव मादत्वा॥ यमस्य माधिन कर्म नकृ
सर्व दि सिध्य ग॥ तथा यम तिनालोकं विदधतमपदो गुरं॥ सर्वषाम पिम स्वा मा प्रहि प्रम्या ति सिद्धय॥ यथा मिल थिगंड थप्रवर्षनमस्य नाग॥ त्रवं सं प्राप्थि तगन तथा सर्वत्र कृता

श्रीज्ञान जंबुद्वीपे समन्ततः

आ

का सर्वाधयन्त्रयन्त्वा नत ४॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य प्राणिनो यत् तदानुत्तं ॥ तत्रान्यथ महासत्त्वाः कृमैर्व्यथात्र मादिना ४॥ तदनुत्तमना नक्ता रथत्र छत्र गमादधः ४॥ तपि सर्वत्र कास्ता
नस्य दुर्लभ विहारिना ४॥ बोधिस्थानसमासीना ५ एवं विहृत्य पर्यंयथः ५॥ तपि सर्वं समर्पिता ६ सर्वान्सत्त्वान्प्रयत्नत ४॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य प्राणिनो यत् तदानुत्तं ॥ तदेतत
मूकता ज्ञावैस्तत्र सर्वत्र सर्वदा ॥ तद्दर्शित्वं महासत्त्वानां निःश्रेयसप्रदर्शयन् ॥ तदानुपूर्वीं विवादैस्थ मदर्श्यामानविज्ञता ४॥ अकालवात वर्षाश्च प्रत्ययं ४ संप्रशाम्यताम् ॥ डाउ
वनी महीसर्वड्रव्यन त्वप्रमतिका ॥ मन्त्रवीतम्नित्य पञ्चमस्य संपद्धनावकी ॥ तज्जातत्रमूकाञ्ज स्वंभोधिद्ध निरूपद्रवं ॥ षड्भिःसाधना त्वाससमाह्नलं तदावनत ॥ कव
लंक त्यकाध दर्शनात्मा स्थाममहाशयं ॥ नात्यपाय विश्वनेवीनभ आसकथं वन ॥ तथागताभि ४ सर्वतंमहर्षिंदयादधि ॥ अन्तरे ससप्रानिगतप्रेत सर्वं न्यवदयत ॥ सद
र्षि लगवाक्षेपस्य ४ सर्वसत्त्वहितार्थिनः ॥ कृपया मात्र्राज्ञादग्ध्वान्यपदश संत्रात समर्हति ॥ इति संप्रार्थित सर्वे बाधितहिते ४ समादयात ॥ समस्तर्षिर्महासत्त्व स्कान्दे स्थातं
त्कृपादूलय ॥ तत्प्रज्ञानाभ्यां नृपथेनानापाय विश्वनत ५॥ तत्थ्योषधेश्च पवासा हितमर्षांतमपाधिभतु ॥ तद्युपदिस्तमाकर्ण्य सर्वतथागतामकथ ॥ तद्गतानि हितमार्थं २१६

नप्रवक्तुं स्म समुद्यमं ॥ तथापि नाभिनन्देते यां तडागानवमन्य यत् ॥ नदानां नाभिनन्दति सर्वगतश्च सुरूपवत्या दिना ४॥ न दृष्टास्तु सुमनसामन्यादृशा कामुकास्त्वादिन ४॥ तत्राश्लाघ्यसमा पार्थ यं सन्निविष्टं यथैवं य
विनश्यत ॥ स्तुतार्थं बुद्धेर्वतु लोकलोकानुपीनपि ॥ सान्निध्याय महापापं दर्शयन्तं महाघवं ॥ स्तुतिनिर्वितस्तु विहायासौ सदसद्यां विहाय सा ॥ गत्वा चित्रपथं मूर्ध्नि पर्वतस्य समाश्रित ४॥ स
तत्र स्म सन्ततं द्रावीन्सूर्याग्नी लोकाधिपानपि ॥ स सर्षीन्निपिबन्सर्वान्धर्मन्निपातयेवमादिशत ॥ तत्र स्म सुरेन्द्रादिलोकपालान्महर्षय ४॥ तव नात्र सत्या सर्वसंप्राप्तान्गगनाधिपः ॥ यद्दत्र स
र्पिलोकानां नाम्ना त्यागं प्रवर्त्तते ॥ तस्य प्रभासनायायं वक्तुं स्म्यान विशाम्यता ॥ यस्मासौ नाभिनिर्मितं फो २ श्रीमानिद हितो धीया ४॥ कृपि पापात्सदा पुण्यं स्वर्वानिः द्विज स्वपि ॥ स सर्व दु
नितान्तकार्यं वर्द्धिनि धिको २॥ विपरीतार्थवाञ्छनां ४ सीदति तद्भाधन ॥ तद्भवन्तु धूम्रा सर्वा सदा मात्मन्नि नापिनान ॥ कृपया सर्वस्त्री कर्त्तुमनुग्राहकस्तु सर्वथा ॥ यदेत
नाभिरत्याद्धृत्य देवेश स्वाहवर्जितं ४॥ गृहस्तानां विवृत्त बौद्धिश्च न्दयाहमा ॥ समासीन गता २ सर्वयज्ञग स्वर्वकि न्नरा ४॥ कृ स्ना गुणाकृ सादे स्नाता स्वर्गन्तुं जम्पपि ॥ तत्र श्र
ना२ पिशाचाश्च मत्वापडवं कानि शाश॥ ताम्रवर्णं स्मरता क्रमपत्रासं यन्नावलेनपि ॥ कृत्वाग्निनापि तान्स्तुत्वा सम्यक्ति मात्सम स्तवयन ॥ तद्भवन्तौ मनुष्या नाहि तार्थक नृधा दृश्मा ॥

ने२

=६२

[illegible]

१२८

वर्ध० ज्ञा

ॐ नमः स्वस्ति [illegible] विदधमहे ॥ वक्तव्यं ... नाम यत्प्रबाधिता १॥ बाधि मार्गप्रतिष्ठाप्य कृत्वा व वर्णि कामपि ॥ सम्यक्साधन सद्धर्म निष्ठा जिनाय ॥ एतत्समस्तानुरूप वन सद्धर्म कल

त कालम् ॥ एतं पिव तिजः सर्व लन्तुस्व भिः मन्यथं ॥ ॐ नमः स्वस्ति नाम सर्व ज्ञ यं पिव तिजः मूल ॥ यथा शिवाय समस्ता जम्बूद्वीप वृक्ष स्वपि ॥ सर्व सम समस्त सफलार्थ दिना यपि ॥ सम

सत्कृत्य स्थानं व वि जांस समदर्शयत् ॥ तथा नैव तिजः सर्व सर्वदर्शित पथगामा २॥ ॐ नमः स्वस्ति नाम श्री पुंज स्वशीर्ष समायपु ३॥ सत्प्रव तिजः सर्व संप्रदर्शी जिन न्दिनाय ॥ गंभसर्षि मन

स्व स्वाप्रनंस्थं व मन्यापिन ॥ सूत्रा कृपा समि सम्यक् सर्वज्ञ स्वबोधित ३॥ यदस्मान्स्व यमा मत्यन उत्तिष्ठं व सत्यमन्या ॥ स्वस्ति भवस कृत्यस्य मार्गं च दिव्य शीयनु ॥ प्रकाश्यस्व स्विनात्रापि ज

स्तुतीयं सन्नादिग ॥ धर्मार्थं त्रिजगत्वा स्वावाधिमन्वा महात्मपि ४॥ सत्वा स्वामसंक्रितिक्ष धर्म वाजी तवक्रव ॥ सदावर्य सूनेन स्यनन स्यसमूपात्रि ना ५॥ सद्धर्मी मात्र स्वाव निजम सभि

द्र तव ॥ सुपा स्वकृत्वा सर्वप्रनाश्य सूजय ६॥ निर्विघ्न सत्कृत्य सद्धर्म साधन संवन्धि पित्र ॥ स्वव्यंग वधिसूंघा ७ सर्व समस्त भव ॥ सद्धर्म कीर्ति मात्र स्य सकूप ८ स्वस्व त्वाव निर्व ॥ न

गम्भीरव तिजः सर्वमं वनक प्रमादिता ९॥ कृपाल्व दनमाशा यसवस्य गंद समाधि मनु ॥ तत्र सहापि मित्र स्व सद्धर्म समाग ना ९॥ एतत्सर्व स्व कोनमात्रा ध्यान सन्न स्वयनु ॥ तमाभव तिजः १

२०३

[illegible]

निर्विघ्नमपकारकः ॥ सैव बोधिः स्वयंभू सम्प्राप्तश्च सद्धर्मं बोधिं ॥ सद्धर्मादि हितार्थेन सर्वसत्त्वाः सम्बोधि ॥ अपि वाचा धर्मदेशकः सम्यक्सम्बोधिं ॥ सन्तोषः कृतमाध्यस्थ्यं त्रयमत्र स्मरेत् ॥ पंचाभिज्ञपदं प्राप्य चतुर्ब्रह्मविहारिकः ॥ अन्योऽयं भगवान्मार्गयोगासमं नरादिनां ॥ सद्धर्मे ३०

योऽयं तथा सम्यक्प्रभवो ऽविकृतमानसं ॥ तत्र त्रय नासमाकं सर्वमपंचराजन राधिपाः ॥ स्वराज्ये स्वसुतान् स्थाप्य मुनेराश्रमं समाश्रयत् ॥ वितर्कं ज्ञात्वा वित्वा तं च छन्दं चरतः पतन् ॥ अनित्यता मा दृश्य यशाः स्वसुतान् तदा ॥ निरीक्ष्यं प्रार्थ्यमानोऽसौ मुनिश्रेष्ठं तदा यथा ॥ नमोऽस्तु बुद्धधर्माय संघायेति कृतः स्मरन् ॥ फलं कृत्वा ततः सर्वे पंचाभिज्ञत्वमाययुः ॥ ॥

सर्वं तद्विधिना सन्नादिना ॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा दत्वा दानं गुरुवचन ॥ तथा सर्वार्थस्य त्रिविधं विनाशविधिं सर्वं त्यजन ॥ यथा विधिवाच्छिंगंद्रयं संप्रार्थ्य प्रापमक्षिक्रियो ॥ ततः सम्बोधिं नाभिनिर्वृत्य दत्वा
र्विध्याय स्वस्तिकं ॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा शुक्लाशीस्वं गुरु नमस्तु ॥ एवं सर्वे देवि शिक्षितं ॥ सद्धर्मं कर्म साधितं ॥ दृष्टार्थे सम महान् विधिः ॥ प्राप्य नन्दनवीर्यतां ॥ तथा स्वाशीः सम्यक्सत्त्वः सम्यग्विधि
प्रसादितः ॥ सर्वसत्त्वहितार्थं च प्रतिष्ठानं यथानुपूर्वं ॥ यत्र सर्वत्र नामाक्षि यत्र पंचकषायितं ॥ जम्बुद्वीपे महाधर्मं संप्रतिष्ठितं नादितं ॥ तथा सर्वार्थ वासवरत्नवर्षयैव विशेषितः ॥ प्राप्य
विनाशविघ्नं सर्वं सम्यक् शिक्षीसमं शिक्षात् ॥ ततः सर्वत्र सत्त्वं तथा स्वर्गीय समनाम ॥ सद्धर्मं सम्यक् लोके लोकानंदकृत्यैं नर्वप्रवर्षयन ॥ एवं सर्वत्र लोकेषु ददतः शिक्षा सम्प्रदायदं ॥ सद्धर्मसंगं लोकानंदकृत्यैं च
प्रवर्षयन् ॥ एतया सम्यक् शिक्षया यदि धर्मानुभावतः ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन सम्बोधिं प्राप्नुयुस्सदा ॥ यथा सर्वे सत्त्वगता यथा भव्यजनप्रदितं ॥ सम्बोधिमपि सम्प्राप्य तेनास्य किं समानया ॥
दानशीलक्षमावीर्यध्यानप्रज्ञादिसाधनं ॥ संबुद्धपदसंप्राप्यर्थं स्वादिष्टं मुनीश्वरैः ॥ विना सत्त्वहितार्थेन किं सद्धर्मसाधनं तं वा ॥ सम्बोधिमपि सत्त्वानां हितार्थं एव साधयेत् ॥ एवं सर्वेषु
कर्मसु तथा यज्ञव्रतादिकं ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन सम्बोधिसाधनं ॥ इति सत्त्वा सम्यक्त्वानंदस्वार्थितास्मादनात् ॥ सर्वसत्त्वहितं कृत्वैव सम्बोधिं प्राप्नुमुत्सहे ॥ श्रुत्वैतत् त्रिविधानं सिद्ध

जा विभागीयसत्कुलधर्मव्यानिर्णी ॥ वार्याभुनाहन्नोकानामूपयमयथ्य विधि ॥ नगर सन्त मनिर्थनिमकु याम्राश्रपिकानाया ॥ नार्ययाससनेन कापिनमानव लेवनग ॥ सद्धर्मत्र नमंन कः
शुद्धशीलाजितेंद्रिय ॥ याचधनिय मेमोक्षः समदावुणंसुनावनम् ॥ एवंगंख्रमसेनके दत्तुसर्वर्थिनाऊनो ॥ सद्धर्मः मम यागपुरयोभिसंदरमूदा ॥ नगरसमस्तप्रभसचोलामसर्वान्क्षान
र्थिनीऊनान् ॥ यथा तिलपिण्डं यंदत्वा धर्मन्यथायेऊ ॥ एवं सव तिजः सर्वान्दत्वाड्र यंयत्थ्यमिनें ॥ वाक्ययंसव लोकाय सद्धर्म मम यथाऊयत ॥ एवं सव जनान्ह्यापि वश्च मित्र
सहस्रस्तवान् ॥ यथा तिलपिण्डंयंदत्वा धर्मन्यथाऊयत ॥ एवमस्यांथयोनान्सदविड्रा पूर्वगानपि ॥ दत्वाद्व्यानिमद्धर्मप्रवाधयन्यथाऊयत ॥ एवं संयकूनो क्षेयिदामी दामऊनान
पि ॥ दत्वाद्व्यानिमद्धर्मवाधयिस्वाम्यथाऊयत ॥ तथ कृष्णसेनागमकी पुत्र खिनावालकानपि ॥ दत्वाद्व्यानिमद्धर्मप्रवाधयन्यथाऊयत ॥ एवंश्री दीविकाश्च पिधीनाम्नाथस्व किमाथ २०७
दत्वाद्व्यानिमद्धर्मप्रवाधयन्यथाऊयत ॥ तथा तिमानिमकांस्वङ्कं सन्न निरवायिव ॥ दत्वाद्व्यानिमद्धर्मप्रवाधयन्यथाऊयत ॥ एवमस्यांथपापिसाश्र्रजनान्वकानुसन ॥ दत्वाद्व्यं
वसीकृत्यासद्धर्मममथाऊयत ॥ एवंसमकलाख्रीकान्वदनवापिनार्थिन ॥ दत्वाद्व्यानिमद्धर्मविनादयन्यथाऊयत ॥ तदाद्व्यमादायसर्वलोकाः प्रमादिनाः ॥ स्वस्वकुलमसान्वाना

स्वस्वधर्मवृषाद्यथा २॥ जिनस्तत्कानक्रूस्वामंवभिनगुरुसदा॥ अजक्षमानूतव नगवागत्रममनागर॥ निजूस्यागुहास्मार्ह स्मृतिक्रममवर्जन॥ गदामर्वाधिगत्नाकाम्रह्यानधर्म कीर्ति

तां॥ एष्वंस्याम्यनूमादन्ना२ पूर्वाविरहितन्दिन॥ शाधित्वाकममाम्वाना न्स्तुत्हद्वमर्वग॥ स्वर्वीर्लिव ममाक्रैप्रवबाबा हितन्दिन॥ गगश्वममहामत्व२ मुमिक्षार्थमग्नि पून२॥

मग्ह दीपा त्रिता स्मर्वान्सद्वर्मयाकुमेन्त्॥ नगन्दवधिमूर्लीर्यमत्ताकानस्वयंत्रजन॥ महान्नत्ता निमेन्द्रक्रममाहर्तेमवेस्तन॥ नगन्२मवधिक्र२मवों न्समाह्यममादनान्॥ मर्निपा

यपूनस्मघां स्वयमवंन्यवेदयन्॥ तान्नीवेवनिक्षं घा२ २२२ नामेववावृना॥ स्तवेनत्वाकनगो त्रुभिक्षभिनत्वमाधन॥ नह्यूयमपिमत्यालिंयदीक्षथमयामह॥ गन्तुवाब्धिमम

कीर्यमत्ताकनयदीक्षथ॥ यथगत्रमहामत्त प्राप्नुभिक्षनिमभवद॥ नन सर्वममायाणनत्ताकनत्रजामहे॥ स्तुतिनना दित्र त्वामर्वगवतिजामृषा॥ स्तुवेन त्वाकनग त्रुभिक्षना

एवमभूवन॥ कामान्सान्सार्थ हत्वा थवयंमर्वस्वघामह॥ स्तुवेनत्वाकवगन्रुभिक्षामनत्प्रमीदनाम्॥ स्तुतिमर्व२ममाल्व्यानंत्र त्वामसार्थनायक॥ पश्यमामत्रमादायप्रकार्तुं

तो२ महानन्न॥ जिनत्वानिमभग्यर्वाक्ष स्वामवस्वयंयनानिम॥ पितवोमग्रुनत्वाप्रकस्तगर्वविसिन्दुरुहो२॥ नान२ममहनौ२ मार्थो२ प्रवनमप्रभादिक२॥ कुममपवनदबानिर

पुत्त्वानेथजे स्थाप्य पूजयामास दुर्वन् प्रार्थमानो मणिस्तेन प्राव र्षन्नोवांछितं ॥ भव तार्यध्वजात्तस्मै द्दौ विधिप्रमाहरन् । सायार्थं ऋममागत्य यथाचे सत्यवादिनं । दारिद्र्यो मनिनः कर्तुं देयचिन्तामतिस्त्विति ॥ दीयते नेमणिरा यं सरां पश्चात्स्यमो रुवं । रु
व्यमानोपि सहजे रुपेष्य धवनी सुधीः । नमात्सम मणिं विष्णुः सज्जनो दनमाश्रयत ॥ १
दग्धे गतद्वरे ।

कनक

श्री सत्वमितिं द्वयं प्राव र्षयत्सम्भ्मन्नाग्र १॥ तद्युग्यं वर्षिमं हस्तुमसर्वत्रो काशमविस्मया १॥ स प्रसन्नाः समानायद त्वाऽस्माऽस्तव नन ॥ गद्दस्काद्राक्ष सोलस्ता विस्मयाकुलमानस १॥ डपश्च्यं तं म
हासत्त्वं यथावगंमसा मणिं ॥ मनेवं यात्म्यमानो मोसभिक्षार्थमणिर्मुदा ॥ मत्स्मसंग्रह्यायात्मेप्रदक्षेसं मसा मणिं ॥ मविप्रक्षे मसान त्वं प्रगच्छाम सत्तावनन् ॥ गृहकाय गृहस्का
प्यस्वार्थभवास्य साधयत् ॥ कश्चिद्विष्णुपकानार्थे नेवाकनीस्कदावन ॥ नगमक्त्रि १ प्रगतं नत्वमसक्तुर्मविधागण १॥ नम्मत्वा संमसामत्वाद्युर्हिंजास्यानं संक्षिनग १॥ त्वाकस्मिपुनर्मा
गुं नत्वाकनमसमेकग ॥ नग १ मवादिजः १ मवी न्सहत्मित्रस सायकान ॥ सादनं सम्प्रपाक्रुत्य पुनर्नव न्यवदयत् ॥ तव नानं पुनर्गतुं यत्त्वासूममसत ॥ यदिवाक्षि पुनर्वीका २११
समायाजेवगावहे ॥ ततो निवेदितं गत्वा त्वासा वणिजा पितुं ॥ सांजलि १ गुणि हत्वा मर्वयावं न्यवदयत् ॥ सा १ वदयंमस मंत्र स्मासवत्सायाप्रसादत १॥ महासमथ्य स्मसज्ञा १ सम
र्गोत्ससामत पूनम १॥ तवानपि महैश्वर्यलक्ष्मीप्राप्ताभिसम्प्रुतं ॥ तत्किमर्थं पुनर्गन्तुं यत्त्वाकनमनक्षव ॥ एतत्समय सम मायत्त १ मर्थं तु स्थायस्थस्मितं ॥ तिनत्व सउनं कृत्वाथ
मेंडस्व न्सस्वनम ॥ सारस्याग नुमीहस्वेन त्वाकनमसादरक्षे ॥ किंमवं वक्तुमस्पकोऽऽ १ सवमवसयान्यपि ॥ एवं गं १ कविन्यंत्रत्वाम्भिक्षार्थं मणि १ स्ताणी ॥ सर्वन्न १ स्वनिमं कालं १

७३

३६

नेवमाय्यमानमीदेव देवाय कुर्वन् ॥ तन्त्रवाराणाशाना ज्ञात्वाथ भूपतिः ॥ स्वयमागत्य दातारं बोधयामास ज्ञानवान् ॥ प्रत्याह दाता राजानं प्रकाश्य दानयोरुषं ॥ योऽशुम्यं कांचनं किंचिद् संख्या उपधारणीं । तत् स्वार्थं प्रसन्ना माता स्थापितं तत्फलं
फलं ॥ समरणं समायन्न नमु द्वीपप्रदानतः ॥ तत्फलं लभते मर्त्यस्तत्फलं प्राप्नुयात्सत्यं ॥ पूर्वदानफलेनैव भूपोऽलं द्वीपमयासरितः ॥ भूयो लप्स्यामितं भूप आजम्बुद्वीपवर्धकी ॥ ६

पूर्वक्रान्तवसत्रवीत् ॥ नादत्त्वा स्नमपूर्वार्थं नमस्य शीघ्रमपूर्णार्जय ॥ स्पृष्टितं सर्वदिक्रार्थं नमस्कारार्थं पिसमर्जय ॥ किमवज्ञस्य मसंसारं तस्य श्री शाश्वतं ध्वनयि ॥ विनालोकहिताय्थे
नजीविकनाधिकिंतु सं ॥ स्पष्टलोकहितार्थेदं दत्तं प्रक्रम्य समूलमद ॥ किमवस्य विनं शास्त्रं त्र्यक्षापि किमुखं तव ॥ सर्वलोकहितार्थाय स्वद्रव्यं तु यं चलं ॥ विनालोकहितार्थेप्र
सर्वमार्गाधिनिष्ठितं ॥ स्पष्टलोकहितार्थेदं बोधिचित्तं महायक ॥ एकोऽपि व महादानं संप्राप्तुं नलोक न त्रज ॥ त्र्यक्षयम महासत्व संबोधिमानिमर्गिकं ॥ एकनैव सत्वं स्थनम
मन्विनामुद्भवनं ॥ तस्थादर्थमपूर्वीर्यं नलोकनं ममयमं ॥ विनामाशिमहमन्त्रप्रा यस्य संप्राय योगतं ॥ तथास्तदं तमामाग्य स्वास्वापर्वैतिमंत्रयत्र ॥ छन्न मसविमानाय प्रार्थयदं
वमूत्रुखं ॥ यस्याणि ममममं वाञ्छाम्य्रेप्रतिष्ठ्यदयं मनिं ॥ यथा विलधितं द्रव्यं प्रवर्षं त्तममनोनं ॥ तथाहं प्रार्थितं नत्वविनाममति दत्तवत्त नलं ॥ यथाविलं धितं द्रव्यं सर्वप्रसमवर्षय
तं ॥ तद्द्रव्यं मनुजाः सर्व समादाय यस्थ्यं मितं ॥ प्रियस्त्वकृतनं कृत्वा दत्त्वा तु शुक्लात् नवमत ॥ तद्दृष्ट्वा तीर्थिकोलोकास्समहस्त्व मुपसृतं ॥ आदनमामिर्षदत्वा यस्या वर्तं महामदिं ॥
श्रायित्र द्रव्य प्रसन्नाच्याविनाममतिं नमास्मता ॥ स्वकार्यं स्वजा लक्ष्मी तीर्थिकायदक्षोमुदा ॥ तस्य हितं समादाय तीर्थिकः स्वाश्रमं व्रजन् ॥ तच्छीनिजायसु फलकस्यविन्यायद

इत्येतविधिकर्तरीत्वा ॥ अनेन दानपुण्येन भोजम्बुद्वीपवर्धकी ॥ प्राप्यपरं लं करिं ॥ नमतिर्भवतुस्था क्याभास तीर्थिकोभायिनीमौ सीनं पतिनार
यानिघनाद्याः सकलाः प्रजाः ॥ इतितत्वेन माहात्म्ये न्वमेवं जरत्तीर्थिक ॥

जा मानसा वि हा सर्व शास्त्रान्तपारगा ॥ तत्किमर्थं सदा पादं दहर्वर्णाश्रमं तथा भुवा ॥ स्मृतिसंबन्धं समानं दहन्वकुल संयुक्तं ॥ स्मृता स्मकं जग कृत्यंत त्किमर्थं विवाद ता ॥ स्मादोग्र स्र
त्रिकमेकसमग्र गो मिनं मत ॥ महामायाति षकः सर्वतर्व कृविनाजित ॥ नतः सर्वज्ञनामकः संसारधर्म लाल म ॥ वक्तु यावि दनसापि वत्तर्व वा स्मसृ स्तुजन ॥ वतर्वस्त्रिम
वा न्स्र ध्र स्समान ति मिमाधन ॥ वतर्वर्द्ध स्तुजनस्य वत्तर्वदा स्ममर्ययत ॥ विनीयमानवाक्कं वमसद्धर्मप्रन्यधाजयत ॥ तथाप्यमानवा स्सर्वा न्निर्द्वितो ममर्थाजयत ॥ एवंम
रूप गिंनात्र कामसत्ता स्सं र क्यालयत ॥ मूर्न्यसंदर्शय स्सर्वा निर्द्वितासमयग्रथत ॥ कुमित्र न्यं जग स्सर्वं नैवास्यं कुल्यं नास्र्वं ॥ प्रणीसार्या दसंत तपंवल तसमाशुत्यं ॥ पंच
लिं स्वमर्यघव मतं म द्विघ त्स्माति तं ॥ स्मि मिविहायनसंवादमुत्पादयथधर्मिकं ॥ एवंमत्वाजगत्सर्वं गत्यमवक्रनास्मकं ॥ इंदक वृद्धा कान्तनयिं यत्संवपु ॥ क्रम
द्रूह वा लयंद्रष्टं तत्र वदन्ति ता नर्म ॥ विहायाम्नि स्वदहमिसाम्रा स्स स्त्रसमाल व ॥ किं मानंतवसंवादकृत तत्र समाकुल ॥ इरखा स्सेव मृत्युर्त्त स्का त्रमनिज नावः सदा
॥ तदत्र किं विवादन किं विस्मानं न क्लिश्यत ॥ स्पजर्यथा तिमान संभो विग्रहसीम तत्रविह ॥ धर्मार्थमवसंमानसत्प शीलसमाहितः ॥ क्षधीस्सम काजोविद्या स्मृ संवनसमाव २१३

नत् ॥ समस्तनयप्रमत्तंपूर्वं संस्थाधिसाधनं ॥ सर्वाधिवंजगत्सत्त्वहितार्थसाधयत्सुधी ॥ एवं विज्ञायसंसारं न सर्वसत्त्वहितार्थिन ॥ सर्वज्ञस्य कलाहितः श्रवनधीर्यं स संवरं ॥ किम
तमस्त्वसंयत्स्यात्सद्धियार्थगुरोरपि ॥ तत्सले वलवीर्यं च विना सद्धर्मसाधनं ॥ तस्य हि प्राप्तुमद्यपक्षलक्ष्णाविक्रमे ॥ क्रमाद्विगमहान्सांदेववितत्यं स संवरं ॥ समस्तमपिमित्या
तं स सर्वाधिगुणसाधनं ॥ तदत्रैवममासाद्य संवरं तज्ञाद्विगं ॥ न भावे सर्वदा हेतुं सर्वत्रापि तत्वतः ॥ क्रमशः सर्वाधिसंहानं पूर्वं सर्वाधिमासाद्य ॥ तदाद्यं संसारस्य पानिमु
दृत्तिमत्तुल्या ॥ अगाद्धर्मसयं कृत्वा सु निर्दोषिमवाप्य च ॥ एवं तत्त्वं पतिज्ञाय सुसुक्ता वेसं समाहिता ॥ बाधिवर्यात्त्वितं स्वामेव तत्त्वं जगद्धितो ॥ सर्वैश्वास्त्रासमादिष्टं तत्त्वा
मार्गवामृता ॥ सर्वगतश्च तनुमादिस्वाकृतयकृतदिवादता ॥ ततश्च तत्राम्प सर्वं स्वगुर्वं स विहाविरागा ॥ बाधिवर्यात्रितं स्वप्रावन नामस संवरं ॥ ततश्च विमलात्मानः सर्वा
धिनिहिताभया ॥ सत्त्वधर्मसमावामा संविश्वगुरुसदा ॥ ततश्चात्मकलान्विप्रांतद्धर्मसंनियुक्तस्य ॥ उपाध्याया मताः सत्त्वः सुप्रसन्नाः जगद्धित ॥ ततोगतत्र संस्थस्कामे
वीर्यनिग्रहानधि ॥ सत्त्वर्यमासंगन्यारथ्य शास्त्रावनात्रसंयो ॥ तत्प्रवृत्ति जितार्थी सान्त्रामस्य तं समविशुद्धधी ॥ स्वयं ध्यानसमासीनः पंचाहितः पर्दसयो ॥ ततश्च सत्यसत्त्रो

श्री

निनाभिन२॥ त्वयश्रुमप्रधिमानमप्रार्थयन्नवमादनाह ॥ हगवन्तामहाप्तिह्न मत्कृपाकनूयामि४॥ यथाश्रमात्समालाक्ष्य स्वपप्रवर्णन कृति ॥ नथामदात्त्वया स्वध्य स्वर्वाच्चिक्रात्तुमर्हसि ॥ मदा

वर्यतवत्वादशनः२अप्संवनामहे ॥ श्रुति मे२ प्रार्थितं सर्वं ममकर्षिं२ प्रमादिनः ॥ सर्वाकान्वविजः२ पथ्यं स्यूनत्नवमुपादिशत् ॥ साधुमत्ननः२ धोरूढं यदियं प्रमिक्तथ ॥ नथाम नवन्न वनं क्रत्वाम

धर्मसाधनानि ॥ त्रिनत्त्वगन्नं कृत्वाप विशुद्धत्रिमत्तलाः ॥ कृत्वादानं यथार्थिभ्यस्तुत्रयं विराजितः ॥ स्वपनानि हिंसां कृत्वाप्रवनधर्ममाश्रितः ॥ श्रुतिभातिमनः कार्यं कर्तुमर्हथ सर्वदा ॥

श्रुतिमदादिष्टमाकर्ण्य सर्वेगवविजाः मुदा ॥ तथेतिप्रतिनन्द्य त्वा प्र२ तं मुन्यं मूर्तिपूनः४ ॥ तत२ मानोप्रमेनाहि दैवमानि२ मनीनिना ॥ कमत्रप्रवनं न्यवर्तत वक्षि लीनीनमायया ॥ तंगत २०१

कीर्यसर्वगवविजः२ मंप्रमादिनाः ॥ नात्रीनीनसमामीनाः मप्रपूर्ति विघादिताः ॥ एवंमवविजः२ सर्वा स्वसूकार्यं महादः२ ध्रु ॥ स्वक्रिसा२ गप्रतिष्ठाप्य स्वात्र नवम्समात्रयन् ॥ तत२ प्राग२ मम्

स्थेयं सर्वेगवविजामुदा ॥ एवंनत्तावनमार्गेन्यूपूनात्रोप्रवेदिनाः२ ॥ मत्रातितीघ२ योद्धृत्वाकृमत्तघिनात्मथि ॥ सर्वान्कान्वविजोद्दृत्वाम प्रितममुपाक्रमात् ॥ तंदृत्वा मप्युपायात् मदृष्टात्म त क्षमं

सर्वत्तस्थिताः ॥ तीताः२ सर्वाविवक्तनिरुत्स्कान्तनपलायन ॥ ततः स्यत्र वनगस्वसर्वं मन्यूत्संकिताः ॥ तदृषिमन्यूत्सृष्टस्नात्वाप्रार्थयन्नवमानताः ॥ हगवन्ताम प्रतिहृत सर्वत्र२ कृपयाद् वशिनाः भक्तानं

शा ॥ दृष्ट्वात्र समुपागम्य सहस्राणि समर्दति ॥ यदि नेदं कपयादृष्ट्वा पश्य क्रतुं न वांछति ॥ अत्रायं नाकुमारस्य सर्वनिम्नायनाजयत् ॥ दत्त्वा स्थितिमासन्न क्रान्दीनृतक्र त्वं नमितावृता ॥ दृष्ट्वा मिदं नाकवा
नतक्रुपादृष्ट्वा विलोकयन् ॥ सहस्रापसन् सर्वा क्रतुमर्दति पुत्रवत् ॥ क्षितिमस्त्रार्थिता तं त्वा पश्य सर्वं घितृस्थितम् ॥ सहस्रा कालनागं त्वां गदं निकेमपाश्रयत् ॥ तं दृष्ट्वा समुपागम्य नर्मसूर्णिं कीर्ति
तानवं ॥ तीनं सर्वं समुत्क्रम्य बाणवृद्धिं स्वमूर्धेन ॥ नतसम्पदिना सर्वं वाणवृष्टिपुवर्षितं ॥ घनभंघान्धकारतम सर्वक्रमा विविधितं ॥ नतगवाक्षं सर्वनिरुमार्गं विशोदिता ॥ ऊर्ध्वं विलापश्च वर्णा
विवृक्रुत्य पतनं स्वर्ग ॥ प्रलयं विलपन्नामं यथावृन्दं वगाम्यपि ॥ कवि सहस्राणि सहस्रानं कविसहस्राणि प्रजापतिं ॥ कविविष्णुमनुसहस्राकविसहस्रा सर्वाधिपं ॥ तथान्या श्रीकया लांय सहस्रा
दीययाविन ॥ सहस्रासार्गशाङ्कवि कवि सहस्रा वरेनवान ॥ कविकृतपापि सहस्रा कविसहस्रा षतामनं ॥ सहस्राकविस्मराकालं तथा गानतरानपि ॥ सहस्राणि श्वापुरानापि स्वासं
ग्रांययाविन ॥ नक्रुतं सप्तविंशत्यू त्वाकृपाकानुध्यवादितं ॥ सहस्रा समुपागम्य समाश्च स्वमादिशत् ॥ मार्गश्च पृथ्व सप्रारुय सहस्रा क्रतुं समावृत ॥ विस्तारं धैर्य मानस्पर्शं पिधानमिवं
पथ ॥ स्वर्वं गां समाश्वासयन् सर्वं स्व सविलोकयन् ॥ सहस्रा यदमादाय मेलना प्रक्रयकरं ॥ तं नस्वरुक्माव स्पृवद्धि क्रान्त्यसमयत् ॥ सर्वाधिप्रपितिधिं त्वा सहस्रावे वर्षार्पयत् ॥ यस्मया

आ गुरुं नत्वा समत्रिरत्नं ॥ नत्वा स्वम्भुं तथागतं सर्वज्ञं सुमङ्गलं ॥ लक्ष्मीश्च प्रसन्नात्मा सीमग्रे तु [illegible] लालसा ॥ सम्प्रसन्ना दिशः सर्वा विवेशाश्च सुखावहा ॥ भानुः सूर्यग्रहास्तारा सर्वाश्च
शिवे नजिर ॥ कल्याणं लवसम्पत्तौ सर्वासाक्षि मिलाश्च ॥ पुनर्दिव्यवाद्यानि समन्तात्समवादयन् ॥ पुष्पवृष्टिः समन्तेन [illegible] पापात्स्मूर्द्धस्थ [illegible] ॥ सर्वत्रापि पुनस्तत्र सर्वसत्त्वाः प्रमोदि
ताः ॥ शुक्लस्वादुसमानं कानन्दिताः सर्व एवं विनिन ॥ सर्वा वृक्षाः सर्वे [illegible] फलानि [illegible] प्यपि ॥ [illegible] प्रसन्नमयथा ॥ सर्वदेवाश्च [illegible] सर्वलोकाधिपास्तथापि ॥ सर्वा
[illegible] ॥ देवादि [illegible] पि सर्वे बुद्धा [illegible] ना ॥ [illegible] श्रीमा [illegible] प्रमोदिन ॥ [illegible] सर्वदेवसमस्थे [illegible] ॥ पूर्व
[illegible] सर्वलोके विस्मयानन्दमानसाः ॥ [illegible] विस्मयानन्दमूर्छिताः ॥ [illegible] सम्पन्नस्यानन्दना ॥ [illegible] हितान् ॥ [illegible] २०३
[illegible] ॥ ॥ [illegible] सर्वे [illegible] भूमित्र [illegible] ॥ [illegible] प्रमादिना ॥ [illegible] सर्वे [illegible] भूमित्र [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] प्रमोदयन् ॥ [illegible] ॥ [illegible] धर्मार्थसाधकः ॥ श्रीमान् [illegible] सर्वसत्त्वहितार्थभृत् ॥ [illegible]

३३

२ मसधाति २ सी धोमी २ कीदनिकाधाधीर मनं धावीर

रवन्दे नंनमस्तस्य २॥ विबर्णीवक्त्रसद्धायंस्त्रीत्वाम्रतिनामय २॥ जयतसर्वदाप्यस्य सर्वकार्यंवश्चिस्थित ॥ शुभ्रेवंतसमासंस्यसर्वपिमंप्ररुर्पिताय २॥ ममामन्त्रप्रपूनः २ सार्थवान्स्वसुगृहं
ययु ३॥ ततः ४ सुजनकलस्पजागिकर्मयथाविधि ४ कृत्वानासम्मिश्राथेमगिमिति यथाययत॥ नतः ५ सदानकार्स्याति र्थंत्री हि ६ प्रतिपालित ७॥ पुस्तानः २ पनि हृद्याद सुदर्कमिव
पंकजं॥ ततः सर्थावनाक्रान्तः १ पोहगदिव्यातिसुन्दरन ५॥ सर्वलोकमनाह्लादीनवसपुनमुहुः स्तवः॥ ततः २ सजनकोविद्यातिज्ञार्थसक्रुनामुदा ॥ सन्मानैः २ सत्सर्वं कल्याणस्वसनं तेन यथाउ
यत॥ ततसगुरुं सासस्य क्रि यमारःसायथाक्रमं ॥ लघुमर्वलिप २ यानंप्राप्य शास्त्राच्छिमाविक्षत॥ ततापिसहसायानं प्राप्य २ सर्वकलार्थविता॥ सर्वास्त्रं सस्त्रविद्यानो सपिपानं य
योऽगं॥ ततश्च सर्वसत्वानांनिमिलघु विव कृतः ३॥ सर्वविद्याधिपः २ साक्षावलघुवाक्ष्य पतिर्यथा॥ ततस्ते सा सर्वधीर्नसु मिष्ठार्थसमिपिता॥ सवंमि ध्रु लहकोव्यवसानस्यसक्षयत॥
ततापिसमहाविहः सत्यधर्मार्थसाधकः ४॥ सनी निम्यवसानश्च सर्वाज्ञाकान्यनादयत॥ एवंस्वलहकल्याणसत्सार्थसाधनोद्यतः ५॥ वरुद्रव्यानिसंग्रहकसहस्वर्यपदंययौ॥ ततः श्रीगु
धामपलि समच्छिमान्तः संमति ३॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा गुरवनं तसमास्थित॥ ततः ५ सन्द्रव्यानिरंसर्वार्थिभ्यायः थपितं ॥ दत्वादानंप्रसन्नात्मा सांप्रधर्यं क्रामसमास्वनत॥ ततः क्रमसु

आ

त्वा तपःप्रभिवाधयन्॥ सर्वांस्तान्द्विजः पश्चसमागम्य स्वयमब्रवीत्॥ तातवर्णाहमाध्ययनो कार्यायमा त्रिकाः॥ स्वकुलदेवता ॥ स्तन्वा स्थैर्यमालम्य तिष्ठत॥ तस्य कर्मणा नामसर्व
तस्य विप्रमिवाधिताः॥ नत्वा तानावमा त्रिस्य स्थैर्यमालम्य गच्छिव॥ ततस्तान्सकलान्सार्थान्नो कथ्यांसंप्रतिष्ठितान्॥ दृष्ट्वासमानथिर्नावेधावानयन्नसादरक्षो॥ ततज्ञमतमा नो
कापूर्यमा ॥ समूवायूषि॥ उदस्थर्मर्थ्य संप्राप्य कथं संप्र क्लिशालवन्॥ तो दृष्ट्वा गवतिष्ठं धाः सर्वर्णकाविमाहिताः॥ कश्रेयानं समामतन्त्रप्राथयत्न वमानताः॥ तामा स्वप्रव
यं सर्वतवश्चन समा त्रिकाः॥ तस्य भीदप्रयत्न तनावंर्षविप्रवान्य॥ श्रुणिमे प्रार्थितं सर्वशीमे ॥ स्वामनाविकः॥ सर्वास्तान्द्विजः पश्चसमागम्य स्वयमब्रवीत्॥ मोरमेस्य स्थे
र्यमालम्य स्तन्वा स्वकुलदेवताः॥ कर्मणां समाध्ययनिष्ठतमाविषीदत॥ श्रुणिमद्वचनाक सर्वगवतिष्ठत॥ स्वकुलदेवताः स्तन्वा स्थैर्यमालम्य गच्छिन॥ सनाविकः प्रय
तेन नार्थवानयिष्ठमूष्ययो॥ तथापिनवनपूर्वकाशिमवक्लिशालवन्॥ तदा गवतिष्ठ सर्वमस्य कर्णकाविमाहिताः॥ तादेवं हविनष्टाः स्म स्वस्य कृष्णकेवनिषादिनः॥ तानवंवति
कालीता न्वार्थयाय स स्तमि॥ पदस्व सर्वान्समागम्य स्वधायव्येवमादिशत्॥ मातवर्णाविषीदस्थं स्थैर्यमालम्य तिष्ठत॥ त्रीन्सत्वानां स्पर्शिशं दृष्ट्वा नाम सप्रार्थयं च न्दतां॥ यदि

देवाधिपाधि२श्याक्षथापिनावनंदव ॥ यभगाक्षीर्थवाक्षम्नि क्षप्रयाम्बर्हिसमर्पि ॥ यवायिदिप्रिनवानांनामउत्वार्थवामृका३॥ गमर्वविमलात्मान२ मृप्रयाप्यदमखावरी ॥ कृतिमत्वा
रवनात्रस्मंनवत्रयंगाथा ॥ एतत्वामममृत्वार्थनमस्कृत्वावागिस्त्क ॥ कृगिनेनममादिर्स्ं‌ऋ त्वागवधिक्रमथा ॥ सर्वथ्वंप्रिनवानांस्म‌गिंध्वत्वाप्रधामिमा१॥ नमावृशायधर्मायमं घा
यवनमानम२॥ एतत्वामममत्वार्थनत्वात्ताधंयथाविन ॥ एतद्धिनवनिर्धार्थऋ त्वायश्चिममांश्रिका॥सर्वंगत्यनुभादकफांनांवममवीचयन्त७ गत४ मानावनन्नाशुमक्षिवाना
नृकृ नत३॥ निश्चंपपवनन्याशुनत्वाकनंममायथो ॥ गत्रगवधिक्र२ मर्वगत्रनवाकनमृरी ॥ यत्थक्याममनत्वामिममामृधिममादङ२॥ मायिमार्थपगिकत्रममालाव्ध विवान
यन ॥ मतविनामभिंनाम महानत्वंममादधो ॥ गत४ममार्थत्ह कुरु२ सर्वक्षेवीगिऔ२मह ॥ मक्तुंमत्वममयत्र६ स्वम्निप्रत्ययाङ्गं ॥ गतस्नीनमम्भूतीर्थस्वत्वानमप्रमादित४॥
मममात्वपुनंप्राप२ स्वगृहंममृपाविशत ॥ गत२ मयवंमित्वात्वाधाममेवगमादथत ॥ गन्धिनामगिमानांयममृद्धिंगमहद्भुत ॥ ममयश्रीप्रमत्वामामंवोधिप्रतिधानत्कृ ॥ मा
ॐ लि२प्रणमिंकृत्वाप्रार्थयदेवमृन्मृव३॥ यथाकंमममममस्वारश्चो मंप्रमिज्यकृगाविन ॥ गतस्त्वांनीक्षिगंडवंप्रवर्षनृमहामह२॥ ॥एवंमंप्रार्थितगनमक्रीवि नामविक्रथा ॥ मर्व

जा

ति सार्थवाहावदानं समाप्तं ॥ ॥ अथाशोको महीपालः प्राञ्जलिः सुप्रसादितः ॥ उपगुप्तं पुनर्नत्वा प्रार्थयेवं सभागतः ॥ तद्भदन्त गुरो मिच्छामि श्रोतुमुत्तमं

षितं ॥ अवदानं मुनीन्द्रस्य तत्प्रसादं कुरुष्व मे ॥ इति संप्रार्थितं राज्ञा संघ श्रीमतीसभा निविष्टः ॥ उपगुप्तो यतिस्तं तं समालोक्यैवमादिशत् ॥ साधु राजन् महाराज यदभिवाञ्छसि श्रोतुं

तत् ॥ अहं संप्रवक्ष्यामि तच्छृणु त्वं समाहितः ॥ भूतपूर्वं महाकाले तत्र कल्पसंस्तावे पुनः ॥ निमिन्धरनामसमुद्रकृतसमलं कृताधिष्ठितं ॥ लोकधातुस्तदाभूत् सर्वसंपत्समाश्रितः ॥ पञ्चवर्षस

हस्राणि जीविनः कामसेविनः ॥ जम्बुद्वीपे तदा तत्र सर्वे सत्त्वाः सुखप्रकाशाः ॥ कुशलविग्रहसंपन्नाः सम्बहुसुखस्थितवन्तः ॥ तदा मानवाः सर्वे सदा सौहार्दयोगिनः ॥ यथाकामं

सुखोपभुक्तः भावनं पथ्यं कृत्या ॥ नानाकामनतामस्ते धर्माधर्मविचारविवर्जिताः ॥ इत्यासंस्ते प्रजाः सर्वे यत्र भाविनाशिताः ॥ मानवाश्चानुसंपन्नाः सर्वेधर्मपरायणाः ॥

दुर्लभाद् विमानकाद्यालक्ष्मी भाविनः ॥ किञ्चित्त्रिमिश्रमासाद्य विष्णुभागिनः मिथ्यादृष्टयो महासत्त्वा निष्कर्मणः प्राप्तवन्तः प्रत्येकबुद्धपि ॥ तस्मिन् सत्त्वपरम्परासु लक्ष्मीविलक्षणं

गः ॥ कलिप्रवृत्तिसंस्थानः प्राप्तकल्पसमन्वितः ॥ तदा तत्र महासत्त्वा धर्मात्मनोर्गमण्डलः ॥ तत्प्रमथि नाथाः दिव्याश्च सप्तकुलस्त्री ॥ तस्थैव सत्त्वलोकानां महद्दुःखप्रवर्तितं ॥ स

=वा

=ध्रा२

२१४

४१

स्वर्गस्थ कामस्तास्वाद स्तुतः स्फूर्त्त्वाललयः ॥ ततः स्वर्गतः स्थ्यं लोकस्रष्ट्री धर्मसामानः ॥ ब्राह्मयामस्तु लग्नस्नात्मस्त्यात् द्विजाः कर्मः ॥ तत्र वाल्यापिधीमान् सर्वविद्यानपानगः ॥ स
र्वशास्त्रेषु काविद्धः सर्वविद्यानपानगः ॥ ततः पृथ्वीं वनश्राद्धं धर्मशास्त्र विवक्षयः ॥ संज्ञानाविवनास्तास्तु सर्वाधिपुत्र लालस ॥ ससूर्यमालगान्ध्या व्यादि वचनाद् यातिमस्तन ॥
सर्वलोकप्रियः कौन्तीव सोपूरूर्णं सर्वसंस्तुवन् ॥ ससर्वान्दानका न्विप्रा न्साध्यायान्यथाक्रमं ॥ पृथ्वीपर्यं स्थित वर्त्तदा स्थूलोभा सत्रम साधना ॥ ततः सदानका सर्वं वक्तर्दानापा
वगाः ॥ धर्मशास्त्राध्यधीशोपिवत् वृर्धर्मवाविदाः ॥ ततः सर्वपूना धानिजामकरा समहूजिकान ॥ पूर्वदानाविसत्रा विसर्वा विपितकान्यपि ॥ पृथ्वीयमस्तमायानप्राफार्मस्स
र्वार्थिकाविदाः ॥ प्रबोधितः प्रगल्भाश्व वल्वून शिमानिकाः ॥ ततः सर्वपितविहृः पनस्यनज्यथिदाः ॥ निर्व्विवादसंनक्का विप्रक्काम न्विनाधिकाः ॥ ततस्त नित्युत्साध्य
ध्या मदमानाविप्रविशा ॥ पनस्पनंप्रिपि जियप्रान्वनेआघिताश्रयाः ॥ ततस्तं सु मिताद्वाना सत्यस्वधर्मविदकाः ॥ सदालौमलमानज्ञा स्वर्वनूर्यस्थकृया ॥ यथाकामंमूर्त्व
सुक्ताप्रवदनीयस्थहितं ॥ सुत्राम स्वाइनासुकाः प्रवनुईनिगस्वयि ॥ तत्रवाम्र् विजानक्का सुर्विनीकाश्चिलाक्षसः ॥ सामकाविनतुमास सुसमासाक्षेत्रमादिभम् ॥ ताहयं

= वा ३

= श्री २

जा

धनान्यपि ॥ सर्वान् सत्वान् समाजान्पूर्वा समाधान्य प्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य नियच्छेत् समपादितान् ॥ [illegible] सात्वा [illegible] धं भमनमाय स्वमीभितं ॥ तस्मूर्यं सम्पूया कर्म्भवनितं
सर्वदार्म्मेदथ ॥ यस्दस्तीर्थिता [illegible] नाद्य [illegible] पिनि [illegible] ॥ सर्वयूथं [illegible] मात्ता [illegible] योवन सम्पूया त्रिताः ॥ [illegible] सर्वप्रम्पलीर्दत्वायु [illegible] मास्मजा ॥ नाद्य तान्त्र नितिष्ठाप्य
पुत्रजितं समुत्कम ॥ तस्मार्ये [illegible] मानार्भ [illegible] मनं [illegible] ॥ मित्थ मैत्री समाश्वाना विदर्कु मर्हतां सर्वे ॥ [illegible] नृपेन्द्राशो सर्वा [illegible] सत्वान् [illegible] ॥ नृपधर्म प्रतिष्ठा [illegible] प्रतिपद्योनः
प्य बोधिमार्गे प्रयाज्ययन् ॥ [illegible] पंच [illegible] मनाद्य सर्वसम्पदः ॥ पंचनाम विनागानि [illegible] सम [illegible] यन् ॥ [illegible] विनदानाद्य [illegible] नपितिताः ॥ [illegible] गत्वा २०१
तस्मनन्ताश्रमयथो ॥ तत्र [illegible] पादा [illegible] ॥ [illegible] प्रयर्मतु [illegible] यावन् ॥ [illegible] यायाभिनवकालवत्स मूर्दा ॥ तत्र [illegible] प्रवर्तमा [illegible]
तमर्हति ॥ [illegible] प्रार्थितना [illegible] सम्बोधि [illegible] ॥ सत्वानविधिना [illegible] पुत्र [illegible] नंददी ॥ तत [illegible] विमलावान [illegible] परिशुद्ध त्रिमण्डल ॥ तत्र [illegible] समाधायं [illegible]
पुं वशिमत् जित ॥ [illegible] मूलफला [illegible] ॥ समाधिर्धान्वयी प्राप्य [illegible] पर्वयथो ॥ तत्र [illegible] प्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे प्रति [illegible] समया

[illegible]

[illegible]

जयते॥ तस्यात्र स्थितिः सार्थवाहः पंचव णि ऋष्णे २॥ सहनन्ताकनगन्तुं दक्षि णाक्षिमूपावनतः॥ तत्रनार्वसमानूढ ऋमणावनतंस्तत्र ३॥ सर्वक्षिवाणिजः सार्द्धस्वक्षिनन्ताकनंयया॥
तत्रसर्वपिसंप्राप्तावणिक्रस्थ प्रमोदिका ४॥ पुरतापिसुवन्तापिसमाप्ता यमुपावननः॥ तामथवास्त्र सनाधीनः सार्थवाहाविवृऋ यः ५॥ विन्तामयि सेहानन्तसामाप्रप्राप्तनन्दनं॥ ततः स
सार्थहृत्सर्ववैणिक्षिकैस्समेन्विनः॥ पुण्यागन्तुंश्वदर्शवनदन्वक्षिसवागनतः॥ तस्मिन्स्थगगसाक्षिमहिस्यानानित्यास्तग ७॥ ऊतिनाल्सहतेत्रान्नसहोर्मिनादशीघ्र ८॥ तदातत्रा त्रि
तानानांसर्वऋष्णाक्याष्टन्ता ९॥ दवनाश्वनथसर्वाःप्रान्नूनूरविश्वटिता १०॥ सर्वनवणिजःपिनहानानिहत्नात्रया ११॥ तन्नप्ल सं काचि भासश्वाकृत्तहनिश्वसकानतो १२॥ तदृष्ट्वासोमह
तिल्लुसूर्निरकानुस्थवादितः॥ सह साकाशं नागत्वानत्रावं सम्मूपाश्रयन॥ ततस्तान्वणिजः सर्वानृष्ट्वासंत्रासमोहितान्॥ समहर्षिः समाश्वास्य सर्पेश्वरवमादिशत्॥ मा विरीत सद्यय
ि स्थैर्यमालम्ब्यतिष्ठत॥ त्रिनत्वनतंऋत्वाससत्वामंयास्त्वनालयं॥ स्मृतिनमसमादिश्य त्वासर्वपिनमुदा॥ दृष्ट्वासभूमिसर्दनं सनाऊलयप्रशमिन॥ ततस्ते वणिजः सर्वे भूनम
स्यानूश्वसनाः॥ त्रिनत्वनतंऋत्वासत्वायसोविनेनयं॥ सेनवंयाविनसानोनिश्वसाहत्नयालिन॥ तदृस्यानानित्यक्षपित्रसन्ताहृत्रवाण्यिनः॥ तदानवणिजः सर्वप्रायानप्र

=स्थे २

जा पर्यवर्द्धत ॥ तदा समस्तलोकानां हर्षः ख्यातपीतिमा ॥ दधिर्द्धिमान्गताशां ॥ हस्तिसाम्भिताधिका ॥ कृतिनाविग्रहं कृत्वा पतनस्य नं विराधिका ॥ सस्थ धर्मा ग्राणिक्य रूपितः स्ववव
ति न ॥ तथा सर्वापि सत्वाक्षुद्रस्य इमिनाधिन ॥ दन्द्रि नागइ ॥ स्वाकीवल्लभूनीनकांस्त्रवा ॥ तदाम्रनालयस्थ्यो यावाधि स्वाध्यायदधि ॥ सर्वलोकस्य नावानंददर्शी दिस्ववक्तू
या ॥ सत्वसर्पइ नावानं पृथ्व्वलौ कानूध्ववादि न ॥ गान्नरुत्रां न्नसमृद्धिवीर्य स्यसाधता लवत् ॥ नग ॥ सकन्द्रा क्रुद्धं सदास्यौ दिवि ध्यत ॥ सर्वलोकव हिम्ल ॥ पत्न्यागर्के
समाविशत् ॥ यदा गर्के प्रविष्टः स तदां सार्थप गं प्रिया ॥ लाथीतिस स्वसंपन्नामद्धर्मे श्रुतमेकन ॥ नग ॥ सात्रमनानानी सद्धर्मश्चवांक्षिनी ॥ कर्णाविलंसमाम नुञ्च स्थवसं २०१
वात्वत ॥ स्वामिन्नयमस्त्वान्नोकिम प्यानन्दमूर्छितं ॥ सद्धर्मत्रवस्थातामहपिव न्थेवनतप्भूता ॥ कृतिसार्थादितंत्र स्वासार्थवाहः सविस्मित ॥ त्रांस्पं गुरुं मामन्नुतनह
स्व यंवदयत ॥ ता कर्म मनार्थयस हाननाम्कूलास्या ॥ उनादिनीव सद्धर्मभव ख्यातं समिष्कति ॥ तदा ह्यानिर्मित्तं किंतु तं स्योदधवौ न ॥ तथा सप्यगिनी ज्ञत्रस
समादस्य सह नि ॥ दृष्टिमत्त्रा थितस्तनसार्थवाहन सहितः ॥ नम्नि मितसमालाक्य तस्मावबमूयादितत् ॥ सहयस यदवा गतोर्यावव तिगर्के नी ॥ यस्या गर्के प्रविष्टायां स तस्य

त्वारवद्भुवं ॥ एगस्येघानुलाव णस्ववर्मे अतिमिष्ठति ॥ तदनस्यामनन्क्रुद्धेः सद्धर्मेऽअ वयदपि ॥ तदनस्यानिवार्थेनवाम्भनार्थिनायगीन् ॥ मृदर्थेत्र ध्यादत्वाद्भ्यानिष्मम का घय
॥ दवना क्षम मस्यर्थप्रार्थयस्वाम्यगद्भतां ॥ एतांवत किं शीमम्य कालयस्वविनादयन् ॥ भगस्याप्यपिद्वदर्त्वकानयमृप्रयत्नतः ॥ यावत्स्वरवणम गाथेमुखेनप्रतिपालय ॥ गर्कद्धैस्या
मदामत्वः संप्रविशान्नवद्भुवं ॥ तदघाममथपूर्वप्रमदेत्सूनूधालमं ॥ सपुत्रमहामत्वः सर्वमत्वहिनार्थन्नम् ॥ बाधिमत्वामयीधीनः श्रीमान्वनानविद्यमि ॥ स्मृतिमार्थयतिमत्वाम
स्यमदनवान्यथा ॥ महानन्दगुणात्स्वाल्वईययवनमस्तरवं ॥ स्मृतितनममादिष्टेत्र त्वाममार्थेतस्पृदा ॥ वाम्रपंगंममस्यर्थीनत्वाप्राक्तापययम्न्दं ॥ तदानस्वगृहनस्यमार्थतर्क्कृदिनादि
न ॥ क्रमतश्रीः पुद्धमाह्वक्रुपक्षस्वाप्य ॥ सर्वत्रनद्भकागस्यमार्थनत्रिलदक्रमाह ॥ सर्वामंगलयनेमिलप्रश्नमितमलद्भुतं ॥ ततः समप्रमत्वात्वामार्थवाहः समादनात् ॥ दवनावि
धिनास्यर्थदत्वावानानिमर्वदा ॥ ब्राम्रवान्यागिनातिक्रन्यानीनर्षीक्ष्ययक्षिनः ॥ ममामस्वप्रतमस्यर्थ्यमन्क्लप्ययर्यनाघयन् ॥ तथानत्वः प्रमत्वस्यः सर्वस्यः सवाधिक्ते तिः ॥ नार्ययामन्
सद्धर्मेऽअवर्मप्रमादिनः ॥ नपिमर्वकथानघ्यमन्कानसंप्रमादिना ॥ सद्धर्मेमृयादिवधनालद्वंगातनाघयन् ॥ ततः सामममयनानीनार्यामार्थपतः सती ॥ सूमतमन्दनंपुत्रं

गै

ना सर्वसत्वहितार्थतः ॥ सद्धर्मश्रावणं लोकाः प्रावर्त्तयत्समन्ततः ॥ तदानकीर्त्तिसिंहस्तस्य सर्वत्र प्रभासितं ॥ प्राप्ता सर्वार्थिनो लोका महासाः सम्प्रहर्षितः ॥ ततस्ते थिकलोऽ सर्व
सर्वेदिम्य१ समागताः ॥ मानवं नमस्सिद्धार्थमभिवंद्य प्रादिता ॥ समुपेत्य सभासेष्य मेथ्यवाश्रिर्यतमानुमान् ॥ एतोदयि तमालाच उपयस्ता भिषंदनः ॥ समं सिद्धार्थमभि
ई .. स्तुत्वा सर्वास्वमुपाश्रितान् ॥ यथाविलम्बितेऽव्य१ संव्यसमसाद्य नृ ॥ तास्सर्वान् थिनस्थ सोमसमास्थस्य प्रबोधयन् ॥ त्रिनत्न ठउनोस्ता सधर्मसं स्पर्याजयत् ॥ ए
गादलङ्घ समासाद्य सर्वगार्थिजनास्सुका ॥ त्रिनत्न ठजनं कृत्वा सद्धर्मसम समाधयन् ॥ एवंकृत्वा लसुखाङ्गं सनामि लोकः१ विनापि स१ ॥ दत्वाद्य सीम सास्थस्य सद्धर्मसम समयाजयत् ॥ एवं स
र्वार्पनिङ्गं थैउर्जना स्नस्त निःस्थापित ॥ सदर्थीमान मसर्वंथुद्विविक्षन्त्वस्म कानपि ॥ यथाविर्वाकिनेऽईद्ये प्रतास्य स्नुप्रयत्नतः ॥ प्रबोधाय स्नसमास्थस्य सद्धर्मसं स्पर्याजयत् ॥ एवं
सत्त्वे सलोका स्नुप्रवर्धितास्तदाधिर्गं ॥ त्रिनत्न ठउनोस्ता सधर्मं सर्वास्यथाजयत् ॥ सदा सर्वपिलोकाः सदानंतःकाय प्रमादिताः ॥ त्रिनत्न ठजनं कृत्वा महासांसाहे१ प्रवर्तिने ॥ त
दा सर्वत्र सर्विंजना पावन लक्ष्यावनं ॥ सदा सुहितकर्मवाहविनुस्सातःउदासनं ॥ एवं सर्वत्र लोकस्य समस्त सांप्रवर्तितं ॥ समं सिद्धार्थमभिर्ई स्तुत्वा प्राप्तनन्दस्वमस्वथी१ ॥ ततस्स २०९

सो महासत्त्वः सर्वसत्त्वहितार्थभृत्॥ विहानमाधिरूढ्य यपथ्यस्वदं यविनायक॥ स्वहा समाधिरूढ्य यत्र सम्यसंगतः॥ तदत्रार्किं प्रदत्वाहं तोयपिपासितावकान्॥ नूनंमयाव
काः सर्वे निनाशमितस्ता मया॥ प्रश्नाशाविषक्तस्य विनिघ्नन्ये गुरपूनः॥ तदाल यात्रेऽर्हिर्द्भुं महात्यागतविद्यति॥ तदा सर्वे पिपासाकाश्च दविद्रवागपीडिता॥ कृपाहितापिपासान
थविध्य गिपूनः कसो॥ इंगेत सत्रक्षायिता जिकाऊं नत्वा कोनपून॥ गत्वाभ्यस्त्वा निमग्नस्य दानंद्रूयो सगडिगा॥ धूम्मिमि शिवथीमान् सम्भिद्धार्थमतिः पूनः॥ कासर्वा न्वनिजः सार्थान्समा
सन्त्रीवमब्रवीत्॥ तदेवाहंपु नर्गत्वं नत्वा कन सम्भूतः॥ गतंत्रयादिवांकं किं समायागत्वजामहे॥ प्रूमितसाधितं त्रि त्वागधाकं चि सम्भूयता॥ सतंपाथं पथिन त्वासादनभेवमत्र
वन्॥ वयंतासार्थेत्वा थग त्वं नत्वाकनपूनः॥ त्वयामेत समीकासमस्त्रमीदृजामहे॥ इति निनिन्र सादितैः सर्वैः समारव्याण निशम्य सः॥ सार्थवाहो महासत्त्व स्वार्थिप्राप्रानन्दतः॥
तरसमा थेत्दी नाम्न्त्वा त्वस्य यन भूयः॥ तदर्इयथ्यमासाय प्रणस्यां समस्थितः॥ सत्रमप वन न्य पक्षिणं सहस्व हिजने॥ पत्राममनगोनयः॥ न्सम्भूत्वा यमपावनम्॥ समाहूय
वनं श्रीर्नं महादयनृपागतः॥ करुणार्ते समास्य पुत्रार्थयदवसादनाम्॥ तासात्र ध्ये वयं सर्व भवत्यसमामागताः॥ तत्रानत्वा कनस्य हिप्राप्य थित्वं स्वमर्हसि॥ इति संप्रार्थितं सर्वैः

आ

त् ॥ सर्वत्र व्याप्तिगुह्रत्वंप्रवर्षयन्सदापिवा ॥ गुह्रव्याप्तिमभादायसर्वसत्वाः प्रमादिताः ॥ त्रिनत्व तत्रनंत्र त्वादत्वात ध्यात्तभवनन् ॥ तदृत्वविप्तिमत ॥ भक्त ॥ स्वनृपा समसुतं ॥ सहाय

त्वंसमत्वा स्वप्रर्ण स्वेव समादयत् ॥ धन्यासित्वंमहासागसर्वसत्वहितार्थकृत् ॥ नूनंमानगतां सर्वाक्षि त्वासंबोधिमाप्नुया ॥ यत्र धर्म महानत्वं समनार्थपितंमया ॥ नन्मयाप

त्यतांधन्यत्र न्तुमसुर्निमर्व था ॥ तत्रत्र तंमहानत्वं संसार्की स्वविलोकयत् ॥ यथा तिलापितंकार्यमर्वत्र नूनं थामहा ॥ कृपादिक्षुमनत्रशविन सर्वमरु वीर्यवान् ॥ दवनाशंग

मालोक्यप्रणत्वेवं न्यवदयत् ॥ दर्वन्द्रतहिजानीयायन्ममनोहिवांक्षितं ॥ तथापित्वकामस्त्रविहृ्यनमयाकृतं ॥ यदक्षेत्रिजगत्सत्वहितार्थेबोधिप्राप्यथ ॥ सदस्मपितंरुत्र २१२

मिक्षोकिमितनंमर्षिं ॥ तत्रैवप्रतिपन्नायांतद्दलंसवमायदि ॥ तवांत्सत्त्यभिमानयत्साधयतुंजगत्छितं ॥ कृतिनममात्यागंत्वासविप्सितादवि ॥ धन्यासित्वंमहासत्वो

त्यक्तं ते त्विति वावदन् ॥ एवं सुपवनाशापितं शीघ्रेविप्सितामयः ॥ ततस्तत्त्यभिमानायसधर्मामसुणायथो ॥ तत्रदेवमत्तामीनामर्वामुदान्विनादयन् ॥ ततीर्थगुप्तंगोत्रासमा

नस्यधर्ममादिशत् ॥ तत्तीर्थगतसमाधिदृष्टत्र त्वासर्वतिविप्सिता ॥ तदवासप्तुपधा सावंप्रसंनस्य अहर्षितः ॥ कृत्यवंसमस्तिकार्थमतिप्सत्वहितार्थकृत् ॥ दत्वाद्रव्यापिमर्वाणि

= १३

सर्वान्सत्वान्प्रबोधयन्तु ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य त्रियानस्थ पियाजयतु ॥ कालं दत्त्वा पुनिर्गत्य पुनर्देवालयं ययौ ॥ तत्रापि समस्तान्सत्व २ सर्वान्देवान्प्रबोधयन् ॥ सर्वसत्वहितासादी शुद्धदेवे श्मसान
मनु ॥ तस्य भीलगवाक्ष्ये स्थापुनाज समस्तत्रुप २ ॥ सार्थवाहात्तत्र संवर्ते सर्वसत्वहितार्थतः ॥ दत्वाद्रव्याणि नत्वानि प्रवर्षयन्नक ३ ॥ बोधयन्सकाला सत्त्वान्त्रियानस्थापयिथाजयत ॥ स
बोधिप्रविधानेन सद्धर्मसमथाजयत ॥ एतत्पुण्यानुभावेन लोकपार्थिवं यिमत ४ ॥ जित्वा मानगणान्बोधिसंप्राप्य सगणान् वन ॥ तामयन्पूर्व्व सामास त्रिभवं पुनस्थापि ॥ सद्धर्मसमु
यादिक्ष सत्वान्वा धैयनादयत ॥ ॐ तत्पुत्र जगत्कात्मा २ स्वामिनेसमनुपा श्रिमा १ ॥ सद्धर्मे प्रवियात्र तारकं सर्वनिसर्वदा ॥ भिम्भुनुतः धिस्त्र नमया नदथाव्यत ॥ तमथर्वसमत
वाजत्र त्वाला कोपि श्रामय ॥ सम्बोधयस्त्रयत्नेन बोधिमार्गे नियोजयन् ॥ दत्वाद्रव्याणि मत्स्त्रसमद्धर्मधाजयप्रजा ३ ॥ तथा मसङ्गं निश्यं सर्वजापितत्वद्भवं ॥ क्रमतो बोधिसत्व
संपूर्यबोधिं समाप्नुया ३ ॥ तस्मा चित्तं यती द्रयात्र त्वा त्वाकीन नाधिप ३ ॥ तथ्यत्यनुभादित्वा प्राप्य तन्द्रसमस्तक ३ ॥ स्वबधानं सिद्धार्थ मत ३ सार्थपकाविदं ॥ श्रावयन्ति प्रमतत्रायं
त्वध्वनि यत्वमानवा ३ ॥ तत्सर्व पिमहामत्वा ३ सद्धर्मसार्थनायका ३ ॥ तद्रश्मीर्व्यंपुत्र स्का नामपुण्यानि जिनोलयं ॥ ॥ इति श्रीमद्रत्नकमालायां सिद्धार्थ स

पां३ =कर

जा जगद्धितं ॥ यथा गतकलितं सर्वं तथा सर्वं सिध्यतु ध्रुवं ॥ एतत्स्तोत्रं मया ख्यातं तस्मात्त्वां स्तवदं जगद्धितं ॥ तद्द्विषि विज्ञयापकं कलितं तत्समस्त्रयतु ॥ हृतवानाक्षा महावाक्ता गन्धर्वाधिपतिश्च
तं ॥ महर्षिसाधुवादेन संप्रणम्यैव मद्ब्रवीतु ॥ धन्यासि त्वं महासत्त्वा जगत्तद्धितास्तकः ४ ॥ तत्सर्वं कलितं सर्वं समस्त्रयतु जगद्धितं ॥ अत्र सम्पितथा तत्र सर्वा सुखान्विताभ्यथ ॥
कृत्वा तदा तिसर्वत्र कृत्यां सत्वा कृतेतां यथानु ॥ प्राप्य तीं पतन्माधिया सतिक्रम स्तुतिक्रियत ॥ शानि क्रोध विलग्ना सा स्तगापिनानकृयततु ॥ यस्त्वेतां इत्न ३ पश्य त्वापितम स्तु
सादित ४ ॥ सर्वसंशानस्तु रत्नेजुआन ४ प्राणीया धाक्रिनालयं ॥ स्तुतिसत्वा प्रसीदा त्र मामिषीदजगद्धितं ॥ सर्वनीकलितं सिद्धं तवकृतत्तद्भयान्वितं ॥ विनुहृकामस्तो
वाज ४ हृन्मा अधिपति स्वयं ॥ महर्षिस्तिनी स्तुते वपु संस्थेवं समादिनतु ॥ सारस्य तद्ब्रह्म वागस्तु यत्त्वं जगद्धितंभ्रमा ॥ ततस्तिवांक्रितं सर्वं समस्त सर्वगा ध्रुवं ॥ ततो सर्द 220
जैता सर्वा संत्रास यत्रिवानयत ॥ कृत्वा तद मह स्मात्तं कृत्यां सत्वा कृतेतनतान ॥ योयतां तडिकांवि सांप्रणिक्रियास्तिल्लं पर्यत ॥ समस्तां तत्रयन्त्र आयान्तयर्यवमानकं ॥ य
स्त्वेतां समनृपात्मा कृत्स्तु प्रसन्नान सदपि ॥ तस्या हृत्स नतं तद्ब्रह्म यथा यावाक्रिनालय ॥ स्तुतिमस्य पविहायसं प्रसीदजगद्धितं ॥ यथा गतवांक्रितं सर्वं तथा सिध्यतु सर्वदा ॥ विनु

याज्ञापिता गस्त्रङ्कं महर्षिं विलोकयन्॥ साधुसाध्विति सिद्धांताध्य सभासमन्त्रे वमब्रवीत्॥ सांख्यतत्त्वसमीहातीतनिक्षिप्य ष्टिक्रगाच्छित॥ तत्रनैव विधास्यानंयत्र विसयमास्थिता॥
यानिक्रमादिमाविद्यात्मसदाङ्गर्गनाग्रमत्॥ पश्चात्यानसमतार्हर्षात्समेदासफलावनत्॥ स्तुतिसप्तंसयारव्यातंमन्त्रायतक्रगच्छित॥ यथायक्कम्लिर्मसर्वीनकथानसमच्छ्रनां॥
वैश्रवणःपितयक्षेन्द्र महर्षिं विलोकयन्॥ साधुसाध्विति सिद्धानाध्य सभासमन्त्रे वमब्रवीत्॥ सांख्यतत्त्वसमीकामगताधिद्यकृगाच्छित॥ तत्रयक्षकामीत्यानंनैवब्रनकदावन॥
यानिक्रमादिमाविद्यात्मसमदाङ्गर्गोलवत्॥ तत्संस्थापितदापश्च्येस्वदासश्रीसमप्रिमान॥ स्तुतिसप्तंपनिहायसमृद्धगक्रगच्छित॥ यथागक्कम्लिर्गयक्कलश्चसर्वसमच्छ्रनां॥
देवेन्द्रापितश्चप्रारुनाञ्जश्रापितथावदत्॥ प्रष्टस्ताधिजनंद्रष्टवतस्थैवाप्तबर्हैःस्तुता॥ तथासूर्योदयःसर्वग्रहाश्चसर्वाश्चतारकाः॥ तंमहर्षिंसमालोक्य संपृष्टश्चैवमब्रुव
न्॥ साधुसाधुमहाभत्वयत्वं ऊगाच्छितार्थलत॥ तयप्रक्षुदिशानंततथासर्वसमच्छ्रनां॥ यक्षीगन्धिविनानाम्नाकर्मसुस्थयेनकूर्म॥ तस्यपदंनिवृत्यागंकृर्वीमदिवयंसदा॥
यत्रायंपनसाविश्यास्रंस्वापितास्रवर्ह्निता॥ तत्रविघ्नग्नाइस्वासर्वयायुःपेनस्मृत्वा॥ वयंतत्रसदाउंडंनिवृत्यातंनिवीतिकी॥ सुविक्रंमस्रधास्रांदकृ ॥ यांसश्रीस्तेवर्द्धिकं॥

=नि३

श्री

मा२५·मा॰शो॰मा॰श्रो॰
पाति·माघ·३

विरु न्तामयामन्नानिच ॥ सर्वार्थयकन नवन्सूनि सर्वार्थकन न्यान्यपि ॥ सवर्क्षसाग्निमामाश्च नन्थनन्थ आज्ञानपि ॥ गथन्यान्वादनांशयिविविध र्क्जिनान्यपि ॥ कत्रध्रञ
यताका दिविमानवामन्तानिच ॥ विविद्राणनस्थ यक्षाश्वी० भिंदामनान्यपि ॥ धन्यादिसर्व भयांश्च गथअशम्याश्चमड्मानू ॥ स्कन्धमूलयन्ताना निरुन्तानि विविधा
न्यपि ॥ पंचाम्रनिपकानि विविधमादकान्यपि ॥ दगताम्बूलसंयुक्तं नमायनमदोषधं ॥ गथन्यफलनाशुदि सर्वपिकन नान्यपि ॥ मस्तकस्थप्रभयाथिस्य सर्व
न्यापिमादनाम् ॥ यथदर्शी प्रिमंगतलक्ष्मीपद्यावर्दशेमूना ॥ एवंसंपुदद्यानं सर्वार्थिसादिवानिशं ॥ मतामघ कृत्वा कर्षदानवर्षमवर्षयत् ॥ तन्त्रदानमसाध
र्यकीर्त्तिमाकर्णे विस्मिता ॥ सर्वे र्थिनाधिसर्वासा दिस्याधिसमूपायपू ॥ दानानंतमरुमन्त्रं सर्वतीर्थिजनामुदा ॥ हस्तमभीयूनानन्दं महाजदंगजाश्च ॥ ता
नर्थिजनान्सर्वान्दानादंसमागतान् ॥ समीक्ष्य महामन्त्र प्राप्यानन्दमादित ॥ तस्यार्थिनप्रमंत्रासादस्वाद्रव्यंयथेप्सितं ॥ जिगायययावकान्सर्वान्संतुष्टिप्र
तिनन्दिमान् ॥ गघनकीर्त्तिधीनयमर्थिवाक्यपूर्ति कृतं ॥ सर्दजहाननसर्वषांहयोनामभिमानिनां ॥ कद्दकेंद्र यथादायसर्वगार्थिजनान्पुपि ॥ यथाकामंमवंस्तामस २२४

श्री

मंवा:२

=थइ =शो =ष्या

मेवाभि: प्राप्तवसु ॥ गतः सर्वविवर्जीतः तमर्थिजननियामतं ॥ दृष्ट्वा धर्मविनं फाल्गुनं नरुष्टि समुपागवी ॥ तंप्राप्य प्रार्थिताः सर्वदुष्टिं प्राप्य पूर्वि विनर्धिता ॥ न स्वदानं नर्गि [illegible]

साध्यका र्थनि कथनं ॥ गतः सामि महादानाम स्वार्थिना हि तां विमान ॥ दानं च घूपनीमास्वाध्वार्वे वंसम विनयत ॥ स काम्या: पूर्वाभ्यपि नियं त्वप्र यो स्युवे ॥ स

नात्रान्य धिया यनार्थ र्थिनि: प्रियवादिनि ॥ समात्रय नमात्रेषि प्रख्याता विकर्मिता ॥ स्वाप्रशल्व वागर्थी सोम्लः पुत्रायस्वपि ॥ यदि भयाय काम्ययत्र दस्यय

स्पृभि क्लिर्गं ॥ गतवृन्तं समनूत्स्थसंप्रदातें ससमृ स्नद ॥ भूमिगस्य सतीक्ष्यहा स्पदर्शपिनि: स्तहं ॥ सत्वापराणि प्रियास्त्रीदेव कम्यकृ विषादिता ॥ तदा तस्या पवित्रदेवा: पु

ष्टेदृष्टी न्यपापतन ॥ साधुकाव प्रदत्तं व प्रावृत्तयि स्वयत्नत: ॥ साधुसाधु महात्मन सर्वं दद्वी न वंक्षुवी ॥ यथा समी पितंसर्वे समस्य कलनथावत्व ॥ भूमिदत्वे महा प्रा घ

: समाख्याता निसमयं ॥ सान वाविस्मिता: सर्व सगकार्य वमनुवने ॥ वगकाता गतर्दवं तस्याग्वनस्य तलपत ॥ सर्वं ददभूमि स्वार्थं साधूना विधीयते ॥ तत्र यनी र्थिका

लध्वावास स्मृतिमानिका ॥ स्पृष्वनं नं महात्म सर्व ममम स्यं वंक्रा घिन ॥ याऊं देवत वाग्वदद भूमि त्वि धीयत ॥ तन्वाउघ्वाभिमवीपित तु सर्व तिमास्त्रतं ॥ भूमिसंप्र

रा.

इत्युदितेनृदितस्तेन स्वाराज्यमकंटकाधिपान् ॥ सूतान्पुत्रीश्च सर्वांश्चपश्च नाको विमोदितः ॥ ततः स राजा ॥१४॥ गृहे तमाम त्रिंगदश्च नमन् ॥ सा त्मजा तांप्रतापाय स्वालयं सद
भाववत् ॥ तत्र स्त्रीराज्ञ्यःपोषितं सर्वे नीत्वा तांश्चात्मजां सभी ॥ विनीयते स्थितिके धर्मे नियुक्तः समपालयत् ॥ तत्रमासद्विकाना ही पुत्रपुत्रीसमन्विता ॥ प्रिनत्र सनतं स्वा सद्धर्म
प्राप्तवन् सदा ॥ मायिनाजामदा सत्वा सर्वाधिपतिर्भवन् ॥ प्रियन्न तनयं कृत्वा प्राप्तवन् वाधिपमन्त्रं ॥ तदा श्रीनीतनामसौभव कालिमानिकः ॥ समस्याभीर्व वा
दत्वानु पायेवमसौपतः ॥ अयदेव महाराजकन्यासमस्तु तं सदा ॥ यथा समीहितं कार्यं तथा सर्वं समाचर ॥ सर्वं तद्वत्पतिस्त्यामंतवनामसमस्ते कृतं ॥ तथापि हिवाचि २२८
तं सर्वे दत्वा कृत्रपुष्पितांहितं ॥ यावत् विघर्यंतां कंगतः सर्वं संप्रददिस ॥ यद्यत्तत्र दयाभिस्त्वं यथार्थे गतामसिद्भलम् ॥ इत्युदितस्त्राधिपतिः स्वाधाम्ववान् पतिर्मुदा ॥ तत्थ मि
त्रिप्रतिलघ्य गंधिकसमर्थ यत्नमदपयत् ॥ तत्कृत्वा मन्त्रिरतिः सर्वे नीतिविद्याविवर्जितः ॥ निवापिताधिपिन दानं दत्तसर्वा स्मासमसः ॥ ततः स सर्वमंत्रानां महामन्त्रीन राधिपः ॥ ते
नीय सर्वे विप्रं समान स्त्रीवमादितः ॥ दत्वाधिपकमादो गतां सं दास्यामप्रहं कुर्वं ॥ तदा श्रीमं प्रतिष्ठिस्त्वा स्वयं धर्मं समाचरन् ॥ सामात्या मन्त्रिरत्ना सर्वा स्त्री कांक्षया

निकाम्॥ स्वयंसमीक्ष्य सञ्चीक्ष्य विचानयि कृमर्द्दसि॥ बोधिचर्यावतारं दृष्ट्वा स्वयंचैन समादिन॥ बोधिचित्ताप्रयत्नेन सर्वाङ्गाकार्य्य चानय॥ बोधिमार्गं प्रतिष्ठाप्य निवार्य पापमा
र्गात्॥ पालयस्व कल्याण स त्वा न्वा स्व अवस्थाप्यैव॥ तथा बलं सदा नन्द्रं निच्चन्त्या मैं तव कुरुव॥ क्रमात्सम्बोधिसेवानं पूजयेत्वा बोधिमाप्नुया॥ अन्यथा अवधितास्तस्य ५ पवत्रनव
कं पतन्॥ नो नाशु ३ रवाहि सेत फा त्रमध्याव सर्वं सदा॥ कृमिस यं पविस्तय सदा मो च्चैय दीक्षति॥ त्रिरत्न भजनं कृत्वा बोधिं संपालय त्रम॥ प्रतिसंवल संमार्गविशुद्धं यो
गवंचलं॥ धर्मस्थिवक्षितिर्लोक सर्वदानि ध्वसाधेत्वा॥ तस्माद्धर्मं पुनस्त्वा स्वयं नीत्या विचारयत्॥ बोधिचित्ताप्रयत्नेन तु सं संवोनयप्रज्ञा॥ ध्यानाधिस्थान भामि त्वा
सर्वश्रीगीनसंभूसा॥ तद्धामन प्रतिष्ठाप्य स्वापयित्वा यथा विधि॥ दत्वा पदालिपि धर्कं स्वसमानाप्यन्न पायसन्॥ सत्कारेर्विधिना सर्व्वं सर्वानि विषया ति सर॥ ना ... न्य
पितसर्वा थिसंकं न्याय्य स्तेद क्षीस्वयं॥ गत२ मन्त्रप श्रामन्त्र सर्वा स्त्रीकाप्रबोधयन्॥ विनीय बोधिसत्त्वं नियुक्तं समपालयन्॥ गतो ... सप्त ... सर्वानप्रतित्रमन्॥ स
बाधिप्रतिविधिं दृत्वा गत्वा स्थानं समाश्रयन्॥ तत्रैकान्ते मनोनाथ हृत्कमल समाश्रित॥ त्रिरत्न स्मरणं कृत्वा ध्यात्वेवं मम विनायतः॥ यदि तत्सर्वं बोध्यापि श्रद्धया स्वे हितार्थं

येके चिद्गिरिगोमर्त्या वमृष्ट्वा छ्रवसदा। येवापि भुवि पाखाली अनिलग्रासस्तथा च ये। ते सर्वे पिशाचत्वात् ब्रह्मराक्षसलादिकानमुक्ताः चित्रयासत्य
पयस्त्रपुरुषिरंतथा। नरा स्यत्रिलोके पुनातान्मे तः प्रकीर्तिताः। भयाविर्भतिसत्यानावलवनराः। परपालवः। मान्साशिनो मान्साहाराव सा हाराव सात्तिनः॥

=स्थाः=

जा गुच्छकाः किंचनाष्ठपि॥ कृत्स्नाध्यानाकृत्स्नानागतानुजाश्वमसावका॥ मिज्ञाः माध्यस्थयक्षाद्यैनेनवमासुःकाष्ठपि॥ विद्याधवाश्च वेडाश्चप्रमथाः रूटपूतना॥ तथा यत्रसत्वाधन्न
प्रणयिनविकाः॥ सिंहव्याघ्रादय आपिजन्तवः पक्षिणापि च॥ कृमिकीटादय आपिमक्षकादंशकाष्ठपि॥ नताश्च हिंसकाद्याकृत्यापामास्थातुवाः॥ वसुधा क्रीडावासावानिर्द
इत्याहु स्वनिपृष्ठानिनामयः॥ एवं श्रीमत्स्कासहोदरदानपुदलवानः॥ वर्षसहस्रमाफ्लाय सर्वसत्वानर्पयत॥ तथागसर्वसत्वाश्च दक्ष्यप्रमान्सहाजकाः॥ पवित्रज्ञाभयात
द्रावलवुर्वी क्षित्वा विदः॥ तताः कोनमप्रायाम शासनावाधिमानसः॥ त्रिनव्रतस्य मिमाधाय सुस्कादर्यथादिवं॥ तत्रस्वर्गिपिमसासहः सवाधिप्रदिक्षानलन॥ वाधयस्य क
लंयवास्क्षर्मसंस्थाजयत॥ एवंमवकृत्वानाजात्वासर्वमितार्थेत॥ सर्वीस्पनिग्रहान्नयस्काद्वैदोमान्यपिसृदा॥ एवंमतगवान्सर्वैदानपानभिनावननु॥ क्रमासर्वाधिम
स्थानंदूनपिस्त्वाजगद्धित॥ सर्वत्रिभात्रकलाकसद्धर्मसंप्रकाशन॥ जिनवामानगस्थानत्वाधिप्राप्य जिनोतवत्॥ ध्रुवस्य त्रिजगस्काः सवधर्मिंसस्यसद्गुना॥ सद्धर्मान्तु कास
अप्पापिसर्वत्रिलोके स्मिन्युभिन्नजातिकाश्चते॥ मान्साहारा लोहाराव सा हारामत्लाशिनः। प्रत्राधुरामज्जाहाराभंगाहाराः श्लेष्माशिनः। वानाहाराः लिपानकाहाराश्च फलाशिनः। गन्धाहाराबल्याहाराधूपदी
पाशिनस्तथा॥ जलाहारास्तथान्या हाराश्चिनाशिनापरे। धूपाहारा विलोहारावृद्धमन्नानिरामयः॥ मारभीनासनपरादृष्टवहनिवारितो॥ ॥

ते
संतोषणं संज्ञ
यमवडनग

नं श्रुत्वा तद्गुणीयं प्रार्थितः ॥ श्रुणु भगवन्नादिष्टं त्वा मयागच्छ यत ॥ त्वयापि च महाबाहो त्वानुयनि च ख्यमाः ॥ नाकाश्च पितथा सर्वा कुञ्जा व थि त्वा पुनाथ यत ॥ बोधिमार्गे
प्रतिष्ठापय प्रवानयम सदा गुरु ॥ तथेति मंगलं तिष्ठं सर्वप्राणि हर्वकुर्वं ॥ क्षमा न्याय भिताः पूर्यम स्वार्थि प्राप्य याञ्चि ॥ श्रुणु तिम नार्द नादिष्टं त्वा रक्षा करः महत्यमि ॥ तत्थ स्वगुनु मा
दित्वा प्राप्तनन्द स्तपार्थिकः ॥ यत श्रुत्वा श्रद्धया दंसक लनच यत्र तन्मवन स्याव यानं · सर्वे लोकाश्च वय लि प्रमुदित हृदया यथ व सम्बोधि कामाः ॥ ममर्व बोधि मत्वाः सकल हितकवाः
मञ्जुघोषी मम वाक् शुद्धा सो त्वं सदा ते जिनवय निलय याति सद्धर्म नम्यं ॥ ॥ श्रुणु मित्र मम स्वीराक माला याम स्व नत्वक्र वर्ष सर्वेन्द्र दाव यानं समा मये ॥
अथ रक्षाकरः सह सीन्द्रः कृताञ्जलिः पुनरागतः ॥ उपगुप्तं गमस्य नत्वैवं प्रार्थयत्पुनः ॥ तद्वद त्वत्र भिक्षा भि पुनन न्यस्त सार्थिनं ॥ मुनीन्द्र सपूनाथ संप्र कृताञ्जलिः समादिश ॥ श्रुणुतिमं
प्रार्थितं तासा त्वा भाषेऽहं महासति ॥ उपगुप्तान नन्द्रं सभा सा सर्वं समादिनतु ॥ साधु श्रुणु महावाक्यमनु यामयं स्थादिनं ॥ तथाहं तं प्रवक्ष्यामि लाभ्यस्त्रं कृतं पुना ॥ तत्रैवात्र
महीलोक गतः कालान्तरे पुनः ॥ सत्वाः सर्वे इना वाना सर्वं पंच कषायिकाः ॥ गतः श्रीमान् वृहत्स्वा गदः ॥ तु न सवाभि दा ॥ दुर्मतं विमानकाः दविद्रः रवरागिन ॥ पत स्य नाय

जा हृष्टिवना हृष्टिन कालपिनवर्षितं॥ ममाम हृष्टिनव स्याम्थ कालंप्रवर्षितं॥ तत्राहंगनुजवागामुनामया विवानयन॥ मत्वाप्विनीयमद्धर्मनना नृयाँमुरवा ग्विना
नु॥ याथनांयनमांविद्यांहृ स्वाक्रत्वा विनिन्दयनु॥ मश्रीमम्बे निजुष्टाममापिननकवुऊन॥ यक्ष्यनांममालाक्वक्रत्वानत्वानू मादन॥ ममवाश्रीमुरवापना॥
याया ह्वाना जिनालयं॥ ममुभगनमा ख्यातं विज्ञाय मंप्रुभीदना॥ ऊयाम्कुगमसकमहृं तया त्रिश्रमुवाक्ति नं॥ ऊगत्वा [illegible] धियावाम्नपृष्ठि [illegible] विलाकयन॥
माक्षिमिमं प्रणंमित्वाम्र मामम्ब्रवे मादिनम्॥ महर्षमंप्रमीदन्प्रमा विषाद कृथं हे विन्॥ यथममीहितंसर्वंमथमिद्धं कवक्षव॥ यत्रेमदिक्षिनायमकर्मेव २१९
स्ययनं कुर्म॥ मयनप्रवनन्वैववाता त्याम कयावन॥ यत्रापीयंमहाविद्यामर्वास्याग विद्याविनी॥ क्षिमयव निमामप्रवाद त्यामंत्रनत्वा॥ तत्राहमनकाप्रष्टोनमर्वा
विवार्थ्यंरमाथुयनू॥ मत्वा ग्विनीयमद्धर्मप्रवचयंऊगद्धिन॥ याथनांयनमांविद्यामनिक्रमत्वाति क्षिपन॥ मऊन्मादविमत्वान्माममापिननकप्रमन्॥ यक्षयनां
ममालाकक्रत्वावृमादिमानऊन॥ मेम भीऊ श्री ममहा ख्याया या ह्वाना जिनालयं॥ एतन्ममंममाख्यामंमत्वागवप्रमत्नधी॥ ऊयमडंमकामयात्रिशुकु गमसी

दितं ॥ यज्ञभ्रष्टनदत्वापि तंमहर्षिभिर्विस्मयकृत ॥ साधुवादनमस्कारान्धसमासन्नेश्वरमादिशत ॥ साधुसाधुप्रभस्कंतप्रसीदितंऊगाढितं ॥ तत्प्रसीदमहद्ध्यगसर्वनामनमस्कृतं ॥ यत्र
गाढिविनाकर्मस्वस्वरूपनं विधीयते ॥ तत्रयज्ञकृतेनाथ्यानंप्रभसमर्पितात्रि ॥ याथ्यनांपनमाविश्यामणिक्रमंस्वमादत ॥ सश्रीप्रसन्नस्यनिग्रहासगाथनेनकथयत ॥ यस्वेनांडंयागयथ
न्योऽरलिङ्गप्रतमर्मस्मृत ॥ सश्रीप्रसन्नस्वरूपावनीयायास्मोनांस्वरूपावती ॥ तत्रयज्ञेसुनानकास्वर्वान्स्वान्विनिवानयत ॥ इत्येवप्रसादयन्नस्त्वानुनयपर्यंगुरुसदा ॥ तदत्रमाविशीदत्वं
प्रसीदऊगाढितं ॥ सर्वेतवाङ्क्षितं कार्यंसमंस्तपगतनवान्यथा ॥ एतत्स्वपंसमाख्यातंमस्वायमऊगाढितं ॥ अथाकृतुतस्मात्दुतयाहृष्टकस्यितं ॥ नानाकृतनास्थापितंमह
र्षिं विलाकयत ॥ साधुकानप्रदत्वापिसमाभन्नेश्वरमादिशत ॥ साधुसाधुमहत्स्वयत्वयालक्ष्मीहितं ॥ तत्सर्वं मत्प्रसन्नेनानान्यथाभ्याकदाचन ॥ यत्रगाढिविनाकर्मनागर्भो
न्येविधीयते ॥ तत्रतत्कृतेनाथ्यानंप्रश्नंसर्वगतेऽक्षत ॥ याथ्यनांतोडिकांविश्यामणिक्रम्यविस्मयत ॥ सश्रीप्रश्लाउनृस्मभ्राससंगापिननकथयत ॥ यस्वेनाकृतनाथीवप्रसन्नरसा
ऽलिनिमित ॥ सश्रीसहपममपेनोयमयाश्रोनांजिमालयं ॥ तत्रतत्रायिनावाचंइत्यासर्वाश्रिवानयत ॥ इत्वामहाविमस्त्वांथप्रनयपयंगुरुसदा ॥ देवेशप्रसप्रसीदत्वंमाविषीद

आ प्रक्षांश्वयि महानाऊमंबाधयन्प्रयत्नत॥४॥ बाधिमार्गप्रमितिस्त्राण्यपालयवानयस्कैल॥ तथाग सर्वदारद्धं मिनूस्यार्गं न वकुर्वं॥ क्रमात्यानभिमा॥ पूर्य महाविघ्राप्रयाम्नयि॥ ५५
मिमनार्द्दृमाधिष्टंक्रू स्वो॥ माकश्महेपमि॥४॥ नस्थमिप्रमिनंन्दिस्वामभादमसवाऊन॥४॥ यमूर्य मात्मान्धमयुश्नर्धं॥ प्रद्भयामृपा॥ सूवदानमिदं स्वा॥ गंधृद्वनिप्रा
वयानिर्यं॥ ममर्वसकुधाधनाश्रीमम्यत्नस्मरवोप्रया॥ क्रुस्कावह्ममसवान्यवप्रानायायु जिनालयं॥ ॥ख्मिष्ठी मस्कानकंतालायां मूर्यमालमान्यो
स्यक्रुस्कर्धिकाफकादवानं स्तनाष्कं॥ ॥ मूष्यल्गाकामहावाजामाकृ लि॥ ममृपाप्रधन॥ उपयुफं नमर्द्दनांप्रदत्वाप्रार्थं यस्तून॥४॥ नदन्त॥ माक्रमिक्कामि २२३
पूतनभ्यक्तगद्भुना॥४॥ स्वदानंपूनाह्ह कंगस्त मादस्स मईति॥ स्तिमंप्रार्थितानाह्मध्वाधार्द स्धीर्य ति॥४॥ उपयुफानन्दं नमम्मालोकवमादिनत॥ माधूनाजमहा मनोमया कल्याने २
लागयमगुनूलधिर्न॥ नथमसंप्रवस्कामिन स्कूस्नमममाक्षित॥४॥ नपथाह स्नूनकूप्र ननकल्यानानुवि॥ मंप्रंयम महाकल्पपंवकमायवानर्स॥ जम्बूद्वीपनदाम
प्रमर्वयवकमाधिकाश॥ लाका॥ मंक्रुमिनाल्मानावहवृद्दं विमानना॥४॥ नदामलगावास्वर्गदवनगाधिनगल॥ मम्यानीममृदावांनदर्शकनूधामक॥४॥ हस्तामवी

१ नैरयिकयाम १
द्विविकयाम २
सत्वकयाम ३
आयुकयाम ४
कल्पकयाम ५

स्तनुष्यामस्मुक्रिकृशुभिनानमान॥ सदर्ष्यीमानमासान्धान्धमाकृमलमंनमान॥ विलोकयन्मनामसर्व१कृपाकानुस्थवादिनः॥ सर्वोल्कान्मानवान्धाधिमाःगनिधाकुम्भेदन॥ तत
१सकनूपादहशादिवस्थूलावनकुवि॥ जम्बुद्वीपवर्त्तनामनगरेन्द्रसमूपावनत॥ वक्रवर्ति कुलजंतजमलहजगाधिग॥ तत्राविशः सर्वासांविद्यानांपानगः१सुधी१॥ सुम्व
मानामनाऊ द्ध१ सर्वविद्यांपिपावन॥ सवोल्यामान्युक्तयवहृद्वापामनमेंनग१॥ सुविनयोवृनकान्लामूनकप्रकृतिश्कृती॥ सम्रुल्पाहस्मनन्त्रम्लन्स्वगात्रक्रिकामथवा
न॥ स्वान्सकाश्कृवसद्धर्मविनीयापान्तयस्फुजा॥ त्रिवर्गानुष्युधा॥ सर्वगुणा॥ सद्धर्मसंगमा॥ वकुमम्बिंनिविश्कन वैवासंर्घ्वनाधिका॥ विनयाध्वमानांयापदिवद्धर्मधमा
सनि॥ संधिवप्रमकानांमात्रीस्मियथ्यार्थिकः॥ उदानसत्कुमाधान१वक्तृत्रस्फविहानक॥ श्रीमनमयल्लस्सखावाम१सद्धर्म१स्वमनिहन॥ मानिदानुसवकानमाहानथि
न१सम्मूपागमान॥ स्कन्धिप्राप्तिर्मदृष्यान्स्थप्रमपप्रमादिनः॥ ससर्वद्रव्यसंपन्नाधानमालोः१समनागे१कानयित्वा सतदानवर्षप्रावर्षयेत्पुन॥ सधांकुद्रव्यनस्त्रानिम
र्वार्तिकयेधानिव॥ सर्वेतोस्मानिपानानिसनमद्यंजनान्यपि॥ पुष्पाणिपुष्पमालाश्चसवर्विवस्त्राण्यपि॥ सगन्धगेलवृर्णानिविविधमधुनान्यपि॥ पृथ्वीवस्त्रक्रा

ॐ गानि न कु
मे स क ली

आ

संसारवकाप्यनेवसुस्तुक्षेविन॥ ततदर्थंसमीक्षार्हंसहं यक्षाखवान्धव॥ दिव्यानिमित्तान्यस्मान्नार्थाश्च्यद्वयान्येषिकिजानथ॥ तदत्रमतवनापिसद्धर्मयदसाधन॥ नविप्रंकर्तुमर्हन्ति
यदीक्षुन्तिसिवांगनि॥ दास्यामीतिप्रतिज्ञायथान्यथाकृतनमम॥ समस्यधर्मविघ्नस्य॥ पापिष्ठादुर्गतिर्ध्रुवं नृ॥ हितीक्ष्णार्थिनामामांदास्यामीतिवाचदन्॥ विसंवादनतत्कस्य
ववसानाकिनिस्तुणिश॥ यदेवंवक्तुयाथ्यंतदयांतदेवनकिमात्॥ किमनीप्सितनदकेनयनार्थानाकिंनाषितश॥ एवत्राणानसमाधिसुसन्त्रिमुख्यश्प्रगल्भवाक्॥ निनर्धक्षा
पवार्नर्म्मनृपंस्त्रमेवमब्रवीत्॥ यानतत्त्रमहालक्ष्मीरूपमामंलस्यतस्वया॥ नामूयस्यकिमर्थेनमानस्फार्जितस्यप्रियां॥ यस्त्वंतकसमानंस्थितस्त्रीर्थवश्रीयमयुगिश॥ यदे — २२७
वर्थमरकीमान्वीर्यनानायश्नोपम॥ तनोन्यत्किंमहत्साश्चेलिप्समानान्त्याधिप॥ मद्दास्यार्थमनीर्थायोमर्थिनिदातुमितिक्षमि॥ तद्भवास्वास्यजानमानमालक्षीसर्माम
वीं॥ मामास्मायथिंनदद्यियदितर्त्रमदकृति॥ क्षितिमनीदिगंकुत्वानाज्ञासविनयान्त्विगश॥ मंत्रियगंमहाविर्स्मसमालाक्षेवमादिशत्॥ नार्दमर्वमहीत्त्रस्त्वंनापिस्वगीन
निर्ह्हर्ति॥ प्राप्नुमतस्त्रयानानिसंप्रदातुंसमुत्सद॥ मपिस्वहंजगत्त्रीकर्त्तुंमाप्तिपविताधिन॥ मद्धर्मास्तयानेनप्रज्ञोदीकनत्योयमश॥ तद्यदीकमितिमद्धर्मश्रीमत्
=श्री॥

नाय स्तोमर्तं ॥ समेत स्संप्रदान्तत्रुणास्य नृ मा दि सीतव ॥ ९५ स्त्र क्रामसमक्रामत्वा नाज्ञा नान्वा स्मज्ञा स्त्रियां ॥ नार्यास्सर्वान्समादायप्रदत्तीनस्मै द्विजानय ॥ ततः सन्तपतिर्नृ यत्रा
श्च गंतं प्रबोधयन् ॥ वहृद्धयानि नत्वानि प्रदत्वैवसया दिशत् ॥ नीत्रास्मनप्रशीदत्वं ऊमा भिवव २ ९५ ॥ यदंगान्वालकान्वानीसद्भर्मथाकृ मर्दसि ॥ यद स्वासयनाभर्व ऊनु
मर्द निसर्वदा ॥ विनीय वीधि वर्यास्सु मं वानथि र्द मि ॥ ९७ मादि ध्य सनाऊ द्र २ पुनस्तान्वा त्समज्ञा स्त्रियां ॥ नार्यास्सर्वास्समालोक्य वाधयन्न्वमादिशत् ॥ गस्कनमाविधीदध्वनजं
नना स्य समना दि ना ४ ॥ त्रिनन्नननर्दक्रेत्वाव नतमं वनेम्बरा ॥ ९८ स्यादि स्तुं नपन्द्र ना न क्रोनि शमय सा सती ॥ अस्थमर्त्वी गलद त्र मृग्या स्यावनकिं विवन ॥ गवयपुत्रा २ मनावे
पिजन कं गंनया धियं ॥ दृष्ट्वा [illegible] विमृ स्वैव नस्थित्रा पिनायथ ॥ तत ३ स्तत्रास्म द्य २ पश्य न्तास्मऊां ना सनीमपि ॥ [illegible] दाय मे स्मा गर्द प्रक्रमितं मृदालनक ॥ ततश्च मामहि षी
वाहीन कुं ३ या स्मे कृना ऊ लि ३ ॥ नत्वेवता स्मता स्सर्वा न्पृत्री स्थ णेयमब्रवीत् ॥ एनमस्मथं वयं सर्वे गत्वा [illegible] यावन ॥ यथा विधि त्रुमे छत्वा यावक्री ववेवो मदे ॥ [illegible] तिमा
ना दिनं त्र त्वा सर्व गतनयास्त्वपि ॥ मनाथापि पितृ ३ पानी प्र न त्वैवं वलाधिप ॥ जयदवास्मृ गरुडे मिद्य [illegible] तामसमीदितं ॥ विनजी वसृ वीत यागत्का सदेप्रमीदनत् ॥

चिरत्नमहरणोंशत्वास्थापयामासनौकरौ॥ रत्नत्रयप्रभावानौरेजतुर्मिलितौमिथः॥ नद्रष्टुंस्वामि
या भूर्यत्तहंसधर्ममाचरितं॥ ३

॥ मद्वेहस्मरहितौ तेनीरसनयेर्थ्य॥
नडूहरोगाकामत्वंकरोदेहिशुभाशिषा॥ १

श्री त्वा विस्मितास्याधिवास्थ॥२॥ कौनमाशिष॥ देवेश मूर्यावितन्रुसायाधिपुंप्रावत्सकनौ॥ तत्रममत्सायत्सदत्वामिमंपूत॥३॥ स्फिम॥ तंमुविरंममात्वाक्षकनाबुत्तावयावत॥ मद्भ्रु
त्वाममहामत्व॥ मत्वाधिप्रविधानमन्‌॥ स्फिताभिनाहथ्यंवार्मरूदयित्वापिदर्जि॥ उकावयिकेनौतमस्मीकीत्र सायप्रभादितः॥ अहयाममहामत्व॥ मंकल्याप्रदक्षीमूता॥ श्रीः
मदूरीमावूतींहकौप्रतिसुरुकाशिविस्मितम॥ मर्ह्रीनमाहिजंतस्मिदत्वाभिषंतनावनत्‌॥ तत॥ मीतिमहाम त्व॥ स्फिन्नसर्वाङ्गकापिव॥ त्रिनत्नस्मृतिमाधायमनसर्वथ्याविना
स्मा॥ स्वहामयाप्रदत्तानिमर्वाथ्यधियस्थादिनं॥ मदनस्यथ्यतावनममाधिंयदिप्राप्नुयां॥ स्वकथसम्यकायस्यप्रणिपत्यनीत्पाद्भवजत्‌॥ दास्यामस्तंतथ्यातस्मिसर्वाआन्यपिमा
मृतं॥ स्वतिनिश्चिमंस्वाधिप्राधिधानमत्‌निश्चल॥ मतिनत्न स्मृतिंहस्वानस्थो ध्यानमत्‌माक्षित॥ ततौन्यमनित्रिस्मामात्वाहकादत्वाजाथ्वर्यधिय॥ तमाक्षिस्मसर्वांनतंविलांस्थवे २३१
मित्यकुवत॥ स्वयंस्नदाशिवर्वाथ्यनीतिधर्मपथस्मृत॥ नाथ्यर्यधनिष्टस्थ॥ कंकालमात्रमपघत॥ किमस्यानतकायनदुर्गंधनविनाभिना॥ प्रयाजनंनविद्यमानवि
मंशीविनर्गके॥ स्वनिमर्वप्यमामाल्प्रकादत्वाजायमंत्रिरा॥ वद्भगाहपविताध्यनंस्मरानकान्यहृतं॥ तदामत्रत्मस्मममवन्तुधिनमूजिताम्यनू॥ उपात्ममजिकादंताहयपू

=स्य३

ततः स बोधिसत्त्वस्तं दुःखवेदनातुरः ॥ अभिधैर्य्यं समालम्ब्य मनसैवं व्यचिन्तयेत् ॥ अहो मे धैर्य्यमुत्सृज्य सदा बद्धोद्यमं वतो विहितं इदं मे वैमहद्दुःखं मूलस्तु मामते भुनाग ॥ प्रागेव नाद्य [illegible] नीकातरो [illegible] स्वार्थ पुनी नानादुःखाभिभूतानां किमेवं सदा [illegible] कथं ॥
दुरितं वा महद्दुःखं विविधं हि भवोदधौ ॥ स्वयमनीर्म्मन्तीर्थ [illegible] पितृमृत्सहे ॥ तदेव नानुतप्येन बोधिसत्त्वो भिबोधमनाः ॥ भवोदधौ ममुद्धत्य मोनसे सर्व्वं जगद्भवे ॥ इत्येवं स महासत्त्वो नादितुं वो धर्मममनाः ॥ [illegible] दुःखापि सततं
स्थाय मन्त्रेवमत्तवीर्यं [illegible] महद्दुःखानि बोधिवितं कथानरस्तरणात्स वक्षा स्थिमजाभिः ॥ हितं तदुद्यानि हृदेहि नीसदद्दुःखं दुःखमाताः खलु बोधि मुक्तमा ॥ अथ स कालनः समुपास्थितो पूर्ते मामप्राप्ति [illegible] वादि [illegible]
मनोवेवादि हार्व्व तोथितं कालेभि सकृतं [illegible] दुर्लभं ॥ अविनु भोमनकृत्वे ॥ जगद्भुवं सदे ध्रुवि ॥ नादि वामी तमी ध्यान [illegible] जगद्धिते ॥ इत्येवं स महावीरः स्थाप्य [illegible] न उमग नेवा [illegible] मेवमनुवीर्य ॥ अहो दुःखं महीदर्थं [illegible] शव

[illegible] धिनमृत्या ॥ इदं ना सर्वं मात्मा सगच्छाद्दय ध्यपद्धि यायः ॥ इष्ट्वा यथाप्य समा स्वाभिप्रत्तृ वृद्धय ॥ र्थ वद्धया ॥ तथा मेन स्त्रुमा [illegible] पिभाम्ब नामि सवीर्यवान् ॥ द रुदान पुमस्त्रा सागत्रार्थवं
यविनायत ॥ यमयासर्वं समर्थं नाक्षा दिविषयं सकं ॥ तार्था २ सात्म आद का २ सर्वापित्व यानिग्रुहाः २ ॥ सूत्रकिंचित् सम्मा नवो वा धानुनायिसमस ॥ अमत्सस्यानुलवन सर्वाध्यमो प्रद्वर्यतां
॥ स्तव कार्या पिमतत्स प्रत्यवाप्यगानिनी सुवक ॥ सर्वत्र [illegible] तुमान्सानि पित्र व नृत्ननाधिना विमि ॥ मन्सासनिस्तत्याभवं निर्यिकावानि नामयः २ ॥ सर्वं [illegible] का पिम कायः २ क्रिया गांना धिकिंचन ॥ इ
पुव प्रानिधि श्रवा प्राप्य नाभि सुधीन यान ॥ प्रिनत स [illegible] साध्य यगत्त्तो ध्यान्या जगच्छिन ॥ तथा समुत्सानुलावन न गम्यकाय २ प्रवर्ष्धित २ ॥ मन्ता [illegible] पमाश्वात त्यानिप्राप्तानि नामयः २ ॥ एवंप्र
वर्द्धितं कायं सन्मानः २ सामितवीर्यवान ॥ य ध्यस्तानि पुमस्त्रा सापनन वं यथविनायत ॥ सुद्धामविनिनं सर्वं मिद्ध समानुलावन २ ॥ तथा सिद्धागुमसाधिप्रग्निश्चानं जगच्छित ॥ इत्संभवर्द्धि
तं कायं सर्वं सत्त्वाय २ थमितं ॥ मान्सानिपानि तत्कृत पिवत्तुत्रू धिनावि व ॥ यथ यमत्तु जगत्कायमा सानि तृधि नाविव ॥ ततः सर्वं महासत्त्वा तत्र तृवाधि वानिता २ ॥ इत्सर्वं प्रविधि श्रुत्वा
सामितवीर्यवली कृतौ ॥ यथा मितां स्थितं कायं सर्वार्थिता दक्षमृत्वा ॥ तदा सर्वं पिमत्वार्थ मा सार्थिनामस र्थित २ ॥ इत्युक्ता [illegible] मासानिसमादकृ पर्यस्थ स्थित ॥ देवादेवाप्युगत्सर्वा

दितां नरहं सर्वदुःखापि हितार्थे बोद्धुमुत्सहे ॥ येन [illegible] नत्वापि दुःखे नानीभवानेषे ॥ भूयोन्त देवं सर्वेपि प्रवर्ते पुनः पुनः ॥ इति नियोको मानेपि बोधिसत्त्वस्य तस्य ताः ॥ भसहावेदनाः सर्वाः सहमभिसमंयायुः ॥ २९ ॥

= ततः तह स्व [illegible]
न पंचमोन न धिसा
रे सोतिक ८

ना

श्री

सम्यग्विज्ञस्तान्सर्गान्नकल्पत॥ यत्स्वेनांसमुपालोक्य तज्ज्ञयातिनमंथ्यनत्॥ समानेन ध्यात्सद्धर्मसाधनान्यमी॥ गतान्सर्वदालोक्य सर्वगीः सज्जिवानयन्॥ सति
सद्धिसमग्रंकुर्याधर्मसत्सवं॥ ऋषिसत्संस्यात्स्यागंसत्वातवाप्रसीदतु॥ तवसमीहितंसर्वं सिद्ध्यत्वन्यथा॥ तथाविश्वसमालोक्यतंसदर्षिं महामतिं॥ साधुवा
दनसंताध्यसमासन्त्रवसादिशत्॥ अहमपिनथतत्रवत्स्यागंनिधानयन्॥ श्रीमन्यद्गुरोस्तांप्रवर्णधयमातवं॥ यत्स्वेनापनमांविप्रंप्रज्ञिपकातिलंघयत्॥ स्तु
त्यागंर्दतामद्दकुर्यास्तुतालथापमं॥ नमः सम्यद्धिनोमासीदेविडिताद्दुनालयः॥ सद्धर्मनिदकाइ धर्मन्यायिननकल्पत्॥ यत्स्वेनाहृतमावीक्ष साक्षात्ति प्रणमंस्तुता॥ तस्याद
त्वपिनिर्वधादस्यूत्यागंकदाचन॥ तदत्रमाविषीदत्वंसुप्रसीदजगद्धित॥ यथाभवांछितंसर्वं तथासिद्धावमंत्रय॥ यमाविधर्मनाज्ञस्तं सर्वर्षिसंविलोकयत्॥ साधुवादेतिसंमि
त्वासमासन्त्रवसादिशत्॥ साधुहद्भसत्सत्वसंप्रसीदविषीदमा॥ यथाभवांछितंसर्वं तथाकर्तुंसमुत्सह॥ यत्रापीयंमहाविद्यागृहपूनवनयिवा॥ किंतानत्रकदापिस्यात्त्राका
लसंहृतांतरं॥ सर्वासमानगणाद्दुष्टाक्रामयंसंनिधानयत्॥ सर्वासत्वाश्रियानन्तप्रवयंजिनालयं॥ यत्स्वेनांसमुपालोक्य प्रणिक्षिपत्प्रसादतः॥ मारकालिपिमहाइसम २१८

=घा ३

गोवी आदिस्तु प्रभतः॥ यथा थनां समभा साक्ष्य हनतः साक्ष्य लिर्नमतः॥ सजीवस्य विर्न कालमतः तायाघा हिनाल्प्यं॥ स्तु गिमतृंम याख्या तंम स्वातवान्प्रसीदतु॥ यथा गवाक्षि तं सर्वं त
थ मिथ्या छिनान्यथ॥ तेजसा नाकस्य आधिपं महर्षि विलोकयन्॥ साध्वि गिरिं प्रभं स्थितं समस्ताम स्याक्षरपादिस्तु॥ यथा गतो हि लिं सर्वं तथा कल्पे समं त्वत्॥ तत्प्रसीदमतषेत्र मा
विषादं कृत्थ च कविः॥ यत्रेण विधिना यस्य कर्मस्य स्तुयनं कृतं॥ तस्य तत्रामयास्यातं संप्रश्नालिंभ्रुङ्जुर्वं॥ यत्राणीयं महाविद्यां सर्वं दृष्टुं विद्यानिनी॥ किं गापवर्लि कामत्र वाग्रा स्या
तं वन्नादि॥ तत्रास्ता कमान्तु स्तुः सर्वान्नि वाये पालयतः॥ मत्वा सर्वाधिमाणे पिवान्थयंगुर्णा॥ यथा यथनां स्वमालाक्ष्य प्रतिक्ष पङ्कुनाभस्य॥ ममकृत्स्नमयाज्ञानां महताद्विनान
कवकृतः॥ यथा यथनां महाविद्यां दृष्ट्वा त्वादृभावत्॥ संत्रीम स्तवमं पृष्टायाय स्त्रीगाम सुरवावती॥ स्तु गिमर्थम माख्यातं विस्मय स्तुप्रसीदतः॥ यथा गवाक्षि तं सर्वं तथा मिथ्या कृ
गाधिम॥ वनूरत्नानागनाआधि तं महर्षि मस्तामणिं॥ समास्ताक्ष्य प्रणं स्थितं समाम स्याप्यलाघत॥ साधूसाधू महत्कागम संप्रसीद विषीदमा॥ यथा समी हि तं सर्वं तथा तत्त्वत ध्रुवं॥ य
येनाविधिना यस्य वागस्य स्तुयनं कृतं॥ तस्य तत्रामया स्यातं संप्रश्नमर्थंन्त्र वाह्यवत्॥ यत्र वयं महाविद्या दृष्टमानविद्यानिनी॥ किं गापवर्लि कामत्र विवास्यातं वनन्नादि॥ नाति

=मा

जा

स्पर्यो विधायैवं संविग्नः श्रेय १२१ क्षमवृषं ॥ स्तिमितमनसमाधिस्थं त्वां मानवर्षय ॥ सर्वसंमूर्छिता त्मानस्तस्थुस्तिमितमूर्छिताः ॥ तथा निर्दिष्टास्याः सर्वगमानवर्षयः

॥ तत्र सर्वत्र दर्शसमूह प्रवर्तमानो व्यलोकयन् ॥ तत्र ते नागिनी तेषां सर्वेषां नागमानसात् ॥ ते स्थिता द्विविधा कर्मस्थस्थ्य स्वस्थाय नैक भाक् ॥ ततः स्थापयामास समदृष्ट्वा

महाशयं ॥ सर्वर्षीणां गिरीशौ स्वाहा सम्प्रवज्याः समस्ताः ॥ ततोऽन्ये भिक्षवस्तत्रांशवर्तीः स्वस्था तिनी ॥ वध्वा प्राञ्जलिः प्रतिष्ठाप्य समपत्ताका समर्पयन् ॥ तत्र तोऽत्रिर्वर्णी

दृष्ट्वा सर्वदृष्टा पश्यनाथ पूरिता ॥ तीनाम् त्वं पल्लायनो ॥ सर्वत्र गृहं निजाश्रया ॥ तदा तत्र समस्ता धृतकस्प विद्याभि गोपूव ॥ निवृत्या सत्तत्काले प्रावर्तत निजेनात्मन ॥ तत ४ ‎२२२

सर्वपितमस्त्वा क्षमयन्तु भास्मनाथ ताः ॥ त्रि वक्त्रनकृत्वा सद्धर्मसंप्रवर्तित ॥ ततस्तु ध्यानपूजावन सर्वगतः सत्वाभिरत ॥ त्रिविधं बोधिमार्गे सावधान वर्तधिता

गिन ॥ एवं देववर्षय सर्वदेवलोक सुसर्वग ॥ तद्विधानेन समस्तार्यं प्रावर्तयन् सदा शुभं ॥ एवं नागर्षय सर्वतदन्ता भासनान्तरा ॥ यात्रालाविधिनेतनप्रावर्तयन्

सदा शुभं ॥ एवं सर्वत्र लोके सुमना प्राज्ञाविवर्जिता ॥ एवं सत्त्वविधानेन प्रावर्तय स्त्रीवेषतः ॥ एवं मार्गसमस्तात्सर्वर्षि सत्कृता कृत ॥ सर्वव्याधि समाधायं

इह विप्रनिवारणं ॥ तत्र अयवान से पयं सर्वज्ञ इह विघातिनी ॥ आनतीशमपूर्णादिस्थप्रावर्ण्यय क्विवंतिमृ ॥ एवं कृत्वा सधर्मिष्ठः सर्वज्ञ उ वनस्थपि ॥ निनृत्यार्मं गु तां स्मार्दं दृष्टुं वंसम
चिन्तयत ॥ यद्दवंस नसाला काव्याधिस्थ रूपनिमा विकाः ॥ विनीयत्रिपृथानपूर्नियुक्त स्फातिनामया ॥ वाधिमा र्गप्रतिष्ठाप्य कृता थवाधिमाधिन ८ ॥ सद्धर्माति नेकोः सर्वकृता
थमगुणान्विताः ॥ सर्वविघ्नगधाः डत्वा विना थमममन्ता ॥ निनृत्यार्मगुतां स्मात सर्वज्ञापि प्रवर्तितं ॥ एवं सूक्ष्मविपाकेन प्रतिक्षणं यथा मम ॥ तथा सर्वे कलोवापि मं सिद्ध्य तु
जगाद्दिग ॥ एवं सप्रतिविधिं कृत्वा सर्वज्ञ उ वनस्थपि ॥ एतनेव विधानेन निनृत्यार्मगुतं यथा ॥ एवं सर्वज्ञलाकेषु तद्ड कृत्वा निनामयं ॥ सर्वज्ञर्षिः गणः कालदर्हे यः क्रादिवय
यो ॥ तत्रापि समहां तिस्रः कृत्वा तद्ड निनामयं ॥ दिव्यकाममयूर्ख तु स्फादवेः महान मकृत ॥ एवं सकगवा स्फुरे स्का सर्वज्ञ उ वनस्थपि ॥ निनृत्यार्मं गुतां स्मात प्रावर्ण्य यद्दृमिर्कवत ॥
एतत्सूक्ष्मवृतो वनकं सा वृषिकघा घिक ॥ जित्वा मान गर्व मान्या धिं प्राप्या त हृगवा जिनः ॥ तद्द्धूय प्रयोमनतः काम तत्पपश्रद्धया मता ॥ जिनत्व भंनतं कृत्वा वपितर्पगुणा विति
८ ॥ जिनत्वमनघं कृत्वा तऊनि थजिनाश्रम ॥ दुर्गतिं नमस्कृ नियानि सर्वजिनालयं ॥ श्रुतिमप्युनूपादि हं कृतं म्यातः आ व्यर्ता ॥ स्वमधिव महाकाज्ञ सदाकृद्म सपृ यत ॥

श्रा न तु भवमत्कृ वन ॥ स्वामिन्मा मत्प्रसादाद्दिक्कुमारप्रतिवासय ॥ विहस्य गंमद स्मातिरूमवा स्कुं कुमर्दति ॥ यदियं न मत्दवी मेजाज्ञश्री कुलध्वनी ॥ कार्याग्रम दिवी मद्राम्बु
लध मेजा निवी ॥ सगीपतिव्रता साध्वी मेर्वमत्व दिगं घिवी ॥ प्रियंवदा मत्ता ह्रीका ना दिव्यानिमृदवी ॥ न त्वथं तवता योग्या मत्पधर्मान्नृवानिवी ॥ यदर्थमुग्र तकायाति
स्समादस्कूमर्दति ॥ पुत्राश्च मङ्गमानामी स्वा स्त्रवीजसमुद्भवा ॥ सुवीनाद मकुलायका ॥ मत्पुमंधा विवक्तं धा ॥ एमाश्वेक न्यकानज न्वा स्मसाम्प्रियंकना ॥
॥ मत्पधर्मान्नृवा विवध्वं ॥ श्रुङ्गानय्या विवक्तधा ॥ किमर्थं तवता स्याश्च पालनीया ॥ प्रयत्नत ॥ नेषां दिकृ प्रियानजा नत्कथंत्वा स्मर्जा मत्प्रत ॥ अतिदानव्रता त्मास्ना २२३
वीर्गिमाप्य निलंघय ॥ वाजाहिनी पिवि स्वर्वी ज्ञाकात्रश्का गिपालयंत ॥ यदिदानमभीक्षागं दद त्वान्यग्रस्थप्सिगं ॥ धनं नीवर्णं नृपाद्यीन्द्रयानि विविधानिच ॥ न
ना नि वि विधान्यंवव स्त्रादिल प्रमाणिच ॥ प्रामादनम्यन्त हानिकी गंश्यानवनान्यपि ॥ दासी दासात्रथनन्धनं गजा नृ म धपना न्यग्रत ॥ नाद्यानि विविधान्यंवपाना
निमृनसान्यपि ॥ सर्वान्नड्यवमृ निमर्वापकनेधान्यपि ॥ दयान्यव स्विनाजन्द्र या कुमर्दं निदस्किगत ॥ कार्यापुत्रा स्मगाजामामानया यान्कुमर्दपि ॥ नदन्यत्सर्वं वस्तु निद

२४ तर्पद
४४ ...
...

हिताञ्जन्मस्थपिनं ॥ एकमप्यर्थिनं स्यार्थेमानः सर्वान्यनाकथम् ॥ स्थूलं लोकात्विनादस्थं सर्वा लोकाः प्रजाः नृप ॥ दयवन्नि निर्दहित्वमदयं किं प्रदिक्षसि ॥ क्व सुस्मद वर्णत्रयस्त्वा
मादहिसाकसाश्रियां ॥ कृतिर्गर्भमन्त्रिति ॥ सर्वे नमास्येव निवर्दितं ॥ त्वामन्तपसि ॥ पंचस्मात्सर्वानेवमव्रवीत ॥ मनुष्यभवनवजात्वं गत्वा पिममनसस्थितं ॥ श्रुतिप्रायं प्रव
उत्रगरुक् ॥ सममाहितास ॥ यज्ञगिपूजगत्सर्वेत्रमनदेवथागत ॥ सर्वत्रकाम्निकात्माकातिस्नात्रया घनायमाः ॥ कोत्रकस्य पिता कोवमाता पित्रागनस्थकं ॥ गनयाः स्वामस्जातः कं
वकाः स्मृगाशा न्यवाक्क ॥ कोमित्रकः स स्वकः क्वमस्यवस्तः कोनिपृथकः ॥ सर्वेएकासमंस गावर्मवर्या विहितास्मितः ॥ स्वकर्मकर्मथा गतागनत्वात्रयात्रमनसृपि ॥ कविकमस्वि
नरसत्ताः कविदुस्स्थः ॥ स्विनः ॥ स्वस्वकर्मसस्या यात्रमनाग्नवत्वानः ॥ समवः स्वामितुंजाना ॥ पृथक्पृथात्रवनसृपि ॥ पृथक्पृथक्त्रजायते प्रियनेव पृथक्पृथक ॥
गनित्वापि पृथक्रगधास्व सर्वे धर्मसत्वं वाविदौ ॥ नथात्रमस्सनावस्थं तिष्ठनीसर्वजनाव ॥ स्वयुवं उन्नतिः सर्वे स्पृश्यनापि पनस्यनं ॥ श्रुतिमत्वात्रमं मानस्यकास्मस्वस्मासविधि ॥
धर्मभवपृथयत्नसाधनीयं जगाहितं ॥ धर्मजायतलोकः स स कुलश्रीग्रनास्पदं ॥ धर्मणपात्यासर्वानिस्थानवसमनाज ॥ धर्मत्रवमस्यात्र सर्वजापिमस्तानुगः ॥ धर्मविनाउ
=प्र

नमोऽकृष्णधर्मार्थसंपन्नाय ते मिथुः स्मरन् । भक्ते निवसमानान्धीवसुर्भाव यथा ऽऽकृतां ॥ इति ते वेश्या मया मासं संध्याकृतमानसः । एवं च प्रभावान्धं संमील्य समवस्थत जवादि त्वं तद्द्विजः स्मृतो दर्शयन्न गतः ॥ ४

आ नय ॥ अनाकांक्ष्य मादाय सर्वाधिप्रनिधिं यथाक्रमं ॥ यदर्शमद्दयानत्र ददाम्यस्मै द्विजाय च ॥ एतद्भ्रमान्नावनस्तनयं वृद्ध्व कृषी ॥ दृष्ट्वा नाथ्याधिमसर्वं संमुत्पन्न गजगामिन ॥ साम का
यथ्यार्थकिंकिर हृयात्त्रापि मनोरथं ॥ इति ध्यात्वा सतीं तां समात्तवयमृदुःस्वव कृषी ॥ साय वार्वं प्रमत्ता स्माद्दमस्मै द्विजाय च ॥ दत्ताशाम्ब वार्धीन्तः सा कृतिमिस्तं द्विजं मृषा ॥ विनी
य तां गिमाध्यायनः क्रोध्यान समाहितः ॥ नतः स त्वाक्षः शक्यत्व न तत्स्वादाय विस्मितः ॥ ऊर्ध्वा मिपयं प्रदत्वा क्षिप्र मालयमपावनं ॥ तदृष्ट्वा ब्राह्मणो धापि मनस्यि ग्रायसं हृकः ॥ मदी
र्याध्यातुलः कर्तृयाधिकं मृयाययौ ॥ तत्र ध्यानसमाधीनं तमसत्वं निविलास्यसं ॥ ब्राह्मणस्तमृषाहं स्वदत्वा निर्यंतमब्रवीत् ॥ सर्वंददमहादान कीर्तिमं वसमनागतः ॥ प्रसादाय
वैसाकं पूर्वनंतांत्रतां वय ॥ यतः धर्मप्रवृत्त्यर्थकं कर्तृयाधिकं मावनं ॥ तस्मात्वर्मप्रतिलाभाय कर्तृमिम दातुमर्हति ॥ इति संप्रार्थितस्तेन ब्राह्मणेन समस्तमिः ॥ भूषवामन
मालाध्यं तं द्विजं भवम ब्रुवीत् ॥ साधु द्विजप्रवाध्यामि सत्यं भत प्रसीदतः ॥ गृहीत्वा समना वांक्षां मंयत्न यितुमर्हसि ॥ यन्मया कीर्त यतदानं सर्वं यच्च ददौ स्मितं ॥ तस्मात्वं वाधिपद २३०

इत्याश्रमीमद्रीयस्यक्रतिधरो भविष्यति ॥ २

नानाभोगदरपरशिभांनवासौवर्णीयाचकः॥ अतिथरीभवद्भूपतन्समाहांप्रपूरयाः कृतुकिदेवतः सोम्मिनपुंसकोनकामुकः॥ संबोधि प्रणिधिं ध्यात्वा कामसुखाय भूपते। पत्नी वियोगिनस्तेपनिष्फलं पुरुषेन्द्रियौ॥ ४

४॥ भूतकेनादिरोषेरागरोगिणः सन्निभेषु दे। नानोपायविधानैर्वानिवस्वस्थामदाघते। जीनाआदिपुरुजानोक्त्वा वेष्ठुरणागतः॥ वनिताना र्थमस्तुंच मान्सं देहि दयानिधे॥ ५

प्रार्थ्यो पवि नाम्यकृगाडिगं॥ तथास्त्वंत्वाम्नः हालाकंमहधर्मेस्यंपत्न्यानयन॥ मुंवाधिप्रणिधिं ध्यात्वावनतुरुजगधिग॥ स्वमुखात्मसमहामत्वा कि त्वामिनास्वयंमृदा॥ मापवानमूलोकर स्वंद वातस्वंहिजानय॥ ॥ दत्वास्वनः स्वप्रभासहसृत्रे यांत्रसस्फागिनः॥ जिनत्वस्यंगिमाध्ययनस्कोध्यानसमाहितः॥ गतः समवाप्ध्या स्वयकर्णेर्वादन्यविप्रिनः॥ दत्वानिर्घपृहः पदथंनलस्वात्मस्यंयस्यौ॥ तदृष्ट्वा जीविकान्याधिमंजीवनाहिधस्थ॥ तस्कीर्तिश्रवसाद्दीर्घ्याः व्यापन्नाविस्मानसः॥ उपस्थानैर्विवादित्वागंपदथंत्रवसत्रवीतः॥ धन्यासिर्वंमहानानाम्नाथअर्थपूजनः॥ नस्मद्धर्मे क्षियप्राधेमहिमपूर्नूयस्त्रियं॥ स्नुतिमप्रार्थितेगनधास्वनागिप्रमन्नथीः॥ कि त्वामिनास्वयंतस्मिन्स्वक्षिअंप्रदर्शामृदा॥ दत्वास्वनःसप्त सहसृत्रेवांत्रमञ्जात्रिनः॥ मुन्याधिप्रणिधिं ध्यात्वा तस्कोनत्वजयंस्मनम्॥ तदृष्ट्वान्यधिजामस्यतस्कीर्तिर्घ्याविस्मानयाः॥ उपस्थंगमस्हामस्वंमास्यमसुंययाविनः॥ तस्याविर्नममालोक्यमास्वनागिप्रमादितः॥ कि त्वामिनास्वयंनातीमस्यामस्जंदर्शामृदा॥ गतः कित्वास्वयंदरंगत्वामास्वंयस्थपितः॥ तथासर्वंसमृत्कोपमत्रध्यायप्रदर्शामृदा॥ तदृष्टंत्वधिवंमास्वंप्रतिस्फक्ष्यविस्मयाः॥ सर्वतस्त्वामि घंतस्तेदन्यास्वस्यालयंययुः॥ मास्वनापिमहास्त्वं स्वाधिप्रिस्वनाशयः॥ जिनत्वस्यंगिमाध्ययतस्कोध्यानसमाहितः॥ तस्तु

स्वदंगत्वातथास्थाय पाणिपुत्रहणमाचरन्

आ इत्युक्त्वा मानवगणास्तु कृत्वा चिन्वानय न्तु सर्वतः ॥ तच्छ्रुत्वाधिपतिः स आपाय्यं मायवानं महोत्सवं ॥ संप्रिध्विकं प्रकृत्वं कुमर्वीयं स गुणान्वितं ॥ एवं संप्रार्थितस्तेन सर्वत्र श्रद्धया पितः ॥ लोकपाल १
समालोक्य प्राञ्जमादृत्य प्रसादितः ॥ अथ सो वमराभन्त कान् सर्वान्तु मादिशत् ॥ इत्युक्त्वा अस्मन्नु कृत्वादीशाः कपाला स्वयाधिकाः ॥ प्राकृतं स्मिरसे प्रमन्त्रास्ते संवाधि निहिताः स्ते
य ॥ सर्वसत्त्व हिता र्थं तत्प्रार्थय देवमादरात् ॥ ३८ एवं तेषां वचनं कथितं यन्मुनीश्वरे ॥ तदाग णमस्ता पायं प्रवक्ष्यामि कृपाञ्चित ॥ आदौ नागनिर्मिकाणि सन्निवीक्ष्य विचार
मन् ॥ यस्यैव पूजयोग्यार्थं दद्यात् कामं यथाविधिः ॥ तत्कर्मविपाकं इत्युक्तः स्वायंभुवाः नाथ ॥ चित्रं नानितु ग्रहाणां कृत्वा नानाकपालान्नु सर्वयत ॥ तत्र स पूज्य याचित्त दानं कृत्वा तु २१०
समादरात् ॥ कायसंस्थास्थ नीनाम यतने धीयात् यत्नतः ॥ तत्कर्मस्य अतेषु कृत्तिका नक्षत्रं विध्वान्ति ॥ संख्या विनाशनेषु सार्द्ध संकल्प्यास्तु वक्तारः ॥ एवं यदक्षुत्राणां सर्वं विये
प्रसादितः ॥ निवार्य सर्व विघ्नानि श्री मद्भंकर्णं संस्थितः ॥ तदाग प्रवेश सत्वासंपूज्य गुरुं तित प्रियं ॥ बाधिमा वोविन नाश तत्संवाद स्थिता संस्थः ॥ तथा न्यद्व प्रकारं यस्तं समादि
श्यं मुनीश्वरे ॥ तदसं पुण्यं वक्ष्यामि सर्वं ३८ ६ धं तदाग सहित ॥ प्रातः स्नात्वा प्रसन्नात्मा धर्मभक्तं समर्पयत् ॥ उक्ताहसंविन्न यन्नाम मन्त्र न दीयात यत्क्रिया ॥ तत्कर्मसाधु सिद्धिं न्त्वा

कृत्वात्रिःप्रदक्षिणं ॥ सुधीर्याप्तं समानाम्यं प्रार्थयन्ताधिमानसः ॥ एवं यः कुरुते नित्यं तत्राज्ञाकृत्प्रसन्नधीः ॥ नमस्याधिरूपं समाश्रयनागदायुर्कर्तुमर्हथ ॥ पूजनं यस्मुकानं युक्त
मारव्यागंमुनीश्वरे ॥ तदर्हं संपुत्र कामिश्चरः तद्यथा सादनात् ॥ लिखित्वान्तर्पयत्राधिमानस्त्रीणा मधानेनधीः ॥ पताकं यामसा कार्य ध्वजवञ्चावलम्बयेत् ॥ गन्धपुष्पादिनैवेद्यसमवैव
दुर्माननगदामृषि ॥ इष्टविघ्नमाशाधिपनायविमूढोदूर्म ॥ तथैव विधिनायत्रस्वस्त्ययनं कृतं यदा तत्र सूर्यमन्दालाकुप्रसादं कर्तुमर्हथ ॥ सर्वथा तत्र सर्वत्र सर्वथा सर्वदिग्गतिर्वा
॥ नागसंप्रतिमित्रं कृत्वा कर्तुं तदर्हं सर्वार्थ ॥ अथैवमृषिणा तेन संप्रार्थितो निःसमयतः ॥ सर्वत्र मादि दिक्पालाः स्वर्थितेप्रतिगत्रत्रुवः ॥ तत्रत्रमात्रसन्ना यातं महर्षिं विलोकयन् ॥
साधु साधु इति संना यत्समभाषत्र्यैवमादिनः ॥ यथैवं विधिनानेन नदस्यास्वस्त्ययनं कृतं ॥ तत्रहूतं सदा कुर्यातूद्विद्या विधारयन् ॥ ततो हं सर्व बालाक्ष निवाकृत्य विवादिनः ॥ सत्रमे
त्रमकामस्त्वाञानधर्यं विनादयन् ॥ एवं त्वं महानसत्त्वप्रसीद सा विकल्पय ॥ यथा समीतिं सर्व तथा गतस्य गच्छ वं ॥ तथा लोकापिदर्थमद्वर्षं महर्षिं विलोकयन् ॥ साधु साधु इ
ति संना यत्समभाषत्र्यैवमादिनः ॥ तत्राहं सम मना लोकाभानयकान्ति वानयन् ॥ सर्वदा मंगलं कुर्यां यत्राश्रावनेनी शिक्षिता ॥ यः स्थेनांपनमां विद्यामभिक्रमन्विनिन्दयन् ॥ सधी

जा

भूकालमन९०॥ स्यानंकस्यापिन लवंलेकाविद्॥ सर्वेपिपनमायुक्ता तवयविगतामया॥ ॥ गदनविधिमावर्ज्यसंकल्पयसमोघर्य॥ यथासकलिंगंसर्वेतथा सिद्धसुपथकं
॥ तदत्रसंप्रसीदत्वंमाविषीदसमुद्यत॥ यथालिवाक्तिसंसर्वं समष्ठनतथाभव॥ यस्माघ्यतिक्रमदनांसर्वेप्रष्टविघातिनी॥ समवादय॥ ववंजुंजानासतोपिनवक्रमक
॥ यथदृष्टप्रसवात्स्मात्क्रस्वावापिमृदानमतु॥ सश्रीश्रीममस्मस्वेंकुक्तामीयागीमसमीवृजतु॥ एतत्संप्रपंचिविहायमम्मृथमर्ज्जगच्छिता॥ क्रमघावाधिसमानंपूर्वयत्वा
धिमाप्नुयात्॥ तथादेवर्षयःसर्वेगंमदाष्टिमतमाणि॥ दृष्टमोक्षितिसंताक्षसमामत्स्त्रवमादितत॥ धन्योमितंसतामस्वांयलवांकाजगद्धित॥ तथासंमंस्यानतूनंत २२१
थसर्वंसमीहितं॥ वयमपितथामयकुर्यामसर्वदाशिवं॥ त्रिनुसामंतसु तिकुर्वतत्रसंवानयामहि॥ श्रुतिमस्त्वंपविहायमप्रसन्नःसमुद्यत॥ यथासंकल्पितंस
र्वंतथासंसंस्यागक्रवं॥ सर्वदात्रयामद्वेस्यात्सर्वार्थसाधन॥ मातरेताप्रापिविप्रत्वं समष्ठनत्रसमीहितं॥ मेरुधयामानवाश्चापिसर्वेतपद्मधालसं॥ दृष्टामंजुल
यानत्वासमामस्त्रेवसकृद्वच॥ साष्टांगंमस्मसंतत्वयदिक्षसिद्धगाधिता॥ तत्रसर्ववयंवापिकर्तुंमिक्कामतनथा॥ तद्वान्तरूपया समस्तमपितदनुसासनं॥ दवा

ज्ञगाद्भि ना ८ थेम्ना स्सर्वी विधा क्षुमर्दति ॥ कृतिहर्षं प्रार्थितं सर्वे सनिवर्षि विद्याद्वया तृ ॥ समृर्यमालग स्थफा मानत्र वर्ष वृपादिश त ॥ तवनीय दिसप्ता धि मिक्र निगत्तृ ग
क्षित ॥ सदृ यदओ मामाय प्रवत्तन कुसमादि ता ॥ गेदत्र सर्वमिन्स्वानां सर्वव्याधि प्रशान्तये ॥ एतत्त्व स्यापनं कर्म कृत्वा कुर्वन्तु कौशलं ॥ ततस्त्व त्रिविध व्याधि प्रशान्तये पथ्य
भोषधं ॥ त्वं धर्यित्वा त्रिगत्वन सर्वक स्यलसदयन्तु गात ॥ तथागतस्थापत्वानंदपालयन्त क्षमसे घर्षदेशे ॥ सर्वां स्तात्रागतिर्मुक्ता व्याधयन्तु प्रयत्नतः ॥ तथा क्रमं पितृणायमिदि
न प्रक्रमं त्वृक्षग ॥ तदेतां श्लाघ्यां नित्यं प० स्वस्य यंद स्तृन ॥ तस्थेतांव पमत्त्ञं लिखित्वास्य च्योमदि देश ॥ प्रतिष्ठाप्य समृ कार्य ध्वज समर्पणा कृया ॥ वक्षा नाथ्य पूनत्रा मम
वर्त्र दर्शयित्व पि ॥ यथत दृशनं कृत्वा हृन शापिन मन्त्रिगे ॥ ततः सर्व विकल्पा घारा वयू विगता मया ॥ ततस्ता म्य विपुरुषा न्वलिन ः सं आशां गृत्र यातु ॥ त्रिमस्त तज्ञना त्ता
दविनीयवानेयन्त्व पि ॥ तस्मान्नादृष्टिकान्सर्वान्बोधयित्वा विनोदय ॥ बोधिमार्गं प्रतिष्ठाप्य वानयन्तु उद्धित ॥ तथा गमां दितं कृत्वा पूयस पिमिनामया ॥ निरंकुशा विम
लास्मानां वाधिमन्त्वा स विघ्य थ ॥ तमोक्षगा छिन्तं कृत्वा यनिर्कुद्र प्रमण्डला ॥ त्रिविधव्याधि मामाद्य समत्रवृद्धय दमाप्य थ ॥ एतत्तत्वं प विज्ञायय यस्थापदिष्टं मया ॥ तथा

जा थितेविद्युत्कीर्थिकेसत्तेर्निसम्यग्भृतः॥ सर्वेन्द्रदासमहासत्त्वा तथा नार्क्षस्मसेऽकृत॥ तत्र४सम्यक्दिकानाआगते१ सर्वेनतिमानिके४॥ यदग्रस्नंप्राप्तिर्थितद्रव्यंतत्कृतः सूपुदानोमृता॥ तत्त्वसत्तानिस
र्वाविशहीत्वा गतिमानिकाः४॥ श्री तीनसादिनक्षत्रानिनिर्दि२त्वेवंयथाविरं॥ नोतन्द्रीती नसंनत्वेविघतयदिक्षदिन४॥ कृत्ये१ खलुपुरत्नेन्द्रे नमस्ताकेन्द्रपुण्याअर्न॥ ६८
गिगेस्तीर्थिके२ सर्वे २ पुण्याख्यातंनिर्भंग्यस४॥ सर्वेन्द्रदासमहासत्त्व२ पद्मप्रक्षेवं महजनात्॥ श्री तीनमाधिनक्षत्रानिकृत्प्राङ्दृवन्द्यपि॥ सन्निवार्यादिभम् त्वंगहीत्वा
दानुसर्द्धथ॥ ६८ निमुक्तार्थितंनाक्षनिमग्यतमसहाजना४॥ पाकृस्तलयान पक्रंतंपुण्यत्वेवंग्यवदयन्॥ स्वामिन्द्रा नीनसंवत्त्वं विछगतनसक्षीतसा॥ नागनामेवयाकाल २२३
कृत्स्नस्मातिर४कृतं किल॥ तत्रापिनागराजाथ सद्भसस्त्वलालेसा२॥ सक्षामीदृक्कृ नत्तानोदर्शयद्युर्निधी२ कृचित्॥ तदाक्षदृक्क्षनत्तानां ममकृत्वंतक्वविड्वि॥ तत्रथ
र्मानृतावनलस्वगर्के नविस्तृविह॥ ६८गतिदिवदिगंतर्वे मंसहजनेनिर्भागम्यस४॥ सर्वेन्द्रदामहासत्त्वाखलस्वेवंममविनायत॥ यदिमेविघ्नधर्म४ मध्याधिष्ठानमाथ न४॥
तनामंनागनाकौपितद्वयनिधिदर्शकः४॥ एकैकस्मिन्नरकीपसफऊसानिनागनाह॥ तत्रापनत्ननिधी हे मोदर्शयंतगर्जितग॥ एवंद्वीपषु सर्वेषु प्रतिक्रसानिलस्ल॥

म.अं.म.५ म.अं.म.५ २८३म

निषिद्धादि सम्प्राप्तिदं सर्वथैव महामलं ॥ एवं सर्वत्र लोकपूज्यं बकपार्थिकं प्रपि ॥ सर्वधर्मत्रुमनस्कानांद संथयं समनामिधीन ॥ यथा नस्व तिखनं संसर्गं स्य गकला बधि ॥ सर्वं
वृथा प्रसीद तुष्ट कृपादृष्ट्याखिलाश्रमां ॥ एवं संप्रणिधि दृष्ट्वा सा स्वनाभूपनीश्वन ॥ सर्वास्ता स्त्राङ्गे ता न्यथ समासमन्त्रैव सत्रवीन ॥ त्राम था विमयनाश्रि श्रीनमामि
र्मम ॥ एतद्दानं नमस ॥ किं मम सर्वं प्रसीद ते ॥ एतदन्यानि सर्वाणि हि द्रव्याणि दातुमृत्सहे ॥ यथ स्मसिद्धिर्गां सर्वं गतहृदा प्यामि वाञ्छितं ॥ स्तुतिं नादि निं क्र त्वा सर्वं गति
प्रगल्भिताः ॥ ततः स्तु महामन्त्रे वी सर्वपूजनत्रूवन ॥ देवश्रीमीसमन्त्र यदि त्वं नर्दामिन ॥ सवाक्रमहिषीदेवी मापसांप्रदसमन ॥ स्तुतिं मे श्रीथिकौ सर्वं
प्रार्थितं समेनं नाधिप ॥ कार्यं वस्त्रा स्मजा न्पूत्रान्पुत्रीधदाउमेजा ॥ ततः स्मन्त्यतिलायां सर्वार्थ वनयान्म ता ॥ आमन्त्रुवीधयस्सर्वा न्विनोयेव सृणादिनतु ॥ कार्यं यत्त्वं
मयाच्यकामोपयाम्भेद्विजानंय ॥ तदेस्याम सूयोत्रिष्ठ तजल्वकायथा सम ॥ स्तुतिं नर्ली धिनं क्र त्वा मादवीमहिषीसती ॥ मत्वायानन्नतिपत्र ॥ किंचिनेवाच्यता मन ॥ स क्र
धव विसृवनी दृष्ट्वा स्मजान्विषादिताः ॥ मन्त्रिकानि स्वैम स्मवनच्छैविप्रा पितामथ ॥ तदृस्त्वामन्त्रिंस्य मातत्र सर्वतमस्र धा तिका ॥ नृपाणीनं समुद्वीक्ष्य वि

जा सर्वाधिपतिं श्वनतप्रकाशं प्रददाम्यहं ॥ गदतस्तस्य पाकेन संबाधि ... र्यं दिनं प्रयत ॥ सूर्यवंशी कीर्तिमान्नाम क्षत्रधर्मानुगामकः ॥ सदीर्घायुश्चिन्नकायी च कृपवर्कीर्तिः पाधिपश्च
र्मतपालयत्सर्वा स्ववर्णकुलगामिनः ॥ यदा स मति संकृत्य तीर्थितव यथ धर्मनाथ ॥ तदसंयुवनाजस्व याकूर्यासगणान्कृतं ॥ कृतिश्च त्वासमाकृत्य समसाधिभिर्दिना ... ॥ ति
नाम्नस्तमिमां ध्यायतः ... सद्धर्मयोगवित् ॥ ततो नाम्ना लिखो विप्रः कीर्तिकार्यादिलाभय ॥ तत्रान्यानसमासीनं गंग्याश्चितसपापवनं ॥ तत्र ध्यानसमासीनं गंदृष्ट्वा समपावनं ॥
कृत्यासीघ्रं प्रदत्वैवनमस्पूनः समागतप्रयत ॥ तमेवपुनरासीनं दृष्ट्वा म्नेने समधर्मविद् ॥ किमर्थं मागतासीति पप्रच्छे वंसमादनात् ॥ कृतिशत्रुघ्नने वासी ब्राह्मणः ... त्रिपुरगलकवा २२९
क ॥ सुमनेनं समस्तामनं त्वं विलासं वेन्यवदयत ॥ साधु राजन्महाभाग स्वयदर्थं मिहागतं ॥ तदर्थं तत्प्रवक्ष्यामि ... समसमादितः ॥ यत्त्वं सर्वं ... सर्वलोके निर्मसः ॥
कृतिशकीलिमाकर्ण्य ब्राह्मणातत्र महामनाः ॥ यमर्थ ... यत्राह्यर्थमिति प्रयोजनं ॥ त त्वं पादावूनोमघंत्रस्य ... मर्दभि ॥ कृतिसंप्रार्थितगतन माम्न ... संप्रमोदितः ॥ ब्राह्म
णं तं समालोक्य गत्वा तिष्ठति ... वान् ॥ तं पादकूद ... ॥ नूदनीम ... ॥ तान्दृष्ट्वा ... निर्मसा ॥ वाध्यि

नानार्थं पत्र प्रवर्त्ते नैवेवाचित् मात्र ने ।।५

तं प्रणम्य त्वाधि समागम्य स्थैवमब्रवीत् ।। मा दृष्टी दर्शनवार्थ २८ मय सम्मीदितं ।। सम्बूढ पद लाकार्थ पादोदाक्तं समस्य द।। तदत्र विघ्नानां कृसा सम्भूय स देवग ।। अन्नु मा दिक मवाप्त ममर्दमि प्रमीदतम्।। २९ तिन समम्मात्यागं कृत्वा ममान्यानदेवता ।। तत्र तिपूर्णि विस्पयया तत्र निजाश्रम ।। तत्राववन ३ मस्यादाय तीक्ष्णा मिंद्वय मादनात् ।। ब्राह्मणं नंम समाम नत्र समा लाक्षे व मब्रवीत् ।। ब्राह्मं २० उद्भयापाडीदली मयाकगाढितं ।। सम्बूढपदसं प्राप्यैव प्रतिग्रहस्त्वा चिपीतवान् ।। ३१ तत् क्रम समहासव ४ स्वयं ञ्चि त्वा मिना सदा ।। मन्त्रस्य प्रद्भ्यातम्भे विप्रायपदत्तवाकृतौ ।। दत्वा समप्रमन्त्रा मास्वाभिनि हिमानाद्वयं ३३ ।। त्रिनन्त्रमनवं कृत्वा ध्यात्वा तत्क्षो निजाश्रयं ।। ब्राह्मण ३४ ममदी त्वा तोयादी हस्तसस्विस्मयं ३ ।। महाद्भुत मिति विप्रा स्त्वाद त्वाभी ष्टं ययो गृहं ।। तद् दृष्ट्वा ३५ तो नाथ्दास्त्वा नामद्भुतमिति ।। गत्वाकीर्षा दत्ता नत्र या चित्रं तं मृणावनं ।। तत्राश्रम समामीनं तमसवर्न विलोक्य ३६ ।। समयपण भिर्षद त्वा प्राथ्य यदवमादनात् ।। सर्वं दद यथा थैतेनाम समभि द्यागभूता ।। तत्था तं नयनदत्वा प्राघ्या पादिकमर्दमि ।। ३७ तामर्प्रा थितं तत्र ब्राह्मणः ३८ न समप्र समाति ।। ३९ समनमं ।। कृपनकर प्रमन्त्वा मां गंममी चे वमब्रवीत् ।। साधु क्रिप्रदास्या भिनयं नदमू तं पिम ।। अद्भ्यासु प्रमन्त्रे नप्रतिगृह्णो कुमर्द मि ।। तताम्बवनः मंत्रात्मह ४ मंवाद्यमिति हिमा हविनीमहमोपेयं नं दृष्ट्वात नदेवता ।। ४२ तनो ३४ मित्रा नावेदयत्सदीपितिं ।। माने व तानं कृतनिमतो सिमदीपते ।। नानारोक्षथमन्यस्यच धुर्म्यापत्तनेश्रगत् ।। इति श्री ब्रह्मणी प्रत्याह यदैव ब्रह्मोत्तिमा व तीर्थि ।।

आ हत्वा लक्षाशुद्रकादायिनो लवन्॥ यतिनस्ते तीर्थिका अपि दृश्यत्वं लिंगमात्रतः॥ मिथ्यादृष्टि वाचाला कान्वंचयित्वा धर्मरूढयन्॥ एवं सर्वं वंचयित्वा काष्ठद्रव्यादिव्याज लोभतः॥ स
म्यग्धर्मं प्रतिष्ठिप्य बद्ध्वा भवाद्युपाधयन्॥ तदा निर्यायमत्यानां तत्र भाव्यं विरक्षण विकार॥ सर्वत्र निश्चयस्थापि विरोधविनाशितं॥ इति कंव महात्माग्रंथावलिस्समनागतः॥ तदा नाम
तवा॥ सर्व सत्वास्समष्टुर्धा सदा॥ केचिल्लिंगधांनूराज्ञा कालिनाम्नाश्चयथिता भयाद॥ जिनस्य स्मरणं कृत्वा मरणाय युः॥ मनालयं॥ कश्चिद्राजा पिम्मंतव्या निशाहारा॥ प्रमा दि
ना॥ क्षुत्पिपासापि संदस्थास्मरणाय युनः स्तोत्रविधि॥ कश्चिद्राजा विना एवकी ब्राह्मणविदनांहताः॥ विश्वं कृत्वि कृता स्मानः॥ विनंगकृत्ग हताश्रितायः॥ एवं तत्र महात्मा ग्रंथेर्थे ले २३३
उक्ति ग्रंथथा॥ विलोकमसमहा मत्वा॥ पुनर्नवं व्यचिकायत॥ अहारत्याषित लोक महात्मा ग्रंथवर्णीता॥ यथापि मानवाः॥ सर्वव निद्विनिग घृत॥ तत्र तत्र मदरज्ञाः॥ सर्वदर्शि
रुतागयी तिमा॥ क्रमशिविकृतो सानारव निद्रविनाननाः॥ ननन्तमनज्ञा॥ सर्वमहायाग कवाविनः॥ सम्यग्धर्मपविज्ञत्वागक्व पुनर्नकद्धर्वं॥ निम्फ्रा ताननकयाताश्रुसम
वदनात्तता॥ स्वकृत्तरद्व लक्ष्णज्ञानात्र भयपूर्न नकमया॥ तदा विद्यासहद्रु॥ र्वंतामयं दर्शयन्निधान॥ सम्यं वमहात्मा ग्रंथं सद्धर्मं प्रवाचयन्॥ दृष्णानि निश्चित्य दवा सो महा

पार्श्वजिन

सत्वोदयान्वित॥ स्तुक्रादिषमस्तंभगोव्यूर्ती धेनुवनंयथो॥ गजनागकुलं गजस्थामाद्यात्त्दहीश्वनः॥ दिव्यामिमस्वनश्रीमान्रूपीनत्रविलंबितः॥ नगःसनागवाहु स्याप्र
तिदर्भवसर्वगः॥ समंतउद्यन्नत्वानां समूरत्राकामयन्निधान्॥ नगःमादिर्मनामस्त्वःप्रतिदर्शमसीगलं॥ साविर्दर्श्यनिधीन्वृद्धेर्धपिमवमथोनयत॥ हालवनीननाःसर्वश्रस्थ
कुरिनमाधर्नं॥ सर्वधातुमनत्वानांनिधयाप्तमसूदवाः॥ नह्रवनाःसमालोक्यसमादायययत्प्सिनं॥ जिनस्तरजनं ह्यादवानानंयत्थप्सिनं॥ विनम्ययायकर्मण्याल
त्वाक्रम्य विहानिशः॥ यथाकामंसृवतंस्काप्रवनन्तउदंभ्रमः॥ वस्ततेभेंमस्तउधायंप्रवाभिनं निभ्रम्यन॥ मनूजाविभ्मिताःसर्वं किमनादितिप्रावदन॥ ननाहयापिंकुर्द
प्राप्ताविनंमभनकाः॥ कुत्वातमानवाःसर्वंयभिविस्मयमायपूः॥ नथाहयापिनकुर्वंप्राप्ताविनंमभनकाः॥ कुत्वातमनुजाःसर्वविस्मितास्त्वेवमकुर्वन॥ सुत्वाविप्रम
र्यतवस्क्रिआंधावंप्रवर्कीर्तं॥ नसर्जुस्यास्मपंवादर्थ्यिमवयंधुवं॥ वसुनिगसंमनंकुत्वामर्वपिमनुजामुदा॥ समनप्रवनवानाक्षकृद्देश्मसमायपूः॥ नथासर्वप्रदेश्मपृह
स्तानिधीप्रकाशितं॥ मृदिताश्मनेनाःसर्वंमसादडयंत्थकथा॥ नजानुमनत्वानांगृहीत्वांमयत्थपिसिनं॥ मृदिताभनुजाःसर्वस्वस्वगृहंसमायपूः॥ नक्रगृहेनिधायवनानि
केचिसमत्याभ्रमुष्यभिनामर्गीसद्दोदानान। मंचासंगृहतेसमापनानंवांछाभिपूरकः॥ केचिदहृःसिद्धरसंगृह्यस्वर्णंप्रसाधयन॥ ज्योतीरसंगृहीतितियदर्थमस्वरोःददत॥ स्त्रीरतंराज्यमनु
लंतकर्पांद्रवमेवतेन॥ प्रत्युचूर्तांभोभवनोमृजपूर्यीयतस्त्विमान॥ अत्तलीभूतसौवर्णीन्स्त्यत्कांक्ष्ठसाधनानं॥

स्तवन
नु॰भो॰लि॰दू॰न॰क॰
च॰कृ॰भि॰टु॰पु॰प॰
म॰म॰फ॰भि॰कु॰वि॰
भि॰गो॰वा॰हु॰म॰
ग॰ना॰ २

३५

जा वर्लोकाच्युमानुषाणां गजस्य समाफवान् ॥ तथा सर्वेषु तत्त्वानां निधी प्राकाम सद्वुवि ॥ तस्थे वत्र मद घा घमृत्वानय समनाम ॥ सर्वल्लोकान्विनाधेव सद्धर्मम्
न्ययथज्ञयत् ॥ तथा सर्वलोकाश्च नत्वा न्यायादाय समादिता ॥ ॥ त्रिवत्सरजनं क्षत्वा सद्धर्मप्रावर्तनं पुनः ॥ तदा तव पुनः क्षत्रम् रिक्षं भिन्नुपद्रवं ॥ तथ अवा
पि भुगा त्वा स्तं प्रावर्तितम् सम नाम ॥ पुनर्न सोम सास मत्त्व सर्वात्सु त्वा स्थि तावतान ॥ कृत्वा रुद्वे सर्वत्र तत्थ्य त्वादिव यथो ॥ पुनः कालानायतत्र उ प्रवृत्ति नमान नाथ ॥
सर्व साम न्त्य थास्या में प्रावर्तितम् स नाम ॥ तथापि समस्त सत्वाद्दृष्टा त्यासाभू त्वांसेही ॥ कानुस्थवादिता स्वर्गी ह्युमानानाम धिपाल वत् ॥ तथा व घात नत्वा नां निधा त्रिदि
ध्वल तले ॥ सम घु ध्यनवा सर्वा श्रद्ध मर्म न्यथा ज्ञत् ॥ तथा सर्व पितृलोकान्नत्वा न्यायादाय समादिता ॥ त्रिवत्सरजनं क्षत्वा प्रावर्तनं स त्वर्गान्विता ॥ तथा तथा नव कृत्स्न रिक्ष २४०
म त लादयं ॥ तद्रा त्सेस्त भिन्नुत्वा गं प्रावर्तित सम नाम ॥ एवं तथा क्रुध्यध्वंसवर्द प्रवृत्ति प्रवर्तितं ॥ तत्वानां मा धिपा यो वे निधी त्रिदे श्च न रुवि ॥ सर्वा स्त्रीकाक्रियान
प्रविनाश्य समधज्ञयत् ॥ एवमसौ महासत्त्वः सर्वत्रापि समाहितस्ततः ॥ इत्यवदन्नासमनुष्यादिताः लोकतवत्सदा ॥ सफल मसफल थर्वतत्वानामाधिपाऽवि ॥ सर्वत्रापि

=घ३ = वसुधीपवि

श्री

सत्त्वानां सिद्धिसंदर्शयन्तु वि ॥ सर्वे सत्त्वाः प्रियानघ प्राप्तिस्वाप्य मनः स्थिता ॥ स्वर्गिसत्त्वाः पुनः सर्वे बलवत्समन्विनाशिषः ॥ एवं संबोधिकामा ये महासत्त्वा जगद्धिताः ॥ कृत्वादिव्या स-
गौरुक्षाप्रवचान सर्वोदिवि ॥ इत्युक्तो भगवान् सर्वं बोधिचर्यांत्रत्न वनम् ॥ सर्वसत्त्वहितार्थं सं बोधिप्राप्यन्तिनागवत् ॥ तदस्यन्ति रुद्रकामस्य महर्षेण समनामृतं ॥ सत्कृत्य
प्रयान्त्वक्षा पात्रमर्हन्ति मानवा ॥ इति भगवन्नादिष्टं ते गंमया तदुद्ध्यतां ॥ त्वमपि च महाराजकृत्वानुमोदसिद्धये ॥ प्रकाशपि महाराजबोधि चित्ताप्रय तां गत ॥ बोधिमा-
र्गप्रतिष्ठाप्य चान्ययाप्त्युत्तमं ॥ इति मनाक्षादिष्टं त्वाम जनपनायक ॥ तथेति प्रतिविज्ञाय प्राग्नानन्दन्त त्या पर्षद ॥ दद्य वीर्यं त्रिलोके त्रिगुणगुणा कृतानां-
राजन्मावदानं ॥ यत्कृत्वाश्राव्य निप्रस्थितमनसोपायवसन्त्या प्रमता ॥ सर्वत्र बोधिसत्त्वाः सर्वेलयन्नाथनाः श्रीसमग्रा निधि कार्तुं क्षामोदर्य समतानां जिनव-
च निलयसंप्रयाय प्रमोदात् ॥ ॥ इति श्रीमद्रत्नावदानमालायां नागराजावदानं समाप्त ॥ ॥ कृत्याश्री महीपाल पुनः श्री-
र्ण सर्वाधिर्ग ॥ उपगुप्तं समान सत्प्रार्थयदेव भादत ॥ तदना श्रीगुप्तिको सिद्धपुन नत्यकृत्वगतौ ॥ श्रीघनाख्यावदानं तत्समुपादयस्व सर्वति ॥ इति संप्राथि-

जा

त्वा वीनाथ विमनना धियः २॥ रीनां मांत्रा नस्त माहूय पुनरेवमभ्यादिशत्॥ का २ मामायान्ति बोद्धा ध्याय ज्ञत्रक कुं स्नागत ४॥ पापिना इर्जुनानवत् स्त्रावमतिजंगल॥ धर्मि २ णा नैव ज्ञक म
हस्तुन ज्ञातिपुत्रवत्॥ पापिन एवका कुं स्व कृ राधिम मूपावनत्॥ गत्स्वंय विज्ञ स्त्रार्थं दुर्जनं पापिनं ८०॥ प्रतिदिनमूपाहृत्य निर्स्वप्र दात्र मर्दथ॥ इति नाहं मम मादि स्थं मर्व मायात्
स्थ निहि॥ पापिष्ठं मन्माग रक्क नास्त्र नानवमज्ञुवन्॥ नानवन स्वमंतु ष्टं पापिष्टं दृ विनाशनं॥ निवस्थन स्वयज्ञ स्थ निक ८ स्वज्ञ गद्र्गं॥ कृत्समायो २ समादिष्टं प्र त्वांग मान
वाम्भृषि॥ नस्थ निप्र ति विह्नृ स्य अग्ररुह्स्मं तु नानर्गं॥ नगस्त मानवा २ सर्वव स्य नंतु विनानर्ग॥ मस्मान द्व न नीत्वा यज्ञ स्यम मूपाहनत्॥ दृष्ट्वा गं पापिनं दुष्टं मयज्ञ २ ममू पा
गतं ३॥ निहत्वं मन्मा स्व त्वा ज्ञामय त्वेवमभ्यब्रवीत्॥ ज्ञ्नपापिन् नाद्वा न स्मन स्वि स्पदवनां॥ यन्स्तुय पक्षगं ताग्ध्रं गत्वां न ज्ञाम्य हंक्ष्र व॥ इति न नाधिकं प्र त्वा मयापीत्र मिका
नयः २॥ मांज्ञ त्रिसं ममानस्य प्रार्थय स्व वमादनात्॥ प्रसीद नामहावीन ज्ञम स्वमयनाथतां॥ त्वदाहं शिवमाष्ठि त्वा व निर्घ्न भवरघ नव॥ इति संप्रार्थितं मनत्र त्वा मयं ज्ञ
दृ स्वर्गं॥ पापिष्ठं दुर्जनं स य २ समाश्वा स्य वमब्रवीत्॥ दुर्मते किं विलपसि त्वं यदि जीवितमिच्छसि॥ त्रिनत्वतज्ञनं स्त्रा त्वा वन स्व पाघवं त्रगं॥ ययवं माधय २ पुं स्थे वि

२४४

७१

नमपदंशपायन ॥ यदाहं त्वां नमस्कर्यं विमुक्तः प्रक्षयन्ति ॥ यथा विरम्यपापधर्मा सद्धर्मसाधनाचरा ॥ त्रिरत्नशरणं कृत्वा वन्दितो यामि संतुष्टं ॥ तथा भव जनज्ञानिमिमा साक्षिणू
धिसत्त्व ॥ यथाखिलजिनं दृष्ट्वा सद्धस्वानज्ञां करोम्यहं ॥ यत्कृतं पापं निर्गता स्कन्दशा कुमलवाचिरा ॥ तथा भवतु ज्ञानिमिमा साक्षि बुधिवासस्थिये ॥ पापिनाभवसर्वसत्त्वानिदृशान्नि
दयामहत ॥ धर्मिस्थानां सर्वेषां कृदुज्ञानं करोम्यहं ॥ पुष्पिमहात्मिमानामयधर्मार्थीमं यथीस्थभि ॥ तेवतज्ञानिकायं मूर्च्छामिस्वालयं बुद्ध ॥ तत्रागत्वा समाधाय विनम
पापकर्मणः ॥ त्रिरत्नशरणं गत्वा सर्वदाचनमस्यते ॥ कृत्वा थियः सदानं शीलं संवरं चरन् ॥ सपत्नान् सर्वान् कृत्वा दयालं विजिगीषिय ॥ सर्वसत्त्वहिता युक्ता
जित्वा क्लेशगणांत्रिपून ॥ सम्बोधिं प्रति थिंथ्र त्वा योगध्यानसमाहित ॥ सम्प्रज्ञावन्त सम्यक्सम्पादी प्राप्य संबुद्ध ॥ यथा भवतु ... त्वा बोधिचर्याव्रतं चरेत् ॥ सर्वपाप
विमुक्तात्मा पवित्रज्ञानयः कृती ॥ सर्वहितार्थसंकल्पा बोधिसत्त्व विषयेऽभि ॥ ततस्त्वं सर्वदा षड्वर्याव्रतं समुद्धरन ॥ ॥ सर्वसत्त्वहिताधानी धर्मलक्ष्मी समा
प्नुयाः ॥ ततस्त्वं दुर्गतौ कापि न यास्यसि कदाचन ॥ सदा विमलजातीजात स स्वधर्मी के ... ॥ ॥ ततः क्रमः संबोधिं मत्वानंदपविपु

=६४

आ सह सा मम्र पाक्रम्यसर्वा नवमृग्यादि नम॥ अथ नर्नाकिं घलाय्य ८ क्षम का नविघ्न कतयं॥ यदि वा विघ्न गपूस्यं नेव न क्रामि वक्रेवं॥ पाथिन एवन क्रामिधर्मि स्थि त्नकदाव
न॥ यदि वा जी विम वां काम्मत्र मात्र मयादिनं॥ विनम्य पायनाथ पिव कुर्व्वम विहावि नः॥ त्रियन लकनं कृत्वा वन लियाधि मम्वनं॥ नानदं नेवन क्रायिन क्रावि
सर्व विघ्न नः॥ वांछितार्थं निदत्वा पि पाल घान्या मजान्यथा॥ थयि प्रस्था नाम्बा वाद्द मापू अलवा विंयः॥ नानवम्वय माह्नयु गुंअं नाकं पूर्व प्यय॥ ध्ननिमन्त्र लिमा
ह्यय यदिवः विनजी विन॥ पूर्व्वम्यव विघ्नवं कापनजाधीतेम त्मयं॥ विनम्य दनपाघन्य श्वकुर्व्वम विनावि नः॥ त्रिनन्त्र लकनं कृत्वा वन धं वाधि मम्वनं॥ २४८
गुरुजीथ्याः मभावा याः त्रिनत्र भय संगनाः॥ आर्या स्थं गमसमाक्षना थवन धं पाघ व्वत्रनं॥ थक्रं अमृ कि भि कनि नविसायय निग्रहान्॥ ॥पुव्व भ्र त्रगमा भ
यवनधं आवकेत्रनं॥ थव ह्यात्मे कनिर्वा सं वाक्र नि नमत्र निः मह्र हाः॥ जिन त्रिया जिनात्मान थवन त्वर्द्द कुर्णवनं॥ थवा यि मर्व मत्वानां हितार्थं धर्म वांछिनः॥
वाधि मत्व वर्णध्व त्वा न थवन धं लवाननाः॥ एनानि त्री पियानानि निर्वृनि पदमप्रुय॥ ममा दि स्थानि मवृद्धः सर्व उंगाध्रि नाथिनिः॥ एनं मृत्रि पूयान मृ यत्रवां

कणिथवुत्तं ॥ गतयानंसमाणिसुवनन्तुभोगसंवुत्तं ॥ अवकयानमाणिसुवनन्तिथवुत्तंगुत्तं ॥ नईनंविमला सामावउयू० घनंसांगगिं ॥ प्रस्थकयानमाणिसुघवनाणिगुत्तांव
गिं ॥ नयईनं०गुत्ता सानीलगयू० भोगसंयदं ॥ यमसायानमाणिसुवनन्तिवाधिममवनं ॥ वाधिमसामसामसाउगत्राआनवनिग ॥ नयईनंउगत्राआधर्मनाफामूरीवना० ॥
सर्वससगुत्तं कृत्वामवउयूर्ञिनालयं ॥ एवविहायसंमानयवकन्तिमनिर्झगिं ॥ नत्रिनत्वंतउनीत्रवनन्तु वाधिवानिकां ॥ मघामदंमदात्रायीनर्लीना० क्षगिता थैकत ॥
तदिगीतयमाना क्षिवनन्तुग य०थकया ॥ पाधिनतवतउामिसवयमालासंसंदनम ॥ सूमिमहृति मारव्यायमंवाधयनघो विकान ॥ दस्सक्तनयकगशसामर्वधिगउना०
गरथनिर्गनिविहस्यप्रत्याय्ये फगाडुनं ॥ नथ्यागनपगनंग्रगसामर्वउपात्रिना० ॥ सर्वभगसुवलानंनिवद्या वाधयसुक्रा० ॥ नन्निवदिगमाकर्मसर्वनपादयाथिग
॥ मामानुमत्रिन समंघपाविकां०यनिवाधिमा० ॥ विनम्यदनयापंयधकुर्मसविहाविघ० ॥ त्रिनलाजनंक्रत्वाप्रवनू०थाघधंवुत्तं ॥ कविस्कउमसाञानाप्रवघविं
उिनन्द्रिया० ॥ प्रावकवाधिमामामवहवुर्मसवानिश० ॥ कविदिनतसंमाना० घनिगुंउत्रिमगुला० ॥ प्रस्थकवाधिमामाषप्रस्थकमगकाउिना० ॥ कविस्नाकहिताथ्यो

जा सूर्मर्वासिद्रव्याप्यादानुसूधका ३॥ पवहर्ष्वविसृष्काथिहृत्वा वाथियनस्यानं॥ मातथितोयहृत्वाथित्रवक्रुद्वयसाधनं॥ थिवाथिनंमसूधम्यक्रुत्थियामासूलाम्रूथि॥ सम्यक्लिमाधना
सूका॥ एवनूईथिमघथि॥ नदाथियायसंवानान्नि धयक्षमसनाम १॥ गुप्तीहृतानिक्षीनवंधर्म॥ समसायसू २॥ नामक्तुद्धथिवा॥ सर्वद्रिव्याप्तकूल्पिगानयाय॥ सम्यक्धर्मतुंवा
वपथित्रहर्षावित्रसू ५॥ एवंनत्रमहात्यासंप्रेलयउथिनंयथी॥ कथिद्रुन्नानयाल्स्वाकायगीविर्मथिरहदा३॥ सहार्थिसंगिक्रम्यद्विषानानथिविक्रसू ३॥ नत्राथिगद्नानाना
कै वलथनलालमा॥ क्रूशभिमथिगात्मानाहृद्वथिमाएववाथिन॥ कथिक्लिंथिरसलश्वार्थेएणायथयुमंदलय॥ कथिक्लिक्लिदलश्वार्थाश्रूप्पाजम्सूथिनाक्रूद॥ कथि २३७
क्लिक्लिदलश्वार्थीगतेवनिथनंयथसू ३॥ कथिस्त्वराष्ट्रमार्गाथिजमनाजगल्पगा६॥ कथिद्वोनेक्षिकार्थाधिनिकदक्षास्रसंययसू॥ कथिद्रामान्थिनाश्थिना॥ सार्थस्यकाम
ना४थथि॥ कथिद्विनवलश्वार्थीनामान्विमाग्रहेययसू३॥ कथिस्त्राफगहरएवनक्षार्थीनिधनंयथसू५॥ एवंगवथिजश्मर्वद्र याताथाकूलानयाथ॥ नानादसत्रसनाथिमध्यक्लि
नसमायथसू३॥ उद्वाथ्यवप्रयुंजाना जमनाद्धथलालसा॥ यावज्जीवंमर्वक्लिक्लिद्रुजहनेकदाचन॥ एवंद्वाधिसंगफादाविसृक्लिगाम्याथ॥ सर्वथिद्भिगामका३

ईलिषवचनिव ॥ कश्चित्पुरुषस्तस्मार्थनं धर्मे आतुमपीच्छिनं ॥ अधर्म एव सर्वं नकुः२ प्रवर्तुई पितामपि ॥ एवं वमितलिंगिन अपिस्वकर्म विन तासयाः२ ॥ कवलद्रव्यलाभान्धाद्र२ कर्म
ना ॥ र्थमर्जयन् ॥ तथापि सर्वद्रनामस्का धर्मे आतुनमेच्छिन ॥ सदापि इ२ पिता एव वहुवृद्धंगी२ भजे२ ॥ एवं कृषिकनापि पिलाठ व्याकुलमानसा२ ॥ प्रतिदिनमेविप्राणेके कृषिकर्मम
नुयत२ ॥ नृपिनाइ२ पिता एव कदापिनापि तामिवि ता२ ॥ सद्धर्ममात्रमनो सान्तैनैवडस्त्रमपीच्छिप ॥ एवं तद्विजनापि पिद्रव्यलोभाकुलमयाः२ ॥ सद्धर्मावपिल स्वार्थवशात्तनि
प्रार्जयन् ॥ तथापि तत्कुलस्त्रीनैवतस्कोमनिश्चना ॥ इत्नेमा एव तस्मा२ प्रवर्तुई पितमसदा ॥ एवं सन्याधिपालस्यावका र्थर्थलालसा२ ॥ परलोकनिना कोऽवर्त्यान्यवमम
र्जयन् ॥ तथापितस्त्ना नका२ सद्धर्मगुणनिन्दका२ ॥ दुर्लभाहिंसका२ कुमाससमपि मृत्वावनन् ॥ तथाच मन्त्रि२ यामान्या२ सद्धर्मेनिनादवा२ ॥ स्वकाकामवनालब्राहनी
लोभ्यभिप्रार्जयन् ॥ तथापितत्कुलस्त्री स्त्रीह्निमुखादिमात्रयन् ॥ कुनामात्रविलीगवक्ति स्वायल्पापिगालवन् ॥ तथापितद्नाम काधर्मार्थ कुसतापिना२ ॥ निर्दयास्फातयनापित्र
गार्जड्र समादनन् ॥ एवं नाजानर्थपिद्रव्यापि लालसास्तना२ ॥ स्वका कामसंनमानकु२ प्रवर्त्ता नापिवानयन् ॥ ब्राह्मणपिवादिसर्वनामकृ विवकृ याः२ ॥ द्रव्यार्थया

जा

ष्वं वीजानां ऋप्रभक्ति विह॥ सत्कारनेनैव कर्ल्यं ऽगण्यं कनविद्धव २॥ प्रसादान्नृपतानाऽखिलं प्यवव नय दि॥ मत्स्वामिन २ प्रभु श्रादि द तात नमस्तु याह॥ ष्टु सुवं मन्त्रिय त
मिर्ष्ट त्वाम यनिवाधिना २॥ त्रिनस्तु ना त्मानविनताम्नु व ल्मा॥ ततस्तु ह नामाक र्थ्रीमहाउना स्वयोभिका २॥ सर्वोपि पत्रिनस्त्वानां तजनविनश्यियम् २॥ ततः प्रभु ति
सर्वेग त्रिन त्वानां विनाधिना २॥ सत्कान रुजना स्वार्मद्ध इस्त मपिन वेष्ठिन॥ सर्वतेषी त्थिकानां वधर्मा न्नृ मनावना २॥ सन्तु सुधर्ममाक र्श्री प्रावनता २ मदा हजनु॥ ततस्तु
नवमस्ह मे पिना ऋणमहजना २॥ प्रसन्न २ पुर्मोक्षि यप्रवेन्नई निमान ता २॥ ततस्तु द्विनाम कादय स्तुत्वा मिद्य २॥ धावपागकम्नि २ शंका विजग्रह्द २ यन्न मयनं॥ ततस्तुवि
ग्रहे त्वा पनि नाष्य पनस्य नं॥ निनाय का २ प्रमका न्धा २ पाप ध्वप्रवनिय॥ मद निपाय मंत्रवा सर्वलो काधिपाम्प यि॥ प्रनुह्या विषयनप्रद्युस्य सथि नवस्थिन॥ तदा
तदि मूर्खा कृत महास्या नंम प्रस्थिनं॥ इति श्रुंवमसा धानं प्रावर्तितम मनातत २॥ मसर्वक्षत्रनस्त्वानां निधयापि प्रमनातत २॥ तपोन्नयनि लीना श्व विनं श्रीलवस्त्व वो॥ ततस्तु
मांननाशां वमयक्षापिवि २ ऋषिनाथ॥ विहिता २ श्री निमान स्हन्ना मस्त्री भाहिप्रानीवत॥ ततस्तु मानवा २ सर्व दविद्रा २ क्षमनापिना २॥ त्रुस्थिपामास तानाना यामप्रसमापिना॥ २३९

३३

त्वत्॥ तत्र केचित् कृतार्थाः सन्ति ब्रह्मचर्यं यथाक्रमात्॥ सत्कार्य्ये समायाति सर्वपापहरं सदा॥ तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्री — — सत्यसंयुक्तः॥ तेन तपस्यमानेन श्रीशिवायपवि
त्रमाषितः॥ वशिष्ठ एव कश्यपायितसर्वसत्कर्मामृता॥ ब्रह्मत्व यस्त्वन्नं क्षत्वा सारथेत्र स्वाप्नमावेन॥ तेदृष्ट्वा सन्ति परमाश्चर्यं सर्वप्यापि निविश्चयात्॥ तत्कालेनृपतेनाश्चर्य्यं मत्त्वा मत्समन्वितः
नः॥ तत्प्रपञ्चात्र नत्वानि समस्तानि शिवशर्मादयः॥ सन्ति परमसर्वयोगस्य क्षेपरं यस्य यादृशं॥ तपातत्प्रात्र स्नानानि तपांसि यानि तानि तु॥ एवं कोष्ठा तानि क्षानियम्यनं
गावेतस्मतं॥ तपांसि तत्र कस्मात्॥ याथिविसर्वपद्मथा॥ पविसर्वशिष्टास्य सत्पुत्रापञ्चवर्षाश्रय॥ एवंते यापिनाशस्तदन्ति शिवएव पूर्णिमा॥ पापत्रपनिवागका
वृष्णुवा पालकस्व पि॥ तत्कालयापि तत्र वद्लिङ्गमानिकादय॥ महापापनमहापापात प्रायश्चित्तं समस्तं तत्॥ कवितामितिस्वर्गात् कृत्यियामाहात्म्यवा॥
निम्रापविश्चित्वानाम स्नानायपुनपायक॥ कवित्स्वामिसर्वतपा कृत्यियामास्कृतासया॥ स्नानस्थानपवित्रं कानात सकास्तुवत्वमिन॥ एवंसर्वपितत्त्वापप
निवृत्तागतापिता॥ कुञ्जाश्रुत्वाद्नावासात्कम्वरदेवप्रवरतय॥ ॥ एवंपूर्वेलिसर्ववाचा महापापप्रवर्त्तितं॥ विलापस्य समस्तान्नं कृपाकातुवर्षवादित॥प

जा

=मि३

नंतानं॥ सर्वाणि मकलेजाता॥२ श्रीमन्त २ मक्रुध्यन्विनाश॥ दत्वादानं मदाथिरय २ मलस्वान्यवरास्य था॥ गत २ यानमिता २ सर्वा २ पूजयित्वा यथाक्रमं॥ त्रिविधं बाधि माहा
यमन्ह्य पद मा प्स्य थ॥ य प्रतन्मवखा ग्र त्वावनिष्य थनमं वनं॥ सर्वान्वाहं प्रत क्रामि मक्षाग्निव स्थमनाति॥ त्राम नायदियउक्षा वनतिथाय कर्ममं॥ तानथ्यं वं प्रव
क्रामि मक्षाग्निव स्थमंनगीन॥ बाजानाय दियं उक्षा दना कृशाल बानि दात॥ तानयं वं प्रवादानि मसंत मितनप्रजान॥ विस्वाश्वयदियउक्षानववनति ग तक्वित॥ तानय
वं प्रवादानि मर्वमं गोत्रवान्धवान॥ शुक्तिनायदियउक्षा २ किंचिद्धर्मं नकुर्वते॥ तानयि निर्दयात्मत्वा नकुर्यामि मर्मंत नीत॥ एवमर्थयिला कार्यं ययउक्षा २ मपायका २ २४३
॥ तान्क्ता न्सर्वान्त्रिदशे वं निर्दयात्मकुर्यान्यपि॥ वृद्धान्यून २ कुमारान्श्चमानकान्बालकानपि॥ वृद्धीश्च यौवनीर्वा पितु मानी वीलकीमपि॥ न क्रातिनिर्दयात्मत्वा मर्वानि वं प्रत्ना
नयान्॥ स्वधर्म वाणि॰ चाउक्षा मम स्वधर्मेषु॰ ता मि॰ ता २॥ यषां धर्मं न विनी क्षियायष्ठे वर्नति २ मया॥ तानर्वदंनि कृस्येवं व श्री कृस्य यनान्यह॥ यथां पाप न तिनां भि धर्म धवमध
नीतिह॥ तान्सर्वान्निवत क्रामि न क्रापि पालयान्यपि॥ एतानि मला हयंमन्त्वायं २२॥ दिर्शाविक मिक्षुथ॥ विनम्य पापकानि स्वं वनध्वं बाधिमनवे॥ बाधि वर्यात्रयं यथि वं नति बाधि

१०

मद मास दिन्य
मार ५.ना ११०
दर्व मि ६
दंगा ५.७
मस

मानसा २॥ तथांग श्रीर्यतेवं सर्वत्र सत्त्व खनि दि ॥ रक्षिमन्वा सत्वा स्यवक्तां सदा यदी कथ॥ त्रिनत्त्व गतं ज्ञानवन सर्वधि मन्वनं॥ अयाथत्रिनत्त्व सगतनि नवदंगता २॥
दुर्गति नगक्ष निर्मया म २ सगतालयं॥ रक्षिम त्वाशु सर्वाक्षाय स्माकं विघ्नमयदि॥ विनमयपाप कर्मत्य २ कुमलेन तीर्थतेन सर्व॥ अत्र यम पापिनां दुःखानवाह्न समय पुन २॥ अस्मा
र्थमृपानी यथ्प्रदाकं मृयमहे य॥ रक्षिम नाथ दिनंत्र त्वा सर्वं त्रमिकानना २॥ साक्षा लयमत्ता नम्य पूननवं स्यवदयत॥ अग्धानस्य वयं सर्वं त्रिनत्त्व मनवंगता २॥ विनस्य पाप २
मार्गाधर्म मार्गे वना वहे॥ तत्र वा रुक्ष यथा लाक्ष त्रात सहं भिमवदा॥ पापिना पिस मानीय थथ्या सह वयं तव॥ रक्षस्कांगननां २ सर्वं नत्वा गंमत्त सगतग २॥ वनना २ पूनमा
गत्पन पगं २ पून कायथू २॥ तत्र गमानवा २ सर्वं त्र त्वागं नवाधियं॥ यक्षा कंसर्वं हका नंगमय वाक्षान्य वदयन॥ तत्र नगनेनाजन्य तत्र पापिन २ भजन॥ ता स्माय समूपाहस
ताम्नाय दाक्षम हेति॥ यथ्यवं नमयताम्याय दमाति पापिनाजनान॥ मंगलं घ्या तेमयास्माकं सर्वं घामयपि निर्दयं॥ यदि तस्मै नजन्नुत्रा न्यापिनापि यदामतं॥ मयक्ष २ त्वं यमा तह
तजन्म वर्ति नपि धुवं॥ तदास्माकं सहात्यात तयं तस्मात्सदा तवत॥ कारिन्मसि तीक्षासं हता नाभिवनी घर्त॥ आपिनो दंमसत्वीर्य निहन्तुं मक्रुयाद्भाग॥ रक्षिमि तेर कथितं प्र

निसपाल छोमे

देसं खं

जा संभवनं ॥ तनमंतेबोधिमुह्माबं पूर्नयित्वाय थक्रमं ॥ त्रिविधं बोधिमासाद्य निर्वृतिं यदमाप्नुयुः ॥ ६ इतिसत्वासदा हृदं सहत्सोग्यं यदीकं सि ॥ त्रिनत्वनकनं हृत्वाच्च नत्वबो
धिसंभवनं ॥ इतिमनसमाख्यानंतिसम्यसतिबोधिनः ॥ तत्वानंथ त्रिविहृ यमसमणाबनकगः ॥ कंखवनं संयकश्वहृष्टवं पुमनत्त्र वीत् ॥ पायिस्येऽहं समाधायनयसु
मह सान्नुऊ ॥ इतिनइकं साकर्षीगत्थतिसत्रागित्ऊ गः ॥ महसापूनमागत्यनाह ॥ गुरुवमत्रवीत् ॥ ऊयदवमहानाऊनवत्रर्मानुत्वावतः ॥ सूकोहंतनयकं नप्रभिता
नवता तिकं ॥ गहृवान्तमयय ऊस्यत्नामथयपापिनंमं ॥ विलोक्य महसाहत्सु मंगुघ धित्ऊमहं ति ॥ ७ त्यवंसर्वहृ कानं तिवंस न यगः पुनः ॥ प्रसत्वासप्रमत्वात् २४१
मास्वस्पहं सभूपायनत् ॥ गत्रस्तत्त्वगृहंगत्वाहृत्तिवन्धुसहऊनेः ॥ यथागननसमादिस्यं त आवनत्सदा हृषं ॥ नथात्यपि हिलोकार्थं गत्वयधर्मलालसाः ॥ गुरुनी
ला ः ससाक्षायप्रवनूः पो पर्थवगं ॥ गहृयदिस्तु साकर्षी सर्वलोकाः प्रबाधिनः ॥ त्रिनत्वनकनंहृत्वाएवेनूबोधिसभवनं ॥ वनः मनैयमिमस्येयकस्य पापिनंमं ॥ प्रसान्ता
नार्थंमसाहं प्रेनयवत्रगनऊनान् ॥ नत्रमप्रविनानाह्हाऊनाः पुविसमनागः ॥ पापिनंम ०माहऊं मालोक्य महमावनन् ॥ नथागोश्वनमोहृष्टा नीताःऊ त्वावपोवि

काय॥ सर्वं विनयायास्क वलत्व धर्मसमादिशत्॥ नयानयोविकाः सर्वविद्युत्तमं विहारिकाः॥ जिनस्तु तनं कृत्वा प्रवक्तुं बोधिसम्भवं॥ यदन्तरं समर्वं पिपीमा विवक्तयायका
॥ सद्धर्मसाधनानकावल व बोधिया निशत्॥ तदेकोपि तु नावावा ने वाक्षी त्यापक संस्कृतं॥ सर्वज्ञिनं तत्र स्तुत्वा नेवताक्रासत्के तार्थितः॥ तदा सर्वकला मेवकत्यनाहरच
नागताः॥ पादाक्रुष्ट्रदर्शितं कृत्वा सम्मीक्ष्य वं न्यवदयत्॥ स्वामित्तत्र पूर्वंकथितं त्यायत्नेन तत्त्वया॥ जिनस्तत्क्षणं कृत्वा सर्वं वनं तापार्थं॥ यदयतस्वयक्र स्वामाम्या॥
वंन विप्राणा॥ तदसौ स्वयमागत्य सर्वोन्न स्मस्वत्वा॥ स्थविर कथितं कृत्वा वाक्राधिमत याडु ल॥ सर्वान्काश्च शिरसा मान्य समामन्त्र्य वक्षादिनत्॥ सर्वथा मो
मतक्रुन॥ पथ्यमस्मा स्मसादके॥ मध्ये च ससर्षभो कल्यय यथितां धिम॥ स्तुत्वा दिर्ष्टं ननं स्तु॥ कृत्वा गम शिरसा कृत्वान्॥ तदर्मू लाकुनंदत्वा मच्छत्रपुष्ट
यकृते॥ तत्रत पिक्रताग त्वायक्रत्वा प्रदक्षिणाः॥ सालोक्य वससितिं तीका निकटे समुसा वनत्॥ ता क्षणसमपद्मपायामा नृत्याय कृ समुदनतः॥ निर्मिताक्षनु कात्कुस्वा
ताकुं तस्त्वे विलोकितः॥ तस्यक्षस्त्रजाल ऋक्षा ताकुं विलोक्य वक्षितं॥ ताता सर्व पितृद्य क्षा तदा तत्व पलायत॥ ता स्पलायितान् दृष्ट्वा सचकुः समपाइता॥

जा

ऽपिसृष्टमनन्त्वा यथा ॥ एतद्घोषं समाकर्ण्य सर्वेताविस्मिता नना ॥ ततस्तस्य घोषमिश्रं कामसंस्कीर्तकाः ॥ ततश्च महत्त्वा नागराजा कृपानिधिः ॥ एतद्देवस्य घोषं स
मुत्थापयत्पुनः ॥ पुनस्तस्य घोषं प्रवाभिनं समनतः ॥ त्यामानवाः सर्वविस्मिताः स्वैरमकुर्वन् ॥ सर्वापुनः स्म घोषः स्वायं संप्रवर्तितः ॥ [illegible] स्का गतना ॥
सर्वे नमस्कृत्य शंका विशादिताः ॥ ततश्चापि सनान्यान्ते सु विस्मितास्तदा ॥ नायस्ततः महाघोषमुद्धं प्रावानयत्तथा ॥ तयात्थानसमुत्तादमुद्वेनवंप्रवाभिनं ॥ त्वा
मनुजाः सर्वविस्मिताः स्वैवमकुर्वन् ॥ सर्वाविष्टप्रिश्चाप्यवं समघोषं प्रवाभिनं ॥ सर्वद्विस्यादमृष्यं वादं स्वमर्त्यमनस्तथा ॥ श्रुतिमनुजाः सर्वविस्मयसंमनास्तथा ॥ तत्रतत्र
प्रदक्षिणीकृत्य संदर्शितः ॥ तथा सर्वत्रदेवा पूजितवयः सं प्रकाशिताः ॥ तत्र संस्कृत्य त्वानिसंमयस्य न्यस्थादितः ॥ इत्युक्त्वा मनुजाः सर्वसंस्थिताः सर्वविस्मयाः ॥ यस्य चा
श्चिरं नागकुलानां तत्कपादतः ॥ यावदार्द्रं निसंपूर्णं सरही त्वां संप्रसादिताः ॥ सर्वगमानवाः स्वस्वगृहादिमस्यायत् ॥ तत्रगमनुजाः सर्वे [illegible] गिनः ॥ सर्वेद्र
व्यमनसामकृष्टिसमं श्रावकविनः ॥ ततायमानवाः समीयथात घोषकाघिनं ॥ तथा गत्वा यात्रायां प्रिसत्वाभिसमानजनः ॥ पृथिव्यापियथाकामं तथात्मानं दत्तमर्पयत् ॥ सर्व

२३४

३

सूर्यहि गार्थीनिकृत्वावन्नूस्सदा शुरु ॥ तदा मर्त्यागृहं सासीत्सुश्री ३ समहितनन्दिता ३॥ मनरड्महा सार्द्ध प्रावर्षऽभिनन्दनं ॥ सर्वड्यमसामम त्युवर्ड्डिगा ३ समहिका ३॥ धर्मा
नेत्वानुगावननेवक्री गाकदावन ॥ एवंसनागनाहूयांसंनिदर्श्यनिधीश्वरहन ॥ सक्षत्डयनन्धानिदन्वाहनन्वगांकर्मि ॥ सर्वान्का सविनामसर्प्रान्कृत्वामसर्मवानिवत ३॥
त्रिवन्नुनऊना साहप्रवर्क्षय स्वमनाग ३॥ सर्वत्राधिशुरं कृत्वा संवाधिपुत्रिधानहन ॥ कालमनागनाऊ। यिदर्सर्भ स्वादिवंयग्यो ॥ गत्रायिममहामन्त्र ३ सर्वसत्वमिमार्थितं ॥
सधर्मसाधना सोहं ३ सदेवं ३ शुहवनत ॥ मगर कालाकनन यामर्यसाक कवायिर्वा ॥ कुमास्त्राकाकूला मर्वेवन वु ३ पापवाविन ३॥ तदापापं स्वा सर्वंड्नाथानां ३ कू हलय ३॥ सू
र्यासहयाविमानोन्यसमत्तनाक्रान्तमानसो ३॥ सदूर्मनिन्दकाद्दश दर्शी कू नल वानिन ३॥ घनस्यनाभिनन्दनो ३ प्रवर्दृ इनिमस्थापि ॥ तदागत्या पसंवानतधर्महासिविकानगं ३॥ अ
माकृ यामनुष्या सोंमध्यत्वं थाविनमिन ॥ गैपिवमत्यय ३ सर्वनेर्यु स्वानिष्प्रतोविता ३॥ ससयधर्मपवित्रस्वाट्स्वा ऽन्यानिर्गकतात ३॥ तत्कमनूजा ३ सर्वदनिद्रिमाऽनोभयाय ३॥ कूलय
र्मसमावानेयस्काब्धनन्तू हरिप्रिय ॥ तस्या पादशुतावानाड्वर्मसङ्गनिक्षीनन ३॥ इति श्रीकंवोगर्सवाधंमहात्याम सवर्लन ॥ तदाममानवाय्यलाट क्रौ सा पिताधिमा ३॥ निधानूप्या २८८७मेने

गो

मा दां कर्तुं मर्हसि ॥ यद्दानाम त्रिरत्ना माश्रुत्वा श्रु यो श्चमहाजना ॥ वणिजः सार्थवाहाश्च सर्वे प्रियाधिकाः भुवी ॥ बोधानां च चनं कृत्वा ग्निन्तानासूपस्थिता ॥ स तु स य तद्द्यास्य र्यं
हत्तुनिजनवर्ण गता ॥ अस्माकं धर्मशास्त्रं हि श्रोतुं कोपि न वांछति ॥ तद्धर्षाय च मद्धर्मो विनश्चति कलौ यथा ॥ यदापि तु जनयज्ञ बोद्धधर्मः प्रवर्तते ॥ तदा तत्र महात्मा तं कुर्महि
हप्रवन्हवं ॥ यत्र जा निमदा बोधे सत्व सुसमपस्थिता ॥ स्वर्गं गमिष्यति नरास्ते तेयाम्पिनि नरकं ध्रुवं ॥ यत्र धर्मं सम सद्धर्मं बोधानां ह न्यवादिनां ॥ न पिकान्तिनि न स्वर्गं याम्य
नि दुर्गतिं सदा ॥ यं च कुर्वन्ति मन्त्राणां मन्त्रयानां तव नाशिनां ॥ तापिन सफ्ल तिया नि दुर्गतिं भवमर्दया ॥ यच कुर्वन्ति बोधानां दर्शनं श्रद्धया मुदा ॥ तस्य धर्मपवित्र हृत्य मयुई २३८
हविनाल्व ॥ यत्र दाना नि कुर्वन्ति मन्त्रास्य बोध शासन ॥ तथा सद्भूलक्षी नतिष्ट याया त्यनाश्नु रवी ॥ तत्र क्षांप्रयत्नेवो सं विनाशं धिमस्यय ॥ यदि की ता विलोमयः
प्राप्य कालसमाय थ ॥ य बोध श्रावकाद्यूत ह्व ॥ शीलांस्तिर्नाशयाय ॥ अस्मद्धर्मं नमाश्रुत्वा श्व नय सुई वितमदा ॥ ततक्ष न नक्षया तावश्य सुई श्वि नाश सदा ॥ मुक्तिः क्षणान वि
श्वतकदापि हि कथंचन ॥ दृशि मत्वा समशासा श्व स सूत्रं यदि वांछसि ॥ बोधानां दर्शनं वापि कर्तुं स्वात्मभिः सर्वदा ॥ संगं गमन माला धमावामं बा क दाचन ॥ राजन वापि मे ॥

साईं न कर्तव्यं गुरुणापि हि ॥ यद्यपि क्रियमाणस्त्वया दोषाय समस्तमागमं ॥ सापि धर्माय चित्रस्थानियमनं कर्तव्यं ॥ ददृशे विकृष्टकालमक्रिन्वोद्यानामा गुप्तमस्तु विना ॥ न हाक्रुद्धयन
यात्रार्थं विनिर्माय्य ननु कथितं ॥ न हायनं यं नगन्तव्यं दोषाय मदकं दावन ॥ हिंसामंत्रमकर्तव्यं न वक्तव्यं नवि ॥ प्रमादात् क्रियते माहात्म्यं अनंतभोगमेर्यदि ॥ पापिष्ठा सोम
हाधानननक्तो विपुलद्रुवं ॥ एतत्सर्वं मया प्रोक्तं सर्वसत्त्वहितार्थतः ॥ तस्माद्दोषं घृतस्नात्वा निवार्य चित्रमर्हसि ॥ यदि निवार्यते नैव मत्वान्ते बोद्धुमासन ॥ भोगतत्त्राववकाः स
र्वे तथाविघातिप्रमातितः ॥ तथा सर्वे ददृशुः सर्वकामक्रिया नर्तनं समप्य क्रियाः ॥ सुत्तं यानि सर्वपापानि हि ॥ ततस्तत्र प्रवृत्तं नभसा स्थानं समभ्यागतः ॥ कदाचिदर्पगलं नैव
मलिनं वनवर्त्माहि ॥ ददृशे मस्यामसाधास्सदा लडं यदीक्षति ॥ त्रिवर्गं तद्गुणैर्लोकानि यामयस्य सर्वतः ॥ ददृशे तानाघिनां क्रत्वा सामन्त्रीयपि वैधितः ॥ तथाही विप्रतिक्रायती
र्थिकं तमनादयत् ॥ तदा मन्त्री महत्त्वात्मा नीतिकोशः सनातनः ॥ नृपस्तं भूतनामानं सर्वभक्त्या व्यवदयत् ॥ नागाधिप त्वं स्त्वा समृद्धिभिः प्रबोधितः ॥ तथा विधीयतां मन्त्रि
विशालाद् प्रदसान्मृदो ॥ तदादिदृष्टं नन्दनं त्वा मन्त्री समादितः ॥ श्रुमाशान्स विवासर्वान् समाम श्रुत्वा समादिशत् ॥ तालवनाः प्रतीताः सर्वं कर्तुमर्हथ ॥ स्थानं यम सदा

आ सर्वथाप्यविवर्जिताः ॥४॥ सर्वथायथविस्मनष्टाः प्रतिध्वनार्थकोविदाः ॥ निःक्रमाविजिता मानावलिनानिर्जितानयथा सर्वहृष्टानवन्ता प्राःसमाधिप्रु पयानमाः ॥ एव
मन्यपिलाकायस्वकुलधर्मख्यापिनः ॥ निर्मदमानमात्सर्याः तद्रार्थमात्मनाश्रताः ॥ तथाभयापिमान्यानितन्क्रामिकधावन ॥ पिवामिनेवनकानिगदन्यानिप्रद
लम ॥ थवमस्पर्धिनावानादलाहलमर्मनताः ॥ सुपानामदमानान्धाः समस्तधर्मविवर्जिताः ॥ मात्सर्यदहिताः तानाः ईश्वीलाद्विमानताः ॥ निर्दयार्दिमकाः कृ
रोधमार्थविनताः स्वयाः ॥ क्रीत्याकुलविलासार्थः प्रहृष्टः प्रबाधिनः ॥ सृनुपायविक्षनष्टाः दृष्टिनिहिताः सयाः ॥ सभामध्यमदमानान्ध विपरीतार्थबाधिनः ॥ २४२
प्रवमन्यपियमस्वाः क्षिनस्वप्रु ॥ दूषकाः ॥ मद्भर्मनिन्दकाः दुष्टाः आर्यसत्त्वापवादिनः ॥ सुवृद्धस्य विनानाद्यः समर्थविध्वामसघानकाः ॥ अधर्मनिनताः सर्वाः अमित्र
वत्सगाः समाः ॥ तथाभवप्रदक्रामिमान्यानितृधिवाः अपि ॥ तदन्यथानतक्रामिनपिवाम्भिकधावन ॥ मन्यप्रदकलपापिनामान्यानितृधिकाहिव ॥ यदिनर्गादकीर्ष
नयूस्माकंतद्क्रयान्यदं ॥ कल्पकामावितृपास्त्रा निर्मितान्वालकान्स्वयं ॥ एतान्हिपापिनाकल्प निपिवदन्त्वतकग ॥ एवंतदन्जिता स्पृष्ट्वा तीतापः सर्वपिगतनाः ॥ साकृ

न्यय २ पुगत्वार्गं पुन एवंवदता षिनः ॥ प्रसीदात्र महासाध्यः श्रेष्ठत्वाद्दांश्चित्तमागव ॥ संवविद्यामहत्त्वंनसंबोधिमाधनंत्तु गं ॥ तस्मात्त्वं समाधिश्च सर्वबोधिसाधनं क्रमात् ॥ कृपया को
मलमाःर्गनियुक्तप्रक्रमर्हसि ॥ ज्ञाणिते २ पार्थिकं सर्व २ श्रुत्वा समं प्रसादितः ॥ ॥ सर्वान्स्तान्समनुज्ञाप्य समाश्वास्यैवमब्रवीत् ॥ मा हेष संप्रसीद श्रेयः यदि श्रेयं वानिच्छ
थ ॥ यथा त्रिविधाश्चिंतं द्रव्यं दत्वा न क्राधिमर्वदा ॥ यथैवं समस्तमाख्याय धर्मं नैव व्रावि च्छथ ॥ यूयमानं घि परा क्रम्य सर्वान्त क्रामत ध्रुवं ॥ शुश्रुवं सर्व २ श्रुत्वा यदी कथ तव
सर्वं ॥ सर्वयत्र त्रित्वानां कृतमशन दंगताः २ ॥ कृर्थिन्ययः संप्रदानानि कृत्वा विनत महर्ष ॥ विनय्य या पकसंमादतः । ध्या घि समादिताः २ ॥ गुरु शीलसमाचाराचवतं ... पायधर्म
गं ॥ तुम विहानि [illegible] कृत्वा स्वयमात्म [illegible] ना २ ॥ क्रान्तित्र संसमाश्रयप्रवन ध्यंऽग ढिताः ॥ सद्धर्मसाधनाय कामसदावीर्य समादिताः २ ॥ स्वपन [illegible] कार्याद्वि कृत्वा विमृत मध्य न २
॥ उत्वा ज्ञभा स्महद्र हा [illegible] ज्ञानयाजिर्णा त्रिया २ ॥ ध्यान समाधिम [illegible] त्यं तु ध्यानम श्रमाकव ॥ सुधी सम कला विद्या २ सद्धर्मप्रद साधनी २ ॥ संबोधि नत्त्वसंप्राप्ते प्राज्ञमध
सत्ता त्रिता २ ॥ एवं संबोधिसंप्राप्त्ये घ भूयान मिताः षि ॥ संबोधिप्रणिधानं नवनना वृत्त गी सम ॥ यद्यथं भवव २ श्रुत्वा भूत थ धर्मसाधनं ॥ सर्वे साधा नवंद्द्य र्ड भिन्न स्यान ति

आ

पनूंषेनि मे॥ मद्भूमासमृयागम्य द्भुत्वेवं यथा विपृष्ठक ॥ अनया पि नृवा वा न किंचित्स्पृ कवा चिति॥ पृथ्वंय यक्षित किं चिन्नत्वा हं कृ यसमयहि॥ पृथ्वं वं गा नलक्षामि पा
पिनएवत कृय॥ स्तुणिम हृह्रिमाह्राययदिकौथित्र भिक्षमि॥ विनम्य यापद्मंथ पृथ्वं कृनन त्त्रयं तज्ञ॥ नमाहं त्वां समालोकन कृयं खास्मकृयं था॥ वांक्षिता
र्थंप्रद त्वा पिपाल यिष्यामि सर्वथा॥ स्तुणिम त्वा क्षित वां क्षापनत्रापिशु तयदि॥ त्रिनत्व तज्ञनं क्षेत्वाब्रु मं त्वनर समाधित॥ स्तुणितनाथिंग त्वा ती नार्हपविवा
धित॥ साकृत्रिथु पुनूंदत्व त्वा तमवं प्रार्थयामि वै॥ प्रसीद त्वं महाभाग कृमस्वमप्रनाधनी॥ यथा त्वया समाधिस्थं वनिष्यं हंगपामदा॥ नकृम क्षी विर्गनाथ क्षित्वा त २४७
मनःरतामदा॥ यावज्जीवं वनिष्यामि त्रिनत्वतज्ञनादिकं॥ स्तुणिम त्वार्थित त्वामयकृ पि क्षुधाहं त्वां॥ विक्षाद्ध मां समाश्वास्य वदर्ह वं प्रवाधयन॥ यदि मत्सं म माक्ष
यविनम्य दत्त यायक॥ त्रिनत्व भानधं क्षुत्वा वनमपायये व्रतं॥ मक्षात्प्रुषयिष्यामि धर्मार्थं स्वर्गं खल॥ नावक वं पूनर्हत्वा त कृयं त्वां प्रनाशयं॥ स्तु क्षासमसा
धीन रमस्व विक्षाम वाधित॥ यथात्र मंप्रमिह्रातंग भामस्यं वनव्रतं॥ स्वयंभ पायिनहत्स मृवास्तं मर्हमि॥ नावदवमत्त्वां व त कृय मास्नमक्षथा॥ स्तुणितेन म

सारव्याघ्रमृगाः स्पृष्टिकाः सह ॥ गच्छन्त्रसहमागत्वा कवचांद्रस्हा स्मात्रुजं ॥ तत्वामित्र स्वयकत्स्व सहृक्षी ईस्वराजिन ४॥ ज्ञात्वा तं थं सपापिष्टं दत्वा विलंबप्रसादय ॥ यदिनयो
यगडस्त ५ पापिष्टस्त्र स्य तु कृ य ॥ स्वयमाक्षस्य युक्ताभो तुं ज्ञात्मसर्वा नितावबन ॥ स्तुतिनतादिर्गक्र त्वामनागपितयान्विन ६॥ सहयां सो पिनेडस्तं प्रथयामोमतहने ॥ तत्र
र्ग सम्भूपानीगं ६ स्त्रायक्त ७ सहूनत ८॥ सह सामसपामृदायकजि उं सम्भूपानतनु ॥ तत्रसपुत्र धागीगानत्वार्तमाक्र लीत्रदन ॥ विलृष्यपूनत ९ स्थि त्वाप्राथ्यदव मादनात ॥
ना थार्हसन १० ह्मि त्वाबवार्ह्मं मिनसावहन ॥ वनिष्यामित थनिर्तकदाहायये य थमत ॥ काक्षार्भ तं प्रमीदत्र क्रम सवापनाथणां ॥ महतांडगनिमा धो कमाञ्चिधर्मसं
कर्म ॥ स्तुतिनादिर्गत्रं त्वामस्य ज्ञावि क्रगानन ११॥ विलाख्यतंमहुद्रस्तं त्रामयन्त वमखबीत ॥ ज्ञनपापिनुनामक यदिगीवित्र मिकृमि ॥ तुञ्जनीन १२ समादाय वनसपाघ
त्रुर्ग ॥ यथर्वमाधय १३ पृथ्यं तत्वां तत्त्वामपरंमदा ॥ पृथ्वनंनतत्क्रामिपालयाम्यात्मकंय था ॥ स्तुतिमत्वात्रसंसारमपाहतंयदीकृमि ॥ त्रिसन्धनउनंक्षत्वावनसवाधि
सम्बनं ॥ यथिनत्वं तउं तांत्रवनतिवाथिसमवनं ॥ स्तुतिनिनमकनिमदायात्मं वमत्रंगिं ॥ यागामृसमजगोवापिसंद्वर्मसाधनासमाश ॥ स्वपनात्महित्वार्थंनत्ववनितवाधि

जा रत्नकिरणच्छायपलवस्फुरन्तं ॥ महात्मानंप्रभूर्वेण प्रभवनर्नेनकाम्मृत्य ३॥ एवंप्रायनतासर्वान्द्वविज्ञाद्गुणवगाधिपान् ॥ चिन्ताक्षसमसमस्त १ कृपाकारुण्यवादिन २॥ दिव्यलक्ष्मी
मयिलक्ष्मीस्वर्गस्थितानसानमः ॥ [illegible] मूर्त २ मङ्गभूतगतास्कन ३॥ दिव्याभिमन्दन २ समृद्धानन्तविभूतिग ४॥ निधिसंदर्शनानामसर्वनागाधिपानवक ॥ नवानवम
दीलोकंजंबूद्वीपसमन्वागत ३॥ दुर्भिक्षादिभयास्याभविलाक्षसमकृयानिधि २॥ काम्यवादिन २ स्वर्णप्रादिधनसमन्वन्तं ॥ सप्ताधिसर्वधान्यानांसम्पादकानिद्यां ॥ सर्वधाम
धिनस्थानां निधिसंदर्शनात्सकृत २॥ कृत्स्नसम्पन्नत्रनिधिकारीमहत्प्रकं ॥ संनिद्धर्थमहाधामसूर्येनवसमवाप्रयन्ते ॥ गांमन्यामानवो २ सर्वलक्ष्य ध्यंयस्त्रिकायव ३॥ सुभूषिंह
प्रदर्शयिस्वर्णनिधिनूस्थित ४॥ सुभूषिन्द्र प्रद २ स्वरूप्यनिधि सुभूस्थित ५॥ सुभूषिन्द्र प्रद २ कामप्रनिधि २ प्रकाशित ६॥ सुप्रवसर्वधान्यानां निधी स्त्रिदर्शयन्तु वि ॥ २३३
गध्यवसर्वरत्नानां संनिवर्शयन्तिधीन् ॥ सुभूषिन्वजरत्नानां निधय २ समस्तवर्षपि ॥ सुभूषिन्सतिरत्नानां संज्ञानानिधयस्तु वि ॥ सुभूषिन्स्य सनागानां संज्ञानानिधय पं.मो.मी.कलेक्ट्र.ए नं.
२ स्वल्प ॥ ज्ञानमनकृतानां विनिधया सूत्रसदानल ॥ सुभूषिं त्रिसन्द्रनीलानां निधय ४ संप्रकाशिता ३॥ सुभूत्रतीक्ष्णरत्नानां नाविन्यानासभूतव ॥ सुभूषिन्स्फटिकानांस्य

मले।

मनसि

लक्ष्मीन१ मंत्र१ सिद्धुरसेर

मिंत्र१ मम माद्य१

मुक्तिनिधि
लोहनिधि
गेरु - शिलाजि
हरितोल

ब्द्धानांमृतत्व ॥ मुक्तानामपि चामृतयामूनानाममृतत्व ॥ अमृतयुष्पानाम्गांधार्मसूत्राम्बुत्रमादिनां ॥ अमृतत्रिविधाख्यातीनमानांच ममृत्ववा ॥ तथामृताधिकाचानांयान्दानाममृत
त्व ॥ अमृतम्निगिरिजानांचगान्धकानाममृतत्व ॥ अमृतत्वनदीनांचगन्धकानाममृतत्व ॥ अमृतत्वंसगर्भाणां मुंजानां निश्वयातु वि ॥ एवमन्यन्मतीनांच मंडूकस्य धक्षाविर्गां ॥ मह
विनामपतीनांचविनिधी सुंनिरदर्शयन ॥ पंनिर्दिष्टं निधीनवमृत्वं धांपिममृतस्तजन ॥ सर्वत्रभुवनमर्वा न्हत्वान्वंधनाप्ययन ॥ तानाममन्वाममवर्षी दिक्षनुत्रत्वानिहमिवाय ॥ यत्र
दीप्सितं यत्नकृष्णी क्षमानवानु ॥ गृही त्वा वापि गर्दर्भं ४ माधय ध्वंसमीहितं ॥ विनम्पापकर्मप्रसंबवबंधं शुनवृष ॥ मंत्राधिप विधानतन्त्वादानं पस्थ पिनं ॥ सूक्ष्मावेनम
माक्षम्पव्रतं नवंच्रमवानिकां ॥ त्रिनल नजनं कृत्वा तु स्नात्वांयथे ष्टया ॥ बाधिवर्यात्रंदं वस्वाप्रवनं धं जगक्षितं ॥ एवं पूर्यंप्रमाथाय मंवनरक्षेत्रुनय दि ॥ सदावा मंगलनूनं
निनूस्यागं नव क्लिस ॥ अगिमस्यपं निक्षायगत्वा यन्वमना सन्निधीन ॥ दत्त्वा धनं नमान्दाय कृत्वं कार्यमीप्सितं ॥ तथानत्वा निवाद्य निधिभ्यो यच्छमीप्सितं ॥ कार्यं कृत्वा
प्रदस्वाव मंवन धं शुनमम्पदा ॥ मंत्राधिप विधिं कृत्वा वरुर्धश्च विहानिदा ॥ वाधिवर्यात्रुगं दत्त्वा विनूधंध मर्मसंपद ॥ तथा वामंगलंदूनं निनृत्यागं समनागं ॥ सर्वदहयन

चिन्तामणि
सिद्धरस
ज्योतिरस १

गा स्त्यापितनमया॥ यस्थस्मिन्नीतिमन्नातिगृदीस्त्रागुरुस्मायय॥ एवंतेवक्ष्यमन्त्वाप्रमादाययत्थस्मिन्॥ सर्वमकुमुनन्नानांनाम्भिंक्त्वादभूर्गद॥ गग्र्क्षि मनुजाः सर्वमूर्वद्य
मर्मृत्रिमाः॥ त्रीष्मयस्त्स्वमंयन्नोवरुत्रुधर्ममानस्ता॥ नदातमानवाः सर्वंस्वकृत्लधर्मवाधिदा॥ सतीलाः सकृत्पानकाप्युरुत्वम विहापिताः॥ त्रिनत्तरुजनंक्त्वाद
न्वाथिव्याय स्थस्मिन्॥ प्रवनकाश्नुरगुस्त्वायथकार्मस्मस्वंमूदा॥ सूस्पधर्मानूमायदावदक्षययथाविधि॥ सर्वदामंगलास्माहंवर्ण्ययनाः समावननु॥ तदानतप्राद
१ स्यागंप्रश्नाममममन्तम॥ सूतिकंत्वमक्षात्मादंप्रावर्णितपुनस्मथ॥ तदातमनुजाः सर्वगहृष्ट्वामंगलास्सर्वं॥ धिस्मिमारस्य प्रमन्नाथमसस्तु वेंसम्भकृत्वनु॥ अस्ताधर्मा
नूतावत्तंयत्तस्यः क्षिज्यगरुलं॥ एवंविज्ञायमस्त्रर्मसाधनीयंप्रयत्नतः॥ कृसूत्रवंमंत्रकृत्वाभार्क्षि सर्वधि मनुजाप्रदा॥ अश्वयाममूपा त्रिसुत्रिनत्तंभनदागताः॥ सत्काने
विधिनास्पर्व्ययथार्हताजनेः सदा॥ समस्तंमीतिमक्षात्मादेः प्राप्तजसर्वदाशिशं॥ एतस्मूल्यानूतावननत्याचितप्रदाताल॥ तितृस्यागंगुराक्ष्मादप्रावर्णितममनामः॥ न
दृष्ट्वाति विस्मिताः सर्वमनुजाः संप्रसादिताः॥ त्रिनत्तरुजनाक्तारा त्रिज्ञाः संप्रवचित्य॥ नतातृयाधिनसर्वत्रजाक्रुति प्रसादिताः॥ त्रिनत्वरुजनंक्त्वाममप्रसादेदप्र

२३०

३४

उद्गमती महासत्वः सर्वान्सत्वांश्च नमान्॥ कृत्वा तु सर्वसत्वे गगन्नू न्वादिर्वियमो॥

वभिरं॥ गदृस्था गीर्थिकाः सर्वे स्वं स्वं धर्मं प्रयान्ति गर्विताः॥ अन्गीवनुश्रिगाम्यानः सभीत्येव प्रसक्तवन्॥ एवं कायदर्थं सर्वलोकानां धर्मदेशकाः॥ सन्तु मामानिनाः सर्वे पृच्छिताः सम
सम्नागत॥ तथापि सन्तु जाः सर्वे ब्राह्मणा राजप्रियाश्चय॥ अप्यस्माकं भवसद्धर्मं तु न्वा राजानिः सर्वथा॥ तदिमं सन्तु जाः सर्वे ग्यस्माकं अवकाशताः॥ अद्य तत्किं समाश्रया नारजानिः सम
यक्ति ताः॥ इदानीं तु नृपा यास्म सर्वस्मकुवकाऽपि॥ त्रिनत्ततजनं तस्माद्ब्रान्तिवाङ्गवकाः॥ वाजानाभवसद्धर्मं मन्त्तायुप्रयास्ता तु॥ निर्गीयासुनृपादनात रजानिःसोग
ताप्यवीन्॥ गदस्मक्तुवकाः सर्वं सद्धर्मसाधनायताः॥ ॥ वाङ्मानां त्रावकालत्वा तजानिःसमूपश्चिता॥ इदानीं धर्मं संप्यस्मा कें त इद यात्रा विकयन॥ अस्मात्प्यपि नप्रत्का
नेर्मानयस्तु नामृताः॥ गदत्रयन्नु सस्मानिः कर्त्यं यं मात्युपगंतथा॥ यथान्त्रितल्लम त्कानं प्रनूर्णनाजक यत॥ यावत्त्रिनर्त्तनामात्र यवनगानिस्तगतथा॥ तावद्त्र वयास्माकं के
नाधिनप्रमास्यत॥ तथा तत्त्रिनत्वान्नां क्लियगता नाम सर्वता॥ तथास्मानिः प्रयत्नानि कर्त्यानि च तायन॥ इत्युक्त्वा सर्वसमानंक्तन्वा सर्वतं तीर्थिकाऽपि॥ तं यथाविप्रक्तिलापिन्त्वा क
तुं सर्वं प्रवर्तितं॥ सर्वाकाविस्मूनगत्वा सन्त्रिः शान्तवतवनन॥ सन्त्रितं सम्प्रायसन्प्रदत्वा विघं प्रवावन॥ तामन्त्रिक्त्वा प्रभीदप्रयम्यथाहिंतसुच्यत॥ तद्विनार्थ समाकतव्य
तु

सकोषला ?
संबंधस

जा गंनाहृतं त्वा शुद्धे न्यायतिः सुधीः ॥ नमस्कारकं समानौ स्वसमाप्त स्त्रीवमादिसंगः ॥ पाखंड ५ महावतं जयथा सङ्गनूकामिर्गं ॥ तथा दत्तं प्रवक्ष्यामि पूजा साकं ज्ञानकृता ॥ नत्र
समस्तासमत्व ॥ सर्वसत्वहितानां सकृत ॥ मर्गुलोकसूदः ॥ प्रसन्नः स्वर्गदेव ॥ महावमतः ॥ तत्र कालानां तत्र जंबूद्वीपकथामिर्ग ॥ उत्सर्पिण्यां महाकल्पे सप्तधर्मान्तादिषु
न ॥ सर्वसत्वाद्भावावाद दत्ताकूमन्नसंतता ॥ सदृश्री विप्रभिक्षित्यप्रवर्तृ ॥ पापवृत्तिषु ॥ ततानिश्चितान्सकाः ॥ सर्वेस मानवाभूपि ॥ कुशास्त्रिमो निनाद्रुतानिर्दया
स्वरितानयाः ॥ दृश्यामि याभिसताश्चमास्यर्य कलषाशयाः ॥ सम्यक्त्वापदसक्तो ॥ मिथ्यापकाविदः ॥ केन प्राप्तः कोथिनः कुनाचार्याय वादिन ॥ अभवं
कृ लधर्म यथा निन्द्रस्तानिनलनु शनिन्दका ॥ कामरागानताः सूतानिर्ग्रन्थास्तेब्रवाविदा ॥ सम्यग्धर्मप्रवित्रस्तविध्वंसप्र निकीतिका ॥ केवलस्वान्तपूजार्थं द्रव्या
र्जनसमुद्यताः ॥ मात्सर्यागतिदृतास्तानावलसूर्नेनकान्मृखाः ॥ एवं सर्वत्र तावानवद्वृद्धिविपर्यासकर्मगं ॥ तमीश्वसमस्तासत्वासमनसेवंथ्य विनायता ॥ जातसर्वसत्वा
पण्वानमप्रवर्तितं ॥ तदकमानवा ॥ सर्वपतयूर्नेनकद्ध्वं ॥ तदनंतानुपायनवाम स्वाध्यपत्ति ॥ बोधिमार्गनिपूज्यापिवानयपंडे हृधि ॥ प्रतिनिविष्टकाम

कृपाकांतस्य वादिनः ॥ दिव्यतां प्राप्त पितृस्ता जंबूद्वीपे ऽवतीर्थ वै ॥ वृद्धत्व प्रकटाद्या क्षस्वाक्रांतमस्तं कृतः ॥ ॥ तत्वायकजा महानीद स्वर्गा विनीषंतां वनतु ॥ न
प्रमत्त नृशार्यंश्च नृपद्र स्यापिस्त नत ॥ सत्साम मृपाकं स्यजाम्ययन्ते वमब्रुवीत ॥ सूतनमानवाद स्याप्रदकलंकजनाविम ॥ यदिन स्वं नद याम सर्वान्वात स्वयानिहि ॥ कृमिमना
दिनं स्त्र न्वाकीतां सर्वं पिनन्ना ॥ माक्रलयः प्र यत्वांगंपयुक्त नवमादनात ॥ तामा क्षत्र प्रभीदत्वं दाप्या सर्मं यदि स्कृभि ॥ कीदृशा हान स्वस्त नं गतस्तमादसूसर्हमि ॥ स्म
तिर्मा नवे सर्वै मंकथितं निश्चय सः ॥ यज्ञानि नोदनका ऊस्यान्तना न्तवमब्रुवीत ॥ मानुष्यंमा समाहानं यानंवनुधिनं मम ॥ यदि प्रज्ञाक्षिवादात्र मं मान्यव प्रदत्स मं ॥ य
स्वयिमानवा संन्तादं स कुशलवाविदं ॥ सद्धर्मसाधनाप्नूकाक्षिनस्त्वभनवंगता ॥ प्रज्ञानुमानि याचाविधर्मकासाद्यामका ॥ आवकाया निकाक्षायिप्रस्तकमुगताप्र
पि ॥ वाधिमस्वाम हामस्वा सर्वमन्वाहिं मंकता ॥ येन याति कुवार्दत्वा योगिनात्रमवानि ॥ मघयाप्राम आश्वापि नर्याखिनाजित सुप्रिया ॥ मानान्ःमीलवनाथ वदर्त
म विहावि ॥ कान्तिमन्तः मर्धनाथ साधवः सत्यवादिनः ॥ सद्धर्मवीर्यवन्तश्च सर्वविद्याविवक्षताः ॥ समाधिध्यानवन्तश्च सद्धर्मगुणसाधकाः ॥ प्रहावनामस्यिनिह्न

ग

जा नयन्॥ जिनात्मजगणाः सर्वे प्रतिरुद्धविमण्डलः॥ महासत्त्वा महाभिज्ञाः सत्वाः सर्वगुणान्वितः॥ ... ॥ अहं संबोधिमासाद्य संबुद्धपदमाप्नुया
१॥ इति मत्वात्र संसारे गत्वा मोक्षं यदीच्छसि॥ एतन्मद्वचनं श्रुत्वा चर सद्धर्ममादरात्॥ यदि नैवात्र संसारे किंचित्सुखं समश्नुते॥ सदापि दुःखितो ध्रुवं निन्दितो दुर्गतो
तव ४॥ तत्र कुत्र भित्तानाना दुःखानि सहते ध्रुवं ४॥ दुःखार्दितो महाकामः तापितो नरकं गतः॥ नरकं यमितो अपि नानादुःखानि सहितः ४॥ अमाध्य वदना
ज्ञानी ज्ञानाश्रयो निवसेत् सदा॥ इत्थं सत्पापिनां दुःखात् ज्ञात्वा भिक्षवः सदा॥ पूर्णं वन्दन ज्ञानिनं पालयामि तान्॥ इति मत्वात्र संसारे गत्वा मोक्षं यदीच्छसि॥ वि
नश्य पापकर्माणि सद्धर्मसाधनाश्रय ४॥ श्रीमत्सत्कृतं श्रुत्वा पापधर्मं संवनम्॥ सर्वसत्त्वहितार्थाय बोधिचर्यां व्रतं चर॥ यथैवं साधयेत् पुण्यं पुण्यवान् सत्वं लभिष्यसि॥
तदाहं त्वां नतः कृत्वा पुत्रवत्सदा॥ यथावद्वन्दनं पापं दुःखात्मा ... ॥ तदाहं त्वां सदाहं हि नैवमाशय ४॥ इति निर्दिशतं श्रुत्वा सर्वपापीत्र मिता नन्दनम्॥ सा
कृत्वा पुनर्नत्वा प्रार्थयद्भवमादरात्॥ कृपया सन्नाथ त्वं दयालुः सर्वजीविनः॥ यथादिष्टं त्वया भगवन् विधास्ये तथा सदा॥ ... ममाश्रयत्वं तवमानव रक्षितम्॥ २४३

गुरुर्नीलः समाश्वानयद्विषयोथधर्मवृत्तं ॥ स्वयं नास्मि दिवार्थेन वक्तुं ब्रह्मन्विना भिक्षां ॥ नाभिवर्यात्रितं हत्वा च निधको न लभते सदा ॥ प्रिनत्व कृतमनं कृत्वा दत्वार्थिप्रायस्थविरं ॥
मं वाधिप्रतिधाननत्व नियामि गुरु सदा ॥ इति श्रुत्वा मया स्वार्तं विहाय त्वं समागतः ॥ कृपया मां विना व्याकुल प्रधयाद्य समालयं ॥ नियमत्रास्मामा एकनिथ्यतव दतेनं ॥ य
थादिष्टं त्वया नाथ करिष्यामि समागत्य ॥ इति सर्वप्रार्थितं तान् श्रुत्वा मय कृष्णदेवान् ॥ गं ननवं वस समाख्याय समालोक्य वमब्रवीत् ॥ एवं सत्यं प्रतिज्ञाय वनमममन्वयदि ॥ म
अदं त्वां विमृश्य सिगक्त त्वं सखं पुनः ॥ अन्यं कुपायितं दृष्ट्वा माहात्म्यं समाश्रुना ॥ विलोक्य समुपानीयं प्रदात्र महं मिनुज ॥ इति तेनोदितं श्रुत्वा समनन रसं प्रमादिकः
॥ कथं थिरि प्रतिज्ञाय न त्वा गं प्रावेशनं ॥ मनसा पूर्णमागत्य योनेः सर्वर्सम विसमये ॥ मादेनं दृश्यमानो मोनयतं नवव न त्यजत ॥ दृष्ट्वा सममुपाथायां मन पार्श्व विस्मयान्वि
तः ॥ समर्पितं जनसाम न पुत्र प्रक्षेवं समादनात ॥ कथं तापनूधायामि किं वा पलायितास्मि हि ॥ अस्य मत्र समाख्याहि यदि तद्धं त्वमक्षमि ॥ इति माहात्म्यमदिष्टं निजमथमु
कृतागमः लिः ॥ नृपतिर्हनुमानस्यविशत्तं यान्यवेदयत् ॥ मम मा भिपश्चीकत्र नास्पलायितास्मि हि ॥ मुक्त्वा कृपालना गतप्रायिमार्दं समागत ॥ मय कान्तनादृष्ट्वा मानीनं

श्री

स्यंवनत॥ सर्वास्मत्वांश्वसद्धर्मप्रवर्त्तय न्मूदानसत॥ सत्स्वरवानिश्चयंतुस्का गजयित्वापनानपि॥ सर्वप्रमंगलात्ताद्दक्त न्वावन द्वैमुखी॥ ननद सधीमान्स्र हमानूनागा
दस्यामयामाद्धगवाधिविल॥ एवंमदक्तौश्रुसंपद्मापिमंमानमोस्वनतिमायथोन॥ समाधिवर्यापमिशुद्धवृद्धिकामपृद्दस्थवद्भधाधजाल॥ मार्हक्ष्य सत्वाक्ष्य मिवा
वधूययघोवनयुक्त यनिग्रहःस॥ मन्वाहतत्रविनजयिनमधद्वस्तामउनुप्रवनाभिमूक॥ गनानधःशुद्धपुराः मनक्षः सर्ववनप्रसूमलंवकानेः॥ सगत्रनिः
संगनयानयावप्रहाविशुद्धं नममनवापि॥ प्रस्यादिदख्वद्धकर्मसज्ञ क्लिष्टमिथ्यापुगमंनूलाकं॥ मेत्रीमथनप्रभमनगम्यविस्पन्दिमवानूपयीनवि
काः॥ यनसनडाहनिहृस्यलावाक्रयम्बिवघातस्रीयस्वनवूः॥ स्वावानशुध्यानिलन स्त्रियत्वाम्संगामयागान्कनूनायुगाश्च॥ समस्त्रगध्यापिजनस्यलाकमान
स्त्रियस्यस्ययत्येवलोकः॥ अन्यस्यक्रावान्कूदनानमिद्दस्यकमह कालागयमाःसर्वप॥ सदवमानामपिमानमानिप्रमादनकिप्रवंगानिवक्र॥ मन्वामैथंप्रव
जिमंमनूष्यात्रहोमक दीर्घचववद्धविलाः॥ विदाय वन्धू स्पनित्रलांस्वंमक्लिघ गांहिद्विभिवापञम्मूः॥ शीलशुवाविद्विषनावनायांस्रुप्रमाधप्रविविकाना २३२

ॐ॥ मेघादिकवाधिमनः समारोषोऽयमवलंबानूनमसमिप्यान्॥ अथमधीमात्रुविविक्तकामः सर्वांस्तृमिष्ठाप्यगुरुरत्नमिप्यान॥ संसारवर्यापविरविन्नविलाविविक्तत्वयी
मिन्नतांकलव॥ ततः समसद्गर्भमूरवानूनागएकतानिथगमहाजिनः थागानूकूलविन्नवानकूऽऽ॥ नतेकांमस्तीव्याघ्रीददगेगिविगाकृपा॥ प्रमसिक्रनमाघगगगांमि
स्पन्दमन्दताम्॥ पविकामस्कनमूर्गा उअमनगतादनी॥ स्माहानभिवपस्थनीवालास्वगनयानपि॥ कन्यगर्धाइपस्तगामाहविष्ठमनिर्धथान॥ तांनयिगनवेकृतेनि
नयनीपतानिर्व॥ दृष्ट्वागांमसमहामरुत्याधीनापिकनूगावभाम्॥ वकमपनइःखनमहीकम्यादिवाड्रिनाद॥ महत्त्वपिवइःखमृगकःधैर्याः कृपात्मका॥ मृत्युनाथ
यइःखनकमपनायलदकृतं॥ अथमवाधिमत्वमडक्रादयाङ्कमानम॥ तंनिष्यंमहमाहृयदनीयस्त्ववमत्रवीन॥ पश्चवत्सात्रसंमाननगिनेगुरुवतीषधी॥ निरःस्महाअ
र्लघाघ्वासक्रानाकृमिकृति॥ स्नहीयवागिकक्षयंसास्मरुहस्यनाद्रुता॥ धनमातापिनयानाहायिउमिकृति॥ मास्मद्वहमयंनक्रकावर्धयिनुमर्हसि॥ धनमृ
मीस्पदन्यामसीदरवस्वपिकर्मसु॥ नदांशेन्विघ्यतांनावदद्याः क्रमागिमनाथ॥ नधीग्याहनमाहस्यकृताधिलंपुपीयती॥ यावद्यामासासा नेनापदहिसमा

पे:

ना विमलाश्रयाः॥ निरङ्कुशा निर्मला स्तानाभिर्हृ निषद्मायायुः॥ कवित्सं वाधिवर्यार्थानि नताः समृद्धार्थिनः॥ बोधिसत्त्वा महायाने वर्यविग्रहं समाचरन्॥ एवमन्यषि ग
र्कर्मेत्तत्ता गिविस्मयान्विताः॥ सर्वार्थिसाध्यथाकामं ददुः सद्धर्मवाञ्छिनः॥ यत्र लोकहितार्थे घुष्टानीदासन्ददमानसाः॥ गणितद्धा नमाक स्त्रीदानं ददुः गुणा
र्थिनः॥ यत्र दानं तनगाधीनामा स्वप्रदानं निसम्पगं॥ सद्धर्षिता मृदार्थिता दद्युः र्धनं यत्र स्थिपितं॥ यत्र सत्ता महाविद्याः तामघानमूलं मं॥ सर्वस्वसंप्रदानं
पिसमृत्याहं प्रलातित्र॥ यत्र मानगतांऽदुत्साहा स्वप्रदानं निसम्पगं॥ विषादविकला स्तानावलवृहं दिताभयाः॥ यत्र वृद्धगुणाचक्राः सर्वसंप्रसाधिताः॥ २
सद्धर्मसाधना युक्ता ददुर्दानं यत्स्थिपितं॥ यत्र स्वार्थसमस्युक्ताः परार्थविपादनाः॥ समर्वर्ज्जिताः दातुं समस्तान्मृषानरत॥ यत्र लोकास्कास्मात्तामास्म २७७
र्थकलषानयाः॥ गणिलक्षान्विता दानं किञ्चिद्दातुं न सेहिरे॥ प्रज्ञायता एवं निस्सम हायाने समाश्रिताः॥ स्पर्शेष्वपि स्मयाप्रसन्त्राविस्मा पश्चिमाभयाः॥ स्वर्गा
र्थयाद्धकर्माणि सर्वविस्मयप्रद षिताः॥ त्यागप्रिया महासत्त्वा ननन्दुर्वन्त्रमोदिताः॥ एवं सर्वेपि सत्त्वाः प्रदानं समर्जितं॥ निर्मग्यविस्मिता स्तानावलवृद्धीन

लालसा ॥ तदा ते दानमाकर्ण्य सर्वदेवासुरादयः ॥ सत्वा सुप्रसन्नमोदन्तः संप्रयातं समीक्षिरे ॥ एवं सर्वे नृपेन्द्रादि सत्यां मुदा नृपा विनः ॥ तदा तद्धि प्रसन्ना संप्रया
तानी तवं क्षया ॥ एतद्धर्मानुशासन सर्वसत्वा शुभार्थिन ॥ त्रिरत्न भजनं कृत्वा दत्वादानं शुभं चरन ॥ एतत्पुण्यानुभावेन सदा सर्वत्र मंगलं ॥ निरुत्पात महोत्साह सति
कंचा तव कुर्वं ॥ एवं स लगवान्पूर्वं बोधिचर्यावृतं चरन् ॥ पञ्चमाभिधितज्ञार्थं तत्वाज्ञ ... बोधिं ॥ एवं सर्वत्र लोकेषु दीनं च क्रमं समुत्सुकः ॥ सनतीं न सर्वधर्म्य क्लीनक
उः खिनाजनान ॥ ... स्मिंसुगतवृद्ध बा ... सर्वामिंदकृजगत्सुतो ॥ स ... सर्वामर्थ प्रीति कर्णे व्याकृत्ति संयुता ॥ एवं स बोधिसत्वापि दयाकारुण्यसुद्धधी ॥ सद्धर्मं समुपादि
... चक्र धर्मसमयं जगन् ॥ ... ॥ ॥ स त्वाम्बुद्धयाधर्मं ... ॥ एवं सत्स्कन्दानं दत्वा सं बोधिमानस
॥ सर्वसत्वहितार्थेन निवकान ... ॥ ... ॥ यथा भक्ति प्रदानानि ... ॥ ... संप्रभा
दिताः ॥ त्रिरत्न भजनं कृत्वा ... ॥ ... ॥ सर्वदा ... ॥ सदा ... सत्वा
...या

कार्मस्थनली का चित्ताकयतु॥ एतदुक्तंनन्तद्रवाप्र‍त्वामर्वं यिमक्रियार॥ विषादव्यथिता स्नानानाज्ञानमेवमस्तु वतु॥ स्मृतिदानंनमाङ्गजनममी स्मृतिगादितं॥ प्रमीक्षदवमाभवं
स्वबक्तुर्षीतमर्हमि॥ एकमयार्थक्रियास्यमानः२मर्वान्यना क्षुथा२॥ मूलं लोकाग्निनादग्धं स्वमंवर्द्धिनाः२ग्रजा२॥ धनानिद्रव्यजातानित्रनानिगा२पयस्विनी२॥ प्रयस्कृत
केतुनानथानु मातव्व कु२ स्वदंदकं॥ नथान्वकृतिश्चानिकीशाध्यानवुनायथि॥ पूर्वग्रामादिनाश्चानिदग्धिमावकूनाम्न२॥ विमयमासंमहानाङ्गं गवनानावस्तवृद्धि
ना॥ नजानाना कश्चिनाथेक्षानीमिशामस्तुविद्यानविना॥ स्मृत्यकीयंकथंनामेवकृनन्यजन्मायन॥ अथदेवपुनानार्यं स्वस्वकृ२ कि मयकृता॥ वकुधा किं दानिद्रव्ययनाएदयमा
क्रिया॥ धनमेवयमीदग्धिदवमा माहर्म कृथा३॥ वृक्षकं मानिरितिर मर्वेमि नामयमननाथिप२॥ मानूनयंप्रमाम नृपमनि२ स्वेवमस्त्रवीनु॥ अदानस्त्र गं वद्धिंदा स्वामी
प्रतिवाययव२॥ मत्ना नयानप्रतरस्मान्नमिपुतिमूक्षमि॥ दाक्षामीतिप्रतिहायथान्यथा कूत्रुलमन२॥ कार्यश्चानिश्चितमर्तं२क२ प्ता न्यायतनमकृत२॥ क्रिनीकृस्वार्थि
नामा२ दाक्षामीतिप्रतिहया॥ विमर्वादनत्रु कृम्यववमानाक्लिनिकृगि२॥ यदपि वस्तु भवं वायद्यर्यंमकृवादितः२॥ कथंदवानूनावेनवकृनमनमर्मतवत॥ ८८

एतत्कृत्यतां सर्वे यत्स्वामि त्वस्य कारणं ॥ यदहं वाञ्छयिष्यामि युष्मास्वर्वनिवारितान् ॥ नैककार्ये समाख्यस्त्वं कार्याणां नतु हृद्व्यय ॥ कारणं कार्यमापन्नः स्थाद्वार्यविचार्यतः ॥ तस्य
दानमहात्म्यं हविर्घ्नं कर्तुं नवार्हथ ॥ सवकाहि प्रशाधर्मः स्वामं वर्द्धयेत्वपि ॥ श्रीशिवाद्यसमादिष्टं स्वामिनं त्रिशपुन ॥ तंननन्दसत्साधीर्यसमो लाक्षेवमक्रुवन ॥ सर्व
स्थाननिनस्तौ निधानुमर्गिलयगि ॥ स्वधकुर्नैवदानयमिति विज्ञापितंपुरा ॥ देवपुत्रानयामानयकोर्थत्वामिनं वय ॥ स्वामिधर्मवृसनं कामनामस्तं नजीविन ॥ शिवि
ज्ञापितंमर्वंनमा मेमेक्षिप्रेति सोनेः ॥ स्वामनपशिर्भयमास्वर्वनिवमघुवीत ॥ यदवयाधमगदवदयाज्ञानी पितंप्रीत्ययोस्यकं किमघमानम्यकल्नतार्थेदी स्यामन
प्राप्तिमथमत्ते ॥ आज्ञाह्वानसमादिष्टं निसम्यामात्म्यनायक ॥ सहमानुपवायुकं स्वामिनमवमघुवीत ॥ मामावक्षामहानाऊमर्षे मा कार्यसाधने ॥ समीक्ष्य साधयेत्कार्य
मद्रमिमृद्वस्त्रिद्रथ ॥ यानाल्यनतय समाधिविधिनामप्राप्य गकनविश्वासामाद्धकनितिर्मस्वदमे कीर्त्तिं दिवंवाप्नुयात ॥ संप्राप्तासवंसमूर्णानयतिगांनक्रह्विविमर्दि
नीं किं हस्त्वा यनप्रदिन्तगिरवान्कायकृत स्थाविधि ॥ नस्यावकामक्षितिदेवस्मृयहि की सुसमनादवकामभान ॥ नवन्द्रवृत्ताद्यतिनं क्षितांप्रि किंलसमानो

ना. नाय माधव माम्नो मनोविज्ञमभात्रवद्रिफा॥ स्वागतध्यापनमाधित तयावव न्तृ न्वार्यप्रक्रमर्भ्न्हात्मन॥ घनित्रमम स्यवहृवयाग की महात्मपार्धानमतर्म्हीपग॥ पुत्रुत्त
मामी कृ गतांत्त्व वाधियांविहितिमं ताग म्हरवभूत पिष्व॥ नमस्य मास्त्सर्यतिमी वगुरुनैवत वगात्र स्वयिमान मंय दा॥ गदाकृत्ये वायनता म्र खाम गृहुर स्याय म त्सोकनिवन्धन
धन॥ नंगुरुद्धविकं गुरुधर्मनकं ऊग ध्विनाधनत्का पात्मकंत्व॥ मत्वा विकृ फानिजमंपदान्या तू पास्य नाक्षा व्ययपदर्गुमेकूतु॥ संप्राप्यत्ता मान्मस्त गीयना म्यी॥ पत्काव
मार्यावमिगंविलंघ्य॥ गृह प्राप्यनीना॥ कानृ धा म्मकघृ माधू स्वधिक्राध विर्घवमन्ति॥ तेषष्ठ दृकान्न्हवमकदा वि त्को वि त्कथंचिकृ गमादि माय॥ तवनिामानप्यप न
फ विका॥ काधयिनाका पूतृ घादस्तन्ति॥ दूर्यागकानाममनू ष्यप्रार्थ॥ मवगनर्क्षघृमन प्रक्षार्ध॥ यथांयरमरिा॥ कृम दावदा गेनृ र्ज्ञामिनीवदिग नाना हि॥ अथ २३७
धनहिरज्ञादि॥ मालिकाकन्थ धृ भूकृ नंगरदन निघानप्राज्ञगे ग्द्धादयंर्व॥ मनूपनित्तृ घमर्छमत्न मागनमे न्दौ न्तृ पवनगनूपृ शमा नृज़ नं घनीनान॥ उदधिवि
वयू धानां फीवयन्नाकमनानर्ल्लिमभकवपृष्ठ क्षिन्नवक्रे त्नन्क्रु॥ मनपवलमभूहानग्न. निक्रिंमयत्र म्हलिगनविमय घृ दमक त्यत्नंमंनृ नाय॥ उंयतनमयि
=प्रा॰

७४

हृच्छ्रगां ॥ सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्तु निर्विघ्नं बोधिसाधन ॥ श्लोकाभिषं प्रदत्वा स विप्रश्च परः स्तनाधिपः ॥ विस्मयं समुपाक्रान्तो मनसा चैवं व्यचिन्तयत् ॥ यदयं बोधिसत्त्वस्य विकल्पनी
ग्रहमया ॥ तत्रायं मुविनं क्रमन्मनूह विद्गु मर्हति ॥ तथ्यार्थं यं महासत्त्वाल्लब्धादिव्यं मुदर्मनं ॥ यत्तथ्य कथाप्रयत्नानि फलं महाभिमाम्पुर्णं ॥ श्लोकेनेवि शिष्य मक्त्वः मसर्वे लोके निनी
जितः ॥ तत्त्व वन्तं ब्रह्म यं प्र श्लोकायानस्वयं ययौ ॥ तत्कृत्वा नाः पुनस्तस्य पुनर्बोधिसमन्वतः ॥ तस्मात्कौ निर्मिहीमर्वा पनिधिका नव कुदा ॥ सूक्ष्मतन्त्र निर्दिष्टकाविवक्ष्य ध्यानमान
सः ॥ उद्यानमनसीवीनगत्वा तस्कोमसमाहितः ॥ तत्र सर्वयोग विद्यास्वामं बोधिप्रणिधनन्तम् ॥ त्रिनक्षेपतनं कृत्वा मयखीवावसम्पदा ॥ तथा स्थितं ममाल्लाक्षदवन्दुः मानि वि
स्मितः ॥ महसा समुपागत्य यप्रकं वन्स आदनात् ॥ कञ्चिल्लवक्षमलंददत्वाञ्चामुह्यपिलङ्गना ॥ किमत्रैवं समासीनस्तस्य स्त्रीवनड्यर्गा ॥ श्लोकसूक्तं गतन्तं के दानिशस्य मनना
धिपः ॥ कस्त्वमत्र समायासि वर्द्धनिकम पृच्छत ॥ श्लोकसूक्तं गतनल्यन निशस्य मसनाधिपः ॥ शक्रोऽहं समुपेवं दृष्टं प्रागतास्मी सुलायन ॥ श्लोकमिद बोधि पादिष्टं निशम्य सन
नाधिपः ॥ साकृलिः सम्प्रा सोपधप्रशान्ते वं वमब्रवीत् ॥ स्वागतं देवनाथासि सर्वत्र कुशलं मम ॥ कनात्थेन समायासि गत्सासादस्य सर्वभि ॥ सिना दिर्गकृत्वा यदवकुपस

आ

विधर्मसमप्रफुल्ल ॥ ततस्तत्रतवाकामदः स्वधर्मप्रीत्त्यकांक्षितः ॥ स्पंदनस्म विशुद्धात्मा नवाक्षनदिर्वेन्दुतः ॥ बालकर्मसमालोक्य सर्वलोकाः प्रमोदिताः ॥ दिव्यामृतमिवास्वाद्यनेव
दृष्टिंतुलालितः ॥ ततस्तस्यपितातात कर्मप्रयथाविधिमुदा ॥ कारयित्वापुत्रस्नात्वा ब्राह्मणीनवसूपादिनत ॥ ततः क्रियतामस्य बालकस्यमहत्सुखम ॥ विलोक्यलक्ष्मतांसमस्तास
ध्यर्यंसिमस्थितमत ॥ क्षुधितस्कृमाकर्ण्य गत्यपितिह्यकथायित ॥ सर्वतल्लुकर्तदृष्ट्वा तदिक्मवमङ्कवत ॥ धर्मोयंकायमेवानः तथागमवास्मः ॥ तत्कृतार्थीनिविद्याजीतवकुत्र
तकैम्वपि ॥ तत्वाम्नासंप्राप्तस्थिह दानकः सर्वगुणांसत ॥ दिनेदिनप्रपुष्टां गाधास्तु विप्रभितपालितः ॥ ततः क्रमात्स्तु मानत्वमामा प्रभाभिसन्दनः ॥ सु तद्वांस्ताकृतवेस्मी
स्य कोनाः सर्वमनोहरः ॥ ततस्तं जनकाविद्याभिक्तंगेसम सनीत्यनूतु ॥ समस्तर्क्षसमानाख्या मानुर्वर्यसमार्पयत ॥ तत्रसलिपिपालास गत्वाग्रुत्युत्रसादयत ॥ य अक्रमसम
धीम्यागुलिपिविद्याभामायथो ॥ ततः सवृद्धिमान्धीनः सर्वविद्याल्पयानगः ॥ वेदशास्त्रेकलाशिल्पावलोसर्वार्थिकाविदः ॥ ततः समीवनालीदः प्राप्तः श्रीमान्विवकसाः ॥
सर्वाभ्रवर्दिमाज्ञित्वा सर्वमर्मसन्धपञ्जयत ॥ ततः सनात्यवास्थीमा सर्वदृश्यसमस्थिमान ॥ सत्योरसहसमक्षोर्वांजस्मानमजुतमुदा ॥ ततः सम कुमारक सर्वद्रुम विहारे
यां

२३१

रु॥ सर्वसत्वहितार्थाय सम्बुद्धधर्मं तु नार्थयन्तु॥ ब्रह्मविहारांविधानवनाहर्षांमिश्राय धावता॥ स्नानार्थिनां महाप्राज्ञः प्रज्ञानां ज्ञानकार्थयन्तु॥ कल्पसर्वलोकानोहितधर्मं तु नार्थद
॥ सम्यार्थयत्रम्मम्याफथजवर्ली विलम्भिनिः॥ गम्यलोभ्यवगादेवा कुशलानि मयथागतः॥ प्राप्नुयाभी स्महाज्ञाकरः मल्कानकीर्ति मयत्वदः॥ तदागमस्तु मामैत्र्या सर्वलोकाः प्रसादि
तो॥ सुदानि छात्वसामा यसर्वदानम्पाश्रयन्॥ सर्वपितयः सुलार्थिनः सर्वाधिनत्वसाधनं॥ स्वार्थमार्गास्समानस्यदिदंन बोधिसम्वनं॥ तदाधिष्ठंसमाकर्ष्य सर्वगम्प्रबोधिता
॥ सर्वाधिनत्वमंत्राद्येपुप्रवन्तु बोधिसत्वनं॥ तथान्यान विलोकार्थ बोधयित्वाप्रयत्नतः॥ स्वार्थमार्गप्रतिष्ठाप्यप्राबानयत्नसदागुरु॥ तथार्यनिर्भिताद्दीनानन्दस्वाभ्र थंयस्थ
प्सितं॥ बोधयित्वाप्रयत्नेन प्राबनयकृतं द्रुष॥ तथान्यान्यायिनाद्वृत्ताज्ञासम्यत्वपियत्नतः॥ प्रबोधयन्धनंदत्वा सद्धर्मसमयाजयन्॥ एवं सत्वान्सप्तधीमान्सर्वलोकान्प्रबोध
यन्॥ स्वार्थमार्गप्रतिष्ठाप्य त्रियानसुन्यधीन्यत्॥ तदा सर्वपि लोकाश्च तस्य वसन्ध्याप्रिताः॥ प्रियत्नत कर्त्तकृत्वाप्रवन्तु बोधिसम्बनं॥ तज्ञातुं मोनिषदः कविकविद्धर्मान्
नानिः॥ प्रियत्नननदंतत्वा प्रमत्तजन्वोधिमानसा॥ कदा पृथ्वनालवनसर्वान्यागंसमयो॥ सद्धर्मसाधनो स्मान्प्राबवर्ल्लन सम्मागतः॥ एवं सत्वान्सप्तधीमान्योधिसत्वः

आ

गत॥ एवमाज्ञया शंकिता सा मंत्र साध्रुवं विनिश्चक्रमयनाय समन्यथ॥ सर्वथाधिनमामस्तस्मै महासामायनाम्भिने॥ सर्वमन्त्रभवनरक्षाय विपुलकनुगात्मने॥ तत्त्वार्थबोधि
सत्वाय महासत्वाय तायिने॥ सर्वसंघुगतत्त्वाहमाप्तिमायनमः सदा॥ वृक्षवंशाजिनः मिष्य॥ साम्रु॥ सकु तविमलनं॥ प्रनंस्यप्रदर्शिं कृत्वा विनदत्स्वांशुभसंययो॥ तत्र
समस्मृपात्रिसुमर्वान्कान्त्रु स्तवाविराय॥ समासन्त्र्यगुनायगाहकाकांसन्यवदयगु॥ तान्निव दिनसाकर्श्ले सर्वगत्रुमवाविराय॥ विस्मयाविसमाक्रान्त विला
स्महविभाहिता॥ ततक्षेम विनाईर्य मामामविस्मितामयाः॥ सुहीदानादिसंनागभिक्षुस्त्रा वेवमब्रवन॥ यदसोनमहतक्षीमाहणाकान्नस्यमयु इधी॥ पगूत
पिवदहनत्रातसर्वसम्बुधन॥ किमयंमानवानांत क्रान्तनेवसमूत्र्यमत॥ सर्वथात्रिजगन्नाथा तवस्नूनंमुनीश्वर॥ ततस्माविर्गुनावस्यदसाक्षीनियथावि २३७
धि॥ संस्कृत्यान्नानमक्राध्यकार्यस्थेस्थमूलसं॥ ॥ तत्रवेषमंदामाविः समंसर्वयथाविधि॥ संस्कृत्यनवधांगस्वा सविगयांमहासस्वे॥ सदागत्यपदप्राप्ते
तदनु सासनागता॥ त्रिनत्वकृतनं कृत्वा तवाश्विंलं पयामहे॥ कृणिममसगंकृत्वा सर्वगतत्रगताकृथा॥ - ततश्चिमात्रमालीका विनंगछ विम्बकृिगा॥ ॥

गसेसु विनाद्वैर्यं प्राप्य शोकविनादिता ॥ ततस्तौ निःसमाहत्य विदधुर्वीक्षिसंस्कृतं ॥ तद स्थिसकलान्नातं निक्षाय श्वेत्यसूत्रकं ॥ कारयित्वा प्रतिष्ठाप्य विधिना स्वर्थित
जिने ॥ सदेवसर्वे वृकलान्तं कृत्वा नाराः विज्ञादयः ॥ सामायम त्रिरु स्याः सर्वपीनसनाद्य पि ॥ विस्मितास कृ याः कस्मात् श्वेत्यंडस्य सूत्रकोः ॥ तस्याःकविदता त्माने स्म
समासमृ पावनन् ॥ तत्र सर्वयितगत्वाहत्स्वार्थविम्रसकं ॥ त्रिःप्रदक्षिणी कृत्वा [illegible] सृणात्रिणा ॥ ततः सर्वप्रसन्नात्म समस्यर्थ्य यथाविधि ॥ कृतश्चकविता
नादितस्वर्गोस्मलोकयन् ॥ तत्रमान्नस्मन न्ताच्छ्रुद्धयाननतं गताः ॥ सर्वदा समस्या त्रिःप्राकजन्म सदा स्थिताः ॥ तथादेवास नाहीन्द्र यक्षगन्धर्वकिन्नराः ॥ तत
कर्मविस्मिताः कृतसर्वगंडस्य सायय ॥ तथापि सर्वप्रसन्नात्मं समस्यर्थ्य प्रभ[illegible] ॥ नत्वा प्रदक्षिणी कृत्य विना [illegible] ल यं यय ॥ तत्र सन [illegible] त्रवेत्य त्रद्धाति
र्यतास ॥ प्रसन्नोऽस्मन तं कृत्वा तज्जनाः प्रावर्नकृतं ॥ तत्र केचित्सुप्रसन्नात्मः केचिद्वर्मानुसारिणः ॥ केचिद्बोधिप्रणिधाय [illegible] सरस्वाग मिनाचर्न ॥ तथा नागाभि
नः केचित् केचित् स्वर्तुजिनामता ॥ त्रिनन्वतज्जनं कृत्वा प्राप्याहं त्वं जिनाद्रिया ॥ निर्विकल्याः शुलात्मानो वरत्वं [illegible] ब्रह्मचारिणः ॥ केचित् [illegible] कसंबोधिमासाद्य

जा विप्रगल्भिकाः॥ मतेद्राज्ञ र्थिनः सर्वे नेत्वत्रस्थं मनाम म॥ सकाम्यपुत्रुषाम्रस्थिर्थिनः प्रतिगालिते २॥ स्वगात्रा व्यथियाश्च नानिर्थ [illegible] या स्पृशे ४॥ यदियांत्र नितान्ताक्षानि मद [illegible]
समाथिन ४॥ श्रद्दयामपुदाम्यामिलननानाविकल्पना॥ दर्शितमथ किंतीत स्यस्वदददानकल्पितं॥ मत्वा तदा [illegible] स्य मागतनगाधिया ६॥ तद्र भिकम्पना [illegible] नो कश्चितम सनाधि
प २॥ किमिदमितिमज्ञातवितर्कैर्विस्मितास्तथा॥ ॥ [illegible] विलोक्य दत्र [illegible] वलनकानने ॥ तस्यनाहं [illegible] दर्शनादि नयनार्कितं॥ सदस्य विस्मया [illegible] हृदयः संविला
कयत्॥ निश्चलाक्षाः [illegible] मनमस्यविनायत्॥ नाहं दाता [illegible] किं सिदिदं वितर्कितं॥ एतस्य [illegible] गच्छ यतानन ४॥ [illegible] सगामि
सपुत्र [illegible]॥ तस्य नाहं [illegible] कथ्यते नृ॥ ब्राह्मण [illegible] नातुनं॥ नाहं धनकः पर्थ [illegible] ययाशीर्ष ददत्॥ तद्दृष्ट्वा समहीपालः कृपाकात्स्यना २३९
दिनः॥ सहसा [illegible] प्रमदनमेवमब्रवीत्॥ ब्राह्मण [illegible] तवा किं ददामि हि॥ यथाति [illegible] वदन ॥ [illegible] ताहं ममादिष्ट [illegible] त्वामब्रु
[illegible] जयाशीर्वचनं दत्वा निश्चल मत्तैवमब्रवीत्॥ इत्यादर्श [illegible]॥ त्वद्दानकीर्ति [illegible] समावन॥ वसुधा [illegible]

स्मागताः॥ कुतश्च मे पुनर्यत्नानां धर्मकीर्तिं समाप्नुहि॥ इति संप्रार्थितस्तेन निमध्य मनसा नाधिपः॥ सर्वस्वं मादनं तं यं दत्वार्थिने यस्य पुष्पितं॥ यस्मात्पुनर्यत्नात्ता स्वर्गाः प्रदाताम
यान्॥ कथमस्य पुनर्यत्नानां दत्वैकं वकुनास्त न॥ सर्वान्दास्तु जनो जित्वा मरुद्धर्मकीर्तिमाप्नुहि॥ इति संप्रार्थितस्तेन निमध्य मनसा नाधिपः॥ विस्मितस्तं द्विजं दृष्ट्वा विलोक्ष्य वंश्य विनाय
नृ॥ स्वसामवाक्षिप्तं नंसिद्धयदयं वकुनिरुक्तः॥ न किं समर्थमनसा नाकं सर्वथा मयावधार्यतां॥ इति ज्ञात्वा विमर्षं मनसा दिवि विस्मिताशयः॥ स विनीतं द्विजं पश्य स्वमात्म न्त्रेवमब्र
वीत्॥ केन त्वमत्र निष्ठामां वकुर्याविकुमागतः॥ इति संयमयाख्याय पुर्वाधयमेदाविप्रं॥ इत्यादिष्टं नवं तं स्वामिसत्वीश्च ममते॥ पूर्वगः समया प्रियसीं चपमव
मब्रवीत्॥ देवस्थ्यास्तु निष्ठां त्वां वकुर्याविकुमाव्रजः॥ तस्याह्वामविधिरुभीरुसभाश्च सुत्वीकृत्॥ इति मनसमाख्यातं निमध्य मनसा नाधिपः॥ सविकृतस्मृपुसक्तास्मा
नृपाप्यवं छविनायत्॥ नूनं भक्तान्तुनावनवकु घामतिया जिनं॥ वकुः सम्यग् विज्ञस्य विधिमानमत्तस्यतं॥ इति निश्चित्य नाज्ञामो स्वप्रमत्तः प्रवाधिपः॥ ब्राह्मणं तं समाम
न्त्रसादनमवमब्रवीत्॥ यदि कस्त्वमृपायाभि गतः संपुनयाम्यहं॥ यावमस्य वकुनेकं त्वमूलप्यहं दमाभिगे॥ विकृतस्य मनत्रा स्यात्ताके सर्वे स विस्मितो॥ इत्थमानायथा

श्री ब्राह्मणश्रद्धयाहं तदाप्यामि वक्तु वाक्यं तत्र ॥ गन्धर्वाः स्म प्रमत्ताश्चाप्रियं दृष्टिं कृपा दृगि ॥ कुतः स्थानमरूपस्य कुतः स्वकं वेद्यमसङ्गतं ॥ स्वयमादाय विप्राय तस्मै सम्प्रददौ मुदा ॥
तं गृहीत्वाम्बदेव द्विजेत्तम नृप ॥ प्रमादितः ॥ स्वरूपं विवदत्काप्यसंदर्शयन्नुपतिष्ठितं ॥ प्राप्तिः सिद्धिं तं कथं वद ॥ सर्वात्मा कां चित्तालोकयत ॥ तस्मै वाक्प्रमत्तात्मा नास्य भीषण
मोमुदा ॥ जयनाज्ञनस्महीपालयस्य गमनसन्निधिं तं ॥ तथा सर्वं स्वरूपं सिद्धस्यास्मत्प्रमीदत्वनाधिप ॥ कथमन्तर्यनाज्ञसं प्राप्तिः सिद्धिं तं वक्तुं प ॥ प्रातःस्मारिप्रमत्ताश्चात्मन्यथार्थवंस
माधिगत ॥ नृपं संकुप्य राजा वाक्यं वक्तुं स्थानप्रतिष्ठितं ॥ यत्र त्वं पश्यसि सर्वं गतमसन्निधिं तं मतं ॥ तथापि सम्प्रदास्यामि द्वितीयमपि तं मुदा ॥ तदपि सम्प्राप्तिं स्थाप्य व २५३
मन्त्रिजनविज्ञप्र २ कुतः स्थानं विलोकय ॥ कुम्भादिवत्समनाज्ञं कुतः सर्वेर्वेद्यमसङ्गतं ॥ स्वरूपं स्वयमादाय ददौ तस्मै द्विजातय ॥ तं वादायमसद्द्वन्द्वाद्द्विजनृप ॥ प्रमादितः ॥ वक्तुं स्थानं प्रति
स्थाप्य दर्शयत्सुप्रतिष्ठितं ॥ उन्मीलितस्थितनेत्रास्य सर्वांल्लोकान्विलोकयन् ॥ नृपतिं तं समालोक्य विस्मितः स्वैवमब्रवीत् ॥ अहं सर्वगतं वस्तु सत्यं सत्यमन्तर्विना हि विना ॥
प्रत्यक्षमधिकमिदं कथानीव विवादयेत् ॥ यन्त्यासि त्वं महात्मन्त्वां बोधितस्त्वाज्ञतत्प्रभुः ॥ यथा शिवाक्षिणं सर्वं तथा सन्न्यासकृतं ॥ सदा समसंगलं तयाकृतं यसिद्धिः प्र

= लाभ

थितम् ॥ प्रमुदिता लाभम् लब्ध्वा प्रययादनात् ॥ ॥ इत्थं संस्थापितं दत्त्वा समनिर्मृत्य प्रभाषित ॥ ततः स्वर्गसमानं सुखं जनकमम्पाति ॥ ताश्च पिष्ट कमाभ्या घनया
सर्वं समाश्रयत् ॥ ततः सैश्री समायत्नेः सर्वलोकाधिप प्रभुः ॥ धर्मराजवशी कृत्वा नृपमासमसमागतो ॥ ततः सश्रीमत सम्यसत्समं त्रिमाश्रित्य वक्तुत ॥ बोधिसत्त्वो महासत्त्वः
सर्वलोकाधिपाधिपः ॥ तदास सर्वसत्त्वानां हितार्थं समुत्पादन ॥ सर्वार्थ विधायश्च कामं दत्त्वा प्रभाषित ॥ निःस्पृहो सम्प्राप्य यं तत्र पुनरागम समुत्तिव ॥ समागमश्चार्थिनः स
र्वसिद्धे प्रतोषयत ॥ राजानृपः पुनर्निःस्वं वनस्वयं विलोकयत ॥ दत्वा ध्यानिमर्वा तिसर्वार्थिनासमस्तया ॥ महादानवी लिलीनेत्रं प्राप्तो यथार्थिनां समृद्धा ॥ सर्वदि
स्य समागम्य तस्य सम्मपापावनत ॥ तत्कर्मं यमितिंदृष्ट्वा सर्वतमं प्रभाषितो ॥ जयतत्राभिर्षदत्त्वा पुनः समग्रपाश्रयत ॥ ताश्च समहासत्वोदयाड्ड संयशः स्थापितो ॥ सर्वान्
नाशयासाश समहासम घटूह वा स्मृहितः ॥ तद्यथा श्रीहेमच्छाक सर्वप्यथि जनास्पदा ॥ सत्कर्मभिर्नतासमन्तावतूर्व धर्मसाधिन ॥ एवं सर्वा बोधिसत्त्वो पि सर्वान्त्राकास्त्रवाशयत ॥ बोधि
मार्गप्रतिष्ठाप्य मया लब्ध्वा समज्ञानिव ॥ ज्ञानाञ्छिताक्षनसमम् तत्कलात्तनाष्ठे तानं वितनां वतत्व ॥ क्षितीश्वरः पूर्व कृतानवद्यपुण्यप्रतावापनां क्रमशः ॥ ततः किम्याकद

= स २

आ ञ्चामय स्कृथा ॥ बोधयित्वा प्रयत्नेन सत्त्वान्धर्मे न्ययोजयत् ॥ रोगाक्रान्तगवादीनां पशूनामपि कृत्रचित् ॥ तथा मृगश्च मयूरादिपक्षिणामपि कृत्रचित् ॥ छिन्नस्त्वादिपतंगा
नां प्रयत्नात् चिकित्सा ॥ सर्पादिकृमिकीटानां नृप स्त्रामयत्नपि ॥ खाम्बुलु मित्र वा यांव पाताल वासिनामपि ॥ नृप स्त्रामयस्सत्त्वा क्रियाणमृ न्ध्याजयत् ॥ सर्वेषा
मपि जन्तूनां नृपस्त्वेवं समुपायविद् ॥ बोधिसत्त्वः प्रयत्नेन सत्त्वान्धर्मे न्ययोजयत् ॥ एवं सर्वप्रलोकेषु बोधिसत्त्वः स्वयोगवित् [illegible] नानारूपधरः यत्नेन त्रामयन्त्रिलिबोध
यत् ॥ सर्वान्सत्त्वान्स्वधर्मे नियुज्य समपालयत् ॥ एवं स भगवाञ्छास्ता ॥ ॥ बोधिचर्याव्रतं चरन् ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेन बोधिं प्राप्य जिनोऽभवत् ॥ [illegible]
शाक्यमुनिः ससंघस्य शासनं स नः संगताः ॥ त्रिरत्नभजनं कृत्वा चरत सर्वदा मानवाः ॥ ॥ एवं मया नृपादिष्टं श्रुतं मया गुरोऽस्य ॥ त्वमप्येवं महाराज श्रुत्वा नृपाव २७०
स्यकाः ॥ श्रीमनाप्रियादिष्टं श्रुत्वा लोकः सभूपतिः ॥ तथेति संप्रतिगृह्य प्राभ्यनन्दत्सपार्षदः ॥ इत्येवं नीदं महादायकः समा निपुनार्थ [illegible] भावयनं यवापि प्राव
यापि प्रमुदितमनसः गुरुश्च याम प्रसन्नाः ॥ ते सर्वे बोधिसत्त्वाः सकलहितकराः सद्धर्मश्रीसमृद्धा उत्कामो स्वं महामाजिनवन निलयं प्रयाणि सर्वे ॥ ॥

~~इति श्रीनरसिंहमल्लकमालायां प उ[illegible]मा[illegible]समाप्तं~~ ॥ ॥ अथ अल्पकामसूनाआमृदितं १ साउ[illegible]लि १ पूतं १ ॥ उपगुप्तंनमर्दितंतंस्यैवं प्राथ्यमन्मृता ॥ तदनंतरमुपतिष्ठ
मिपूतनस्य स्मृताधितं ॥ यत्कष्ट्रामाधितंपूर्व्यं पूतनामस्य समृणादितं ॥ इतिसंप्राथितं नाहत्वा कामांतर्यति १ समूधी १ ॥ उपगुप्तानन्तरंतंसमालाष्टवमादिशत् ॥ साधु ८८ पूस
तानाउपभमयुतं १ अदितं ॥ तथाहंतं प्रवस्त्रा मिभाष्ट्रं माधितंहृष्टं ॥ पूतनत्रमन्नृष्णा यांदृनावानप्रवर्तनात् ॥ कलिप्रवृत्तिमंवान १ प्रावर्तनमसमनानत १ ॥ तदात्रमा १११ न
ायस्य सर्वनीथिंकित्तनपात्रिता ॥ सद्धर्मनिंदकाद्यष्टाम ससनाज्ञानामानसा ॥ कामक्रमा[illegible]सानान्धामानवर्यानृत्वा पिता १ ॥ इति धातुविनाशकृद् दनाकृतल मंवना १ ॥ प्रम
त्तानि दैया १ कृनात्मार्थमाधनलालसा १ ॥ [illegible] प्राज्ञहिंसाम कावलवृद्धि १ स्वकामिनः ॥ एवं न्यांदृनावानकलिवृद्धि प्रवर्तितं ॥ पंवकमाथिनकालपुष्टिकृत्समूपाक्रमा
॥ तदृष्ट्वासमुक्ता १ सर्वकृद्भागकातिनामया १ ॥ क्रमत्याकृलितानाना वलवृद्धिकलापया ॥ एवमसौदृनावानकलिवृद्धिकृद्वर्तितं ॥ विलापकामीमहामत्व १ कानूष्या पि
तनामय १ ॥ विष्कामसहामोरत्वर्तां १ स्यपितिनतीसव १ ॥ उपेत्य सवृतास्यमंनियाऊपितमत्त ॥ नर्याभिकनृता १ सामममहामत्वादिवस्थूत १ अनन्यवत्स्वकलमनु

जा

का२

सर्वप्रभीड क्रुसत्ताधिपस्मत्रुमादयश्चापि समर्षयश्च ॥ लोकाधिपाः सर्वदिगात्रिनाथ दृष्टामनावाति नगंहिताय्थे ॥ मत्ताववकाः सर्वदिगादिनाथ सर्वधिवाईं नाउदानधीना
॥ सर्वाधिपस्त्वाः सुरगणामुनीन्द्राः सर्वप्रभीद क्रुमनानिरीक्ष्य ॥ क्रुद्धप्रसन्नावनवाधिकामाः कृत्वात्रिनक्षत्र भवमात्रिगार्ह ॥ एवं कृतं सद्यदस्युं नामिदानं सर्वान्मुनीन्द्रान्युद्ध
मतज्जामि ॥ एवं मनन्त्वा सुरगणाः स्वर्गं यान्ति कृत्वात्रिनक्षत्र च संसधीनथ ॥ सर्वाधिविकृतनमिनिप्रयाणा घाघ्राणि कस्वान्त न मन्मसर्ह ॥ तं वाधिम सर्वनिपतनामसत्रह
स्वाममृत्स्यायमर्विस्मयासा ॥ व्याप्री विनाकी क्रुमदाशि[illegible] सवत्वादमान्संत्र विनपपाव ॥ नदीश्च माद्रि शसमदीषवाह धवानघ्रात्र मिताभयव ॥ ववीव वायुर्विनमा
निवान सपृष्ठ्य न [illegible] श्च सजीकन श्च ॥ प्रमकृगम्ली यमना हिमिस्वन [illegible] मत्वर्ई कृत मादिवाकमां ॥ प्रमादनमोश्च वकानिनदि [illegible] नवदीव तास्कवश ॥ सवे
विमकास्ट म मप्रवृष्टि यथानगवाद्वि व्यसमन्वितम्या ॥ सप्तायशू विस्मयकृत्कुलावनादिवीकमक्रूत्र ससायसनागतस्थ ॥ ध्यतीश्च वलांप्रसमानमाग नामननस्म [illegible]
च हं तम ॥ इदी निशानन्दस्म भगवतसर्वेम दृष्ट्वि [illegible] नगरं [illegible] सविस्मये ॥ नदान्तकमीभिनयस्कवात्रया [illegible] समन्नागत [illegible] विनतिन [illegible] ॥ ससाव गीदार्य महा कृपा

भगवाति
प्राक्स्मर
[illegible]
२३४
[illegible]
तत्कार

नाविं तुरंगां पश्यय यथ स्यं वनम् ॥ सहास्य मोर्ध्व प्युनिन् तत्कामानिनमाम्लु गतस्तुरंगधैर्यविक्रम ॥ सनाथ गां साधु जगजगतं भूवमनन नमस्सर्गस्तु सा तिलाधिता ॥ सवीर्यकर्मा
र्जितप्युथ संपदाम र्व पिधर्म तावल्लवर्जिता जिता ॥ नदामा स्समना मायकूस्पृथि त्वांमन्लन ॥ प्रस्थागतउपाक्षाय ऽतु तागिंम विलोकयन ॥ स्वतस्स गां त्रम स्सत्रमर्वत्राय
विलोकयन ॥ तच्च मानंमयाव्या प्युदयदर्शनं दिर्जगुनं ॥ दृष्ट्वा सविस्मयाक्रान्तामदयोतिसमीक्षतं ॥ साक्षान्मृज्जगप्रागपश्य स्तुमिन्द्रमानसं ॥ प्रागि कृतसमहांसमाकेतुरस्वा
दगाहतामय ॥ सकांक्षेयपनीतान्मायपागतु विश्वक्रुवन ॥ ततः स्विनान्तमाम्नाप्यवनतां सविलोकयन ॥ उन्मायमम पाक्षयं विनाद्य प्रतुदस्त्विर्वं ॥ गगक्रस्यग्रता सर स्वा
स्वासगता त्रिवाजिनन ॥ गतलदक्ष विनुज्ञाध्या विलयन्वं वमतु वीत ॥ सहादयाम्यस्य समनाउनेजन स्वमोक्षने ॥ संगयमसामहास्सन ॥ सहाप्रकर्षणमिताक्लि दिः सं
तामहायनधांसं दिना समंत्रियः ॥ अँपनाक्रान्तमपथंतमाध्वमंगुध्य श्रयंग्रमयनंप्रद्दगिर्ग ॥ सहानमस्कात विश्लेषपात्रतांग्रम स्वनीतामस्सगु साननृक्षन ॥ नेसंगमामय
स्सवमस्य त्वाभूगनहापनघांव्यमनस्वमर्षिता ॥ सहामनीयाक्ष मिताग्रकाशतां रवैर्दुकृता विक्रमसंपदानया ॥ सननतात्व नमसृनाथगांगतं नत्साविनयंबल मास्तुगंउ

६१२

=स्वकुंभता१

मनी मसीदहनाः २

पीन

स्वभावनं मीमय २

ऊा त्या २ संदर्शयामासादिवसे निविष्टाः ॥ समस्तव पार्थिवस्तु नैवास्त विंशांसं कोशविपन्नश्चेतसाः ॥ चित्रम्वनवाधिनयाद्रुमानां भूमिधमामापदिवाणिकस्ताः ॥ मूल्यास्तुनीयामदिनवल
क्षीर्वल्लवसागत्रयपार्थनामा ॥ उदानहावाक्तनूयागु नाम्न विलाधिपण्याप्त मनाऊवर्ये २ ॥ नमर्थिनापी प्रिमगविद्रिहर्षीदक्रिश्चेतसा निमृत्वानिपश्चधम् ॥ नगर २ सनाफास
कलार्थद्रव्यममत्यन्न लुप्ताक्षितदानश्च सा २ ॥ संकानयित्वानगर्नैसमन्वादश्चेतय क्तौ निलयागिनम्याः २ ॥ नगर २ सनूयक्षालीक्ष पक्षधावे २ समनागर २ ॥ क्रयदानर्थिन २
सर्वा स्वसमारंठिमेवाद्यत् ॥ नहूंप ष्ठाग्राघमाकर्षे सर्वयर्थिजनामुदा ॥ लालाभाम्प्रमन्नायाः २ मस्तसा सम्पावनेन ॥ कव्रगर्थिजना २ सर्व सर्वदिग्त्य २ समागमाः २ ॥ गंत्र २५८
पंसप्रसंन्नायमाल्लाक्ष संऊद घिन ॥ नपापिमा स्वसमोधामा स्वीहृदोन्वा स्ववानिव ॥ दृष्ट्वा तिमप्रसन्नास्याः प्राप्तनन्द स्वभादितः २ ॥ नगर २ सन्नयक्षं दिव्यमर्वार्थिस्पाय २ थमि
तं ॥ सायवानं मरुद्दानवर्षप्रावर्षयन्मुदा ॥ अन्नार्थिय २ प्रदत्तान्न यानार्थिभ्यो ऽपि यानकं ॥ वस्त्रार्थिभ्य २ स्ववस्त्राणि तथा न्यासना निव ॥ लालनं गजनार्थिभ्यो ग स्वार्थिभ्य २
स्तगन्धिकान् ॥ माल्यालंकानवांच्छिभ्यो माल्यालंकारश्चानिव ॥ दमार्थिय २ स्ववर्णनिनृप्यार्थिभ्योऽपिनृपमर्कं ॥ कामादिधनतवांच्छिय २ सर्वोन्धात् स्वमर्पयत् ॥ अर्थिना

कानयामासमनोवाञ्छितं स्वयं ॥ सर्वार्थसिद्धस्तत्रानि धर्मार्थसाधनान्यपि ॥ रोगग्रस्तकृशार्थिभ्यो रोगग्रस्तकृशानयपि ॥ नर्थार्थिभ्यानश्रिप्रि [illegible] ग्राम्यग्रामकन्याकिंग्रान
॥ कत्रस्थान् विमानानि वाञ्छितान्यत्र संप्रदापयन् ॥ सिंहासनानि वाञ्छितानि मणीविकान्युपानहः ॥ एवमन्यानि वस्त्राणि सर्वार्थिकेभ्यो न्यपि ॥ सप्तभूममहासौधनसायनगताभ्यपि
॥ फलपुष्पदलस्कन्धत्वग्मूलबीजकमण्डलून् ॥ एवमन्यानि तानि द्रव्याणि सकलान्यपि ॥ तद्वयाम्य ग्रामवान्यासमर्वार्थिभ्यो यथादापयत् ॥ एवं मनुपनाजन्द्राद स्वार्थिभ्योयस्य
प्सितं ॥ सनातनं सर्वं लब्धा नैव तुष्टिं समाप्नुवान् ॥ सर्वान् अर्थिजनान्कृत्वा हृष्टान्मनुपतिर्मुदा ॥ वांछाधिकधनान् प्रीत्या यथेष्टमदापयन् ॥ सर्वेष्वर्थिजनाः कामसम्पूर्णाः संपन्नि मा
षितः ॥ ग्रामाधिकफलप्राप्त्या निस्पृहसमभिवाञ्छत ॥ एवं मनुपतिर्दत्वाद्रव्यं वांछाधिकं स्वयं ॥ सर्वानर्थिजनांस्तुष्टान् जयमध्यस्थमानयथो ॥ सर्वेष्वर्थिजनास्तस्य प्रदानस्य च समा
पकं ॥ यावदधिकप्रसंख्यां भेजुर्नैवार्थिनः कृचित् ॥ तदानुविश्वबंधुर्दानशालाः सर्वत्र विनाशयन् ॥ यावत् कोविमनस्तं दृष्टान्नैवार्थिनं दिवातरं ॥ तस्य प्रदानमस्त्वीति दिनदि
न प्रभावितमा ॥ सर्वधर्मार्थिनां पातालं यजमानमहसा नता ॥ ततः समनुपतिर्मुक्त्वा सर्वाणि अर्थिजनानपि ॥ सर्वार्थविनिमन्त्रणान्यायवर्णव्यविन्नायात् ॥ कृत्वासम धनमात्रविप्रजय

आ नार्थेन नं मानायमागमत्॥ यदृष्टाद्भुतमस्माभिः वक्तुमर्हसि यावत्॥ यदिदं वानराणां वापस्थत्वं वक्तुमाध्ययं॥ किं कलिधर्मात्तिल्लोके यन्निजार्थधर्मसाधनं॥ वक्तुमर्हसि याथात्वं कृत्वा
धर्मार्थविस्तरं॥ कृत्वा नाथ महात्मानं नृपं पात्रमुक्तिष्यति॥ इति मत्वा महानाजयेदिधर्मार्थमीप्सति॥ वक्तुं न वमादिपृष्टान्यपदीप्सितं॥ इति मन्त्रिसमाख्यातं श्रुत्वा स नृपतिः
सुधीः॥ तं मन्त्रिमुख्यमालोक्य पुनरेवमभाषत॥ मन्त्रिन्सम्भाषितं शिक्षार्थितार्थं यामम॥ तथापि ... सूपाद्यं यत्सम्प्रति प्रायमुच्यत॥ दुर्लभं समानुष्यतत्त्रापि दुर्लभं कृतं॥ प
द्यापिशी विनैव विश्वासं कृतांगुन॥ तदत्र किं त्वं निशं सर्वज्ञाविनाति॥ सर्वस्थं ताविनाशावाद्दकधामन ध्रुवं॥ सर्वेषामपि जन्तूनां बोधिश्वासमी विगनादि॥ तदत्र म २३२
स्वकार्यापि सत्वाक्ति त्वाहनिष्यामि॥ धर्मभवनमक्रान्ति सर्व्वस्त्रं तं कदाचन॥ तस्माद्धर्मं महावीरः साधनीयाज्जगद्धितं॥ धर्मेण सर्वं सर्वदापि ...॥ धर्माद्रक्षागतो
सर्वज्ञं नेवाहि नष्टं॥ धर्माद्धेवमपातक्रमेणात्मानं तवकृते॥ धर्मेनात्मरक्षाधीनः संसारस्थ वान्छति॥ तस्मात्सर्वं परित्यज्य धर्ममेव शुभार्थिति॥ साधनीयः प्रयत्नेन
सदा सम्बोधिमिच्छन॥ धर्मोऽपि सर्वेषां भोगानां धर्ममूलकं॥ यदसत्रीज्ञानकसा कामभोगेविसृष्टं॥ यतीत्तः सुगताः सर्वे तेपि धर्मानुभावतः॥ कृत्वा ... बोधिं प्राप्य निर्वृति

८७

मायमूः४॥ यत्वदानीं जिनाः सर्वं कपिधर्मान्नृकावत ४॥ मंत्रीभिः प्राप्यमिष्टलिविक्तं त्रिजगद्भिर्त॥ यत्वाथ्वर्वनविध्यानिगपिधर्मान्नृलावकत४॥ सर्वमानगमाक्रि त्वाकविष्णुलिजगद्धि
र्त॥ अस्मपिमथ्य धर्मं कृत्वासं बाधिमाफवानं॥ जिस्वामाना जगद्गुरुकर्त्रभिक्षाभिसर्वत ४॥ एतद्ध्यानसंवकृनपिस्वात्मसम्मूर्त्वं॥ संप्रदातं संभिक्षाभिवृज्यासां स्वे जिनानय
॥ ध्रुदमां समयं वकृ देस्वाम्यायर्थिनि ध्वना॥ वज्रनत्तमयं वकृ लिप्साभित्रिजगद्भिर्त॥ यदियाव्वतमर्वाञ्जमपिदत्तं समस्तत॥ ठकवकृ प्रदानार्किं सनाम कृटिलकवत॥ वे जिना
पिप्यत्तं न कार्थायभाज्ञियापिर्दि॥ स्वव र्थंमत्यन्तं प्राप्यग्रस्मत तवबाभिवां॥ ध्रुविमन्वात्रसंमानमक्षद्रमस्वबांकया॥ निनपकृः स्वजीवधिवकृर्दतं समस्तत॥ गर्व्वमसं
प्रदानाभिर्विधृकर्तुं नेवारंभि॥ महात्यमवकर्ले यंमवकेर्धर्मसाधन॥ एवंविज्ञायदानत्रक्ष्यस्वमनुभिदनां॥ एतद्धर्मान्नृतायनस्वमपिद्याधिमाप्यमि॥ यदिमसंप्रदान
भिर्विधृकर्ताधियत्वत ४॥ नूनंत्वं ननकगस्वामरुदुः ४ वोमिनिगात्मस्म॥ ध्रुविमत्यंपविज्ञायमस्वाधिधर्मसाधनं॥ स्ववकृ र्तानमात्मक्ष विज्ञानुमादयन्मम॥ ध्रुस्वंबा
मिनादिष्टं निसम्पममस्तामति ४॥ मन्त्रीभ्याभिविपक्षं काविनि स्वात्मानगावनत॥ मदामनपमाज्ञापिसर्वान्नृत्यान्विनादयत॥ आम्ल तं संममास मस्यप्रद एवं समादिसत

आ

समुत्तानधर्मश्चापि स॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा चचार पूर्वं बोधिचारिकः॥ कश्चिदस्ति बोधिचर्याभिः प्रज्ञावान्नापि रत्नभवत्॥ धर्मानुमापि सः कश्चित् कश्चिद्विज्ञानविनिश्चया॥ आग
मत्रात्मा यज्ञकश्चिदस्ति कृपया मिताय च॥ तथा नागामिनः कश्चिद्धत पूर्वामिसाधनः॥ एवं सर्वापि सत्त्वाश्च यत्नतया हितोदिताः॥ त्रिनवत्र सत्त्व संक्लेशात् उच्चशीलात् गुणवत्वत्॥ तथा
सर्वापि सत्त्वास्तदेवामृतश्चापि स॥ सद्धर्मसाधना सार्हं प्रापयन्ति हृष्टमना॥ एतत्पुण्यानुभावेन तथागतसम्मता त्रिनुत्तमं गता सार्हं प्रापयन्ति निर्वाणं॥ तदा
सर्वं सत्त्वा धर्मानुसारिण श्रीसंज्ञीविन स॥ श्रीमन्तः सद्धर्मध्यायाश्च चचार पूर्वं धर्मचारी चि॥ एवं तामानवाः सर्वास्म बोधिव्रतचारिण॥ पश्चात्सिद्धयः यथाकामं प्राप्य नन्दत्सुमा
दिन॥ तत्र सत्यकृत्स्नं सद्भाः कृत्वा धर्ममयं तथा॥ अन्यत्रापि पुनः कर्तुं गतो वत्स समुत्सुकः॥ तत्राप्येवं समस्तांश्च लोकान् यत्नकुर्वत॥ तत्र सत्त्वान् बोधयित्वैवं सर्वान् स
द्धर्मेऽन्वयोजयत्॥ एवं सर्वत्र लोकस्थानप्यायित्वा प्रबोधयन्॥ सर्वांस्त्रिवार्यपायस्थान् सद्धर्मे समयोजयत्॥ एवं सर्वत्र लोकेषु कृत्वा धर्ममयं भुवि॥ सत्यकृत्समयसत्कार
दर्शयन्दिवं ययौ॥ तत्रापि सोऽमरान् सर्वान् देवान् सुबोधयन्॥ सद्धर्मे सम्यक् पादिव्य बोधिमार्गे न्ययोजयत्॥ एवं स भगवान् पूर्वं बोधिचर्याव्रतं चरन्॥ नानाद्भुतं यश

बुभाओदयानीर

२४९

=या२

सर्वत्र सत्वाधर्मन्यथाजयत्॥ कश्चिद्विभान् नृपग विष्णुनृपगरुत्रविन्॥ कश्चित्कंकनृपगसूर्यनृपगरुत्रविन्॥ कश्चिद्दवं वत्राप्रदित्रदनृपगवाधयत्॥ सर्वा सत्वा प्रय
त्नेन सद्धर्मसिंन्यथाजयत्॥ एवं वायव्याग्निनृपगयमनृपगरुत्रविन्॥ कश्चिद्राक्षसनृपगमीशिनृपगरुत्रविन्॥ कश्चिन्मारुतनृपगतीदनृपंगरुत्रविन्॥ कश्चिद्गंगनृपग
मिद्रनृपगरुत्रविन्॥ कश्चिद्ब्रह्मास्य नृपग नेन्द्रनृपगरुत्रविन्॥ कश्चित्सर्वनृपगमयूरनृपगरुत्रविन्॥ एवं स्कंदगुरुनृपगनागनृपगरुत्रविन्॥ कश्चित्नृतनृपग
सत्वान्धर्मन्यथाजयत्॥ एवं विद्याधराक्षीनां देवर्षीणां महात्मनां॥ ॥ब्रह्मर्ष्यादिमुनीनां च तीर्थिकानां गणस्विनां॥ यतीनां योगिनां चापि सिद्धानां ब्रह्मचारि
णां॥ कश्चित्पुण्यकबुद्धानां नृपगपनिवाधयत्॥ एवं च वाधि सत्वानां मुनीन्द्राणां च गरुत्रविन्॥ वाधयित्वा प्रयत्नेन सर्वान्धर्मन्यथाजयत्॥ कश्चित्यक्षनृपगदैत्यनृपगरु
त्रविन्॥ नृपगभैरवानां च मातृकानां च गरुत्रविन्॥ कश्चिद्दानवनृपगम्लेच्छनृपगरुत्रविन्॥ नृपगडाकिनीनां च राक्षनृपगरुत्रविन्॥ एवं कश्चिन्महाकालनृपगतामय
नृपि॥ वाधयित्वा प्रयत्नेन सत्वान्धर्मन्यथाजयत्॥ कश्चिद्गालनृपग नृपंगरुत्नमस्तकविन्॥ तत्प्रगणिषा वादिं नृपगजामयन्कोविन्॥ सिंहव्याघ्रादिजन्तूनां यश

जा

२२

नथि॥ तावदस्या यम् कं नं नाहल्पमात्रमर्द्दुमि॥ श्रुतमपि प्रयत्नेन वानयिष्यमृगीम्मि मां॥ इति यानमहापापदानृत माहमादन॥ एवं तदकं मा कर्त्तुं पुनिता
स्यन्नरथनिमर॥ मनोवृक्षकं दाहनमन्व विर्तवनवनत्॥ अथमवाधिमत्वकं निर्ष्यं संपुण्यन्वन॥ सत्याजमति वाक्यैवं मन मांप्रविनयतु॥ मन्विप्रमानसकलन
वीनकस्मात्यनस्मास्मगयाभिमान्तं॥ यादृक्किकीनस्यदिलानमस्यस्कार्यप्रियश्च स्याद्वुनथामममार्ये॥ निनात्मकतादिनिमाचहीनद्व ख्विकागाघ्रमतना उवांव
॥ दत्ययनस्मायुपमृष्ठ मानन्नणीतिमान्यानविवक्रतत्रमश्च॥ स्वमोत्वमंगनपनमहश्चरवमृपञ्च तमकिंपविक्रमांयाहा॥ नन्नान्यद्वध्वमतिमाक्तिमोत्थंम २३३
त्यां वभकोकिमृपक्रकश्चत्यां॥ सत्यांवभकोममयमृथक्राम्यादानगाम्निन्यपिड्वरवमश्च॥ कल्वैवपापं ममगनविर्कदक्षनैकजंमत्गाश्निनव॥ तस्मात्त्विष्या
मिभनीनकगनदप्रयाकाजगतीविगन॥ मंनकृसंपृत्रवधाद्वमस्यामस्या॥ सकाभावगदमस्कानां॥ ॥ किंवापिदसमनवाक्विंगंयक्त्यमनात्मकृगतेयु
नव॥ गदहृयनंत्विदमत्र कृस्वालप्ष्याम्यहंनत्वमयंभनीनं॥ नथावमग्रमेतृगाफिदना दत्वास्वदकंजगतादिनास्थे॥ मंभाद्नंसर्वंजिनात्मकानांवित्तंकनि

=ग३

ध्यानिष्ठ्यानुसारिणां ॥ मंदर्शनेनांस्कृहितांतस्स्कानां मूलस्य नंमन्दयनाकृमाणां ॥ मंदर्शयंत्यागाविज्ञानदानामाकर्षयं प्रमकृतमानमानां ॥ विषादनं मानसस्वास्थ्यनाप्रसादनं
कृष्णहृदयप्रियाणां ॥ क्रीडादयं त्वार्थपदार्थं दानां मास्वर्यलाभापरताम्सनानां ॥ श्रेयसंयानवत्ताभिनानां विस्मापनं मागम्यमयानां ॥ विश्लेषनं स्वर्गमिलापथस्य
त्यागप्रियाणां मनुष्यादिनृणां ॥ सर्वात्मनीशान्तगणास्सजाये समाधिवर्यावृतवानिनाश्च ॥ मद्रूपमत्तवनदानुकामान्ताकिंप्रमत्तः भवत्संव्रजामि ॥ कदान गाढेरथि
नामक्रयोहितं प्रनघामितिय ग्रंथमत्तहू ॥ मनोनवथमस्तस्ररुलीक्रिमेसमाधिमग्नामपिवाविहृत्य ॥ अपीत्थं मन्मार्तस्वलनदातः भिक्षामि संवृक्षप्रसादमुतायः ॥ नेवास्नप्रथ्व
मनवमागतीर्थानक्रमंसतनमुक्तिमुताः ॥ नम्पर्द्धमाने वयस्त्यानिलालात्मस्वर्गलालात्ववनाद्मदताः ॥ नायुनिकृष्यामम्रुत्वयथयंमभोद्भवान्तेत्रपमार्थसिद्धः ॥ नथ
समाननम मानकालेलोकस्येश्वरोनिमृत्वादयं व ॥ दृढैवकर्तुं वमसमस्तुभक्तिम्रमतः प्रकाशं वयस्थैवकानाः ॥ दृष्ट्वा [illegible] तौनृमूर्ति माणगायाः [illegible] कथायागमूपागताया
॥ सर्वप्रकारं शरणागतानां हितानि कुर्याममनुष्यसंहितानि ॥ एवं मनिविज्ञपनार्थसिद्ध्यै प्राणस्य ध्याय शिवप्रसादः ॥ मनास्थिधीना [illegible] विस्मापयन्त वसूवाच धीनः ॥

जा धि २

धिनिहिता मया ॥४॥ मनुष्यत्री सत्वायत्वा तत्त्वनिमग्नात्मजा ॥४॥ ततस्याम मिता इष्टसर्वा ॥ एवं चित्वा यथाक्रमं ॥ जित्वा माम गता स्वर्वान इन्द्रो वाधिमाप्नुय ॥४॥ स्तुति
मत्वा त्रयः सत्वाय यदीक्ष निमग्ना सर्वं ॥ तच्छ्रित्वा मयदा तत्क्षणात् तत्त्ववाधिमानसा ॥४॥ स्तुतिमग्रनूतादिष्टं कृत्वा तं सयान नाथिय ॥ त्वमप्येवं मूनी ब्रह्म नामन न नदधागत ॥४॥
त्रिनत्तरजनं कृत्वा वन्दनं चक्रुनं सदा ॥ ततः सर्वदा कोपितः पापिना ज्वरं - तवेन ॥ सर्वत्रापि तव मण्डनं नित्यानं सदा वेदं ॥ प्रजा श्रपि तं थनाजनत्वाच यित्वा
प्रयत्नत ॥४॥ वाधिमार्गे विनाशं त्वं पालय स्व समादनात् ॥ ततस्त्वं वाधिमर्हतानं एवं चित्वा यथाक्रमं ॥ ज्वरं त्वा च गताः क्रित्वा सत्त्वाधिमाप्नुयाद्भवम् ॥ ॥ २५१
एवं ततो इत्यादिष्टं कृत्वा ॥ श्लोक ४ सत्तु पतितो ॥ तस्थ निमग्न प्रसन्ना मा प्राप्नुवन्ति सम्पत्ति के ॥ यथा यीदं प्रसन्ना कृत्रि जगदधिष्ठितो विप्र जन्मावदानं ॥ स्व नित्रा
वयन्ति प्रमुदित मनसा यथ मह्यं कामा ॥४॥ तत्सर्वं वाधिमत्वा ॥ सकलस्तु तथनात्मद्रु समयत ममता ॥ शुद्धात्मा त्वं सदा नौमि निवय निलयसंप्रयान्ति प्रसादं ॥
॥ ॥ इति श्री महज्ञानकोमालाया श्रीशाक्यसिंहगोतदावदानसमाप्तं ॥ ॥ अथ त्वा कोसमरनाज ॥ कृतांजलि ॥ पुनः गत ॥ ॥ अथ गुप्तं गमद

५४

४

छिदर्मा॰ च्यनिया॰न्ोदं धनात सोवडे॥
गिविरता
सेनजित ५

ं नत्वैवं प्रार्थयत्पुनः ॥ तद्वन्नःऽत्र भिक्षुभिर्मुनीन्द्र समभाषितं ॥ पुनायस्य कृतं कर्मन तत्समादरं मर्हति ॥ एवमिति प्रार्थितं नाथाज्ञानिर्मचत्समहामति ॥ उपगुप्तो नत्वा दत्तं सभा
संप्रेक्ष्य मादिनतः ॥ गृहकर्मसाधनं महामात्यय यथामकुर्वन्ति वित्ते ॥ तथाहं तत्प्रवक्ष्यामि शास्त्र यत्नेन कर्मं ॥ तद्यथा ततः पुनः तत्सर्वप्राणिमहीतले ॥ सर्वसत्त्वाइवावानाकषायव्या
कुलानया ॥ तदा सर्वा धिमत्वाद् द्विविदवाधिपः सुधीः ॥ सत्नृजानु भिमानका न्विलोक्य कदृशाकुलः ॥ सहामत्यैरना नाना क्षेत्र व्याकुलमानसा ॥ सर्वोपि विनयं यायापि निवि
नाकुलीतवत् ॥ तत्र सामानवात्सर्वोन्निमसत्वानुरूपगतमागतं ॥ विलोक्य तान्समस्तु दुर्गं ममस्त्वानं समादरोक्ष्ये ॥ ततः शान्तिमहात्मा हीमहामत्वादि वक्ष्यते ॥ सर्वान्धर्मनतान्कर्तुं महि
तलं समायधो ॥ तत्र समसमूपास्तस्य वाधिमत्वाविलोकयत् ॥ निविवाणकुलं तन्मलन्नात् कुरुमंतिः ॥ सवात्यकपुरुषविनयानुवकासन्मति ॥ सप्रकृतिप्रजा लोकवतत्रम
विस्तनिकः ॥ प्रकृतिवृद्धिमान्धीनः सर्वविद्याविवक्षणः ॥ तिनक्ति देवमूर्त्यन्तःनाम्यवर्ष क्षी सम्यग्विमानं ॥ सकल त्यासहानाजः सर्वसत्त्वहितार्थ कृतः ॥ संपद्याल्पप्रजाः सर्वाः
स्वाल्पजानात्सुवप्रजाः ॥ ससर्वविद्यार्थविमानवृद्धिनिसर्गसौम्यतिसूनयमुक्तिः ॥ सत्यबंधनाक्षमपिविलहानीतिप्रियः कायद्ध्यापनातः ॥ तस्मिंत्रिवर्गानुगता गुरुसो

त्री

स्त्रदास्मिन्कृ ४॥ अथ मनाजन समाप्य मृत्यम्मिलु कुवनं समनी सुधीय ३॥ कुञ्जवि कृष्णामुक्तयत्र नत्र २ सर्वाधययत्रव मवास्ववाक्यं॥ नार्यघन्त २ मार्वगम त्वम्मा फलेन व स्वर्गेनापवर्गो
नकी र्ति॥ त्रातं लोकानिग्रघंवादनाभयात्मक्रुध्या मावल्द दयमाय ३॥ स्वस्माधि प्रं तनस्तुगाऊ त्वाम श्रीमनोगिविन॥ स्वामिनंतमममालोक्य पुनर्यवम लाघाम॥ ५८२ स्वामिस्म
हानाऊ स्तितार्थं यन्मम यास्वर्ग॥ हवा श्रीकाहितमाक्रानीतिधर्मप्रणि स्थितं ४॥ नदत्री प्राकथं लोकारूप स्वधर्मं प्राप्नुयात्॥ स्वधर्मी ह्यमगउ २ स्वंद्र २ रवीमका घिनात्वन॥ मंतपाल २ क्रूश
दम्भात्मा हिता हित वि भाक्तिन ३॥ मृहुः २ पुनउ वायानाउमसत्र स्वगतिरेव॥ एत त्रीणि सर्वं मत्वा लोका स्नाउं यदीच्छसि॥ नीतिधर्मपवस्तु य कृत ख्यानमी स्मितं॥ स्वप्रा २३१
नमर्जवक्रु २ कथ मूढ्रुप्रदास्यत॥ उत्वा तनयमनूनं प्राहस्मा पिनि २ स्वगाध्ववान्॥ स्वस्तिम स्वामहाना ऊ लोकहितं यदीच्छसि॥ ननवात्राय मृत्युसम कसादाव्रुमहेति॥ स्व
यि जीवति जीवन्ति सर्वे लोका २ सरोचिनो ३॥ मद्धर्मसाधना युक्ता धर्मियष्यन्ति गुरुमदा॥ मन्त्रे यि प्रजा २ सर्वा स्त्वकाकाम्यप्रयापिना २॥ त्रिस्वधर्मं हूनावानाध्वनिष्यस्तुत्वा
गुरुमदा॥ स्वर्गविक्रम्य नाउन्नुयदिलोकक्रुपासित॥ स्वप्राधम रुसूवत्नुनयात्मर्थिनर्हति॥ दान अमर्थि नमुर्ख्यं धान नलादिर्कधनं॥ नानालंकानवस्त्रादिनस्यामुनन्य

५८

हादिकं॥ स्वस्य लत्न थ्यानानिर्दहिनाक स्वार्थ स्मिर्ग॥ ॥ स्वत्र यानादिना र्थं त्व विविधन समं युतं॥ त्रीहि मथ्यादिना र्थं व महो प्रथन भायनं॥ नाक्षदिदयवाक्त निस
र्वार्थ धि प्रयक्तृत॥ दामीदीमाक सोनक स्या स्वं वका स्याः[illegible] स्पविद्या विकान॥ नथा ग्राम हिघादी के पत्रु जीती रु प्रयक्तृत॥ स्वदर्थं विप्रदानर्थं दयम व प्रयक्तृत॥
क स्वार्थ मवक हि र्थं दानपूर्व्यादिसाधने॥ ॥[illegible]॥ स्व स्मा नंक थम् स्वस्य दान थम थिंनपुरा॥ स्वा स्ने वाधि प्रयत्न नन कु धीय त्न र्था थि लिए॥ सा स्मा हि यन
सादव स्माधनी या कमविन॥ युक्त य्य नथाध ममा त्मा र्थं ना थ य हव॥ प्रत्त त्वक्त द्वा सम्पक्ति वलं वीर्य पनाक्रमं॥ विद्याम नुमहा तिहू पदवा स्मा थ भवहि॥ स्मा त्मा न मेव मं मा न भ वे न
यिय निग्र हे २॥ स्वं न स्थ या घ्य यत्ने १ सर्व लोकार्थ साधन॥ ॥ दान शील क्षमा वीर्य ध्यान प्रज्ञादि साधनं॥ स्वा स्मा र्थ भव सा ध्य र्य सत्वा नां हित कान ये॥ ॥ स वृं लक स्म मे मा न मेत्र
मैकी र्ति साधन॥ स द्वा पि स्वा स्मनो स्वार्थ साधय बुद्धिमान्पुमान॥ धर्मार्थ काम मो क्षां व स्वा स्म हि तार्थ कान यां॥ न थांय स्व गु नो धे व साधयन्त्र्य थ मान वं॥ न कुवा न्क थ मा स्म हृ द
स्कं व कु ना स्म न था समह स्वा र्थि न द कं प्रदि स्म नित्तु ना फ थं॥ स व व कु १ कथ म स्य न त्र की स्व निया स्थ त॥ नियुक्त पि कथ प स्थ स्य य मे स्म हि जी र्हि त २॥ त व न्न मे विधा

= पुनःस्या

श्री कालिक्षतात्कामनप्रमाता॥ यथुद्दत्तुर्यो मनस्तः प्रकोपं पाधाः पतः काथमनाप्नमः स्यात्॥ नोह्यस्य दोषावयवानिवः स्तुत्स्यापयवत्तनोघनः स्तुवोति॥ मासर्थतः सिद्धय
गतवस्तुनाह्या लिक्षनतमसमित्रमनां॥ यस्य त्वं मितस्ववकोपः तनक्तिनीश्वचश्रीमत्स्वमास्मकामि॥ यदत्रमक स्युतमयवेनमयप्रसञ्ज्ञः शिवमिसृतनि॥ योवादमृतं
हतयावनानिनिवन्तनाया यथमितः शिवाभि॥ स्तुहालिधानं तथ्यमावमाभिनाहीभिनादं व्यसनान्यपृथि॥ मत्स्यक्षितानक्तं दृष्टिविमेनत्वानेकव्यलीकाप्रयदानं तुस्य
॥ ह्याम्याभितानाभिवतान्यमादविवकप्रीतिनिवन्धनानि॥ कल्याणमित्रं यमउवनाझाममाथ्यमक्तस्यमवोदयाय॥ कल्याणमवास्त्वनयायफायमव स्वमितृस्य वा
वहूतानि॥ माममगर्वमदिमक्तितियतिवर्तमिस्मृतांविप्रलम्भ॥ प्रस्यामस्नायकायामनुवनमित्वयातज्ञिनी किन्नयाह्यंनाथ स्यकृयमवयमनपरिणतंनास्यकृ ॥ २३४
॥ स्वक्षिमर्णतनकृदोजेयमित्थंममनत्पतिनयज्ञापथिघ्नमयत्न॥ कदास्यक्षोगतदत्तु केर्गभतमबाधविनमंवनवस्यामीतिप्रभममस्वमंताममतः गविनकीमत
कत्तस्वविनिममनवज्ञाममनं प्रमिद्धाक्षदिक्षाक्रितियतितिभिमंप्राप्यनविवात॥ इतिनिश्चित्यमनाज्ञप्ताबाह्याश्चविवागितः॥ स्यकवस्तुजनस्यदापनीममवं

दुर्वेवा॥ वाक्ष लक्ष्मी पवित्र क्षवनल क्षी समृत्न क॥ सर्वान्यवित्रमान्द्र स्का मज्जर्मयुधलाल सः॥ अविह्लान प्रयानोन्ये स्वकर्मर्थाम्रमीतिन॥ नत्रोपुना विनिर्गक्षिनका
मीम समावन तृ॥ मृ द्रवनिर्जनन धर्मविविक्ति मनाव मं॥ स्रा भम मृया मीनक्ष स्त्री ध्यान समादितः॥ प्राप्तुय मानवुव यम्र विनांड्र, मोक्षं आरवाक नेः स्वद्गुस मातनाधः
तिनार्थ॥ अनंतवनान्तमृपगाम्य सर्वाधि सत्व प्राफीम तंन्न पम्र वैननं वा फ पूर्वं॥ यान्यवः कयनिद्वमृखानि लोक स्वाना स्मना मनूचि नाय नमीस्वानां॥ मान्य वना
मदर्धनि पुत्र मप्रिया यांप्रीतितिना मिषमृख्य यानवश्यां॥ पृथ्वा विवाम गुविति स्वना नँ वामेःमंवीजिनः प्रविविति नाघनीन खदं॥ आन्यापमाद मल्लिनां
मतऊ धूल क्षी सम्यगाम व मनहि क्रिनिय पूर्वाम॥ क्रत्वानम म गुवनत्रय शक्ष नयः सर्वास्मना दक्षमृदिक्षनथा गमृख॥ सृष्टान नाहल्लक्ष्य पविलाग न
स्यमूलनना क्रितिय विनिघ माद मत्य॥ सख्य दिशानाः पूर्वम न्दनीयां स्वक्रमय क्रानृत्युःरो विलासे॥ विविक्तं मंहागम्र रवोन्य म ख्य न्याला छवि अन्न क्षव
क्रितीनः॥ पवित्र वस्त्रि र्जनवाविभवा प्रक्षालित ध्यम स्थितलाम लाति॥ मानू नियव्यन्समहीध नाधमयत्न न स्यानिमृर्दऊ गाम॥ स्पालिनि ता न्पृथ्वरनालगा

जा

बंधयो ॥ तत्रापि समस्ताः सत्त्वाः संबोधिप्रतिधानतः । सर्वसत्त्वहिताधानं दत्वैः साईः प्रतवंसत ॥ ध्यात्रो सर्वं दधानाकाः सर्वलोकाधिपत्यनः ॥ सुधर्मं समूनीन्द्राः तत्का क्कासिंहादि

नापन ॥ एवमयं जगदाः पूर्वं बोधिसत्त्वा जगद्धिताः ॥ यावत्सन्त्युपकादनूदत्वा बोधिचर्याव्रतं चरन ॥ विज्ञा संबोधिसंतानं पूरयित्वा जगद्धिताः ॥ जित्वा मारान् समासाद्य संबोधि

मुरागतावन ॥ तदस्यप्रिजगत्क्लास्मै सत्कृत्य धर्ममादरात् ॥ श्रन्तय श्रद्धया नित्यं संसार तद्धवाञ्छितिः ॥ यदि संबोधिनिगद्धं मनसा मोक्षं निइर्गमि ॥ सफातिमवसं

यान्ति संबोधिमपि वासुधुः ॥ एवं मया श्रुतं तादिष्टं कंतं मया तत्त्वश्रव्य न ॥ तया श्रमत्स्म हानाउक्तः त्वानुभाष्य तन्धया ॥ पुत्र महर्षि महानाउश्रावयित्वा प्रबोधयत् ॥ बो २१४

धिमार्गप्रतिष्ठाप्य पालयत्वा समजानिव ॥ एवं त्वमपि सर्वदा सद्धिन्तु स्वानंतस्वं स्क्रुवं ॥ क्रमतो बोधिसंतानं पूर्य संबोधिमाप्नुयात् ॥ इति तनादिता दिष्ट्वा त्वा सोक

मत्युपतिः ॥ तथाहीति प्रतिज्ञाय प्राप्तुनन्दसुपार्षदः ॥ बाहु सर्वदेदा सा प्रतिनत्य तासु वादत्सानाव दानं यथीदं श्रवण नित्य प्रमुदित मनसा श्रयवत् त्वनित कृता ॥ स

र्वबोधिसत्त्वाः सकलनुता दृष्टा बोधिचर्या विदन्ता ॥ तच्छ्रुत्वा सर्वं सदा ते जिनवचनमिलय धर्मप्रियाया प्रमोदं ॥ ॥ इति श्री महन्तरुद्राकमालायां

१११

सर्वदा हितं श्रमसमन्नाशाय दानं समार्फ ॥ ॥ अथ लोकामहीपाल ॥ स प्रसन्नः कृताञ्जलिः ॥ सद्गुरुं पुण्यफलं प्र... त्वाथे वसन्नवीत् ॥ हदना ओ
तु मिक्ता भिपूजनं न्यस्त हामिर्गं ॥ पूजाश्च त्वत्प्रकृतं भाक्ताम्हकृतं तत्समादिश ॥ कृनिर्मप्राथिंतं याहात्... त्वामाहं न्मे धीयोगिः ॥ ... पानन्द्रोगं समालो... दिवसं तु ॥
मार्थ ... महाराजय यथे मगुरुं ... गादितं ॥ तथाहं तप्रव स्वामि भाक्तायस्ताधितं पुना ॥ तयथार्थं पूर्वे कस्मिन् समये यत्र मही तल ॥ सर्वलोकाद्भुना वाना ... स्वामि गः ॥ श्री
तत फालयाद् श्रामदगर्वा हिमा निन ॥ सद्धर्मभिन्दकामूर्द्धः प्राभ्वनन्दं स्थांग त्वर्थं ॥ गद्दुष्कृतादिसं वाना ... सम नागं ॥ दुर्भिक्षादिसहा त्यातं प्राव कीत न्मृषानूनं ॥ त
दृष्ट्वा समहासत्वः कृपाकान्तम्यवादितः ॥ मनुष्याणां हिताश्र्थेन त्स्यामागन्तुमर्हत ॥ तदा दिव्यमहत्तोये स्थमथिस्तु स्कादिवस्थूतः ॥ वाधिमत्वा समभूर्तानां हितार्थतु दिमा
यथो ॥ तत्रनाजवुल नस्मलस्त्राश्रीज गर्भृसम ॥ दिव्याभिसन्दनः कान्तः पृथिवीमाश्यावयत ॥ बालोधिसमहासत्वः सर्वसत्वहितामयः ॥ सुमति सद्गुणाकर
सर्वविद्याकृपाकर ॥ दयालुः स प्रसन्नात्मा सर्वलोकाभिनन्दितः ॥ कुलधर्मसमाचारः सत्यवाक्यं यमात्मनः ॥ लोकानुग्रहसंनकादासार्वार्थिमकाति ॥ सुखीनावी

अर्थिनापि यथाकामं सर्वथा कार्यप्रसाधिनाम्॥ १६

रा अर्थिनां नाकामन्नार्थप्रतिनन्दिनाम्॥ सर्वानिमान्समालोक्य सहर्षविस्मयं ययुः॥ पृथगर्थं वयज्ञाथ सत्पुरा वविधानतः॥ तस्मिन्नुपजनिस्म सर्वहृदयानुषमायुयुः॥ सद्गुणक
थयातस्य नाह्नालोवप्रयुक्तया॥ नयान्यथाति युक्त्या पिमार्दवेनेव तयम्॥ प्रायशः वेल्लमन्दानाम सर्वहृत्सितं सतः॥ यस्मिन्नष्टनिती स्त्रीक्वापि गदि व्याघ लदण्डकं॥ तत
२ पंक्तापि नयज्ञा स्तदीर्घापि हृता भयात्॥ उपयं समष्ट्रमहास्थानं मयकानविकीर्षवः॥ तत्रतन्तृपतिं दृष्ट्वा सतासनसमाश्रितं॥ स भूपस्तामिषं दत्त्वा समयावनाताजनं
॥ दृष्ट्वा समनुदितानाक्षीनाः सर्वानौजनाथिनः॥ राजनाधिकृतो नः ग्रामं समाहूयेवमादिशत्॥ एषां राजनाथियांत्राम्कं २ याव्यायत्थे स्थितं॥ प्रवीनंसनेसंतोषं समहामर्षं २१८
प्रक्षीयर्तां॥ स्पृतिना हा समादिष्टं तत्र स्वागत्य तिनजना॥ महसा समृपानीयदत्तं भक्तं २ मृ राजनं॥ तेतुयद्धतमालोक्य सहायमपिनस्तुया॥ ध्या प्रोपात् राभिवोहकि
मनः स्वा एवमस्तु वन॥ एवं विधं महोत्साहं जनाश्रीमहाराजनं चयं॥ तदत्र राजनं नैव प्रतिराजी सहितं कुर्व॥ स्मितदृक् साकर्ष्येमनः पाविस्मयान्तु॥ ग्रामं गत्वा समा
लोक्य पुनर्वसमादिशत्॥ स्पृहं सं राजनं विप्रायदिनेवा हिवास्थोथ॥ कीदृग्राहाराजनं त्रुतनास्या मिलाहर्षं कुर्व॥ स्यादिश्यनेन स्नः सर्वजनसंप्रसादिनः॥ नृपतिरेनं समा

सत्वं समानां के वमकुलन ॥ प्रणम्य गाथा तिमा सानिन वामां नृधिवा दिवः ॥ अमूत्रणान माहात्म्यं यज्ञा नंद हिमस्त्रूय ॥ कूमस्त्रीवाथनयज्ञा यके यिसा तमनूपिका ॥ स्वय
कमूर्त्तिमाक्षयमतमूपतत्किनपून ॥ एवं नानाविधिता नप्रदीपविमलमर्द्धज्ञान ॥ संस्तुत्य वाल्लवाडा स्यान्कपिलककनकता ॥ स्फटिकविपिन प्राधा ॥ कक्रम स्वकूलो
नमान ॥ मामाम घनितान्नीला न्विकृतदीघधा प्रयान ॥ समतिवी कवाजंत्रा माया विनश्च भवेल ॥ यज्ञा स्वसमायाता त्वंककनितमताजनं ॥ नूतमनकं हिज्ञाने वस
र्वपीमपिता विका ॥ नंदस्मञाजनेकू फिंनयाय ॥ मनमेनपि ॥ नेवेमत्तु स्थिमापूयविनासम्मा स्मताजने ॥ नदत्र किंप्रभाष्या मियर्द धांठ स्थिमावन ॥ कृतिवि
काविघधूस्माकृणाकानूध्धमोहितं ॥ तानवमविर्नपध्वन्त कोमघानमानम ॥ अथगस्य नवन्द्र स्थप्रकृत्याकनूया मन ॥ दयमीकनूया नघमत न्यिथि
तालिपू ॥ ननस्वासोमहामत्व ॥ कानूध्धव्याकुलानय ॥ मनूरवाव न्पिशावा स्का न्तमीश्चेर्वथविकयत ॥ कृपालाजी दर्शनावदत्रणानं मदुर्लभं ॥ प्रणम्य स्वमदन्व
र्थ्यं किंनूद्ध ॥ रवमन ॥ पुनं ॥ निर्दयस्या प्यभक स्यविधामकनमनमम ॥ नक स्याप्याहिनाथमात्किंचित्कष्टनर्पनन ॥ एवं विधानननाथयानां कानूध्धमूत्या शिवमान

जा

भक्तकन्याश्च ·

=फा२ =गदा१

मन्महत्कामकमालायांपिविनाशवकृत्प्रदानावदानं१॥ ॥सूथस्त्वाकामहीपाल१ कृत्वाकुलिंपुनागतः१॥ भाक्ताबमूपगुफंवनत्वंप्रार्थयस्मृदा॥ तदना श्रेत्र

मिक्तामिपूनवन्यत्तुताधितं॥ सक्तकृत्प्रकृतंधर्मेनत्वमादक्षसर्हति॥ कृतिमंप्राथिनाह्वाकृत्वामार्दम्महामणि१॥ उपगुणौनवर्द्धतममालाक्षवमादिनतः॥ माधुरु समस्त

नाजयथामितुनूत्मोदितं॥ तथाहंतप्रुवक्तामियकप्रुसाधिर्मत्वषं॥ नयथात न्पूनातयस्तत१ कालान्तमकुवि॥ लोकद्रहितिर्मवाना दुर्गोऽसत्यामतंमूर्ल१॥ ॥ सर्वधिम

स्वायकृत्यिणासादुगतनः१॥ दत्वाधापनताप्रुत्वावतत्व१ कामवाणिदा१ नद्दृक्षामसमहामत्व१ कृपाकानृथ्यऽदिन१॥ मानधीऽनमर्थआमाग्रहितार्थकर्तुमिदुत॥ ननश्च

वृहद्धर्मपु० २ त्वामहात्मामनर्थलोकसमागतः॥ ननाधियकृत्लजकन्त्रमाद्यातृन्ननाथिय१॥ वाल्येपिसमहामत्व१ स्वकुलधर्मसंनत१॥ गुरुभीत्व१ समावान१ कृपालुहकनृधाश्रय१॥ सर्व २३३

सत्वहितोत्साहीसर्वविद्यानापारगः१॥ सर्वार्थिप्रसन्नात्मात्यागीसद्धर्मलालसः१॥ द्वक्षायासनमंनकागुरुनुतक्तिसमाहितः॥ वेदादिपूजनात्साद्देनमनिर्णयसहायके१॥ ततः

सर्वावनप्रोदायदंवाजान्तिसुन्दनः१॥ सर्वलोकमनोहारीसर्वसर्वत्वहितार्थतत्कृ॥ ततः१कन्यांसतडाकीस्वकुलधर्मवानिती॥ यथाविधिसमावाक्षनंमन्तृस्कायथासुखं॥ सर्वा

पुरः थ्येर्विप्रलन्नावमानं धिगनूपश्च मकानिश्रीमूरवंपार्थिवानां ॥ पिमिनमिवविपूर्तिक्रयस्तुग्मनुलानांयधिनवगिपूंसावनवनस्यमूलं ॥ प्राःगवविह्वायमवाधिमस्त्वानाक्ष
मवेनंवक्तु ॥ २ स्वमलं ॥ विहातुमिपम्नियूमंनिरुंजव्यविनतयदवमूपायविहुः ॥ धिगस्त्वनार्यविषयात्र्यर्थमरवंममीनः ॥ नाकुगललानानवंवलं ॥ इयतानमयुक्तनिवद्धमानमा
ननादगांवन्धूजनायनायिनीं ॥ वानाहुतननक्तिमन्धजलिरवाप्रस्तादनान्माधनंदानेप्रमिफ्फगिमिकदनामूमलक्रनदिपद्धावूलं ॥ मक्तानामिवलंविदनुमरिवलंवाहुहिमीधा
यहंनकुंदजनवानिशीयदिकूपामांगवमांनापदि ॥ याबाधीनधिगम्यपपनवधव्या मर्मदग्धानानानांवाकुडुमनायगीतकूमर्मांकावध्यमालामिव ॥ यापिस्वार्थनि
वध्नप्र॥ यिमुंप्रस्त्विशावस्मनाप्राःगवव्यमर्यंकुनयकुगतांत्राहंहिमाधायग ॥ १ ॥ अपिवाहजगहहद्रहः ॥ २ मंवाधिमानम ३ ॥ मदहंनाश विश्वमपिदन्तुंममूत्स्म ॥
नाश्रपनायदिममप्रदायकं नानिपद्मामयाननुविरश्लघगंत्रघनाज्ञा ॥ नाक्ष्मप्रमंवलपनार्थमहंवितर्न्मिमक्रमतानमिममायगतु ॥ २ ॥ स्वतनु ॥ अपिथिप्रिवनतार्यमानेनी
यानननु ४ मद्युपहिमविमृतिप्रार्थनाकुरुवता ॥ १ ॥ उयविमक्रूनलत्वात्वानुकस्याविरश्लघान्मृग ल्ववविनयार्थंक्षात्रकापावकाम ॥ ३ ॥ उन्मीत्रयमुखवलात्वयामांना

आ नाख्य प्रार्थनाविप्रलब्धं॥ स्थितवचनगमनानर्थविदितानपतितमावर्धर्मविशुद्धसत्वं॥ अपहतात्मदर्थागुरवे स्क्रिद्धीयैर्वनगमनतातिसूरवः किलावल्ल॥ अवगमितमनाश्च वा
धिसत्वः इति निपतितां विनयानतमनमन॥ उपनतविषयहरत्नापि बगावनगमनाधिनिवर्त्यां वभूव॥ वनगेऽथ वनवनपि वाधिसत्वाविषय सुखव्यसनापनीतसत्वा॥ भूत
यतोऽथ ववनान्तवासनिस्त्रा प्रशमनपैकविततानिरता हवन्ति॥ तवनेऽथ वनपिता धवल्कगाढ दयैकनिवन्धप्रयाणा॥ स्वगनुमपिपन्नार्थ मूलके नित्यप्रथपिजनप्र न
यंतरवधुयन्ति॥ अगतेऽथ तवनं वनंवनुल्यं जगादुपजीव्यविहितविस्मताहां॥ अविकलतुवनायकानप्रशमयक्षेत्र व्यवसायमानधामां॥ वनितमभिगतोपमा आतं नदि २७३
वितया स्यनूगन्तुमीश्वनाताां॥ एवं सबाधिसत्वास्त्रवनाश्रंगतमसमर्थितं॥ हितार्थे सर्वलोकानां धर्मार्थिनमसमादद॥ ततः स विप्रमादृय बाधिसत्वः समर्वदत॥ यथाथि
नथितं दत्वा प्रययद्वनिजालयं॥ तत्पुर्के दे समादाय ब्राह्मणः स प्रमादितः॥ दत्वाज्ञया निर्गतश्चैव धर्मश्राय सूदावनत॥ ततः स ब्राह्मणः आगत्वा स्विदशं संप्रमादितः॥
प्रगत सर्वप्रहृष्टकानां व्यवदय सूनार्थितां॥ ततः समर्थितः सर्वश्रुत्वा गतं प्रमादितः॥ सहसागमतामत्वं नपंडसूं समायय॥ अर्थितमत्ता समायाता नृहस्ता स

कानृ सानिविषि २॥ यथाशक्तिवाञ्छितं दत्वैः समस्तजनसमतोषयत्॥ प्रार्थनाद्यधिकं द्रव्यं लब्ध्वा सर्वेऽर्थिनोऽर्थिनः २॥ तस्मै तुष्टा निधिं दत्वा भूदानस्वालयं ययुः २॥ सर्वतस्त्यर्थिनाग
त्वा सर्वत्रापि महीतले॥ तत्कीर्तिं समुपाख्याय सर्वा स्त्रीका न्यवादयन्॥ तत्प्रदानमहत्कीर्तिमर्थिभिः संप्रभाषितां॥ श्रुत्वा सर्वर्षिराजाना विस्मयं समुपाययुः २॥ तत
स्तुते श्रुत्वा सर्वधर्मकीर्तिं समवोधिन २॥ यथाशक्तिप्रदानानि कृत्वा स्वकं जगाहिरे॥ एवं सर्वपि लोका अशं प्रभु सत्कीर्तिं नादिगं २॥ संस्थानधर्मसम्पत्ति कामादानं प्रवर्धि
तं॥ तस्यैवं तद्राज्यधर्मसन्नतिमाकर्ण्य सर्वनृपास्य स्वकादेव निविकानद्द २ सहसा तं क्रोर्यहिंसानर्थिः॥ दृष्ट्वा मौलिमिवाश्चर्यं निर्जग्मुर्योत्न्वा तदा तं सर्वे वक्रु स्तव नवा सूप्र
न॥ तस्यैवं तद्राज्यधर्मसन्नतिमाकर्ण्य सर्वनृपास्य स्वकादेव निविकानद्द २ सहसा तं क्रोर्यहिंसानर्थिः॥ धर्मधाकीर्तिधवलां सुविश्वजनमालावन्दू दूत्यसप्त कितां पृथिवीं स
साधिष्ठीमृषिघ्नीधमालां कृशान॥ तस्मिन्नृपं समुन्नत गाविनयप्रपन्नं संप्राप्य ताश्च सविहीनमपूदानपूर्वं २॥ धर्म नृत्यार्तं श्रुत्वा तस्मात् प्रावर्तकं तमसमं नाप
साम॥ एवं समनृपतिर्दत्वा वाधिसत्वाहितार्थहत॥ जगद्धर्ममयं कृत्वा तस्यो विनिर्गुरुरवचनन॥ एतत्पृथ्वी नूलवनगदार्सर्वत्रदेवात॥ त्रिनत्ते स्मृतिमाधीयत्स्वा दत्तं वि
२॥ एवं समसर्वनाक्ष्य वाधिसत्वाज्जगद्धितं॥ कृत्वा विनिर्गत्तत्वं तस्योपालयन्तूपुत्रस्तुजा २॥ ततः कालमश्रुत्वा सामं बाधिष्ट समानस २॥

च्या

सन्नधी ॥ अस्मत्स्वस्त्ययनं वक्ष्ययमा मितिवादयन् ॥ कनकमणि विनिद्राविशालवक्षाः ॥ नंदमल नुमना हस्वकंगोत ॥ कनकपतिघपीनलसवाहूर्द्धेष ललितक पवि
क्रमानयन्त्र ॥ कृहत्कत्स्वस्त्ययनास्माकं सर्वेष्टदयाभक ॥ पुष्यानुभावतो हर्तुम वैत्राधीतिवृक्षता ॥ इत्युक्ता थमगोपाल ॥ सामर्षविस्मयान्वितः ॥ तान्सर्वान्क्षिप्त
मालाक्षपूनन्वमलाषम ॥ आवर्यमिन्द्रदयमहो श्रीमेत्रीवलानामकगत्रमिद्ध ॥ हातानयूष्माहितृपानकीर्ति ॥ कथंतदाख्यातमहंगोत्रवनाय ॥ एवंप्रकाशोन
पमिप्रतावः कथंनृव ॥ श्रमनयथं नयात ॥ अन्यत्कुत स्वादथवाऽत्राधिलवल्लविप्रयतानन्द ॥ मल्कगुणान्वेषणविक्रुवावादसंजनोमा वक्रललाला ॥ वि २११
वर्जितालोभ्यपविक्रयाद्वाकीर्त्तिनमक्ष्यस्वस्त्ययनाम्ययता ॥ यद्भुतकान्नानमलगदेवार्हयमिहयाकस्मूनमद ॥ महामाश्रर्धवल्लविश्वगवक्षहडमालीक्षसमा
वनद्धं ॥ इत्युक्तम नाक्षिप्तः त्वामर्वतिप्रतिविक्षिपा ॥ तयप्तेवगोपालेममामनस्त्रैवमद्भुवन ॥ तउभेडामालतर्कु ॥ किंप्रलापानिगपता ॥ यदत्रमानृषान्यका ॥ प्रमद
नानहिंसितुं ॥ किमत्रधर्ममाहात्म्यं किं स्वास्वस्त्ययनाविधि ॥ तत्सर्वमस्मभ्यमाख्यायसंबोधयितुमर्हसि ॥ इतिमे प्रार्थ्यमानः स गोपाल प्रणिनंदितः ॥ सर्वाक्षा

रूप १

विस्मयापन्ना स्समानाः स्वेवमब्रुवीत् ॥ स्वमाहात्म्याधिर्मप्राप्तः प्रतापवान्सहीपतिः ॥ सद्गुणयस्थगविश्रामसया त्वोर्मसमासतः ॥ मैत्रीकन्यवलं धर्मात्र सर्वलस्ताचान मात्रं वलं ॥
नाम्नो वलि नृपेन्द्र वाहस्यनृपं सम्यक्स्वर्गगं यज्ञमि ॥ धर्मकस्य नयानती तितिक्षमि ॥ प्रजार्थमर्थः सत्ताभिता धर्मसयापि द्रुंजैनधनगर्वं वनालभ्यते ॥ एवं श्री सरु मां धन दस्या
म्यस्माकं नृपाधिप ॥ तत्रात्र मंत्रिणा स्वविदूतं न च नशक्रुयात् ॥ क्रियतां हे गुरो न्वक्रुं सत्ताभिधा सत्पयान् ॥ यदि वा स्वेकार्थगं दृष्टं पूर्वं गत्वा नृप पश्यते ॥ तत्र दृष्ट्वा तवे
न्नास्मत्स्वामिं सं गुरुविक्रयम् ॥ प्रत्युक्तं समूपालास्तं तदा सत्यपुत्रत्स्यथ ॥ दृष्टितद्रुकं साकस्त्री सर्वतनृषिता सया ॥ तस्थापितस्पूर्वं गत्वा तं नृपेंद्रं दृष्टं मीधिन ॥ ततः पँवा
पितयज्ञादध्यनात्राङ्ग या क्रमि ॥ सर्वत्रापि महात्मानं पश्य मा या ॥ पूर्ववचन ॥ तत्रानृप्रवचनकर्म सर्वत्रापि गुरुता सर्व ॥ निश्चयसमस्थितिजन्त्वा सर्वान्लोका त्प्रमादितान्
॥ यवलितार्यमर्यादा स्वधर्मान्नृपावितिः ॥ श्रीसमृद्धिसमायन्ना स्वेष्ठं वर्वेसा स्मृतीसिन ॥ प्रजां स्पृ संप्रदारुं धर्मवर्जुं संविता निता ॥ सत्यप्राप्ता हितार्थिता स्याँ
धिगुणलालसान् ॥ नयमिसगुणाञ्जिफवान्नानितिथिवत्सलान् ॥ सूनं कान्यावकाश्चप्रतिनयकी स्पर्शि गुयासृतीयो ॥ पञ्चमाना स्वमस्त्रास्यान्ददतीमंगलाभिषे ॥ सूनकां

ले २

श्रा छ मया कृता भक्तिर्विष्णुस्तथा श्रुतम् ॥ ४६ ॥ क्रोडेवनृकामो गंतुं पर्वतं प्रसादयत् ॥ स्वर्गादितमृतां गत्वा महासाधवालयं यथौ ॥ तत्र स पर्वदासीनः सर्वानंदया समागतान् ॥ एतच्छ्रुत्वि सम
त्वा यत्प्रसादस्य प्रबोधयत् ॥ तत्र श्रासो महत्तस्त्वा वाधिसत्त्वाननाथिपः ॥ विद्वत्पुत्री काऽऽगताय यो स्वमालयं ॥ तत्र श्रमतिर्तिर्दत्तु नमो दत्र समन्वितः बौद्धमार्गः पुनस
र्वं लोकेन तुं प्रदायत ॥ तत्रापि वृन्दमानानामौ त्रिकृशौ वन्दितिर्मुदा ॥ कृयमानः प्रसक्ता मासगयांव समाधाय ताः ॥ तत्र तत्रापि सर्वा स्त्राम्य धान्यन्ति ज्ञानार् ॥ यो निकाय
समासन्नुसंपश्यत्वं वमाधिनः ॥ कानामलोकन्ति विलादनः स्या स्कं धनेर्वार्थिकाना प्रियातिः दिव्यपूतावनयंनमस्म प्रदानपूः अध्यनमभीष्ट ॥ सुनकारेलानाचित
नियमांश्चिमानि देवसमथाजनपि ॥ विष्णुरूपमत्र क्ति एवमर्वदिस्यं सहूनपतिलोकयामि ॥ यत्नानुकम्पा विनम्या किंकामाद्यात्पुनः कारूद्दयास्ससपायः ॥ यस्मानुर्घव
कृनिहं वदन्वाप्राप्तं मया दिव्यविद्धवत्कृः ॥ एतद्धि दित्वाभिवयः प्रधाने कोरगतवो र्थस्सद्दलीकृतघं ॥ लोकपत्न क्लिन्नित्यवपंथाः कीर्तिप्रश्नसप्रमोदयस्मा ॥
धनस्पतिः सावलयाः समाना यदीयमलोकहितात्मृहत ॥ निधनतांयातिदिदीयमानमदीयमानं निधनंकनिष्टं ॥ नाहं त्वमादिष्टमूर्द्धं विकामिनास्य सर्वं भिवयम् २३१

स्थिति ॥ विहृत्य दानानि च तानुत्तमानि हि कृत्वा मम स्वं प्रभवन्तु ॥ सद्धर्मसंग्रहबलात् तथा वास्तु सर्वत्र ताभ्यः स्वपि मंगलानि ॥ वन्तु ॥ सम्बुद्धगुणाम्बुनस्तु ॥ सर्वत्र दास्यन्तु हिता
र्थकामाः ॥ एवं मनोजाम् विर्न शुभार्थं सर्वथैव च सर्वजनां शृणु स्व ॥ प्राणातिपात मम स्मृति मादध्यानां विलय दर्शिवभानुनाह ॥ स्वर्गी सुखि स्वामसंगाश्चिरार्थं सर्वाधिचिर
प्रवर्तनं कृतार्थं ॥ सर्वाश्च दानान्यपि बोधयित्वा सम्बोधिमार्गेति नियुक्तमस्म ॥ एतत्प्रभृत्युत्तमादिसर्वं कृतं मया यात्सुखाय यत् ॥ तत्सर्वान् यतितोऽनु कृत्वा सम्बोधिमाप्तुम ॥ यद
वं तथा वान्यपूर्वं सर्वसत्त्वहिताशय ॥ दत्त्वा स्वदेहमपि प्राकृतान्सद्धर्मसाधनं ॥ तदत्यपि सद्धर्मगुणवाक्यं च ॥ स्तुत्यस्य सर्वदा ॥ प्रजा
पिम त्वा नाज भवतु सद्धर्मसाधनं ॥ प्रवर्त्यं बोधिमार्गे सुनियुक्तया तु सर्वं हि ॥ एतत्सुख सर्वदा ॥ कर्म बोधि सत्त्वानां पुण्यं बोधिसत्त्वाः स्युस्तथा ॥ इति त
नाहं तादिष्टं कृत्वा कः सत्ययति ॥ गत्वापि प्रविहृत्य प्राप्य नन्दन्तु स पार्थिवकः ॥ यथा यथेदं शिवीनां हितं तथैव दानानि दत्त्वा सर्वाणि प्रभृति ताः
दयायत्र सद्धर्म कामाः ॥ तत्सर्वं बोधिसत्त्वाः सकलगुणगणाः सर्वसम्यक् सम्मताः कृत्वा सद्धर्मकार्यं दशबलगुणवन्तो यान्ति वाणी प्रसादात् ॥ ॥ इति श्री

दूतानामलाक्ष मूर्गाय मन्त्राय स्थाय नीपुंसमू पद्मनत्वा ॥ नीलाञ्जसमन्क नर्याचि नाघ्रागामकन्तु मदकुदवं ॥ विप्रक्रिमयं सभूधागताभिहूगदूकथकनविरवदिव मा
विदूहितुनार्द सम पूतक्रत्रदिक मिरवं गतूधादि जात्रा ॥ एवमहीपालवचानिशमा सद्या [illegible] कार्थी कृपा [illegible] निलानी ॥ तंवाचिमन्तं समसौ हूधीयंद लाजधानी वंवनकं
गमद ॥ यत्र सर्वदाना मघ्रविप्रमिजाद्य अथना मानवलोकपाल ४ ॥ कौशामसाहू गछवाम्निगमप्राप समाकोचिन मीघमा ला ॥ श्रीमामद एवय मनातुवाधां वनीप
कानां मववच्यूयक ५ ॥ तमवर्दकं व्यपदिश्य माधू मन्यत्रनोन्नगमवाधी ॥ तक स्ववववन्न नामकुपाय ६ ॥ नाश्रय ॥ सावक थमन मनस्व मम्रु ६ वपवनीदक ॥ मू
यमर्वा विनिन्वा दीर्घमू मूं व्रनिर्वमन ॥ त्राह्न तंतं समान्नाक्ष तपाइस्थ्रे वमव्रवीत ॥ इपाय थिन्यतामन्या छिजय ७ पाप जान्य ॥ जष्टे ध्यर्य स्लगयमसप मववं तंमा
थितमं ॥ गद्द कं मदिज ८ ऋत्वानिनाग ॥ दंन्यमानप ९ ॥ मदमा निघमनं तूपांपवं समोदमायथो ॥ आश्राघर्यम श्चैर्या निहृदयाविप्रम जिवा ॥ दादितां मादमायाति
दत्तनायनकेनविं ॥ इदस्य मवाधिमन्वमूमनि वियुकलोंइं तं ॥ प्रमिलक्ष्मस वेम धर्म मातश्चवमव्रवीत ॥ कल्पवाघिप्रमी कानां मवदा मासहक्ष्य ॥ मदमवं २७०

...कानन ... प्रवाच ... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ १

ददर्श याज्ञां मातृवत्स्वमिमं द्विजः ॥ स सर्वं ददर्श नाम कथं कदाचाय समव ददर्श यमिमनः प्रमुमुदे ॥ यथार्थं मामाशु धुनाम विद्याम ... दात्वा गमनाय सुवदन ॥ सज्जाक्ष पुराणी वा
... ॥ व ... ददर्श ... सर्वा ... पयिष्यति ॥ ... ॥ ... पथा ... मिथ्र ... मनी
... कलिन यथा स्यति ॥ ... मिमांसत्रं ... ॥ ... ॥ पुनितिनृपस्य
... ॥ एवं ... ॥ ... ॥ एवं विधं पितिनृप
... यान्ति ... कार्य ... ॥ ... ॥ ... दद ... मा
... ॥ ... ॥ ... ॥ एवम
... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ...

आ

दकेन ३१ ॥ ततस्तं बुद्धिपरीतात्मवन्तिनम् गाः शिरं स्तनकम्पनं ॥ दृष्ट्वादिश्यननन्दु सखीजनाम्रसमाकुल ३ ॥ तत्प्रहृत्यं यथा तं सर्वं नाहान्यवदयत् ॥ ततः सर्वह्वानीनि सम
मनुष्यानृपा ॥ पश्यन्तीं पापिनं दृष्टं निन्दयन्त्येवमब्रवीत ॥ धिक्त्वां पापिष्ठ क्षेत्रास्ययदीदृगपिष्टं कुर्म ॥ दृष्ट्वान्ययाकन्याथिर्त्वं गन्मानिष्ठ पूनासम ॥ वृक्षत्वं समस्मापापिष्ठ दुष्टं नारी
मित मूर्खं ॥ यदित्वं गच्छ मन तावद्वाक्षातयामिहि ॥ दृष्टिनाहाम्रमादिष्टं तत्वाम ब्राह्मणं धानमः ॥ श्रीतार्मतां मतिन्नास्तापयानतु विमूर्छित ३ ॥ ततः दुष्टा समसम
त्वादयाकानूध्यनादिन ३ ॥ तं द्विजं सहसा कायघं तं तपभवमब्रवीत ॥ नायनायं मरी दृष्टवन्धनान नमयत ३ ॥ वहृ्वानमनृपानीतागतवधीत्साधनाम्या ॥ ततः स्तद्दुष्टं संनाभि
पृथीयाम्निं द्विज र्थिनि ॥ दुर्यं य स्थप्सिंतं दत्वा पुनयनं स्वपालयं ॥ दृष्टिनतद्व काकस्त्रीनाज्ञामविस्मयाकुल ३ ॥ कथमानन्दसमाख्यो बमद सीस्ब्रवी त्पुन ३ ॥ दृष्टिनतनाधि
तं प्रत्वाबाधितृ ३ सहन्काति ३ ॥ सर्व मनस्त्व हकोनं नाहाग स्मेन्यवदयत ॥ सविस्मत्वं गतास्त्यातं निशं स्यसंनताधिप ३ ॥ सहा विज्ञमिनिद्राक्षासा कृलि ३ मह मानमत ॥ वन्धना
निर्त्वर्यत स्य विमुच्यैव ससादनात ॥ स्यासनतं पुनिष्ठा स्य प्रदत्तैव मक धन ॥ प्रस्तत कि तयामानृपं गत्तूप कर्मणि निशयावस्थानमगत ॥ प्रथयतिसमास न प्रधाना वंहमान २१२

८२

स्वर्थमानतेः विनाहि ३॥ यद्दिनं ऊ यिनुं प्रजाः सम १ थीन्तपनजन्तहि क्षन सन्निव त ३॥ गुरु यत्न निश्चलभवनाआ विधु १ यानकू यिनं अगन्नशक ३॥ वन्नु आधियय थपूनापूर्न
वयमान्नुप्रव शाहवविक्षनां ॥ विनयाद्य स्तनंवन ३ ऊपथा २ स्तवलनिप्राधिन लावन ३ समधि ॥ आनप्रमादमथनंतपाति विदित्वापात्री स्त्रार्गसव निनस्य सर्वाभिमसत्व ३॥ मि
च्यं विनीत सिद्व ओनवतानगमंप्राप्यवनीलजलदरूनधिन्नु श्रीयध ३॥ श्रामूर्त ३ामविनविनानिनावलकांपसादवनिधिक स्त्वाम्नूविन्नु ३॥ संगा ३ प्रियं ३ सन्नु विद्यानानि
का ३ संपन्नधाविधनिश्चामं मविधाविषका ३॥ कोमामूर्ले विनथहि निधसः नामा ३ किंपाकयादयद्रूलप्रनिमापतागा ३॥ ने कोन्नात्यविनर्स मतर्यसर्वं नार्घं प्रमादव
धवस्थनतिमिलतर्थं ॥ तस्मा द्विपाकसधूनाशिवनूच्च निर्यकर्मा तिसकू नमनाद्विनिवन्धनानि ॥ १ याकाकूं कानन मूरवामृ विपाककालयथांवनि ३ प्रजहीहि तानि ॥ ना
र्थानास्नसूवे ३ पूनर्मभवलेविकून नोश्च सिकेर्वनायास्नविधाददैन्यकलद्यनं ३ पनप्रस्यये ३॥ उन्का यूं जनयतीयक्षि शिधना ३ संमकू क्षनाधना ३ पूष्यालम्बकदन
पाद्य पवनग्यामायकन्ता ३ सिवा ३॥ दनिनद्नूल विलफ ल्लिम्बलघालनीयानियसिन मितयूष्यादोनियालक्रनाना ॥ श्रयस्नतिवलास्नमानसंकानना नाक्रिगितूपन

रा डि॥ सेवास्य नक्षायनमाम्र तस्मादक्षांमि हर्तुं नविम्रतिनत ॥ यदप्रयत्ने नधिगन त्वो कृतंजा त्विम घामपिल यहर्तुं ॥ मिथमूमाला क्षप्रतिहिन्निताम्या॥ संदिग्धविकावस
मृत्नवं॥ मार्घान्तृ विर्त्तं किमि देवयंय क्क्नाककम्या प्यपहर्तुं माऊ॥ कस्यानूनावा दिहतडुते घामर्त्र्यो शूर्मम्न मुवमा तेवनि॥ स्नूस्न मुतावप्रति घातथाम्यावि घा
तयृ॥ सिद्धिमया विल्लघा॥ नमक्ति नघामथवाघसर्वे व्यर्थ तिक्षनत्वम्नूघागता॥ घा॥ [illegible] क्रामतिलं कालीन [illegible] नाहपनाक्रमा॥ [illegible] र्गाकाधा त्रिनफा क्षय
सर्वतस्त्वं विघा दिता॥ ततस्र घामृघायहू एक वांजाहनात्तकष्ठ॥ तान्सर्वान्विपन्ना [illegible] त्वं वमपालयत॥ माधान्तु [illegible] येदस्माति नाञाहर्तुं नशक्रत॥ तद्वि २०३
ज्ञनृपमोक्षयवनसही हसामुर्त॥ [illegible] मिराडूक माक [illegible] सर्वतेप पिवाधिता॥ ब्राम्हणनृ यमाक्षयवनृस्तत्र वनागत॥ ततान [illegible] त्र्य सनामिं दत्तगृह पालकं ग
वां॥ सखाच्छ लतवामूल क्राथा माभिप्रम्पमं छ्विनं॥ मायानर्के स्वामी नंपृच्छमाला विहिघिनं॥ दक्षिणपार्श्वे विन्यस्त गीहृ पनगृदत्तकं॥ प्रक्षित्रे विलासनगत यनं
स्वकृ यामूसा॥ नक्रूवर्द्धन सर्वन्तमकाकिनंस्वरवक्षितं॥ हृततस्तं समालोक्य सर्वतेविस्मयान्विता॥ सहसा समृपश्चे नंपश्यता एवमब्रुवन॥ ता [illegible] घालात्र

=वकृ१ =त्रिन२

१०३

कान्तानदुर्गमनिर्जनवने ॥ एकाकी विचरन्नत्र वने विहग किं वद ॥ इति तैः कथितं श्रुत्वा गोपालः सविस्मितः ॥ तास्सर्वास्समुपालोक्य प्रहसन्नेवमब्रवीत् ॥ स्वात

त्वयं हि तत्रापि नास्माकं विद्यते भयं ॥ नात्रावपि दिवा किं वा सर्वत्रापि कदाचन ॥ इति तैर्नादितं श्रुत्वा तास्सर्वाप्यतिविस्मिताः ॥ स्वविनेतं समालोक्य पुनरेवं वदाधिये

॥ नक्रूयता किं तद्वता कदापि यत्तत्त्वयका ऽ पि स्थिता मनसा क्व ॥ नात्रो दिवापि प्रवन स्यन त्वं दुर्गे वनास्मिन्विजने समं दास्ति ॥ सत्यं यत्स ऽ ध्यापि हि वर्तमाना विधानयः ऽ स्वस्त्यय

नास्ति नापि ॥ यत्त्व ऽ कथं विद्यते विभाऊ भाति ऽ गौर्यादिवत्सततया पिलाक ऽ ॥ मत्वा नृपद ऽ पि स्थिता मनत्य ऽ कथं तयंतक्विनेनाक्रमस्य ऽ ॥ विविक्तगामी सत्यानकं घ्न महाय

हीनस्य वनान्तरं घ्न ॥ इति ते गोदितं श्रुत्वा स गोपाल ऽ प्रगल्भवाक् ॥ तास्सर्वास्समुपालोक्य प्रहसन्नेवमब्रवीत् ॥ भवत्यः स्वस्त्ययनायं भक्ताप निवालयेत ॥ दवबन्ध्येन यस्य

कार्यं किं न्यून ऽ पि स्थिता भजने ऽ ॥ ममन गाह क्रूरवान ऽ त्वं नात्रावपि यथं दिवा ॥ भवनात्तत्त्वं वदे कापि निर्हर्याद्विवनास्पदं ॥ इति ते नादितं श्रुत्वा सर्वास्ता कौतुकान्विता ऽ ॥ सा

दनमनमालोक्य पुनरेवं वदाधियः ॥ तदेतावत्सदा त्वाहि कीदृक्क्व स्वस्त्ययनं क्व ॥ यतस्त्वं नभवन ऽ त्व नात्रो दिवापि निर्जने ॥ इति पृष्टवती ऽ सर्व ऽ गोपाल ऽ सम्प्र

आ प्रभादिकृष्णान्पतिं तं महात्मत्वं समासमन्युवसादितम्॥ यत्त्वं सर्वदिग्लोर्थिनद्भासिनयनच्युत॥ तद्वनं वद मायाभिस्तम घ्नयादिकृमि॥ ॐ ऋषिदिष्टं तन्त्रदनिलमध्यमनाथियम्॥
पांचालक्ष्मातिलिन्नामध्यक्षमक्रमेवा मत्रवीन्॥ प्रतगर्भं धनं लक्ष्मकिं मत्वमरदुर्लं॥ अस्वतावास्त्रिमानीभमूष्णनवादिनावम॥ कृत्वाधिपर्याप्तमनात्र आनिर्वृत्तिप्रमादा
धिकलोचनाभि॥ मृत्योनिपत्यामिनयात्रकानां पतन मम्दं धिगामभन्तु॥ ॐ तिनाहाधिगं कृत्वा ददनाशानिम्नितथा॥ ननन्तुगंमहात्मत्वं समासमन्त्रेव सादिताम्॥ मूलमल
मनमंवृश्यवमायनमंतृप॥ मनोत्र वहन्नन्यवंप्राप्नुवन्निहवालय॥ अपिवस्त्रांमहात्मा नाकावत्यक्षमिकान मं॥ तत्त्वान्मनूपाख्याय सोवाधश्चित्तमर्हसि॥ ॐ मामवक्षोगमि २३४
नस्ययाश्चके ४ कथंनृगसंपुदितमप्रमानसं॥ प्रवक्ष्यालावदूलं विगृहितुवंजत्वमम्स्वप्यनीयकायथ॥ ॐ तिगउकृमाकमूर्नृपतिश्मातिलक्किते॥ तंमनन्तुसमासमन्युपूनव
वमन्यायग॥ निर्वर्त्यातवेगः कायविकलकधि उमत्रनथा॥ तच्चापितापदवन्द्रयस्मसमनःसमीहितं॥ तदेववेगर्भिवघोवकानांववां मियाक्षेत्रनियता कृत्वावि॥ स्थानीमं
यातीवमम प्रियाहियश्रातश्चदद्रुममेकमस्ति॥ ॐ कमाद्रयित्पम्यमस्य मस्यानूतावान् कमातृतावाम॥ नीलोन्पलाहंमदृविशुद्धकान्तं प्राप्नुवन्हदकमूदानमस्ति॥

तस्मिन् सुरनररूढि दिगम्बराजा इह स्वागतद्युतान वनं सलोकं॥ तं देवराजं वपुषा नमन्तं पश्य सुदामा ऊर्लिन वमाद्॥ यश्चापि मां वहनया वर्गे कं गतस्त्रे मृदाह्न नयन प्रदाय॥ श्री सुरसदे

कायप्रमतिर्यथा हं हिती यमप्यङ्ग्रिमभ्रमसारु॥ तत्थादिमान नोव भतस्वमग्रवज्ञः पृथ्वथ वलानूलावात्॥ विस्मयं इमान मिव गन वाङ्गिप्रभूनर हरुवनु विहितीर्यं॥ गतः मनाज

पुतिनश्चनत्र१ प्रद्युम्न यस्मा तिप्रनीहनास्य४॥ पश्य स्वमनान्य जितनिन्दितास्माव प्राजपूर्वे नु निवाधिकार४॥ गदाव कथ्य सथनाधनावता न्यती स्वबला प्रमसान सोम

न१॥ प्रमकगान्तीनमनाह निः स्वना२ प्रमस्वनूई नुलथादि वीकमां॥ प्रमांस्तमं दह१ सेववपूर्दिशां नवा उत्तुग्या नव धीव राह्वन४॥ पवित्र मस्वन्दनस्य पूर्व ऊर्ध्वं

यपालविप्रं हस मनक मलान॥ मनायम्य विस्मयहस्तलाव वा दिवीकमत्प्रमहास्न नाश शा४॥ वधामनाह्य स्वपु द्य२ सभीन१ या मनसस्य धीमग डाँ वह मंत्र॥ उदी — सं२

विनाहं घघै नीलभान भेभिरस्थि तिन्नगत्यो१ मविस्मये१॥ नयस्यक्रमां ति मसवाश्रया२ ममनाग तत्त्र विरतिन२ गुलो४॥ गदामदवजा पिन दृष्ट्वातिप्रातिनेन्दित४॥

मा पुसा श्विति मनसाध्यमंत्र पभवमत्र वीन॥ नमनाविदिकानाज न्मव गुवाभयानेय॥ एवं तत्र लिदकम मथ मजयननप॥ ममनाथ्रागन भैर्भसे नपिमि नमस्का र्व॥ उ

प

स

श्री ॥ ति ६ स्व दादिवप्र धामसान्नतानि ३ ॥ सदीनु का नी विपन्ना अनीलाबालाय नमसमदन्तु ७ ॥ स्कर्क अर्था मकर्णनु कालिप्रमर्हि बकादलप ज्ञिवाहि ॥ मलिवीन्क मायासन्नुपा
तिनमम मनान्नि या ये मदु लाड्र यानि ॥ विवकन्ध्रीति मरवान् द्र लां निमर्गबर्यामदना नक मिं ॥ निनी स्नु मायाः क्रिमिपः प्रदर्ष क्षगानामम गा ना मर्गा विकान ३ ॥ उ दी स्नु
नेमक निव प्रि क कामनाहि ना मा ति मकानवानि ॥ अनुकम क्रोऽविघाघद खांनृपक्रियं मिपदिर्क्ग ऊँ ॥ कामा विपर्यामम खाति मानप्रमक ज्ञि क्रा क्रि ति पा
लम्ल श्री ७ ॥ क वेवचमा विनि वन्धमानि मानान्पन व्यान्नयिधांमखानि ॥ अनर्थमागात्रय द्रयिमायनमाक्र नम्मेऊयि ८ नाम खाय ॥ विघमञ यम्नि मनमन प्रद्वन्ति २५८
क पाखदत्वं विद्र घांव्रऊ नि ॥ अवनमनिर्वे वीनीयाधांड मंमाऽनाग्निति ६ क्षगपविकवणीम माया ३ प्रमानानमोद्य वा ४ ॥ दनिदपूनिमा ६ मामाहदेनि मि ने ६ मं
निप ६ मिवा क्रितिन्नलपति ३ पश्चद्भग नमिंमलिनामिषां ॥ विगथविषयक्राआत्ममथागमनीममंहृदयममनी आनीः र यवनमिं कथमप्पति ॥ मकुनननपति र्या
श्रा न्कर्षं प्रलावपचित्रनाहि मयविमुख ६ प्रीतिंतऊपनांविक्रमंवन ॥ प्रह्मा ति वंपलानेकायार्थनिदान्धानखल हृदयंनाह्रनार्थं दनानिविलप्य ६ ॥ अपगापमन ६ मं

... भाषा ... प्रतिपादितं ... ॥ ४

॥ श्री ॥

क्रमनांवनान्नमृगयमृगांतवधिन्नमकांपूर्वाभ्यासान्मतिः प्रयुज्यते ॥ दधिदाववनपाकुत्र यान्नाः मन्मक्वलनिर्मवा ॥ क्रमप्रसवर्णोविवधवाणमकनक्षिप्रपादयावा ॥ प्रदित
विलक्षाश्रुवी विद्युध्वनिप्रतिनादिनाम न्मविनम्रदेकस्यादधूः ॥ निःशावनमनाजयः ॥ प्रजमविधूनं निशीदगप्रदगहन्वानक्षविषयमनूनाव्यामृगानांदनापमिप्रलखं ॥ उ
पनगञ्जनक्रीथयामप्रकाममव्वनवुजगिन्नमनः मदाः आर्गि कूरकार्यममाकूलं ॥ एवंमनाजापिवनेनिमः कुवि विक्रमव्यानिमग्वानिजु क्रा ॥ अन्वात्रिनन्नं त्रि
जलयनाम॥ जगाहितार्थीव काेममाधायपविनन्दिमा त्मा ॥ नृपप्रयाणविधिनपविग्रहान्विसायनाक्षं मविवासमन्नग ॥ मृपप्रमानानन्यमिविषादिनागगः क्नाक्रतिवि
गर्थितक्विनं ॥ करिनिपुत्रकम्लववर्षेनिविदिनं ... वामननाजामनमक्विमिन्यये ॥ मद्राक्षमाक्रमयपृनतदालयनिधीश्रुपोवान्विनयन्नपाल्लयत ॥ नदाहिक्रान्यातिदवि
द्रुतःख्वीतदुःखवसानिप्रतिकर्तुं काम ॥ सर्वत्रनाकपुत्रमन्मनाःथेदूराघ्यनामा श्रमनानिलाघं ॥ तस्यप्रदां कुर्वन्त्यमः प्रदानकीर्तिनिक्षमप्रवनन्नहर्षः ॥ यथाक्षि
नाघधनमीकुयाशुगइन्नमागकुमुदावधान ॥ तंमार्गेविजुष्टमुखधिकान्नायिधासिनः कुन्यनिनापदव्यः ॥ पवित्रमक्लत्रजनेनृपस्यगर्वाधिमन्वमम्याजमामः ॥
सर्वागमुमुत्रितोः सर्वेनिः ... महा ॥ भाजन्तुः ... भूपविजयरत्नेति मृणते ॥

जा नं ॥ एकत्र पत्रार्थप्रदर्शो यदहं समस्तदन्यत्र पत्रमालहेवा ॥ मूलार्थोवि कृपयं वनिगंतमानां गुरवस्तूक्ताघपूवसादनाशां ॥ गंधाधिसत्वं विनिवध्यकारंपश्चादुगंबोनमिवधि
आनि ॥ समावकर्षप्रक्रमिप्रगल्भी निवार्यमारवा वनदवनाहि ॥ माक्रादयं धर्मस्त्वावगीकू रप्रत्नानवाक्रायमनाविकान ॥ दिमाधमनाविनयावल्पकृतनकर्ष
क्रियतमहर्षि ॥ सुभीनृदनीवविलालपकृवा श्रमत्कपुष्पाक्रमूरवामहीनुरा ॥ वलद्विनहृध्यनिधीननिमवनापियपूसानामूनिनामन धत्ता ॥ मुदुर्लतंदर्भन
प्रस्य सर्व [illegible] विलावनप्रीतिकनस्य दहिनां ॥ विलपूनिकृमगरमाककामनाव प्रगाहरमाकामूनधावनोकामव ॥ ॥ [illegible]यविप्रा थत मार्यसत्वंनि २७१
सावंसानाकूलधीन वस्तं ॥ प्रवक्त्यामासपूर्वसयस्मिन्महीयतिरनिधतिगत्तयत्र ॥ यमडाकूर्नध्रेरपूनयुवगयर धारविकन्येगजाकम्मानरुंपतिमिवमता
धीननवर्पेति ॥ तमिवापरधंकारयनवसगगंवकुलधर्नमूर्खे रमाकाधामक्षिमिगप्रनुपष्ठानानयने ॥ तमकवानरगतिंकनकावयागंप्रांधुंमधूनमिवलकूध
नलविप्रं ॥ विनामवबंद्दजिनदीर्घरुदाकलायं दस्थानपानिपूनधीनयावकप्य ॥ वद्वाहिंअनेवमूपानयनांदूनाकमा [illegible] वनवाधिपासो ॥ आगमसंकायनिन
९८

कीर्त्तिकायां च विनायकश्रीमिति विलासस्तु हरिः ॥ कान्यकुब्जे कनकमिलानलवानुवजाः कामोदनात्रजगहोगविलस्विवाहः ॥ प्रत्यादिश निवहः कार्यसमाहूतं तां प्रापाम व्यापि विन
यप्रणिप लिधीनः ॥ धर्मविवी ठुष्कवृविग्रहवान्नृपायमालस्ववल्कलधनानयनापिता मः ॥ वसुधनाम वदेन्यविषादवत्थफजालिधिः प्रणमस्मृ दिनपीवरार्यं ॥ गतसपा
के रमालप्रर्मनाङ्घ्रिमृधानयत ॥ नृपतस्य पुनागवादमेयनवमब्रवीत ॥ जयदेव महानाज दिष्ट्यात्वं वर्धसे धनं ॥ यदयं देवनः सफलं वृद्धानीता मया वनात् ॥ स्थूलि
मान द्विजे नाकंप्र त्वाम विस्मितान्नृप ॥ वाधिमत्वं तमालोक्य पप्रच्छ तं द्विजोधमं ॥ कृतदः क्षितिगायं हि वद्धानीतः कथं त्वया ॥ सत्यमनन्तदाख्यो हि यदि मत्री निमिव कि=
मि ॥ कृत्यादि स्तनवन्द्रधत्राक्ष शशसद्वा भय ॥ तेन नन्द्र समालोक्य गत्वा वृक्षि न्यवदयत ॥ जम्बूशिरि ऋजिन व्यगपस्वी वसमाश्रितस्तान्पिव मधनः क्षितां क्षिमपि
कर्मरामतत ॥ सत्र घनवनः नफ्रू हस्त्वामया वलादपि ॥ वद्धानीता तव श्रियंतस्त्वमीदर्नेनाधिप ॥ वदमिलङ्क मा कर्पूरं सन्पा विलिगाजय ॥ श्रीमान्तं द्विजेन्द्र
तं प्रत्यय देवमब्रवीत ॥ गतं मागन भवलांबम्हमगीवाहूद्विधीपाप्य यंभक सकिमगांवनः कथिन्यास्य विवाहइमः खंश कौशपनातवं कथमनेकर्मुहन

आ

र्यकामुपाहृत्य कुर्वन् विहारनिकरः॥ मैत्र्या विनोदयन्नित्यं सर्वान्धर्मेण पालयन्॥ तन्मैत्रबलनामप्रथितात् स नृपतिः॥ तदा मोक्षोपायान्वेषी मैत्र्या सर्वान्विनोदयन्॥ दत्वा दान
यथाकामं समर्थिनः समतर्पयत्॥ पितृवद्दिविधियाम यि मैत्र्युर्वम विनोदयन्॥ सर्वान्धर्मे प्रतिष्ठाप्य पितृवद्विक्रमपालयत्॥ एवं मैत्री विशुद्धात्मा सर्वसत्त्वहितार्थभृत्॥ स
स्पृहं साधयन्नात्माहीवत्सान् सर्वदा शुभे॥ एवं स सर्वथा यदा तेजसां तस्यापि नाहं क्षमे दहन्त्यथैव॥ प्रजाः प्रजानन्ददृष्टिः ... अत्र वयनेमा समसर्वे धनेन
स्तुवन्तांश्च ... समन्तात् सर्वलोकान वदान्सर्वज्ञः॥ विश्वस्तु नृपेन्द्रस्यैव सर्वज्ञनयप्रलोकस्य हिताय यथा॥ विचित्रहृष्टप्रजा सदा प्रह्लादितः सर्वापि नाथे नवकानमस्य॥ हि
नाशयत्वान्त्यसे पुण्याक्षय पतीन्द्रकरैव चित्तप्रजाः॥ तेनैव धर्मराजेन सर्वाः संपालिताः प्रजाः॥ वर्द्धमाना महासौख्यानन्दिताः प्राणयन्ते॥ सर्वसत्त्वा धनमैत्री
धर्मसमन्वितान्वाचिनः॥ मिथः स्नेहसंबद्धचित्ताः सर्वे प्रमोदिताः॥ क्रोधविग्रहसंघोपि न दामत्र कदापि न॥ सदा विनयसांकथ्य ... एवं समन्ततः॥ एवं स नृप
ति दृष्ट्वा सर्वेषां विनयवर्तिताम्॥ स प्रमोदो ... वप्रासनन्द प्रमोदितः॥ एवं स नृपनागेन्द्रः सर्वसत्त्वहितार्थिकः॥ सर्वार्थिभ्यो यथाकामं दत्वा दानं प्रवर्तयन्॥ सु

भद्रकल्पे ॥
वदान
२०३
...

१२

उन्नीलमुद्गवाघोष स्वयंभूवनसमाहितः ॥ यत्रापि प्रतिस्थाप्य पूर्वानयकृतात्सर्वं ॥ स्वयंभूजिनं ध्यात्वा सर्वलोकानुविनोदयन् ॥ बुद्धविहारे विहारिणः कृत्वा सद्धर्मं संप्रचारयन् ॥
सद्धर्मसाधनवीर्यं व्रतान्वयन्स्वयं सदा ॥ सर्वलोकानुविनोदे च निधायसमन्ततः ॥ त्रिरत्नस्मृतिमाधाय स्वयं ध्यानसमाहितः ॥ यत्रापि पितथैवोक्तायप्रावानयत्कृग
कृतं ॥ संवृद्धियाहि मनः प्राहुः स्वयं लोकहितवेन्नत ॥ यत्रापि प्रयत्नेन संविद्यां नयथाजयत् ॥ एवं स सर्वलोकेन्द्रः स्वयं संहितार्थकृत ॥ सर्वसत्त्वमहासार्हकृत्वं त्रिप
कृतार्थविते ॥ तदेतत्सत्सद्धर्मं प्रतीवेदत्र सर्वदा ॥ निर्वृत्यात्म कुशलसाह प्राबलीनसमन्ततः ॥ तथायत्राधिवासेन पर्यवयजोत्थानायतः ॥ सहायताधिराजस्य सर्वविषयास्त्रवा
सिताः ॥ एवमन्यः सर्वलोकेषु बोधाज्ञायताविशयाः ॥ नृपाः सम्बुधिवाहानाहि स्वकानि हि ... स्या भयाः ॥ कुशलानि वनन्तक सर्वतत्र मुखाग्रतः ॥ मैत्रीबलस्य ताक्षतानि वि
षयं समृणायथयुः ॥ तत्र प्रवर्तन्ते क्षितिपयवासिनो जनाः ॥ नन्दितान्स्मृदितां पृथ्वीं दृष्ट्वा निविस्मयं ययुः ॥ तत्र क्षेगविता संवर्तघां गत्वा नृपा निवेशं ॥ आर्जापिनस्त्रमान्स्वा
धीनृपेला कुंसमीक्षितं ॥ तथन्तापियत्नेन संप्रेक्षकाः स्वकर्मणि ॥ नेवलविषयस्तानामार्जार्हतः प्रसहितं ॥ तमप्रताबालिसमानन्दपसमसमतिपञ्चेववलः वपू

आ याज्ञमूयाज्ञमन॥ यपूज्यमनननुस्यसर्वतनूधिनंमूदा॥ पीत्वामंनाविना स्नानामूदितात्रिस्मयंयय॥४॥ सुधीयमानः क्ष्माउक्तीनीकः ऋपावयेर्दम्बपृथकाश्व॥ संश्रमनूव
कौर्जलनाननमु्रःपयाधवेर्भनूत्रिवीयगृह॥४॥ प्रीतिप्रकर्षांद्रधिसमस्यावपूर्णुभदवबनास्वाह॥४॥ मुस्तानगप्रंनमूमूर्कवतः मंविज्ञियनक्ष्माउंक्कनघा॥ विनीन
तर्षाः प्रतिभादिनाक्ष्मविस्मयाक्ष्मस्यननाधिपस्य॥ क्लित्वानूवाननमभुसकौनपर्यापमिश्रवमूदाद्दनक॥४॥ सूनकद्रः स्वायतनंसनीनसुपाक्ष्मगपुधिननाधिपस्य धर्मविल्ला०४
॥ गतार्थिमंमानननसाधेनन्वंहर्षान्नृकृत्यन्दमंवरुव॥ सूथमंवांन्यिक्षावीकाउकपानातिन्दफिमान॥ दस्त्वामसमूदितानाक्षामूपिमांनसमायया॥ गतःसंस्वयमाद्दायनि २८२
भितंरवक्षमृन्स्मना॥ क्लित्वांक्लित्वाबमान्मानितथादयोयस्थपिमं॥ नसुदक्षानिमान्मानिशृहित्वागंयस्थपिमं॥ सर्वतक्षधिनायक्षावृतुक्षः प्रतिभादिनांप॥ ज्ञिय
मांशावकालंकदानप्रीत्यापूनः पूनय॥ नवमंदमनक्ष्मस्वकृदह्रः खंविमांद्रिवं॥ साक्ष्मसमांविभितक्ष्मयागेः प्रीत्यापुनर्दूनमयाख्यमानं॥ खदालमंत्वादिवनस्युद्रख
मनःसमूत्सर्पननन्दमासीत॥ सुप्रीतिमान्त्रवमिश्रवनांक्षा स्वनयंयन्वेः पिधिगतक्ष्मथमीत॥ कृत्वाहितमाममधिमानसानियनामूवाविस्थ्रातमार्दवानि॥ धर्म

प्रियत्वात्स्कनृणां च यथा स्यात्कल्पनार्थं प्रियमाल्सदहं॥ दग्धाग्निदग्धान्यपिमानमानिप्रसादमावर्ज्जनवानिकूर्यात्॥ पृथगवाक्यमाहस्त्वानूर्यतं धीनमत्कुमं॥ सूक्तिस्वद
नात्कोऽयमनंविस्मयमायपूः॥ महास्वदंमहत्कर्मसूर्ध्वर्यमहद्भुतं॥ वनकिंचित्रवामतंभिनिर्भेदिग्धमानमां॥ नत्कीर्तिप्रथमाहात्म्यंमगिनखलमानमा॥ स्कृ
तिप्रथितिः सर्वपृथयामाम्रूवादनात्॥ स्मलमलंमहात्माज्ञविनमदहपीडनात्॥ संतर्पितः स्वमवर्विपित्वद्रकमाम्नमहाजनेः॥ नवानयामहद्दानकीर्त्तिवयंप्र
सादिताः॥ स्तुतिनिवार्यनजानंप्रसत्वेवंवेलाधिय॥ स्कानलकिंवत्सनगस्कृतिजनत्वेत्कीर्किंवावालकां॥ स्कानत्रीः पनित्यपक्षजवनंत्वसंश्रयस्तो धिनी
॥ स्वर्कसक्रमनाथनामधिगतात्वदीर्यप्रफाभिमांश्रीः पश्यत्कृदिगमप्टलावसूमतीनावदशर्ववागे॥ किंबहुनालवधिश्चाजनात्सधेतयत॥ मत्वाय
ःखलमानूष्यलोकत्रवाधूनानत॥ वयमवात्रदग्धाः स्वायत्तवदूः स्वदायकाः॥ नकमसत्वमहात्मगयदस्मदपनाधमां॥ नवदपात्रयादेवसक्षभिस्थंगमेऽपि॥
म्रस्मातिर्न्नमास्मानंममूवर्ज्जं म्नवान्यथा॥ स्वहस्कनप्रगीकानमभिक्ष्याधुनावयं॥ नवनामत्रएकामम्लस्माद्दक्षमर्हति॥ सृताद्दयमत्वप्राप्तामनूनकं

-सर्ग २

जा ऋद्धिमितनसमादिर्हं निमसमप्रवाधिता ४॥ सर्वगत्यभिविहृ ध्यं प्रतिगुरु वृनानता ४॥ गतदन्तमनीहा त्वमेर्वनस्वाप्रमादिता ४॥ कृत्वाप्रदक्षिणं धेनयथ ४ स्त्वा त्वा न्त-
मालयान् ॥ अथतषमहायषस्त लयं गतषस ४॥ महासत्त्व ४ का ४ त्वा ध्य त्वामनभेवं ध्यविनायक ॥ अतिश्येन तु पतस्य संमानयनतेनवा ॥ विभ्रान्तं सकि न स्य घा
मत्रतो व्याहमवत् ॥ अस्मदन्यात्र विक्लिन्ना ४ मानिनिकाल्पा कूना ४॥ मक्षानानि पथयदकुसर्वथा धिगमकि ता ॥ वसुमामर्थ्यदीननकान्व ४ थीं की विगनम ॥
ज्ञानन्द ४ ४ णां कर्तायाया यो थेव मतिथिर्मम ॥ गतस्पृष्टमोस्नानमतिथिमत्त्वात्ततं तिनिर्गुणं ॥ उत्सृष्य कस्य चिन्त्वार्यस्यादेयांमानमूलमं ॥ त्वष्यवंमननमाविन्य २८७
कुशलंतत्को विषादितः ४॥ विमर्षयं स मत्वात्मा सप्रतिलत स्पर्शितदा ॥ अपत्वाधीनभगन्भवपूनथितिं पृज्जनं ॥ नित्यवधंमसदुर्ध्यं विषयाधर्मसाधनं ॥ तत्किमहं वि
षादाति त्वाफमतिथिपूजनं ॥ दुर्यंमयाविषादत्वं विमृश्यैकदयाध्वना ॥ अननमत्कृतिथ्यस्मतिथिप्रणयंमृदा ॥ किमनर्थमिदं हृत्वा विनाधर्मार्थसाधनं ॥ वत्स्य
वंसमहासत्त्वा विनिधिरुप्रमादितः ४॥ अधिगम्यमहत्ताहमिव तत्को समृत्त्वः कः ४॥ वितर्कातिनयमत्स्यदयः प्रविहृ स्तितः ४॥ आविश्य कृपयायं स्वप्रकावश्च दिवोक

गां॥ ततः प्रहृष्टा दिवसा बलाबलाम सीव नूर्व निरु तार्द्ध वांशुका॥ विग स्कनूः स्व मूनद्वंद्व हिम्बनादिभः प्रभासातन सार्थ कांक्षिव॥ प्रमकम सदस निगप्रहासि नक्षति स्रि
नग्राश्व घनाः सम कांगः॥ पनस्पनाः स्पष्टविकीर्णं वः शिः प्रमकमनंत मेनवाकिनव॥ समृद्धस्थीत्रगानिः ममीनयाः मृगस्त्रिनानाङ्कसंपूष्पजं वजः॥ मृगप्रहृष्टे
ववि हक्कत किंतिक्ष सर्वयामास क्रमं शुकेविव॥ तेधिलाक्ष सं वाः सर्व सा स्वर्य मृदिता नेयाः॥ तस्याङ्कुरविगर्कां त्याचानयन्समगांगः॥ तक्कुलाडिदस्य द्राविवि
स्मया पृथ्विं गाक्षयः॥ तस्यतार्वविजिह्वा मरूत्रागन्तुं समस्कग॥ ततः प्रतिद्वितीयमस्त्ववनाऊः समस्तकः॥ ब्राह्म पत्नूयमा धयतस्वनाक्ति कमाययो॥ गत्रमनिकट
किं त्वा मध्याङ्कं दीफ तास्कन॥ विक्लिन्त्रऊन्तु संपाग ज्ञास पीता स्सस्धत्ता॥ कृतर्घत्र मवे षाद दीन कः शातृ दन्तर्भ॥ तस्य मार्गस्थ्वत्रस्य धैर्यश्व क्रोसमस्वनं॥ त्र
कं सार्थ स्पविगुस्य ग्रमनं गहनवन॥ कृक्कु मेक्रान्तं दहं सांप्रतं समहे नि मा धेवः॥ मार्गमार्ग स्हा ननिः श्वतनं सौ दिक्षं साहा त्का पिगक्कनामकं॥ कानात स्मि न्यमं
तर्घक्रमार्कं माहे श भर्षेः कानूमां क्राप्रथ॥ तक्कुस्या गमसोमस्याः कानूय्य कम्पिताश्या॥ समंत्रमाभूतिगक्कनामहृदं संसहमाययू॥ गत्रग सद्वगांधीनं मार्गश्रेष्ठं

जा ज्ञादिसर्व्वदर्दिनां ॥ स्कन्धानां च समवीर्याविद्यानां ध्यानसाधनात् ॥ ततः सुधीः सविद्यास्तां गुरुं सर्वां प्रसादयन् ॥ यथा हिलिपिनिर्दे(र्द्द)शे पवित्राध्यानन्दयन् ॥ हारिकिवश्य स्त्रुतिमि
त्रसुविकल्पज्ञानपि ॥ यथा हिलिपिनिर्दे(र्द्द)शे पवित्राध्यानप्रमादयन् ॥ तथा चार्थितानां सर्वसिद्धिं दिक्षु सुधागतान् ॥ मातृवेरीप्सितिर्देशे स्वकं मंत्रं चन्दितान् ॥ तथा दी
नान्दविद्राव्यश्च विना योगिनाधिप ॥ श्रुतार्थान्यां कितिनिर्दे(र्द्द)शे स्वकं सच्छान्तिनाथिमान् ॥ ततः समयूवनाज्ञाद(त्) स्वप्रभूपतः समृद्धिमान् ॥ यथा लिखिवाक्यनिर्दे(र्द्द)शे सर्वाक्षाका
मतनन्दयन् ॥ एवं श्रीमान् स्वयं द्राक्षावाधिप्तस्वाविवकृतः ॥ सर्वान् सत्वान् सुखीकृत्य प्रवनंश्रीदवदतो ॥ तदाद्भुतमादाय सर्वार्थसाधनान्विताः ॥ श्रीमन्तः सतगान्सा २९०
मन्यस्य सम्मगुणवांछितः ॥ सर्वलोकाश्वयाताननवधर्त्तृम विलम्बितः ॥ त्रिरत्नतजनं कृत्वा मंत्रविद्यमूलागुरु ॥ एतस्य श्री तत्वार्थविनिर्दयानिरूपद्रवं ॥ सदा गुरु
मंत्रात्साहं प्राप्तवर्णितम नानतः ॥ ततस्कृतकानाज्ञात्तद्वा विमुक्तिमानसः ॥ विषयानिश्चानन्दयं तपश्चविनिक्षेप्तस्त ॥ ततस्तेन स्वाज्ञं धीतमतिचिंत्य यथावि
धिः ॥ तेषां सतप्रतिसिद्धोप्य च कानं तत्परिप्रेरितं ॥ ततः सज्ञनकानकस्यस्काम सर्वान् पवित्रसान ॥ तथाव तमसा त्रिसमवाचः प्राप्तवन्त्त्रं ॥ ततः समसमयसर्वा

सुतार्थी स्त्रि समादिशत्॥ त्रिरत्नस्मरणं कृत्वा सुस्नात्वा दद्यादिवंयथो॥ तत्रत्यस महसाख्याः सुतार्थाः संप्रमादिनः॥ दिव्यकामसुखं त्यक्त्वा प्राप्तवन्तं स्त्रिदशेश्वरं॥ मार्थवत्सुप्र
गतां ज्ञात्वा साश्रु सम्प्रतिष्ठित॥ समस्त्रिसविद्यामात्यानीतिधर्मसमाववेत्॥ तदा तस्य महीरुक्षेश्वस्तुप्रतस्य समस्ताः॥ साश्चर्याददशामात्यसत्सु प्राप्तिसमन्त्रि यः॥ तथाम
हीश्वरानामसमन्त्रि तांसुस्मितिनरत्॥ महावस्त्रादिश्चमासुप्रभा नानाविधवकुयः॥ पतस्यस्तप्तुरा लाघोमित्यः स्वाहुविताभूखो॥ तत्कदाविदरुतां गोनृपामासो विद्या
गितो॥ सर्वत्र सुप्रतानाज्ञासुनीतिविविधवकुयः॥ दृक्षि मांकुरीप्रतापर्द्धिवलवीर्यगुणान्वयः॥ सद्धर्मसाथ नाथांगी संवृत्तिरुद्धि नायतः॥ त्रिरत्नलरुजनास्ताहीर्म
वृद्धगुरुलालसः॥ स्वेनृत्वा स्याखिलाश्रीकान्सामात्यान्समन्त्रि यः सखीन्॥ [illegible] सर्वान्स्वविषयाश्रितान्॥ बोधयित्वाप्रयत्नेन तत्रासयन्त्रपिमानयत्
॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य पुत्रवद्देव्यपालयत्॥ तथासन्तपतिः सर्वा ब्राह्मणपीठान्सुहृत् स्त्रियान्॥ बोधिमार्गे नियुक्त्वा हि बोधयन्स सबोधयत्॥ इत्यानपिसहीपालान्मद
कामादिमानिनः॥ जित्वा संग्रामसर्वेश्च पिबोधिमार्गे न्यथाजयत्॥ एवं सन्तपतिः सर्वान्सत्वान्संपलिताघयत्॥ संवृत्तिसंप्रतिष्ठाप्य प्राज्ञानयन्तसामुद्र॥ तसीवाहि
११८

जा माहात्म्यग्रहा व मस्तकं ॥ यदि तं स्वकाग्रहं गृ २ गिनाग्रस्कं मुखान्वय २॥ त्वांतद्दृनि पाणाहं पानयिष्यामि नानक ॥ एवं नानाप्रकारं संवादवनाथादिर्गं ॥ सूष्ठ स्वेवमस्व पु त्वप्रव
वानन गाडृगं ॥ षिववालनदामूढधवा मूढ़ नाथं रिंन गागवाधवा ॥ म निनाऊलमूस नाविलं वलपां ठी न किंकम्पिया नानं ॥ नविवऊ उ विन्दु ताम्रको नौ नऊ मा धूमन
दर्पया कली ॥ सूत वन्कक्कू त २ मम नानां म लिन २ ग्रो घितनर्दं कांश्चव ॥ सूत्र नाव धि वाद्दिनाम गल्कू मूर्मं पा पु पलाभक्क सर्वं ॥ ववृन्दु नपांशु मंत्र या २ ॥ क्षिति २९४
लभान गना ङ्कवा निला २॥ सूत वं म्मव ला व लो धना म क्लि नं नो म ऊनां कू लों कू ला ॥ कृ या दाप निधू प्र मान कां तं क्षिनी बाम्ह ममी घमा गर्गं ॥ वनमूहा धाम पि कां म
अविरं ब तन्नंतवड चितंमणवर्मता॥१ लंदलं कू या ऊवां क्षीन म गा त्यानि ऊयं ॥ धूवित्र धूमापिनिव मिनागति मं स्वषूऊ कालनयक नां शिखी ॥ एवं नाना विरके त्या गंऊ म्ब्रुधी घम मन्नान २॥ निनू स्ता मं त या भां मित्रा
वर्ले ननिवनायं ॥ नद्दृस्नान त्यू नो पा नानधा वनम मां शि त २॥ विश्वा मित्र मधि २ क्षिप्यां म मा मन्युं वमत्रवीनू ॥ पश्य धूं मो नवा २ मर्व यस्मर्वता धित नलं ॥ महा त्या न नि
मिला निप्रवर्लं नानिननानं ॥ मर्वाधिनाक्कमा यथा नान विवक्रीन ना वनन २॥ नूद नोकनू यालापे २ मर्वा थेवनदवना २॥ नाप्यनर्दि मक्षी त्वाहवा यशं व्या निशा मयन ॥

एतं पियादयाः सर्व्वं हल्लपृथ्वीविशिगिताः॥ तयस्थापि प्राप्नीगतं नंताक्षमवं च्छियह॥ किंकानपंपूत निवाभिजनाः समप्राः सं पिवित्तिगंमननभिइः रव भिदं वनि॥३ क्तामस
तामा नभमूर्द्ध क्तनाग्रहस्के त्रैश्वर्यमप्र भिमसंनिनृ यद्विवाक्ये॥ एतम समादावित दनुयथादाजलात्रयाः दक्षाकें मसीवुजनि॥ तश्च पिमाश्चिथ्वलत मृगोलावामाः प्रवा
तानजम्राविभिप्राः॥ मृभिवाविनिभिका निप्रवनावितिहि सांप्रतं॥ कुमोंदिश मताम्माकमिताग न्तुंजभात्तवतु॥ मृपितॢभिलायांवयहुशा लामसमवित ॥ तंनीमजल
वाद्यानां मक्तान व नतांधूना॥ नृतंना क्षामहीद्रुमयवसुप्रतम्यम म्मग॥ मृपिनाञ्चमहास्यातंप्रतवदि दमाम्पुगं॥ क्कुभिताक्राद्रिगंज्र त्वाम सर्वमानवकाममृपि॥ नेक्षामाइ
तड्भाद्यादिगिलद्रा भिषंदइ॥ नप्रम प्रवनन्विप्रीनोडाक्तः क्रुवमानम॥ तड्भिलामृणामायममयश्च स्ममूपावनत॥ तंभिना थिनिमायातं दस्वानगवनवाभिनी॥
दवनामहश्चाधम्यनोजानमवमस्रुवीत॥ दवाजमसमूयायाता नोडाक्तास्क यांधमश॥ ममूपागग्धवं क्ष्मीयाश्चभितवनः भित॥ दवमार्त भिनादयमम्यक्किनः प्रवी
यतां॥ ताण्यलंकन यडुधे संगाध्याग्गुनभनय॥ यत्वांसर्वमहीपालः सर्वमत्वक्षिनार्थतः॥ नत्वात्मानंजगदर्थं संपालयितुमर्हसि॥ क्कुभितद्वनास्यानं क्रुत्वा

जा सर्वं त्वजयं यदि कायस्थन॥ सूक्ष्मनगाबानपथानुगामिनीं लवदवस्त्रामम काप्रजानां॥ यतः प्रजाः वसमीक्ष्य सार्वं सानंदनीनादस्समृद्धविष्ये॥ कथं पुनाशांजगदर्थमात्मोक्षे मा
सं यहार्यस्त्यक्तधाममस्यात्॥ यदपि त्वमयि प्रभवत्सा नानृनागिरि॥ प्रजायस्य स्ववित्तमंत्रवर्द्धिनं विधीयत॥ किमत्र स्वामिनो स्यात् प्रत्ययविमृष्टं मनः॥ स्वाम्यर्थं प्र
क्रो मही माधवं सर्वपवित्रतेन॥ यदस्मा स्वपथिकी नादद प्रज्ञानास्मनः॥ सत्या हितानि मान्स्वामिन उदाहरतानि॥ कृपात्र वानेन स्वामिनं भयप्रमाप्त साधुष॥
प्रत्ययविमृष्टं विलंसर्वकार्यं पृमर्वदा॥ किन्त्वहं स्वात्ममान्त्वामिमनकाभिममाद नाम॥ नकार्याकृत भिक्षाभितक्षुः धर्मं मयादितं॥ धनगत नृत्वं क्रमःरणा गनेवा देवा २८१
नृपाणा न्यमागतेवा॥ विहाय मा प्रत्ययः सहत्स त्वा तनं हि तधनः कल्मषु॥ विवर्द्धितस्वर्थिजनार्थं भवसन्विप्रमान प्रवमहत्स॥ गात्र वृमांमा यव
यान्नत प्रयुक्तास्त्वपिस्या सुदर्था विनूपः॥ प्रसंन्तु गानाम्रपिवकभेयं पीत्रां कथंकेवकथानवत्स॥ स्वान्यवमा स्वामिनिय मास्मिदि त्सुमां वैक्याव ना रुष्म तयु
क्तात्॥ तदलंमप्यांनिस्त्रिहा स्कंधर्मार्थं विप्रमां॥ सूनुविताप्रयुक्ताकं ममार्थिपविनाधना॥ निर्माभिमव्यमवात्रयुक्तानिश्च पिमन्त्रिकिश॥ तावदंतहिपी

कार्थे धर्मकावाप्यधर्मता ॥ स्वार्थमन्त्रादिदित्सूनां कथं स्यात्प्रतिषेधयन् ॥ साधुवृत्तिनसाधूनांप्राग्एवंविधंविधं ॥ तद्दलंमन्त्रदानेनत्रिविधेनानुवागिराम् ॥ कार्यान्येवधर्मार्थेनीति
मार्गविचारणा ॥ क्रियतामन्त्रप्रदानं साध्विप्यमत्र [illegible] धर्मं ॥ उन्मार्गोवनंयत्सर्वेमनसाधर्मसाधनं ॥ कृत्वानुमोदनंसर्वसाम्भिवाधर्मसाधनं ॥ तद्वन्ताप्यत्र [illegible] तत्रैवमथीन
लावना ॥ नैकायपापास्यधनस्य तावत्प्रत्यर्थं यावनकारवति ॥ एवंविधस्यार्थिजनाक्षिप्तंनदेवतासाधनयापितत्र ॥ एवंविधस्यार्थिजनस्यपरादाविनाशिनस्सर्वो
स्येदेव ॥ विमर्शमा[illegible]र्गोप्यनुपालनीया [illegible] स्यैदेन्यन्तुपनाममिश्रा ॥ तद्वत्तोनमकार्यंवाचयन्तुंहितार्थिन ॥ संवाधिसाधनंधर्मसात्प्रवर्तन्तुविघ्नतां ॥ [illegible]तिताम्त्रिनव
सर्वाननूनीयप्रबोधयन् ॥ वैद्यानाहृतयेनातीहान्यूनवत्रमृपादिशन्त ॥ सूर्यसर्वमसावेश्यात्म[illegible]पद्यस्यभिनात्मनो ॥ सम्यक्त्रिंशक्रयनकानिपूर्वानयितुमर्हथ ॥ [illegible]त्मसन्
पौवीसर्वेश्या[illegible]न्यविबोधयन् ॥ तान्यकानुधिनायकान्तमामन्त्र्यैवमादिशत् ॥ धर्मकर्मणिसाधिव्यंप्रीतिर्वयनमौमम ॥ तवैनाथकर्तुमर्हतिदयमात्मस्यपुत्रिग्रहात् ॥
[illegible]त्मसमर्थोनामाकृयितिताभिनात्मनो ॥ प्रवासयत्वनकानिग्रक्षोमंवाधिमानसः ॥ तद्दृष्ट्वापंवयजात्मतस्थस्य[illegible]मादिता ॥ क्रतान्[illegible]लिपूर्यमस्यनकं

कंदपिता

=स्य॰

गुरुपङ्कवृन्दं मयाऽद्रुद्धिर्गविधुः ॥ दिव्यमीति विप्रकर्षादस्त्ववदा गर्भमहिर्ग ॥ नृपदर्पदवल्किविस्याम्भपद्मकमण्डलं ॥ संपूर्णप्रायविमानांसमीक्षाबाबकास्त्वीन ॥
मू सावायूर्णमातनमगुलनदसत्त्विव ॥ निवदयति साधूनां वन्दमा२ पाप२भो स्तवं ॥ नक्षत्र२पङ्कदनी यक्षमगान वह्निनादनाह ॥ धर्मधनमनुस्मरस्फूर्जघोषघंत्रगं ॥
न्यायलक्ष्मानतेः२ तुड़ेः२ पुनिपृच्छानिथीनयि ॥ प्राणसंधानधाः२थनन्दक्षानुष्ठ्यमास्तना ॥ यत्नपुण्यागाविनतावमाना२ समुकृत्या२ पापविनुपनिष्ठा२ ॥ विपुलात्मा त
त्तुन लालमायूर्फनेवकार्या दृ२ सप्रमादः ॥ दानवर्शीलातनः२ धनगमास्तप२ष्ठा निमेवड्डयिन्द्रयेनधं ॥ विवर्णमानेस्याहितन्माड़्२गीताफमपयुच्या नियमाप्रणिधा२ ॥
मानागयासा मतिरयलक्ष्मीं विताजियस्वा नियुग्जनभीम२ ॥ छागीं घिवाञ्जमयसमनुप्रनम्भिर्यदीप्यग पुण्यममूकृत्य२ म२ ॥ दपमयहोवा२ मविवान पाथपूण्यप्र
तावालपृथिवीध्वनार्गा ॥ सदयत्वक्षास्वगमर्वगर्वा२ धीमान्वाहाधूनमूढरन्ति ॥ पूण्ये विदीनानन्यायलक्ष्मी विंशस्वन्धमानानपिनीति मार्गो ॥ पृथ्वाधिके२ माथ
वर स्वमानापर्यस्त्वपघादिवगविपक्वान ॥ ३२ स्वप्नविद्यादयसोनुवजादपृथ्वमार्गोद् यनस्यनस्मात ॥ श्रीमन्नसोर्व्यादयसाधनपुण्यप्रमःअपमर्गिनुर्ध ॥

ञा मर्विनं ॥ तस्यामस्थिपत्नीनाम्नाधर्मनाभाभिधानृपः ॥ चक्रवर्ती महावीर्यो देवराजइवाभवत् ॥ तस्याग्रमहिषी देवी सत्यवतीनामधमा ॥ स्वामीधर्मवतिर्नामसत्कृताज्ञी प्रियंवदा ॥ त
त्रसन्नपत्नीनाज्ञा सर्वतीतिविवकृषः ॥ धर्मेणपालयन्नाज्ञां अन्वानागाम्यश्च ॥ तस्मिन्काले समेनुपाणं वत्वारिंश त्सहस्रकं ॥ मुप्रप्रभामधमवालद्भयाणोनिरुपद्रवं ॥ अ
वंतद्गिरिलायांसमुत्पद्यश्रीमज्जलालयं ॥ सभीक्षसमन्तमस्त्वामुदायाज्जं समावतत् ॥ ततश्च स्वामरैलाकसंप्रयाताविलोकयत् ॥ तस्यां तद्गिरिलायांसर्वार्थमत्स्वउ पाव
तत् ॥ तत्र ताइसमहिषी सर्वार्थिमत्स्वप्रभमंत्रधीः ॥ सत्कृत्य जन्मनगरं प्रविवेशप्रलमयन् ॥ यदागत्य प्रविवेश सा तदा सा महिषी मुदा ॥ सर्वार्थिर्यां यथाकाममेंद्रर्य २८९
प्रदात् भैक्षकं ॥ ततः प्रदतिमादेवी दत्वार्थियायथेप्सितं ॥ प्रियतत्तअनेक स्वावनं तु स्वायथामृदं ॥ यथा यथा प्रवृद्धाजानं गर्भस्सास्यास्तथातथा ॥ दानधर्मसमु
त्साहप्रावर्द्धत निरंतरं ॥ एवं सा महिषीनाहं समहादानं व्यानुवा विता ॥ दत्वार्थियाय थाकामं महात्मा द्दत्तप्रावनत् ॥ ततः प्रासमये सत पुत्रं चन्द्रप्रभाकुलं ॥ तस्य
दद्रुप्रलक्कानास्वामीतीर्थितं जिन ॥ सदयाथि प्रदीपार्थचंद्रस्यार्थ प्रयथाद्वेवदवे ॥ कालात्सकलकुत्सकं पर्णतद्वाप्तीर्ष्ण पुरं प्रिये ॥ समीक्ष संप्रजानं दानंक स्वालक

नि द्रुं॥ दिव्यानि सुन्दरं कांतं महाप्रभं प्राप्य नन्दन॥ संप्रज्ञानं समाकर्ष्य पितामहं स्तुत्वा नः॥ महानन्द प्रसन्नात्मा दक्षोदानं परं स्थपितं॥ तत्राधरे पिनाकी च स्वाम्भं तं वि
भुप्रभं॥ सस्तं स्वयम्भुमित्रा सौगतक्षोपयं स्थविरं मुदा॥ तदिन सर्वलोकेषु सर्वदर्शनं सद्रिकं॥ निवृत्यागतं महासत्त्वं प्राप्तं कं तत्सम गतः॥ ततः सज्जनं कः सर्वाहारी नाकृय मा
दितः॥ कृत्वाञ्जलिं महत्तं संसमालोक्ये व मादिनम्॥ तव नादानक स्याप्य नन्दन स्यात्स्वजं स्यम॥ समीक्ष्य क्रियां तां मय अर्थ सम्बलात्मिन॥ स्तुति तत्वादिगं कृत्वा सर्वाहामथाम
४ स्तु॰ ना॥ समीक्ष्य तं ल कृतं नस्य मिथ एवं समस्तुवन॥ यदस्य दर्शना कान्ति स्वयम्भुप्रभं स्मृता॥ तदयं दानक स्वयम्भुप्रभं स्तुतिप्रसिद्धयतु॥ एवं तत्संमतं कृत्वा सर्व प्रिय हात्मय स्तुतः॥ ध
र्मराजं तं नमस्कृतं समासन्तुष्टवन्तस्तुवन॥ यदयं तस्माज्जान स्वयम्भुप्रभ स्तुकान्तिमान॥ तस्मात् सिद्धप्रज्ञात्मा स्वयम्भुप्रभ स्तुतिर्भुवं॥ एतल्लेः कथितं कृत्वा पितामहप्रणितं वि
तः॥ तथ्यत्यन्नमादित्वा तत्रासप्रथितं व्यधात्॥ ततः सदानकाद्यालिर्धत्री विः पुनि पालितः॥ यतिपूर्वः पूर्वज्ञान्लस्त सर्वमनाय स्वेः॥ ततः सर्वालकाप्यधिजनालो
कनानन्दितः॥ सर्वलोकप्रमानाहितमिकान् कृगत्स्त्रिय॥ ततः कोमार्यताप्राप्य गुरून् सम्पार्थितः॥ लिपिनाम्रकलाविद्यायथाक्रमम शिक्षत॥ ततोस्तु भत्त वत्ता ताम

मा

र्हं॥ तावाहृत्य गुरुनास्मार्कविंयोगंस्यादिदानीं धुना॥ एवमस्य वीपिलोकाथक्तमिनात्१२ स्वकामिन१॥ स्तवनव्या स्तुनाथ१ स्तुनत्रातीर्थ दुत्वानगा१॥ पुनिविवि नाविम स्तुस्यात्१२ स्व
त्यविषादिना३॥ विमदस्या पुर्वार धेर्या१ स्वय लोहत्तिविधदिन॥ एवस्तुत्व जिमाक र्नीवाधिमस्व१ समस्तानि१॥ स्तुनिस्तुंसीविनंदर्म विस्तायेर्वयविनायत॥ देनपि
१ स्तुपमंकायं प्रार्थंत्वालाम्बुवत्॥ पनव स्सर्वमस्य लिवनिस्वाघज्ञतिस्वपि॥ ततद्विकिंविघादनदस्वादानंय१थमितं॥ विनस्वत्वज्ञनंपूर्वथनयंवाथिमानत१॥
पुंसिमंविस्तलमीन्द्र१मज्ञगाद्विनमानत१॥ मतमानमूयान्यज्ञनानवसमादिनत्॥ जम्बूद्वीपत्रसर्वत्रसर्वाज्ञाकांमदाल्लया॥ स्तवपुष्पमहतूपद्मंवादयतमस्त २९३
स्तुव॥ देवतादिस्तूननस्तुदारुत्वासर्वपितज्ञना१॥ तरथ[illegible]विहृत्यत्नपंनत्वातजीवनत्॥ सर्वत्रप्रवनन्तभिज्ञमद्वीयन्पाल्लया॥ स्तवपुष्पमहपद्मंला
कानवमवानथत॥ ॥ [illegible] मानवा१ सर्वनृपतनत्[illegible]मतं॥ विनत्वज्ञनं [illegible] त्वावनन्तुनाउलीलया॥ यावद्दीवाम्यहंनाजागावेमात्रविधी [illegible] दत॥ मायायप्र
पमंसर्वस्तवकिंवाविविनया॥ स्तुनिस्तुंस्तवमंवानंसर्वघांमनदंधुवं॥ धर्मत्रवक्तगहलत्रि[illegible]वनस्वपि॥ [illegible]स्तुतौदिस्वत्वासर्वप्रभादिना१॥ नाउलीलमहास्मारदे१

॥=

संवर्त्तनकोमिदं गुह ॥ श्रुत्वानुशासनं तस्य ३ यत्वा सर्वं यथामानवाः ४ ॥ ततस्ते प्रयमनुमादि त्वा तथावनितमानरं तन ॥ तदा सर्वं यिन लोकाज्जम्बूद्वीप समन्ततः ४ ॥ ताज लीला महात्मा हे ३ संव
तिनसदा गुह ॥ एकापि नमदादीनाइ ३ स्थीकृशीनुज्ञान्वित ३ ॥ सर्वं यि विमला स्नानावलत्वर्हद्रवाचिता ४ ॥ तस्मात्सर्वमिहीका नाज्जम्बूद्वीपासमागता ॥ तद्धर्म महात्मा हे नाक प्रूवण्यताज
त ॥ एवं कृत्वा सनाज ३ सर्वाहद्रप्रयां महीं ॥ दृष्ट्वा सर्वा धर्मिष्ठा ब्राह्मनन्द प्रमादित ४ ॥ तदा सर्वं घु लोकेषु तस्यनाहाकग खुरा ४ ॥ तदात्मकीर्त्तिसंनादं प्रवर्त्तान प्रमावितं ॥
तकृत्वा वासिका विप्र ३ पर्वतं गन्धमादन ॥ नोडाक्रानामव कुस्माविलाक्षेवं यविनायत ॥ वाजाव सुप्रहानाम सर्वलोकहिताथीय ॥ सर्वं नदका सर्वाणि मानं वह स्यगर्जत ॥ य
स्वहं सा प्रगंगत्वा हद्विलामस पूजी ॥ नृपतीनं महासत्वं बुज्यंया विगं जिन ४ ॥ यदिदं याक्ति नापि संस सुगिहं ३ सत्पति ४ ॥ सर्वं ददस्लदानं बाधिसत्वा तव कि
ल ॥ स्थितिथि सर्वे त्राक्राब्रामृ या ३ सगता गिन ४ ॥ वयं हद्विलांग तं प्रमनाः ४ सहसावृजत ॥ प्रवर्त्ततमा सा क्रगन्धमादनवासिनी ॥ देवतानुप्रभावनी नू दिले
वं न्यथानयत ॥ कुने पाथि प्रव उत्मा भात्वं हद्विलां व्रजे ॥ किं तप्रयाजनं तस्य ३ जिनमावदसपूत ४ ॥ यद्यपि विद्यतनाह ३ जिनसागप्रयाजनं ॥ तद न्यसप्रड एम्

मो नवाङ्कन्यनयंप्रजानां॥ भवानमीयेऽस्मिन्दमा मयमपुत्री तिद्भ्रुतामाहि हमेवुर्जगति॥ सत्कानपूर्णनवधीयमन्त्र मुमन्त्र मर्षा किल नेवनूर्या॥ कामंनामसाद्धिभाटयेयवृक्षयानयपी नहितं १
व्यवात्ः स्वहितार्थं नृपाणां यत्र शापवोभिकावयं॥ सुमीमाभवयंजाना मर्थेप्सा मकलाजनान्॥ सुनाथनकर्तुमीहागत किंतत्धर्मसाधने॥ सुधिवत्साभिनास्माम् प्रवयवि
मर्तमनत्॥ स्वामयर्थेपुरुकु मर्णीभादरं सर्वमपि विप्रहान्॥ यदस्माभवपविकी तदर्दं पूर्वप्रतुनात्मनः॥ सज्जनहिताभिमानाभि नजाचापात्र भिक्षति॥ तदसमार्कमर्त्याधर्म
मत्पदस्पविप्रहान्॥ धिक्षुवादमता क्रियाविनष्टाः मयुननथिकाः॥ किंकविधामहस्माकं तत्त्वानां देवयागत॥ विपत्ति विद्रमायतनूनं नाप्रमनमनमत॥ धृतिमा २८०
मिन्त्रमीक्ष्यत्रमात्मर्थं माकृथाः प्रभो॥ कार्यमवहितार्थं यत्तद्वकर्तुमर्हति॥ नदन्यत्रार्थिनं इंद्यं तद्दिर्विमीप्सितं॥ स्वदर्शमात्रदक्षत्रतोऽपि वीर्यं स्थियत्नतः॥ ददंद
त्वा किमन्यदाप्रार्थनीयमताधिकं॥ सर्वमिमधिमयस्य दतार्थं धर्मसाधनं॥ धर्मयामर्थ्युयाक्षयं ददर्दि व्याधिमन्दनं॥ प्राप्यलोकाहितार्थाभिरुर्वीं ह्लीवं विमृत्यनी॥ स्व
तिविहायनाजन्दुमाकृथाः स्वात्मघातनं॥ स्वात्मघातं मदर्थे समाख्यातं मुनीश्वरैः॥ एवं महात्मा महात्मनः स्वात्मानं मापि विघातय॥ पालयन्न लोकानां हितं ह्यात्म

स्वंवन ॥ इति विद्यापितं राज्ञ तस्मात् स्वडिताथि तिष्ठ ॥ तद्विद्यार्थी समाधाय यत्नपूर्वार्थं गृह्य व्रत ॥ इति गौतमः स्त्रियः ॥ सर्वविद्यापितानि समयस्य ॥ मेत्रीव स्यात् सन्ध्याकाल स्तोपं
श्रयमनाविनं ॥ ततः स्वन्तपणी राजा मे वांछितनिहिता भयथा ॥ सर्वान्कामान् स्त्रियः ॥ प्रपश्य स्समासे स्त्रीवमद्ध्वीता ॥ २२ ॥ धंमस्त्रियः ॥ सर्वयदर्थं दाप्रमूल्लहः ॥ तदर्थं समुपाख्यामि सं
स्वाराज्यं तु मा दत ॥ जानिसुं स्वल्पं मास्वं जीवितं दद्यामिन्द्रियं ॥ ॐ मन्मन्स्तस्वंहार्यं विधस्त्समायात सत्रिहितं ॥ धर्मजवाप्स्यं तान् ॥ सर्वसत्त्वहितार्थं तु ॥ मुह्यायाद्य जीने ॥ सर्व
सर्वत्र सुखदानगः ॥ तदर्थं सर्वसंमानकर्तव्यं दानमर्थिने ॥ दानेनैव महत्सौख्यं प्राप्यते ऽत्रैव वस्तुपि ॥ अनन्तं सुखपि प्राप्यते दानं धर्मीप्सितं ॥ आर्थिने या वांछितं तं दत्वा
वांछितार्थं समाप्नुयात् ॥ ज्ञानीप्सितं तु दत्वापि नैव फलं लभते सम् ॥ इति सत्वालभं सौख्यं प्राप्नुं दातव्यमीप्सितं ॥ नैकार्थी हि यथा ॥ सत्वाधिविशिष्ट यस्यानमः ॥ तदपि
वांछितं द्रव्यं दातव्यं धर्मवांछितैः ॥ तदहमीप्सितं द्रव्यं सम्मीचीनं दातुमुत्सहे ॥ तदत्तुं संप्रदानं न निषिद्धं समपि सार्दथा ॥ अपि स्वार्थं प्रियं वेतन सार्द्धं कार्यमिन्द्रियं ॥ स
वीयविप्रहंसापितं प्रदातुं समुत्सहे ॥ तद्विधमानेनानीतिं कुर्यादस्मद्विधैः कथं ॥ तदा स्यामीश्वरत्वंस्यो विस्मयं समपि यद्यावितथा ॥ धर्मव्यवस्कोवं स्वपन्न स्मरतः सन्

आ मदिनीपतिं समुद्रवातवेगतया महार्णवे ॥ जलेऽप्रतरणस्यापि किकृतसत्वने ॥ पुरया यभोजस्तवत्तूर्णं वाचन ॥ किमतदिति गगनमुत्तमस्तन ॥ सनाथिपस्तत्रविचिन्तकाननं ॥
नृपास्तयानक्षितसन्यथीरुगंतनृपालयं रत्नाकरत्याङ्कुलाङ्कलं ॥ तथागगनस्यापितनास्यनृपेन मूर्खवप्रसाद्य सविशेषविस्मयः ॥ उपस्थितस्तर्भमनाहृत्यातिनाथ्रमादमंद
र्थवक्षनतप्तृर्व ॥ भूहापुरर्षीवंतमङ्क्षतक्षितनहागुत्तास्यामविश्वभूताकेता ॥ भूहापनानृपस्यंतत्नामतिल्वदर्पता स्वाथवतीवताङ्क्षितिः ॥ श्रुतिप्रवंस्यदवं
सुप्रस्तुंननसुप्रमहाघस्वेः ॥ पीनाधाधिकलगुजाङ्गंवकानातिमनोस्त्वे ॥ ततःसंनृपणिर्दृष्टुागंमसर्वुप्रमादितः ॥ पंकजयस्माकुर्लिनंत्वाकुस्तुवानकुमाडिताः ॥ ततःस २८४
प्रिदतानीलस्तुंतनसर्वंप्रमादयत ॥ तासयस्तकल्पांझोकान्त्वालयंसमृपाययो ॥ तत्रसमस्मागत्वास्वधर्मासननमात्रिताः ॥ गत्वातत्रसम्मकीर्तिपृथ्यामामविस्त
र्वं ॥ नस्तूयतस्तुसमादिस्तुंत्रत्वासर्वमयाम्मृपि ॥ धन्यायायोनृपतिर्हीतिप्रतसंमृःप्रबोधिताः ॥ तदातत्रमहीलोकसर्वत्रगस्यरु पर्थया गतप्रदानमरुत्कीर्ति
१२१ १११६ुत्रममावसममन्तागं ॥ तत्कीर्तिंगत्समाघ्रायसर्वलोकाःप्रमादिताः ॥ यथालक्षिप्रदानानिप्रवकुर्वे र्भलालसाः ॥ तदेतत्पृथ्वतोवेव सर्वत्रापि म

धर्मक प ९३ पद्मनन्दिकृत ॥

ही तस्म ॥ स्तुतिकर्मंगतास्ताहं वत्वनिरुपद्रवं ॥ एवं मत्वा प्रभावाज्ञ स्तुत्वा धर्ममयं जगत् ॥ विनंपूष्यमस्खं तु क्रायथोप्राप्य मनालयं ॥ तत्रापि समहासत्वादियत्रीसंपमानि
तथा ॥ त्रिसत्वसनवरोक्षित्वा नमदव्रुप्रतिपिता ॥ एवं मञ्जगच्छ्राकाश्वमानस्मनृषिवाध्यपि ॥ दत्वाथिख्याययथोकामं ववानवाधिसंवरं ॥ एतत्पूज्यमनृभाव नजित्वा भानाज्ञ
गच्छित ॥ समये त्वाधिसभामाधवत्वलवत्गवाज्ञिन ॥ एवं गवर्मसाकथ्यं ग्रस्त्वा सर्वविमानवाः ॥ यथा शक्ति प्रदानानि कर्तुमर्हन्ति सर्वदा ॥ दोननतुष्य विलं शुद्ध विला
लववलधी ॥ सवृद्धिं प्राप्य याहानं हानी वाधिमवाप्नुयात् ॥ एतनिमत्वा महानाज्ञ तवानपि ज्ञगच्छित ॥ यथा शक्ति प्रदानानि कर्तुमर्हन्ति सर्वदा ॥ यवापि पंचपज्ञात्विवल
वृतिज्ञवरूपा ॥ तथां मवमूनी श्राप्य थर्मथर्मसादितात् ॥ एतनिमगुरुं नादिष्टं प्रतं मयानरुध्यन ॥ स्वंवाप्येवं महानाज्ञ त्वानृभादिताद्भव ॥ पूजाया पि महानाज
संग्रावयप्रबोधयत् ॥ तथा वलमपारंड्रवक्तृतं

मा

॥श्रीमत्‌ ८ ख खंड पं॥

पयाक्रान्तहृदि हिंसामनिर्नद्हि ॥ नदिस्वेतवानाक्षां गावस्समानूकम्पया ॥ यावकूतक्षिकान्तानूग्रहापायंसमालह ॥ स्थूलकृगतविषाणोविहल्यतस्यमानसं ॥ स्थूनद
ज्ञानतिद्गमर्दीफाण्नि

सत्वा महर्द्धिकाः॥ नाजालत्वाननान्सर्वा श्चर्मवानयित्तसृत्तकः॥ ततः सर्वाधिसत्वाल्पगः स्थूलं विवानयत्॥ तत्र क्षाहृतलत्रुञ्जस्मकान्तं व्यलोकयत्॥ तदा छत्रमही ला
कैर्उत्तलनस्थां महापुरी॥ तद्रमिलाविभान्यानाजध्वान्यूत्तमातेवत्॥ सद्रा ह्वीमासृहिजातीनु तम्बर्मगु यागुया॥ द्वादशयोजनायाम व्यायाम मणुलाकृती॥ वक्रुनप्राव उ
र्णयावेलतोन रामहितुला॥ महाजनसमाकीर्ण्ह सर्वविनिक्जनाश्रया॥ सर्वशिल्पिजनाकीर्णा साधूपोनसमाश्रया॥ सर्वविद्याकलाविद्वविद्वज्जनसमाकुला॥ सर्वमाङ्गल्य
संवाद्य निर्नादितमनोरमा॥ सर्वमृगरथपोतयसेवाभिगाविभादिता॥ छत्रध्वजपताकाभिर्मण्डिता कमलालया॥ स्वर्गाभिमतदेशाकान्ता सर्वलुभिमनोरमा॥ पथात्व
लादिसंकुले सुगाजगादिकलाश्रये॥ समादिविहगानावानन्दिते पविस्तातिता॥ सर्वर्तु पुष्पगेहे उः सर्वर्तु फलिगेहर्से॥ संस्मृतिमहोद्याने प्रसंगतिकामसना
तथा॥ तस्यां नारु महोद्यानं संवितं कीर्तिधंवनं॥ सर्वपुष्पफलापतपादपैः पविमण्डितं॥ पंपा सलादिसंकुवं गुञ्जानूपं निपूर्णितं॥ स्वाथी तत्रावर्नतत्र संमोदिपकि

जा मयं महाह्रागी सर्वं ददाय त्वादिनं॥ इति विज्ञाहृतसा नोऽज्ञमतु स्तो तताम्हं॥ ततश्चाभ्ये महात्वतुह्रू छिन्नाय विमाहितः॥ ददर्शनयनाद्रूरु २ स्वप्नएवं विधं निशि॥ भूमुवरेद्धं म
हाकार्ये २ पिशाचे २ स्वामिन २ प्रभो २॥ अपनीगावलान्मोलिं निदिष्ट्वा वृवाचम८॥ ततः प्रति विबुद्धाश्चो संद र्षितु गनूनूर २॥ तच्छिन्नाविषण्णा स्मा निश्चायेवं व्यविन्तयत्॥
अहं मया यस्व प्र पि स्वामिनात्य मही यतः॥ अपनीगावलान्मोलिर् पिशाचैर्दृश्यत स्वल॥ मा हेवाप्य स्पद व स्प निनाया व कश्चूष्वपन्॥ नूनं भयं महन्मामाप्रदयाद्यथि
नजिवर॥ अपि नत्त मया न्यत्र कानयिस्वामिनान्यहं॥ यद्यागच्छत्कि नार्थत्र ग स्पेद यामिमान्यहं॥ यत्र श्रियं कि गे नत्तोई थे यर्ग मसर्वयत्॥ कत्वामंता घिर्गद्रा प्र २९२
वयं यंस्व माश्रुर्य॥ इति निर्विर्ग्रविह्वाशो महत्वसा महामति २॥ नत्त मया निदिखा शिनिता स्मिसमकानयत्॥ ततः स्मता निर्गया यिनत्त मय सिनो न्यपि॥ वह्नि २
मरुश्चो य लेव स्का ध्या र्थि मलाकयत्॥ तथा मही धर रायिस्व प्र दस्था मं ही यतः २॥ कुलं नत्त मय २ पात २ मत स्तातिविशी र्णितः २॥ एवं मात्र महामा श्राह स्वास्वप्र प्रवृच्छित
२॥ संताविगवि निन्ना स्मा निश्चां येवं व्यविन्तयत्॥ अहा मया यस्व प्र स्य व नुप्रत स्प नु प गं २॥ कुलं नत्त मय २ पात २ मत स्तो ति वि शी र्णि तः २॥ नूनं मम्य विपाकामेना २

नं २

ह्यपि नेवतद्विरुतः॥ माहेवनघनीवाक्याङ्कुरूपवामवर्धवृक्षतम्॥ श्रुतिनिश्चयविध्वंसो महीधनामहामतिः॥ विप्रान्स्वप्ननिमित्तस्थान्पप्रच्छैवंसमादरात्॥ तत्र नाघमया
स्वप्नद्वष्टद्दष्टः सोद्दश्यतनिशि॥ तत्फलं वदमा अर्थं निर्दयपक्षनूतनम्॥ तच्छ्रुत्वा तानि निमित्तज्ञम मम समीक्ष्य तत्फलं॥ महीधर्येतमालाच्य तत्फलमवमादितम्॥ तस्य मन्त्रिमह
मात्यस्वप्नदृष्टं सतलया॥ तद्विपाकममाजल्पन्वाक्यनवदि हाविपाम्॥ माहस्वप्नफलं प्रोक्तं भिन्नार्थ समभूपावनत्॥ अयं सर्वन्दक्षावाधिमम्बादया क्रिनापिहि॥ तत्
तत्रस्या सन्देहाध्यं महास्यानं मम नाम॥ श्रुतिमर्मपविध्वंसाय भावधाने विधीयता॥ श्रुतिं सर्वत्र निमित्तज्ञैः समाख्यातं निःसम्पमम॥ महीधवापि तन्निशान्ता निश्चायैवं य
विनायतम्॥ किंमत्रास्क विख्यामियत्नपायतनमन्यत॥ ननेनापि निवादयातत्वतस्यासहृदयं॥ श्रुतिविनोविषयत्वमार्गमकामानयवक्तितः॥ महानिश्चसमृद्ध
तत्कोणंकाविघादितः॥ तथा सर्वनमात्यैश्च स्वप्नदृष्टा निःसावये॥ यद्दृष्टंलाक्षजकृत्रयमाकायविपाविताः॥ तिन्नाः सुवर्णनर्थापिमर्वडस्या विसर्वतः॥ प्रकीर्णि
तविनष्टानि नदधिष्ठाः पलायिताः॥ एवं समीक्ष्यतं सर्वव्यमात्याः क्षप्रतिवाधिताः॥ इति प्राक्तप्रिता सासानिश्चायैवं यविनायतम्॥ तत्फलं न यतनूं नमनित्यं समपक्षि

जा

मानां ॥ प्रस्तुतमर्थं दर्शयन्नर्थं दृश्यते नियामयन्ति कथान्तराणां ॥ नदीदृश्यानामसमर्थ्यमोजात्र कादम्बयत्र कथं विदधां ॥ यनस्य दिन्नास्य प्रभयथवि पार्श्वं सूर्या भिदानी महमेवतावत् ॥
नदिस्म नाम स्थितियाग नाना माध्या विपर्यासिदर्शप्रकाशि ॥ दिमानिल स्नानितपंकजानां मानदैन्यानि मुखानि कर्तुं ॥ सूत्रस्य दस्तक्लित्वर्धीवनानि दाक्ष्यानि मांसानि म
स्मो दितानि ॥ कृताश्च अकादिमसमक्रमस्यादिस्यागम स्वर्थि धूमे कृत्रूप ॥ स्वयं गतां हिमिस्य कालितवलितानास्तानिविस्मानितानि ॥ प्रियादिने संप्रस्थितानि
तानि तु ऋषायीति मविग्रहाणां ॥ जीवनापि कृतान्यस्मात् समादायस्य संख्या हितं ॥ मास्मं तत्कथं कनताप्यनीमपिमाविका ॥ सूतिगम्य वमामम तत्थैव कृत्स्यपाभिताक्ष २१९
निदेहला ॥ विकिन्नास्या स्वपनिजामविलावना ॥ कृष्णनि पविदग्धां जाविपातप्रदायात्रा ॥ कृताव्यत्र कथं नामप्रतिपाद्य नीयाविलं ॥ तदिदं प्राप्तकालं मतास्थने
वात्रजायते ॥ नदहमादकायादमाना स्तावमूल मं ॥ किंवत्र यास्य वमकात्र नस्य कत्र वनस्याप्य नृजाकनस्य ॥ कनामिकार्यानिभमापयागादस्य र्थनमर्थप्रतिकान
तद्धं ॥ स्फुतिप्रमन्नांमनमाविविनर्ष प्रदर्शयन्मांजगवक्त्र कानि ॥ स्वर्कनवीनम सूता प्रर्यनानुवास्व सर्वानृपयदर्शयन्त ॥ अमूनिमाम्नानिसेस्या विताविष्ट

भोजनसमये

१२३

कानि लोकस्य समयादिनार्थं ॥ यथासिंश्च यत्र सर्वमपयत्र यमस्तदय २ मा स्पदथा समस्या तु ॥ तत्स्तप्रदानं समवाधिसतां २ स्वदत्तयानं हवनाम स्तुष्टे ॥ ददामि पूर्वप्रागतिगृह्णस
र्वेत्रु स्थाय स्थतं नवतप्रमस्ता २ ॥ स्तुतिगाइकृ साकर्णे सर्वगतं व नाकृ सा २ ॥ नाजानंतं सं मालोक्य विस्मिता एवमब्रुवन् ॥ पृथिवीस्य गता २ स्वयं यावस्य देव्यनस विग ॥ १
स्तुत सर्व गिदानं वराफकालमत २ यत्र ॥ स्तुस्कृ कोणे निर्म स्यासोनृपगिः संप्रसादितः ॥ वेयानाक्ष्यनाडीनां मात्रया थं नृपादिश्य तु ॥ तदा ह्यत्समनृपादिष्ट रुक्ष्मा
तु २ सर्व तु मा २ ॥ स्वामुमा स्वप्रदानत्वं स स्वासर्व समृत्थिता २ ॥ याक्तलक्ष्यदयात्स्पस्वनपतं २ समनृपा त्रिनाथ ॥ कृताः स्निग्धपान स्वामिहा दर्ववेला थिन ॥ नातिनिम
स्मादव प्रदानाहिन नालय २ ॥ प्रजानामेनृनकानां हिनार्थं स्तु सस्मना २ ॥ नैवास्ति विदितं किंचित् हवनात्र नराधिप ॥ तथा स्पस्माहितो स्यानं २ सनु सर्वहितं सर्वथा ॥
यद्यत्स्व प्रजानां महितं दयार्थं नत्स्त्रियं स्मानदनाकृ मानां ॥ पत्रापत्रा धर्माजितरूहितं तु स्थिन्तर्वं स्वलावाने यजा गिमयां ॥ स्वस्य स्मस्फूर्ये वितथि दवनास्यात्र संलोकहिता
र्थ सत्र ॥ स्वमात्मदान यवसाय मे स्मा स्व निश्चया मार्ग निर्मविमुक्ष्य ॥ सूर्येनयं नप्रस ह नद्रा गत्व धीर्यगुफं ननदवलोके ॥ स्तुनर्थ धात्रि स्वरूता त्क्ष्यां हितय

आ

नुप्रियं॥ किंनादसत्कृतस्त्वानपथाननयथीप्सितं॥ सर्वक्रियाफलिस्वंनृधनमत्वमस्थ्यर्थनां॥ तुष्टस्त्वयंविभाकुंवानुपमाननवाञ्छति॥ अस्वादिव्यवमायस्यनद्भनमन

मीप्सितं॥ अनयथवलदाम्नाहिर्वक्रमर्हतिनांत्यान्॥ स्तुतितेगदितंग्रस्वा मनाजामैत्रमानस॥ सर्वान्काम्यद्दद्वापिसमालाद्धेवमादिमत्॥ क्रयणांतयदर्थिन

ममहृग्दानतुष्यम॥ समुवत्रमयाख्यातंग्रंथंदमनुप्रादन॥ प्रयत्नलब्धायदयत्नानाशिनीनष्टफिशोव्याप्तक्रतः प्रभानाय॥ रवात्रयामपदतानकाम

यमृतस्त्रलक्ष्मीमपिकिंमगततां॥ नवासद्दस्त्वक्रयमात्रकेनमप्रयाणिमन्नाघयत्थनमानसं॥ समूलनाथ्यनहितीसूक्ष्मकृतिनःप्रमकतीव्रयमनक्रमात् २८३

त्वान्॥ स्तननपूर्वयनतसर्वदर्शिताभवाप्यनिर्जितस्वदाषविनिर्ध॥ जनानुजामृक्त मत्तार्मिसंकुलास्तमनुनयंतवमागताकृतागः॥ एगडाह्यममादिष्टंति

मध्यतप्रसादिकाः॥ यज्ञाभूपितनर्दुर्गप्रगत्वेवंवताघिन॥ मप्रतिप्रंत्वदवंविधस्यकर्मण्यहितं॥ नेवद्भुनत्ववज्रनृभीदक्रमर्दलंतव॥ व्यागेविहायना

जस्त्रविहायययामहत्त्वयं॥ कानयंतापनाधलंजभेवहिमत्तुष्टम॥ कामंलोकहितायवनवसर्वायमनुयम॥ स्वहितायादनत्वायमत्तेमहीमिनस्तथा॥ स्तु

१ इतिप्रशांसद्राजानं क्रोधमनुपायपु॥ निभोद स्वाविस्मितास्समूह लुबितास्या: ॥ केचिद्विलिप्रुरोषध्याता स्कन्नेत्रा: शपालव:॥ केचि स्वेदं त्रिरलं वर्णयनाविलेपिरे॥ धैर्यवनोड ... विलपनंजननर ॥ ट स्वकरुणाचित्तालघुतानीव
नाड्यंसंगिर ॥ घोर असत्यवेदनाहता: ॥ कुद्ध: सकलालत्र हाहास्वामिन्नराधिप॥
भ्रमिरे केचित्तत्रोषसान्द्र स्वसक्रोधाश्रुलिता: ॥ १

नाद्वयदस्माति नवमायामिनालवान्॥ स्वमयर्थमपश्यद्धिर्मघ्यकाभगवन ४॥ सूक्ष्मपि वनावत्र त्वमनूनरुपद्धति॥ सद्विवानामिव स्वप्नं विप्रश्नं वाप्रमर्दति॥ ९५
मिविह्वापिनिमेक्षकु त्वामनन्दिनोनयपं॥ स प्रपन्नानयाननोमस्तवमब्रवीन्मृदा॥ उपकाराद्धव हि मन्नायाशयं कृत: खल॥ स्वल्पमत्रवी: उमाभ्नंकयापि प्रसीद
न॥ एवं विरधर्मपथं महायान् किं विस्मयात्रिघ्यामघ्यधिगम्य वार्धि॥ युष्माकमवप्रथमं कथिष्य विमाक्ष्यमीमहसं विलग्नं॥ सम्प्रस्त्रियं त्वाहि समीप मारहिहि
स्माविवर्ज्य विषवह्न वह्नि॥ लोह: पनड्यपनिग्रह ध्रुवा जन्हिना मघमयथपाप्या॥ कृतिमनननवस्वय समादिष्टं निमन्यत॥ सर्वयज्ञा: प्रमादनाकृत्य निप्र-
नि शुश्रूवुः॥ तत: सर्व पितयज्ञो बाह्मानं तं नराधिपं॥ नत्वाप्रदक्षिणीकृत्यतत्रेवानार्हितायपु॥ यदाहमास्मकृतप्रदानं कर्तुं समीहेमहीपतीन्द्रः॥ तदा
कुलाधी: पूनदवतावविया गमनंकाहि हमौ नृवाद॥ विकम्यमानावह भावमत्स्वाविघूर्णयामासमृदुवर्णपर्वतं॥ प्रेमवत्रनुनयथत मगाडमाथपूर्य समक्रु
विर्कम्वनाम॥ तदत्रवध्याप्रतिमानूर्ति निर्गपनात्रिमनवधिनानवत्कवित॥ विस्मयमानाग्रथिनवकूत्रविन मर्म समलास्नपरार्यकीर्यत॥ निवाप यिघ्ये त्रिव
ग्रक्रोयमिति मत्वा ते प्रार्थयामासुरेत्सुका:॥ निर्वाणं जगरुदेवेन्द्र सहायः कथमीदृशी॥ सनत्कुमारं तं प्राह वच: श्रुत्वा कृपोल्लव:॥ द्वितीयः धिभि: सहसा पुत्रांगं भूपतिं जगत॥ लिलिषो प्राधिभिर्दिष्टं देववैयोस्य सर्वत:॥ यतो मान्यानिरहक
रोध्येवसमततः॥ तद्स्व ग्रह: सर्व हर्षाश्रुल्ल विलोचना:॥ विलोमयामासुर थत्पुनीतानि गाचरा:॥ भपकार कृतो स्वामि भिर्वक्षुर्हिनराधिप॥ समस्वात्रा पेतधर्म सर्वतुमर्हसि नलता॥ ७

जा

समंत्रमं ॥ समीक्ष्य तमहामत्स्याः समान्वाशेवमब्रुवन् ॥ कान्वाताम्सिंधुनद्यात्मिषलं मंत्रमागत ॥ स्वस्ति शिष्यगणास्त्वं समीपवर्तिस्पृहितः ॥ तदथमावदत्साकं पनिर्वर्ण्य

पचिग्रहात् ॥ विक्षयान्तरदं सीमयः श्चागतो मियःथप्स्मिन ॥ स्थितिर्गेर्दितं श्रुत्वावाक्यं शश्वत्प्रबोधितः ॥ गत्वेति मौनमाश्रित्य नृपतिः स्वमात्रयत् ॥ तत्रतं समुपा

श्रीतं द्रष्टुं स्नातः मायतन् ॥ सफलादितमत्स्यान्सर्वाद्रष्टुं तमाययौ ॥ ततमत्स्यपूजकः प्रायमानान्मत्स्यान्सफलादिगान् ॥ साधनमनमत्स्नोकेसमये स्वश्चैवमब्रवी

त ॥ मीनानिति विस्मितः स्वंसिगावाग्रभाद्रष्टु गावाश्चलमत्स्यपकाः ॥ स्वयद्युत्र फाल्गुवमफमत्स्यालक्ष्मी मयेतान्त्विवमत्स्युक्ता ॥ द्रष्टुमानम्य फमत्स्यान्सवाक् २२८

तः संप्रसाधितः ॥ समादायतमभूर्डसंपश्चैवं वेममाश्रयेत् ॥ साधूयत्सम्भूपानीतान्स्वयेतन् विताममम ॥ तेनतसर्वतारुप्यात्कल्याणं निनूपद्रवं ॥ स्थितिर्हदा सिषंद

त्वावाक्यं सौत्क्रमस्माद्यत् ॥ सापितदाशिषं श्रुत्वाप्राप्तनन्दस्तमादितः ॥ ततस्थैवं स्वंगालोपिमत्स्याताश्रमनवनत् ॥ दधितांजनेमासाद्य गोधमकाद्प्राययौ ॥ गौ

गत्वेतास्पनगक्रस्यसमभूपहृत्स्यमादनं ॥ विश्रायपूतविरिंचेनंपश्चैवन्तंवमब्रवीत् ॥ एकांवगोर्मदधितांजनंवकनापिसंप्रक्त मित्राश्चगत ॥ तस्मदितावं क्रिम

यापयूपवनस्फुमश्मिंशुशुभे वामदेवाश्रमः॥ इति मनःप्रदक्षिणं कृत्वाश्रमं समविलोकयन्॥ तस्य तद्वाक्षिप्तं दत्वा प्रतिजग्राह सादिता॥ भवाननत्वेवं प्रवचनं समभावत॥ श्रुत्व
कला निपक्कानि समादायाययौ द्रुतं॥ तत्र गत्वा पूजनं कानि समर्प्य प्रसन्नमादरं॥ प्रणम्य सा कृतांजलिः स्थित्वेनं सं पश्यन्त्रैवमब्रवीत्॥ आश्राप्तिपक्कान्यदकं मनाहं कृपया वत्सलं ग
मभोंव्येनीताः॥ इत्युक्तिमब्रह्मविदाम्वरिष्ठः तुष्टिं गतः तदंत्रैवतवफ्कु वामस्था॥ इति तेन प्रदत्तानि हस्ताग्रतानि सादरं॥ दत्वा उयाचिषं तस्मै प्रतिजग्राह सादिता॥ अथ
तस्मै श्रुत्वा त्रियमभीष्टं तं समादनात्॥ समुपहास्य ददं स्वं नत्वेवमाह सादिता॥ नमस्तिमूर्तिनतिलानन्तपु लावनविद्वज्जयश्च समर्केवन॥ भनीनभगत्वनला त्रि
सं स्नातं समपापयूपस्य तथावनेवस॥ यदश्रियश्च पितृन्सायनेधनं सनं नियुक्तिमिसमागमालव॥ नत्वाक्षि दक्षादधिकंवभथनंप्रणीक सर्वश्रमिदं यत्नात्सेम॥ इदं
तितनादितंश्च त्वाश्रमं गत्वा समविस्मयः॥ गंतानंवमहाम सत्वं समपश्यंत्रैवमब्रवीत्॥ अन्यस्यापि वर्धतावत्र पर्यादसम्पद्विधं कथं॥ इति दर्शितमोहाद्दिकमात्मेव
तवद्विधे॥ इति सकृथितं श्रुत्वा समहामत्वं श्रमाधिपः॥ ब्रांक्षे समर्थितं तं वसमालोक्यैवमब्रवीत्॥ यक्तनृपमिदं स्वाध्विमान्क्रांतं मद्विजाकृतं॥ अन्यस्यापि

आ पूर्वदत्ता श्च सुगंधसाश्चतुर्विधाः ॥ छत्र ध्वज पताका किंकिणी संस्थापिता सुकानयत ॥ सर्वान्न पानाद्य पाना दि सर्वं सत्वस्त्र तु घ्यदोषः ॥ सर्वधातु समस्ता दिद्रव्ये ॥ संयपि पूरिताः ॥
स्था गजाश्व रथि र्यानि ॥ कन्याश्च श्रीजने नृपि ॥ सर्वाप करणपोषः कृत्वा संपूर्ण पर्यरं समनयत् ॥ तत्र सौवर्णे कर्या दि सर्व वस्त्राभिनाच्छयत् ॥ दिवानिशं महोत्साहैः महा
नादमघोषयत् ॥ एवं सदा सत् लक्ष्मीन्द्रा नित्यं घण्टा वघोषयत् ॥ सर्वार्थि श्चाय यथा कामं द्रव्यं ददौ समादरात् ॥ तदा सर्वार्थिनो लोका जम्बूद्वीपाश्रिता अपि ॥ सर्वद्रव्य
समापन्नाः प्राप्त सम्पत्सर्वदा निर्वृताः ॥ एकोऽपि न सदा नगरे क्षुधार्थी दरिद्रितः ॥ सूर्यविकस पंकजालश्च क्षुद्या निःख विलासयत ॥ मत्स्यनक्रा न विलापि कूर्मादि २९१
मानि कच्छपः ॥ इत्याश्चर्याद्भुता [illegible] प्रमादी वनकः ॥ एवं पृथिवीनाथः वाधि समत्वा मही पतीन् ॥ सर्वान्नित्यं सुसद्धर्मे पालयन्केतवं हरौ ॥ तथा सम
कलांत मीं कृत्वा श्रीगुणसंहितां ॥ स्वात्मवत्सकलान्लोकान्पालयन् सर्वदान्वगात् ॥ तदा सर्वामिहा जम्बूद्वीप श्रीसमृद्धान्विता ॥ जय तद्रसंरवो साधनीक [illegible] व ध्वना जगत
॥ एवं सर्वा मही सद्ग महोत्साह समन्विता ॥ स शीघ्र समसाम सर्वे द्वस्वप्रजान्वनदत ॥ लोकाश्च सकला तद्वी श्रीमंतः सुखान्विताः ॥ दृष्ट्वापि न [illegible] सर्वसम विना

मत्ले

यत॥ मयाद्य यावित्सर्वा विप्रद्क्षानियत्थप्सितं॥ त नममानवा२ सर्वतद्द्रीमत्स्वस्वामिविना२॥ नत्थयंमकला पृथ्वीनाकद्दव्वविद्याउजिता॥ तद्द्रीमत्सरव स्वासंप्रावर्तत
सम नगत२॥ किमिदानीं प्रदास्यामि भिक्षकाय्यर्थेनिविप्यत॥ सर्वलोका२ समक्ष्या द्याॆ तद्द्रीमत्स्वस्वामिविना॥ यद्यस्ति मतनीनार्थी कश्चिन्मत्र समासनेन॥ प्रदर्शयंत्रुभया त
स्मे मा न्ममक्ति भिजायिद्दि॥ स्तुभिक्ष स्वामतनिश्चिद्पवाधिमत्स्वाउगदिमत॥ संवाधिपु विधिं श्वलोकदर्थिनाध्यवानयत॥ त न्ममतो स्वो महामाय्यो विश्वासर्तकिता मयो॥ स
मत्यपूर्वतानाह्ला२ प्रन्नवैवं समभूवव२॥ स्वामिन्थ्य द्विन्तिर्मकार्यं म स्वर्वसिद्ध्यं धूना॥ तक्त्रिनेत्तमनुस्त्स्वा पूर्ववन यत्स्थकया॥ वयं तमवका२ सर्व सर्वकार्या नृसा
धका२॥ सर्वमसम्वनं स्वामंवत स्वयथम्स्वं॥ स्तुतिमंकथितनाऽगंवाधिमत्स्व२ ममन्मति२॥ नाव मायो समालाक्ष विस्मन्न वमख वीत॥ नाहं दाने२ प्रतुपाणिम
र्वर्थिना हिता धिमा२॥ तत्कस्मै किंप्रदास्यामि द्रव्यग्राहीनकश्चन॥ तदहं दातुमिच्छामि स्वमास्मा क्षितिगिनाम्स्य पि॥ तदर्थिनं समालोक्ष सहं मानयतामिद॥ तद्दानताथि
मत्यर्यं विप्रं नकश्चिमर्दथा॥ समाप्यमवकर्तव्यंयत्पामि दिंतवाक्षिति२॥ स्तुस्वंवा मिनादिष्टं निजमपतो मंत्रामगी॥ नृपाणिं तमहामस्व समालावेवगस्तुत२॥ तत्र

जा र्षि ॥ तत्स्वर्गगर्भं महाध्यानप्रविष्टं मुनिजनप ॥ जनकायाव्ययोत्तमः पृष्ठं तान् पयो नृपदन् ॥ विक्रमानं तं मायागंजनकायं विलोक्य सः ॥ नृपतिश्रामहासत्त्वः ससाध्वसे
वमादिनः ॥ प्राविशंदतसर्वत्र मिथः स्महता विनः ॥ कृतं लघु समाध्याय वनं ध्वमप्रमादतः ॥ ज्ञुतिसंकृपताधर्मसुपदिश्य सतां पतिः ॥ विध्याय सहसा ता
र्नम विश्राम्य तानवनतृ ॥ नस्तात पूर्यां तं ध्यानातिसं मुखो ॥ कृत्र ध्वजयताकाध्यावत्तु नवनाभिमाः ॥ तत्र सर्वाधिसत्त्वाभिं दत्त्वा तस्यं ठिजस्मनः ॥ माकलि ऽप्र च
र्णिं कृत्वा प्रार्थयदवमादेवातः ॥ स्तत्साभ जिनाभ्कि स्वागृही त्वास्वात्र मंत्रज ॥ सध्यतां तवर्मकल्याणं पूर्यं नाम नानथ ॥ एवमुक्त महीन्द्र ध्वजोप्राकः ॥ सप्रमोदि २९८
तः ॥ महीन्द्रं तं महाम त्व मम मध्यस्थ न्नवमब्रवीत् ॥ एवं स्थितस्य यन्नाज न्वाक नृपस्य लघुना ॥ नाहं समर्थो भिक्षुः २ सिंपातथ्यिं जिना धनः ॥ तत्कृत्वा कनः ऽ सेव
मम लघु नाम्नि नाम्नयं ॥ स्वं निजः महामामनोप्रद त्वावज नां दिवं ॥ ज्ञानिगइक माक ध्वं वाधिसत्त्वः महावीर्यवान् ॥ ब्राम्ह ऽ गं सममालाक्ष पुन नवं स मादिशत् ॥
ब्राह्मणा स्मिन्नस्मात्काले पृथ्वीगत्व मर्कदृम ॥ जितोवंद्या जिनाभ्कि स्वागृहीत्वाभजिनाद्रज ॥ ज्ञ त्वोदिष्टं नन शुलज स्वासब्राम्ह ऽ सथा ॥ जितामा क्रम्य तए
=वी२

स्य च भगवन्सम्यक्कृतं ॥ तद्दृष्ट्वा देवताः सर्वा तद्यानं समाश्रिताः ॥ विलपन्त्यः समालोक्य शोकाक्रान्तवस्सकृवन् ॥ अन्यापि च महीवर्द्धकं न भिंकथं सनागमः ॥ मस्य नामजग
द्धेयः कल्युत्वं पातयदपि ॥ प्रकानत्क्रोर्य विमुक्तमानसाभिनायदिक्कल्पमित्यपाः खलु ॥ गवाप्यन्यास्तु निगम्लिङ्गयागिवेः कविद्यामस्सदं विवृद्धिगं ॥
श्रुत्वा स्वायागयामास्तुहिकाधर्मं द्विजाधमं ॥ श्रुत्वा ताहिः पुनिरव्याभं देवताभिर्निशम्य सः ॥ बोधिसत्त्वा महासत्त्वा स्माः समीक्ष्य वसर्वृवीतः ॥ हा तव नव्यःश्विनादान बोधिर्जग मिथा
र्मम ॥ विप्रंमात्र पुकर्णव्यां युष्मा तिन पिमवंथा ॥ अनुभाद नयेवात्र पृथ्वाफिर्र्वतिक्षुवं ॥ अन्यथा नामहत्युश्चहानि नव तवदपि ॥ पुनापि देवता एवं यावक स्य शिवा
मम ॥ देवतया कृता विप्रक्षनमाकुर्तगात्तव ते ॥ यदि तमात्नतायाभ नाक विघ्नक्षिता विति ॥ लघ्वावानुकृता बोधिसत्त्व विघ्नमभाफवान ॥ अंगाक्षे वंद्रवी मित्वां मात्र मे विप्र
तांकुरु ॥ पृथिव्यायाव मानयोद दत्तानां भिन सोमया ॥ अमुनाभि नमाहीकृत सहमृयं विपर्यतः ॥ देवता नाम मैत्री या बोधिसत्त्वा महाप्रति ॥ संप्रेक्षितः सकल्प्य शांत वत्वानिन
कृतादिता ॥ व्याघ्र्या आत्मा न मृतस्स्य दत्तं कंपथित सिनश ॥ पृष्टी कृता मया बोधिसत्त्वर्यानव नमाखलु ॥ श्रुतिमदेवतायपं संवृज्ज्वलगताधन ॥ मेवात्र विप्रतां कर्तुं महर्थ

श्री रा

र्वे सत्यधर्मनिवासनाः ॥ ईर्ष्यामात्सर्यसंक्लिष्टमदमानप्रमादिनाः ॥ ब्रह्मघ्ना अपि दुःशीलाः स्वकुलाचारवर्जिताः ॥ कृपयश्च निराशकाः सद्धर्मपथि तस्थिरे ॥ नृपाश्च पितर
श्च सर्वे सामाश्च तत्त्वयोनितः ॥ ग्रामवासिमानान्यदर्शकाः शालवानितः ॥ एवं सर्वेपि तत्सर्वे सापालकवाचिताः ॥ नूतनं क्षेत्रस्थिसंगतफामतायाम्यक्तिनानक ॥ कं वाम
न्याहि धर्मात्मा ग्रामा लोकाश्च विख्याता र्थिदिक् ॥ तत्सर्वे मानवा मनुष्या भक्तिपालकश्चापि ॥ गतकांगितार्थहस्मितस्थत्वामहीतले ॥ न्तृयनागकृतसगन्धतल ह्वाल्लवसत्पाणिः
नाहं सर्वदार्थितल्यः कृत्वा सन्नयरत्थस्थितं ॥ सर्वान्मर्त्यान्तसं दृष्टौ वानयर्यं समक्रतः ॥ गतस्कमानवाश्च सर्वे सत्यधर्मेण संन्नताः ॥ वाधिवर्यात्वुगं दृष्ट्वा संवचनम्सदायुत ३०२
॥ ततस्के विमलावानाः मनितुष्टि मधुलाः ॥ वाधिमत्वा महामेत्वास वयडुंश्चयाविश्च ॥ एकरूगानिगोगत्वाजनासाय महीतले ॥ सर्वलोकाधिपालत्वावानयर्यंग
च्छत ॥ एवं श्रुत्वा सधर्मार्थी वाधिसत्वो दृष्टात्मकः ॥ तदा सम्यक्स्तिर्न्नस्वापश्चन्त्र वंन्यवदयत ॥ देवदानीं महालोकाः दृष्टिः संप्रबोधिताः ॥ ततः सर्वजनाहृष्टादर्शाः कृप
सनेपाः ॥ तज्ज्ञत्वाहं महीलोके सर्वलोकाधिपालवन ॥ बोधयन्सोऽन्तवान्स याच्छवा वानयोद्यपि ॥ मदन्तृं हृत्वा वान्दत्वा ह्रपयाम प्रसीदतु ॥ वाधिवर्यात्वुगं क्षत्वा

संबंधनयं जगाद्धि ता॥ इति संप्रार्थितां मनकाश्यपसमनिगमस्वस॥ विनंध्य स्वाप्रसन्नात्मा गच्छति नमस्त्वादयात्॥ ततः स चाधिमल्लक्ष्ण्या ध्यानं दृष्ट्वा प्रसादितः॥ तत्र कालु
कलेऽप्युद्धं जन्म स्थानं च लोकयं त॥ ततस्ततः महीपालो यत्सा कातानेगवनं महत्॥ अकुर्वन्सा तं महात्मानं मुनिकं नित्यं पकवं॥ ते चापि कोतिर्दृष्टिश्चिनमिन्द्रजस्य मर्मतस्कतं॥ साक्षप्रा
यजनाकीर्णं स्वर्गैकस्वर्भूव दृष्टौ॥ तत्रत्यानाधिपो नाम ब्रह्मदत्तः सवन्दिमान्॥ सर्वा स्त्रीकान्त्यधर्मपूर्वं स्वर्यं पालयत्॥ तस्यात्र महिषी देवी कान्तिमती नामा प
मा॥ शुक्लशीलादि सुलक्षणी स्वामिधर्मानुवर्तिनी॥ यदा सा महिषी नक्तं नापि शानुवाणितः॥ तथा तदा सवाऽज्ञेन्दुः समये थक्षयामवं॥ तद्दृष्ट्वा समनासस्ता वाधिसत्वो दिवश्चय
तः॥ तत्रागत्य सुतत्वस्या महिष्या गर्भमाविशत्॥ यदा सा पन्नसत्वा लक्षणा नयसंलक्षिता॥ सर्वार्थिनां यथाकामं संप्रदातुं समैच्छत॥ ततः सा महिषी देवी सर्वार्थितानवांछि
ता॥ तद्दृष्ट्वा पादाम्बुजं नत्वा संप्रार्थ्य वं समाह्वयत॥ स्वामि यदहमिच्छामि यदि तन्नि कुपामयि॥ तथा संपूरयिष्यामि तदत्र [illegible] दाहि मे॥ इति संप्रार्थितो देव्या राजया मन
नाधिपः॥ स प्रियां तां समालोक्य मृदुस्मितवदमब्रवीत्॥ प्रिये किं ते मनोवांछा सर्वमपि समीहितं॥ तथा संपूरयिष्यामि तत्सर्वं मे प्रवद॥ इत्युक्ते [illegible] दिष्ट महि
[illegible]यन मा शस्तु [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

म ञा

वैमं ज्ञातहर्षेर्न्निपादयत् ॥ तत्सर्वे समासाद्य ना आसन् संप्रभादिताः ॥ पृथिवीत्राम्मा अदिस्थाप्रसाधयन्तः पथिसिक्तां ॥ यानकं संप्रजानानो दृष्ट्वा सर्वसत्वा अपि ॥ संहर्षानन्दितात्मान
कृद्धिपनिरवमा ग्निताः ॥ दिव्यधूपौपचारादीन्समेस्त्रायाम्य र्भ्यर्चयत् ॥ दिव्यवाद्यानि सर्वाणि प्रवाद्यासमाद्यन् ॥ दिव्यपुष्पाणि सर्वाणि प्रावर्षयन्समन्ततः ॥ सेके
पिव सवत्वानि प्रावर्षमन्स्वरालयं ॥ तद्दृप्यनिरवमाधिस्सद्रवतासंप्रहर्षिताः ॥ दिव्यनत्यमपसंकृत्य सप्नत्स्तसमभ्यर्चयत् ॥ एवं सर्वजिनाः के प्रतिक्षात्तसमनेन्द्रती ॥ निवृत्ता
संपूजनापूर्वं प्रमसमक्रत ॥ तदा महामत्ता ससंयुक्ताः प्रदापूर्णितेऽभवन् ॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि तं दृष्ट्वा संप्रहर्षिताः ॥ बत्वा नाक्षाकपालोक्यस्मादिया धनापि ॥
तगमनमाद्रकोऽश्चापि तं दृष्ट्वा तत्र पालयत् ॥ सन्नतो यान्तः सर्वयोगिनश्च तथा पवित्रिताः ॥ तं प्रत्या पत्निदूय तं जोगिवा स्वयमाज्ञयत् ॥ अर्हन्तानाधिसत्वाश्च सर्वे दिक्सम
मानिताः ॥ संबुद्धाश्चापि तं दृष्ट्वा प्रानन्दसंप्रसादिताः ॥ एवं सर्वपितालोकाश्च दैवादैत्याश्च मानवाः ॥ तं संपुत्रं तमाक्रष्टं दृष्ट्वा तहुतात्मवं ॥ वालके तं स मामस्तं क्रुद्ध
मानत्तं मन्नसाकाः ॥ एवं सर्वालोकाजातं तत्ता पितं प्रणामयत् ॥ सर्वे तद्गतात्मा हंकृत्वा सम्मादयत्रागत ॥ तथा जानिमहं कृत्वा पुनरागिताय थेविधि ॥ तपि वन्देसहि

३०३

सन्न भावी २ संपूर्ण भावी २
सन्न भावी २ ... भावी २

उं समासमस्तुवमादिशस्तुं ॥ यदस्याः स्मृतिमात्र संक्रामतमहामलिविनाशनं ॥ मतिस्फूर्तं श्रुतिस्वात्मसन्निधानं प्रसिद्धम्तु ॥ बलस्फूर्तं श्रुतिप्राप्ताका के स्थितिसंबाधितंत्रवि ॥ तन्त्रामन्त्र
प्रथितानां लोकं सर्वतारूलसंबालकः ॥ तन्मतिकान्तिं तडागाविवाजितः ऽग्रधौंजवतु ॥ तथाक्षत्रालिवस्तातिः प्रति संपालितामसुना ॥ क्रमात्प्रवर्द्धितः पूर्वः समस्तकं वसवद
ता ॥ ततः सश्रीसमापन्न पतिपूष्टेन्द्रियाणयः ॥ संवर्द्धितः क्रमात्तत्त्वप्राकाश समर्द्धितार्थरतः ॥ तेनाविद्यात्तः ॥ अन्तोऽर्हत्तिपिकालां समाश्रयत् ॥ गुरोबानाधर्म कृत्वा
समोपितः श्रियीः क्रमात् ॥ ततः सवर्द्धमानात्शुद्धिपीनांपात्रमागतः ॥ प्रक्रियाकागमस्त्वाव्य शास्त्रादीन्समधिकत ॥ क्रमेणाधीत्य शास्त्रान्स सर्वविद्याः समस्यगतः ॥
अथ सर्वान्को सौमात्र व्यजयेत्स नवादिनः ॥ ततश्च सौमनावर्द्धिः सर्वशास्त्रविवक्षः ॥ वर्द्धः षष्ठि कलाविद्यासु पि सर्वाशुभिकृत् ॥ तासां समस्तानुसर्वासां विद्यानां
मानमाफवान् ॥ जित्वाहिमानिनः सर्वान्सर्वविद्याधिपो भवत् ॥ एवं समस्तगुणाश्रयः श्रीसम्पत्तिकृतात्र्यगः ॥ अक्षातद्यागयोधीरः स्वपतात्माहिताय सः ॥ कान्तिस्रिका
महासत्वा दयालुर्लोकवत्सलः ॥ बोधिसत्वो महात्यागी धर्मकायाङ्गमन्द्रियः ॥ सर्वस्वसंप्रदानेपि समुत्साहसमुद्यतः ॥ निवपकः स्वदेहपि दानधर्मोपितालालसः ॥

म. आ

ध्यनिपापा निगच्छन्ति दिविनाकं ॥ स्वर्गगाविविधान्कामानुत्तमान्कामविमानितानि ॥ पृच्छेश्चनु पञ्चिकी ॥ ॥ रावनिनन्दनकाम्यत्वात् ॥ नानकवदनांगीर्वाणसंप्राप्यतान् मापितात् ॥
धर्मानसनसंगत्वाग छन्ति सुराणि मनः ॥ सर्वविविधंद्रः स्वैरविविद्याय पश्चिमः ॥ गार्हस्थ्य विषयवत्स्यश्रोयाणि यागीतपावन ॥ मनसाख्यात्वा संमाय यागानि ॥
स्पृहः ॥ तपोवनं व्रजंश्च त्वा वनमितुं मां व्रजं मुदे ॥ मनमारव्यातं त्वामरयोगमाहि जः ॥ कस्यां तावे पतिश्चातुं दर्शय कायमब्रवीत ॥ समानकमहाये रधनानास्
स्तनयो स्मृता ॥ निवासमनाश्रमादीनां कथं संस्कर्तुमिच्छसि ॥ अनपत्यस्त्वमेव पितको मा यथ यत्प्रवञ्ज ता ॥ यापत्यमिवरख त्विदं त्वयानुवर्तितं प्रगा ॥ आनाथ्य मस्त्राणि ३१०
पालिमहिर्वर्मी यदायं तवनवनवा ॥ श्रीमन्निहि न्यायवेनान्यपित्वं कैसोदन रथध्रमार्गी कत्वा ॥ पन्नप्रमादार्जितसंज्ञ गच्छमानः स्वतावज्ञानेन ॥ कस्व तरे ह
समूहविहीनावना काय मोनिवसः कथं तत् ॥ निक्षत्वमिवाप्य स्वकथं तत् कस्य वर्णं प्रयामि ॥ मामवस्का हि मवेश्च माश्चाहि षापिवाप्यापि हिम कथं
सः ॥ नानानुकूलं दीनाकुर्वं पालय नाथनिर्भयं ॥ संपादय यानिवसंत्स्व गेहधर्मवसन्तौ कमनानवधंत्व ॥ पवनकर्मकानस्यापि स्वनिपानसत्त्वागच्छाव

श्री=

।। किंपुनः सुखसंप्राप्ताः समृद्धिफलितव्ययः ।। गत्वा मित्रमित्युक्त्वा बोधिसत्त्वः विनाशितः ।। विनकः कामसंभोगस्कंधं यथान्ववमब्रवीत् ।। दृढं दक्षः शक्रगत्वा लकामम
लाभ्यर्थं वच ।। सुखसं श्रुत्वा मोकार्थः कदाचित् कृत्यानकः ।। गर्भस्थो महद्दस्त्वां स्कंधं मक्षनस्याधनस्य च ।। तदास्य नेत्र आयामादितन स्याजनितमात् ।। यत्र नाम सुखं नैव
लयानि विविक्षन्त्यपि ।। तथा हि नगितं मा हः पापस्यैव फलोदयः ।। नियमाज्जनने त्यादिरेव खवक्षवेन्धनव्यमूने कालं स्मरते ।। नपगेनपि यत्र नास्ति कूपिर्विलवेश्मा
यनिः धर्मिवाम्ववर्षः ।। सुखमतः कृतः कथं कदाचापनिकात्यप्रमयं नवद्रूपगि ।। विषयापनिवगनपिमाहाद्भुतकपुयनवत्सुखातिमानः ।। प्रायः संमःक्षामदम
निःगहमालंकृतनापिमदनदर्प्यं ।। इः खनवार्षं व्यसननदैन्यं तस्मिं कदाप्यास्तु गमावकाशः ।। मदमानतुजगोपतत्यं प्रभामाहितामसुखविपुलयं ।। कर्तुंकाशय
दमिसुखं विलयं वङ्गीतुइः खनिलयं निलयं ।। संतुष्टजनगहत्र प्रविविक्तसुखवन ।। प्रशीदगियथ व गछि दिवपितथाकृतः ।। पवपशापार्जितवोलिनष्यंतानुम
वनांतकवत्सं हगः ।। अधर्ममिशंतुसुखं नकामयविषयसंपत्कामिषोन्नमान्नवान्नं ।। कृशितकृमाकर्णगोनमः संप्रवाधितः ।। मद्दासत्त्वं समालाक्षसमा

स्त्रमा

आ त्वाप्यविग्रहः॥ यदि सा क्षिमयि प्रेमः प्रगच्छ मम सा वृत ॥ त्वश्चिन्निताणां कुलममकुतीर्थं शुतिनः प्रदानाद्विलसयवाधिं ॥ तेभागलाक्षपयिवृत्तकार्यं कृत्वा वनयंजगाहिता
र्थं ॥ ततः क्षामममहामत्वः श्विनादन्तंमम मत्कः ॥ ममसात्वमित्राभोर्लिं स्वयंमृदात्स्थानयत ॥ तत्रः र्धमर्वलोकानां जम्बूद्वीपे शिवाधिनो ॥ जिनस्याभो लयः सर्वाः नि
पाषिता महीतलं ॥ सर्वहितमहात्मा तंत्रा वर्लोगवकर्दिनं ॥ उल्कापातांधिरत्ना दास्त्वमाकानंमम नाशः ॥ नाक्षिप्युत्राङ्गःदाः श्रीर्षेकु त्वगीति महात्मवः ॥ सर्वादिर्द्वगाशित्व
निश्चनितः ममनाग ः॥ ततः त्वानीमहामात्योमहाचन्द्रमहीधनो ॥ वाक्षादनपनित्सागांनिविल्पयर्यदयनां ॥ ततश्चक्रविनूकाश्चो महः क्षोहनाशयो ॥ प्रयत्वाभ्यामि २९१
नः पापोपनिष्पृष्टेवासतः ॥ धन्यात्मेपूर्वपादवत्वगात्रद्वयामर्षितं ॥ सुरखेजुगांमहदानंदस्थानिधप्रभादिकाः ॥ ततः क्षामीमहामात्योमहाचन्द्रमहीधनो ॥ उक्तीस्वंतंम
हीनार्थंविवनतस्याः मनेः ॥ स्वामिनादं समंत्यागंदृष्टं महामहत्त्रनः । ततोविनाविषः प्रश्नो निर्जनवनवर्तन ॥ तत्रतीमममतीविक्षेप्रमनुविलंवप्रधिय ॥ समुत्साद्यम
माधयतहत्कुर्यागिनाविव ॥ ततः प्रममहाचन्द्रः स्वामिनंमममनूस्मन ॥ प्रिनत्वमर्शमाधयमनमेवंशविनायत ॥ अपगमजिनमंनिनीक्षितं मनूजपतिवम

कामयत्नस्तथापि ॥ उपस्थितयज्ञमानस्य क्रियं कृतमिव पूर्वजनेन प्रभूतं ॥ इदमवधिजुआविनाथनापूनमगिरीनकर्तं नतास्यामि ॥ अमदलिकृत्स्नं कृलं गजेषु
लिलमिवाहन्यकृत्स्नपूर्वकृतं ॥ नयावेदस्यनपतत्नं ॥२०॥ यामिमत्पूर्वाद्या नहं प्रथममवजन्ममिनावत ॥ एवं विविनृपममसमाधिनावनधीमान्त्वार्यं तु वांगमि म॰
गान्स्वतनूर्विहाय ॥ धन्यः स एव पुत्र ॥ मम वाण्यसोत्यं वृत्तं प्रकाश्य जगती नृमनीविश्रुतं ॥ प्राप्य समवस्थ सस्तदां मनहीविपकिं प्राप्राणिय ॥ प्रथमभवनजी
वनेगं ॥ एवं ध्यात्वा महाविस्तृशाप्यमाधा मही धवः ॥ समाधिनातनूं एहा स्वार्यं तु वालयं ययौ ॥ इदमवंममृत्साहंमही ध्रुयापिमक्रि॰ ॥२॥ दहत्याःग यि॰
सर्वीसुप्रानोत्सीसृंनदवता ॥ तं दृष्ट्वा देवताः सर्वाः खोवलाधधनासृपि ॥ हाकष्टं नृपति नि॰ ध दिव्याक्रन्दविषादिता ॥ तं दृष्ट्वा तत्र लोकानां सैनिया नाम
हातह नृ ॥ तद्दृष्ट्वा भीपिनी प्रक्रोल फ्रात्नता सत्यात्तथवं ॥ तदा समवाप्य यथयज्ञानिर्दय कृत्वमानस ॥ नयमिमंतमहामत्संमभ्यस्यन्नवमब्रवीत् ॥ ॥ नाऊत्रिर
मन्त्राकर्म निपातनवक्षिन ॥ क्लिन्नाकथं त्रहिष्यामि तदकान्नेत्रजमहि ॥ एवं तद्धाक्यं मा कुर्वन्वस्तुप्रत्यस्थितिम ॥ निवार्य्य जननामा गृह स्वाद्यानवनद

जा तं ३॥ सम्भूयास न्तु प्रसंक्ष्य त्वात्कर्मसि न न्यवेक्ष्यत ॥ ततस्त्र क्रान्तस्तं विश्नं बाधिसत्त्वं प्रमायत ॥ सर्वान् धी समाम न्तु सम्यक्स्त्वव साधि नन ॥ यासौ स्वस्तु प्रका वाजाबाधिसत्त्वः विन प्रद
॥ सूयसेवमहा सत्त्वः समागताक्रमाप्युतं ॥ ततस्य स न्मतर्यूर्यं सर्वसाम सूपक्कि गाः ॥ सद्गर्भं प्रद्युणा प्रत्याप्रवत धंजगङ्गि त ॥ स्फुतित्र क्रम समाधि स्तं प्र त्वागज सं घथा सूदा ॥ त
स्थानि पुणि भाद न्तकस्कंद्र सं प्रात्रसी क्ष्वित ॥ तत स्कत्त्राम प्राः सर्व बाधिसत्त्व स्यसन्मत ॥ तस्य सर्वा पर्यत्त्रि एव धर्म प्र त्वा सूपाव नन ॥ एवमसो महासिद्धः सर्वान् धीन्
प्रवा धयत ॥ बाधिसारंगी समायूस्य प्रावान य क्रूगङ्गिता ॥ तत स्कत्राक्ष वाः सर्व क्ष त्वातदत् नामतं ॥ त्रिसन्त तङ्का स्वाः समाववं क्रूगङ्गित ॥ एवंश्री मान्मत्तु ज्ञात्वाबा ३०१
धिसत्त्वा दिता धर्म्यप्रत ॥ व्रस त्ताकं धिमद्र सं सूपा दि श्य वत न्मृपा ॥ याशी वस्तु प्रकाना जा नाक्कार्यं श्री घता तवेत ॥ पूर्वी तद्ध विलायात दक्षीग ऊ विलाधूना ॥ यासौम श्री
महावज्रः त्तलीपुत्रीतव त्तू र्धीः ॥ यासौमहीध वामा त्या भौ ऊ त्वाह न्मत द्विकः ॥ त्रास्त्र नायस्व वेडाक्रा दवयत्त कसंगतवत ॥ वङ्गिता क्रामूनीन्दु समाधि स्तं त्तजाग कं ॥ एवं
स सुनुमा दि स्तं प्र तेसया तस्था यात ॥ एतत्कु त्वा तयाप्यवंसदा पानं विधीयतां ॥ त्रिसन्त तङ्कतं क्रत्वा दत्वा थिवा यथेप्सितं ॥ बाधिवयांसुगं क्षे त्वा संवर्य तां जगाद्वित ॥

प्रजा अपि हतवा स्वर्वा वाधयित्वा प्रयत्नतः ॥ वाधिमार्गे नियुञ्जैवं पालयितुम् अर्हति ॥ एवं कृत्वा महत्पुण्यं सदा नमस्कुलं तव तु ॥ क्रमात्सं वोधिमासाद्य सम्बुद्धपदमाप्नु
याः ॥ इति सा क्रान्ता आदिष्टं श्रुत्वा स त्वा का नवाधिपः ॥ मत्तस्य निर्वृतिं ह्राय प्राप्तानन्दं तपोनिकं ॥ वसुप्रत्यय प्रथिताववदानं स्वनिजय पीदमुदान्वा ध्याः ॥ तत्री
गुणाः ॥ समकलाथितार्घं कृत्वा प्रयायुः समागमालयं ॥ ताम निधवापिमत्तद्रकामालाकां सुधाय त्वनिर्मा वमन्ति ॥ सर्वपित श्रीगुरु नत्वय कामदाव्रजयुः
समागमालयं ॥ ॥ इति श्रीमत्क्षेमेन्द्र कमालायां वसुप्रत्याजीवदानं समाप्तं ॥ ॥ सुधा अकामक्षीपालः पुनागतः कृताञ्जलि
ः ॥ उपसुप्तं नमन्नं तत्वे वं प्रार्थयत्यन ॥ तदनन्तरं भिक्षामि पूजनन्यसंगाधितं ॥ लगवतावदानं यत् समादरं महति ॥ इति संप्रार्थितं नाह्रा श्रुत्वा आह न्य
गिः सुधीः ॥ नाम अकामक्षीपालं समासे श्रुत्वमादिशत् ॥ साधुसाधु महानाज यथा मे गुरुतमादितं ॥ तथाहं प्रवक्ष्यामि श्रुत्वानुमोदयादनात् ॥ तद्यथासी महासत्वा उत्क
त्विमहासत्वं ॥ उत्कापिवृक्षसासा र्द्धं विनाशनं समादन ॥ नत्रस्कासो महासत्वादानधर्मसमुत्सुकः ॥ किं प्रवृद्धिमहास्नाका इति ध्यात्वा ये लोकयन ॥ तदात्त मनूपाः स

बोधिसत्व.२

भद्रकल्पे

म जा

नाश्चर्यमेतत्कोऽसर्वानियाके मेकगा ॥ गद्वानिवध्यवाद्यासीत्त्वानत्पुमादिता ॥ सर्वाणीनान्तमाश्चर्यमंत्रलो मंन्युयाजयन् ॥ कर्माश्रोचसत्उदांगा सर्वाङ्कु मगवाऽवान् ॥ ता
जयित्वानवेईध्येवा स्मास्थितुमे ह्न ॥ गद्वानिवध्यनाह्ना सोसर्वाङ्कु मगवाऽवान् ॥ ताजयित्वानवइथ्ये ० सर्वानास्थायमन्यता ॥ एवं सामन्दिषी दवीमसामत्वानम्राविनी
॥ यथाशिवाधिक्षिगं सर्वधर्मार्थप्राकनोतथा ॥ कथमामाह नोपन्त्रीय थातिवांछितमृतां ॥ सर्वदानादिसत्कर्मकृत्वावन ह्नु गवता ॥ कताकधिवयनस्य त्उगाताहं समन्ताः
ावलगस्त ि कृंवनिनत्यात्रं निर्मातिकं ॥ एकापिनानारुत्रदविडाहनिनानक० ॥ दीनार्थी स्वप ० तह्यामन्तनीमानमालिका ॥ सर्वप्राद्या ०त्तावाना दानान०मकुच ३०३
र्थिनः ॥ सद्धर्मसाधनात्ता सावलवर्डष्ट वाषि ग० ॥ एवं सामन्दिषी वाधिसत्वा पत्रमृगाद्दिणी ॥ सद्धर्मसाधनेनात्रकाव्वानवाधिसप्वर्ने ॥ ततथ्यास समयेसुतदानकमत्तिनू रामायणो २
यकं ॥ दिव्यानि सन्दनं कांकं सर्वाङ्गलक्षणान्वितं ॥ पद्मं प्रासादिकं सौम्यं सर्वलोकमनाहर्तं ॥ आत्मन स्तमसानत्त्वंजिनावृाप मउलो ॥ तन्मा न्तनस्त याद्दिव्या निश्वनक्रथ
ानिता० ॥ तत्रायतास्यसर्वत्रदिनीवकुर्निगामषि ॥ तदवतोस मात्तावक सर्वेपि पोनिकाऊना० ॥ कोसंयं तामसी कांक्षि निषु दूर्विसमयान्विता० ॥ गंमंसुता तमाकर्ण्यग

[illegible]

तस्माच्च मति(लो)ड यानेऽर्द्धक विन्दवसारति नैः टेमिः संस्पृष्ट शोभन कांचन भवति ॥४

नकार संपुमादिकः॥ त्रमनत्रामृद्या दिस्यादद्धीरानंयस्थपिनं॥ तत्र नमान्मजेंद्र स्तंजनकाः समसंस्तुकाः॥ गच्छभिनजनेः सार्द्धं सहर्षं समपावनं॥ तत समसपास स्त्रा संददर्श
नमास्ते अं॥ दिव्यानि मन्दनं कांके तड तेन क्रमण मणि तां॥ गुक्षाद्य महानन्त दिव्यकानिप्र तास्वेनं॥ दृष्ट्वा जिनन्दिनः पर्यन्त्रं नं तत्क्षौ विवेकमुदा॥ तवासवान्ल कीदृष्टा भगवान
नेऽ नकंचनं॥ मगतूवन्दसन्निनं मे स्पायथन्त्र वमब्रवीत॥ ॐ दंगिभान् हनेलं दिव्यं तद्गुणाभिविनं॥ पीतङघूकाना दीफ मधू गीतकाना कृतं॥ सर्वबाध्य पसनोत्तं संथ
न्निकानलंवनं॥ सर्वकार्प्रणमनं सर्वदेहकर्मविनाशनं॥ आस्य कालेन क्वापि सर्वविघ्नं विनाशयेत्॥ सर्वभानुरथ तस्य स्पृष्टं वन्दपिसकाव्रतं॥ यद्वतकोन न क्वापि
लोहस्यापि यदा स्पृष्टं तत्र॥ तदा तल्लोहमप्यवं तत्वद्दपि महाणकं॥ मस्त्वं तन्महानत्वं कन स्तुक्रोलना स्तूना॥ संभिंवा सर्वं क्षारु निक्षत्वा रूमानि सर्वणिः॥ तानिस
र्वाणि रूमानि दत्वार्थिभ्यो समादाना॥ जिनत्तलकनंन्तलाह्वा संरवेन धंगजसत॥ ॐ जिनन समादिस्तं त्वा समगणनूः पिता॥ किं भगान्द्रि कर्वत्ले स्पर्शितोऽवृत्तं तथेत्थ म
ः॥ तन्नापमजनक सस्य मा यः चन कृतं सता॥ आदाय तल्लोहस्थानाणिंदा त्वा क्षमि वृश्य ता॥ तस्पृष्टा लोहयोपि महसमना भिनलं दुगौ॥ तद्दृष्ट्वा विस्मिताः स

म आ विमाद्यत्वं स्वयं हर॥४॥ नियामूनन कामं वान्यानि का वितनिष्यसि॥ न वा किं नाम विष्णोकिमिच्छ गीर्वाणसार्थिन॥४॥ इष्ट्वा त्वां च वर्यन्ते तत्पदं गन्धं नमसि॥ धूमितिप्राक्तमयास्तु
हिताथीनि निपान्यतः॥ इयवस्तु निदत्वा तमखं उक्ता तव न तु॥ सर्वलोकाहितं कृत्वा स्वपनाल गुलार्थयो॥ फलधर्मसमानास्मा नाष्टमस्वं वस॥ नावदवमव मध्ये त्वं दृष्ट्वा
निपतिताक्षस॥ जनितिवमन्यात्वा न पवित्वलस्वं वेन॥ धूमितिप्रादि गां त्वामविहृत॥४॥ मोदितः॥ गां विप्राणिविहृप्यवनगंतुसमष्ठम॥४॥ गत्वा पादौ पितुर्नत्वा मा
तृश्चपिपूजागत॥४॥ निवत्तेन स्वहक्रोनामन सुमयावत॥ तन्निगम्यपनिस्वधृ मातां त्वोलगं प्रियं॥ हृष्ट्वापि मंत्रकाविलापमे वसवदीत॥ पुत्रमोपविस्वमहे ३०९
कानीवनवन॥४॥ यद्यस्मिगमहहष्टवं तथापि तस्य हक॥ किं ज्ञात्वा मयानाधिसमात्तस्वभूवहि॥ मद्दत्तकावहजां स्वक्ताकेथं वेनवन॥४॥ किं वा पित्वं कृमानामितम
कायस्यसकामत॥४॥ शीतवातागपादीनि दृष्ट्वान्यपि सहत्कथं॥ अमकजन्तु संवाच गरव नदृजेनाश्रय॥ निःसंगः कथमेकाकी काकीनिवसर्वनि॥ धूमितिमवचनं श्रुत्वा
मत्वा दृष्ट्वं महद्वन॥ मामानाम्नाथमं त्यक्तानिर्जनेदुर्गमेवने॥ इयवस्तु निदत्वा तं सर्वाविरियायत्य पित्रं॥ यथाकामं मत्स्वंतत्रामन्यधर्मसमावेस॥ धूमितिमातादिकं

ऽत्वामतिवृत्य समन्ततः॥ सुवर्णभित्ति विधर्ष्य सर्वतः कामगानक्किणीजालवृत॥ गन्धर्वमन्ति रक्षमाप्सराश्च मविबोध्य हृदयंगना॥ गंधर्वनिर्गुणगमिश्रकं वनमत्वा न्यवानयत॥
गंधर्वैर्क्षुस्तयित्वा पिबंधधयित्वा वयस्तनश्॥ वननिवार्यमाणस्तस्तो योगीवणन्मना॥ एवं विलिंगित मानसाः कृतनं वनखण्डयं॥ कृष्णिमत्वा विषम्ष्म सर्वविनाल
गा वनन॥ ततश्च मनितिसम्मफ मध्यन्निता कृताञ्जनान्त॥ स्वयमदवस्थ त्थायमत्वर्नं निर्ययौ गृहात्॥ ततस्तनगनेपथ्यन्त कृमानिश्चनत्वनात॥ संप्रक्षिप्तावनव रथ्यनका
कौतिरंधावनात॥ ततःसेहसाथ्यांसमीक्ष्य वेनदेवता॥ अन्वाहत्यौ शिनककीडा पययौ मातरं॥ ततस्ससमृपोसृधेहस्यमपगपावनं॥ अश्वस्थवभ्रमात्रिस्यत
कौध्यानसमाहितः॥ ततएवंगसेमोसीनंसमीक्ष्य गोनमामप्रति॥ सहमासमृपोसृस्वदद गिन्नक्षिमाविनं॥ मतिसूत्तम गेमंत्वंगमैत्वामसमृनिरुद्धं॥ ममग्रंसत्वा शिवंदत्वामप्र
कंगभिकानत्॥ किमर्थंत्वंवयंस्थातः प्राप्यामिनिनिमिमात्सुरी॥ तन्मेमात्रेममाख्याहि प्रियाख्तिमसहृयदि॥ कृष्णिगनाधिंस्थ त्वामसिवृत्य कृमात्मके॥ गोतनर्मगममा
न सम्मयमपत्तमवमब्रवीत॥ माधुरे वयस्त्वं यदर्थंहमिहागतः॥ तत्सर्वस्यलवदत्य तवानिष्ठाहिमसहृत॥ मर्थलाकाङ्क्षमकाम गमलाग पनायतः॥ हत्वा प

जा

ष्टानि मम्यमृद्मायनः॥ त्वमयानिश्रीषीविदर्शयत्ववमत्रवीत्॥ समूमिगतत्वमयानिमालक्षदमामितक्किप्रववाः ष्टिनास्मि॥ नवदमीतिस्कवक्लएमक्किमदीयमश्चे
वमिवाग्रहाद॥ स्वामयर्थीविप्रतश्या धान्तः प्रस्मस्मिन्नवगमः॥ तद्धताः माधनी तत्मास्कं वस्त्रनृक्तर्थता॥ श्रृगितनममारव्यातंङ त्वामत्वाम्ना रोमनृषा॥ मत्सव स्रंतमा
क्लिप्पपूजनवमत्नाधम॥ किमवंबक्षाक्षकतनकर्मण्यिजातिवावूंक॥ नसेवयः थिवीतर्फ्रःक्तिनमामप्रयाजनं॥ एवंप्रकथिर्तगनन्नत्राम्क्रः दानमिनमयततः॥ मत्रीम
दीधनश्चापिपश्यन्केमवमत्रवीत॥ ब्राम्क्रणर्किंतपश्द्रस्यामिनमातप्रयाजनं॥ एदामाममियधीयंतंगृहागमधनंगिनः॥ एवमन्यनमासेयमवेदलोकनेनपि॥ २९७
प्रार्थ्यमानापिविप्रासैनेवाहस्यविवाधितः॥ तद्दृष्ट्वागोमत्तमाग्नीमहावत्रमहीधनो॥ तृर्नत्राजानिनादयादिशिविन्नाविषादितो॥ तथमर्वप्यमासुद्वह्नाज
नाःमयोनिकाः॥ स्वामिविघस्मिरेवोकार्णविलपन्नाविवधिन॥ तद्भृत्यामसत्तामत्वशस्त्रप्रनःप्रभादितः॥ तावमाधीप्रकामग्रुस्माम्नाकर्वमादिमत॥ स्वानी
यतामम्मोविप्रष्ठहामास्मम्मनानेर्था॥ एनयिस्वाजिनादत्वाप्राप्यामिर्षीगतंपदं॥ स्वथिनांप्रदयंह्रत्वानेवधर्ममवाप्पततः॥ स्वथिनावाधिमत्वानांतवाक्षकृत

नरप्रवर॥ इति तीर्थमिदं प्राप्ताः २ यानं कृतं कृतं॥ यदिदं निप्रवं कष्टं कथं तमस्त्वदाऽनाथ॥ तस्मात्त्वं मे महाभागे पृच्छामि धर्मानुवर्तिनि १॥ उत्साहश्च बलं कर्तुं व्याधिप्रानाधिकं यं च न॥ एवं
ह्यानलवदर्थाय दीमं बाधिकान नं॥ पृथक् तवाधिमत्त्वा नादानयानेमि नाकथं॥ एवं नाहामहीनं दासममादिष्टं निशम्य तो॥ स्वामि विधये क्रि विना पिदमार्यो मूम कृतं २॥ विना
लोके धैर्यमामाश्च समुत्थाय विषादितो॥ पादयोः स्वामिनां नत्वा पत्रेकानां निधत्तं १॥ तत्र च पुष्पतीर्थाज्ञा बाधिमत्त्वा महाभगति १॥ कृत्वा ब्राह्मण दोषं च समामन्त्र्य बमादिश
त॥ एहि ब्राह्मण सद्भावाल्लये यस्त मिक्ष त्रिहागतः॥ तत्र दृष्टं प्रदास्यामि त्रय्यादत्तमर्हसि॥ ब्रह्मस्वामम महाभ त्वां विप्र स्वयं ज्ञमर्पयतु॥ गेहान्तमसि नः क्रि त्वामहम निम
त्रादिशतु॥ ब्राह्मण दयकन्तु मय वाक्यं वज्ज्वल मञ्जनामि यास्म नननमन्थ॥ यज्ञोपवीत मिति निस्य विनं विधिवत् विप्रस्य वस्त्रं मिमलङ्कृ मिवावपत्॥ तदा विप्रस्य
बोद्धाज्ञा वर्ड यि स्वाज्ञया मिषा॥ नृप मिंतं महाभागं तं समालाक्ष्य वमब्रवीत्॥ धर्मक्रियामि विमलपरिशुद्ध वृद्ध सर्वेषु नामतिलपन्दय ये नेमा धाक्ति स्वास्वयं सकलमत्व
हितार्थं दत्ता २ गीर्थं प्रदायममनीषक वानवाय १॥ इति गदकं माकर्ण्य नाज्ञावत्त पुनामत॥ ब्राह्मणं गंममालाक्षु पूननवं समादिमत॥ माध्यब्राह्मण यनीर्षं मस्वयं क्रि

आ विहितन्द्रकनवलयं पवननवातात्याकालवीवितुरुकंपिपमवक्रं ॥ तस्मिन्नरुद्रपपनवलिनीवभूमांप्रवृन्दंम १४ कंमिवघघदकूजितम ॥ दिक्षान्तं गतवतिनाह्लिवाजश्चनी
ति १५ श्रीएके वृनजनाकूलानवज ॥ निश्चलदक्षिमितम नाविवक्रवाकायाम १६ मंन्दिवसकनमस्याम्लिनीव ॥ अथ गवर्वतिम म्मिन्नतुजितसं तपंवल मिजलधिव
लानिमवाक्रन्दवत्यां नृदिग मिवपृथिव्याइनमूक्तिप्यत्र १७ कपिलधवलतामभनूकैलासवाह ॥ गृहीत्वाम क्षितानामाहा नियांजनं क्षिजाधमं ॥ हस्त्वमवर्दपिलोका
कृनृदिन्वेवं विलपिन ॥ सिंहासनमस्थानपमस्यतमीर्यदुन्मूरवे हृष्ट मृषीर्त सर्वे १८ ॥ ततीयमम्लानसनाम्नसानं क्षिजनक १९ पृष्टिनामगृहीत्वा ॥ य २० पूर्वावलसंक्षिम ३००
स्यमतिनः २१ आतावदनत्यमी हृष्ट २२ मादनम्नमूरवे कविवन्नक न्थक्षितायाज्ञि २३ ॥ कपुकदविमानिमानुन्नूचिनव्या दिग्धवक्र २४ कल २५ २६ थने २७ सायम २८ मुखे
क्षितिपति श्रीमयक्षितानाम्नाम ॥ तस्मिंस्थितांसमहनीमक्षिवानूदना २९ कर्पूनवन्दनकुन्तृ कपृणांविधाय ॥ तस्यां निव ३० श्चनृपतिर्ब्जना मिलनम श्रीक्षितंद्र कवरं
जलयांवलव ३१ ॥ विलासकंवक्षिकलालहतिप्रदक्षमानंनपत ३२ मवीनं ॥ सर्व पितमतित्रिजना ३३ मधोना ३४ ३५ काम्यितफा ३६ प्रविलपनवं ॥ मन्दंदकविलप

=प्र

नाम म त्के ष्का निंद्र नी पूनायाम्र स्त्रातृ मदा जुनी किश नर्ये र्गी नाव नाधनिति १॥ सर्य यानि नवास्र व ध्रु अनिता स्वाहू २ समाल चिनी साला लि १ प विमृष्य ग ॠ नव ह का
लांगुली किमनु १॥ ततः पूनादिन २ भीष्मानदस्ती नियथा विधिं॥ संस्वाध्य संप्रतिस्ताप्य गर्न्ते विरमकानयत॥ तस्मै चिडिकेवे संप्रतिस्ताप्य यथा विधिं॥ कुत्र कुरूप तोका
तिवस्नं कृत्वा र्द्धं नां ग्र धान॥ तत्र नमन्त्रि य २ स वें स्र त्र स्येजनपोतिका २॥ समेपर्च्य महा त्मादे १ मदानजन्म प्रमादिता १॥ कविकुत्र उनाम्कृत्र वेसन नमे वनपति॥ ध्ध त्वा मम माधि नाद
हं स्य स्काययू १ मुभालयं॥ कविकुत्र नर्ये ध्यान्वा मम मत्य र्च्यं मयादनाय॥ ममाधिनातनृप स्काचुम त्ला कम्म नाययू १॥ कविकुत्र जिनीत गधा स्वा नं नृप मा स्किनं॥ ममाधिनात
नृपेस्का ययू नाला स्त्र वेतत २॥ कविकुत्र तथा ध्ये स्वा गुरु कुलत्र गतामूदा॥ स्वामिनतं मम मा मा यमहान न्दं मम माययू १॥ मदागतनम भित्र २ बोधिसत्व नम ह्विया॥ मदम
दुर्भिना त्रिसु प्राप्त वने सर्वदा शुभ॥ एवं यथ नना कृत्र वेस्य तत्र राममा त्रिमाय॥ महात्मादे १ ममत्य र्थ्यं प्राकृतं सर्वदाम्रदाय॥ ततसर्वे पिमदुर्भ प्राप्य दिवं गता १ सदा॥ दि
व्यकाम मुख संभुञ्ज काप्राप्त वननाम सदा शुभ॥ एवं तस्य मही ऋस्य धर्म कीर्ति म्रवामता॥ प्रवा चिताऊगत्सर्वे मधिवास्या सनन्दयत॥ शुतेक्व त्व्न तमायाया तं दृष्ट्वा तु मम प्रमादि

म का

यार्थितः कूर्मेद गतां ग्रामं तुं नाजकृन्नमुदायतः ॥ तस्याकान्तिमती देवी सर्वान्तःपुरभूषिता ॥ सिंहासनं समानूक्ता सतामेभ्य समागता ॥ गान्धर्वी श्री प्रतामसंकीं दृष्ट्वा गतो भिका
मृत ॥ नत्वा मार्दनमीक्षकाः पत्र स्तम्भे समागता ॥ तदा राजनकायास्मिन् स्त्रियः संप्रसमन्ततः ॥ दृष्ट्वा कान्तिमती सर्वा स्त्रीकान्ता धीसमाहिता ॥ ततः सागरदत्तास्या बाधिस
स्वयमन्तरे ॥ अनन्तावादिमां गर्भ्यां सद्धर्मार्थसमाहिता ॥ ॥ धर्म स्थिता यान्ति ये ये विशुद्धिं प्राप्नुवन्ति तु स्थिंपेन मोयमथ ॥ प्राप्य वस्त्रं खवनं विषादं [illegible] पनत्रवा प्रा
गितरवंसलडं ॥ धर्मो हि देवेन कान्ति धर्मेय कोपि नायथो पत्र मस्तन हृष्टः ॥ तस्मात् धर्म इस्मनवता पपन्नाय न श्विनं धर्म मनतःष्ट्र कुर्यात ॥ धर्मो हि देवेन कान्ति धर्मेय कांक्षतं यथा वर्षा
वर्षकाले ॥ धर्मान् गंसामतगतन स्थानं दुर्गतिं गच्छति धर्मवानी ॥ अधर्मवानी तु ननः प्रमतो यां यां गतिं गच्छति मूढ दृष्टिः ॥ निहत्य धर्मं वनितः सर्व वक्तुं यथा कृतु
मन्तोगंहितः ॥ नक्ष धर्मश्च धर्मस्या वतो समविपाकिनो ॥ अधर्मान्नरकं यान्ति धर्मात्स्वर्गं यान्ति मज्जति ॥ इति मत्वा सदा धर्मः स्थानमसौख्य वांछितः ॥ सद्धर्मं श्रुद्धया कृत्वा ३०४
संवनकांसमंवनं ॥ इति देव्या समादिष्टं श्रुत्वा सर्वप्रबोधिताः ॥ सद्धर्मसाधना नकाः संवर्त्ती संप्रवर्तिव ॥ ततः श्रीमत्सुता [illegible] समुद्यानमेतः ॥ स्वामिनः समुपास्य

नेन समादेश पारो हंद उत्पन्ना संपूतो विज्ञान

१· चैत्ररथ। २· पुष्पक॥ ३
४· मिश्रिका। ५· नन्दन

हेम· शिशिर· वसंत
ग्रीष्म· वर्षा· शरद ॥

मदर्थं सं न्यवदयत् ॥ तन्निवेदितमाकर्ण्य नाजा सन्तपतिस्म तत् ॥ रणाधयित्वापवं सर्वमणुष्यित्वाव सर्वग ॥ रणाधयित्वाकलं कृत्रमइद्यानं सनान्यपि ॥ ततः कांतः श्रि
यां तार्यीपतिनिवान समन्विता ॥ तथ आनाप्य श्रीस्ना हम् द्यानं उपययेभुने ॥ तत्र मासमं यापोश्च पथ्यनी तंमनानमं ॥ उद्यानम वर्गीर्योणु वेथा कृत्र मदावनता ॥ ममध्ये नी
मइद्यानं सर्वर्तुपुष्पं महितां ॥ सर्वकलसमापन्नं नन्दनमिव रणाहितां ॥ सनान्यपि वे श्रेष्ठा कृतवयकृ उताम्बु ति ॥ पद्मासलादि सत्वध्ये पूर्ण निविहरां नृपा ॥ मस
मादस मृला हसंहर्षानन्दिता भवो ॥ सर्वेतुमित्रमित्वापि संपथ्यनी मृदावनेता ॥ तत्र मासं विनं दस्व संचनतीय रथे कया ॥ तनूका यांसमो प्रिया सवस्रीनउपाशयत् ॥ त
तुष्किल्लो गमानां मे सर्वर्तुपुष्पमहितं ॥ सनकृञापि पथ्यनी महानन्दं समाययो ॥ तेन श्रासीमहामत्वाहर्षात् स्त्वा नागितं ॥ सर्वान्तं स्वाकिं तान्कर्तुमेक स्त्वयम
पक्किता ॥ तद्वनाहानि श्रयासीत् लज्ञानहापतत्कथा ॥ सर्वानातावकसंसरवानागिता ॥ त्वाक्किनांवक्षणु ॥ तेन श्रासीमकाहिताः सर्वानीनानन्दनिडितां ॥ दत्वातिवाक्किमतंद्वयं
कर्तुमेकत्न सम्र्क्रियान् ॥ तद्वनिश्रयवाहात्तलज्ञानहातथापि सा ॥ दत्वातितत्विर्तं सर्वानन्दनिडान्वेतिनाप्यक्षत ॥ ततः श्रासी महावीर्या कृतीदान्ता तनाशयात् ॥ ता

तस्मात्... त्वक्तः सप्तति विमान; १ ॥ सप्तति विमानो ... ॥ ... सप्तति विमानः ॥

म जा

जनगणगम्भीयत्वकाहनमहावती ॥ अश्वनाशप्यदह्ली मानाशनयामहाशवी ॥ याजनगणगम्भीयत्वकाहनमहाहानि ॥४॥ तावपिदाउमिष्कन्मवाधिस्तवाशितानह
ह ॥ मदर्थिनाद्विजाद्रष्टं संपेष्यसावनस्वेन ॥ मस्त्वनोनीतिमंनकोमनकस्यप्रनाहितः ॥ विज्ञायत्वम्मदहस्यपिउन यन्यावदयह ॥ राजन्नवान्विजानीयामहि
न्तोयदर्थिकह ॥ जयश्रीमूर्तिमनोयोगावपिदाउमिष्कति ॥ गहद्वनापिगवाश्रं जयश्रीनिवृसत्काविह ॥ यस्ननाश्रगताश्वं योजयश्रीमान्नवाह ॥ श्रुतिमत्वा
महाराज जयश्रीयंयदाक्षुमि ॥ वाधयनकंमहामत्वंगतस्वदाननिवानय ॥ यदित्वमामहात्मामवार्यगनेत्रयत्नतः ॥ नूनममयोगजास्वश्चडावथ्यर्थिनपवंसपति ॥ त
राजमहाराजजयश्रीर्निवसंनाहि ॥ जयश्रीनहिगत्रापिमहास्यांगतवत्नवत ॥ कथंवापितवदत्तमयाक्षतन्नमंन्यगः ॥ विश्वानयमहाराजत्वमर्वाहुद्रमाहिकोः ॥ श्च ३०८
गिनिवाहिगंगनपवाहिगनभोमिनो ॥ श्रुत्वातज्जनकोराजाब्रह्मदत्तोविशादितः ॥ ततःसजनकोराजामतिकृतंतमासह ॥ सहमासमुपामस्तुपूर्नत्वंसमादिगगु
गतःनकत्तकमानत्वंहितार्थिगमयाच्यत ॥ मदर्थिस्यायथाकामंददामितद्विगंतव ॥ योजयश्रीस्वहूपां योगजास्वउत्ताहकी ॥ तावपित्वंकिमर्थितः सं

गत्वा च येन बलिभग्नमनोरथस्य · यदीयते फलमनुत्तरपिशाचपात्रं ॥१

प्रमर्त्तं न मिच्छसि ॥ यः पार्थिवस्य ददामि स्वभावो रुद्राणिकामपि ॥ जयश्रीकमलानाथ न तिष्ठत्रिभुवनस्य पि ॥ यस्य हस्तगता वागता स्वर्गश्रोत्रांशिको ॥ सत्तद्वनतपनाऊनुदम
वेलानाधिपाहवः ॥ मयात्वं प्रतिमानोक्ता पतितस्यकाऊयुवृत्तया ॥ निर्गतोनिर्ऊभिमनरथ तपस्वीव कथं वद ॥ सर्वार्थिस्थाय यथाकामं दत्त्वाद्य यथास्थितं ॥ कृतधर्मपवि
त्रस्य कथं वनार्थिवञ्चनं ॥ छलिमत्वा मया त्वामंहितार्थानि भस्मकतं ॥ अतिदानमनावकं माकथा हि त्वमोक्तऊ ॥ अतिदाना बलिर्बद्धो नावरःस्थापितगविनः ॥ अ
तिलुप्तलाशी ता सर्वनाशं विवर्जयेत् ॥ छलिविस्मयवेत्तत्वं यहिदयंयरथापितं ॥ अद्य यं मा प्रयच्छ त्वं किंचित्प्रोकस्य विरक्तावित् ॥ मयैवमुच्यमानापि त्वमश्रुत्वा वचो मम
॥ अद्य यत्प्रियं दत्तं दातुं यदि ममाहसि ॥ गृहाण्यमंपतित्युक्तं तपस्वीव छनवसन् ॥ यथा तिलपिण्डव्यं दत्त्वा थिलक्षणपंथन ॥ यस्मायशीयानि त्यक्त्वा माक्षुत्पात्र वनपि ॥ तत
गऊतिवाऊमनामुक्त पतितास्नुण ॥ तत्रा वध्यं पतितस्य त्वानि वध्यन् पानयेः ॥ बन्धनं वा प्रतिष्ठाप्य हनिष्यामि प्रयत्नतः ॥ तदा सास्मानपि सर्वांश्च निबध्य बन्धनपिवा
॥ प्रतिष्ठाप्य हनिष्यन्ति पतितस्यानयानुषा ॥ कदाचिन्नार्थिनः सर्वमहृदापि हितार्थिनः ॥ किं कनिष्ठेनकिंद ध्वव वनिष्यन्ति निर्माणिताः ॥ तथास्मान्सकलान्वन्धून्

वि स्रुग्रहामृता॥ विस्मयात् कृष्णह इति श्रीदेवकीमवमब्रवीत्॥ गच्छ त्वं देवकी सार्थे सद्य आनीयतामिह॥ वाञ्छितार्थं प्रदत्त्वाम्य एनयं यं मनानर्थं॥ इति नाहादिनं च त्वां देवकी वि
स्मयान्विता॥ नूनमयं भिनादयादिनि क्षन्त्वागर्भवतत्॥ मत्सा माप्नुनदानमृया त्रिमूर्तसमागते॥ यन्नीतं मम कृष्णं पश्चिमाया व्यवानयत्॥ अनेनापिट्ठना त्वं माप्रवि
शपूनवृज॥ यदि तुष्टस्त्वं विक्षप्ति कुर्त्वाभि मासि मोक्षं॥ इति संप्रागमं चाले देवगया निवाचितं॥ कृत्वान्तयामसत्वं समामसन्त्रिवमादिशत्॥ सान्त्वन्यपूर्वापूनमर्थी द
= निवा४ वगया विधार्यतां॥ गजसुकुमालनाम सुतमूत्पानयतंदिज॥ इत्युक्त्वादिस्त्वं ननस्तु यत्र त्वामायम स्थितिम॥ सापूर्नसमागत्वा देवकीमवमासतां॥ एवं मत्वायविप्रार्थ देवकीमा
= निवा५ विधार्यतां॥ नाहाहं पृथिवीं सुनं प्रदर्शयितुमाव्रजत॥ इत्युक्त्वा मन्त्रिराममनदेवकी पि विषादिता॥ मत्त्वं चक्रसमोक्षं गर्भं यत्नयन्त्र एवमब्रवीत्॥ मत्त्रिन्किंनविकानीषयद २७३
यं निर्दयादिजः॥ जिनार्थान् प्रपत्स्य प्रयाविक्रमिहागत॥ किमनन्तपुत्रं हृतं निर्दयं नक्षत्रा समा॥ एवं जिनं नत्वा नाम महास्यार्थकं विष्यत॥ इत्युक्तं देवकीत्त्वा
न मत्वं शतमस्तामति॥ हृत्यस्मां देवकी पश्य स्त्रमामसन्त्रिवमब्रवीत्॥ देवकीविप्रमसत्रम सापाया त्रिविनिंगतः॥ यन्नार्थं प्रत्यवत्रेवगृहीतुं न पतः॥ सिन॥ इत्यु

याविनं १

क्षाममहावस्त्रं समादाय ततस्सादरात् ॥ प्रविश्य स्वगृहं तत्र शुभासने न्यवेशयत् ॥ ततस्स प्रार्थितो विप्रं मम स्यर्थं समादरात् ॥ राजनेकां मयि स्त्वेवं प्रार्थयन्तं विलोकयन् ॥
याव नीरुक्तमिनत्वा निजावन्यपि ददानि ते ॥ तद्वदस्व ममाग्रतः किंनामाह्यत्र प्रयोजनं ॥ इत्युक्तः क्षाममहावस्त्रो ब्राह्मणो व्याधिसंकुलात्यपि ॥ वस्त्राणि मम सूपकल्पय्य [illegible]
समानहत् ॥ कानि सर्वाणि दृष्ट्वा मस्त्राश्च यालानि कानयत् ॥ प्रादायतं महामात्यं समालोक्यैवमब्रवीत् ॥ मयैतानि गृहीतानि दत्तानि शुद्धया त्वया ॥ यद्वापि वांछितं वा
स्यादर्शनेभि प्रदायस्व ॥ इत्युनिमनादितं कृत्वा मममंत्री पथि शंकितः ॥ पश्यन्मंत्री ब्राह्मणं हृदये पुनर्नवमलापत ॥ महाब्राह्मण यनार्थं कदर्हं न ददानि च ॥ किं तत्तस्य महा
श्रेयस्य दर्शनं नप्रयोजनं ॥ तव गितं तु धनाद्यपि इहलोकाय दिपूर्व [illegible] किं महाधनेन ॥ यदि गजपदं मात्र खाणे तायास्तव नितं [illegible] वदमागने दंकार्थ ॥ तदुक्तमिति विप्रो म
कृत्वा निर्दयमानसः ॥ नोडाकर्म महावस्त्रं संपश्यन्नेवमब्रवीत् ॥ येस्मिन्काले कीनधना गिनजलदं तु च प्रार्थयंताः सर्वत्राः किंचित्कर्मवध ततः [illegible] दलिनि
वहास्वैव मम दिवयन्त्रात् ॥ बालकोना स्वमस्वरू रूपकिन सम [illegible] यिवाभावि विभिन्न यावम स्वीनम स्मादरमव निजुर्के सर्वदार्यं कि लाति ॥ तदुक्तं स महामा

जा र्थं प्रसीदत॥ यदि मत्र भिनावानर्य्यां विघ्नं कर्त्तुमिच्छथ॥ मद्दत्वापापि मंतफा सा न कष्टं त्रमिच्छथ॥ यस्मात्र भवितावानन्स्वनुभावप्रसीदथ॥ एतत्पुण्यविपाकांश्चे ४ मदाव ४ स्वर्ग

निष्क्रिनि ४॥ इति मत्वा तवं न्यात्र विघ्नं कर्त्तुं न मर्हथ॥ स्वनुभावप्रसीदत्त सद्धर्मसाधनं त्रत॥ इत्यादिष्टं महीन्द्र ४ ध्रु त्वा तादेवतास्तथापि॥ महाद्भुतमिति प्राह्य सर्वाधिपा

धिवनिन॥ तत ४ सप्रसमतिर्विनितो बोधिसत्वाऽनुगच्छति॥ संबोधिप्रणिधिं श्रुत्वा वृत्रान्स्य देवसप्रवीत्॥ इत्थं तु समागता ४ सर्वे सर्वलोकाधिपा अपि॥ यदि दर्शस्तिनावा

नं कत्वापि त्रिजगन्निप॥ एतत्पुण्यविपाकेन प्रार्थयन्त सरत्क्रियं॥ चक्रवर्त्तिश्रियं नैवं नापि स्वर्गाधिपश्रियं॥ ब्रह्म समाधिपत्यो व्य श्रियं वापि न कामये॥ संबोधिम २ले८

वसं प्राप्तुं प्रार्थये त्रिजगन्निप॥ सर्वसंबोधिसंहानं पूनयित्वा यथाक्रमं॥ जित्वा मानगणान्सर्वान्त्रि ४ क्लेशाद्र्दकृतन्द्रिय ४॥ समाधिं प्राप्य सर्वज्ञ तव यं सगणा जिन ४॥

तत ४ सत्वान्समालोक्य प्रापयेयं भवाद्भव ४॥ तत ४ सर्वान्प्रसत्वा न्कां बोधयित्वा प्रयत्नत ४॥ बोधिमार्गे प्रतिस्थाप्यैवा नयेयं सुगतं सदा॥ एवं त्रिभवत्रैलोक्य सत्वाधर्मसमयं

सदा॥ वृत्र कार्यं समाप्यैव निर्वृतिं समवाप्नुयां॥ निर्वृतिस्याधिपसक्षीप्ति सत्त ४ सर्वपापक्षीणिव॥ गर्व्वतिथा यथैव त्वानि कानयय ४ समनात ४॥ यथापि गघ्वे त्यघूत अ

इति तस्य वचः श्रुत्वा निर्जनं च विलोक्य तत् । दिव्यं देहं तु द्विज स्वर्गं समाधाय यारुरोह तं । तत्र स्थाणः कः हृदयं करुणापतो भंच गालहृजन भिवाहमनेन मने । यज्ञोपवीत मिति जिनस्य चिरं विचिंत्य विप्रस्य वचसि मलेज्ञानि वावतस्थे ॥ ४

यु १ श्रुद्रयार्वीने १॥ समर्दविमलात्माना नवयूर्वाखियाविन १॥ सुलिंश्चपिसहाथानय स्पुदर्लमयागिर १॥ ततम् मध्यकुमंत् गामस्थेश्या नवंदिर ॥ यपिस स्वाभूद स्थेयं तजय
नकि मानसा १॥ तपिमर्वेमसाम स्वा नवयूर्वा धिला तिन १॥ यस्मयाप्रक्षतंदा नं सर्वथा वा धिवतसा ॥ सवाधिपुा जिन १ मर्वनवनु वाधिलाजिन १॥ कृष्णवंप्रणिधिं कृत्वा
स्मवत्रस्त्रयेमदा ॥ त्रुान्स्यं तं समालाक्ष्य सादनसंवमत्र वीनु॥ स्मगतकृत्वाप्स घारुत्वं स्वमासाय शिवामम ॥ समाधिमाधनेधर्मपूर्णं कृत्वा ब्रह्मा ग्रमं ॥ कृतस्नास म
स्मात्वामेत्री विलः १ समाश्रित १॥ नवत्रयमंनृस्य स्वाग स्कामं वा धिमानस १॥ तद्दस्थमे द्विजश्च्युत्वा नि १ काय १ स्या सही पत्र १॥ लिन १ कित्वा सिनादाय मदसानि र्यथोगत १
॥ एवं कृत्वा महद्धानं वाधिसत्व १ सहृदनु न १॥ तस्कोद दं गुरुं कृत्वा त्रिभुवन लोकसमाययौ ॥ नवत्रस्याम नामीना ध्यात्वा स बाधिमानस १॥ सर्वसत्वहितं कर्तुं तत्कोयव्य स्मरी
तल ॥ एवं समुं क्षितस्मत्र सर्वब्रह्म विशाविशि १॥ मानिनि १ कृ यमानानि वंदिता स्याधि मावती ॥ ज्ञा ह्यार्मकस्पिनतीर्थसहीसा छिनगावलग ॥ नन स्कादवगामृकाप ध्य
वृष्टि १ पपातन ॥ किन्नेगत १ सिनासिनु सियत १ ऊ १ धननिर्मुक्त हस्त्रम स सायु कथा नृवजाऊं पू १ स्वपल्लवकनेन निसादवे तवास्यान मूसु कणधवलका नत्रु ध्य १॥
=उ०

१२१

म जा

ता साधुमादिशत् ॥ तत्कीर्तिनं गं महाराजं सम्यग्ध्यानस्थमेवमब्रवीत् ॥ स्वामिन्कार्हं महत्त्वमना रथोक्लि किन्त्वायात्यथप्सितं ॥ अथ मत्त्वाप्त्वा दिवस तत्सर्वदा तु मत्त्वा ॥ कुति तार्यामना र
त्वा तं निगम्य सनत्वाधिपयत् ॥ प्रविश्य गां निमित्तज्ञस्य प्रष्टे गत्विवदयंतु ॥ गत्वा निवदितमाकर्ण्य निमित्तज्ञः ससन्नामितः ॥ तन्निमित्तज्ञसमीक्षे वनृपस्याग्र न्यवेदयत ॥ राज र
अश्वनीतिहित तार्यागर्भि धीश वतिकुर्वा ॥ यागर्भसंप्रविश्य स्या अनतोष्या स्वरवल्लयं ॥ नूनमयं महासत्त्व कवपूतो त्वत्स्यती ॥ तत्पुरीद महाराजयल स्मासु म दडना ॥ वृत्ति य
नादितं शु स्वानृपति संप्रमादितः ॥ मत्कृत्यं तं निमित्तज्ञं तं थाकानयित्तुमेच्छत ॥ ततः समन्तपति तार्यासिमप यप्रमादयत ॥ यत्थच्छसितमसर्ववल्लप्रति समादिशत ॥ त
ति तज्ज्ञ समादिष्टं शु स्वांसा महिषीमग ॥ तज्ज्ञानृपतिं भाड्कथाकर्तुं समानत ॥ ततः मामहिषी समह डाभिसमाप्ति तांश ॥ अथ मनत्वा स्वा तथिलोदरात् मयथेप्सितं
ततः सोमहिषी हृयश्या तनैः सप्रमान्वितः ॥ संकृपान्सकलान् कृत्वा लोकान्द्रपूर्ण संसमेहत ॥ ततस्ता हनिवध्यासो महिषी संप्रमादिता ॥ तज्ज्ञानृपतानवं कृत्वाड पूर्णसमान त
ता ॥ ततः सा सकलान्सौख्यान्समामनप्रमसमादनाप ॥ मत्कृत्यमगडसा तपैः संतोषितानकानयत ॥ तानवं मकलान्सौकानर्थिनः कृपणान्पि ॥ सुतुसा तन संत्तुष्टान् स्वकी

303

मत्पार्श्वो दोह लक्षण
मत्तुविनिवर्तीत् ?

भाव स्त्रोत्र
भातु पातु
चित्र फाल

तस्या वोदेह ८ अध्या स३ तिष्ठ मन ८

सुदमायपो ॥ ततः श्रीमती नाही महर्त्तिं हासमक्लिता ॥ सद्धर्मं सर्वलोकस्य हं समुपादेष्टुमेहत ॥ कथं नाहमिव यासो लब्धान क्षपतोकता ॥ सर्वान्स्त्रीकान्समामनुध्र धर्मं दष्टुं मु
द्यावनत ॥ ततः स्वयं नरेन्द्रस्य एवस्थाने मिलिकाभ्यर्थना ॥ समीक्ष्य नृपगन एष नन्दवें स्ववदयत् ॥ महिष्या देवेगर्भेण प्रविष्टः पृच्छाम हान ॥ नूनं ममस्यान लोचाय यदियं धर्मे
माददिरताह ॥ तदियं महिषी देव सर्वसत्वहितार्थिनी ॥ सद्धर्मं सर्वलोकस्या देशाय तुय थेच्छया ॥ इति गतं समुपादिष्टुं निशाम्य मनन्नाधिपः ॥ मुदितः राधयित्वा गुरु
माह समस्थो हयत ॥ ततः स्वर्णनलास्ये सिंहासनं महलन्तं ॥ प्रज्ञप्य [illegible] वीनां विमानेन त्व समधुयत ॥ ततः सन्नपतीनां ग्रा पश्च व याथ कानि देशः ॥ जनानामनुप्र तां नृ
वीन्तं पश्यन्नेव सुमार्दिनात ॥ देवश्चार्यो दियं देवी धर्मं मां देष्टुमिच्छति ॥ तदत्र सकलालोकानामेत्य यतत्वनं ॥ इति नाज्ञा समादिष्टं श्रुत्वा सर्वे पितानजनाः ॥ तथेति गतं नृपं
नत्वा तथाकर्तुं मुद्यावनत ॥ ततः गनगन पश्च मत्र याथ्य समन्ततः ॥ यथादिष्टं नरेन्द्रेण तथा लोकान वादयत ॥ [illegible] पौरिकाः सर्वे नृपादिष्टं मिदं श्रुत्वं ॥ यदाहु
महिषी धर्मं समुपादेष्टुमिच्छति ॥ तदिदं धर्मं भोदार्य [illegible] मिच्छन्ति यमुत ॥ ते सर्वे समुपागत्य [illegible] सत्कृ नार्थिनः ॥ [illegible] एवं याच [illegible] श्रुत्वा सर्वे पौनाः तविसम

यथाशिवाष्ट्रिभूर्मण्डवं सर्वार्थिस्थि समादयात ॥ दत्वानन्दमहलीरवंशु स्नानमन्तमावनता॥ तस्याशिरानसंनागंधं स्वामर्वार्थिनामुता ॥ सर्वदिगव्य समायातास्कड्डडं समुमाव

नत॥ तान्सर्वान्समपायातान्हष्ट्वा समृद्धितोषयत्॥ वाष्ट्रिगात्यथिकं दत्वा संतोषानन्दितान्व्यधात्॥ ततश्री मान्कर्मीनापि सर्वसत्वहितार्थतत्पर ॥ मणिकृतां महानागं

मिष्टस्वापिवार्थितिह ॥ ततश्चसीमं हामस्वीशन तालामकलनी ॥ काम्यस्तिामह यादिमपुनेऽसम सेवायत॥ ततद्रव्याणि सर्वाणि द्वापि स्थाप्यसमकरोत् ॥ पाद्यस्नाना

पंगवस्त्रगन्धिमालचूर्णकी ॥ द्रव्यादि सर्ववस्तूनि सर्कोभवीवनाघ्यपि॥ सुगन्धिधूपदीपानि सर्वर्तुकुसुमानि च ॥ स खाद्यखाद्यलेह्यानि पेयानि षड्रसान्यपि ॥ मू

लस्कन्ददलस्कन्धमानप्रसवं वल्कलं ॥ पुष्पाणि विविधान्यवंग लतास्कलजान्यपि॥ यकासनसपेथ्यानि फलानि विविधान्यपि॥ मोदकादीनि सर्वाणि भोग्यानि वि

विधान्यपि॥ सर्वाणि व्रीहि भोज्यानि बीजानि विविधानि च॥ तस्य पथ्यतमापन्नं महौषधिरसायनं॥ उद्यानस्थामलच्छत्रविमानध्वजतान्यपि॥ सरवहाहनेभाया

दिविविधान्यासनानि च॥ सर्वालंकारवस्तूनि नानारत्नमयानि च॥ सर्वेषामपि श्रलुनां नाशीश्च महतीः कथाः॥ सर्वर्षिनक्षत्रनाशीश्च नवथानक्षंश्च गागत्रान् ॥ कृ ३०१

मानिकाश्च तदा क्षुस्सर्वालंकानलुधिताः॥ दासीदासजनाश्चापि प्रतिस्थाप्य समन्वतः॥ एवमन्यानि वस्तूनि सर्वाण्यकतधन्यपि॥ गत्वे तानि च सर्वाणि संस्थाप्य समराजतयत॥ तद्
स्थास महासत्वो बोधिसत्वा समागतान्॥ सर्वान्यानर्थिनः पश्यन्न हानन्दं समाययौ॥ ततस्तानर्थिनः सर्वान्निमंत्र्य यथाक्रमं॥ यथाभिवाञ्छितैर्द्रव्यैः संतार्पितानकोनय
न्॥ संतुष्टान्सकलान्कृत्वा संपश्यन्संप्रमोदितः॥ तथापि समतापमत्त्र सादनभवमादिशन्॥ एवं तत्र समातरायथ यथास्थाय्यौ धर्मीप्रिति॥ तदन्यस्तः समादाय संवनकास
मुपुत॥ विनम्यद भायायत्स्थः स बोधिनिहिता भार्या॥ प्रिनतलरागनं कृत्वा संवनकांगगाक्रिम॥ एवं तत्परानां रत्नसर्वो स्थाकामुपाध्ययत॥ यथाभिवाञ्छितं द्रव्यं दत्वार्थ
मन्यायाजयत॥ तदा सर्वार्थिलोकाकृत्स्नदर्शं संप्रसादिताः॥ डव्यमासायतं ज्ञानाः प्राव्रनन्सर्वदागुत॥ एवं तत्र सकलालोकाः सद्धर्मगुणलालमाये॥ प्रिनतलगनं कृ
त्वा महत्ला हं समावनन॥ तदा सर्वे ते लोकानां सर्वर्षा तडवाभिलों॥ निवृत्वार्तं तत्रात्मा रूपावर्लगसमक्कत्तः॥ तद्बुद्धास महासत्वो बोधिसत्वो जगत्त्व हृत॥ मंतानन्दं
सर्वं तत्त्वा संप्रवजगाक्रिम॥ ततश्चासौ महासत्वः संप्रसनातिलात्तमः॥ सद्धनाथ सर्वस्वमपि सर्वंतु समभेक्षत॥ तस्य तद्जगिति नामि गर्जेऽन्तलताहर्षति॥ या

म रा

नीयास्मस्तागिस्थेसमर्थयित्तुमर्हसि ॥ ॐ ह्रीं मयासमाख्यातं ॐ त्वामानय ॥ वनी ॥ पद्मावतीं समालोक्य माधवीं चैवमब्रवीत् ॥ पश्य कंतं यवांस त्वोप्रलिङ्गतं मृयाय पथा तथ्य हं
सुमपाती यशस्वामयस्थेयर्गीकर्ते ॥ ॐ ह्रस्ह्रा सामर्हासि ह्रा मानमान्ह्रा पद्मकं ॥ प्रवनकीरवमारोर्गो नसाको मसंसरवावनत ॥ मृत्युयाताविमानात्ता छ ह्वबतीयरिववनी ॥ कान्ति
मत्या ॰ पुन्नागस्वापश्यनीसमृपाश्ययत ॥ छह्वांतांरवात्ते मायातांविप्राक्ष्नाम्पाप्रितां ॥ कान्तिमतीसमालोक्य स्वामनेनसमृपाश्रयत ॥ ततछ मार्हसि पीयाह्नी पश्यन्तीनयमावती
॥ छह्वकीगत्यवेकाकंसादनभवमब्रवीत् ॥ अयिविद्याधरा भवनवनी सर्वदलवनी ॥ तद्धाग्यसमपदाय कमानो विद्यमकृत ॥ ॐ ह्रीं मयासमाख्यातं ॐ त्वामानय मावती ३१८
॥ कान्तिमतीं समालोक्य सदनभवमब्रवीत् ॥ अयि किंदविसमया छह्वकान्तादिव्यानिमन्दनी ॥ हिमगिनावधपश्च कन्यामवततापस्मलेक्ष ॥ अयानि मंतवापपसंओकादिव्यत
विनी ॥ काकापद्मावतीनामयात्स्वेषागसतायहि ॥ ॐ ह्रीं मयासमाख्यातं ॐ त्वाकान्तिमतीमत ॥ तांनय ॥ वतीं प्रश्य मादनभवमब्रवीत् ॥ मोका छह्व नन्दनीकांकोकन्याप
मावतीमुनथा ॥ तन्मूर्ध्ति समसमालिख्य संदर्शयितुमर्हसि ॥ ॐ ह्रस्व साससमालिख्य तन्मूर्ध्ति हसपदिक ॥ पद्मावतीं समाकानीं कान्तिमतीं संदर्शयत ॥ तन्मूर्ध्ति निरिवतां ०

कान्तां पश्चाद्वीरमारकर्णीं ॥ दृष्ट्वा कान्तिमती देवी प्राप्यानन्दं सुमादिता ॥ ततः कान्तिमती सा तामास्य स्वात्मजं वनात्शिरं ॥ गतं दुःखं मुखे ध्यात्वा तस्तोषमयक्ति विक्रया ॥
गतं दुःखं किं तु काले कां दृष्ट्वा नयनावती ॥ कान्तिमती विषादत्वं पप्रच्छ वं समादरात् ॥ किं तस्य स्वं मत्तं देवि यदुःखं विमञ्चसि ॥ तच्छ्रुत्वा समा [illegible] मयय
दि ॥ कस्मिन्निति यासमारख्याने कान्तिमती निगम्यता ॥ तां नयनावती वीक्ष्य विनिश्वस्य स्ववमब्रवीत् ॥ नयनावति पत्राम कुमाराम्भो विनागिता ॥ [illegible] मस्या ग्रम गत्वा वनादि
मापसंरक्षणं ॥ कथं पुमांस्तं महाभूत्वं विनीय पतिविधा धयन्न ॥ [illegible] प्रतिस्थाप्य कोलत्र गां प्रवालनयन ॥ श्रुत्वा निशम्य स्वावतः खो मासखीं नयनावती ॥ कान्तिमती समाश्र
यस्त स्वयं धन्येव मब्रवीत् ॥ [illegible] महादेवि माकृथास्त्वं विषादतां ॥ मत्सुयत्नं कार्यं विधास्यामि यथाशीघ्रं समानयत् ॥ एतस्यां मठ भीं मूर्तिं समानीतस्य यथाविधि ॥ कृ
त्वा धैवाहिकं कर्म कुर्यांस्त स्वन्वं मासिह ॥ तं कड्ढेवाहिकं कर्म तत्प्रपश्यित्वा गत्यानपि ॥ गत्या प्रतिवन्धित्वा कार्यस्य तन्विवन्धनं ॥ एवं कर्म सिद्धेवो कृतां देवानुयागतः
गतो यापकी हृदयं गतो यद्वेषेण ज्वलनं मम ॥ श्रुत्वा तत्यासमारख्याने कान्तिमती निगम्यतो ॥ तथ्यमन्नं भीमादित्वा कर्तुं भवं समेष्कता ॥ ततः भेतास्वरूपां कं निवधस्वा

म जा

वस्तुमर्हसि ॥ ७१ ॥ गमितया क्रमात्कश्चिन्मनिवृन्दाहितक्रिया ॥ पम्पावन्या महेन्द्रं ख्यापिनेवान्यवांछितं ॥ तदाविश्याध्वनीसार्कं मनिवृन्दमनादिशं ॥ विनीय वक्तुं स्वामेवांधीम
त्वा मुपयाउयत् ॥ ततोशीमानिवृत्तस्य धान्यं शुस्वाहि वाधिगत ॥ गत्वाय म्पावर्तीं पथ्यं नक्तं छ्रीकान्त ४४ मानस ॥ ततो धीमान् कृमानस्य प्रक्षाल्य स्वशिनामर्गा ॥ ततोत्तनार्थपिस
र्वाङ्ग पम्पावन्यास्तु निकृ यत् ॥ ततो नत्वा वहिः कौर्यं नापश्च गनमायत्री ॥ तस्य संदर्शनाद्धु याचागोमिश्रस्त्र धीफित ४६ ॥ ततो नावागोमिसं तफविता माप निमूर्च्छिता ॥ तयां
लिविदर्दि एथ्यवने वस्त्राल्कांसमामायथो ॥ तहृष्ट्वा मान्मनात्स्य ४७ प्रक्षाल्य स्वशिरार्मणि ॥ पम्पापत्या समरस्व ४८ क्रमत्सप्रवत्वान्यवभाषत ॥ ततोत्तमानि पीयाश्च विलस्वास्वं
समायया ॥ ततस्त्स्या मन ४९ मोरव्य मवापतञ्ज मात्समर्थं ॥ ततस्त्याव सस्त्विलस्त्र संवर्छ्रिलमिथ ५० ॥ क्रीडा ताडनेमेलापदर्शनहमनाद्विष ॥ ततोन्यसमनोगीविप्रस्नागू
र्तापिरसो ॥ निर्लज्जान्मागसंवच्छ्रीदम्पतीवप्रवनउ ५१ ॥ माद्वस्नाह समवक्षी दृष्ट्वासानय मावर्गी ॥ लोकर्ममाधवीवापिसमर्थ्यदं मृषावदत् ॥ सहर्षं मिछ्य गकार्य यय
र्विछिय गमया ॥ यदगोम्ताहृ संवक्षीवनगौजायामगीयथ ॥ तद्ववानेनेमामाय्य कुमानं पत्रिवायशयत् ॥ कृत्वावेवाहिकं कर्म वानयतु गस्तरम ॥ माधवित्वं समाना ३१४

ग्य पद्मावती विनोदय ॥ यस्य तीर्थ गत्वा संवत्सरो वाञ्छा प्रभवति विघ्न १॥ इति तथा दित्वं कृत्वा माधवी सानुमोदिता ॥ पद्मावती समानाथ्य वैवाहपर्य्यवाधयत ॥ तयासंवाध्यमाना सा
पद्मावती नतानना ॥ लज्जा हर्ष विविर्तिन्त्रो स्यानको नाना हस्तानयया ॥ गौतमापि कुमारं तं समानाथ्य प्रवाधयत ॥ कर्त्तुं वैवाहिकं कर्म पद्मावत्या सहानघ ॥ ततस्मी कुमारस्य
मतिर्वभाविनागिम २॥ वाञ्छा प्रसिना कांक्षी गत्वा ध्यानमास्थितः २॥ सद्धर्म साधना कांक्षी सद्धर्म निस्पृहः २॥ वाधि विर्कं समाधायत क्लेशानसमाहितः २॥ ततः स्युद्यानः
समाश्रित्य समाधिध्यानसंस्थितः ॥ विहाय तं गौतमस्तत्र सभस्य पर्यवाधयत ॥ ततनानाविधानेनवृध्यमानाथ्य वाधितः २॥ समहास्मानथाध्यास्वानस्कोनिस्थविताङ्ग्रिय २॥ तवल
गिरुमा २ दृष्ट्वा पद्मावती मनुस्मरन् ॥ नृपस्तन्वधिष्ठितत्र विलोकयन्नृपावनत ॥ तद्दिनाथिपस्तं कृत्वा समस्तीमानय पावती ॥ नि ४ मत्य समस्तमानत्र विलोक्य तमपश्यत ॥ तं दृष्ट्वा
मदसि यत्समहर्षे २ सा हृताङ्गिनि २॥ स्पृष्ट्वा अ २ प्रणतिंकृत्वा पश्यनीमनुपाश्रयत ॥ तवतगिमहर्षि २ मपश्यं क्षानय पावती ॥ गलदश्रुविनयाज ४ पश्चर्वं समादधात ॥
पद्मावती मदसा कि कृगतानय पावती ॥ वस्तुदिनानिनपश्यमित स्वप्रलिवदस्यमे ॥ इति महर्षिणा पृष्टं कृत्वा मानय पावती ॥ तवतति नमालोक्य सादरं भवमब्रवीत् ॥

म मा

प्यनयायहं त्वामद्दिष्कताव्येहि ॥ तनत्तम्पृथिवीपृथ्वं सर्वदा स्वामिमवेत्तु ॥ ७कुमृक्का मांसमालोक्य समन्वाहर्तुमैक्कत ॥ अथर्षिश्च प्रसन्नात्मा एव तमिश्च समर्पयत् ॥ पद्मावती
कुमानायसं प्रदत्वाश्रमं ययौ ॥ ततश्च श्रीमान्कुमारो वाक्षीपाविनी ययथाविधि ॥ पद्मावतीं समादाय स्वाश्रमं समुपागयत् ॥ कांश्चित्कालं तया सार्द्धं पद्मावत्या समं मानतः ॥ यथाकाम
सुखं तृक्का वमतरुप्रमादितः ॥ तत्र हृक्कान्तमाकर्ण्य द्रुमद्दक्काननाधिपः ॥ मृपालजं कुमान्यं पुनश्चानतुमैक्कत ॥ ततश्च मजनकीमाजा समं तीजनपौर्भिकः ॥ [illegible]
श्रमं तत्र महात्मा हि च महावनम् ॥ ममायानं समालोक्य स कुमानश्च स [illegible] ॥ सह सा प्रवनक्त [illegible] गमम सन्नतः ॥ ततः जनकं हृष्ट्वा कुमानलक्षितानन ॥ पादाक्र
प्रणमितं त्वापि तु च [illegible] भावेन तु ॥ [illegible] मोपि तमालोक्य दत्त्वा [illegible] संमृताः ॥ स्वाश्रमं समुपानीय [illegible] भनन्यवगयत् ॥ [illegible] प्रभ त्वाम [illegible] द्दक्काननाधिपः ॥
सम [illegible] जनपौर्भापि ततः स्वनसमाश्रयेत् ॥ ततः पद्मावती सापि विश्वसत्वं सपदान्त ॥ नता नेनाप्रहर्षेव स्वालयं महसा ययौ ॥ ततश्च [illegible] म [illegible] रूपतश्च ॥ पुनश्च
सर्वप्रवत्नालां विक्रमं तं न्यवदयत् ॥ तच्छ्रुत्वा सपिता नाजा सानन्द विस्मिता ययथा ॥ स्वालजं तं समालोक्य [illegible] मंचैव समब्रवीत् ॥ महर्षे स्वत्सु यत्नेन पुत्रायं मन्यपाल

३२२

वत्॥ लवणेनन्महत्कार्यं कृतं संसिद्धमधुना॥ तदिदानीं प्रसीदत लवणं प्रार्थयाम्यहं॥ तन्ममानुग्रहं कृत्वा साहाय्यं कर्तुमर्हथ॥ आत्मनामयदकार्यं कार्यमनं तथाधियं
॥ कृत्वा कार्यमनन्तु मिक्षामितस्तम

[illegible]

म का

निवेदित ॥ अस्माभिश्चागमं प्राप्तं तत्कार्यं पश्चिमादिहागताः ॥ अनुकंपा च मत्स्यस्य मत्तानि तत्र दिवानिशं ॥ तत्र महासागरमासाद्य सुखावहितं मम कर्म ॥ इत्युक्तः स तु पालयन्ति तान् एवं
यविक्रयत ॥ महामत्स्य एवं महात्मानं प्रवर्त्तितं ॥ तत्कुर्यां सर्वमस्थ पाय भगत्यात [illegible]य ॥ [illegible] मन्त्रमुनीन्द्र [illegible] विवक्ष [illegible] ॥ मायाक्षयान्विमान्सर्वान्
माम श्रेवमादिशंतु ॥ [illegible] सर्वमावीयदस्तवर्त्तितं ॥ [illegible] कनं [illegible] पायकर्वेनु मत्समाधनो ॥ [illegible] त्वा [illegible] तथा ॥ तद्गत्वा त गामा
पायं यथाविधिप्रवर्जितं ॥ तथापि सामहा मामी गामिमाने वसर्वथा ॥ तयं सा पनिरुक्तं [illegible] समकर्ता ॥ [illegible] पश्चात्वान [illegible] ॥ [illegible] पयोने श्व ३२६
नेवसा [illegible] कश्चित् ॥ [illegible] समहीयातामसत्ता सविषादितः ॥ अस्मात्मन्त्रिकं [illegible] सर्वान्समाम [illegible] वमब्रवीत् ॥ [illegible] त्वा तं सर्वोपाये न [illegible] ॥ तदन्यत्किं
महापायं कुर्याम तत्प्रवक्ष्यतां ॥ [illegible] समादिष्टं [illegible] त्वा तं मन्त्रि [illegible] ॥ सर्वेति संमतं कृत्वा न पाय्य एवमकुर्वन ॥ [illegible] महात्मानं [illegible] कन [illegible] विधिः
॥ तदनन्तविधानन [illegible] सर्वत्र कानय ॥ यद्दशान्त्यपि [illegible] मसि [illegible] दयामास ॥ सर्वस [illegible] सर्वार्थिषु [illegible] यार्थित ॥ तदस्यनत्य [illegible] तु महामति

[illegible]

ः शिवात्तवः॥ सर्वलक्षार्थसंतप्ती सर्वास्वातातिथ्यकिं कृतम्॥ यदा तत्क्षणक्रतवस्तत्र प्रार्थनीयगार्थितिः॥ नूनं तत्काम्यया स्मात्तिः सर्वास्वासम्पत्तंगमत्॥ ऊर्ज्जितक्रमाकर्ण्यत
पतिः स प्रबोधितः॥ अर्थिनां ब्राह्मणश्चान्यश्च समागमस्तु वमादिशत्॥ तव कः समुत्सागत्वाहिमालयमहामणिः॥ मणिचूडस्य संप्रार्थ्य सर्वथा नैव सर्हथ॥ ऊर्ज्जितोहामसमादि
ष्टं त्वाम सर्वेपि गतिश्चेत्॥ ततो यांति प्रणिविहृत्य अदृष्टानिर्ययक्रतवः॥ ततः क्षत्राश्च महत्पहिमालयसमागताः॥ वन कान्विष्यमर्वत्र गदानमनुयाययुः॥ तत
हासबोधिसत्त्वोपि प्रसादगौण्यबोधयत्॥ अपि वा पुनरन्यत्र गहनं समुपाश्रयत्॥ ततो वर्ष्यविविविक्तम बोधिसत्त्वः समाश्रयत्॥ जगद्धितमसमाधाय मनः सर्वव्यविक
यत्॥ कदाहं बोधिसम्प्राप्तं पतिपूर्वेजगद्धितं॥ स्वदेहमपि दास्यामि यावत्कं स्वः स्वयंमृताः॥ यथा मरीचिकानुच्छेद्वीक्षतंमनाधनाः॥ अपि सनाहि ला सर्वसंज्ञायत
जगद्धितं॥ नूनमत्र समायाता मम हृदयावकाशना॥ ... सर्वं मनसि ध्यात्वा सर्वमाख्यव लोकयत्॥ ततो गत्वा समुपाययाता न्यवक्षविप्रान्समीक्ष्य सः॥ बोधिसत्त्वः प्रसन्नात्मा स
हर्षात्समुपाव्रजत्॥ ततस्तान्समुपागम्य सादरं संप्रसादयत्॥ नीत्वा श्रमं महात्मा स स्वाश्रमं समपूजयत्॥ ततस्तान्स्वासनासीनान्सर्वान्स्वागतमादितः॥ कृताञ्जलिर्दि

का॥ कासौ दृष्टत्वया तडुडेलालक्ष्मीरिति स्पन्दन ४॥ कामध्वजगतलोका स्पन्दन ४ किं मदृष्यसि॥ अथवा दृष्टमगा वद तु ४ स्थांशु ४ संप्रमादितः ४॥ भावबाउत्यनूपा क्षे नन्दन्य ४ का
मिस्पन्दन ४॥ ऽनुरागिमया दिशं तु त्वासा का कानयधवनी॥ माधवीं नाम मालाक्ष्य पेनवसमाधंत॥ किमसौ कामदेवो या ऽनूडको याग्निदग्धितः ४॥ वन्द्रावार्पि किमवामा
वतुल्यो पाकालक्ष्मितः ४॥ ततुल्यो माधवीपाकनदन्य ४ कामिनि स्पन्दन ४॥ या तु त्वस्मृपवान्दृष्टत्वया सोकथकामिनिति॥ इति नयामसमाख्यानं तु त्वासानयधवनी॥ प
यावनीं समालाक्ष्य माधवीं देवमत्तुवीरः॥ गृहीतं मादनसखीं मलपभवमयाव्यूहं॥ यासावतुल्यसौंदर्यनृपवान्यन्नधाकृमः ४॥ साकांगेनगतेनाहाव्रजं मंदकृस्मनन्दन ४
कार्किमस्या महि यायामनितृजाविधः ४ स नः॥ सकृमानाम ऽगारखो हतुल्यसौन्दर्यनृपवान्॥ दिव्यानितेत्वब ऽर्भूतानकडलेकधमहितः ४॥ चिन्तामणिय माधूरीषः ४ तु क्रान्द्रिय ३१३
समाध्युय ७॥ सर्वार्थीक्ष्मितमंतर्लोसर्वलोकहितार्थनः॥ तुक्रगीतावितृक्षात्मापनितुक्तिमगुलः ४॥ स्वपनाख्यकिमात्मा नीवतुत्रंभ्रविमानिकः ४॥ सद्धर्मसाधनायागी
सर्वीनामृ ऽजिवली॥ अथ ऽप्यपमृधीवीनि ४ कौ ॥ विजिक्षितमन्दियः ४॥ जिनलक्ष्मीसंनकां ऽशीध्यानसमाहितः ४॥ सर्वशास्त्रकलाविद्याविशानदाविवक्षणः ४॥

प्रज्ञाननाविधनज्ञा विज्ञविज्ञानवादिजिता ॥ सर्वसत्वहिताक्षनसंबाधिगुणन्वालसह ॥ दूर्तीकदमकान्ना सर्वलोकाधिपप्रभुः ॥ सर्वविद्याधिपः शाकामहामक्री सुनीतिवि
त ॥ विनीतानाथस्वात्मस्फुः मस्पेवाप्विनयीहरी ॥ बोधिसत्वामहासत्वाधर्मिष्ठधर्मपालकः ॥ किमर्वविदनौकेनसाक्षा क्रुसंदुद्वाकृत्यारानुग्रमस्वधर्मतः ॥ आत्मोतसमृद्धिसिद्धि
तांगवान्‌ ॥ श्रुतकुरौ इति एवं पन्नेः प्रन्नुपामोनेपालकः ॥ इत्येवं समस्तमेयोख्यातंनतुभिर्थ्थकरावना ॥ पद्मावतित्वमप्येवंसर्वसमन्वितां ॥ ज्ञानंतोमनुपामिनगंका
ध्वितमाक्विता ॥ न्नत्नपन्ने शाक्षापिमहासेत्वामहर्षिकः ॥ यूर्वेश्चार्यदिसंथागः स्यात्तस्यः सहिमाकुल ॥ गदर्देगंमसारोगंव गीहत्स्पपयत्नगः ॥ आनीत्वाम प्रदास्यामि
हर्षेनमनसादयं ॥ श्रुतिमिदंकमाकर्णं पद्मावत्यतिलक्षिता ॥ गतरस्मिं विवेकार्ष्टी प्राह्वैनयंगावतीं ॥ श्रोसुलासिनिनिर्वृतिं उपहास्यब्रवीषिकिं ॥ श्रीहरसक्तुधसंप
न्नोविधनपन्नुपर्कृत ॥ श्रुत्वाक्षिप्यगेयाख्यातेंरवामानयसावती ॥ पद्मावतींसमालोक्य माधवीं वेवमब्रवीत्‌ ॥ यदीश्रुतिमहदविलंबक्तोगंननालंसं ॥ सर्वथाहंम
नोनीयसमर्पयामिप्रधना ॥ श्रुतिमिदंकमाकर्ण्यमाधवीविस्मिता ॥ पद्मावतींसमालोक्यप्राह्वैनयमावतीं ॥ यदिहगजाधिपंतंदसमानापिउमात्मना ॥ श्री

म आ प्रसन्नाश्चयथादक्षो॥ तद्दर्भं दर्भमादाय साप्रसन्नागयामद्य॥ एवमुक्ता भगवान्विनीनृपंविष्णुध्यानीवपर्वते॥ तदाथ स्वस्थमनारामस्तां मध्येकृत्वाविनिर्ययौ॥ सविनंमंतिनीस्त्वं वदस्वि
निश्चिनिगांतयः॥ कन्यापियाश्चनीमागंमनिकूर्तंमहामतिः॥ सुप्रसन्नमनाकाऊं समयं पूर्णीदमब्रवीत्॥ हा कुमाने त्वया तेनं मक्षं दत्वा समर्पितं॥ कदिदानींवरणं(
क्विन्त्वावनितुं भमस्मर्हसि॥ तावद्धात्वं मम पुत्र त्वं यथामयायत्स्वमे॥ कथोनतुष्ट्याकार्यं संसाधयन्समावने॥ इति गत्या कोमावको मूर्ध्नि मनि दूरतः प्रबाधितः॥ कथाहि
निप्रविहाय नत्कार्यं साधकोनक्रुः॥ ततापदच्छ्रुतिरक्षंगं विनीय नयच्छावतीं॥ महर्षियोनमहेदृश्वसमामन्त्र्येवमब्रवीत्॥ महर्षे यदर्थं नागं कुमारादिव्यसन्दनः॥ त
त्वात्समक्षा वेशीं दवी मक्षेयाउं समुत्सह॥ तद्भवानपि यत्कार्यं तत्साधयितुमर्हसि॥ यदर्नंन्तुमित्क्षमिपम्बावस्या गहृगिनो॥ तदनन्तकुमानं धसाद्धं तत्र हिमालय २१८
शृंगमालवननर्यात्वानागन्तुमर्हसि॥ इतितयादिनंतत्वागोमनमः स्थानमादिनय॥ तथाहिमालयगंस्तभेत्वगेन्यामहः॥ ततन्मायानमोनृक्षकुमानरगो
समाप्त्वितमा॥ आकाशात्तत्वनन्त्याशुहिमालयसमाप्ययौ॥ तत्र साधमाभागत्य समवतीर्य यानतः॥ प[illegible]समागतंमृसानेसमपावनं॥ ततापसावतीं तत्र

मशिवृतानूनां गिरीं ॥ कामाग्नितापदग्धांगीं विषादग्रस्तां विमोहितां ॥ वन्दकाकिंगिनायां गामधिष्ठाप्य समादवान् ॥ माधवी तु पवानलमथ निवर्य समाश्रयत् ॥ तां दृष्ट्वा म
नृपस्याशु तत्सानयमावती ॥ माधवीं तां नृपासीनां समीक्ष्यैवमपृच्छत ॥ माधवी यं किमर्थं त्वं पश्चादशीनिषीदसि ॥ किं वा वाग्भिर्विना देवी तत्समाख्याहि मत्पराय ॥ इत्यु
क्तवत्तयासख्या माधवी सा विलोक्य तां ॥ सखीं स्निग्धमानांस्यां सम ता भवमब्रवीत् ॥ नयश्रवणि समायामि समक्षत्र समाश्रय ॥ यदर्थं त्वं निषीदसि देव्यासहृद्वद पृच्छ
॥ यदा त्वं मणिवृक्षस्य नृपेण समेव पूर्य्यत ॥ तदा नरस्य कृमा मे स्या श्रीलं नागमनूनागितं ॥ तडागस्यनु दग्धांगी विषादग्रस्तविमोहिता ॥ तत्क्षणे जनकाय कृतगीतायां स्त्रा
पिता मया ॥ तत्र वेश्मी समालोक्य यदस्याज्ञान गमनाय ॥ उपायं तत्समाश्रय सर्वथा कर्तुमर्हति ॥ इति तया समाख्याते तत्त्वा सानयमावती ॥ पद्मावतीं समाश्वास्य माध
वी चैवमब्रवीत् ॥ देवि धैर्यं समालम्ब्य तिष्ठ त्यक्त्वा विषादतां ॥ त्वत्तापगमनायाऽयं दत्वा पत्रानयाम्यहं ॥ इत्युक्ता सा समाश्वास्य समावतीं समाधवीं ॥ मणिवृक्षं कुमारं तं समा
गत्यैवमब्रवीत् ॥ कुमारत्वयाप्राक् कृत्यं सर्वं हि तं तथा ॥ इति संश्रुत्य समाश्रय तत्सानिध्यं प्रपन्नय ॥ यत्समावती देवी नागान्निताऽपि गात्रे ना ॥ तदस्यानागीतस्य यथैतया

मन्येपि च हृदःसति वशिष्ठाया स्मेवने ॥ अध्याय पापसमाप्तकामफलमूलपत्राशिनः ५

म. आ. वल ॥ यत्क्षीणाग्निप्रदग्धास्मान्नमयमपीनृणां ॥ विनायां स्वयमानुष्कृत्वा स्नानमपि धक्षते ॥ तदत्राग्नेः महत्या पुंस्त्री बुध्या दहनात्तु वै ॥ आयतनानृतं धातं सर्वयापा
निदानृतं ॥ एतस्या याति लिपिका स्नामहास्तु ॥ त्वोग्निकाविनः ॥ सुसक्त वदनाक्रोशानिपतन्त्रीनकक्षुवं ॥ तदानत्रनके ते विज्ञाता नृशोमकः ॥ स्तहतः ॥ सर्वदुःखामहाकृता
॥ प्रहतनयस्तुसमनाशः ॥ एवं दुःखोपि तु ज्ञातः ॥ सर्वभूतनकस्थापि ॥ तमं क्लीवातिदुःखार्के च न त्वन्तमात्र वै ॥ पुण्निमत्त्वामहातिदुःखं विज्ञानयमसमाहितः ॥ सत्यम
तन्मया यथार्थं नान्यथायविमानय ॥ स्वपतास्मदितां धनंसद्धर्मंयदि वाच्छसि ॥ तथा मे वचनेनाग्नि स्नानेन तस्मान्नमोपमां ॥ पवित्रीयानयो माऊं नाश्ना तथा मे ३२१ वा. अ. न्यायमे ॥
समाहितः ॥ सर्वसत्वेक्षिता कृत्वा संवन स्वसयानुते ॥ एवं कृत्वाय यथाकामं दत्वार्थिनः ॥ समाहितः ॥ वाधिवर्यात्रतं कृत्वा संवन स्वअगच्छितः ॥ तथा तमसरूलं निस्वं
सर्वत्रापि हि वंद्धवं ॥ यंथाहि वाक्षितं मोरथ्यं तु क्षायायाः ॥ संनालयं ॥ स्वर्गेपि सर्वदा मोरथ्यं तु क्षासंवाधिमानसः ॥ स्वपयास्मक्षितं कृत्वा संवन तथा ॥ स
यातुते ॥ ततस्त्वं नकक्षापिगमिष्यापिकदाचन ॥ सर्वदासहनीयाः ॥ सद्धर्मव्रवणा वय ॥ एवं विहाय विहाय तत्र संपनीकृविधानयतः ॥ यत्राहि वांछा

अयथा-ज्ञानिवर्यायनं ध्वत्वा ३

५ इति गौतम मार्गे आश्रमे कन्यां यथाविधि। भवभूतिर्ददौ कन्यां विद्याधरीं तु हि सितः॥ अथ विद्याधरी प्राह गच्छामः स्वाश्रमं पुनः। स्त्रीरत्नोद्धरणाद् धर्मं प्राप्नं धर्मसुपुत्रकः॥ इति सर्वान्स्वके स्थाप्य भार्या शान्त्वा आश्रमं ययौ। किंचित्कालं तया सार्द्धं विद्या
धरी निरतबुद्धीः यथाकामं सुखं भुक्त्वा रेमे तत्र प्रमोदितः। प्रति तापूरितो श्रेष्ठ आभव भूतिमुपाययौ। पद्मावती पद्मपत्रपेशलांगी वनाश्रमे। तव लस्या फलं धृत्वा स्थातुं नोत्सहते मुने। तदा त्वं प्राप तो यत्नं आहृत्वा मे हृदाह च॥ इति मया प्रोक्तो सितो
गौतम मन्वगात्तया सह। आपात सि कुमारत्वं किंचि याचितु मा व्रजे। निष्किंचनोऽप्य पुत्रोऽस्मि सद्धर्म रहित सथा॥ किं याचसे भो स्वभूरदास्यामि यदभीप्सितं॥ इति तद्वचनं श्रुत्वा गौतमं प्राह सत्वरं॥ गृहाश्रमं स्थापयितुं प्रयत्नं मुनिसत्तम

गौतम मं वन्न स्वसमाहितः॥ इति तेन मुनिपुत्रः समादिष्टं निशम्य सः॥ मणिचूडो महामत्वा विचार्य वं व्यचिन्तयत्॥ मत्पूर्वभव समारब्धां भिक्षादानमहाक्रिया॥ तथापि वचनं
त्वाद्य कार्यं सद्धर्मसाधनं॥ इति निश्चित्य स विज्ञाभो मणिचूडो विबाधितः॥ तथेत्युत्थाय मोदित्वा गौतमं समलोकयत्॥ तद्दृष्ट्वा तं परिज्ञाय गौतमः स संप्रसादितः॥ तत्र तां
समागम्य सं पश्यन्नेवमब्रवीत्॥ महर्षे मत्प्रसीदातु मां कथं हृदि नायकं॥ यदर्थं बाधितमनाश्च धर्मं चिन्तितुमिच्छति॥ तदिमां पद्मजां देवी प्रकृत्या समर्पयत॥ विधिना
पयमं कृत्वा साधर्म्म मनया चरन्॥ इति तेन समादिष्टं तवसाति निशम्य सः॥ तथेति प्रतिता चित्त्वा सुप्रसन्ना गया वनम्॥ तत्र अग्नि नादाय पद्मायै तां स्वयं मुदा॥ महा
सत्व कुमारस्य पुत्रकः समुपाव्रजत्॥ तत्र मां महासत्व कुमारं हि व्यमन्दनं॥ उपनीयाश्रमं कन्यां दर्शय न्नेवमब्रवीत्॥ कुमारमां मां लज्जाकीर्णं पद्मावती मग्राजं॥ तार्यार्थं
प्रयच्छामि समन्वाहर्तुमर्हसि॥ अनया दीक्षितः सार्द्धं धर्म्यान् प्रज्ञानि सर्वदा॥ यदर्थं तत्स्वयं हृदयं तत्प्रदातुमर्हसि॥ इति तेना दिष्टं श्रुत्वा मणिचूडः कुमारकः सदा॥ महा
सत्वं समालोक्य राजर्षिमेवमब्रवीत्॥ महर्षे पञ्चसंज्ञानं न हि संज्ञामति क्षिवित्॥ पूर्व्वं वा पूर्वमप्यर्वयस्य तन्नैव उच्यत॥ अथापि यावद्गार्हं वं तत्पूर्वं यम्मयार्जितं॥ विना

स्थित्सा नयापि व वह्न

मद्युति तां पुरस्कृत्य कांचि विवाह्यं पहंया। इति चोदितस्तदा सौम्यो रमन्य वौन्मुनिः। यथोपचारं रहिते कथयत्तं समाचरेत्। गजेन्द्र हयसानोर्थ राज्याश्रमं समाचरेत्॥ इति तद्कुमारक सर्पं सं तोलायित मानसः॥ कथं गच्छामि राज्ये स्वे निर्मं
त्रां श्रियं धुना॥—

म आ

न्वेहि श्रीजिनं ॥ इति विज्ञाय तद्रत्नं श्रुत्वा च वचनं मम ॥ धैर्यमालम्ब्य मानी च मे हृदये समुपस्थिता ॥ सम्यग्विधिप्रदर्शिनं त्वां सर्वसत्त्वहितागमं ॥ जिनं त्वां जननं त्वां वा क्षिप्यर्यावु
गं च न ॥ एवं पद्मावती देवी मनः शिष्यं समस्तमपि ॥ मानीचनात्रमे हृदय पद्मया मां सत्याधयन्तु ॥ ततः पद्मावती देवी बोधिसत्त्वस्य पादयोः ॥ नियम्यात्मविलिख्य कासौ संपराध नृ
वमब्रवीत् ॥ हा कांध्वय जगन्नाथ कथं मां नानुकंपसे ॥ हा हन्तामन्दताग्यास्मि क्व कुत्र यं गतवान्गृह ॥ देव पद्मावती दासी त्वद्वियोगाग्निदग्धिता ॥ त्वन्नाम स्मरति माक्षयंत्रूनेयायां
समानयं ॥ इदं गत सर्वगनाथ पश्चिमं दर्शनं मम ॥ इत्युक्त्वा मानुपश्यंती पपात पादयोर्मूर्छ ॥ पुनरुत्थाय समालोक्य स्नेह दुःखर्वाग्निमापिता ॥ कथं वित्तविनाल्पस्मा सं ३२१
प्रमान्तिर्यथोगने ॥ ततो गत्वा नदकी सा पद्मावती महामुने ॥ मानीचनात्रमे हृदय महसाम समयामतांत ॥ तत्र तामसमुपासस्य मानीचक्र सुसमन्मत ॥ पादयोः प्रणिप
त्यैवनद कीसमुपाश्रयत ॥ तां नदकीं समालोक्य मानी विः समविस्मय ॥ किमर्थमादिशोऽस्य एवं पर्यपृच्छ समादरात् ॥ ततः कस्यं महर्षे सा पद्मावती प्रवृत्ति
तान् ॥ निश्वस्य स्वात्मवृत्तान्तं सर्वं गते न्यवेदयत् ॥ तच्छ्रुत्वा दिनमाकर्ण्य मानी विः ससमीक्षत ॥ देवी कान्त्यस्य पक्कोतां संपश्यन्नेवमब्रवीत् ॥ देवि गच्छ स्वदर्शनात्व

सूनसूनालिर्यत्नमा॥ निर्गत्कास्वपूर्णभिस्वामपूताद्यनमभवं॥ ऋषिकनर्षिभ्यादिष्टंगु स्वापस्नावगीमृत॥ साञ्जलिर्न्यपतत्तस्य मानीवः पादयामूर्ने॥ ततः सममुनिनूत्थाय
पस्नावगीं विहायसा॥ साकं गतेन गंगेन स्वर्लोकं प्रेषयामास सत्वरं॥ ततः समस्तमादेवीपस्नावगी प्रसादिता॥ स्वर्गीयोस्त्वनालं तप्रासाद समुपाविशत्॥ ततस्तांस्मसपायायांगोप
सावगीं समीक्ष्य ता॥ सर्वसखिजनासां सास्सूनाय सूप्रः सामिय॥ पतः पस्रोत्स्नस्थापिजननीं तां समागतां॥ समीक्ष्य साञ्जलिस्तस्याः पादयोर्न्यपतन्मुदा॥ ततः साजननी द
ष्ट्वा पस्नालयं नमान्नसं॥ गतदर्पा मुखोलिक्य स्वविनादवसब्रवीत्॥ कस्मिन्नकोपितं पतः सर्वज्ञापि समभवत्॥ सूनकृतार्षिभ्यां ममि महास्काहुं त्वया समं॥ स्वस्याकृत्क्षामासमह
देवीस्र वन्तिकान्मकि रथाजनानू॥ पश्नीं स्वकीनत्नं पस्र्वासं सादितान्वेनां न्दयत्नु॥ ततः सांत्वयं मानागेः सर्वलोकेः प्रसादिता॥ नाथ्येश्वर्यं सरवं तु कासपे गापाद्यन हुत॥
तदनुगमसनं श्रुत्वा सर्वलोकाः प्रसादिताः॥ सक्तुर्मसाधनां सूकाः संवविधं संतराय॥ तदेतत्स्यथ्यकाथनेत तस्सर्व सूमर्वदा॥ निवृत्ता गंगा तालाः पावर्लताननितन्ते॥
तस्मिन्नवसने ततः सुप्रमहस्यलपगः॥ विसर्यथ्वमहांमानी पावर्लतसमनकगः॥ गतातत समहाव्याधितकाः सर्वपिदृः खिता॥ सोहाकानेपमसुवरकः गयापिता

म जा

लिन्महापद्मसंज्ञा॥ दिव्यमूर्त्तनी॥ नानाविहंगनादास्तान्नानावृक्षलताश्रिनी॥ नद्विनार्वसमाकर्ण्य रवरागि हमसन्नागिह॥ कामदं नादनानावं भिम्भुजाभीतलम नता॥ न
तद्रष्ट्वा मनःायमसन्नुत्रयत्र स्मृ त्रिगां॥ गानिकांमसजगिंह पध्यकांमसमाचउ भेक्षण॥ गतसन्नुत्तृप थागत्वा गांवीक्ष्यमानवीं॥ संपपथ स्वयमागाय स्वागमंसत्साप्यो॥ न
जनुसंगामसमात्वाक सेलडत्तक्र्यान्विगां॥ विस्मिगारि पसन्नात्मा नस्याजगिमहंवाक्षत॥ यदिदंयपसंज्ञागानानाम्नापमावनीम्मत॥ लवनुत्नीकेसमात्पागाकेम्मानामेसवक्षा दि
नि॥ ततहसंगामसलडांगी न्वालमामिव पालयन्॥ तैथ्मात्तस्तेष्ठ्रयत्नेन पाश्वयोमासमसादनं॥ एवंसंपाल्यमानासाप्यनि पक्षांकाक्ंमाता॥ दिनादिनप्रवृद्धा तु क्षुरसं
पंकजं यथा॥ ततहसापनिह्वक्रीडमानी लडिकासमा॥ लिपाठक्रमादधीत्या गुसर्वविद्याक्रमाययो॥ ततहसायोवनी सोद्धा नतिनागसमाकुला॥ मरवीभिःसमह
संनंतुमद्यानसमप्पावनेल॥ तत्रसानमतीवान्तापण्यनी गोसमंनगड॥ मकनंदंसमास्वाध्यन्भवागकुलाणया॥ इष्ट्वावक्त्रसवान्मालाक्रमगहकृतमेपुणि॥ नाना
पक्षिविनावातिगुत्वालडे गिरंनता॥ गदेकानयथा वनी विद्याधनीवियद्धनी॥ गोदिव्यागिमन्दनींहष्ट्वाक्रयंमक्षोमविस्मया॥ तत्तहमामास लडांगीसमिच्छकी

प॰

मकरन्दउध्य(स) सं २ ३१२

मध्वी २

समीक्षितुं ॥ अथ कामदवशीर्यधुगदक्षितामपाययो ॥ तत्र मावां समालोक्य दिव्यकाकां मनोहरीं ॥ तस्योदर्ययुगाक्ष्रविक्रालदनागिनी ॥ ततक्ष्याउ पाश्रिय संपश्य
कोपगतं मुदा ॥ निजप्रवृत्तिमाख्याय सखीत्वं समपाययो ॥ सापि पद्मावती दृष्ट्वा तां कान्तामतिरूपिणीं ॥ कोपगतं मतिं तत्र पश्चात् कृतिं समाययो ॥ ततः सा स्वतं वद
कृत्वा संतापयेत् मुदा ॥ स कृत्स्नैः समाचारैन्वरत् वर्डोहिताय ॥ ततः पद्मावतीं दृष्ट्वा सा सखीमयलावती ॥ यौवनी मालिनी पार्श्वे न तिरोगमन्तावनीं ॥ तन्छायाम पाश्वि
स्पृष्ट्वा तं माधवीं कथां ॥ माधवीं तत्सखीं साध्वीं समालोक्यैवमब्रवीत् ॥ अहं सर्वज्ञलोकस्य वनित्वात् समागता ॥ दुर्लभं पृथिवीलोके समीक्ष्य दिव्य सन्दनं ॥ अतल्लङ्कामा
कस्मि माधवी विस्मयान्विता ॥ पद्मावतीं समालोक्य विहस्यैवमब्रवीत् ॥ पद्मावति वयं मर्त्या पापिन्य अक्षिवर्जिताः ॥ लोकान्तरं यतो का गन्धर्वेन महामहः ॥ ४८ ॥ त्व
का माधवी मालां समीक्ष्य नयनालवतीं ॥ पद्मावती ध्वरपश्यन्तो विस्मितैव मनायत ॥ किं वक्तुं दुर्लभं दृष्टं नयनं भाववतिं त्वया ॥ गदतत्त्वं समाख्याय सम्यंनोपतिवाधय ॥ ४९
तितयादितं पुत्वा सखी साव्यम्लावती ॥ पद्मावतीं समालोक्य माधवीं चैवमब्रवीत् ॥ किमेवं कथ्यते तत्स्य सौन्दर्यं तु पसकुधां ॥ यं दृष्ट्वा विस्मयाक्रान्ते दृश्यासि महाग

त आ निहितात्मानः साधयन्ति समं वनं ॥ एवमनन्मयीह स्कांवनसंवाधिमालस॥ ममाधिमत्तख्यानन्दं स्त्र क्रावसमसर्वसमानाहं गत्वा पून्तर्गीहं कृतधर्मं च मयाप्ति ॥ दत्वार्थिस्य ॐमंदहं याद्य
मिनिर्दीतिं वनं ॥ ॐ इति मनसमाख्याग ॐ त्वा मकृन्तानागतः ॥ गत्वे गत्वार्व हृदकांगकाकिमन्यापृथावदमा ॥ ॐ गत्कथितं ॐ त्वा कान्किमतीा विधामि मां ॥ त्वात्मजं स्तिर हृदं त्वाक्री
प्रमाहितापमकुवि ॥ विलाक्कनियमनीं मानाश्रीसानयन्भवती ॥ आलिक्य तं हसा त्वाममममां श्वास्वन्द मब्रवीत् ॥ दधिक्षेयं समालन्ध्या गिष्ठ मातविधीदहिं ॥ यत्त्वं कन्ना मिममा
शीकृमानागकमाश्रयत् ॥ ॐ इति शाक्का समाला कृदवीं सानयनाभवती ॥ मातः संप्रक्कि मामक्रगेन ममात्र भवनम् ॥ गत्र भवा गिनीनूपं ॐ त्वा मामयन्भवती ॥ मतिवृ तं कृमा
नं गमम पत्येव मब्रवीत् ॥ कृमान त्वं मे तात्मा गीस्तवीथि वांक्षिता र्थलम् ॥ यथान्त्व याप्रति ह्याग मनं मदत्वा लिपूर्यता ॥ ॐ इति मत्वार्थि मं ॐ त्वामामि वृतं च प्रमादिमा ॥ प्रमाणि
नीविमत्त्या श्री मम्य भक्त्येव मब्रवीत् ॥ पित्राधि पश्च मित्वं यकृकनास्याम्य हंकं वे ॥ प्रार्थयस्व यथाकामं मातः भवावि विधीयताम् ॥ ॐ इति मनसमाख्याग ॐ त्वा माभवत्कितीः ॥
गं कृमानं महासत्वं समस्य भक्त्येव मब्रवीत् ॥ कृमान यदि नेच्छा गं संतानस्त्र वनीजनं ॥ तत्किमर्थं ममं दहं दत्तिमनञ्जयाम्यहं ॥ ॐ इति मयार्थितं ॐ त्वामपि वृत्तानमादिनम् ॥ ३१८

दास्यामीमं वरं श्रेष्ठं यथाकामं प्रसाधय ॥ इति भगवन् समाख्याते श्रुत्वा स गोगमानुषा ॥ मामा पुत्रा भगिनीनृपाणां स्त्रियमेवमब्रवीत् ॥ अनन्तपापितृनिमायायानृपिश्रीनाकृतीय
था ॥ त्रैलोक्यदुर्लभं कामं कुमारं नाकुमिष्ठकस्मि ॥ कुअगतश्च महद्भाद्दर्नं नावत्स्वां गतयामयहं ॥ श्रुत्वा क्षुद्रादगुमं घाम्यमानिक्रिनुगीनृघोमृयो ॥ गंदत्वा दशुमे घाम्यमां पुत्रो
त्रितुमसुप्रं ॥ मार्गिवृत्तश्च प्रनागत्वा मंनिवार्य वेमब्रवीत् ॥ मोहयमाकृथवा घंप्रसीदात्रहि गमम ॥ यद्याधिनंतलसंप्राप्ये दित्सामिद्द्रमात्मनः ॥ गन्ममात्रमहद्दान
नवि घ्नंकर्तुमर्हसि ॥ अनुमायप्रसीदेत्र गनवाधिंतलहनपि ॥ ययत्रविघ्नांकृयत्रि सः महकर्ममार्गतः ॥ नवक्षणश्चिंतफात्मात्तदृवकान्तनवीपगः ॥ श्रुतिमत्वार
वानत्र सकर्मसाधनमम ॥ अनुमायमतायत्वममावविद्धतुमर्हसि ॥ गनेनजदितंश्रुत्वा गेगमः मविषादितः ॥ मस्तनाभत्रिनफात्मायश्चनकोविमाहितः ॥ ग
श्वासीमहासत्वो मार्गिवृत्तः समृत्सकः ॥ गवाभिनीपिगावीगांसमाम श्रुत्वेवमब्रवीत् ॥ गोष्ठिदनाम्यहं तवस्वं गक्ष्य मोगनंमम ॥ प्रतिगृहक्ष यथाकामं यागयधर्मसा
धन ॥ तुष्टो वापिसमाश्रय सम्बाधिनिहिता गया ॥ हत्वालोकहितार्थीनि संवनसमं दाशुत ॥ श्रुत्वा क्रोसमंतात्मा स्वंदहं गक्षाममर्पयत् ॥ प्रगाभिन्यो स्त्रियगस्यम

म आ

गनाय कालीनाः सदा हरवाग्निनापिता॥ मृदाल्लानः स्मति गुह्यानयूर्मुक्तिपर्थंकविन्॥ इतिमत्वाह्नमानाक्षिमत्वघगक्तपार्यदि॥ कृपयापालयन्सर्वान्सत्वान्सं
तृक्तुमर्हति॥ यदिमत्वान्विनार्षिस्वंदत्वाद्र्यंयस्थमिगं॥ नदामर्वपिसत्वाक्षसंवचनस्पादृषं॥ ननक्षमत्वंसंपन्नाः स्वस्वकुलड्ढयानगाः॥ निःक्रुआविमला
स्तानःसंप्रयायुःसुनालयं॥ एवंविज्ञायसत्वप्रयद्यक्तिनदयामतिः॥ नदिमांयमजांलक्ष्मीममपग्रहीनुमर्हति॥ स्वनयामहत्संवकानाकद्धमममाग्निनः॥
संपयहादिमकर्मकृत्वासद्धर्ममजीय॥ दत्वाथिर्थियथाकामंसर्वसत्वहितार्थतः॥ बोधिवर्याव्रतंधृत्वामंवनमगृहस्थवं॥ एवंवनमहाधर्मसर्वान्सत्वा
प्रबोधयन्॥ सर्वत्रमङ्गलंकृत्वासंप्रयायासुनालयं॥ इतिमत्वंमयाख्यातंश्रुत्वामांपमजांममां॥ पनिनीयययथाकामंगुह्यावाह्यवयवन॥ ननः सनातिमृत्या
य विनीयनीतिमत्कृष॥ बोधिमार्गेप्रतिष्ठाप्यवानधंस्वावदास्मजं॥ ननाविनीयनंपुत्रंप्रतिष्ठाप्यनुपासन॥ सर्वलोकाधिपंकृत्वाममावनाश्रमवनः॥ एनत्संमानस
र्धर्ममत्वाक्षित्वागृहाश्रम॥ बोधिवर्याव्रतंधृत्वावनवाधिपदीकृमि॥ इतिनत्कुमाकर्णमधीमानन्नमादितः॥ नवनतिंपूनर्भक्तंदृष्टमधिनर्वांकृत॥ कथंग

॥ दत्वाहत्महलोपस्थीरलेंमहरायमे। किंकिंचनोभिलस्योनिधर्मेकृतसंभवं॥ कल्याणनंमहानमितिआहु
॥ जिनाश्वराः॥ यतःसंततिमत्वाम संसारःस्थितिमाश्रितः १॥ ३२०

नैवतत्कोऽपि विज्ञातं बोधयितुं भवेत्क्षमः॥ इत्थमागत्येति कथितं भूयः प्राह स्मितानना॥ युक्तश्चित्रं तद्यावर्नांतगर्भयन्तोधयाधुना
चिन्तामारोपयन्तैना ध्यानगम्यदत्तस्त्वरां। ततापि दृष्ट्वा ध्यतेनोत्थितोऽयं कोरोमहं॥ २

इत्युक्त्वारोपयामास चिन्तायां गजदत्त्वरां। धिजन्म कमलोत्पन्नेदुर्भगाविषवायनः॥ वद
विज्ञापितेनापिनेच्छितानेन धीमता॥ हवेतु त्वा विलापिन्या वस्यर्थं प्रचरन्तनः॥ ३

ह पूर्नगर्भस्ताक्रान्तया कूलमानसः॥ स्वनयमिति निर्मितविन्यस्तकोऽभ्यनसमाहितः॥ एवं तं नर्षिणा तस्यानानाविधिविनिदर्शने॥ बुध्यमानापि नेवाभीमक्षामस्तान्वमादत॥ कि
मात्रिकापि नैव मर्षिणा मर्मनिदर्शने॥ बुध्यमानापि नेवासीं नचास्ये अत्र मेकृत॥ ततःसकलवल्गितिक्रमसप्रवाधितमानसं॥ दृष्ट्वा र्षान्निप्रदेशस्तान्तर्भयस्त्रवमब्रु
वीत॥ सुतनतुर्भगवास्यं समापितत्त्वया॥ विनामानाप्यथ कामिमुक्तामिमांसहात्मना॥ श्रुतितनोधिर्गतस्तामथ विनजादयाकूलः॥ तं ज्ञार्षान्निप्रणपंसह
ष्ट्वा वैपर्यविन्यायत॥ कथंत्रम्भवानिशस्त्राद्यास्यासमसमाश्रितः॥ प्रमदामसमुत्सन्नकर्वैनयं क्रतिनानय॥ हा सन्तष्ट पविन्नष्ठ समूह पूर्नमस्त्यध्न॥ दृष्ट्वा
मानगता संगध्वनयं क्रमानिप्रितः॥ श्रुतिविकाविषमूस्ताकूमानःसविमाहितः॥ कथंविद्वर्यमालम्यतत्कोऽभ्यनसमाहितः॥ तथाक्लिगंकूमानं तं दृष्ट्वा स
रमोत्तमः सहृतः॥ संपरश्च समुपाश्रित्य समामन्त्र्य वमब्रवीत्॥ रूमान त्वं सुधीर्विदुः सर्वविद्याविचक्षणः॥ तदत्र किंकथंबूयाः संपनीक्षवदस्व मे॥ यदीमां
त्वं न गत्क्रीयास्वयमेषिप्रबोधितः॥ नूनं विनामां समाधाय त्वधेक्ष्यसिनांमहात्मना॥ तदात्वयात्र कर्तव्यं किंकथं तद्विचिन्त्यतां॥ यदनलमहापापं समाजायताधुना
अतोहमोत्तमं तूर्णं तं बोधयत्वरेति सा॥ ६

म आ

वन्नृ॥ तज्ञाय स्वन्नृ इत्येताः स्वामिन् नम्रस्य पादयोः ४॥ सर्वा रुदन्ति पत्येवं वक्रन्दन्त्यः सुदुःखिताः॥ मां पादपतितां दृष्ट्वा बोधिसत्त्वो दयार्दितः॥ समुत्थाप्य समाश्वास्य बोधयन्नेव

मब्रवीत्॥ हृदवन्धं वियोगं हि यत्कृतं लक्ष्वानिशं॥ कस्य मम सुकृतं मैत्र संगतिर्निश्चयं धृतं॥ तवजन्मगता व्याधिमृत्युशोकादि दुःखता॥ श्रमणं बोधि मानन्दा विमु

क्तां निर्धियाश्च मां॥ एवं नानाप्रकाराणि दुःखानि सर्वदा तव॥ दृष्ट्वापि विग्रहा सर्वानस्य ज्ञातं समाश्रय॥ अतो दुःखाग्निसंतप्तान् सर्वान्समीक्ष्य मोहितान्॥ बोधयित्वा प्रय

त्नेन बोधिमार्गे नियोजितुं॥ जिनलक्षणं कृत्वा मे बोधिनिहितागय ४॥ सर्वसत्त्वहिताधैर्य नेमं वय धना॥ कृतिविज्ञाय मत्स्ने हं त्वमपि बोधिमानसा ४॥ जिनलक्ष २२४

णं कृत्वा बोधिव्रयीं कृते वन॥ तच्छिमं वचनं श्रुत्वा संमानगतिनिस्पृहा॥ श्रमणं बोधि मानत्वं विहाय वमे समर्त्तनं॥ तच्छिमत्त मृपादिदं श्रुत्वा मा बाधिवियादितः॥ सहु

ता बाधिसत्त्वं हं प्रव्याविषयितुमेहतः॥ गतसमानस्यागत्य दृष्ट्वा माणवकं वयः॥ बाधिसत्त्वं कमामन्त्रतं पश्यन्नेव मब्रवीत्॥ मार्षपमाद वतीयं सस्ने हदुःखाग्नि तापिता॥ सुप

योवन सम्पन्नो महदुःखी तपस्विनी॥ तदनेंश्री समाकांनां स्वकृतधर्म्मबाधिनीं॥ कान्द्रधेत्त्वं महदुःखास्त्वमाविषयितुमर्हसि॥ यदि मां धर्मिणी देवी मात्यायत्त्व पूर्वजन्म॥

गच्छतां पादपमिक्षित्वाचस्य धर्मस्य हानया॥ दत्वार्थिभ्यो यथाकामं कृत्वा यज्ञं महत्क्रतुं॥ सर्वसत्वहितं कृत्वा संचनस्व यथासुखं॥ एवं तं सर्वदा लोके नित्यातं तव ध्रुवं॥ प्राप्य
स्वर्गाधिपत्यं वा दिव्यलक्ष्मीमवाप्नुयात्॥ इति तेनोदितं श्रुत्वा बोधिसत्त्वः समन्मतिः॥ तन्मातरं वकमालोक्य स्वं स्वेवं समनलक्रयत्॥ कार्यं देवा मनुष्यो वापि हिंसितुं मना
मम॥ केन वा प्रविशताः स्वेवं पलपर्वतस्थमेपूज्यः॥ इत्युक्तं मनसालोक्य बोधिसत्त्वः समन्मतिः॥ माता यमिति विज्ञाय पुनरेवं व्यचिन्तयत्॥ माता यनृप संज्ञा काविघ्नं
कर्तुं समुद्यता॥ इति निश्चित्य विज्ञः स मन्दमानमवमुद्भवीत्॥ हे मातः किं न जानीषे बोधिसत्त्वं जगद्धितं॥ कस्मात्त्वं दुःखं धर्मस्य सम्माहयितुमिच्छसि॥ अपि विहन्तुं मम गच्छ
मातविष्ण पुना मम॥ सर्वलोकाधिपो श्रेष्ठो विघ्नं कर्तुं न शक्नुयुः॥ भगवन्त्वं महामाहं मामस्या ध्यवसाय तथा॥ त्यावल्पयितुमकाको [illegible] शक्नुयाः कथं वद॥ इति तद्वक
मावर्ज्यं मातापि विभिन्नमानसः॥ ज्ञात्वा दुर्यं महाविद्रुत्वलं [illegible] कोकार्दिता यथा॥ ततः स्कन्दं निर्गतं मत्वा बोधिसत्त्वः समन्मतिः॥ पश्चाद्वर्गी समालोक्य पुनरेवं व्यचिन्तयत्॥
लड्डु उक्तिस्वमारणार्थं काष्ठोन्निजमन्त्रा मम॥ सर्वे मं संप्रेष्यां रण्यं [illegible] विधां अपि लवकृत्यं॥ कृत्यकानि वेयाः सर्वेपि गतेनाकाः समक्षया॥ संग्रामा[illegible]विघ्रयागमेनकामनस[illegible]

निर्मलहीन २ मेथं नन पृथ्वे २ जीतिमन २

म आ

जीतिमनपार्श्वे २

मे० क०पु ७ २

थयन्नमवधीत्॥ साधुः साधुम हासत्त्व त्वमव क्लिम नागिथ॥ एकाधमत्र मम त्थमिव सध्यानाति संनतः॥ ७८ जिनन्नमुपादिश्य मयि कृतं धर्मसादितः॥ योगध्यानसमान
कायहन्न वाधिमानसः॥ सगत्तनिः संगमनोदयोल्लः प्रह्लादवत्तगनगमननिर्ग्ग॥ पुत्रादिदर्शव कृत्वार्य संगान्त्वा मोहितवकं सकलेन लाये॥ [illegible] मयनप्रणामेनन
स्वाविस्वन्दिनवान्पवीनेखिलाः॥ पनमसेनडाहनिवृत्तलावाकेपालिव घातमन्गाविवन्नूः॥ आवानत्त [illegible] निरतगोत्रिय पत्वालेनाव योगालेन [illegible] ॥ प्रसंस्कु न स्यापि
कनेस्य लोकसारः स्त्रिय सस्य यंथैवलायाः॥ अन्यक्ष गावोत्तहनानेरिः हस्यक स्य हालाभयगः सर्वध॥ मदेव गानाभापि मानसानिष्प्रमोद तकिप्रव ध्यानिवक्र॥ दष्ट्वा
थर्मपुर्वजितंवनस्काय रसोकर्दाय नववक्त्रचिकाः॥ एतन्विताव्यप्रवणायथर्मगाङ्क्षिष्य मांमिक्लिमिथापजन्मः॥ गीलत्वा विन्द्रिय ताव नोयांम्नं सूत्र मायपविविकानायां
॥ मेघादिदकं वेवमनः समा खीयथा वलंमानुयोगेमभिधानं॥ ७८ वन्तु धर्मकथितं तमसामान्यया हवक ४ पनिपालनीया॥ धर्माहिन्नायनभविपलोगक्ष गयाभे
तननानुगमी॥ यत्सं प्रयोगा विन सवमानाः सम छ्रयाः पागविन्न पनिस्थाः॥ विपन्न गात कु नलोलमायक्ष नेवकीर्यादि ७ म प्रयादे॥ ानन गील्या हनं रत्न नस्मा

थं य का र ४ अकल्ला नल इति ४

३११

पुनके मैथं २

अपाय म यति नार

स्मन २ मा

भार्गवगो० १

स्पर्शनिसंवर्द्धयितुंयशः॥ विवर्द्धमानस्यहिजन्मदुर्गेलोकस्यपृथ्वीनिपताप्रतिष्ठा॥ नानागतानामविलयतलक्ष्मींविलासियत्वाकितरसोमठ॥ श्रीगोविंदाक्रमसमस्तस्त्र
भिर्यदेयामपृथ्वंगुरोः कुयथमंथ॥ दफस्वलावा॥ सविवान्पार्थपृथ्वप्रतावास्यथिवीश्वना॥ सदर्प्वेदृप्तहेगसर्वगवो॥ प्रोतो ऽहवाश्वधनमह्लानि॥ पश्येविदीनोन
न्याप्तलक्ष्मीर्विस्यन्दमानानापिनोगिमार्गे॥ पृथ्वीधिकौ॥ साक्षवतस्यमानापर्यस्यमर्यादिवताधिपकान्॥ इत्थंप्रतिष्ठादयपानवश्चादपृथ्वमार्गाइपनम्यतस्मात्॥
श्रीमत्सपोस्थादयमाधनसपृथ्वप्रसंगसमर्गिकृत्वधं॥ ध्रुवन्माहेनेनसस्रुत्वासर्वपिगमग॥ कथनिप्रतिविहयप्राप्यनन्दवाधिनाथ॥ नंनमकनंमनाति हृत्वा
पद्मिसंत्रिधा॥ नत्वासास्येमामनम्त्रस्वस्वोलयंसमावनत्॥ मापिधीमान्महासत्वथपनित्रुक्रजिमवृत्तथ॥ ममन्द्रमस्तिमाश्यतस्त्रोक्ष्यानमममाहिकठ॥ देवधीमान्स्व
तत्रापिदत्वार्थिभ्यस्तथापिनां॥ वाधिवर्यविप्रेगहित्वाप्रवयानजगाद्विश॥ समाननवयेसन्नाभोगमनसहानथ॥ सद्भूतेतसांकार्थंकृत्वानेमत्पावनं॥ कनवर्धिमहा
तिलकवत्पुतिधथमथो॥ हिमवत्स्थमाश्रित्यविंशहानमपश्यनत्॥ सतकालिन्दिनसाम्नानसारव्यमनावर्य॥ स्थानसंध्यार्वनंकर्तुंप्रागतस्थयपावनम्॥ कराग

म का

मिलत्॥ ५४॥ कथं च शंभुमासाद्य मद्विवाहं व्यधापयत्॥ नारद उवाच॥ कलावत्यां समाहूय समादिशत्॥ तत्सूर्यं सादनं दत्वा प्रेषयच्छो मम मतो॥ तत्र सा मम आगत्वा मम पार्श्वे
समागत्य स्थित॥ शोभनं मे मम स्यादिदं पुनर्वे वं न्यवेदयत्॥ मम हर्षं प्रदिश्शानी यावत्कान्ति मे गीन्द्र पाहत्या॥ कथं गिरिः विवाहः पद्मावती कुमार्याश्च॥ तद्देवा इदं हृदं स
मर्प्य प्रेषितास्म्यहं॥ भवान् शंभुमासाद्य कुमारीं प्रयच्छतु॥ ऊं गिरि निवस्य सावरी शोभा मम मनः पुनः॥ सूर्यं वैवाहिकी स्नान्य भवता दिं समर्पयत्॥ इत्युक्त्वा गतः तत्र मासा
यतेभ्यस्य अविवादनो नः॥ मायि वृत्तं कुमारं शंभुमामन्त्र्य इदमब्रवीत्॥ कुमारं तव मायः इदं सत्यं दत्वं मं प्राप्य गान्त्वयि॥ तदनं त्वं ममादाय संगत्वान्वितं महसि॥ ४७ ३१७
मुक्ता शोभनम कृसि मतिं वृत्तायमोदनं॥ दत्वा तडागि षं सूर्यं समर्पयन्नदपोस्वयं॥ इत्युक्त्वा समतिं वृत्त सुतं प्रविशित्वा गयत॥ कथं कुमारी विवाहं मपि वस्यामि गूढवि
नियत॥ नारद उवाच॥ हस्तं विवं स्वाकामसं नागनि समुत्तरं॥ शोभनं मे मम मानासु निः श्वसन्निदमब्रवीत्॥ मन्तर्यं यज्जहं लक्ष्या तव पाणिमागतः॥ सर्वाधिनिहितात्मा
तु त्वं स्वयं सर्वमामान्त॥ तत्कथमिदं मृणित्वा पुनर्गत्वा प्रयागतः॥ प्रेमपानादि धनं कश्चन यं किं तत्तं संत्वं॥ पापात्म यक्ष्मं शंभुमहाविषं गतानां तयाप्ति प्रति दग्ध

सोऽख्या॥ ऊ॥ ईर्ष्या मदान्मान वियातधर्म गृह हितं तत्तु कथमत्र हयं॥ तन्नेववांछामि गृह हितं कुमि हं वद हं पवि भक्तु मीहं॥ तत्र तत्र मतं न पवित्र हीतु मिच्छामि प्राणं तु पितृ
तु भव॥ त्रयी कृत नसमा ख्यातं गुरु त्वासं योग मीमांसति॥ ४॥ मतिं वृत्तं उमहा सत्त्वं तत्य धर्म त्रिदमे त्रुवी तु॥ तारतमानं गृह धर्म वधि वि तु नय दी च्छति॥ विलर्षिमदि मंदहं किमर्थं त छंद
स्वम॥ ऊ॥ तिनत्कुक मा का ल्पि मनि वृत्ताम हा मति॥ ५॥ योत मं नं वय संवं समस्य धर्म त्रिदम त्रुवी त॥ गृह ल्माध वयस्य त्वं वितर्मि यदि दं व पृ॥ ६॥ तद र्थं त प्रव क्ष्यामि गुरु त्वानुप
वि व्रतं॥ अनन्तक गृह नवं नीतिम सर्व विद्या विवक्ष ॥ ७॥ गृह का मण्डल नकात वक्ति ब्रुगुणापि ताथ॥ ततं क्षी गहृ रवोप्ति मंताप दाहिता गं या॥ ८॥ स्वकृत धर्म मर्यादि तत्का
वनक्तिदृष्ट गो॥ ततत्क विकल्ला त्मानं दश कृ गत्न मंतता॥ ९॥ तत्त्वावानामम हृष्टो ऽ मत्र्क मेगु लनिन्दका॥ १०॥ सन्नृत्त्व पिपापघं प्रवनकी यथक्या॥ गीवृत्त्क गमि ति मंत फो
श्वनक्ति गीत्व या तर्को॥ ततक्ष त्रूटि ता रत्नपि अक्तो ऽ वहृतं गा॥ ११॥ मवाहृ ऽ रवाप्ति तफोक्ष्मृ गागच्छ क्तिनाव का॥ गत्वा तना नर्के तु स्व्रा स्वहृ स्तु त रुलं मदो॥ मृतक्त ऽ धव
संदृश्य त्रमक्ति सर्व तलवं॥ ऊ॥ ति मन्त्वाज संमात पापहृ ऽ खोत्तयं गृहं॥ विमृयमत्र नाधीनावमक्ति मत्त्व्र वन॥ क्लित्वा वनमसमाश्रय त्रिं ॥ ऊ॥ गवि मंतोद्दियाः॥ ममाधि

रयुक्तवती तं श्रावक भवन्नतेऽनागत । कुवती कामरूद्वयानद्वियाद समयोर्धना । तदर्थं विप्रगान्धर्व कुरुतेत्र समाश्रिता । गौतमो पि समायाता मणिचूड समन्वितः । मणिचूडाय तत्र पुत्री दत्त्वा पुनः प्रणम्य । इति तदाकर्ण्य माकर्णयन्नरेश्वरात्मजा मानसरि । तपस्वी मणिचूडो गो मि
सा विनसमाश्रिता ॥ इत्यु कृतं तं तं प्राह देवानसेय धाविधिं । नोचेन्साकाम रागान्धा देवं वा वरये द्रुवं । अर्थ तस्या मितप से स्थिता या काम चेतसे । इति कृत्वर्न प्रत्याह गत्वा तन्न पुत्रान्वितः ॥ धाज योग रत्नाकरे विज्ञापय्य दत्त पुत्रीं ॥ अत्वान्त पुत्र्यं श्रुत्वा प्रीतिवह मार्चं तः ॥

प. श्री

मदर्थं क्लिन्नवत्पूर्वी पद्मावती दुःसंक्लिता ॥ चन्द्रमणिशिलायां सा सहसा हि निषीदति ॥ ऋषिणा यादितं कृष्णा तव हरिः पुत्रा वाचितः ॥ तत्र पद्मावती दृष्ट्वा सहसा समुपासन
तु ॥ तत्र तं समुपायान्तं दृष्ट्वा पद्मावती मुदा ॥ सदसीत्याश्रयतत्पादसाञ्जलिः प्रणतिं व्यधात ॥ ततः सा माधवी वाचि दृष्ट्वा नं मदनाभ्यस्थिता ॥ साञ्जलिः प्रणतिं कृत्वा मुदा स
मुपागतम् ॥ गोमत्यपि समालोक्य तत्र हरिं समागतं ॥ सहसोत्थाय संप्रश्रुत्य संमुपावनेत ॥ तत्र हरिः समायातं गोमतं संविलोकयत् ॥ पुनस्त्वां कौशलं पृष्ट्वाप
प्रकाशगतिकावर्तं ॥ गोमत्यापि प्रणत्वा तं पृष्ट्वा कौशलं मुदा ॥ एतत्सर्वं प्रवृत्तान्तं निवेद्य समवाक्षयत ॥ ततः कृष्णा तव हरिः सानुभाव संप्रदर्शितः ॥ विवाहसमयं
पुत्रा दृष्ट्वानन्दसुमादितः ॥ पद्मावती प्रसन्नास्यां विलोक्य नवयौवनी ॥ मणिचूडाय यस्यां व संप्रदातुं समैक्षत ॥ ततः पद्मावतीकन्यां समादाय सनन्दितः ॥ तत्र हरि ३१०
पिता तत्र मणिचूडान्तिकं ययौ ॥ तत्र स्वां त्वां समासीनं तं नृपं समवीक्ष्य सः ॥ तत्र हरिः प्रसन्नास्यः संभाषन्नेवमब्रवीत् ॥ कुमारानाम्न्यसावेतद्भिषानृपजा समीहितं ॥ ऊर्ध्व
दृष्टः पुनर्वाक्यं नृपदत्ताभिनिहितं ॥ ऋषिणा यादितं कृष्णा सा मणिचूडाविलोकितं ॥ तत्र हरिः समुत्थाय साञ्जलिः प्रणतिं व्यधात ॥ तं पश्य सा मणिचूडं तं स तत्र हरिः

...सम्यक्... समन्वितः। ...ब्रह्मलोकमतः ...ब्रवीत्। धिक्त्वाम... लोकेषु ... सर्वकामसमर्पय। मनोरथं पूरयत्वं यत्त्वं सर्वार्थपूरकः। अविहायाममेपाये त्वं प्राप्नोप्रत्यक्षः। भवाम्भि ...
नश्वरो यो मां प्रतिग्रहाकर्मणि॥ न येतिमेदिता भूतिः संदेहाकुलमानसः॥ नत्कर्मणि तत्त्वमेवैकाप्राप्तं तत्तापयाविति॥ २

पुमादिन॥ सा दर्शनं समभूया मन्युं न हमीदमलाषत॥ कृमानयहूवान्विहृदिव्याणि मन्दनः कृती॥ तस्ममवदनं कृत्वा धर्मं च विक्रमर्दति॥ यदि मां त्वं तुष्टकाङ्क्षीप
स्वावनीं स्वराज्यां॥ तदूहीत्वा न या सार्द्धं कृत धर्मसमाचरन॥ तृतितनसमारव्याप्तं कृत्वे वसंप्रवाधितः॥ सुखमसूदो दृप्रमत्ता स्थानेव प्रकृतनं दर्शनं॥ तथापि तं
वदति समपि वृत्तं विलोकयन॥ बोधयित्वं समामन्त्र्य विदसन्निदमब्रवीत्॥ कृमानत्वं महासत्व मकिं त्वक्षमागृहाश्रमं॥ वानप्रस्थ [illegible] त्रियोविनकथन
सतप॥ यत्वं सर्वहितार्थं निदर्शं तीर्थिनामथ स्थितं॥ दानवर्यात्वृत्तं च सामाचं वा वाधिमृतं वनं॥ कानीकि मित्र त्रियसंमान धर्म निःस्पृहः॥ बोधिवर्याव्रतं
सुक्काहित्र निवासवनः कथं॥ यस्मात्कृतः सर्वधर्मा नाऊधर्मवनं तव॥ यत्नसंपालिताः सर्वे लोकाधर्मप्रतिष्ठिता॥ विनाप्तेनृपातिंससला सर्वकृता कृत्वा मया
॥ ईर्दृशा वमरुता प्रवनयर्यस्थकृया॥ यथाकामं प्रकुर्वाना कृत्वापि प्रमदाः कलिं॥ कृत्वा यत्र संयत्नं कृत्वा वनयुग्मनमं॥ ततः सकृदुर्गर्भाद्दुष्टा
महापातककारिणा॥ दुरवोन्मिताधिता स्नानाद्धतायायु च दुर्गती॥ दुर्गती निपतन्नामं कुलं कृपापिताश्रया॥ असमक्षवदनाक्रान्तात्रमयूर्नानक स्वपि॥ तथा
सर्वं वाञ्छामुत्कोपितन्मनागांप्रस्तुते। यातिप्रहृत्यमाधाय मत्र आज्ञा प्रतीक्ष्यतां॥ ५

मद्वापितुर्दत्तो मां गतवत्यसि पितामह ॥ ततस्तवान्यप्रिभिक्षा मत्समवं वचस्त्ववीत् ॥ नाहं त्वया विना प्राणं करं मंथन यदि ॥ तत्त्वाथमन्यथा मत्तं वदन्तं मधुनाथता ॥ यद्वापि त्वं
मतानाग ॥ कृत्रियाति ननाधिप ॥ कार्यार्थं कुर्वतां मम यानव निश्चितं ततः कथं ॥ मद्गृहे स्वमहावीर यदि किञ्चिद्दयोस्तु मे ॥ सर्वथा मां परित्यज्य समेत्याद्य हर्तुमर्हसि ॥ दर्शनान्ययान्
दृश्ये वं मत्प्रार्थितानि गम्यम ॥ मानि कृतं समुत्काय नं दिनानं विलोकयेत् ॥ महतामस्मृपास्त सममं वाच यितु मास्ताह ॥ संपश्यन्नमामतस्तु संकृपयितु मववीत् ॥ श्रुतं मतं वि
वागतमां भ्रियं मापतन्नमृ ॥ उपाहि मनिनाशस्य मनास्व पवित्रवाप्रिका ॥ यावदेमौमसादि हे मे हर्षितनृ युगपम ॥ नजानीमहं नंमस्कामावेदनां समीवुक्ते ॥ मां देवासो मम
निहं हन्त्येतामु हतांस्त्वया ॥ नूनं मम पापिनाद्य स्थेन नकत्वां नियानयत् ॥ ततस्तत्क्षमहसा सामस्मां मसीमनोतपस्विनीं ॥ यथाततमेवं वपुरुत्वा मृत्कायम गतिमव ॥ दत्तितदु
कमाक स्नूपहीनः मलप्लुत ॥ मुक्तोपमावगीद्देवी मकरहिनमनोगयो ॥ सं हर्षं महमोगत्वा द्विविधं वसमाश्रितः ॥ सर्वमन्त सुरक्षानां दवन्दूस्य पुत्रा वुवीत् ॥
महत्कं सर्वमाकर्ण्य मरगक्ति दनाधिप ॥ सर्वे लोकाधिपे मार्द्दं मां गं को विस्मयं ययौ ॥ ततः पम्पावतीदेवी किमानतयमकिता ॥ सा चिन्तं मम तस्तं समीक्ष्य समृपा

सन्तापादिति ते धैर्यं कारयन्कद ... निमिषः ॥ न हि किं सर्वद्रुमानि प्रथमं ... सक्रपौ

म जा नार्जीर्यं तद्धिकं हर्तुं पनिवार्य व्यवस्थिताः ॥ मामेनं सहसा यूयं घातयतं तपस्विनं ॥ बोधिसत्त्वं महाशिर्ष्टं सर्वसत्त्वहितंकरं ॥ इति तया कुमाकर्ण्य बोधिसत्त्वः समस्मानिः ॥ देव
तां तां समामन्त्र्य समवमब्रवीत् ॥ देवता मा खेदकी मां निवारयितुमर्हथ ॥ यद्यपि तस्मात्सर्वाभिदानं बोधिसाधनं ॥ देवता मा कुरुतायं मे कार्यं यं बोधिसाधनं ॥ यद
हं त्वं महाकार्यं हत्वा पापं लभेत् वक्तुः ॥ पुनापि देवतार्थी भिद हत्या विद्युत्मागताः ॥ देवतापि कथा गस्वदानविघ्नकारी ॥ तदेन त्यागके सर्वा देवताः प्रमादिताः
॥ हत्वा बहूनि पापानि गच्छन्नीन नरकं स मनु ॥ यदि तापि क्वचिदानं नावतायः शताममः ॥ अविनाशी बोधिसाधनं प्रक्षत विघ्नं स हर्तुं नः ॥ अपि च देवता तेवल प्रदद्रतामह ३३०
कृपः ॥ अर्थिभ्यः प्रदद्यात्कायः पनि त्यागः शतामया ॥ ते दानकर्म विद्धि प्रशतामबोधिसंवरं ॥ नादिग्याहं वदाम्यत्र मा विघ्नं कर्तुमर्हति ॥ इति तत्कुमाकर्ण्य
देवता मा प्रबोधितो ॥ तत्त्वा तस्य महार्द्धिस्वे हत्वा तत्ताव वत् ॥ ततस्ता न्त्वा सर्वान्पश्चिमान्विता सः ॥ बोधिसत्त्वो महावीर्यः समामन्त्र्यैवमब्रवीत् ॥ तात
वकोद्धिता सर्वपापानयित्वा भिमां मम ॥ महानलं स मन्त्रपत्निग न्त्व सत्त्वनं ॥ एवं तद् कुमाकर्ण्य ताः प्रमादिताः ॥ तद्भिन्ना निर्गता सः सः स्त्रापयितुं

नकथ्यवाहसंपर्क्कात् यानदी मलिनाहिती॥ यत्कामलान मोद्ध सर्वपापःक्ष्यं प्रकृत्॥३
अभ्येवशांखपर्वतस्यमशिखूड दिलोत्क्षयात्॥ यानदी संगमे चूडामणिरुधिरजलेसंपर्कात् अयापिमणिरोहिणीति विख्याता॥

समानतत्॥ तत्रस्सोनिर्गितो॰ जम्बुर्दन्यमानापिमक्त्वा॥ दन्ताकक्षयदन्कश्ववैर्यमालम्व्यमक्लिनत॰॥ सतीव्रयदनाक्रान्तागिनस्वापिममाहितः॥ भेतृविलम्पस्कायम्वद्वृत
त्वाक्लिनालवन्॥ नदानत्रामक्त्वा नेत्रांश्चक्षुन्ता॰ कुनमानमा॰॥ पापात्तोनिर्गितो॰ जम्बुक्त्वापातमपाटयत्॥ तस्यगोनिर्गितो॰ जम्बुर्धानूपमानस्यमक्तावान्॥ नक्कक्षेनोत्र
विक्लिन्ता॰ प्रगृहू॰ वृ॰ ममन्क गत॰॥ तदृष्ट्वा देवता॰ मवीविंतायमिममात्रिता॰॥ कान्द्वेहितगास्वान्ता॰ प्रविलपूर्विमाहिता॰॥ ततः॰ मबाधिमस्वमलीव्रवदनाहत॰
भूमिः धैर्यममालम्व्यमनसैवं व्यचिन्तयत्॥ अहामेधैर्ययक्तस्यगोवधीर्यवतापिहि॥ वः दमेवंमहदुःखमममर्क्कंगायागवेना॥ प्राग्यवनानकस्काना कोगनाक्षमसंपा
पिनां॥ नाना॰ रवोतियक्कानौकिमवंमक्कगंकथं॥ वशीनतयोमहदुःखवेविदित्वाहंतवादश॰॥ स्वयमलीयमत्वंश्वमंगानयिउमत्तहः॥ तदेगदानपर॰ धनवाधिं
प्राप्यापितवाक्ष्यत्॥ हवादध॰ ममुद्रम्यांजयर्यंजगद्भषः॥ वः वंममहामत्वानंदित्वावाचयन्मने॥ कोवृद्धः॰ रवोग्निमेतपर्स्कापयन्नेवेमब्रवीत्॥ विनेत्वयायक
द्याहितवोक्लिनं कदात्वंह्य ग्मांसवमाक्लिमक्कहित॰॥ हितंप्रकृत्यामितदहिनामे देयवकमाधः रवत्वाधिमत्ममा॥ अयंमेकाल॰ ममपक्लितायतेमामपगनानंत्वि
गं

गचिरं मम स्वप्नमनस्तु यं गुरुवदपि ॥ श्रुत्वेति मनःक्रमाक एवं बोधिसत्वो महामतिः ॥ सर्वान्वितं समालोक्य पुनरेवं समब्रवीत् ॥ कथमेषां सुमित्राणां बोधिचर्यासहायिनां ॥ वा
ञ्छितार्थप्रदस्त्राणां हृदये यान्ति किं मनः ॥ अप्यात्मानमहं दद्यां हातिं न च समहत्त्वपि ॥ नत्वेषां धर्ममित्राणां कुर्यां कदापि निःक्रियां ॥ आत्मानं मयि हन्तुं यो मे यत्नाधमन्त्र
मामिति ॥ अपनाथेन सत्त्वेषु किंचिदपि कदाचनाहं ॥ यानानाश्रम संसिद्धिः स्याद्धिनाश्च विपालितः ॥ अपि प्राणपरित्यागे कुर्यां सर्वहितं सदा ॥ यानवम्प्रमाद्यन्ते सिद्धिं
समवाप्नुयात् ॥ सिद्धिं नरो मनः सत्त्वानान्यदखिलं गतस्त्वपि ॥ तम सर्वपि सत्त्वाहि सङ्गमेन प्रदायको ॥ सर्वार्थसिद्धिसाधिनामनयः कामधेनवः ॥ तद्ध्येय मे नानावाञ्छितं पू
नवाः कल्पपादपाः ॥ मनसामाद्यानां धनीया यामरत्नवदयवेत्तस्तः ॥ ऋषयोऽप्येषां सर्वार्थेऽपि महद्वीर्यवलान्वितः ॥ श्रुत्वैतत्कल्पमहस्राधिन नरकाग्नौ समुत्सहे ॥ श्रुत्वेति गणनादिनं
र्णत्वा मानी विश्वस्तप्रमादितः ॥ बोधिसत्त्वं महासत्त्वं गणपंचैव समब्रवीत् ॥ साधु साधु महासत्त्व यत्त्वं धैर्यमहत्तनं ॥ अहो हेटं प्रतिज्ञातं सर्वसत्त्वहितार्थिनः ॥ अहो
स्वगर्वी नापि निःसंगमागतो लभेत् ॥ अहो सत्त्वेषु कारुण्य महादानादिलाभितः ॥ ईदृशानीं हे यानवं कामेध्य त्वमिनाहं ॥ महानलं समं दृढ्यामधिगतः संप्रय

२३४

क्षणि ॥ तत्साधु पदनेन त्वं दानेन यत्त्वमीप्सति ॥ तत्स्वाम तथ्य मन्यं समय पादश्च महर्षिभिः ॥ ईदृशि तं दृक्ष माक [illegible] बोधिसत्वश्च समादिशत् ॥ मार्नीविर्तं महाविदुं संघ पञ्च

वमाश्च ॥ काश्यपानन दानेन संप्राप्य बोधिमुत्तमां ॥ सद्धर्मश्रीजी महात्मलोकस्येयं यं भगवं ॥ तथा दत्त्वश्च समनुष्यबोधयि त्वाश्रयं पत्लगत् ॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य स्वानये यं मम

स्वनं ॥ बोधिसत्वान्म शास्त्वान्समन्त लडबाषित् ॥ सर्वान्दृष्टात्मजान्त्वा त्वावानयं यं भगवान्निम ॥ एवं हि महर्षेः जिनाश्च तकाहिगात्मकः ॥ सम्बोधिप्राप्तनामवत्स्वान्दानेन कायेन

हं ॥ ईदृशि तत्समास्थागतानि भण्यस्मश्च मागितः ॥ मार्नीविश्च महासत्त्व मम श्रध्ने च व मब्रवीत् ॥ कथ भगवन्महाराग ह्यय मय महवानिदं ॥ दानं दत्वा महाबोधिं संप्राप्यति भगद्भि

त ॥ ईदृशि गनादिनं गृ त्वा बोधिसत्वोमतृकृ हेकं ॥ अद्धेत त्वा समात्मो श्च तम स्थिमवमब्रवीत् ॥ महर्षेयन्मयादतोमिदं यत्लं भगविद्धित ॥ तत्त्वमममधिष्ठानं कर्नामिसां प्रगतं

स्याः श्वस्त क्षा मडपस्थाप्य सत्त्व मेभेत मानेनतं ॥ संबोधि प्रविधि हित्वा गमथ श्व मां मूलामत ॥ यथास्वदर्द हि ममाग्रदत्वा सुपाव माक्षधिपनायतस्य ॥ नादन्मना विंग्र

गिलान आर्ग मात्तं यदीनत्क विवर्जितं च ॥ अनेन तप्रमन सताधिगतन प श्यनलीवनवमे गवीनं ॥ यरं थे वपीना बाम ललैथेव हवन्विदं संपरिपूर्णे रमतं ॥ ईदृक्

स्थानेनाप २

म आ

समाम शुनत्वा स्वस्वाश्रमं ययुः ॥ तथा सर्वपि मतसपाः स्वस्वद गमनाधिकाः ॥ विनम्य पापमार्गं त्वा बोधिमार्ग समाश्रिताः ॥ जिनस्तनगमनं कृत्वा दत्त्वा परिस्थाय यथेप्सितं ॥ यथाकामं
सर्वे ऽकुर्वा महोत्साहं समावनन ॥ एवं समकाला लोकाः निवार्य पापमार्गतः ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य पावानयत्तदा प्रभुः ॥ तथा सर्वेपि ते लोका विनम्य पापमार्गतः ॥ जिन
स्तनगमनं कृत्वा चतुर्ब्रह्मविहारिणः ॥ यथाभिवांछितं द्रव्यं दत्त्वार्थिभ्यः प्रमोदिताः ॥ यथाकामं सुखं भुक्त्वा चरन्तः समाहिताः ॥ तदेतत्सुखदायावन जिनस्यागमं सुमंगलं
॥ प्रवियय स सदा तस्य सर्वत्रालं महोत्सवं ॥ एवं समर्वत्र भौठा बोधिसत्त्वान् पाधिपः ॥ बोधयन् सकलान् लोकान् सम्बोधि पानिवासिनः ॥ निवार्य दशपापस्थात् दत्त्वा द्रव्यं यथे
प्सितं ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य पालयन्नसमवानयेत ॥ तथा ते सकला लोका दत्त्वा तस्मान् शासनं ॥ विनम्य दशपापस्य चतुर्ब्रह्मविहारिणः ॥ यथाभिलाषितं द्रव्यं दत्त्वा ३३८
र्थिभ्यः प्रमोदिताः ॥ जिनस्तनगमनं कृत्वा प्रापुर्वन्ते सर्वदा शुभं ॥ तदेतत्सुखदायावन [illegible] सम्बोधि परमं कम ॥ जिनस्यागमं शुभं तस्माद् भावलोकान्निवेदनं ॥ मनाकश्चि द्विनिडार्थी
तपस्थानद्रुर्जनः ॥ ७०॥ ॐ नमो हि मानतपास्मानाः सर्वत्र गतः ॥ सर्वेपि त्रिगणः स्मृतो लाविमलद्धियाः ॥ बाला नाविमलान्मानावसुदृर्बोधिवानिः ॥ ए

धर्मसंलिषत्नुशिनवर्दे ५

धेनके ष्लिषि ख्यातः ५

वंमसर्वलोकंडावाधिमार्गेस्थयंवनन्॥ सर्वाज्ञाकान्प्रतिष्ठाप्यसंपालयन्सदावनम्॥ एवंसबोधिसत्त्वश्रीसमन्तभद्रस्त्वान्वितः॥ विर्यंसत्वहितंकृत्वामहात्मोत्पुरसमावन

न्॥ नस्यकश्चिन्ननःकालंकृत्वायययोन्नदुर्गतिं॥ सर्वपिसमयैर्देहत्यक्ष्यायथःसुखालयं॥ एवंश्रीमन्महालिङ्गःकृत्वाधर्मनमंजगत्॥ ध्विन्नलज्जनंकृत्वाविनंतक्लोमस

सुखं॥ ततःकालान्तरेयस्मोबोधिसत्वोऽनान्वितः॥ ईदृशंसर्वविनेकालतंबोधिसत्त्विगायथः॥ ततःसमप्तत्रधीवंपश्चात्वंत्पासने॥ प्रतिष्ठाप्यतुपंकृत्वा

सर्वनाथाधिपंत्वधीतु॥ ततःसबोधिसत्त्वेकडाक्रान्तमेविमायथे॥ वनाश्रमेसमाश्रित्यप्रावनधीगमसर्वनं॥ एवंमहेविनंलिखित्वाउपरूवानीसमाहितः॥ कालकार्य

पविन्यक्षमुकंलोकंसमाश्रयो॥ नष्टात्वन्ततःसगुह्यात्मनश्चयोगविर्यावनः॥ सर्वधर्माधिपःयस्मान्महोत्र्यस्तवहृदा॥ एवंमहगवान्तोषःयस्मान्मनकमुनिधरनाः

॥ प्रतिष्ठानमहावनाबोधिसत्त्वानपालेवन्॥ तदेवंसमहात्माबोधिचर्याखगंवनन॥ सर्वार्थितायथाकामंसंप्रदद्गोजगद्धितं॥ स्वकार्यंस्वयमुत्सृज्यसमूदार्थिता

यथेप्सितं॥ नकमान्सात्किमक्षादीन्दत्त्वासंबोधिमानसः॥ पूर्वलोमसर्वाकानांचलंवापिपितिशानृहि॥ दत्त्वादानंयथाकामंसर्वाकान्सुवासयेत्॥ निवार्य पापमार्गे।

म आ

अनाथक्रान्तसमाश्वासप्राप्तयं सन्निवेशितां ॥ अनन्तमसुवाक्षनमस्कृत्वं मत्प्रमाक्ष्यं ॥ दृष्ट्वा तत्कुसुमसंकल्पात् समन्ताग्रतां प्रग्राहितम् ॥ सर्वे तामपि सत्वा नां संपूर्णकामनान्यथा ॥
॥ समवान्नेत्कृत्वा बोधिं संनिछन्नां जगच्छितम् ॥ वृद्धप्रक्रामसमहादानो बोधिसत्वः प्रसन्नधीः ॥ तं पीतं समक्षविद्यानां वानिष्यवा नृपानयत् ॥ तदावनत्नः सर्वाणि दृष्टयो वि
नगतः ॥ उल्कावातादिरुष्णाहा हन्वत्ता त ममाहताः ॥ दिव्यदुन्दुभयानहृंत ताडयामि विप्रभिवितात ॥ पुष्पवृत्तिर्विचित्राश्च पादपास्तरोसि तामक्रमः ॥ पक्षिराजकुद्वैः स
र्वविचित्रं गातः समन्ततः ॥ दृष्ट्वा क्षोभन्ति सततः सर्वाप्यासनकम्पनाः ॥ सर्वे हिमगिरिस्थाश्च यक्षगन्धर्वकिन्नराः ॥ तीव्ररागाकाश्चिन्तं तदाफा नाम सर्वं विलपितं ॥ ३२९
हा कष्टं मनिवृत्तस्य सर्वसत्वहितार्थिनः ॥ अनेककल्पवन्ताप्तवान् धर्मनिधिर्नवयत् ॥ एवं सर्वे विलपन्ताः हिमालयनिवासिनः ॥ सर्वोपि तं महात्मानं मनुष्यत्वावि
शनिय ॥ गगरे दवाप्यनेकानि प्रक्रान्त प्रमत्वान्यपि ॥ देवगण सहस्राणि तद्दृष्टं समनुपावनत् ॥ तदाग्निदृक्तनेकर्मे बोधिसत्वस्य तस्य ते ॥ सर्वदेवासुरपिदृष्टं तत्के ष्टव
विस्मयान्विताः ॥ तदा स बोधिसत्वक्रान्तः सर्वान्मत्यर्थिनां द्विजान् ॥ संपश्यन्त्वमेतित्तं सादरं भयमब्रवीत् ॥ यत्राप्ययं महाविप्रो मातिर्ममाभिधानहृतः ॥ तालेष्

तामधिष्ठाय यावदन्तः प्रविष्टस्तथा॥ तदिदं स्वयमुत्कृत्य कपालं परिपाटयत्॥ स्वहस्तेन तरवश्यार्हं संप्रदातुं न शक्नुयां॥ ततश्च कश्च कपालं मे परिपाट्य प्रयत्नतः॥ पि
बामर्षिं समभ्यर्च्य स्वयं गच्छतु सत्वरं॥ इत्युक्त्वा मां महाघोरः स्वं बाधिष्ठमानसः॥ सत्वरं विलम्ब पश्चाद्य समाविश्य पिलाजनं॥ पदद्वयं छर्द्धं कृत्वा॥ धैर्यमालम्ब्य प्र
मुखः॥ अन्तःक्षया परिस्थाप्य निःक्रम्य मनोविह्वयां॥ उवाच गत्वा स्वहस्ताभ्यां शंखवक्त्रां सिध्यानन्तं॥ स उग्रमतिर्निर्गत्य कपालं विप्रां एवमब्रवीत्॥ तच्छ्रुत्वा महातापात् निर्विघ्नं
क्रियतां मम॥ श्रुत्वैवं समुत्थाय शास्त्रिक्त्वा हि व्यवसितस्तथा॥ तत्तत्समाकपालं मे पाणिपित्रा शिरामणिं॥ प्रयत्नेन समभ्युत्य प्रगत्य निजयत्नेच्छया॥ इत्युक्त्वा मम तामन्तवश्मे
बाधिष्ठमानसः॥ निर्मील्य नयने सुधीः स्वगतो समाहितस्तथा॥ अथ सङ्गत्वा सः सर्वं ज्ञात्वा स्वबुद्ध्या मद॥ गृहीत्वा तु सर्वाणि भक्ष्याणि समुपागतम्॥ तस्य कपालमा
तोय पाटयितुं समुद्यतः॥ परिवार्य मासिहं तु मुपेत्य निवारयत्॥ कान्दस्वाबाधात् बोधिसत्वं प्रघातितुं॥ गृहीत्वा तु सर्वाण्यस्मिन् भक्ष्याणि गृहीत्वा तु
सर्वाणि परिवार्य व्यवस्थितान्॥ ततश्च समासीनाद्दवताकन्तु शार्दूलिका॥ सहसा समुपात्रिस्थानान्विप्रान्स्व एवमब्रवीत्॥ हा कष्टं बोधिसत्वः कतनवाधिसत्वमिति मेयनिं॥

म आ

शयम्॥ तथैव देवतान्यापि लब्धतन्मनः षष्ठ मुनः॥ एतत्सुकृतेन ते सर्वे विक्षमनसोन्यवदयन्॥ तच्छ्रुत्वा लब्धनिः स्वविस्मयाकुलिता शयथा॥ सह सद्धर्ममर्मनिध्यैः साकं गतं नगनं य
थो॥ तत्रावनीर्यमान स्फोपमावत्रोः सुतसवः॥ एतत्स्मृत्वा ते सर्वे विक्षेन ते न्यवदयन्॥ तच्छ्रुत्वा सामप्रादेवी यस्यावनीर्ज्जयान्विता॥ यस्या लग्नः कुमारोपि प्राकाग्नि त
पितातवत्॥ ततः स एवं स्मृतिकोदेवी पस्यावर्तीसुगां॥ यस्यालग्नं कुमारं च समाश्रित्य जनपो निर्वृतः॥ साकः पुनः जनामा पुत्र ह वलाग्रसैन्यकं॥ गर्त्ती त्वा सहसाकाशे स्त्रिय
योहिमालये॥ तत्र स तैर्महासत्वं निपतन्तं महीतले॥ विलोक्य सहसा पुत्रप्रश्नं कानकमात्रयत्॥ यस्यालग्नः कुमारोपि मातास्मह जनेनापि॥ जनकोपि समालोक्य स ३३३
हसा समुपाव्रजत्॥ तत्र स पुत्रं दृष्ट्वा स्वजनक स्वपशाङ्कयाः॥ तेत्वा मता समहे कान्ते तत्क्षोपभ्य विषादितः॥ ततः जनकमालोक्य निपतन्तं महीतले॥ विमोहितं वेदना
क्रान्तदेहं कातं धर्यादितः॥ मातैवायं महासत्वः कृत्वा त्वज मयं गतः॥ स सह वेदनाक्रान्तः स्व सहसा सन्यपि स्वगतः॥ एवमिति विकालिद्दृशाक्षसा सहसा समुपागताः॥
स धावलोघधीहि कृच्छ्रनीन समलपयन्॥ ततः स्वे स्त्रिफ मोतु स्वपगा कावेदनार्त्तुनः॥ सर्वं सफकुक्षास्ते स्वनिः श्वसं समालोकयन्॥ तद्दृष्ट्वा स्वदेवोः सर्वदेवादि

व्याकृतान्यपि ॥ गान्धर्वाः शिल्पनायकाः शिक्षाविद्याश्चाप्यपि ॥ साध्याय ह्यश्वगानाश्च तथान्यपि महर्द्धिकाः ॥ सर्गाविनाम हात्माय मितिमं हर्षमायय ॥ ततः कृनन्दिताः स
र्वे सर्वाणि कुसुमान्यपि ॥ सर्वाण्यपि तु गान्धीनि प्रावर्षयन्त समन्ततः ॥ सर्वाण्यपि च वाद्यानि प्रावादयन् प्रमोदिताः ॥ दिव्यान्यपि च चैलानि प्राक्षिमन्त महात्मवाः ॥ सदेवसम
हासत्वाः धैर्यवीर्यबलान्विताः ॥ संहृष्टान्तद्वा समभ्यस्थाय सर्वदेवसमन्तोकेयताः ॥ ततो गां पर्वदं सर्वा वर्णा पद्मउ पठितं ॥ विलोक्य समहासत्त्वा विस्मयाकुलमानसः ॥ कि
मिदं सम्मना ज्ञात्वा स्वप्रोवाच विस्मया ॥ इति मि श्रावास माधायेन कोविदविंशादयन ॥ स्थापित लघुं सं हुंगं बोधिसत्वं सम मी श्व सः ॥ मोनीविः समया सत्त्वासम मंथल्व
मब्रवीत् ॥ राजर्षे किमिदं कर्म प्रालघुं त्वया कृतं ॥ तत्समाख्यायन सर्वान्संबोधयितुमर्हसि ॥ इति तद्वाक्यमाकर्ण्य बोधिसत्त्वः समतान्वितः ॥ मारीचिर्विंगंम हो हिंदुं तं प्रयं
न्त्रवमब्रवीत् ॥ महर्षे न ल न ज्ञान प्राकृत्य वाधिवानिशं ॥ सम्यक्त्विदं दीक्षा सम तद्विवृद्धिगं खलु ॥ तच्छ्रुत्वा महात्मा समानी विविधस्मयान्वितः ॥ तथापि गंमहासत्त्वं
सम्प्रपृच्छन्निवमब्रवीत् ॥ राजर्षे निगन्तामसां वधकानां हृतात्मनां ॥ मोडादिकृत विलासानां निर्घृणपापकारिणां ॥ मांसं रक्तं कपालपि पाठय मांकि लानिकः ॥ आप

म आ

वन्धिसंस्थिति र्भुवी ॥ श्रुत्वैतत्सम्पादितं श्रुत्वा स कान्तत्पतिः ॥ तथेति प्रतिविज्ञप्य प्रत्यनन्दत्स वोधिसत्वः ॥ ततस्स वोधिसत्वस्तं सं संहृष्टमना अधिपं ॥ द-
त्वाति वाश्लिष्टं यं पुष्पयष्टिमयं स्वकं ॥ ततः स कृतज्ञ भीतो वोधिसत्वं प्रणम्य तं ॥ समामन्त्र्य महात्मा हि र्मूर्द्धा त्वा विसर्जययौ ॥ तत्र सत्व प्रदत्ता का वोधिस-
त्वान् भ्रमन्तं ॥ उद्धृत्य हिंसालोकान्याल्लयं पापवन्नरकं ॥ तथा सर्वेपि लोकास्तदा हृष्ट्वा समाहिताः ॥ विनम्य दश पापस्य सद्धर्म प्रावर्त्तन् तदा ॥ तदेतत्सु-
ध्यायं न तत्र सर्वत्र सर्वदा ॥ निवृत्य ताः गत्वा तो तस्मा ह पावल्लीनि नन्तर्ने ॥ एवमन्यापि नाज्ञानश्चक्षुत्वा तस्य महत्प्रयाः ॥ वोधिसत्वस्य सत्कर्म संकीर्त्तं महसाव-
न्ना ॥ तत्र ते समुपासद्य समीक्ष्य कृतं नृपाधिपे ॥ वोधिसत्वमहाभिज्ञं मुदिताः समपावनता ॥ तत्र सर्वेपि ते तस्य वोधिसत्वस्य पादयोः ॥ प्रणत्वा प्रार्थयन्त्येवं ३३१
साष्टाङ्गं नताः ॥ जय देव महानागवर्यं ते गताः स्थिताः ॥ तदा हूं संप्रदत्वान् सर्वान्तं पातुमर्हसि ॥ यथा यत्कृतं मादिष्टं तथा तत्र नाम ह ॥ इत्यु-
क्त्वा प्रार्थितो नाथ सकृत् लोकं कर्तुमर्हसि ॥ इति निःप्रार्थितं श्रुत्वा वोधिसत्वो निशम्य सः ॥ तान्सर्वान् कृपया तान्स सम्मानस्वैव मादि भूत् ॥ एवं काया दिमस

स्पृंगत्वरक्षसमनुप्राप्तिरितः ॥ तस्मान्नृणाम् सत्वं क्षन्त्वा बन्धितुमर्हसि सर्वदा ॥ ४७ ॥ एवं तत्सम्यगादिष्टं श्रुत्वा सर्वेपि तेन्वयाः ॥ बोधिसत्वं समालोक्य प्रणत्वैवमब्रुवन् ॥ सत्प्रभव
मत्रानगत्र्य एवं गोगनरश्रयः ॥ कित्वाक्षांति नैतास्ते त्वामं वन्निष्यामहे कुवं ॥ ४८ ॥ इति तेदृत्तमाकर्ण्य बोधिसत्वोपि बोधितः ॥ तान्सर्वान्नृपतीन्पश्यन्समाममलैवमब्रवीत् ॥
यद्येवं वाञ्छथ सत्वं विनष्टं पापकं ॥ बोधिचर्यांव्रतं क्षान्त्वा मं वन्धनं समाहिताः ॥ लोकानपि तथा सर्वान्बोधयित्वा प्रयत्नतः ॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य पावनायै तत्परा
भवत ॥ इति श्रुत्वा सत्वं क्ष न्तायदि बन्धितुमिच्छथ ॥ सर्वज्ञ्यं समादाय दत्वा दानं यथोप्सितं ॥ भुक्ता भोगं यथाकामं कृत्वा सत्वं हितं सदा ॥ जिनत्वं समनं त्वा सं वन
ध्वं समाहिताः ॥ एवं चेद्रक्षतो हं सर्वत्रापि तव कुर्वं ॥ नित्यानां महात्मानं दृष्ट्वा के पि संदृशो गमि ॥ नो चेदेवं सदा बाधू महात्मा न हेयं कृतं ॥ सर्वाधिविविधं दुःखं भोक्त
मिच्छतां गमिष्ये ॥ इति तत्त्वां समाख्याय विनष्टपापमार्गतः ॥ बोधिचर्यांव्रतं क्षान्त्वा संवनं धर्ममागच्छत ॥ ५० ॥ एवं तत्सम्यगादिष्टं श्रुत्वा सर्वेपि तेन्वयाः ॥ तथेति प्रतिविज्ञप्य प्रा
नन्दन्तु बोधिताः ॥ ततः स बोधिसत्वः कान्तान्सर्वान्प्रबोधितान् ॥ यथाविधि प्रतिग्राह्य कृत्वा तुष्टां प्रसेनय ॥ ततस्ते नृपाः सर्वे सद्धर्मसुखनन्दिताः ॥ बोधिसत्वं

म आ

महोपायप्रदानेन करिष्ये विगतज्वरान् ॥ कायस्थ मूर्त्तानां क्षान्तौ स्थापयामि सत्त्वानां ॥ दुःखं दत्तं धिक्कारं बोधिनस्तिकांक्षया ॥ अथ पूर्वं सुमहासत्त्वान् विविधप्रमादितान् ॥ प्रपय

को त्रास्करसान्स्वर्यान्न माष्यास्येव सत्त्ववीर्यान् ॥ त्रास्करसाम्प्रय यस्मात् कातरान् नठस्ववाञ्छितां ॥ भिन्नामानादिप्रदानेन पूरयिष्याम्यहं ध्रुवं ॥ यस्यागमनं क्षमकरिष्यामीह सांप्रतं ॥ अ

मानादिप्रसन्नानं स्थापयामीह सांप्रतं ॥ अथाहं सर्वसत्त्वानां महातृष्णानिवापिनां ॥ महापयगियज्ञानां करिष्यामि सुमंगलं ॥ सर्वसत्त्वप्रकाशं धर्मवर्षयिष्यामि मानसं ॥ सर्वस्या

गिमहापीडितानायिष्यामि सर्वतः ॥ बोधिसत्त्वमहासत्त्व गोष्ठं संवासेनया ध्रुवं ॥ दानपानैर्भिनापानं यास्यामि सांप्रतं ध्रुवं ॥ मानी ... वनान्यप्रकम्पयिष्यामि सांप्रतं ॥ सो

सर्वान्यानगतान्नृ स्थानतामस्थयिष्यामि मादिताः ॥ अथ पानैर्पुयास्यामि सत्त्वानि हीमानिनगाः ॥ अथ बोधिसमीपस्थां कांगयिष्यामि सर्वतः ॥ अप्रमेय नमो बोधिमधिगम्य

सुदुर्लभां ॥ अमानगतत्त्वं तर्पयिष्यामि सर्वथा ॥ धानान्तसंतानस्य खेरवाथ समकुस्फुरगत ध्रुवं ॥ निर्वाणेन नगरे मे प्रापयिष्यामि सर्वथा ॥ अथाहं तोषयिष्यामि लोका

न्सर्वाकवासिनः ॥ माक्षकामान् महात्मन् स्वप्रदानादपि इन्द्रचापं ॥ उपायं गोवस्थ स्वार्थं सर्वदा कोनवं भर्ने ॥ नन्दयिष्यामि च तत्र न सह स्याउन त्वमि ॥ अथ बोधिगतं ।

३३८

घोषं वर्द्धयिष्यामि मादनं ॥ विस्मापयन्तं गन्धर्वान्त्यक्तानस्तवान्सवान् ॥ मत्तवहंगा॰ स्तवकं कदं मंतं स्वामिकलान्वहं ॥ वसुनि मत्स्यार्चितं पूर्वं पूजयिष्यामि सांप्रतं ॥ वास्त्यामष्ठ
कृपाधिष्ठिप्रति नाति स्वामस्तानमाहि ॥ मूर्द्धिं उजि गागसंनृट मतनक गुरुधर्मस्थितं ॥ अंग्रपी जीवाधिपिं कृषोत्नि मन्त्रिगच्छदं पावनं ॥ मत्तवहंगा॰ पूर्वं स्यामि उोधिवितं मतिनामहं ॥ अ
समानं गृहीष्यामि पूजितां या दमानकां ॥ पवित्रं अन्नस्नानत्वपन ह ॥ रैवककान्न ॥ अग्रमानवतं सर्वं कल्पयिष्यामि सेक्षकं ॥ शिवाममणिप्रदानत्र समस्तकं वाधिकां क
या ॥ कल्पश्चासमस्तास्तु गृहीत्वा शुक्लामखुलां ॥ तान्यष्टुत्राक्षदीन्यथेन्नमामस्तुवमस्तुवीतं ॥ गतस्तूयं मतविप्राधिवं कांताधिवांछितं ॥ मनात्रथं मनोयात्र हृदयगञ
गच्छितं ॥ नधोरस्तु सर्वमत्वा नाहिताथं सर्वदालवै ॥ स्वर्जीविकामपिस्त्वक्का दास्यामि वः समीप्सितं ॥ मा स्म ततेन दानेन न वांछं प्रार्थयादिवि ॥ नापि दिव्यमताना र्थे नैवलो
काधिपर्थितं ॥ नापि राज्यं महान्तं कीर्तिं नापि मानाधिपत्रियै ॥ नापि ब्रह्मसद स्थानं गथान्यां नोपि कामये ॥ अपि त्वनन्या बाधिं ममामाम्परावाल्य ॥ श्रीजाति मानिन क्षम
त्वा त्वा धर्मित्वाच्युत्तम ॥ कामपंकनिमग्नान्कामसमकुम्रमस्मात्स्वातान् ॥ बाधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य देवान यथं समर्पवनं ॥ अग्रीगृहीत्वानयस्व वान्तिम कान्यपिभावयन् ॥

म जा

तिलोकात्तुकाः॥ मन्यमानः श्रमं सिद्धमालम्ब्य बोधिसत्त्वं॥ उपायागं प्रतिप्रस्थापनं शोद्धुं मुक्तहर्षकं॥ उपायाग्रप्रतिप्रस्थाप्य बोधिसत्त्वोपि धैर्यवान्॥ मूर्छितः समुत्साहमोनियमा
नासमाहितः॥ तदाश्रमनिवासिन्यादेवतयामहात्मनः॥ बोधिसत्त्वस्य सद्धर्मश्रवणेन तथाप्युतः॥ महत्सानिद्रिताः सर्वे अपाकाकाशस्थ वादिताः॥ दृष्ट्वा प्रसन्नः सत्पुरुषस्य पुन
रुत्थाय यामयः॥ ततः शाक्यः सर्वदृष्ट्वा प्रसन्नः सत्पुरुषः॥ मन्त्रालिप्स्य परं स्नाप्य पुनः समुपागयन्॥ तेन मार्ग सन्दर्शयद्धा विस्मयान्वितमानसः॥ शाक्यमुनेन्द्रमा
मन्त्र्य पश्चैवं विलोकयन्॥ शाक्यः कथमुद्बोधनार्थं कस्य मम कोपतः॥ यस्मात् विदर्शनं मम दर्शन दृष्टवान्॥ अथ गतः कथं दर्शनं स्वयमुद्भूय समकालात्॥ त
तः दुःखेन मग्नम शम्यगाख्यातुमर्हथ॥ इत्युक्त्वा तदा सर्वे देवताः शाक्यं प्रमाणं॥ एतदुक्त्वा च माख्याय तत्पर्णितं यथाबोधयत्॥ ततस्तो समहर्षिताः विस्मयाकु ३३१
लमानसः॥ बोधिसत्त्वस्य सत्त्वमुपसत्त्वातिकारणं॥ स्तवनीयपि निःसंगं यतिस्थानं समस्तत्वं॥ ते विप्रापि मनः शान्ति धीनत्समन्तं विकेयत्॥ श्रीमत्कांगमसास
त्वं बोधिसत्त्वं महर्द्धिनं॥ अनेनैव स्वात्मसन्तानं संहर्षविविबोधितः॥ तदाक्रन्तमादिमादायपशंसासनबोधिपः॥ आचार्यस्य कनं दत्वा प्राकालयद्धुतोत्थितः॥

तदन्वितिः सलूपालः सर्वज्ञ विषय स्तवका ॥ गहन्त्रहपि सर्वज्ञत्राशिविंचाध्य रमध्यता ॥ तदन्वितिक मात पि सर्वज्ञविषय तया ॥ तस्य नाह कहलागं महत्माशि गर्भ ययो ॥
गगनस्य महीं तस्तु सर्वज्ञविषय तया ॥ निन्यागंमहत्ताहं पावलंगसमकगर्थ ॥ तद्दृष्टम महीपाल समक्तिगनपोनिक ॥ महानन्दस्तद्वेडाप्यडाम्पनेन्दस्तुमादिग
॥ ॥ तथागंपतिगंदृशो वाधिसत्वं विलोकनं ॥ गगनस्थ सुनाः सर्वे लोकरमकापि तापिता ॥ हाहाकोर्ध्व महात्मापंड घातितो मृतालिलि ॥ तमुपेव भकनादन
वितपन्को विश्वविश ॥ तदेगन्महदृत्वागनि मिहानि समकगत ॥ मानी विन विनालोक विस्मयाकृतिमा गयत ॥ किसवंहि महात्मा तनि मिलं गायतखना ॥ तद्
तिविन्का विषपूत्ला तस्लो पथसमकत ॥ तत्रागस्य महर्षया दवगात्र मवासिनी ॥ सेतत्व कनंधं सर्व विकल्पधन्यवदय ता ॥ तेतन्निवदिगं गत्वा मानी विचरमक
तापितः ॥ सहसाङ्गीसमं सिध्ये बोधिसत्वात्तमस्यो ॥ गं विपिना मांहिं तमो निपतितं विलोकसः ॥ मानी विश्वसमपाश्रिप्प संतलवपाविकयता ॥ महात्मा बाधि
सत्वायंतूनं मनी श्वमालवता ॥ अतः सत्वोत्र पूजार्ह सर्वलोकाधिपेनपि ॥ तृतिश्यत्वा महर्षिः संगिष्य पकगर्ग समं ॥ संपश्यन्कं महासत्वं गठेकाकसमा

म ग्रा

यदि नाम जन्मसंगकुच्छ्रयानेवाक्षिवासितं॥ पश्चात्तेन ऽ कुमारापि माता सह निया गया॥ सर्वेपि जनकायश्च विस्मयं गतनिवासिकः॥ स्तु दृष्ट्वा तु ऋषिनन्दन महाविस्मयगतास्सुयः॥ तदा ग स्तु
सहास्माभिर्गत्वानाद्य तु मक्ति गतः॥ सर्वान्प्राकाश्च धर्मार्थसंपालयन्स्तमावन॥ ऋषिपुत्र कवृक्ष समादि गच्छ बोधिसत्त्वं॥ बोधिसत्त्वं नमास्य पुत्र देवी जनान्वितं॥ अग्न्याका
भक्त्वनु कलेसगताः सम हार्द्रकाः॥ साक्षात्तेन गगननम्य सहस्रानेसुपायस्य॥ तथा वनार्यगत्वा बोधिसत्त्वं सनन्दनं॥ सदेवी जनसंघोपं पूजकाय्य नगाव वन॥ नान्दुस्वर्ग
नान्सर्वान्बोधिसत्त्वः समानन्दः॥ पुनर्त्वा माक्ष्य लिः पश्चात्कर्णो नजगमानेस॥ नतक्षत्रगताः सर्वे सहस्र स्थविरा यमो॥ नासमयनोऽग्रगत्रोकं स्वागतं संसमुपायय॥ बोधिस ३३८
त्त्वं नमायागंदेवी पुत्रजनान्वितं॥ दृष्ट्वा सर्वेपि पश्चात्कृतानन्दिताः पुरस्तानिश्च॥ सोदृष्ट्वा नन्दितान्सर्वान्बोधिसत्त्वोपि नन्दितः॥ सर्वेषां कृपगतं पृष्ट्वा विकृतानिशादसाह
यत्॥ ततश्च स्वाल्पजनाजनजनकोनन्तपार्थिवं॥ तथा सर्वसंघाप्य स्वायम्भुवासवात्म सुपालितः॥ ततः स बोधिसत्त्वोपि नाग्रपत्र सप्रतिष्ठितः॥ सर्वमेतद्दृष्टिगं कृत्वा पावन बोधि
सम्भवं॥ वनं दृष्ट्वा कुमारकर्णो दुःख सहसा पतितः॥ विस्मयसमुपातोकस्वोकन्नवं यथा विकायत॥ अहो सुकर्ममाहात्म्य महाविक्रमवीर्यता॥ अहो सबोधिकामस्य

बोधिसत्त्वस्य धैर्यता ॥ यदसौ हि महाभिज्ञो बोधिसत्त्वो हितार्थकृत् ॥ सर्वलोकाधिपानाज्ञा हृदयं कृत्वं महाकृत्स्ना ॥ तदहं तस्य महासत्त्वस्य गत्वा शरणमुपाश्रितः ॥ सर्वदा लोकनी
सत्त्वाच नयं पालयन्तु मां ॥ इति निश्चित्य स विलोकेश्य प्रसहाम महापतिः ॥ ब्रह्मनकं वलोक्य साञ्जलिः सहसागत्य समाव्रजत् ॥ तत्र शरणमुपाश्रित्य बोधिसत्त्वस्य पादयोः ॥ प्र
णत्वा साञ्जलिस्तस्य शरणं समुपाश्रयत् ॥ तत्र स तं महासत्त्वं समानाय्य प्रसादयन् ॥ स प्रसन्नो गच्छ भवन्त मामनुग्रह मंडवीत् ॥ देवता गच्छन्त्यर्थे सर्वसत्त्वहि
तार्थकृत् ॥ बोधिसत्त्वो महाभिज्ञः सर्वधर्माधिपः प्रभुः ॥ तदहं देवताः सर्वे शरणमुपाश्रय ॥ यत्किञ्चित् पवनाधम गच्छन्तु सर्वथार्हति ॥ तवानन्त महाधी
आवयं सर्वं नयायिने ॥ तदाज्ञाय हे जात्वा संपालयितुमर्हति ॥ इति संप्रार्थितं तेन बोधिसत्त्वो निशम्य सः ॥ दृष्ट्वा तं महापापं तं सम्प्रपश्यन्नेव मादिशत् ॥ मरुदे
ल्हसहायाति ममसद्धर्ममाक्षत ॥ तत्सर्वसंप्रमोदात्र मा विषादं कदाचन ॥ यदिम सर्वसत्त्वानां सम्बन्धिमित्रमत्प्रियं ॥ वांछामि तस्य साक्षाय संवन्नसमात्पुना ॥ वि
नश्यद गतां यस्मात्तां कोऽपि निवारयेत् ॥ बोधिमार्गं प्रतिष्ठाप्य वान्यत्सत्त्वं यवैव नर्तु ॥ इति मत्वचनं गत्वाय धर्मं कृत्य गत्वया ॥ सदापि तं मयि ... हमें

॥ ततः स भगवान् स्थातामहारुणावर्तीउत्तरी ॥ उपाध्यायादिशः क्रमं विजहार ससांधिकः ॥ तत्र स मेमतो आनेति हारे भावकैः सह ॥ सर्व सत्वहितं कृत्वा तस्थौ धर्मदेशकाः ॥

म गा श्मसत्वाऽसमति बुद्धनय स्कृतं ॥ पुनः तत्रैव सर्वं वक्ष्यामि समासतः ॥ तद्यथा स्वागास्ता शिखीनाम तथागतः ॥ तत्र भगवानर्हन् धर्मराजो मुनीश्वरः ॥ सर्वं कृत्स्न

गता तथः सर्वज्ञ त्रिभुवनस्वपि ॥ सद्धर्मं समुपादिश्य समाचरन्तगः छिन्न ॥ तदा स भगवान् [illegible] पर्णी पर्वी ॥ उपाश्रि न्यादिशा धर्मं विहारत स सांधिकः ॥ तत्र स

म हाधाना विहारे श्रावकैः सह ॥ सर्व सत्व हितं कृत्वा तत्र धर्मं प्रकाशयत् ॥ एवं स भगवान् कृत्वा सर्वं धर्मं सर्वंगतः ॥ समाप्य सौगतं कार्यं निर्वृतिं प्रनमाययो ॥ तद्

स्थ्यसान् [illegible] नास्तुर्दंदं यथाविधि ॥ संस्कृत्य विधिना [illegible] निःसंग [illegible] समनः [illegible] ॥ तदस्थीनि समस्तानि संस्थाप्य [illegible] ॥ कृत्वा नतमयं स्तूपं महत् [illegible] महा ३४०

नयत ॥ तदा सौन्दर्यकीनां [illegible] स्तूपं विधिनाचरे ॥ प्रतिष्ठाप्य महोत्साहैः [illegible] समुपाश्रितः ॥ एवं [illegible] कृत्वा सर्वा [illegible] पितान् ॥ [illegible] पि सं

स्थाप्य महोत्साहैः सर्वा नयत ॥ एवं स नृपतीनां [illegible] स्तूप समुपाश्रितः ॥ [illegible] ॥ तत्र कोलाकन [illegible] सी नामा [illegible] ॥

[illegible] इह [illegible] यथा सुखावती ॥ यथापि [illegible] सर्वज्ञ [illegible] ॥ तस्मिन्सर्वसमयदंहं [illegible] सुखावती ॥ [illegible] कालान्तरे [illegible] स्तूपा [illegible]

विपीर्तिं नथ॥ कृष्टिवा गाहृता तपन्थ दिका ३ त्कूटिता तवत्॥ तत्कूपं तामिनितां हस्त्वान् पतिनत्र सन्तस्तग ४॥ तिवन्तुप माहात्म्यं स्तत्वेवं मममविक्रयत्॥ ह्राकूपावि पी॰ र्वृर्थिधर्मम
तुभिनात्य ५॥ सद्धर्मश्रीतु ३ आक्षन ६ संवाधि ह्रानवल्लतत्॥ ओसिनिंद्धि तप्तितां क्रूपखु छ्रातकिं ममामपि॥ सत्वानां तअनेतासोहं ६ विपीर्तूतामितां तावत्॥ तद्दनं प्रगिसंस्कृए
प्रति छाप्य यथाविधि॥ ध्वजकूत्पताकाति ८ कावि ख्यां मिश्र पाअतितां॥ तत्वासर्वेपिस्ताकाथ्ये ह स्थनेनंसंपरपाआतितां॥ पूपर्मुद्दितामहात्मा है र्जअयत ९ समूपस्कितात्र॥ तत्तथैत
र्वपितत्ताकाः १ पवित्र द्धृतिमपुत्ला ०॥ धर्मश्रीम हृदआआमात्तवयुर्वाधिवाविष ११॥ ततकोविमलत्तानानि ६ क्रोगोत्र समृवाचिव १२॥ अर्हन्कम्क्तिविभंवोधिंप्राप्यत्याप्सनिर्वृ
तिं॥ क्षितिविविनय वाञात मत्द्धर्मति तनानतम १३॥ कंकूपं प्रतिसंस्कृत्यसं॰ आतित मकानेयत्॥ तंतत्समुद्दितानोगा तत्कूपाश्री समन्तुले॥ स्वंवूतामतिमत्या सुसमानाप्या
त्मममुयत्॥ छूत्रध्वजपताकाभिर्दिव्याम्बरे विततापी १४॥ नानोकृतंममात्वारिर्मगुप्तित्वा [illegible] अर्तयत्॥ प्रतिष्ठाप्य महात्मा रु ध्वंपुष्प विधिनामुदा॥ सर्वेवापानि॰
संवाप्य भाकानयत्रमस्तत्त्वं॥ सगन्धमालसंदीपादीपमालाश्च प्रदीपयत्॥ पंचघ्राणप्रधीपं वर्धयंस्त्वपिनमादरं॥ पश्येश्वेर्नसमम्क्र्य्यं कृत्वाप्रदक्षिणमन्यपि॥ अस्त

नाश्री
मधा
कीन
मौर्य
श्री

म आ

नीसृत्वे ॥ संतर्प्य संबुद्धान्वयम् ॥ ततस्तान्ब्राह्मणान्सर्वान्विनोदितान्समीक्ष्य तथा बोधिसत्त्वः प्रसन्नास्य इमं माम श्रुत्वैवमब्रवीत् ॥ कृतार्थं यूयं लब्धकामा कान्कामान्कथमागताः ॥ केन वा कान
रणेनेतत्सर्वमिवक्तुमर्हथ ॥ इति तेनादितं श्रुत्वा सर्वे ते ब्राह्मणा मुदा ॥ महासत्त्वं समालोक्य समाम श्रुत्वैवमब्रुवन् ॥ देव त्वां नाम सं हरिक्षाय यदर्थं वय मागताः ॥ तदर्थं सिद्धिं न ज्ञानाति
तथापि कथ्यते शृणु ॥ देवयद्विषये नाहाद्रुष्ठमहस्यसामुर्ते ॥ महामानी महासत्त्वोतिप्रवर्त्तते समन्ततः ॥ तत्प्रभक्ति विधानानि प्रक्षाणि विवर्जितः ॥ सर्वोपायविक्षने
र्वा गमस्यतन्न कृताञ्जिहि ॥ तच्छ्रुत्वा कान्दामिन्द्रः सर्वसत्त्वहितार्थकृत् ॥ तद्गत्वा तमुपायं महत्सेवातुमर्हति ॥ यद्यपि त्वं महादाता बोधिसत्त्वः कृपानिधिः ॥ सर्वप्रद ३२१
इति ख्यातः सर्वार्थदेनस्त्वपि ॥ इति तेनाभिहितं श्रुत्वा वयमिह समागताः ॥ तदस्माकं मनस्कार्यं साधयन्तं कर्तुमर्हसि ॥ इति संप्रार्थितः सर्वैर्ब्राह्मणैस्तैर्निशम्य सः ॥
बोधिसत्त्वः प्रसन्नास्यस्तान्विप्रान्नेवमब्रवीत् ॥ स्वागतं ब्राह्मणाः सर्वे यदर्थमिह आगताः ॥ तदहं पूरयिष्यामि सदह सर्ववस्तुभिः ॥ इति समादिनं श्रुत्वा सर्वे
विप्रवरितागतास्तु ॥ यावच्छक्षमच्छुनीरपि यथ सन्तुष्टमिदं ॥ इति तेन समादिष्टं श्रुत्वा ते ब्राह्मणा मुदा ॥ बोधिसत्त्वं महासत्त्वं समीक्ष्यैवं समब्रुवन् ॥ सत्यनां न वयं दाक्ष

दुःखप्रसक्तप्रपीडिताः॥ त्वद्भिक्षया जगन्महोपद्रवं संप्रार्थितुमिहागताः॥ यदि मम कृपा वा हि दुःखप्रसक्तेष्वपि॥ त्वयि आज्ञं मणिं दत्त्वा सह सामान्यप्रमादय॥ मदनकालना
शानि शिक्षुः भागाः सदानन्दः॥ अपि सर्वमहात्मानां ब्रह्मयोः प्रणमेत्कृतं॥ दृष्टीना यापि जगत्सर्वं सर्वाणि वविघादधपि॥ उत्तमस्थ स्वसंतिक मातृ गामस्य युवा
गृहि॥ अनन्तदुःखविपाकेन यस्य लोके समीहितं॥ कल्पवृक्षप्रसिद्धेन सर्वत्रापि लवमता॥ इति मत्वा महानागदत्त्वानन्तं जगच्छिवं॥ माकल्पं जन्मसंतानं कृतं स्वय
दिव्यं छिनि॥ इति तन्मुक्तामाकर्ण्य बोधिसत्त्वः प्रमादितः॥ सर्वसत्त्वहिताकांक्षी दयाम्भेवं व्यचिन्तयत्॥ अहो धन्यो हि मत्तोपि यदि मया वकासंग॥ विश्वं कृपता या प्र
कायावकं कायिकान्यपि॥ स्वाधीनं यदिदं सत्त्वसंघाहितम् पोवनं॥ दृष्टीदशं दयमवेद्या दुर्लभा हि द्गर्थिनः॥ अहं खल्वेकसत्त्वस्य हितार्थंस्मि कृपीवनकं॥ स्वय
मपि समुद्रस्य दर्शयं यस्तत्समीपमितं॥ प्राणेनाहं महालोकहितार्थसंपिनावहं॥ मतिमान्नमिमं दयाभवसंबोधिमानसः॥ अपि वशी विमानत्वमिमं दहं वलीनं॥ म
त्वार्थं मत्कलोहृदयं कनिष्यामि विनादहं॥ महोपसर्गं संस्पृष्टं कृतनुनागसे वान्धवं॥ महामतिप्रदानेन कानिष्य स्वेक्षमानसं॥ मनं मां कृतनुं नागस्य कौतुकस्य यथान्विता॥

म जा

गंपनिःस्पृहः ॥ मनोरथं यावदिहाखिलाविगतकामिमिसम्पूर्ण कृतं तदृतीतं ॥ अधिष्ठितामन ४ हात्तलं कणकान्तं सदक्षिभि ॥ यदि सर्वानीसमी कान्त्र स्थैर्य कृतकग [illegible] द्विस ॥ सम्बुद्धं
समहावी न ४ संक्राम्य हृदयं स्वकं ॥ पुनर्बालमगरं वा कम् जिनत्वमवर्वीत ॥ अहं सदा लमहाकल्पं सञ्जगिहदवानितं ॥ यदहं सर्वदुःखानि हितार्थं वाद्भुमतं हं ॥
यांकाश्चिदवसत्तापि दुःखगीत वा लय ॥ तयात्तदेव सर्वं पिपुदनकुशलमतं ॥ श्रुत्वा कस्माच्चापि बोधिसत्त्वस्यास्य ३ ॥ असक्षावदना ४ सर्वा ४ सहसातिभा मये
यः ४ ॥ मयथय थावगवचुत्राक्षे आश्रुपिनिर्दया ४ ॥ अतिगानितिगिशे ४ गच्छुल्पाहनन्तस्य मकृता ॥ मथनमभानविप्रा यांगौरा इष्टप्रसहत्सवा ॥ नाहोनिकसमेपानसमम
मेत्रीमवर्द्धयत् ॥ तदनिह्वत्तनकर्मदृष्ट्वा गजन मानसा ४ ॥ अपि कान्तिताशानामित्थे देवमब्रवीत् ॥ एवकः ४ पूर्वमस्माति यथा कुर्वमनधुना ॥ प्रदानलोभेभु माहात्म्यं
दर्श्यतामहात्मना ॥ यदयं भगवानापि स्वयमुत्कृष्टमर्दन ४ ॥ शान्तिं त्वसूर्धिर्नमात्मर्थितस्य अद्रशीमता ॥ अस्य सत्यगर्भस्मातिर्महात्माभद्रतरम यः ४ ॥ तत्तत्वहुतस्
इतंतप्रत्यक्षंद्यथमयना ॥ अस्मत्कालमदिशत्थञ्च बोधिसत्त्वसमक्षेता ॥ प्रविदार्यगिवानत्तं संमूर्छ्य सुमानहन् ॥ बोधिसत्त्वापि तानि बोधिसदनां मनस्यान्विकी ॥ मह

३३१

२ किमनेनमस्ति केन मसिरिदं प्रयोजनं । इति भ्रमौनि अर्थैते तत्तेनासिंचयन्मसिं ॥ यत्र देशे स्थापितो सौ तत्र प्रादुर्बभूव ह ॥ मसिलिंगेश्वरो वीतरागः संस्खलयस्ततः ॥ यावन्तोऽस्मिन् ग्रामाः सन्ति तावन्तः सन्ति तु ग्रामा । तत्प्रसन्नोपि मनुजाः
ताम्रपत्तिनाद ... १२

वीर्यबलेनापि विनिर्जित्य विद्यावितानयन् ॥ जित्वा तं रणे तिमाश्रय संबोधिनिहितात्मा गयथ ॥ यागीव निर्जितात्मा संगतस्तु हृष्टो संमार्जितः ॥ ततः स तिर्दयाश्चर्य बोधिसत्त्वस्य मह
कात्मनः ॥ प्रयेत्न मतिमं हृष्टप्रकृत्याः सममक्तिकां ॥ तद्दृष्ट्वा समहासत्त्वः स्वर्णविनाविनादवः ॥ अगत्यर्थ्यं यथैत्तौ ज्ञौ तान्विप्रान्नवमब्रवीत् ॥ तत्र कोऽत्राक्षयावन्तोऽत्र म
स्मम्यमूनहं ॥ तावदत्तं न्यास्तिंगी प्रमर्प्यय तकवमम ॥ यद दृष्ट्वा स्वहस्तेन मतिमनेनम मर्पयन् ॥ संबोधिनिहितं विरु प्रमादयय मात्मनः ॥ ये तान्संप्रार्थितांस्तनस्त्वा
सर्वापितान्द्विजाः ॥ तथेति तन्तत्तिं तस्य स्वहस्ते समर्प्ययत् ॥ स्वकर्न ह्ये तमालोक्य बोधिसत्त्वः प्रसादितः ॥ मतिमंत ...यंस्तं सांद्विप्रान्समवमब्रवीत् ॥ अयमस हर्त
ऊन्नप्रमापिस हत्तोऽधुना ॥ समीपस्थाहि सम्बोधिः समस्त ह्वि मेनानथः ॥ पूर्वमितन्नयावौवामन सैवसमर्पितं ॥ ह्र्दानेवि स्वहस्तेन ददामि प्रगृह्य यामृता ॥ ते हव
नः स्वमादाय मतिमन्नेनम हकुर्वा ॥ इत्युक्त्वा समहासत्त्वः पार्श्वे ददर्शवसाममम ॥ यन्मयायं महासत्त्वः संप्रदत्ता जगाद्दि ॥ ततस्समहोपमेत्या तत्र वेज मक्तं ॥ स्नुस
त्वा स महासत्त्वः संबोधिनिहिताशयः ॥ मुदा तस्याधिज स्म ह न्या ति स्वयं समर्पयत् ॥ प्रतिपाद्य मतिं यर्त्स्या द्विजस्य स प्रसादितः ॥ विस्मापयन्न रेगात्स्य वें सर्वमस्त्

म जा

नर्त्तनं तस्य वाधिसत्वस्य सत्प्रुतः ॥ यथश्चेतोवातिकंदं दृष्टं तथा तत्तत्तत्साकृतं ॥ तथा वास्य महानत्वं मूर्द्धिग्नद्विगुणं क्रमं ॥ उष्णीषवत्समुद्गतं सर्वधर्मान्नत्वावतः ॥ तद्दृष्ट्वा
पृथिवी सर्वा षड्विधं संचालितामादिता ॥ विस्मयानन्दसम्पन्नहृदयावास्तंकंपता ॥ वायवश्चापि ववुः पुष्पधूपोर्नवित्रिविधिगी गन्लाः गानेः ॥ दिशः सर्वाः प्रसन्नाश्च नवीन्दुवर
विनगुरुः ॥ देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिः प्रपात वा ॥ सर्वथापि गृहास्ताद्दृष्ट्वा पादवईगति नकर्ने ॥ दृष्ट्वा तद्दुद्गंदेवागगनस्थाः प्रमादिताः ॥ हाहाकारान् विमुञ्च
नामकाराश्चैव विश्व ॥ पुष्पाणि दिव्यानि पक्षो विस्त्रौ विविधि दिव्याम्बराणि च ॥ केचिद्दिव्यगुणसुगन्धनानालंकनच्छत्राणि च ॥ केचित्तूर्यवाद्यान्दिव्यवाद्यानि विविधान्य
पि ॥ केचित्पुष्पाणि संमिश्रं दिव्यनत्तमवर्षयन् ॥ जम्बुद्वीपकृतादिव्येनत्नैः सुंक्षादिनावरौ ॥ महानन्दसुखापन्नाः सर्वसत्वाः प्रबोधिन्त ॥ तां दिव्यामद्भुतां विन्धां
विनृत्तिं वीक्ष्य सामनाः ॥ अथ या लोकपालाश्च सर्वएवं प्रदावदन् ॥ अहो तत्क्रमं माहात्म्यमहो सत्त्वं प्रभावतां ॥ यथा ह्येष महदाश्चर्यं सम्पन्नः कविन्न ॥ ...
वंतमनाः सर्वलोकाधिपाश्च सर्वयः ॥ सर्वलोकाश्च सानन्दं प्रवदकेः प्रवोधिन ॥ ततोऽपि च समानी वि वाधिसत्वं सकायितां ॥ दृष्ट्वा संविस्मयात्फुल्लेलाव

३३१

नः संप्रमोदितः॥ साञ्जलिः समुपाश्रित्य शास्तारं कदाचनं॥ संनाथयन्स मामन्त्र्य समुपस्थन्नेवमब्रवीत्॥ साधु साधु महार्थाहि सुनिश्चितमतिः स्फुट॥ उपतिष्ठस्व एकाग्र
र्ष सत्त्व महती कृपा॥ मत्तैवं त्वं महादानं समकरोषि धर्मवित्॥ विभोर्न दास्यसि कृत्वा बोधिसत्त्वाविरोदितः॥ कन्दनं सुवीर्यं समवैन्मानाविनिर्जयन्॥ स्मरसानन्दनं वा
क्षिप्राप्यधमीधियात्त्वं॥ इत्युक्त्वा तं समानाख्य मानोवितः समहर्द्धिकः॥ पंचशिष्यगणैः सार्द्धं महास्वाश्रमं ययौ॥ तथा सत्तरवदातिः स्वशिष्यसंघसमन्वितः॥ बोधिस
त्वं नमानाख्यं दिनः स्वाश्रमं ययौ॥ तत्राप्युक्त सत्त्ववताया॰ सर्वलोकाधिपा अपि॥ बोधिसत्त्वं नमानाख्यं मुदा स्वस्वाश्रमं ययुः॥ अथ पश्चात्स नानाजानन्त्वा पादाञ्जया
॰ पितुः॥ स जनान्प्रति विज्ञाप्य साञ्जलिरेवमब्रवीत्॥ प्रसीद देव मा भ्राम्यन्नाथ अन्न॰ त्वतोऽनुजानात्॥ तदा गच्छ पुनर्गोष्ठं सर्वाः प्रजाश्च॥ यदन्यथा वयं सर्वे शोक
भाजिनो हि सदा॥ इहैव निश्चलं नूनं गच्छ महि निवासिनाः॥ इति प्रबोधितं श्रुत्वा बोधिसत्त्वा दयार्द्रितः॥ तथेति नगरं गत्वा स्वाश्रमं प्रबोधितः॥ तदा ...कवु
...वत्स्वानः समुपागतः॥ बोधिसत्त्वं नमामन्त्र्य पश्यन्नेवमब्रवीत्॥ साधु साधु महाबोधे ... नं ... किंचिदं॥ यज्ञाश्रमे ... तोकान्याश्रमसिद्धिमि

म आ

स्या॥ कृत्वा ब्रह्म विहारनिषद्॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य प्रव्राजयन् सदा शुभ॥ जगद्धर्ममयं कृत्वा प्रतिनन्दितमनसो जितः॥ संबोधि प्रणिधिं कृत्वा संप्रव्रज्य गता हि स॥ एवं मत्स्य वृषभ विपाकेन

सर्वान्नमनगताः॥ अवतारयन्॥ निःक्लेशमर्हन्तो बोधिं संप्राप्य सुगता भवन्॥ यासो समाप्ता गतो दवी सा तत्र तीय जनन्या॥ यासो पद्मावती नाम नाना सुलक्षणा॥ यासो

कृष्णकन्या नाम सुवर्णसिद्धिनगरवासि॥ भक्ति कर्म हि रत्नमनिपूजा महा सुधीः॥ यवलंगिनी प्रविर्यसो सप्तान्नदाम होमागिः॥ मारीचिर्यं वि श्रमो काश्यप अव

कारूनः॥ ब्रह्मदत्तः पिता या सो मणिचूडस्य तु जननी॥ शुद्धोदनो महाराज संवृद्धःसपिता वरः॥ मणिचूडस्य या माता दवी कान्तिमती सती॥ सा तत्रैव या माया दवी

तगवता प्रसूतिका॥ यासो हरीत नाम नामी स्त्यायन अद्भिमाता॥ नकान्नूपधव पद्मीया पितृ श्रुतस्मृति निगम॥ मणिचूडनृपर्भिनामा महाकृ दिति मन्यता॥ यत स मणिचूड

स्य मन्ति॥ सा मायस्त्रीस्तिकाः॥ एतानि तदुक्तादीनि पंच गणस्तु गतान्यपि॥ यासो हत्प्रसूता नाम दया दक्षकन्या व्रता॥ त्वत्सा प्राज्ञाप्यकर्मातिसुकृतप्रदत्॥ काश्यप

ना हि निवृता भी पूर्वं तत्र जितवाहि॥ एवं सगवान्कृत्वा पुनर्न्य हृदूकृतं॥ बोधिवर्यविशे हत्वा समाव न जगत्क्रिया॥ तथा पाणिमिता सर्वा पूर्वयित्वा यथाक्रमं ३३९

यबोधिवासितस्तेन मातुहि मणिरेखया॥ मणिचूडाभिधः श्रीमान् पुण्यनमोविराजितः॥ आरुह्य नणिचूडार्ण मणिचूड मनुस्मरन्॥ निर्गतः कल्लोल अनेकोपि सबा प्रयात॥ तत्र यस्मिन् कृदेवी रामणि चूडकाभिधः॥ तत्र शान्तिं तेन लें तुल्य पातीयेः धीर

शीतनः॥ कान्त्वा मणि चूडदेन तस्मिन् मणिचूडं समर्चयन्॥ मणिचूडं समाराध्य यथा शक्ति उपापयेत्॥ मणिचूडं प्रदंआम्य पाता भोक्ताहितार्थं भतत्॥ धर्मं मे पांस माशाय निर्वाणं समवाप्नुयात्॥ २

॥सर्वसत्वहितार्थेन सम्यक्संबोधिमाप्स्यसे॥ इति मत्वा जगच्छास्तुः सद्धर्मं श्रद्धया मुदा॥ श्रुत्वा महर्षिभिः सर्वैर यदि वांछंति सद्गतिं॥ यत्नेन तेपि गच्छंतु सद्धर्मं श्रद्धया मुदा॥
दुर्गतिं न गच्छंति यास्यंत्येवापि सद्गतिं॥ सद्धर्मं विना तेषां धर्मश्रीः सफलास्त्यात्॥ बोधिसत्वा महासत्वा सर्वसंबोधिवांछिनः॥ तत्सर्वं बोधिसंतानं पूजयित्वा यथाजनं॥
त्रिविधं बोधिमासाद्य निर्वृतिं समवाप्नुयुः॥ इति मत्वा महासत्वा जगद्वंद्यं श्रीघनं॥ स्वयं श्रुत्वा सदा लोकानपि संश्रावयाद्दरात्॥ इति मत्वा हि दृष्ट्वा त्वं लोकानथ
मुदा॥ समर्थं कायाचित्वा प्रशंसं भजनादरात्॥ किं तत्न साधितुं भवति सर्वकार्यं सदा॥ यत्नात् सेवतः श्रीमान् सर्वलोकाधिपो भवेत्॥ यद्यपि सर्वसंज्ञाने महानल्पं
भूर्धनि॥ तासां सर्वसंपदा नापि दिव्यं नभस्यं प्रवर्षितं॥ दिव्यध्वजपताकाभिर्वितानच्छत्रचामरैः॥ दिव्यानि वापि वाद्यानि पवानिलानि सर्वतः॥ दिव्यं नभस्यं च दिव
यं च संप्रवर्षितं॥ सर्वत्रापि तत्राक्षयं सोत्सवं प्रवर्षितं॥ यत्र यत्रापि सर्वत्र सस्याकादि दिशं दशः॥ बोधिसत्वा महासत्वा सर्वदा हि वृक्षवृष्टौ॥ कृत्याप्य सम
हानलं पूजयित्वा समभजाय तं॥ जगत्सर्वं समाख्याय सर्वान् सान्त्ववाक्यया॥ इति मत्वा भवनतप्रपत्ते सत्वाभिः॥ उपगुप्त भवन्ति गं तस्य सदा सर्वदा गतः॥ पूजय से

आ

थक्षया ॥ ततः सस्रूनि नागश्चा ह गत्वरूगतस्त्वपि ॥ अनन्तानिवनत्पाने पातकपिमृत्यावनं ॥ ततःपापवितलिपात्मा गीत्रु ह ४ यथाग्नि नापि ततः ४ ॥ अस्मत्कवदनाजा मा स
नामयोयमानस्यं ॥ तत्तापितस्य ह स्वात्मा ज्ञा सिपाताप्रिविताहितः ४ ॥ सु विनं ह ४ त्वं तुंआना वतामतां कमानस ४ ॥ अवंस तस्विनं तत्रपुरला कम ततामनं ॥ वकृ ह ४ त्वाग्नि सं
तापा मतन सेवं व्यथिकयत ॥ हा ह ४ त्वं किं मया पापं प्रकृतं पूर्वजन्मनि ॥ यत्ने वं विविधं ह ४ त्वं तुःखापत्पालयन्त्रमः ४ ॥ तता थूमगधी मानं यदि ला कास्ति मह्या ॥ तन्मां
मध्यनृपापिष्टं कृपया ह्वर्तुमर्हसि ॥ शक्तिसंप्राप्य सह ४ त्वो ह ४ पश्चात्तापाग्नि नापि तः ४ ॥ जगदीशमनस्मृत्वा त स्को धियमसमाहितः ४ ॥ अकत्पुण्यतालिपातामतलत
पापमाश्वितः ४ ॥ सुप्रताप्यमनुत्तमं स्तवनति दिवंययौ ॥ ततस्त गहितादिव्य कामताग्धयाथ च्छया ॥ उच्चापं नागपति ४ तार्च्चनमंमद विमाहितः ४ ॥ तत्वेवमस्तावितं दिव्वो
तत्व्य क्रीडितमरूनं ४ ॥ वात्वा तीर्थस्मृतोजन्म लब्ध देवानुयातानं ४ ॥ ततसापिप्रह ४ त्वात्माधिं हांति ह्वनमानसः ४ ॥ ननादि सर्वज्ञ कृ नाहिं सकामकमान्त्तुक ॥ तानेवस्य
पुवनन्सर्वानिप्रकृत्वानां सपंक्तिलः ४ ॥ पत्नाक्रमास्तयं हत्वा प्रजुःखा प्राप्यवन्मृता ॥ तत ४ शांति प्रह ४ त्वात्मा सविनं ह ४ र्गभवसत्त ॥ एकस्मिन्दिवसन्यत विविधकानि गोनव

२४४

मन्नृ॥ मठे काम्कवनप्रस्कागन् वृलमृपाप्तिगं॥ प्रश्यकं सगगं दृष्ट्वा मुदितः समुपागतं तत्॥ तत्र गं सगगं लकुंम हस्रात मृपाक्रमन्॥ दीर्घ स्वतु कृष्णा कन्न पपात सन मा
दृ गं॥ तत्रसनिपु ग कन्तो गिन स्का [illegible] धिंवं मन्॥ भूसक्त वदना प्राणाम मायेयी येमा लयं॥ ततः स नेत्र कोगलो सर्वे जनाव को स्वपि॥ स्वकर्मरुलतामथा निजुका
तुमन्त्रिनकनं॥ ततश्चिन्ताल उत्काय श्रीमिकी टादिजंतुष॥ अन्नं लब्ध्वा स दासभ्यनिमं [illegible] न्यन्व समक्षितं॥ ततः कोतल इस्राला शीघ्रं इ रखेवाप्ति मापितः॥ हाना
थकिंमया मापं कृतमिति त्यविन्कयन्॥ यदा स त्वकृतं पापं स्मृत्वा नाथ मनन्त्वननृ॥ पश्चात्तापाप्रितं ततः फः तक्को श्वनाशिमागं यः॥ तदा श्रीभगवान्निज्ञानात
मस्मात थागतः॥ कृपया गं कृमिं दृष्ट्वा स हसाद्दर्ड भक्कण॥ ततः स भगवान्नाथः पद्मनाभि समुत्तरतु॥ सर्व जडवन लोकान व गास्पा त्वर धयतृ॥ तज्ञ भिप
त्रिस्पृष्टासो कृमि ईः रव विमाविताः॥ महती त्वि समापन्ना विस्मया कौतिका तवतृ॥ ततः कं विस्मयापन्नं दृष्ट्वा स भगवान्नेनः॥ निर्माय सोगे तं मूर्तिं तसेन सम
[illegible] त्यविन्कयतृ॥ सुहा कृणीय मायामादिवन्नपः तागं लत॥ तू न मस्मा
मास्यतृ॥ दृष्ट्वा तं लड सौम्या कं सृष्ट भानकं तं तं [illegible] यं॥ तय सत विस्मया दिल्य विकृ श्वेवं त्यविन्कयतृ॥

जा

महाध्यानसमालाक्ष समामश्रुवमादिगता॥ताग्डयागविस्ता॥क्षक्षन्याप्तित्वंमूर्धीर्यतिः॥ यश्चेत्स्पृगजनं कृत्वा संवरसमरा
सरायनम॥ एवंसंवरनकंर्मेस्पृगृशितमानगं॥ महाध्यानसमालाक्षसमामश्रुवमादिगता॥तमयश्रद्धापानिस्वक्षपापमितंप्रयत्नतः॥ तन्निमित्तंसमपात्रिस्पृगजस्वसंवृतास्य
नृणा॥यद्येवंसर्वसत्वेस्पृगजनंकर्तुमिच्छसि॥तन्मानवञनर्गक्षबाधिवर्याखुगंवन॥ गमयश्रद्धापानिस्वक्षपापमितंप्रयत्नतः॥
नृपतत्समादिष्टमासाद्यविनम्यपापमार्गगः॥ बाधिमार्गसमाश्रयसंवरस्वगगक्षिगा॥गगसीर्थसमास्तात्वापवित्रक्रतिमस्तुलः॥ त्रिनलेगजनंकृत्वा दत्वा
चिन्त्यायर्थक्षिगं॥गुरुप्रीतःप्रसन्नात्मा वर्दुर्वृष्टु विहापि कोः॥ सदावेस्पृसमस्यर्थवरस्वपापर्धंप्रगं॥ स्वपनोलसमंधृत्वा सर्वसत्वहितार्थदेगु॥ सर्वान्दृष्ट्वा
विनिर्जित्यसंवरेस्वसमाहितः॥ गुरुत्वामत्यविनगवोऽप्रसर्वसप्रर्मसाधनं॥ श्रूधीस्पृगेकृगष्टाक्षप्रकाशयसमन्कतः॥ बाधयित्वाप्रयत्नेनसत्वान्निवार्यपापतः॥ बा
धिमार्गेप्रतिष्ठाप्यवानेयस्वसगातरा॥ सेवाधिपतिधिंष्टत्वामसर्वान्स्थान्समंधिकान्॥ सधर्मान्सर्वदास्मृत्वा ध्यात्वास्पृष्ट्वागजास्वानृ॥ तत्सुमासतेमासाद्यध्यानंसमन्वा
धिसाधनं॥ सर्वसत्वाविपश्यान्ता दृष्टारसीश्वयात्तवः॥ गगनसर्वान्विनिर्जित्यवशुर्मान्गतांनपि॥ निःक्लेशस्थर्हन्सर्वाहितास्वविश्वनाथोमुनीश्वरः॥ त्रिविधया ३४८

धिमासाद्य सर्वदुःखहराग्निनः ॥ धर्मं वा श्रावकागच्छामासं च क्षपितव्यं कुर्वं ॥ मत्वैवं मानवगणाः प्राप्य संबोधिमानसं ॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा संचरन्तु जगद्धिते ॥ ध
सिद्धस्थानमादिदेवेन गम्यसमन्तामतिः ॥ तथेमं मनभादिदेवाः प्राप्येन तत्त्वबोधितः ॥ ततः सर्वसमयत्वात्वा ये सर्वलोकसमागताः ॥ महीपालकृताज्ञाः सर्वे तु पाधिपालयतु ॥
॥ तस्य सत्त्वं पनी नागामृग श्रद्धाभिर्भक्तिसंगणितं ॥ सन्मित्रं समुपाश्रित्य संप्रचरन्त्वतः ॥ ततः समवृद्धिं च दृष्ट्वा मनोज्ञा गतापितः ॥ तथाय सुप्रयत्नेन वक्ष्यमानः सुधीनरः ॥ तत
४ संवकृत्वेवागत्य त्वा सन्बोधिसाधनं ॥ बोधिचित्तं समासाद्य सुप्रचरन्त संचरताः ॥ लोकान्तव्यसनापन्नान् दृष्ट्वा संबोधिमानसः ॥ दत्त्वार्थिभ्यो यथाकामं सुखवान् जगद्धिते ॥ एवं सर्व
कृत्यं नागा तत्त्वा संबोधिमानसः ॥ सर्वसत्त्वहितं कृत्वा प्रचरन्त बोधिचारिकां ॥ तस्मान्त्वं समशुद्ध त्वा बोधिसत्त्वा हितार्थिनः ॥ दत्त्वा दानं समस्तेभ्यः त्रिरत्नं च सदा भजेत् ॥ ध
वं समासतः संसारे प्रशंसापि संचरन्तु ॥ त्रिरत्नं भजनं कृत्वा चरन्तं संबोधिमानसः ॥ ततो देवात्मसंसारे संचरन्ते बोधिमानसः ॥ कृत्वा नकृतज्ञा गारव हृदयध्यानेन तः ॥ त
सागात्मसु निर्नाम धर्मं नागभ्यसं साधिकः ॥ सद्धर्मं समुपादेष्टुं तस्य सापवनं वसतु ॥ ततः त्वा कृत्वा शोभी सद्धर्मं श्रोतुमादरात् ॥ ससम्प्रीतं मनिनं त्वा साञ्जलिः स

ञा

वोधिमार्गे प्रतिस्थाप्य संबोधौ संप्रयानयन् ॥ सद्धर्मगुणसंकाशमानधर्मनिरंजनः ॥ समन्तभद्रयानात्मा सद्गुणीशुभाकरः ॥ धर्मदीपं समुज्ज्वाल्य हत्वाज्ञानं महत्तमं ॥ अज्ञानस्य
जगन्नाथं प्रवचानं सगुणं छिनत् ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्याश्रितं चरन् ॥ सर्वसत्वहितं कृत्वा प्रज्ञापारमितां ययौ ॥ तथाशीलं महायानं बोधिसत्वा महामति ॥ सर्वापायं विशोधन
क्षधर्मगीतं समासाद्य ॥ सर्वान्सत्वान्प्रयत्नेन स समुद्धृत्य दत्तवाद ४ ॥ बोधिमार्गे प्रतिस्थाप्य प्राचान्य ४ महारण्य ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्याश्रितं चरन् ॥ सर्वसत्व ३७१
हितं कृत्वा सर्वोपायाकामायथो ॥ एवं सद्धर्मासु सर्वसत्वहितायथ ॥ संबोधिप्रणिधिं धृत्वा सर्वान्सत्वान्समारत ॥ यथा संबोधिसंपन्नः सर्वधर्मानुभावतः ॥ तथा
संसिद्धितं सर्वसद्धर्मकार्यसाधन ॥ एवं ससिद्धिमान्वीनः सर्वधर्मार्थसम्फल ॥ संबोधिप्रणिधिं दत्वा सर्वान्धर्मं यथादयत ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्याश्रितं चरन् ॥
सर्वसत्वहितं कृत्वा प्रणिधिपारमितां ययौ ॥ एवं समभिज्ञात्मा सर्वधर्महितार्थकृत् ॥ बोधिसत्वो महाविज्ञ सर्वधर्ममहर्द्धिकः ॥ सर्वान्मानगणान्जित्वा सद्धर्म
संप्रकाशयन् ॥ सद्धर्मसाधिनः कृत्वा सर्वान्सत्वान्पालयत ॥ एवं सर्ववलीयान्सदृढोत्साहशौर्यधृत् ॥ बोधिमार्गे प्रतिस्थाप्य सर्वान्सत्वान्पाचयत ॥ एवं स

२

स गवान्पूर्वं बोधिवर्याश्रिमं यचनन्॥ सर्वतत्वविदितं हत्वा वत्नमानमिनां यथो॥ ततत एवं वति स्वामी बोधिसत्वा जगत्स्तुरु॥ धर्मश्री मज्जलत्वार्हं सर्वतत्समवानय तु॥ वज्रग
गुप्त सर्वपु सर्वान्च ज्ञानपुक्ति तं॥ समस्त सर्वं समानि सुंपालन बोधिपापक्षय॥ तथसर्वं इपि सर्वक्षेत्र श्वागं लङ्वानिर्व॥ दत्वा श्री सन्ते हा ज्ञानं वा वज्र॥ योग ग
पद॥ एवं संगवान्पूर्वं बोधिवर्याश्रुगं वनन्॥ सद्धर्म दीपम ज्ञानत्व हत्वा तां गम हृदम॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य सर्वान्सत्वान्सुखा ध यन्तु॥ सद्धर्म वानि ९॥ क
त्वा त्रिनलगने लाश्रिताने॥ सम्वाधि साधनं ज्ञाने दत्वा निर्दिशितं संस्थय॥ सर्वसत्वविदितं ह्रत्वा ज्ञानपानमिमाय यथो॥ एवं सगवान्पूर्वं बोधिसत्वो जगद्धितं॥ बोधिव
र्याश्रिमं स्वा प्रापन बोधिमानस॥ समर्व श्रीत वाश्वाम सस्त्वो जगत्स्तुरु॥ दंभयापानमिता॥ सर्वा पूरयित्वा यथाजमौ॥ दगत्मोक्ष नानो धर्मनाशपिनाय
ता॥ जगत्क्षीं जगत् स्वामा स्तुक्षान्तु बोधिपालव॥ ततः म्रुधर्म मिथोयां वज्र रुम्यां प्रतिष्ठितं॥ सद्धर्मन्चर्य येंश्लो क्षान्ताध्यागम मास्ति॥ ततः कान्ति समावानपव
र्त्ति महीतले॥ ददगमिमं सस्त्वा ताकान्य धर्म केषापितान्॥ दत्वा तान्मानवान्सर्वान्सश्चात्कुंगलवाचि॥ बाधयं बोधिवर्यायां संवानपितुमैक्त्रा॥ ततत्र

म सा

निनत्वांतं तव फलं ॥ इतीतिगमनं नैव सर्वदा सद्गतिप्रदं ॥ सर्वथापि शुभात्मानं ध्यात्वा शीघ्रं समाश्रय ॥ जिनस्तुति नमस्कारं पूजां यात्रां जिनालयं ॥ इति सम्यक्परि
ज्ञायत्निरामयदं स्वर्गापवर्गदं ॥ जिनस्तवनं कुर्वन्याधिक्षयीश्च गंधनं ॥ यत्नापि पूर्वोक्तकर्मणां कार्यं न तत्फलं ध्रुवं ॥ इति विज्ञाय संसारकार्ये तद्गतं सदा ॥ न तन्म
निहितकर्माणि कालकार्याणि नैव हि ॥ सामग्रीं प्राप्य कालेन फलन्ति कर्माणि स्वविधि ॥ नाग्निना दह्यते कर्म क्रियया न जलेन पि ॥ ध्यानाग्निवायुनिर्विकल्पाय ध्वन
न मिथ ॥ शुद्धकर्मविपाके हि शुद्धमेव सतां भवेत् ॥ दुष्टकर्मविपाके तु दुष्टमेव सतां भवेत् ॥ मिश्रिताकर्मणामपि मिश्रितं फलमाखलु ॥ इति विज्ञाय वाऽशुद्धक
र्मकर्माणि सर्वथा ॥ मिश्रितान्यपि कर्माणि विहाय प्रमलान्तकः ॥ सदैकाकं तथैव कर्मसंबाधिसाधिवत् ॥ महतां सम्यग्योगं कार्योऽयं तद्वांछितं सिद्धये ॥ इति ग
ताऽशादिदृष्टं तत्वान्नाकानपामृता ॥ यथापि संप्रतिज्ञाय यत्नापि नन्दत्सत्सम्यक् ॥ पूर्वज्ञादं सम्यक्स्तगताः तेन तामोपि विज्ञावदानं यत्पदप्रसन्नाः ॥ प
गृहीतमनसः ॥ अवश्यं निःप्रसन्नाः ॥ साधकाः यदलम्बा जिनस्य प्रसादिनां बोधिसद्धर्मकामाः ॥ सर्वबाधिसत्वाभिलिप्तिषणां समाधानवर्यां विमुक्ताः ॥ तद

२७३

श्रीमत्कुंथुनाथः सुविमलमनसः सर्वसत्त्वहितात्मा॥ निःसंगस्त्वार्जवात्मा निजमतविनिहितो धर्मनाथाजनानागतः॥ इत्वा सम्बोधिवर्यासकालतजनधनाः सर्वधर्माधिराजा॥
तु श्लार्थी लड्डसौख्यं दृशगवलनिलयं यान्ति पार्श्वे प्रमोदं॥ ॥ इति श्रीमन्महज्ज्ञानकमालार्यां श्रीमन्महामहत्वमधिद्धे महानाजवाधिमे त्वावदानंस
माके॥ ॥ श्रुथा २२ गो कामहानाजोरयः गमस्तुः सुराधिपं॥ अद्य निःक्रमस्महे नत्वाहवंवेमाऊरति॥ तवनोर अतुमिक्कामियस्तुष्टिजेगाद्भिमा॥प्र
कांदृष्टानं कर्मकियत्संबोधिवंतमा॥ कियन्कश्रगगाश्चापि मत्तस्यगक्रियामृता॥ सूलव्यं समृपात्रिश्रमतमानाध्यक्षिताविवाः॥ कियाहिः सगगे श्चामो वाधिसत्वाजग
द्भित॥ व्याकुगा वाधिसंप्राप्ते गत्वमादस्मर्हति॥ इति संप्राप्य तंनाज्ञाभ्रत्वाक्षाहेन्यतोश्चेतः॥ उपपत्ते कोनवन्तुं गं समस्पर्शन्नवमादि गं॥ साधश्च मतनोजय
थामतनुत्पादितं॥ तथाहं गत्वदक्षामि संबोधिज्ञानतत्त्वयं॥ तथथावीमुनीडासीवेमृतीकादि तागतः॥ कामधर्मा विवनन्त्राम सर्वज्ञाम्रसवनगा॥ ततः काम
सुरवानकों ध्यानसूरवनिनासनः॥ यथा कामसत्वंप्रज्ञा प्राववन्त्रामवानरः॥ ततः कामोतिनकाला क्षणव्याकृतिनागयः॥ उन्नदामदमानान्धः संप्रवनय

जा हृता ख्याता तडज्जीमद्गु शान्तिताः ॥ महात्मा गौतमस्तत्र स्वामी ऋद्धिसंप्रसिद्धिमान् ॥ मुनयस्ते स्वं समपास्य दत्त्वा प्रदक्षिणा यथास्थितं ॥ यथाकामं सुखं तत्र आसंनमप्रमपात्विताः ॥ ए
वं समस्तविश्वं गत्वा मदनानन्दप्रमादिताः ॥ महात्मा सुखं तत्र आसमानावनयात्थ्यछया ॥ ततोपि समयं व्यत्वा विद्याधनालयं गताः ॥ महद्दिव्याधनआगाः सर्वविद्याधिपा तव
॥ ततोपि समनगाद्विद्या तडज्जीमद्गु शान्ताः ॥ महात्मा गौतमस्तत्र सर्वविद्यासमृद्धिमान् ॥ सदा वै स्वं समयं सुदत्त्वा प्रदक्षिणा यथास्थितं ॥ यथाकामं सुखं तत्र आसंनमप्र
मदान्विताः ॥ एवं समस्तविश्वं गत्वा मदनानन्दप्रमादिताः ॥ महात्मा सुखं तत्र संप्रवनयथेच्छया ॥ ततोपि स पवित्रं स्थलं देवलोकं समागताः ॥ महद्देवकुलं ज्ञाता तव ३४०
ज्ञानसमृद्धिमान् ॥ ततोपि समहत्पारम्यं पुनीतं कुण्डियं सुधीः ॥ सदा वै स्वं समयं सर्वं पुण्यं न पापसंयुतं ॥ एवं समस्तविश्वं गत्वा दिव्यश्रीमत्स्वस्थानं गताः ॥ महात्मा सुखं
तत्र संप्रवनं सदा मुदा ॥ ततोपि समयं व्यत्वा यामलोकागताः ॥ महत्या मन्दुले ज्ञाता तव धाम महर्द्धिमान् ॥ ततोपि सविशुद्धात्मा सुधर्मदयान्वयः ॥ सदा वै स्वं
समयं सर्वं संप्रवनं संप्रमादिताः ॥ एवं समस्तविश्वं गत्वा स्वं स्वं हितं सदा ॥ सुखात्मा सुखं तत्र संप्रवनं संप्रमादिताः ॥ ततोपि समयं व्यत्वा विमानं समागताः ॥ सं

नाधिन कृत्लगानः संयुक्तस्वागयात्वनृ॥ नताविसमहगा त्वा॰ पविशुद्धत्रिमनुलः॥ निधक्ताधमहपसन्नात्मा सत्यधर्मसमाहितः॥ मदावेयं समनय व्यं सर्वम सत्वहितार्थ
रुनृ॥ तुमात्मा ह सर्वेउक्ताम पवं मप्रमादितः॥ एवं समस्तविनं गत सर्वसत्वहितार्थ रुनृ॥ जिनत्वसन व धंधूत्वात क्रोम हक्र मीमानसः॥ नमापिसमय व्यं त्वा सर्वेमीदन
तिगनः॥ मामासहतिनेर्माधनतिकृत्ल नमत्वकामी॥ नताविसमहगा त्वा॰ सविशुद्धत्रियागयः॥ निमं वेलंसमय व्यंमिडवनसमाहितः॥ एवं समस्तविनं गत कृत्वा
सत्वहितंमम्॥ तडात्मा हसर्वेउक्ताम क्रोधेनसमाहितः॥ मतोपि समय व्यं त्वा सगमाव गवर्लिक॥ कृत्लशीसमम छापाजामील वन्नहक्रियाः॥ नताविसमह
गात्वे ध्वंदुर्वेकृविहानिकः॥ मदावेयं समय व्यं सप्रवमप्रमादितः॥ एवं समस्तविनं गतजिनत्व लगनान्मनाधी॥ पृ॰ ध्यात्मा ह सर्वेउक्ताम क्रोम हक्र मीमानसः॥ नमो
पिसमयव्यं त्वाखं भेत्ता कामसउदगः॥ आगोत्वनपगोमात्यागध्यानसमाधिविद्॥ नताविसमहगलिङ्गयागध्यानसमाहितः॥ मदावेयं समय व्यंखं भवानीसमा
वनतु॥ जमरणेवं समस्तवत्रकृत्लाकामसंवेनेन॥ मदावेयं समय व्यं ध्यात्वा रुत्नेमादनानृ॥ एवं समस्तविनं गत यागे ध्यानसमाहितः॥ वैसप्रगमेत्मात्मा हसर्वेउक्ता

श्री

पि॥ तासीं तान्कुनाम्य पिप्रण्याः कृत्याः कृनमिकाः॥ ८६ ह्नकृत्य वंदाफाल विहानाश्वप्यनकगंः॥ त थन्यः ड व्यवसायानि सर्वार्थिसिखयथसिगं॥ संबाधि वगता गन संप्रदकामि
सर्वदा॥ वकृ गंकृलनाक्षान्ति दकृानि श्रद्धया मृता॥ पृताः पृण्यापि कानाश्च तार्यादकृाः श्रिया अपि॥ स्वर्वर्नन कमानसा कि मकान्तमालि कान्यपि॥ कर्पूर्द्धि नासिकाथि
कांतिभासश्च नक्षन्यपि॥ अपूर्वस्थयानि दकृानि गन संबाधि वगता॥ सर्व सत्त्व हिताधानं वन या बाधिसंवनं॥ एवं संस्तव गतस्स बाधिवर्यभिगं सदा॥ नर्किवित्तव दि
नविकृमहात्मा कृतमीलितं॥ एवं स लगवान्पूर्व बाधिवर्याभिगं वनेन॥ स्वालानेमपि संतग्ध दानयान निर्मामयो॥ गा॥ एवं मंगलास बाधिमलाफिगाङ्ग्रिय या॥ किं
न इर्जुनासंग॥ संसूर्ननतिनिश्चय्य इं॥ गुरुशीला विशुद्धात्मा पनिगुद्रुश्रिमङ्गुलः॥ पृथ्वकृ तम्र गीर्थ मृलात्मा सधमस मार्हि गः॥ पृयगः॥ म प्रसन्नात्माव कर्तुं
कृविसर्पिकं॥ पोवधसंवर्वं हृस्वां संबवननकजन्म सु॥ एवं शीलत्रगंधस्वाद्धिकलान्यं नगानं सदा॥ संबाधिप्राप्ति धेननेसंप्रवर्नअगाङ्मि॥ एवं दानवाप्यतेऽथ यं
यहृगपथ्व इस्फृलो॥ नकिंचित्स्वादिर्गां विलंगसमसत्क्रमेवाधिदा॥ एवं सतलगवान्पूर्व बाधिवर्याभिगं वनेन॥ स्वालानमपिसंतग्धशीलयाननिर्मामयो॥ गा॥ स्थे ३१०

वंसर्वमिंस्त्वा बोधिसत्त्वो विशुद्धवीरः ॥ दुष्कर्मजनसंनागस्थ तुर्थक्षविहारनष्टः ॥ मराकानिखुगंक्षत्वा सर्वसत्त्वहितार्थवत् ॥ श्रीमानसमहराविप्रसन्नात्मा सुशावनत् ॥ ए
वंकानिखुगंक्षत्वा बनगेहस्थ सर्वदा ॥ नकिंचिच्चरितं बोधिं गं विक्रं सर्वस्वपिण्कानसः ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्यां चरन्नत् ॥ त्वमनालहितं कृत्वा कानिपान निमांसयो
॥ तत एवं सगुह्मात्मा बोधिसत्त्वो समानितः ॥ महावीर्यमहात्मां हृष्टेत्वा वनगगच्छितं ॥ सर्वान्दृष्टगक्षजित्वा सर्वान्तत्त्वा प्रयत्नतः ॥ निवार्यमानवर्मस्य प्रतिस्थाप्यस
संवनं ॥ यद्यापि गधूतनेव सर्वलोकाधिपेनापि ॥ तद्दपिदृष्टनं कर्म कृत्वाम्ब नगगच्छितं ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्यां चरन्नत् ॥ सर्वसत्त्वहितं कृत्वा वीर्यपान निर्णायसो
॥ ततो सौ वमहात्मा निःशेष बोधिसत्त्वप्रियः ॥ बोधिसत्त्वो महात्मा इदं संतावनतिनि ॥ तदुक्ष्म नेनिमि संनकानिर्विकल्पो विशुद्धधीः ॥ जिनं लब्ध्वा ति माधयया
गध्यानसमाहितः ॥ समाधितत्त्वसंताका सर्वसत्त्वहितार्थवत् ॥ मानानुष्टगंधेक्षित्वा सर्वान्वनगगच्छितं ॥ एवं स भगवान्पूर्वं बोधिचर्यां चरन्नत् ॥ सर्वसत्त्वहितंकर
त्वा ध्यानपानं निर्णायसो ॥ ततो सौ वमहात्माहि बोधिसत्त्वा विवेकतः ॥ सर्वविद्यादर्शी लोके दृष्टप्रज्ञानलसमाप्तवान् ॥ सर्वविद्याधिपः गात्मा सर्वान्सत्त्वा प्रबोधयन्

न गा

तसार्थ्रहस्तादि्वनिकंपेश्चनन्मृत॥ सत्सांमृतमानाद्य सुगर्भसमुपाययौ॥ तत्र सर्वजनस्त्रा प्राहुरिव प्रसन्नक्षणेष॥ सत्समापादनं वाक्यं ताक्षात्वार्तं समादनम्॥ ततश्च सम
देश्वर्यं सर्वांदि्गरोत्तमान्विनत॥ सर्वार्थिस्यायथाकामं दत्वायनं नृपासमुखं॥ एवं स सर्वसत्वानां हितं कृत्वा प्रमादितः॥ जिनलब्ध गनं कृत्वा विनंगक्षोगुरुवनत्॥ ततः स स
मयमसृष्टो क्लिन्नलासरूणि मानसः॥ स्वक्षोदंड़ं समाक्षयप्रययौ त्रिदशालयं॥ तत्रापि स महासत्वः सर्वान्देवान्प्रबोधयन्॥ जिनन्तरजनं कृत्वा प्रववान सदा तप॥ ततः
कालक्षयं गतः स्वात्र्छ्रिंकर्तुमहीतले॥ क्षत्रिय जन्म मातायमपि वृद्धान् पालयत्॥ स एव हि विधि गहे लीमपि वृद्धानबाधिपः॥ नपिवृद्धापि गोकायमन् कृच्छ्र कम
निःस्वत्॥ एवं स लोगवाङ्कष्मा पुनासंख्य जन्मत्॥ नृपकुल जनः प्रेत्य सर्वलोकाधिपा भवत्॥ तदापि स महासत्वः सर्वत्र गत्वजन्मसु॥ सर्वार्थिभ्यो यथाकामं दत्वा सं
बोधिमानसः॥ एवं जन्मसु संख्येय सहस्रेषु सदापि सः॥ कृत्वा सुकृतं नैकर्मभावनबोधिमानसः॥ तज्जन्मसु विपाकेषु स बोधिसत्वः कल्पावपि॥ क्लिष्टामान गतः अन्त
र्त्रिकक्षणा विमसत्क्रियः॥ अर्हन्तो बोधिमातायं संप्राप्तुं मुनीश्वरः॥ ततः स तगवाङ्कष्माः सर्वसत्वान्प्रबोधयन्॥ बोधिमार्गप्रतिष्ठाप्य प्रावान यत्नसदा तप

३४२

॥ एवं स त्रिजगन्नाथः श्रुत्वा धर्ममयं जगत् ॥ समाप्य सौगतं कार्यं समाययौ मुनिर्द्विणां ॥ इति तस्य जगद्भर्त्तुः सम्बोधिधर्मसाधनं ॥ श्रुत्वापि तं मुदा सर्वे ॥ ... सर्वे बोधिवाञ्छि
नः ॥ ते हि भगवन् शास्त्रा बोधिकार्यानुवादिनां ॥ तस्मात् सुसङ्ख्यया ... सर्वे ... समासतः ॥ ते सर्वे विमलात्मानो ... बोधिसत्त्वा महासत्त्वाः सर्वे
... ॥ संबोधिविधि हितं श्रुत्वा जिनसूनवः ... ॥ बोधिचर्यावगाहं श्रुत्वा प्रवनं यथागज्जि तं ॥ ... सर्वेपि ... ॥ तत्र सद्धर्मसाधना
... एवं वय ॥ सर्वे ... ॥ एवं पापनि ... सर्वाः समासाध्य यथाक्रमं ॥ सर्वत्र ... ॥ ... सर्वे ... ॥ त
... ॥ ... समवाप्नुयुः ॥ ... सर्वधर्मनायामुनीश्वराः ॥ सद्धर्मसमूर्याद्दिश्य ... जगज्जनं ॥ ... सद्धर्मगुणसाधनं ॥ बोधि
... ॥ एवं सर्वेपि ... श्रुत्वा धर्ममयं जगत् ॥ समाप्य सर्वकार्याणि संप्रयाय ... मुनिर्द्विणां ॥ ... सर्वेपि ...
... ॥ ... ॥ एवं स त्वाजगद्भर्त्तु बोधिचर्यानुवादिनां ॥ स्वयंभू ... ॥ ... सर्वदा ...

ग

शब्दासोऽव्ययं तृष्णा मृगावनम् ॥ एवं तपस्वि तृष्णात्मा तत्त्वी मद्गुणान्वितः ॥ उमात्माहं तर्वेऽतृष्णाग लोकविन्नं तत्त्वनम् ॥ ततः स समयम ...प्युष्णापि तिसमाहितः ॥ तिन
लसप्तिमाक्षयं देहं तृष्णादिवं ययौ ॥ ततसंप्राप्य एवासावेष नाति समन्वितः ॥ यथाकामं सर्वं तृष्णा संप्रवसुमादितः ॥ मदिव्यजीमहत्तीरव्य समन्वितः
तुमादितः ॥ कामतान्धतरवो तृष्णा समं स्वनयथेच्छया ॥ एवं तस्तत्क्षिमं ततमदमानादि नक्रितः ॥ यथाकामे सर्वं तृष्णागतो नमन्यथेच्छया ॥ ततः स समयं गत्वा तु २८५
स्वर्गीस गडसागतो ॥ देव कृततम् त्वन्नाम हादेश्वाधिपा तवत् ॥ ततस महद्दैश्वर्यजी सम्यक्ति नम्र क्रिमान् ॥ दिव्याभि निक सम्भोग नस सुखान्वितान्मे तु ॥ ततापि
ममहार्वोवामदमानाति नकितः ॥ उमं रावणि संगागं तृष्णान्मय यथेच्छया ॥ एवं तथापि समस्तर्यदत्वाधिपाय यथेप्सितं ॥ महात्मा हृ सर्वे तृष्णा संप्रवस्तुमादितः
॥ एवं तस्तवि वंक्लि त्वासमयवनतध्युतः ॥ नाभाकृतेतमत्येनामहान्नाग अधिपा तवत् ॥ ततापि तम हार्वी यदि दिव्यलक्ष्मीत आन्वितः ॥ महत्त्वलक्षतो दीफ मफरु ऋति
मस्तितः ॥ नित्यं देव्यमपाप्रिलुब्धतातसन्म निष्ठतः ॥ मृगाण्डक्रितीकामस्तु त्वापि मृगारक्तान् ॥ दत्त्वार्थि साय यथाकामं तृष्णापि वस्वयं मृगा ॥ महात्मा हृत

खनेवश्रावनन्तर्वसानमन्नतु ॥ ततश्च्युतो पनिश्च्युत्वा यज्ञकामा समभजत ॥ महयज्ञकुले माणालवक्ली मानन्तहृद्धिकः ॥ तत्रापि स महावीना लेउजीसकुञ्जान्वितः ॥ महाला
गीमहवाकामहर्द्धिकामहायः ॥ मृतावेवं समसे स्वर्गे द्वात्रिंशत्सागरं यथास्थितं ॥ स्वयं च्युत्वा यथाकामं संसारभ्रमसबान्वितः ॥ एवं सतृविनं गत्र मनमानप्रमादितः ॥
महाला हस्सूर्वं उत्क्राप्रवर्वान यथेच्छया ॥ ततोपि स मयच्युत्वा सम्गरकः क्षिप्तनालेय ॥ किन्नरकुलजातानां महद्धुर्गुणवान्नतः ॥ तत्रापि स महावीन अद्भिर्मितिङ्किप
भावबान् ॥ महाशीलो महाबानाम महावीर्यप्रतापवान् ॥ मृतावेवं समसे स्वर्गे द्वात्रिंशत्सागरं यथास्थितं ॥ यथाकामं स्वयं उत्क्रामसंसारं भ्रमतो भेवान्वितः ॥ एवं संसृविनं गत्व मदमान
प्रमोदितः ॥ महाशालाहृससर्वं उत्क्रामं प्रवतनयथेच्छया ॥ ततश्च्युत समय च्युत्वा मर्पिभुक्तवनगतः ॥ महत्सिक्ककुलेजातानां नविछिद्धिसमृद्धिमान् ॥ तत्रापि स महावीना लज्जी
सहज्ञानान्वितः ॥ महाशीलो महावानाम महावीर्यपराक्रमी ॥ मृतावेवं मृतास्वर्ये द्वात्रिंशत्सागरं यथास्थितं ॥ यथाकामं स्वयं उत्क्रामसंसारभ्रमसवान्वितः ॥ एवं ससृविनं गत
मदमानप्रमादितः ॥ मेघशालाहृसर्वं उत्क्रामं प्रवनमयथेच्छया ॥ ततोपि स मयच्युत्वा समतामं भुवनंगतः ॥ महत्वाध्यकुलेजातः सकुमलाततमाहव ॥ तत्रापि सम

श्रा

मृणाग्रयत् ॥ अत्र सत्यगवास्तुर्भक्तास्तद्धर्मं समुपादिशत् ॥ तच्छ्रुत्वा ते समस्तास्ता प्राप्यनन्दत्सु बोधिताः ॥ ततः सर्वाङ्गगत्वार्थं सार्थिकैः सह गुजा मतो ॥ पिशुकनसमस्तार्थगृह्णय

स्वात्तगन्मदा ॥ ततः स समुपसंस्तालागतस्य गाभुत्स पदाम्बुजं ॥ अष्टाङ्गे प्रणतिं कृत्वा तदेवं प्रणिधिं व्यधात् ॥ यत्त्वमधुनाभवं नतवयमीदृशो जिनः ॥ स तच्छ्रुत्वाथ

आसेवन स सर्वसत्त्वहितार्थतः ॥ तत्तुष्टि समनुष्टा बोधिसत्त्वास्तमावरव ॥ पञ्चसफोमि सा हृष्ट्वा मुनीन्द्रांश्च मुदा रञ्जतः ॥ एवं स प्रथमं कालं त्वन्तात्संबोधिमानस ॥ ३४९

श्रमणात्स्तु मुनिर्यावेत्स्वारागस्तु प्रयार्थयन् ॥ ततः कस्मादितीयस्ते प्रथमं मानवीतवत् ॥ बोधिसत्त्वा महासत्त्व सर्वसत्त्वहितार्थतः ॥ तदा दीपंकरो नाम संबुद्ध

र्मुनीश्वरः ॥ सोपावस्तां महापूर्यां स सांघिकः समावनत् ॥ ततस्तं सुगतं दृष्ट्वा मानवः स प्रमादितः ॥ नवोत्पलैः स मेघं वर्ज्य स्वाराञ्जमुपानमत् ॥ समीक्ष्य तंत

सर्वज्ञ व्याकरोत्त्वं मुनीश्वरः ॥ भवन्मनि ऊर्गठाका रविपश्यति कालविशि ॥ ततः स प्रणतिं समबुद्धं तच्छ्रिमान्संसगारव ॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा सर्वयानेषु गाढि

ज्ञो एवं कल्पद्वितीये स यावत्खण्डध्वजं मुनिं ॥ सप्तलक्षाणि सहस्राणि समबुद्धानामुपासत ॥ एवं स सर्वमुनीन्द्रान् बोधिसत्त्वा गाढितः ॥ सम्बोधिव्याकृत स्थवे गा

ऋमिं हात विष्यति॥ इति ते ४ तृगते ४ सर्वर्व्वीर्हा ग ४ तनिन कानं॥ क्रमाद्धाधिवगंछ्रत्वापववानऊगछ्रिगं॥ मगथक त्वम्रणीयसवाधितत्वाजिनात्वगथ॥ आपोक मंक
त्वबङ्क्ष गवतंसमपाग्रयग॥ तद्भ्रा ततपसन्नात्मापुत्रेश्वसजिगाग्रियथ॥ वाधिवयविवगंछ्रत्वाप्रववानऊगछ्रिम॥ गताप्यवं मनीतुणवाधितन्व४ तेसयगतिथ॥ संथा॥ मे
व्याहग ४॥ क्षाभेव मुनि हैं विष्यति॥ इति भेष्टुातमादि दृंवगवानी॥ निगामसथ॥ सम्वाधिमाधनीवर्यीछ्रत्वावनतदा ते व॥ एवं प्रभृति गाहन्ते यावद्धु काक्ष
पंमूनि॥ सफलकृतितावसमेवक्षानांमृदावऊगृ॥ एवं ते ४ तृगते ४ सर्व ४ तवा॥ क्षीव्याप्तगामेरा॥ समेवकृतगंछ्रत्वामतगावनेऊगछ्रिगं॥ एतान्यवृक्षङ्गन्नाथांक्षि पर्ता
घ्निनि कानं॥ सर्वदातक्षगतेक्ष्यनकिञ्चित्वदिगंमेनथ॥ सद्धान्ताहतमायूकैंददकापानमापितगं॥ तेकिञ्चित्वदिगंविर्कसमुद्रमेनत्तमाधन॥ असंख्ययानि दशानि
दानान्यर्थपितान्यपि॥ भव्यानित्री हयथ४ सर्वाधिभव्यानि सकालान्यपि॥ सर्वाधिवस्तुवस्तूनि सर्वाधित्वधीनित्य॥ कृतध्वजपताकार्थ पी० गयामेला नित्य॥ अतुड
व्यादितवर्धितेत्तानि सकलानि च॥ पेक्षियथ४ पगावक्षापितथन्यवाहना अपि॥ गजाश्वेनेथयानादि सर्वोपकरणान्यपि॥ छत्रसपानताग्ध्य निनेनतायनोपक्षान्य

म आ

श्रेष्ठपुत्रस्त्वेवं प्रणिधानं समकरोत्॥ मृन्मयीष्टकां धर्मराजं लब्धाजगद्धितं॥ कृत्वा संबोधिमाप्तस्य संप्रयातो निर्वृतिं॥ एवं सर्वं प्रणिधिं कृत्वा न्यपतिष्ठमान् आत्मजः॥ तस्मिं

न्नुपमहात्मा हे श्रावक अन्तर्देशानृप॥ एवं सत्कअनं कृत्वा तद्विनं प्रावनन्तरं॥ अनेकवर्षसहस्राणि कृत्वा संप्रययौ जिनालयं॥ यो सो नाम महासत्त्वो महाप्रज्ञान् आत्मजः॥ वपत्र

वारवडाश्रम तिनृपान् यात्रिपः॥ यत्नेन निवितः पांसुः रूपं तं प्रणिसंस्कृतं॥ तस्य रथेन सत्त्वा वडावाजा धर्मार्थी राजवन्॥ यस्यानन महत्कृतं गार्हिं रूपं वनापितं॥ तग

स्यपि विपाकेन तस्य जन्मन्यनृत्कृतं॥ दिव्यनलमयं कृतं वा लेव्य गन नमस्किन्ने॥ तद्रूपनिष्ठसत्त्वादिदर्वनाति श्रवणाविनं॥ यस्य श्रव्यगपताकादि रूपेन नमसर्द्धितं॥ तनय

ऊपताकाकृत्रां कटुकोयिताः हृदे॥ यस्य नृडा मनिक्षन्न महशीर्षवशापितं॥ तनानेकगुरु अपनं संज्ञानं समकर्मनि॥ यस्य पंच घटा धाराधारां मुर्द्ध्नि श्रुताभि नतः॥ तेन

कादिन्युत्त दर्नेज्ञानं नसमर्निवकः॥ कस्य वं समहासत्त्वः रूपाणिं गत्वा पात्रिकः॥ महश्चापि पिण्डानि स्वाप्य महात्मा हे सदा सजनः॥ ताकाश्चापि तथा सर्वान्के तत्प गत्वा पात्रानु

॥ कृत्वा सन्नाम सा त्वा हे श्रीडा जयन्तमादे नाम॥ एतत्सर्वं अनुगावे सम सर्वलोकाधिपत्यमान्॥ बोधिसत्त्वा महासत्त्वो हडगीतधवान भूत्॥ तद्यथा सौम सम सत्त्वा मणिचूडः प

३४१

मालवं तं ॥ सार्थवाहस्तमहर्षीन ४ सर्वसत्त्वहितार्थिनः ॥ तदैकसमय साधोनत्वान्यादायप्रवनन ॥ सार्थेशः साधुर्महात्मा हं वनन्वनाकनंययो ॥ तत्रैकस्मिन्वनप्रदेशे गन्तुमलम
नाप्तितं ॥ प्रथमकल्पद्रुमकल्पं सद्दर्शनविज्ञानाप्तितं ॥ ते दृष्ट्वा सर्वविस्मिताः ४ महासामपासनं ॥ साधोः लिपेधर्मशिक्षां त्वा प्रवृत्तः धर्मसमादनाम ॥ तव कोपिं तवद ह नागेद ४
स्वाप्तिमायत ॥ यत्क्तं तं द्रुमौकद्रुमिष्टं तन्मतमादिश ॥ वृत्तिगानादिसंघेत्वा प्रधेयं कासे गतापिमः ४ ॥ सार्थवाह गमालाञ्छनेनवंसमादिभत ॥ साध्वः सार्थपातस्यर्पिदं
गागमपदकृतिं ॥ तच्छिष्यं मत सर्वाः स्मृदणि पाविनर्पितं ॥ वृत्तिगानाहमादिष्टं निगम्यमविय कृत ४ ॥ तो घ धीति कमातिप्प सहसाल्वक्लिगंव्यथा ॥ तताः प्रसकव हभो
स्वल्पीलगत ४ प्रमादितः ॥ सार्थवाहं नमाल्लाञ्छ तडागिया सनन्दयत ॥ ततश्च सार्थवाहस्तं मृगतंसं प्रमादितं ॥ प्रत्यत्त्वामागलि श्वेवं प्रविभ्रनं व्यथा स्मृदा ॥ यन्नयायं मनीला
पिविषाप तस्तु विग्रह ४ ॥ ओषधीतिधमतालिप्प स्वल्कीदत्त्वा प्रसादितः ४ ॥ अनेन कृगत नाहं संज्ञातः ४ सर्वजन्मसु ॥ सर्वेषामपि सत्त्वानां तत्वयं त्यागभाक कृतं ॥ ततस्तु ष्वे
प्रभगतः प्रकालतनाम्वनोपिय ॥ पश्चात्स निनूजाः ४ पूष्टा तवयर्विमतलिङ्क्रिया ४ ॥ वृत्तप्रवं प्रापितिधिं त्वा समसार्थी धिपातिश्वर्गं ॥ प्रथमकं सगणं न लोमं मादितकणावनत ॥ ततः

जा

न्नसमहर्द्दष्टं च यत्र समागतः ॥ दृष्टि ध्यात्वा प्रसन्नात्मा सहसा समुपस्थितः ॥ पुत्रत्वा गंतुमीशेव पुनः सक्रोधमादितः ॥ गतः सा सोगतीं महर्षिः कल्पार्णपनिशुद्धिगं ॥ त

द्धर्मलोकं विनिर्वाक्यं धनं नयनो कल्पाः कृतः ॥ गतः स पर्णिशुद्धात्मा सुधानि विस्मयान्वितः ॥ न भयं मूर्छिमालम्ब्य सक्रोधानलमाहितः ॥ तत्र स मनसा ध्यात्वा तु पंचमं व

सोगतं ॥ तत्यापापेय यमलत्कं सन्मार्ग यथोमनाल्पयं ॥ तत्र समभुदितः साक्षिमसेनाभिर्दिवानिशं ॥ दिव्य कामं सर्वं तु ध्यानं प्रवनय पंथरुद्धया ॥ गोपाविगतप ध्यः स स्वर्गे

छ्रत्वा वदेव नौ ॥ तिर्यग्जातीन् मासाध्य उन्नयाना वनालवनं ॥ तत्र स सोग पावास विनान सर्वदावसन् ॥ छिन्नत्व दर्शनं कृत्वा पावन दत्त मोदितः ॥ तदेकस्मिं

न्दिने सोकुं कल्लादानि वन वनगः ॥ तत्रैव नक्र मालाख्यं नं स्थनसहसोत्तमं ॥ तन्नं संक्रिय मानाक्षो पानावगः स्वयं गमा ॥ छिन्नत्व स्पर्शमाधाय दत्त स्वकादिवं यो

॥ तत्र स दिव्य सोगभूमि उच्च्यादि व्योपनान्वितः ॥ कीर्तित्वा स विनं निशुपायस्म तं प्रमोदितः ॥ गताश्विनादि वध्यं त्वा दनिर्द्वय कुलं सुवि ॥ जातालन्निर्धर्माइ रवी

लापत्रः कृत्स्नमोदितः ॥ तदेकस्मिन्दिने नरः स्वर्णार्क हर्ष गतेर्गतः ॥ तत्र मार्गे स्वेगामन्ध्ये महद्वेलं ददर्शं सः ॥ गोइ द्वाम प्रसन्नात्मा कृत्वा प्रदक्षिणं तिथ्यः ॥ मा

३४७

ऋतिभिर्मार्जनं कृत्वा मन्त्रैः पञ्चभिर्यथोदितैः ॥ ततो नैवेद्यसंवीक्ष्य सुपक्वानि फलानि च ॥ सत्फलं ताम्बूलकानि समादाय प्रथक्षया ॥ ततः समन्महस्नानमूर्तिं स्नात्वा संप्र
मार्दितः ॥ प्रत्यागतोऽपि सद्भावात् देवायं पञ्चकन्यापासनात् ॥ ततः संस्कृताय ते पुष्पैर्वे समर्चयेत् ॥ फलमूलादिभिः कोंच पूजनैः समर्पयेत् ॥ ततः समेदितः पञ्चभिर्नस्ले
द्विसंस्मरणालयं ॥ त्रिकोणद्विशीर्षकं [illegible] नामकं [illegible] ॥ ततो मोर्वमदार्थिता दत्त्वा [illegible] मातृकां ॥ [illegible] ह्रस्वसमापयेत् ॥ ततः [illegible]
प्रस्थाप्य गंगालयं ॥ फलमूलादिकं [illegible] ॥ एवं संगमदावे [illegible] नैवेद्यं समर्पयेत् ॥ अर्थिनापि स्वदेह [illegible] ॥ ततस्तस्य
[illegible] ॥ दिने दिने [illegible] संप्रवर्द्धिता ॥ [illegible] विस्मयान्विताः ॥ [illegible] दितिर्यावि
[illegible] ॥ [illegible] गंगालयं ॥ संस्कृत्य संप्रतिष्ठाप्य [illegible] ॥ तानि [illegible] विधिमादधातु ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ संकल्प्य [illegible] समर्पयेत् ॥ सर्वार्थिनापि [illegible] ॥ सर्वमंगल [illegible]

ज्ञा

यां समायये ॥ ॥ ततः क्लीं कृष्णाय सर्वविनाशकरणाक मानसं ॥ तच्छुक्लं दृह मन्त्र्यं विधिना एतो व्यरणाक्षयतु ॥ ततः क्लीं उमादाय संकाप्यग र्भं मशुतं ॥ मत्तं डलमयं वे
नृपं विक्षम्य सर्वदा तजनं ॥ ततः सर्वपितं संघाय ण मूलमन्त्रेन वा निरं ॥ मदनं णामनं धृत्वा संवर्निय समाहितः ॥ तथा सर्वपि लोकाश्च सर्वलोकाधिपा अपि ॥ त
स्त्री गुरुजनं दत्वा सिप्रवेकं समाहिताः ॥ एतत् पथ्यानतावेश्च सर्वत्रभुवनेष्वपि ॥ नित्यं तां गोगलीलां देवर्लिना विनं सदा ॥ तत्रैतो कामधायार्थं पूजात्वा नृपात नेश्वा
॥ ते कुर्मे समुपादि श्च सर्वत्र समवानयन्तु ॥ तयोर्विना सो हालास कामधपापि जगद्गुना ॥ सेवावानि पवि दक्ष तानि वोडि गन्तु मंकुरा ॥ ततः क्षमकामधपाधी मानान
न्दमिति मलमं ॥ सम्य धन्तमपामन्त्रु मादनेन मवमादिगजा ॥ आनन्द माधि ज्ञानी हि मन्निर्वाणं समभूतः ॥ मदनं णामनं धृत्वा सद्ब्रमें संप्रकाशय ॥ ष्माना सर्वान्यशीन
समयगन्तोभ्यजगद्धिता ॥ सम्वाधि साधनं धर्मधावानयसमं कृतः ॥ कृष्णं व कामधपाधी मानानन्दं गंजगद्धितं ॥ नूनं णम स्यामें न स्कांप्पवाक्षात्वा निर्वतिमायये ॥
ततः क्लीं विकाः सर्वविनाशकणाका मानसं ॥ तदृ दृं विधिनास्यर्थ्यं वन्हिनासेमरणाक्षयन्तु ॥ ततः क्लीं उमादाय संकाप्यगर्भंमशुतं ॥ कृत्वा वेश्यं ड निकाप्य सर्वस्यर्थ्यंसत

२१४

रजन्॥ एवमन्येपि लोकाश्च सर्वलोकाधिपाश्च पि॥ तेकाश्यप मनुष्यस्य आसन्मम सर्वोत्तजन्मवा॥ एतत्तु धनलाभन विना यात मही तले॥ निवृत्यार्थं गुणालाभं प्रावर्षगममकात ४॥
मया श्रीमान् आनन्दो वृत्तो गदनूयमनं॥ अनुष्णस्य ममीन्द्र सर्वान्यद्भूर्मतमपादिणा॥ एवं सर्वत्र लोकषवनाशोकात्वयाक्षयं॥ वाधिमार्गडणि छायं प्रावानयतेसणगुरु
॥ एवं श्रीमान् आनन्दः कृत्वा धर्ममयं जगत्॥ णमस्य णमकात्रिम कालानिर्वाणं गतु भैकम॥ तो पण्यन्तमोन्तहूः णमस्य अमनधात्रा ६॥ सर्वथा मयिपि हि कृपयं नदद्रु
गौगदाङ्गं॥ एवं समीक्षुस आत्महू णमस्य णमसंनक्षावि णं॥ यमिमकमना साधमन सेवं व्याविक्रयत्॥ तां कालिपूर्वावाराह ५ प्रवर्षगतमनकृत ७॥ गत्वा श्री मोन्यापि धर्मे
प्रकाणयितुमतल्लहं॥ कृति श्रीखास आनन्दः णमस्य णमसनधात्रा ८॥ कश्चिद्दननगोखेव स्वयं निर्वृति मायया॥ गगलति कव ५ सर्वविनाष्य णमकमाहगां॥ ग
हूहं वक्रि संस्कार्य विक्षाय मम णांधयत्॥ गत सर्वेपि लोकाश्च सर्वलोकाधिपाश्च पि॥ तमानन्दं यणिस्य त्वा ममस्यापि ऊनतया॥ एतत्तु धन लावन सर्वथा
पिमेहीनता॥ निवृत्यार्थं गुहालाभं प्रावर्षगवि र्व न यता॥ गत ५ कालिवेलाआंके मानवैर्यो प्रवावि नि ग॥ सर्वहिंसा निवृत्त्याह आसन्तकर्मवान ९॥ तथानाथी [illegible] पि

एवं नड मदात्ता हं प्रवादिनं समक्रम॥ समीक्ष्य नयः सर्वक्षा दय प्रधप्रसादिना॥ एवं गणादयः सर्वलो

गा सर्वज्ञसर्वदा॥ निन्नु तानं गुणा त्माहं प्रावलिनका नावपि॥ एवं सर्वपि लोका धृत्वा प्रतुकनियामिनः॥ मानानन्द सर्वज्ञ कोप्रव निवाहिनन्दिमाः॥ ए

कांक्षिया नः॥ सह॥ नत्ल मीक्ष्य मेदात्मा हं प्राप्नेनन्द सम्मादिनाः॥ एवं वि ज्ञाय सद्धर्म विवाजः समहवे॥ महद्धर्म कलोसन्नः प्रवान यन्तु

वं सर्वपि संव क्षः संद्धर्म सगणात्मनाः॥ समीक्ष्य नत्त्वगा त्माहं प्रसादिनि तिमाधिनाः॥ एवं विज्ञाय सद्धर्म विवाजः समहवे॥ गामवेवाधिसत्वाः मकलगुणगणः श्रीतम ३ गा

सर्वं गैः॥ तावनी दं मूलाय दणयलास मगर्वोधि दर्याविधानं॥ एवं नि अवये निप्रमृदि न मन साधनमा दाक्षि दस्था॥ ॥इति श्रीमन्महज्ञानकमानायां मधिकृत मोक्षप्रदानशीघन वाधि

जि सत्वा यो सडात्मा हं प्रवुक्का जिनेजि एवं सुयानिवो ज्ञातयन्॥ ॥ यद्धर्मा हेतुप्रभवा हेतुस्तेषां तथागतः॥ ह्यवदत्तेषां च यो निरोध एवंवा

दर्याविदान मोत्तयं समाप्तं॥ ॥शुभमस्तु जगतां सदा॥

दीमहाश्रमणः॥ ॥ या सोधर्म समाग दिनं पंथागतात्कि तांवान्·मात्रा हीनं कथमपि पदं पादगाथाक्षरं वा॥ जिकाधर्मः पवनश्च निमे॥ श्रमदा सापया

॥लिखितं सर्वहवजगा· नीलवज निक्षस्पनं थायागः गयाफल थगकाव गमफल स्नानं लाल याय
नेर्पूयंवकू स्कुवनगमा वाविसवाध्कमधं॥ ॥लिखितं सर्वहवजगा ॥तनसम्वत् १०२९ म्हि श्रावनशुक्ल यां ८ स सिद्धयं कादि
मद्द लालयाकसा· पंचमहापापलायि· म्याकसा· महापुण्यलायि फल जुल॥
नफल जुल॥ ...॥

ग०

न्यभीन्सर्वान्समानस्तुवन्मादिगणः॥ मन्यतां विश्ववासर्वानिर्वाणसमयामम॥ सम्पूर्णां समुपायातगणलक्ष्यनूर्ध्वं समादिनाथ॥ यदि वाञ्छि मयि स्नेहः किं जनेवबमानस्त॥ गणनायाऽत्य
व्यख्यानं तथाश्रवणितुमर्हथ॥ कश्चित्प्रह्वन्निसंबोधे लोकं ज्ञानं सदा कृतं॥ सर्वमनन्यया ख्यातो धर्मसंश्रुतुमर्हथ॥ सर्वज्ञापि प्रज्ञापितो अवधिज्ञानयत्नतः॥ सम्बाधि
साधनं धर्मतत्त्वानयन्यमात्मवं॥ मयेन तद्धिर्गतं सर्वधर्मसंबोधिसाधनं॥ ज्ञापितो सर्वलोकस्य वानयगजगद्धितं॥ निर्दिष्टस्य ममत्वश्च स्वात्मसद्धर्मलापितं॥ सर्वलोकाय्त्वा ३७३
वानाहवयः कामवाचि॥ वीक्ष्यात्मसर्वसमानं वयान्वाचितं॥ सद्धर्मोल्लिप्तानिर्गिप्य वनिष्पत्तियाथच्छया॥ गतागम लोके कोमायसम्बाधिधर्मवाञ्छिताः
॥ त्रिनत्वमजनात्लाहष्टात्तुमस्त्रंति मानवाः॥ गमद्दंमतयानमूर्तसद्धर्मसाधनं॥ लिखित्वा प्रज्ञयानिरुपमं स्तुवाधिमानसाः॥ विसृज्य एतेत्यर्थति समाख्या
यदिगतुवा॥ पश्चात्तुप्रज्ञयानि सर्वं अवयत्नतु गथापमानात्॥ लिखित्वा पुस्तके वापि संस्थाप्य सादरं गृहे॥ पूजास्थितो प्रज्ञया लयर्पितजन्तु वाधिमानसाः॥ यत्रैव तलं
कं गृहे संस्थाप्य लर्विंशता॥ तत्र सर्वेपि संबद्धा दृष्ट्वा वयं प्रसादितां॥ याश्यति स्तसंकरी निसर्गमेत्य सर्वप्रज्ञया पएवता॥ तस्य सर्वेपि संबुद्धानगतयः संप्रणो

षिताः४॥ ततश्चैत्य महत्स्याधिष्ठानि स्थाप्याधिष्ठानि हि ॥ ततोधिक महत्स्य एषः सम्बुद्ध पदमाप्य तं ॥ यः श्रेष्ठधर्मसांकाशं मपादिश्य प्रवानयत ॥ ततः सर्वेपि सद्धर्मपु
जिताः४ संप्रवाधिताः४॥ अस्मिन् प्रबुद्धे यायव अवधि व्यक्ति यपिव ॥ ते४ समं घोषिताः४ स वर्षे पूजिता भुवनाधिपाः४॥ तत्रापि तत्र तायान्तः संबोधि प्रवाचितं ॥ ततस्त
र्वेपि सम्बुद्धा स्थावय प्रमादिताः४॥ सुरास्तपि तत्र सद्धर्मसंघिकाश्चिते४॥ समीक्ष्य स [illegible] निर्वाणं नश्चर्यं सर्वदा स्वतः ॥ [illegible] सूर्यं सर्वेपि तं
पिकाः४॥ ममे [illegible] त्वा संवन [illegible] गच्छितं ॥ [illegible] त्वा संयम [illegible] समाहिताः४॥ ततः सर्वे विमलात्मानो [illegible] बोधिमानसाः४॥ बोधिसत्वा महासत्वा [illegible]
श्रीमद् [illegible] याः४॥ सर्वे सत्व हितं [illegible] सपर्युत ॥ सर्वे सम्बोधिसत्वानं पुनर्यित्वा [illegible] याः४॥ [illegible] निर्मलात्मानो [illegible] ततोमाते
[illegible] त्वा संप्राप्य बोधिमूलकं ॥ सम्बुद्ध पदमासाद्य [illegible] निर्वाणं समाप्नुयुः४॥ [illegible] उपादिश्य भगवान् मुनीश्वरः४॥ [illegible] वमा
दिगत ॥ [illegible] निर्वाण [illegible] ॥ [illegible] सद्धर्म [illegible] प्रवानये ॥ [illegible] समाहिताः४॥ सर्वे ज्ञान [illegible] सनिर्वा

रा काणयत ॥ पृथ्वयुष्ठअवययस्थयमर्लो५शद्वयामृत ॥ यपितस्खापयस्थतिखयुस्थप्रमादिमा४ ॥ प८ ० य४या० ययस्थ पूजयययस्थसादनं ॥ ॐ स्वान्मादयपस्थत
जयुष्ठस्काप्यमन्दिर ॥ ४नसलकमसर्व्वदय्दनियथस्ति ॥ ववयुस्थंमृगीतायंवतंपावधमहमं ॥ ॐ त्वां४ स्थानमयुस्थतजयुश्चैन्मादिमा४ ॥ श्चां त्वां सस्वा संमृ
श्चार्यनामोपितंप्रसादिमा४ ॥ गे४ सर्वे४ सगणा४ सर्वे संपूजिता४ प्रसादिमा४ ॥ सद्धर्मो४ सकत्ताश्चापितिरिवस्वास्काप्यपूजिता४ ॥ संघाश्चसकलानिरूपंसमस्वर्याति गाविप्रो ३६८
४ ॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि संपूजिता४ प्रणाविता४ ॥ मर्षांसर्वेपि संबुद्धा४ सद्धर्मोश्च समांपिका४ ॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि दृष्ट्वा यस्य४ समागतं ॥ यत्र दैवमहोयानसूत्रसंच
क्षिसाधनं ॥ प्रवदसूत्र सर्वत्र सर्वदाभक्तं तवतु ॥ ॐ गतिसंपपनिहायपूर्यसर्वन्मादिमा४ ॥ तथेगतोगर्भधर्मप्रवानयपासर्वग४ ॥ ॐ नसलखनतावेहिपनिशुद्धि
मगुता४ ॥ त्रिविधंवाधिमामाघेसम्बुद्धपदमाप्नुथ ॥ ॐ गतिभास्वासमादिष्ठं ॐ यश्चयानिगमगत ॥ सर्वपिप्राश्चवका४वमिस्वाणप्रनन्द गा ॥ गणाश्चैवमतारि
ह्वजयतो४ मृगमात्तज४ ॥ सर्वान्कां ह्वावकानहृये४ सम्यधनायमादिभात ॥ यजिनलंसपास्वर्ध्यध्वासंवाधिमानसं ॥ सद्धर्मसमुपादिश्चयानमयुर्मगद्धि ग

॥ तथांमतापि संस्थानं तुयात्सर्वत्र मंगलं॥ निन्तुत्यागं महात्मा हं सर्वेतु स्त्रा कनकुरा॥ यत्ददं व महायानं सूत्रं संबोधिसाधनं॥ एवंव तत्सर्वतत्तुया तत्र डं निनकानं॥ बाजालव
तु धर्मिष्ठो सर्वसत्वहितार्थतत्॥ तवकु मक्तिरत्ना मापानी तिधर्मार्थमोक्षकाः॥ सर्वलोकाश्च सद्धर्मसाधनाहितमताः सदा॥ एवंश्वि ह्यनि रत्नात्तडवनकुबोधिमानमाः॥
कालवर्षतु सपोध्व मतिक्रमस्तु सर्वदा॥ सर्वलोकाधिपाश्चापि समीक्षावकु सर्वदो॥ सर्वग्रहाश्च सोनाश्च मोदकाः तुगः समस्तदा॥ समीक्षः तेट ॥ तथानकुत्थमेवा
विर्षो॥ सर्वबुद्धाश्च सद्धर्मा बोधिसत्वाश्च भिक्षवः॥ सर्वदेवाधिपाश्चापि पर्षदः सह स्थावकु सर्वदा॥ सर्वसत्वाश्च सद्धर्मरक्ताः सत्रु मत्रेयाः॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा प्रव
नकु समाहिताः॥ सा तथात्वा स्वविघ्न हत्मान यानं नवागिताः॥ सर्वेषां सद्गतिकर्म सिद्धं तु बोधिसाधन॥ जिनरत्न शरणं कृत्वा सर्वसद्धर्मलालसाः॥ पत्र स्य नाहि गा
त्माहं अपेव वकु सदागुरु॥ एतत्त्रिरत्नमादि स्तुत्वा सर्वेपि सांघिकाः॥ एवं मत्वं मया तथादिगिजोन्व वदन्नसा॥ ममः माई न्म हादिल्ज जयश्री॥ समगामलक्ष॥ ध्य
नागेन्द्र समासीन कृतकोद्यानं समाहिताः॥ ततस्तु भिक्षवश्चापि सर्वसद्धाधिमानैसाः॥ जिनरत्न शरणं कृत्वा प्रवनि वेज गाव्ह्रि गे॥ वन तस्य प्भीन तावे यथा तदा

ऊ

सौगतीं चर्यां हित्वा सर्वत्र संचरन्तु॥ सद्धर्मं समुपादिश्य प्रचारयितुमैच्छत॥ एवमिच्छन्महासत्त्वः सबोधिसत्त्वो जगद्धित॥ सर्वत्र मानुषान्सत्त्वान् बोधिचर्याव्रतं चरन्॥ जित्वा मा

रगणान्सर्वान्संप्राप्य बोधिमुत्तमां॥ तथागतो मुनीन्द्रोऽर्हन्धर्मचक्रं प्रवर्त्तयन्॥ कृत्वा सर्वान्स्त्रिलोकानां शरणं गतनाथतां॥ संबोधिप्रणिधिं दत्त्वा बोधिचर्यां हि चारयन्॥

धर्मधातौ समुल्लासं स्मर्यन्त्वा त्रिधातुकं॥ समाप्य सौगतं कार्यं निर्वृतिपदमैच्छत॥ एतत्फलं महासत्त्वो समिच्छन्सद्धर्मसाधने विक्लिष्ट॥ सर्वान्बुद्धान्नमस्कृत्वा सको मं ३७२

र्वांल्लिलोकयन्॥ तत्र च स्थापितान्सर्वान्सत्त्वान्स्वकथायितान्॥ तमीक्ष्य गंमहासत्त्वं समीक्ष्यैवं वचनादयत॥ साधु पश्यध मया लोक सर्वाननेकर्म्यकथायितान्॥ तद्वच

श्रुतिश्रुत्या संशिक्षि समयाधुना॥ तद्वचनाद्गुरुं लोकागत्वान्ये कृतेऽजन्तु॥ लेभुस्तम्बुद्धिं संवानं प्रवृानयन्ते विनम॥ तथा लव नाति मकाम्यु घा सम्बनैदय तु॥

जित्वा मारगणान्सर्वान्संप्राप्य बोधिमुत्तमां॥ सर्वधर्माधिपो शास्ता सर्वज्ञोऽर्हन्कथागतः॥ कृत्वा सर्वत्र लोकेषु धर्मचक्रं प्रवर्त्तयन्॥ सोऽर्थिकान्सकलाञ्जित्वा स

र्वान्लोकान्प्रबोधयन्॥ बोधिमार्गे प्रतिष्ठाप्य प्रवीनयसमाचरन्॥ यथार्थयाप्रति हा गं कृत्वा धर्ममयं जगत्॥ ततो निर्वृतिपदं प्राप्य संबुद्धालय मास्थिता॥ स्वस्थं च

सम्यग्दिष्टं निशम्य स बोधिसत्त्वः ॥ बोधिसत्त्वा महात्मानो द्रुतं कथां कर्तुं समुत्सुकाः ॥ भिक्षवः संघमुपासन्तु बोधिसत्त्वं यथाविधि ॥ स्वासनं संस्थिताः प्राप्य तथागतं समुपासयन् ॥ समीक्ष्य स
महीलाकामसत्त्वस्य कुशलं ततः ॥ प्राप्य प्रमोदं सुदृढं लक्षणमण्डितम् ॥ ततः स समतिर्विज्ञः सर्वविद्याविचक्षणः ॥ सर्वप्रवादिनो जित्वा लोके सर्वजयश्रियं ॥ तथा
यथाधर्मांकाम्यां तार्थं माया वा क्षमसंगमी ॥ समन्वहितसत्त्वं तु ज्ञानमयं धर्मार्थसाधनं ॥ ततः स विषयां सत्त्वज्ञा संस्थानं निनिश्चयः ॥ एवं श्रुत्वा स मन्त्री हि स्वीय बोधिसत्त्व समाहितः
॥ ततो गत्वा गयाशीर्षं नगरं पश्यन् सुकृतं ॥ प्रहृत्य तापसान् सर्वान् विनिर्जयन् समाचरत् ॥ ततो मागधं भोजिनं बोधिसत्त्वं गतास्थितः ॥ ताम् बोधिमासाद्य संबुद्ध
पदमाययौ ॥ ततो गत्वा स संबुद्धो वाराणस्यां ऋषिपतनं ॥ ध्यानं समाहितः ॥ ततश्च सोमनन्दादि जगद्भिन्नो बोधिसत्त्व
सद्धर्मं समुपादिशत् ॥ आर्यसत्यं समामन्त्र सद्धर्मं वर्तयत् ॥ सर्वान् लोकाधिपालादीन् लोकान् सन्नादयत् ॥ एवं सर्वलोकेषु सर्वान् सत्त्वान् प्रबोधयन् ॥ बोधिमार्गे
नियोज्य प्रावर्त्तयत् तत्र ततः ॥ एवं स भगवान् सर्वं कृत्वा धर्ममयं जगत् ॥ समाप्य भोगं कार्यं निर्वाणं गन्तुमैच्छत ॥ ततः स भगवान् कालं निर्वाणसमयागतं ॥ काश्यपादी

४ वाधित्तसद्धर्म संप्रकाशक ४ ॥ सर्वसत्वानिनूत्सा तास्मसद्धर्मणव (ए तयन्त ॥ गदाया सकि मान्वद्रू सर्व कृत्य ए सालाल स ४ ॥ स स द्धर्म स स मृद्धि ग्ध पावाम्म यज्ञ गद्धि ग ॥ एवं पश्यं
त्को त्तियापकता का संक्लिष्ट मानस ॥ क्ल गाम सारि मानो (स्वं वाधिच यशि ति निदि ग ॥ यस्मिन्तत्तं ग गन्नि स्यं स म्व कृ ग ए मान स ४ ॥ स ति नत्त वन (ए व सद्धर्म संप्रका ग
यंत ॥ गथा छि न्नलम त्वं र्व्य र ज यू वाधि मान स ४ ॥ तापि पृ ४ ष व न (ए व ग ए यृ ४ क्षी ग नं व यं ॥ यव म त्क्षी गं गं धर्म ण ए य ४ मास्न नं म पा ॥ गस र्व विमला त्मानो तव य वो
धि मा न सा ४ ॥ यव्वा ध्य त न्न स द्धर्म ये थवय य र्मृ दा प्य वा नृ ॥ तापि स र्वि मला त्मा न ४ सम्वद्रू धर्मता ल मा ७ ॥ प्र ता धय मृ दा यव सद्धर्म वा विमा ध नं ॥ तापि स र्वि मला
त्मा ना वा धि थी स कृ ला ग्र या ४ ॥ लि खि त्वा प म क म व सं स्का प्या स्यर्व्य स र्व रा ॥ शुद्र या सं प (० य श्र प्र व न य श्व सर्व ग ७ ॥ ते पि स र्वि मला त्मा ना त ड जी स ङ्ग
ला ग्र या ४ ॥ यव त खा प यि त्वा पि से क्ला प्य स्वर्ग ए स ता ॥ त गे य ४ शुद्र या स्यर्व्य छि न त्त त कि मान सा ४ ॥ यव सं प ० यि त्वा पि ग त्वा स न न मा दि गा ४ ॥ तापि स
र्वि मला त्मा न ४ सद्धर्म जी ग ला ग्र या ४ ॥ यव ग ह्यावि गं ज ला द त्वा मि वा नृ मादि ता ४ ॥ न भय न न गं मि त्वा म न ना पि प्र मा दि ता ४ ॥ त नस र्व विक ल्मा सा ४ प ॥

३.११

वितद्भुतिमद्भुताः॥ कदापि दुर्गतिं नयगच्छय॰ सद्गतिं सदा॥ निः॰ क्लेशाविमलात्मानः॰ पवित्रकृत्स्द्रिया॰ सदा॥ तदेवी सद्धर्मामाध्वकुर्वन्मुविहानिंदः॥ वा
धिसत्त्वामहासत्त्वाः॰ स्वपनात्महिताश्यताः॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा प्रचनय॰ सदा तथे॥ सर्वसंबोधिसम्भारं पूर्णयित्वा यथाक्रमं॥ जित्वा बोधिमारा ये संबुद्ध प
दमाप्नुयुः॥ एवं सर्वे मुनीन्द्रैश्च समाख्यातं निशम्य तत्॥ जनः सम समाख्यातं गृहंमयाभिरथव्यत॥ त्वमपीदं महानागगत्वा न मापमाद्यं॥ आवयित्वा प्रजा
श्चापि प्रवानय जगद्धितं॥ एतत्पुण्यविपाकेन संप्राप्य बोधिमानसं॥ बोधिचर्याव्रतं धृत्वा चरन्त्वं सज्जनो सदा॥ ततस्त्वं स्यान्महासत्त्वास्तदेवी सद्धर्मोदयः॥ बो
धिसत्त्वामहासत्त्वः सर्वसत्त्वहितंकरः॥ क्रमेण बोधिसंभारं संपूर्णय जगद्धितं॥ जित्वा मारगणान्सर्वान्बोधिंप्राप्य जिनो भवेः॥ कृत्स्नं संबोधिसमोदितं त्वारम
काननाबुधिपः॥ तथेत्यसौ नृपादित्वा प्राप्यनन्दत्तपार्षदः॥ वन्दित्वादिव्यसमाधिलक्ष्मीयत्नीः॰ सुगताज्ञयः॥ त्वयकाकुलावको सर्वान्सत्त्वान्नगमोदितः॥ ध
र्मं आवकाः॰ सर्वयत्नार्थेवं समुद्यता॥ तत्पुण्यं सादनं धृत्वा संवनं धं जगद्धितं॥ येऽत्र कलिर्भवाम्या कर्णे भारिमानिका॥ जिनपद्भवर्जीवपि सद्धर्मसंप्र

इत्यादिरूपेण पञ्चतीसो विहारं अ क्रुवाभिधं॥ प्रभावजगतामसकलं निजशिष्यैः समन्वितः॥ २